शक- श्रीराजधानी पंचांग कार्यालय, E-219, मेनरोड़, जगजीतनगर, दिल्ली-53 फोन- 9968067717, 9899305151, 9868909063

होलोग्राम- पंचांग खरीदते समय टाइटल पर पं. प्रेमपाल कौशिक जी के स्पष्ट चित्र वाला इन्द्रधनुषीय त्रिदर्पणीय होलोग्राम अवश्य देखें।

प्राक्कथन

गणाधीशं नमस्कृत्वं त्रयगुरुं च सरस्वतीम्।
दृग्गणिततुल्य पंचांग संशोध्य क्रियते मया॥

श्रीगणेशजी, श्रद्धेय गुरुजन एवं माता सरस्वती जी को प्रणाम कर दृग्गणित(भारत सरकार द्वारा स्वीकृत) सूक्ष्मदृश्य गणिततुल्य इस श्री राजधानी पंचांग का संशोधन (रचना) करता हूँ।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्यौतिषशास्त्रं चन्द्राकौं यत्र साक्षिणौ॥

अप्रत्यक्ष शास्त्रों की तरह इस ज्योतिष शास्त्र में विवाद या मतभेद के लिये कोई स्थान ही नहीं, क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष शास्त्र है। इसके चन्द्र-सूर्य साक्षी हैं। जिस समय जिस सिद्धांत ग्रन्थ से सूर्यादि ग्रहों की स्पष्ट स्थिति वेध द्वारा आकाश में प्रत्यक्ष दृग्गोचर हो वही सिद्धांत आर्ष सिद्धांत है।

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यातिथ्यादि निर्णयम्॥ -वशिष्ठः

अर्थात् जिस पक्ष (सिद्धांत) से जिस काल में ग्रहों का दृग्गणितैक्य हो, उसी सिद्धांत से तिथ्यादि निर्णय करें। आकाश में कोई भी वस्तु किसी एक निश्चित नियम में गतिमान नहीं रह सकती, स्वयं सर्वप्रथम वेदाङ्ग ज्योतिष के रचयिता '**ब्रह्माचार्य**' माण्डव्य के प्रति कहते हैं।

इत्थं माण्डव्य संक्षेपादुक्तं शास्त्रं मयोदितम्।
विस्तृतिर्विष्णु-चन्द्राद्यैर्भविष्यति युगे-युगे॥

हे माण्डय! यह संक्षेप में मैंने तुमसे शास्त्र कहा है, मेरे बनाये हुए शास्त्र में रवि-चन्द्रादि ग्रहों के गतिभेद से युग-युग में विस्तृति (अन्तर) होगी। इसी प्रकार **सूर्य सिद्धांत** में निम्नांकित आर्षवचन लिखे हैं।

शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः।
युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलम्॥ सू.सि.अ.१/९

इस प्रकार जब-जब ऋषि-महर्षियों ने ग्रहों में वेध द्वारा प्रत्यक्ष अन्तर देखा तो अपने-अपने समय में एक के बाद एक सिद्धांत ग्रन्थ बनाते गए जो 'गतिभेद' होने से सांतरित एवं अनुपलब्ध भी होते गये। इस समय ब्रह्म सिद्धांत, ब्रह्मगुप्तसिद्धांत, वशिष्ठसिद्धांत, सूर्यसिद्धांत, ग्रहलाघव, मकरन्द, करण कुतूहल, रामविनोदादि करण ग्रन्थ उपलब्ध हैं। सबके बाद में बना हुआ सबसे अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त ग्रन्थ ग्रहलाघव के रचियता गणेशदैवज्ञ को जब यह निश्चय हुआ कि आगे भी गणित में अन्तर आयेगा, तो उन्होंने गणित शुद्ध करने का निर्देश दे दिया था।

कथमपियदिदंचेद्र रिकालेश्लथं स्यान्मुहुरपि परिलक्ष्येन्दु ग्रहादक्षयोगात्।
सदमलगुरुतुल्यप्राप्तबोधःप्रकाशैः,वाथितसदुपपत्या शुद्धिकेन्द्रे प्रचाल्यै॥

किसी प्रकार मेरे द्वारा कथित ग्रन्थ कालान्तर में शिथिल हो जायें, तो उत्तम गुरु से ज्ञान प्राप्त करके शुद्धि केन्द्र में चालन देकर इसे पुनः शुद्ध कर लेवें। इस समय सूर्यसिद्धांत, ग्रहलाघव, करणकुतूहल, मकरन्दादि गणित से तिथ्यादि के मान में १५ घटी तक का अन्तर आता है और ग्रहों के उदयास्त, वक्री-मार्गी होने में कई-कई दिनों का अन्तर पड़ जाता है, इसीलिए वह इस समय अमाननीय हैं। कहा भी है-

इदानीं सूर्यसिद्धांताद्ग्रहलाधवतोऽपि वा।
मकरंदात्तथा सिद्धास्तथा कर्णकुतूहलात्॥
अशुद्धास्ते समायांति वेधाद्यन्त्रैरमूल्यकैः।
सर्वकार्येष्वतस्त्याज्या ग्रहास्तिथ्यादयोपि च॥

जिस समय में जो सिद्धांतग्रन्थ बने, वह उसी समय दृक्तुल्य थे, तब विद्वज्जनों ने उन्हें स्वीकार किया था। वर्तमान समय में कालभेद से वह भी सान्तरित हो गये। अतः श्रुति स्मृति विहित धार्मिक कार्यों में त्याज्य हैं। यथा-

इदानीं सांतरा जाताः कालभेदान्नभरश्चराः।
धर्मकार्येषु ते त्याज्याः श्रौतस्मार्त विवर्जिताः॥

जिस समय सूर्यसिद्धान्तादि से उत्पादित ग्रह दृक्तुल्य थे, तब ज्योतिष शास्त्रियों ने उन्हें स्वीकार किया था। इस समय सांतरित होने के कारण इनसे उत्पादित तिथ्यादि श्रोत (यज्ञादि) स्मार्त्त (उपनयन विवाहादि) कार्यों में त्याज्य माने जाते हैं।

तिथि चन्द्र कलाओं के मान की होती है। सूर्यचन्द्रांतर (१२ अंश = प्रतिपदादि एक तिथि) से उत्पन्न होती है। यह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म लेनी चाहिए।

तिथिश्चन्द्रकलामाना सूर्यचंद्रान्तरोद्भवा।
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतराग्राह्या प्रत्यक्षा श्रुति सम्मता॥

इसलिए उपरोक्त समस्त आर्षवचनों का समन्वय करते हुए गुरुओं के मार्गदर्शनानुसार सूक्ष्मातिसूक्ष्म केतकीज्योतिर्गणित चित्रापक्षीय अयनांश ततुल्य **श्रीराजधानी पंचांग** का विक्रम सं. २०३९ से शुभारम्भ कर जनता जनार्दन की सेवा तन, मन, धन से करते आ रहे हैं। कृपा गुरुजनों की, त्रुटियाँ सेवक की हैं। आशा है सभी धर्मावलम्बी लाभान्वित होंगे।

श्री राजधानी पञ्चाङ्गम्

पंचांगकर्त्ता- पं. श्री प्रेमपाल कौशिक 'ज्योतिष सम्राट्'
कार्यालय- E-219, मेनरोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-53
दूरभाष- 9968067717, 9899305151, 9868909063
Mail: rajdhanipanchang@gmail.com

पंचांग परिचय

तिथिर्वारश्च नक्षत्र योगः करण मेव च।
एतेषां यत्र विज्ञानं पञ्चाङ्ग तन्निगद्यते॥

तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करणों के विषय में समन्वयात्मक सम्पूर्ण जानकारी जिसमें मिलती हो उसी का नाम पंचांग है। इसके अतिरिक्त पंचांग और भी अनेक बातों से परिचय कराता है, जैसे ग्रहों का उदयास्त, वक्री-मार्गी, कौनसा ग्रह किस राशि के किस अंश पर भ्रमण कर रहा है। व्रत पर्व देश में होने वाले ... एवं काल के शुभाशुभत्व का यथार्थ ज्ञान भी पंचांग से ही होता है। ... सिद्धियोग, सर्वार्थसिद्धियोग मृत्युयोग, भद्रादि के अतिरिक्त विच... अकल्पित घटनाओं की जानकारी पंचांग से मिलती है।

पंचांग शुद्धि के बिना संसार में श्रोत(यज्ञादि) स्मार्त्त (उपनयन विवाह ...) भी कार्य सिद्धि नहीं हो सकता, इसलिए सूक्ष्म शुद्ध गणित से बना हु... ही प्रयोग में लेना चाहिए।

(१) **श्री राजधानी पंचांग** का गणित दिल्ली के उत्तर अक्षांश ... ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ७७।१४ के आधार पर किया गया है। पक्षों ... से पूर्व वार व नक्षत्रों के संयोग से बनने वाले आनन्दादि योग दिए ... पृष्ठ ६५ पर लग्नों का समय प्रारम्भकाल घं.मि. में लि...

(२) तिथि नक्षत्र और योगों का समाप्तिकाल पहले घटी-पलोंमें स्था... दिल्ली का है। घण्टा-मिनटों में दिया गया समय समस्त भारतव... स्टैं.टा. पूरे देश में एक समान रहता है। करण घटी-पल में लि...

(३) घट्यादि दिनमान दिल्ली का है। ६० में से घटाने पर शेष रात्रिमा... पल होगा। प्रत्येक स्थान का दिनमान न्यूनाधिक होता है।

(४) सूर्योदयास्त घण्टा-मिनट में दिल्ली का लिखा गया है। दूसरे दे... में प्रयोग करते समय समयान्तर को ध्यान में रखें।

(५) तारीखें क्रमशः गते, राष्ट्रीयमिति, प्रविष्टा, मुस्लिम और अंग्रेजी ... हैं। प्रविष्टा सौर तारीख को ही बंगला तारीख कहते हैं।

(६) तारीखों से आगे वाले कालम में चन्द्रसंचार (चन्द्रमा का राशि ... घंटा-मिनटों में लिखा गया है।

(७) दैनिक राश्यादि रवि स्पष्ट प्रातः ५ घण्टा ३० मिनट का दिया ... साथ ही दैनिक गति कला-विकला में दी गई है।

(८) सूर्य से आगे के सन्दर्भ का सभी समय स्टैं.टा. घण्टा-मिनटों में ... गया है, जो कि समस्त भारतवर्षोपयोगी है।

विषय - सूची संवत् 2077 सन् 2020-21

विषय सूची........ १
सरकारी छुट्टियाँ प्रमुख व्रतोत्सव........ २
श्रीगणेश चतुर्थी, कालाष्टमी, एकादशीव्रत........ ३
पूर्णिमा, रोहिणीव्रत, श्राद्धदिनादि........ ४
मुस्लिम-क्रिश्चियन त्यौहार,यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र........ ५
मेला उत्सव, ब्रज के खास उत्सव........ ६
ग्रहयुति, मूल, गण्डमूल नक्षत्र, पंचक........ ७
सूर्य चन्द्र ग्रहण विवरण........ ८
देश के अन्यान्य शहरों में ग्रहण, कुम्भयोग........ ९
पूर्णशुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः........ १०-११
पंजाबादि द्विगर्तदेशीय विवाहमुहूर्त्ताः........ १२-१३
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक, विवाह के लिए तारीखें........ १४-१५
द्विरागमन, यज्ञोपवीत, गृहारम्भ मुहूर्त्ताः........ १६
गृहप्रवेश-गृहारम्भमुहूर्त्ताः........ १६-१७
उद्योगसंचालन, व्यापार मुहूर्त्त........ १८
वाहन लेन-देन, देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त........ १९
नलकूपारम्भ, वायरलभट्टी के मुहूर्त्त........ २०
क्रांतिसाम्य महापात,भैरव-भवानी संवाद........ २१
सन संवत् राजा-मन्त्री का फल, विश्वामान........ २२
संवतसर फलम्, आर्षमान, शनि साढ़ेसाती........ २३
लाभ-खर्च, राहुकाल कोष्ठक, अभिजित् नक्षत्र........ २४
श्रीवृद्धि सौख्य-समृद्धि श्रीगणेशादि देवपूजन........ २५
सूर्यादि ग्रहों के राशिनक्षत्र चार, वक्री-मार्गी........ २६
दै.ग्रहस्पष्ट, सूर्यक्रांति, चन्द्रोदयास्त, साम्पातिककाल.. २७-३७
सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धि, द्विपुष्कर त्रिपुष्करयोग........ ३८
चैत्रादिमास २६ पक्ष........ ३९-६४
दैनिक लग्नारम्भ देखने की सारणी........ ६५-७०
भारत के प्रसिद्ध नगरों की लग्न परिवर्तन तालिका........ ७१
चरसंस्कारसारणी, दिनमान-सूर्योदयास्तज्ञानम्........ ७२
लग्नसारणी एवं इष्ट बनाने की नई विधि........ ७३
दशम लग्न सारणी, समय परिवर्तन विधि........ ७४
वेलान्तर व साम्पातिककाल ज्ञानार्थ कोष्ठक........ ७५
देश-विदेश की लग्न ज्ञानसारणी........ ७६
देशकाल सुबोधिनी तालिका, पलभाज्ञान सारणी........ ७७-८०
गोलाकार अ,व,क,हा,डा चक्र व पंचांगपरिवर्तनविधि ८१
प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्तकाल........ ८२-८३
लघुगुणक कोष्ठक, तत्काल ग्रहस्पष्ट करने की विधि........ ८४-८५
अष्टकवर्ग में रेखाविचार व ग्रहोंकी अवस्था एवं फल... ८६
होरादि षट्वर्ग ज्ञानार्थचक्र,कुण्डली बनाने की विधि... ८७
षट्वर्ग कुण्डलियों के फल, नवमांश ज्ञानाय चक्र........ ८८
विंशोत्तरी दशा-अन्तरदशा, योगिनीदशा ज्ञानार्थ चक्र ८९
चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा साधन सारणी........ ९०-९१
वर्षफल बनाने की सरल विधि........ ९२
वस्तु ध्रुवांक, तेजी-मन्दीज्ञान, संयुक्ताक्षर राशिज्ञान........ ९३
नक्षत्रचरण, राशिस्वामी वर्णादि ज्ञानाय होड़ा चक्र........ ९४
जातकप्रकरण, नामरखनेकी विधि, बच्चोंके सुन्दरनाम ९५-९७
पायादेखना, नक्षत्रकष्टावली, रोग और निदान........ ९८
मेषादि राशि एवं लग्नों में जन्म लेने का फल........ ९९
मास दशा एवं सुयोग-कुयोग देखने का चक्र........ १००
सूर्यादि ग्रहों के गुणधर्म, दृष्टि आदि का विचार........ १०१
राशियों के गुणधर्म ज्ञानायचक्र, भकूट गुण-दोष........ १०२
विवाहसंस्कार, शुभमास नक्षत्रादि विवरण........ १०३
विवाहमें सूर्य, चन्द्र, गुरुबल देखना, राशि की प्रधानता १०४
राशियों के शुभाशुभ योग, तेललेपन (वानदेखना)........ १०५
वर-वधु गुण मेलापक सारणी........ १०६-१०७
शान्ति प्रकरण-ग्रहशान्ति के लिए दानोपाय........ १०८-११०
प्रश्नप्रकरण, लग्नों का फल रोगत्रिनाड़ी चक्र........ १११-११२
यात्रा मुहूर्त्त, चौघड़िया विचार, छींक का फल........ ११३
गोरखपतरा यात्रामुहूर्त्त, दिशाशूल आदि देखना........ ११४
मुहूर्त्तसंबंधी जानकारी, भद्रा-शिववास-होमाहुतिज्ञान........ ११५
वास्तुविचार,कांकिणी से लाभालाभ,कालकी परिभाषा ११६
आवश्यक मुहूर्त्त, वारों में करने योग्य कर्म........ ११७-११८
चौघड़िया मुहूर्तों के समय भा.स्टैं.टा. में........ ११९
कुण्डली के द्वादशभावों में ग्रहों का फल........ १२०
चद्रमाका नक्षत्रचार, नाम रखनेकी सुविधा........ १२१-१२४
पंजाब में विवाहार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक........ १२५
संदिग्ध व्रत-पर्व और धर्मशास्त्रीय व्यवस्था........ १२६-१२७
दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र........ १२८-१३१
श्री ज्योतिष विद्या........ १३२
चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव........ १३३-१३४
शेयर बाजार की दशा दिशा एवं धारणा........ १३५-१३७
भाग्य में वृद्धि हेतु ज्योतिष द्वारा छोटे उपाय........ १३८
होलीमें किए जाने वाले उपाय, शिवाज्ञा द्विघटिकामुहूर्त्त १३९
राशिफल गोचर ग्रहानुसार........ १४०-१४३
कालसर्प योग विवरण, अग्निवास ज्ञानाय कोष्ठक........ १४४

★ इस वर्ष के नये विषय ★

श्री ज्योतिष विद्या पृष्ठ १३२
भाग्य में वृद्धि हेतु ज्योतिष उपाय पृष्ठ १३४

गच्छतःस्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः॥

विदुषामनुचरः पं. प्रेमपाल कौशिक ज्यो.
E-219, मेनरोड, जगजीत नगर, दिल्ली-110053
फोन नं. 9968067717, 9868909063
E-Mail: rajdhanipanchang@Gmail.com

सरकारी छुट्टियाँ एवम् प्रमुख पर्व-दिन, मेला दशहरा, त्यौहार आदि (25 मार्च 2020 से 12 अप्रैल 2021 तक)

सन् २०२०

- *गुड़ी१,नवरात्रारम्भ,गौतमज. २५मार्च
- श्रीझूलेलाल जयंती २६ "
- गणगौरपूजन, सरहुल (बि.) २७ "
- स्कन्दषष्ठी, मेला अमृतसर ३० "
- 卐 बैंकवार्षिक लेखाबन्दी १ अप्रै.
- * श्रीरामनवमी व्रतोत्सव २ "
- श्रीरामचरित मानस जयंती २ "
- फूलडोल ग्यारस वृन्दावन ४ "
- * श्रीमहावीर जयंती(जैन) ६ "
- चैत्रीपूर्णिमा, श्रीहनुमज्जयंती ८ "
- * गुडफ्राईडे, सबेरात यवन १० "
- वैशाखीपर्व, खालसा जयंती १३ "
- * डा.अम्बेडकरजयंती,विशू १४ "
- (वै.)बाबू कुंवरसिंहज.(बि.) २३ "
- वीर शिवाजीजयंती,रोजाप्रा. २५ "
- श्रीपरशुराम जयंती २५ "
- श्रीशंकराचार्य-सूरदासजयंती २८ "
- श्री रामानुजाचार्यजयंती उभा. २९ "
- (वै.)श्रमिकदिवस, मईडे १ मई
- श्रीजानकी नवमी वैष्णव २ "
- * बुद्धपूर्णिमा श्रीबुद्धजयंती ७ "
- सन्त दादूदयालपुण्य: नरेना १५ "
- वट्सावित्रीव्रत पूजन २२ "
- *ईदुलफितरमीठीईद,प्रतापज. २५ "
- (वै.) शहीदी गुरुअर्जुनदेव २६ "
- अरण्यषष्ठी, सावरकरजयंती २८ "
- बड़पूजा केवल भिण्ड में २९ "
- श्रीदुर्गाष्टमी,मे.क्षीरभवानी(क) ३० "
- (वै.)श्रीगङ्गादशहरामे.हरिद्वार १ जून
- मेला खाटूश्याम (राज.) ३ "
- संतकबीरज.गुर्जराणांवट्पूजन ५ "
- अन्तर्राष्ट्रीय योगदिवस सूर्यग्रहण २१ "
- गुप्त नवरात्रविधान प्रारम्भ २२ "
- (वै.)जगन्नाथ रथयात्रा(पुरी) २३ "
- शयनीएकादशी,पंढरपुरयात्रा १ जुला
- (वै.) गुरुपूर्णिमा,व्यासपूजा ५ "
- नागपंचमी(राजस्थान बंगाल) १० "
- (वै.)मासशिवरात्रि रुद्राभिषेक १९ "
- हरियाली सोमोतीमावस पर्व २० "
- सिंधारादूज,स्वा.करपात्रीजयंती २२ "
- (वै.)मधुश्रवातीज,सुवर्णगौरीव्रत २३ "
- नागपंचमी देशाचारे २५ "
- मानसकवि तुलसीदास जयंती २७ "
- श्रीदुर्गाष्टमी,मे.चिन्तपूर्णी(हि.) २७ "
- * ईदुलजुहा (बकरीद) १ अग.
- *रक्षाबन्धन(राखी),संस्कृतदि. ३ "
- कजरीतीज, सातूड़ीतीज ६ "
- ललहीछटिपूजा (बिहार) ९ "
- संतज्ञानेश्वरज., गुरुजम्भेश्वरज. ११ "
- श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत स्मार्त्त ११ "
- *श्रीकृष्णजन्माष्टमी वैष्णव १२ "
- गोगानवमी नन्दोत्सव,नंदगांव १३ "
- * ७४वाँ स्वतन्त्रतादिवस १५ "
- भगवानकृष्ण का छटीपूजन १७ "
- पिठोरी३०,मे.सुथरेशाहदिल्ली १९ "
- (वै.) गणेशचतुर्थीव्रत जन्मोत्सव २२ "
- (वै.) ऋषिपंचमी जैनसंवत्सरी २३ "
- बलदेवछटिमेला ब्रजमंडल २४ अग.
- राधाष्टमी व्रतोत्सव बरसाना २६ "
- श्रीचन्दनवमी (उदासीनसं.) २७ "
- फूलडोलमे.चारभुजाजीमेवाड़ २९ "
- * मोहर्रम (ताजिया) ३० "
- (वै.)ओनमपर्व केरल-तमिल ३१ "
- अनन्त१४, गणेशविसर्जन १ सित.
- प्रौष्ठपदीपूर्णिमा,कु.संध्यापूजन २ "
- (वै.) शिक्षकदिवस ५ "
- मातृनवमी सौभाग्यवतीश्राद्ध ११ "
- श्रीरामबरात मेला आगरा १३ "
- पितरविसर्जन, श्राद्ध, तर्पण १७ "
- (वै.) श्रीविश्वकर्मा पूजा १७ "
- पुरुषोत्तममास प्रारम्भ १८ "
- 卐बैंकअर्द्धवार्षिकलेखाबंदी ३० "
- *श्रीगांधी-शास्त्रीजीजयंती २ अक्टू.
- पुरुषोत्तम मास समाप्त १६ "
- शा.नवरात्रप्रा. अग्रसेनजयंती १७ "
- * दुर्गाष्टमी,भद्रकालीअवतार २३ "
- * विजयादशमी दशहरा मेला २५ "
- श्रीमाध्वाचार्यज.बौद्धावतार: २६ "
- * बाराबफात ईद-ए-मिलाद ३० "
- कोजागरीव्रत,लक्ष्मीन्द्रयोपूजा ३० "
- * शरद्पूनो,खीरभोगअर्पण ३१ "
- * महर्षि बाल्मीकजयंती ३१ "
- करवाचौथ व्रत ४ नव.
- अहोईअष्टमीव्रत,राधाकुंडस्नान ८ "
- (वै.)धनतेरस, धनवन्तरिज. १२ "
- * दीपावली, महालक्ष्मीपूजन १४ "
- बालदिवस, नेहरुज. १४ नव.
- अन्नकूट,गोवर्धन,बलिपूजा १५ "
- (वै.) भैय्यादूज, यमद्वितीया १६ "
- * सूर्यषष्ठी, छटिपूजा बिहार २० "
- गोपाष्टमी, गोपूजन, दान २२ "
- आंवलानवमी,जुगलजोड़ीपरिक्रमा २३ "
- प्रबोधिनी११व्रत (देवउठान) २५ "
- मे. खाटूश्यामजयंती (राज.) २६ "
- * कार्तिकीपूर्णिमा,मे.हरिद्वार ३० "
- *गुरुनानकज.निम्बार्काचार्यज. ३० "
- महाकाल भैरवाष्टमी ७ दिस.
- महावीरस्वामीदीक्षादि.जैनकल्याणंक १० "
- सोमोतीमावस पर्वदिन १४ "
- श्रीबांकेबिहारी प्राकट्योत्सव १९ "
- श्रीरामजानकी विवाहोत्सव १९ "
- गुरुतेगबहादुरबलिदानदिवस १९ "
- स्कन्दषष्ठी चम्पाषष्ठी गुहाषष्ठी २० "
- गीताजयंती,मोक्षदा११व्रत २५ "
- * क्रिसमसडे, पं.मालवीयज. २५ "
- न्यू ईयर इव ३१ "

सन् २०२१

- * ईसाई नववर्षारम्भ १ जन.
- स्वामी विवेकानन्द जयंती १२ "
- (वै.)लोहड़ी(पं.),वकुलामावस १३ "
- *मकरसंक्रान्तिपुण्य:पोंगलपर्व १४ "
- गुरु गोविन्दसिंह जयंती २० "
- * गणतन्त्रदिवस ७२वाँ २६ "
- संकष्टीचौथ(सकटचौथव्रत) ३१ "
- श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती ४ फर.
- मेरुत्रयोदशी जैन कल्याणंक ९ फर.
- मौनीमावस स्नानादिपर्व ११ "
- गुप्त नवरात्रविधान प्रारम्भ १२ "
- (वै.)वसन्तपंचमी,छोटूरामज. १६ "
- रथसप्तमी,देवनारायणज.गुर्जर १९ "
- राधादामोदरप्राकट्योत्सव वृंदा २२ "
- मरु महोत्सव जैसलमेर २५ "
- जितेन्द्र रथयात्रा जैन २६ "
- * गु.रविदासज. माघीपूर्णिमा २७ "
- महाकालेश्वरपूजा उज्जैन ३ मार्च
- महर्षि दयानन्द जयंती ८ "
- *महाशिवरात्रिव्रत,ऋषिबोधोत्सव ११ "
- शनैश्चरीमावस,मे.शिंगणापुर १३ "
- फुलैरादूज,रामकृष्णपरमहंसज. १५ "
- होलाष्टकप्रा.संतदादूदयालज. २२ "
- लट्ठमार होरी बरसाना २३ "
- लट्ठमार होरी नन्दगाँव २४ "
- लट्ठमार होरी जन्मभूमि मथुरा २५ "
- मेला खाटूश्याम (राज.) २६ "
- (वै.)होलिकादहन,महाप्रभुज. २८ "
- * धुलैण्डी,गणगौरपूजनारंभ २९ "
- संततुकारामज.,रंगजीमंदिरोत्सव ३० "
- 卐 बैंकवार्षिक लेखाबन्दी १ अप्रै.
- रंगपंचमी, मातापूजन १ "
- गुडफ्राईडे, शीतलापूजन २ "
- शीतलामातापूजन,बासोड़ा ३ "
- शीतलाष्टमी रङ्गजीरथोत्सव ४ "
- केशरियामे.मेवाड़,वर्षीतप ४ "
- नौचन्दीमेला मेरठ ११ "
- सोमवती अमापुण्य: १२ "

नोट:- भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश चिह्न * युक्त दिनों के अतिरिक्त सभी रविवार तथा प्रतिमास द्वितीय शनिवार को भी छुट्टी जानें। (वै.) इस चिह्न वाले अवकाश सर्वत्र मान्य नहीं हैं, जिलाधीश महोदय की आज्ञा से वैकल्पिक व्यवस्था समझें। मुस्लिम त्यौहारोंमें स्थानीय चन्द्रदर्शन विभेद से एक दिनान्तर पूर्वापर अवकाश भी हो सकता है। इस 卐 चिह्न वाले दिनावकाश केवल ट्रेजरी एवं बैंक से सम्बन्धित हैं।

सूचना:- सरकारी छुट्टियाँ तथा पर्वदिन तारीखों को भारत सरकार के गजट की सूची से मिलान कर लेना चाहिए। देशकाल परिस्थितिवसात् किंचित फेरबदल का उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं है।

श्री गणेश चतुर्थीव्रत

वैशाख	११ अप्रैल	शनिवार
ज्येष्ठ	१० मई	रविवार
आषाढ़	८ जून	सोमवार
श्रावण	८ जुला.	बुधवार
श्रावण वरद्४	२४ "	शुक्रवार
भाद्रपद बहुला४	७ अग.	शुक्रवार
भाद्रपद गणेशज.	२२ "	शनिवार
प्र.आश्वि.	५ सित.	शनिवार
द्वि.आश्वि	५ अक्टू.	सोमवार
कार्तिक करवाचौथ	४ नव.	बुधवार
मार्गशीर्ष	३ दिस.	गुरुवार
मार्गशीर्ष वैनायकी	१८ "	शुक्रवार
पौष	२ जन.	शनिवार
माघ सकटचौथ	३१ "	रविवार
माघ तिलचतुर्थी	१५ फर.	सोमवार
फाल्गुन	२ मार्च	मंगलवार
चैत्र	३१ "	बुधवार

मासिक कालाष्टमी व्रत

वैशाख	१४ अप्रैल	मंगलवार
ज्येष्ठ	१४ मई	गुरुवार
आषाढ़	१३ जून	शनिवार
श्रावण	१२ जुला.	रविवार
भाद्रपद	११ अग.	मंगलवार
प्र.आश्वि	१० सित.	गुरुवार
द्वि.आश्वि	९ अक्टू.	शुक्रवार
कार्तिक	८ नव.	रविवार
मार्गशीर्षभैरवाष्टमी	७ दिस.	सोमवार
पौष	६ जन.	बुधवार
माघ	४ फर.	गुरुवार
फाल्गुन	५ मार्च	शुक्रवार
चैत्र	४ अप्रैल	रविवार

एकादशी व्रत

चैत्र	शुक्ल	कामदा	४ अप्रैल	शनि
वैशाख	कृष्ण	वरुथिनी	१८ "	शनि
"	शुक्ल	मोहिनी स्मा.	३ मई	रवि
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	१८ "	सोम
"	शुक्ल	निर्जला	२ जून	मंगल
आषा.	कृष्ण	योगिनी	१७ "	बुध
"	शुक्ल	शयनी	१ जुला.	बुध
श्रावण	कृष्ण	कामिका	१६ "	गुरु
"	शुक्ल	पवित्रा	३० "	गुरु
भाद्रपद	कृष्ण	अजा	१५ अग.	शनि
"	शुक्ल	पद्मा	२९ "	शनि
प्रआश्वि	कृष्ण	इन्दिरा	१३ सित.	रवि
"	शुक्ल	कमला	२७ "	रवि
द्विआश्वि	कृष्ण	कमला	१३ अक्टू.	मंगल
"	शुक्ल	पापांकुशा	२७ "	मंगल
कार्तिक	कृष्ण	रमा	११ नव.	बुध
"	शुक्ल	प्रबोधिनी	२५ "	बुध
मार्ग.	कृष्ण	उत्पन्ना स्मा.	१० दिस.	गुरु
"	शुक्ल	मोक्षदा	२५ "	शुक्र
पौष	कृष्ण	सफला	९ जन.	शनि
"	शुक्ल	पुत्रदा	२४ "	रवि
माघ	कृष्ण	षट्तिला	७ फर.	रवि
"	शुक्ल	जया	२३ "	मंगल
फाल्गु.	कृष्ण	विजया	९ मार्च	मंगल
"	शुक्ल	आमला	२५ "	गुरु
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	७ अप्रैल	बुध

एकादशीव्रत स्मार्त्त- सद्गृहस्थियों के लिए हैं, जिससे अग्रिमदिन चक्रांकित महाभागवत वैष्णवजन, साधू-सन्यासी, योगी, जती, विधवा स्त्रियाँ व्रत करती हैं। जिस एकादशी के सामने कुछ नहीं लिखा वह सभी के लिए एक समान है।

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	५	अप्रैल	रविवार
वैशाख	कृष्ण	२०	"	सोमवार
"	शुक्ल	५	मई	मंगलवार
ज्येष्ठ	कृष्ण	२०	"	बुधवार
"	शुक्ल	३	जून	बुधवार
आषाढ़	कृष्ण	१८	"	गुरुवार
"	शुक्ल	२	जुला.	गुरुवार
श्रावण	कृष्ण	१८	"	शनिवार
"	शुक्ल	१	अग.	शनिवार
भाद्रपद	कृष्ण	१६	"	रविवार
"	शुक्ल	३०	"	रविवार
प्रआश्वि.	कृष्ण	१५	सित.	मंगलवार
"	शुक्ल	२९	"	मंगलवार
द्विआश्वि.	कृष्ण	१४	अक्टू	बुधवार
"	शुक्ल	२८	"	बुधवार
कार्तिक	कृष्ण	१३	नव.	शुक्रवार
"	शुक्ल	२७	"	शुक्रवार
मार्ग.	कृष्ण	१२	दिस.	शनिवार
"	शुक्ल	२७	"	रविवार
पौष	कृष्ण	१०	जन.	रविवार
"	शुक्ल	२६	"	मंगलवार
माघ	कृष्ण	९	फर.	मंगलवार
"	शुक्ल	२४	"	बुधवार
फाल्गुन	कृष्ण	१०	मार्च	बुधवार
"	शुक्ल	२६	"	शुक्रवार
चैत्र	कृष्ण	९	अप्रैल	शुक्रवार

प्रदोषव्रत की विशेषताएं- इस व्रत में सूर्यास्त के बाद आशुतोष भगवान् शिव का पूजन किया जाता है। कर्ज से मुक्त होने के लिए मंगलवार का, शान्ति सुरक्षा के लिए सोमवार का, रोग आदिव्याधि अन्य उपद्रव शान्ति के लिए रविवार का प्रदोषव्रत अतिउत्तम रहता है। नियमित व्रत करने वाले सुखी जीवन जीते हैं। अन्त में मोक्ष के भागीदार बनते हैं।

मासिक शिवरात्रि व्रत

शिवरात्रि व्रत पूजन- प्रतिमास कृष्ण पक्षीय निशीथ काल व्यापिनी चतुर्दशी में किया जाता है। समाज में फाल्गुन तथा श्रावण मास पूजा विशेष प्रचलित है। **ईशान संहिता** के अनुसार फाल्गुन में ज्योतिर्लिङ्ग का प्रादुर्भाव हुआ था- **शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटिसूर्य समप्रभः।** इसलिए उसे महाशिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। जनश्रुतियों के अनुसार श्रावण में शिवजी संसार की रक्षा हेतु विषपान किया था। विष की विकलता में इधर-उधर भागने लगे तब सबने गर्मी से बचाने के लिए जलाभिषेक किया, तभी से श्रीगंगाजल से द्वारा रुद्राभिषेक की परम्परा शुरु हुई है।

श्रीगङ्गाजल से शिव अभिषेक आराधना में सर्वोत्तम माना जाता है। गङ्गाजल के अतिरिक्त रलोदक, इक्षुरस (गन्नेका रस), दुग्ध, पञ्चामृत(दूध, दही, घी, चीनी, शहद) आदि अनेक द्रव्यों से किया जाता है। **वृहद्धर्मपुराण अ.५७ में** तो यहां तक लिखा है कि शिवलिङ्ग में सभी देवताओं का पूजन करें। **शिवलिङ्गेऽपि सर्वेषां देवानां पूजनं भवेत्। सर्वलोकमये यस्याच्छिव शक्तिर्विभुः प्रभुः॥** **पञ्चाक्षर मन्त्र-(नमःशिवाय)** **षडाक्षर मन्त्र- (ॐनमःशिवाय)।** शिवजी के अनन्य भक्त श्रावणमास में कन्धे पर कांवड़ि उठाए नंगे पांव भागते दौड़ते, मुख से बोलते **बम-बम भोले। हर-हर महादेव॥** का उद्घोष करते अत्यन्त शोभायमान लगते हैं। अवढ़र दानी सदाशिव सबकी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

वैशाख	(सन्२०२०)	२१ अप्रै.	मंगलवार
ज्येष्ठ		२० मई	बुधवार
आषाढ़		१९ जून	शुक्रवार
श्रावण	(विशेष)	१९ जुला.	रविवार
भाद्रपद		१७ अग.	सोमवार
आश्विन		१५ सित.	मंगलवार
आश्विन		१५ अक्टू.	गुरुवार
कार्तिक		१३ नव.	शुक्रवार
मार्गशीर्ष		१३ दिस.	रविवार
पौष	(सन्२०२१)	११ जन.	सोमवार
माघ		१० फर.	बुधवार
फाल्गुन	महाशिवरात्रि	११ मार्च	गुरुवार
चैत्र		१० अप्रै.	शनिवार

व्रत की पूर्णमाएं

चैत्र (सन्२०२०)	७अप्रैल	मंगलवार
वैशाख	६ मई	बुधवार
ज्येष्ठ	५ जून	शुक्रवार
आषाढ़	४ जुला.	शनिवार
श्रावण	३ अग.	सोमवार
भाद्रपद	१ सित.	मंगलवार
प्रआश्वि.	१ अक्टू.	गुरुवार
द्विआश्वि.	३१ "	शनिवार
कार्तिक	२९ नव.	रविवार
मार्ग.	२९ दिस.	मंगलवार
पौष (सन्२०२१)	२८ जन.	गुरुवार
माघ	२६ फर.	शुक्रवार
फाल्गुन	२८ मार्च	रविवार

अमावस्याएं

वैशाख(सन्२०२०)	२३ अप्रै.	गुरुवार
ज्येष्ठ	२२ मई	शुक्रवार
आषाढ़	२१ जून	रविवार
श्रावण	२० जुला.	सोमवार
भाद्रपद	१९ अग.	बुधवार
प्रआश्वि.	१७ सित.	गुरुवार
द्विआश्वि.	१६ अक्टू.	शुक्रवार
कार्तिक	१५ नव.	रविवार
मार्गशीर्ष	१४ दिस.	सोमवार
पौष (सन्२०२१)	१३ जन.	बुधवार
माघ	११ फर.	गुरुवार
फाल्गुन	१३ मार्च	शनिवार
चैत्र	१२ अप्रै.	सोमवार

नोटः- अपराह्नकाल व्यापिनी अमावस्या पितरकार्य तथा उदयकाल व्यापिनी देवकार्य में ग्रहण की जाती है।

संक्रान्तियाँ पुण्यकाल

मेष	१४ अप्रैल	पुण्यकालअपराह्न तक
वृष	१४ मई	पुण्यकाल१० ।५२उप.
मिथुन	१४ जून	पुण्यकाल अग्रिमदिन
कर्क	१६ जुला.	विशेष पुण्यः ५ ।३८से
सिंह	१६ अग.	पुण्यकाल अपराह्ने
कन्या	१६ सित.	पुण्यकाल अग्रिमदिन
तुला	१७ अक्टू.	पुण्यकाल दिनभर
वृश्चि.	१६ नव.	पुण्यकाल दिनभर
धनु	१५ दिस.	पुण्यकालअग्रिमदिन
मकर	१४ जन.	पुण्यकाल दिनभर
कुम्भ	१२ फर.	पुण्यकाल १४ ।४८ से
मीन	१४ मार्च	पुण्यकाल अग्रिमदिन

सौंदर्यवर्धक सौभाग्य सुखसूचक रोहिणी व्रत

चैत्र	२९ मार्च	रविवार
वैशाख	२६ अप्रैल	रविवार
ज्येष्ठ	२३ मई	शनिवार
आषाढ़	१९ जून	शुक्रवार
श्रावण	१७ जुलाई	शुक्रवार
भाद्रपद	१३ अगस्त	गुरुवार
प्र.आश्वि.	९ सितम्बर	बुधवार
द्विआश्वि.	७ अक्टूबर	बुधवार
कार्तिक	३ नवम्बर	मंगलवार
कार्तिक	३० "	सोमवार
मार्गशीर्ष	२७ दिसम्बर	रविवार
पौष	२४ जनवरी	रविवार
माघ	२० फरवरी	शनिवार
फाल्गुन	१९ मार्च	शुक्रवार

'चन्द्र पत्नी च रोहिणी' सूत्रानुसार जिस दिन चन्द्रमा अपनी सर्वाधिक प्रियपत्नी रोहिणी के यहाँ निवास करते हैं। उस दिन विदूषी महिलाएं अपने बल पुरुषार्थ मय सौन्दर्यवृद्धि, सौभाग्य सुखोपभोग भोगने की कामना से रोहिणी व्रत किया करती हैं। यह व्रत किस दिन करना अभिष्ट रहेगा, इसका उल्लेख हम प्रतिवर्ष पाठकों की सुविधा के लिए कर देते हैं। जनश्रुति के अनुसार रोहिणी ने चन्द्रमा से यह वर प्राप्त किया था कि जो भी मेरे आपके सानिध्यदिवस में व्रत रखकर तारोदय होने पर सविधिपूजन करके अर्घ्य देकर चन्द्रमा सहित रोहिणी का ध्यान करेंगी, उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाऐंगी।

रोहिणीशःसुधामूर्तिःसुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थाम सम्भूतां पीडांदहतु मे विधुः॥

पद्मपुराण में उल्लिखित ऋषिखण्ड के अनुसार भीष्मजी के प्रश्नोत्तर में पुलस्त्यमुनि ने कहा- हे राजन्। इस लोक में रोहिणी चन्द्रशयन नामक व्रत बड़ा ही उत्तम माना गया है, जिसके करने वालों को अक्षय स्वर्ग सुख की प्राप्ति होती है। इसमें चन्द्रमा के नामोच्चार सहित नारायण का पूजन होता है। सोमवार में रोहिणी नक्षत्र होने से यह सबल योग बनता है।

आश्विन पितरपक्ष के श्राद्ध

प्रतिपदा का श्राद्ध	३	सित.	गुरुवार
द्वितीया का श्राद्ध	४	"	शुक्रवार
तृतीया का श्राद्ध	५	"	शनिवार
चतुर्थी का श्राद्ध	६	"	रविवार
पंचमी का श्राद्ध	७	"	सोमवार
षष्ठी का श्राद्ध	८	सित.	मंगलवार
सप्तमी का श्राद्ध	९	"	बुधवार
अष्टमी का श्राद्ध	१०	"	गुरुवार
नवमी卐 का श्राद्ध	११	"	शुक्रवार
दशमी का श्राद्ध	१२	"	शनिवार
एकादशीका श्राद्ध	१३	"	रविवार
द्वादशीका श्राद्ध	१४	"	सोमवार
त्रयोदशीका श्राद्ध	१५	"	मंगलवार
चतुर्दशी * का श्राद्ध	१६	"	बुधवार
भूलेबिछुडों का श्राद्ध	१७	"	गुरुवार

卐 मातृनवमी वाले दिन सुहागिन(मृतक) स्त्रियों का श्राद्ध विशेषरूप से किया जाता है। * विष, जलाग्नि, अस्त्र, शस्त्र, चोट-फेंट, विषाक्त जीव-जन्तुओं के दंश (काटने) एवं अपमृत्यु वालों का श्राद्ध चतुर्दशी तिथि में होता है। भले ही उनकी मृत्यु चाहे जिस तिथि में हुई हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्युवालों का श्राद्ध सर्वपितृ अमावस्या वाले दिन करना चाहिए। पिशाचमोचन (मुक्तियर्थ) श्राद्ध मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में किया जाता है।

नोटः- मृत्यु तिथि पर होने वाले श्राद्ध को अपराह्नकाल में करने की शास्त्राज्ञा है। कभी-कभी ह्रासवृद्धि के कारण अभिष्ट तिथि दो दिन अपराह्न को स्पर्श कर लेती है। उस परिस्थिति में सुविधानुसार श्राद्ध पूर्वापर दिन कर सकते हैं।

सिक्खों के गुरुपर्व
नानकशाही कैलेण्डर अनुसार

श्रीगुरु अंगदेव जी	१८ अप्रैल	शनिवार
श्रीगुरु तेगबहादुर जी	१८ अप्रैल	शनिवार
श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	२ मई	शनिवार
श्रीगुरु अमरदास जी	२३ मई	शनिवार
श्रीगुरु हरगोविन्द जी	५ जुलाई	रविवार
श्रीगुरु हरिकिशन जी	२३ जुलाई	गुरुवार
श्रीगुरु रामदास जी	९ अक्टू.	शुक्रवार
श्रीगुरु नानकदेव जी	३० नव.	सोमवार
श्रीगुरु गोविन्दसिंहजी	२० जन.	बुधवार
श्रीगुरु हरराय जी	३१ जन.	रविवार

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी नानकशाही द्वारा प्रसारित गुरुपर्वों की अंग्रेजी ता. लिखी गई है। पुरातन प्रणाली इससे भिन्न है।

जैन पर्वोत्सव

दसलक्षणपर्व प्रारम्भ	२९	मार्च
आ.भिक्षु अभिनिष्क्रमण	२	अप्रैल
श्री महावीर जयन्ती	६	"
श्री महावीर केवल ज्ञान	३	मई
भव्यरत्न दीक्षा दिवस	४	जून
श्री महावीर च्यवन	२६	"
अष्टाह्निका प्रारम्भ	२८	"
जैन मुनीनां चातुर्मास प्रा.	४	जुलाई
तेरापन्थ स्थापनादिवस	५	"
श्रीजयाचार्यनि.दि.	१६	अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	१६	"
जैनसम्वत्सरी दसलक्षणपर्व	२३	"
श्रीकालूनिर्वाण दिवस	२४	"
आ. श्री तुलसी पट्टारोहण	२७	"
आ.श्रीभिक्षु निर्वाणदिवस	३१	"
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	१५	नव.
आ. श्री तुलसीजन्म	१६	"
ज्ञानपंचमी जैन	१९	"
अष्टाह्निका प्रारम्भ	२३	"
चौमासी चौदस जैन	२९	"

जैन चतुर्मास समाप्त	३०	नव.
श्री महावीरदीक्षा दिवस	१०	दिस.
आं.तुलसीदीक्षा दिवस	३	जन.
श्रीपार्श्वनाथ+चन्द्रप्रभुज.	८	"
मेरुत्रयोदशी जैन	९	फर.
दसलक्षण पर्व प्रारम्भ	१७	"
मर्यादा महोत्सव जैन	१९	"
जितेन्द्ररथयात्रा जैन	२६	"
अष्टाहिका प्रारम्भ जैन	२१	मार्च

मुस्लिम त्यौहार

शब्बेरात यवनोत्सव	१०	अप्रैल
रोजे शुरु	२५	"
सहादते हजरत अली	१५	मई
इबादतरात मुस.	१६	"
शब-ए-कद्र	२१	"
जुमातुल विदा	२२	"
ईदुलफितर(मीठीईद)	२५	"
उर्स अमीर खुशरो	१०	जून
हज्ज	३१	जुला.
ईदुलजुहा(बकरीद)	१	अग.
मुहर्रम हिजरी १४४२ प्रा.	२१	"
कत्लरात मुस.	२९	"
मुहर्रम (ताजिया)	३०	"
चैहल्लुम मुस.	८	अक्टू.
आखरीचहार शाम्बा	१४	"
सहादते इमाम हसन	१६	"
बाराबफात ईद-ए-मिलाद	३०	"
ईद-ए-मौलाद मुस.	४	नव.
उर्स मेला निजामुद्दीनप	६	"
ग्यारहवीं शरीफ	२७	"
फतीहायजदहूम	२७	"

क्रिश्चियन त्यौहार

पाम सन्डे	५	अप्रैल
गुडफ्राईडे	१०	"
ईस्टरसन्डे	१२	"
फ्रेंडशिप डे	२	अग.
ईसा जयंती (बड़ादिन)	२५	दिस.
न्यू-ईयर-इव	३१	"
ईसाई नववर्ष २०२१प्रारम्भ	१	जन.
सेंटवेलंटाइन डे	१४	फर.
पामसन्डे	२८	मार्च
गुडफ्राईडे	२	अप्रैल
ईस्टर सन्डें	४	"

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्य जयन्ती(२०२०)	२७	मार्च
श्री रामनवमी जन्मोत्सव	२	अप्रैल
श्री परशुराम जयन्ती	२५	"
श्री नृसिंह जयन्ती	६	मई
श्री कूर्म जयन्ती	६	"
श्री बौद्धावतार जयन्ती	७	"
श्री कल्कि जयन्ती	२५	जुला.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	१२	अग.
श्री वराहावतार जयन्ती	२१	"
श्री वामन जयन्ती	२९	"

दस महाविद्या जयन्तियाँ

श्रीतारा जयन्ती	१	अप्रैल	बुध
श्रीमातङ्गी जयन्ती	२६	"	रवि
श्रीबगलामुखी जयन्ती	१	मई	शुक्र
श्रीछिंन्नमस्ता जयन्ती	५	"	मंगल
श्रीधूमावती जयन्ती	३०	"	शनि
श्रीआद्यकाली जयन्ती	११	अग.	मंगल
श्रीभुवनेश्वरि जयन्ती	३०	"	रवि

श्रीकमला जयन्ती	१४	नव.	शनि
श्रीत्रिपुरभैरव जयन्ती	३०	दिस.	बुध
श्रीललिता जयन्ती	२७	फर.	शनि

द्वादश सिद्धिविद्या जयन्तियाँ

श्री कुब्जिका जयन्ती	२०	अप्रै.	चन्द्र
श्रीसिद्धिलक्ष्मीजयन्ती	५	मई	मंगल
श्री चण्डिका जयन्ती	७	"	गुरु
श्री बटुकभैरवजयन्ती	४	जून	गुरु
श्री पार्वतीजयन्ती	२८	"	रवि
श्री दक्षिणमूर्ति जयन्ती	५	जुला.	रवि
श्री गायत्री जयन्ती	३	अग.	चन्द्र
श्रीविन्ध्यवासिनीजयन्ती	११	"	मंगल
श्री अपराजिता जयन्ती	२५	अक्टू.	रवि
श्रीबालाजीजयन्ती	१३	दिस.	रवि
श्री अन्नपूर्णा जयन्ती	१४	"	चन्द्र
श्री सरस्वतीजयन्ती	१६	फर.	मंगल

नोटः- सिद्धिविद्याओं में से कुब्जिका और पार्वती तो पश्चिमाम्नाय हैं। अन्नपूर्णा व सरस्वती पूर्वाम्नाय हैं। चण्डिका उत्तराम्नाय और सिद्धिलक्ष्मी, बटुक भैरवी दक्षिण मूर्त्ति, गायत्री, विन्ध्यवासिनी, अपराजिता और बाला, ये ऊर्ध्वाम्नाय कहलाती हैं। अभिष्टकार्य सिद्धियर्थ उपासना करें।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना हेतु शुभ समय

श्रीमत्स्यजयंती, स.सि.योग	२७	मार्च
श्रीदुर्गा८, श्रीताराजयंती	१	अप्रैल
मानसजयंती, स.सिद्धियोग	२	"
श्रीहनुमज्जयंती	८	"
मेषसंक्रांति, भद्रायोग	१३	अप्रैल
कुब्जिकाजयंती	२०	"
देवी बगलामुखी जयंती	१	मई
देवी छिन्नमस्ताजयंती	५	"
वैशाखपूनो, चन्द्रिकाजयंती	७	"
भद्रकालीग्यारस	१८	"
भावुका३०, शनिजयंती	२२	"
देवीविन्ध्यवासिनीपूजा	२८	"
देवीधूमावतीजयंती	३०	"
श्रीगंगादशमी	१	जून
श्रीबटुकभैरवजयंती	४	"
कंकणाकृति सूर्यग्रहण	२१	"
गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा	५	जुलाई
मासशिवरात्रि	१९	"
सोमोती३० पर्वदिन	२०	"
श्रीगायत्रीजयंती	३	अग.
आद्यकाली जयंती	११	"
अघोरा१४,सर्वार्थसिद्धियोग	१८	"
वराहजयंती, शुभयोग	२१	"
राधाष्टमी, सर्वार्थसिद्धयोग	२६	"
श्रीभुवनेश्वरिज.,स.सि.योग	३०	"
सर्वपितृअमावस्या	१७	सित.
सर्वार्थसिद्धियोग	२६	"
पुरुषोत्तमीपूर्णिमा	१	अक्टू.
कमलाएकादशी	१३	"
अमा.३०,वैधृतिपात	१६	"
भद्रकालीज.स.सि.योग	२३	"
विजया१०,अपराजिताजयंती	२५	"
शाकम्भरीपूजा,स.सि.योग	३०	"
शरद्पूनो, सिद्धियोग	३१	"
कालाष्टमी,रविपुष्ययोग	८	नव.
कमलाजयंती,लक्ष्मीपूजन	१४	नव.
बलिपूजा,रवि,विशाखा.	१५	"
सूर्यषष्ठी,स.सिद्धियोग	२०	"
प्रबोधिनी कार्यसिद्धियोग	२५	"
कार्तिकीपूर्णिमा, सिद्धियोग	३०	"
अमृतसिद्धियोग	२	दिस.
महाकाल भैरवाष्टमी	७	"
श्रीबालाजी जयंती	१३	"
सोमोतीमावस, ज्येष्ठायोग	१४	"
धनुसंक्रांति,मूलनक्षत्र	१५	"
मोक्षदा११,गीताजयंती	२५	"
कपर्दीश्वर पूजा काशी	२८	"
श्रीविद्याजयंती,अन्नपूर्णाजयंती	३०	"
कालाष्टमी देवीपूजन	६	जन.
वकुलामावस, लोहड़ी	१३	"
मकरसंक्रांति, श्रवणयोग	१४	"
शाम्बदशमी स.सि.योग	२३	"
गुरुपुष्यामृतयोग श्रेष्ठ	२८	"
श्रीगणेशजयंती(उ.भा.)	३१	"
मासशिवरात्रि,कालिकापूजन	१०	फर.
मौनीमावस,धनिष्ठाश्रेष्ठ	११	"
संक्रांति गुप्तनवरात्र	१२	"
वसंत५,श्रीसरस्वतीजयंती	१६	"
देवीललिताज.,माघीपूर्णिमा	२७	"
महाशिवरात्रि,सिद्धियोग	११	मार्च
शनैश्चरीमावस	१३	"
संक्रांति, स.सि.योग	१४	"
वसंतसम्पात,महाविषुवदिन	२०	"
होलिकादहन,स.सि.योग	२८	"
शीतलाष्टमी,स.सि.योग	४	अप्रै.
सोमोतीमावस,श्रीरस्तु	१२	"

देश में होने वाले मेला, दशहरा, अन्यान्य उत्सव, सम्वत् 2077

मे.चीमा नानकसर (पंजाब)	२५मार्च
" आर्यसमाजस्थापन,डा.हेडगेवारज.	२५ "
" श्रीझूलेलालज.सिन्धी	२६ "
" गणगौरपूजन, सरहुल(बिहार)	२७ "
" श्रीरामजन्मोत्सवारम्भ:	२९ "
" माईसरखाना अमृतसर(पंजाब)	३० "
" मनसादेवीचण्डीगढ़, बाहुफोर्टजम्मू	१अप्रै.
" ज्वालामुखी(हरचोबालगुरुदासपुर)	१ "
" श्रीरामजन्मोत्सव (अयोध्या)	२
" ब्राह्मणवास आश्रम नारनौल	२
" माता कांसादेवी(कांसलरोपड़)प्रा.	६ "
" श्री महावीर जयंती जैन	६ "
" देवीगेला हथीहरा कुरुक्षेत्र	७ "
" देवबन्द देवीकुण्ड सहारनपुर	७ "
" सालासर हनुमानबालाजी(राज.)	८ "
" मानकपुर शरीफ (पंजाब)	८ "
" वैशाखीपुण्यपर्व, विशू(केरल)	१३ "
" कशाधा नहयाणीसह कुल्लूप्रा.	१५ "
" पिंजौर (हरि.)	२३ "
" बाबूकुंवरसिंहज.	२३ "
" देवदामोदरतिथि (असम)	२४ "
" पीपलजातर कुल्लू प्रा.	२८ "
" समागमहरिहरघाटमणिकर्णकुल्लू	२ मई
" मनीआऊटरसिराज कुल्लू	७ "
" डूंगरीजातर मनाली २दिन प्रा.	१४ "
" बंजार ४दिन प्रारम्भ कुल्लू	१४ "
" दादूदयालपुण्य: नरेना जयपुर	१५ "
" शाढ़ीजातर नगर हिमाचल	१८ "
" शनिजयंती	२२ "
" दशाश्वमेधघाट (काशी)प्रा.	२३ "
" वीरसावरकर जयंती(हरि.)	२८ "
" बड़पूजा भिण्ड	२९ "
" क्षीरभवानी (कश्मीर)	३० "
" श्रीगङ्गादशहरा मे.(हरिद्वार)	१ जून
" सापोरयात्रा धारलदा(ऊधमपुर)	१ "
" जोड़ ढींढसा (पंजाब)	२ "
" नौवें गुरु बहिरे भटिंडा(पंजाब)	२ "

मे. पंचकोशी यात्रा (काशी)	२ जून
" पीपलू ऊना (हिमा.)	२ "
" खाटूश्याम(राज.)	३ "
" शुद्ध महादेवयात्रा ऊधमपुर	५ "
" भुन्तर कुल्लू तीनदिन	१४ "
" पाण्डवोंका वाडीमे.सरवाझसोलन	१४ "
" सूर्यग्रहण मे.कुरुक्षेत्र,गंगाजी	२१ "
" श्रीजगन्नाथजी रथोत्सव(पुरी)	२३ "
" शरीफभवानी(जम्मूकश्मीर)	२९ "
" पंढरपुर यात्रारम्भ	१ जुला.
" दादा प्रारम्भ अजमेर	१ "
" परिक्रमा मे.नैमिषारण्य	५ "
" गुरुपूर्णिमानदीपारआश्रमकुराली	५ "
" कांवडमेला शुरु हरिद्वार	६ "
" बरसीबाबासंतोखसिंहप्रा.नानकसर	९ "
" बडुसाहिब प्रारम्भ हिमाचल	९ "
" कल्याणदेव शुक्रताल मुजफ्फरनगर	१३ "
" नैनादेवीचिन्तपूर्णी(हिमा.)	१३ "
" रुद्राभिषेक पुरामहादेव मेरठ	१९ "
" नीलकंठमहादेव (उत्तराखंड)	१९ "
" सोमोतीमावस मे.हरिद्वार	२० "
" ह्यग्रीवोत्पत्ति दर्शनभदैनी(उप्र.)	३ अग.
" श्रीअमरनाथदर्शन(कश्मीर)	३ "
" बंगवालउत्सव(उत्तराखंड)	३ "
" ब.स.बा.प्यारासिंहचमकौरसाहिब	५ "
" कजरीप्रतियोगिता(बिहार)	६ "
" द्रोण मेला दनकौर प्रारम्भ	११ "
" श्रीकृष्णजन्माष्टमी मथुरा	१२ "
" कैलाशयात्रा (कश्मीर)	१८ "
" सुथरेशाह (दिल्ली)	१९ "
" वीरजन्मोत्सव जैन	१९ "
" रुणीचा जैसलमेर (राज.)	२० "
" श्रीगुसांईआणां (कुराली)	२० "
" श्रीगणेशोत्सव(मण्डीहिमाचल)	२२ "
" श्रीगणेशजन्मोत्सव(महाराष्ट्र)	२२ "
" पट्टप्रारम्भ (कश्मीर)	२३ "
" बाबाभोलेनाथ फैजाबाद	२३ "

मे. लोलार्कछटि वाराणसी	२४ अग.
" मणिमहेश चम्बा (हिमाचल)	२६ "
" श्रीचन्दनवमीउत्सव उदासीनसं.	२७ "
" नवलदुर्गेमे.रामदेवजी(राज.)	२८ "
" फूलडोलमे.चारभुजाजी(मेवाड़)	२९ "
" वामनद्वादशी(अम्बालापटियाला)	२९ "
" बाबासोढ़ल व छपार(पंजाब)	१ सित.
" गोयन्दबाल अमृतसर	२ "
" श्रीआशापतियात्रा (कश्मीर)	१६ "
" फल्गु पिहोवातीर्थ(हरियाणा)	१७ "
" पितरविसर्जन श्राद्ध गयाजी-पिंडारा	१७ "
" ज्वालामुखी तारादेवी(हिमा.)	२४अक्टू.
" हरचोबाल गुरुदासपुर (पंजाब)	२४ "
" दशहरा कुल्लू (हिमाचल)	२५ "
" पीरभीखनशाह(धड़ामपटियाला)	२८ "
" शाकुम्भरीदेवी (सहारनपुर)	३० "
" देवीहथीहरा कैथल(कुरुक्षेत्र)	३० "
" श्रीहरिओमजी मानकपुरशरीफ	९ नव.
" दीपावली अमृतसर	१४ "
" बटेश्वरका प्रारम्भ(आगरा)	१६ "
" छटिपर्व मेला (बिहार)	२० "
" रेणुका नाहन (हिमाचल)	२५ "
" खाटूश्यामजी(राजस्थान)	२६ "
" बाबारुद्रानारी ऊना(हिमा.)	२६ "
" वीरवैरागी नकोदर(पंजाब)	२८ "
" पुष्करराज रेणुकातीर्थ(राज.)	३० "
" हरिहरक्षेत्रसोनपुरभृगुआश्रमबलिया	३० "
" रामतीर्थकपालमोचन(हरि.)	३० "
" कार्तिकीपूर्णिमा गढ़गङ्गा	३० "
" बाबावैशाखसिंहदुदेहरसाहबअमृतसर	५ दिस.
" ब्राह्मणवास आश्रम नारनौल	८ "
" पुरमण्डलदेविकास्नान(जम्मू)	१३ "
" रामजानकी विवाहोत्सव जनकपुर	१९ "
" नरसी मेहता जयंती	२१ "
" पं.बावलियापुण्य:चिड़ावा	२३ "
" श्रीघालदासज.रामधामखेड़ापा	२५ "
" जोड़मे.फतेहगढ़साहिब(पं.)	२६ "

मे. संगीतबाबा हरबल्लभ(जालंधर)	२७ दिस.
" कपर्दीश्वरयात्रा दर्शन (काशी)	२८ "
" वकुलामावसपर्वदिन(उड़ीसा)	१३ जन.
" मंढारदेवी सतारा(महा.)	१३ "
" हत्तापनाशनस्नान(मद्रास)	१३ "
" लोहड़ी(दाऊविदरख रोपड़)	१३ "
" मुक्तसर(पं.) पोंगल(केरल)	१४ "
" सतगुरुप्रकाशोत्सव:(पंजाब)	२० "
" शाम्बदशमी (उड़ीसा)	२३ "
" मेरुत्रयोदशी जैनोत्सव	९ फर.
" मौनीमावस स्नान प्रयागराज	११ "
" भैनीग्यारस (बंगाल)	२३ "
" वेणेश्वरमहादेव डूंगरपुर(राज.)	२३ "
" पंचखंडपीठ विराटनगर (राज.)	२५ "
" मरुमहोत्सव जैसलमेर(राज.)	२५ "
" जितेन्द्र रथयात्रा जैन	२६ "
" माघीपूर्णिमा स्नानमे.हरिद्वार	२७ "
" शिवबरात दिल्ली	१० मार्च
" महाशिवरात्रि (मण्डीहिमा.)	११ "
" नीलकण्ठमहादेव(उत्तराखंड)	११ "
" राठौड़ा रामपुर(उ.प्र.)	११ "
" फूलडोलोत्सव शाहपुरा मेवाड़	२५ "
" खाटूश्यामजी(राज.)	२५ "
" होला आनन्दपुरसाहिब(पं.)	२९ "
" पंखा मे.झज्जर(हरि.)	२९ "
" गुरु रामसहाय(देहरादून)	२ अप्रै.
" बीरमदास बधोछी(पटियाला)	२ "
" शीतलामाता (कुराली)	३ "
" नाहरपुर (एटा)	३ "
" केशरिया(मेवाड़),केलादेवीकरौली	४ "
" नौचन्दीमेला (मेरठ)	११ "
" पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	११ "

नोट:- देशकाल परिस्थित्यानुसार कभी-कभी पर्वोत्सवों की निर्धारित तिथियों में राज्य सरकारों के स्थानीय प्रबन्धकों को परिवर्तन करने के लिए बाध्य होना पड़ जाता है, सो उसका उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं।

ब्रजक्षेत्र के खास उत्सव

पंचांग श्रवण श्रीबांकेबिहारीजी	२५मार्च
सभी मंदिरों में समय परिवर्तित	२५ "
श्रीयमुनाजी उत्सव वृन्दावन	३० "
देवीमेला नरीसेमरी मथुरा	१अप्रै.
फूलडोल११फूलबंगलाप्रा.वृन्दावन	४ "
बन्दीआनन्दीका मेला मथुरा	६ "
श्रीद्वारिकाधीशजी५६भोगमथुरा	८ "
श्रीकेशवेश्वरमेंजलधारावटस्थापना	१३ "
सतुआभोग फलदान	१३ "
चरणदर्शन सर्वाङ्ग चन्दन लेपन	२६ "
बांकेबिहारीजीमन्दिर वृन्दावन	"
वृन्दावन परिक्रमा वनविहार	९ मई
श्रीकृष्णद्वारा रुक्मिणीहरणलीला	२ जून
श्री जगन्नाथजी स्नानयात्रा गुप्त सेवा वृन्दावन	५ "
श्री जगन्नाथजी रथयात्रा	२३ "
मुड़ियापूनो गोवर्धन परिक्रमा	५जुला.
श्रीकेशवेश्वरमहादेवबंगलादर्शन	६ "
श्रावणके प्रत्येक सोमवार में	
श्री बिहारीमहाराज स्वर्णहिंडोले	२३ "
में विराजें वृन्दावन	
विशालमेला जैत गाँव मथुरा	२५ "
छटीकरा मेला मथुरा	२७ "
सती हरदेवीमे.पलसोंगोवर्धन	२७ "
महारासलीला उत्सव वृन्दावन	३अग.
दाऊजी-मातारेवती का भव्यश्रृंगार	३ "
१०००बत्ती नामोच्चार आरती	
श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतोत्सवमथुरा	१२ "
नन्दोत्सव नन्दगाँव बरसाना	१३ "
भगवानकृष्ण का छटीपूजन	१७ "
देवछटिमेला ब्रजमण्डल	२७ "
श्रीराधिकाजीजन्मोत्सव बरसाना	२७ "
मे.गरुड़गोविन्द छटीकरा	२७ "
मटकीफोर डोंगालीला बरसाना	१अग.
श्री बिहारीजी कटिकाछनी बांधे	३०अक्टू.

मुकुटमुरलीधारणकरें वृंदावन	३१	"
महारासपूर्णिमा,शरदपूर्णिमा	३१	"
८४कोस की ब्रजपरिक्रमाशुरु	३१	"
श्रीराधाकुण्ड में स्नान महोत्सव	८	नव.
जुगलजोड़ीपरिक्रमा वृंदावन	९	"
कंसवधलीलाचतुर्वेदीयप.मथुरा	१०	"
तीन वन परिक्रमा मथुरा	११	"
सभी मंदिरसमयदर्शनपरिवर्तन	११	"
अन्नकूट गोवर्धनपूजा(गोवर्धन)	१५	"
मोक्षप्राप्तियर्थ यमुनास्नान मथुरा	१६	"
सेवाकुंज में दण्डोत्सव	२५	"
श्रीबांकेबिहारीजीप्रादुर्भावउत्सव	१९	दिस.
विट्ठलविपुल उत्सव		
स्वा.हरिदासजीकीसवारीनिधिवनसे	३०	"
५६भोगबलदेवजी गोपमास समाप्त	३०	"
छप्पनभोग,मे.गरुणगोविन्दमथुरा	३०	"
ठाकुरजीतिलकभोग स्वीकारें	८	फर.
दुर्वासाऋषि मेला मथुरा	१६	"
श्रीमद्भागवतभवनप्रतिष्ठादि.	३	मार्च
मातायशोदाजयंती गोकुल	३	"
श्रीजीमंदिरमें लड्डुओं की होली	२२	"
लट्ठमारहोरी बरसाना में	२३	"
लट्ठमारहोरी नन्दगाँव में	२४	"
लट्ठमारहोरी जन्मभूमि मथुरा	२५	"
धार्मिक मेला मानसरोवर वृंदा.	२५	"
होलीमहोत्सवप्रा.रमणरेती वृंदा.	२६	"
पुजारीजी का होली में से निकलना फालेनगाँव (कोसी)	२८	"
महारासलीलास्वामीरामस्वरुपजी	२८	"
डोलोत्सवराधाबल्लभबांकेबिहारी	२९	"
श्रीदाऊजीके मंदिर में हुरंगा	३०	"
छोटी आतिशबाजी मंदिर श्री रङ्गनाथजी वृंदावन	२	अप्रै.
रङ्गोत्सव श्रीराधाबल्लभ वृंदा.	२	"
श्रीरङ्गनाथजीरथोत्सव मे.वृंदा.	२	"
बड़ीआतिशबाजीरङ्गनाथजीवृंदा.	२	"

ग्रहों की युति-प्रतियुतियाँ

सूर्य चन्द्र युति	२५	मार्च
मंगल शनि युति, चन्द्र राहु युति	१	अप्रै.
चन्द्र गुरु की युति	१५	"
चन्द्र से शनि की युति	१६	"
चन्द्र बुध की युति भाव तेज करे	२१	"
सूर्य बुध युति	४	मई
चन्द्र शनि युति, चन्द्र गुरु युति	१२	"
बुध शुक्र युति	२२	"
बुध राहु संयोग	२९	"
सूर्य शुक्र योग	३	जून
सूर्य राहु युति	२०	"
सूर्य केतु प्रतियोग	२१	"
सूर्य मंगल ९० डिग्री योग	२३	"
सूर्य बुध राशि संयोग बवंडर	१	जुला.
सूर्य से गुरु का प्रतियोग	१४	"
चन्द्र शुक्र की युति	१६	"
कालसर्पयोग नेष्ट	१७	"
सूर्य से शनि का प्रतियोग	२०	"
बुध गुरु का प्रतियोग	३१	"
चन्द्रभौम ९० डिग्री कोण	२	अग.
मंगल गुरु ९० डिग्री कोण	४	"
शुक्र राहु युति वर्षाधिक्य	५	"
सूर्य से बुध की युति	१८	"
गुरु शक्र का प्रतियोग दंगाफसाद	२६	"
गुरु शुक्र प्रतियोग राहु-केतु संग	३१	"
शनि शुक्र समसप्तक अतिनेष्ट	२	सित.
भौम शुक्र ९० डिग्री कोण	४	"
सूर्य-चन्द्र-बुध का योग	१७	"
बुध शनि ९० डिग्री कोण	२४	"
चन्द्र नेपच्यून योग	३०	"
सूर्य चन्द्र का प्रतियोग	१	अक्टू.
गुरु चन्द्र का प्रतियोग हिमपात	१०	"
सूर्य भौम का प्रतियोग	१४	"
सूर्य से बुध की युति श्रेष्ठ	२६	अक्टू.
चन्द्र से बुध का प्रतियोग	३१	"
मंगल शुक्र का प्रतियोग	१०	नव.
चन्द्र बुध की युति	१४	"
सूर्य चन्द्र की युति	१५	"
गुरु शुक्र त्रिकोण योग नेष्ट	१९	"
सूर्य से चन्द्र का प्रतियोग	३०	"
चन्द्र बुध प्रतियोग नेष्ट	१	दिस.
सूर्य राहु प्रतियोग	११	"
सूर्य बुध राशि संयोग	१४	"
राजनीतिक विक्षेपकारक		
गुरु शनि का योग नेष्ट	१८	"
गुरु शनि युति विक्षेपकारक	३१	"
चन्द्र गुरु का प्रतियोग	१	जन.
बुध गुरु की युति	११	"
मंगल हर्शल की युति	२१	"
सूर्य-शनि युति	२४	"
सूर्य से गुरु की युति	२९	"
चार ग्रह संयोग अतिनेष्ट	३१	"
गुरु से प्लूटो की युति	१	फर.
सूर्य से बुध की युति	८	"
षड्ग्रहा: ध्वन्तिसमस्तभूपान	१०	"
गुरु शुक्र योग सामाजिक विद्रोह	१२	"
कालसर्पयोग अतिनेष्ट	१५	"
बुध शनि की युति	२०	"
गुरु शनि ८ डिग्री योग नेष्ट	२८	"
राहु मंगल अंगारक योग नेष्ट	१	मार्च
चतुर्ग्रही योग अतिनेष्ट	१३	"
मंगल राहु की युति नेष्ट	२८	"
सूर्य शुक्र योग विक्षेपकारक	३१	"
सूर्य से शुक्र की युति	१	अप्रै.
चन्द्र शनि की युति	६	"
चन्द्र शुक्र युति	१२	"

मूल तथा गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल

ता.मास घं.मि.से	ता.मासघं.मि.तक
सन् २०२० ई.	
२४ मार्च २८।१८ "	२७ मार्च १०।०८ "
३अप्रैल१८।४० "	५अप्रैल१४।५६ "
११ " २०।१० "	१३ " १९।०१ "
२१ " १०।२२ "	२३ " १६।०४ "
३० " २५।५२ "	२ मई २३।३९ "
९ मई ६।३२ "	१० " २८।१२ "
१८ " १६।५७ "	२० " २२।३६ "
२८ " ७।२६ "	३० " ६।०२ "
५ जून १६।४२ "	७ जून १४।१० "
१४ " २४।२१ "	१७ " ६।०३ "
२४ " १३।०९ "	२६ " ११।२५ "
२जुला.२५।१३ "	४जुला.२३।२१ "
१२ " ८।१७ "	१४ " १४।०६ "
२१ " २०।२९ "	२३ " १७।४३ "
३० " ७।४० "	१ अग. ६।४७ "
८अग. १६।११ "	१० " २२।०५ "
१७ " २९।४२ "	१९ " २६।०६ "
२६ " १३।०३ "	२८ " १२।३६ "
४सित. २३।२७ "	६सित. २९।२३ "
१४ " १५।५१ "	१६ " १२।२० "
२२ " १९।१७ "	२४ " १८।०९ "
१अक्टू.२९।५६ "	४अक्टू.११।५१ "
११ " २५।१८ "	१३ " २२।५४ "
१९ " २७।५१ "	२१ " २५।१२ "
२९ " ११।५९ "	३१ " १७।५७ "
८नव. ८।४४ "	१० नव. ७।५५ "
१६ " १४।३५ "	१८ " १०।३९ "
२५ " १८।१९ "	२७ " २४।२२ "
५दिस.१४।२७ "	७दिस. १४।३१ "
१३ " २५।३९ "	१५ " २१।३० "
२२ " २५।३६ "	२५ " ७।३५ "

ता.मास घं.मि.से	ता.मासघं.मि.तक
सन् २०२१ ई.	
१ जन. २०।२४ "	३ जन. १९।५६ "
१० " २०।४९ "	१२ " ७।३७ "
१९ " ९।५३ "	२१ " १५।३५ "
२८ " २७।४९ "	३० " २६।२७ "
६ फर. १७।१७ "	८ फर. १५।२० "
१५ " १८।२८ "	१७ " २३।४८ "
२५ " १३।१६ "	२७ " ११।२७ "
५ मार्च. २२।३७ "	७ मार्च २०।५८ "
१४ " २६।१८ "	१७ " ७।३० "
२४ " २३।११ "	२६ " २१।३८ "
१ अप्रै. २९।१८ "	३ अप्रै. २६।३७ "
११ " ८।५६ "	१३ " १४।२८ "

पंचक प्रारम्भ व समाप्तिकाल

ता.मास घं.मि.से	ता.मासघं.मि.तक
सन् २०२० ई.	
२० मार्च ३०।२१ "	२६ मार्च ७।१५ "
१७अप्रैल१२।२० "	२२अप्रैल१३।१७ "
१४ मई १९।२६ "	१९ मई १९।५२ "
१० जून २७।४५ "	१५ जून २७।१६ "
८जुला.१२।३५ "	१३जुला.११।१३ "
४ अग. २०।५० "	९ अग. १९।०५ "
३१ " २७।५० "	५ सित. २६।२० "
२८सित. ९।४३ "	३अक्टू. ८।५० "
२५अक्टू.१५।२९ "	३० " १४।५६ "
२१ नव. २२।३० "	२६ नव. २१।१९ "
१९दिस. ७।२१ "	२३ दिस. २८।३२ "
सन् २०२१ ई.	
१५ जन. १७।०९ "	२० जन. १२।३५ "
११ फर. २६।१३ "	१६ फर. २०।५५ "
११ मार्च ९।२३ "	१५ मार्च २८।४२ "
७अप्रैल१५।०३ "	१२अप्रैल११।२८ "

ग्रहण विवरण

सम्वत् २०७७ (२५ मार्च २०२० से १२ अप्रैल २०२१ तक) समस्त भूमण्डल पर दो सूर्य ग्रहण होंगे। भारतीय भूभाग पर ता.२१ जून २०२० आषाढ़ कृष्ण अमावस्या रविवार में होने वाला कंकणाकृति सूर्यग्रहण ही देखा जा सकेगा।

नोटः- ५ जून, ५ जुलाई तथा ३० नवम्बर में तीन उपछाई चन्द्रग्रहण भी होंगे, वास्तव में ये ग्रहण नहीं होते। केवल चन्द्रमा पृथ्वी की विरल छाया में गुजरता है, जिसे ग्रहण नहीं माना जाता है इसलिए पर्वादिक महत्त्व मानने की आवश्यकता नहीं है।

भारत में दृश्य कंकणाकृति सूर्यग्रहण

ता. २१ जून २०२० आषाढ़ कृष्ण अमावस्या रविवार में सूर्य ग्रहण भा.स्टै.टा. के अनुसार दिन में ९।१६ से प्रारम्भ होकर १५।०४ बजे तक रहेगा। **भारतीय भूभाग पर इस ग्रहण को १० बजे से लेकर १४।३० बजे तक की समयावधि में ही देखा जा सकेगा।** दिल्ली में रवि बिम्ब ९४ % ग्रसित होगा। सुबह १० बजकर १९ मिनट से १४ बजकर २ मिनट के बीच खग्रास स्थिति में सूर्यग्रहण को बिना दूरवीक्षण यन्त्रो के देख पाना असम्भव सा प्रतीत रहेगा।

दिन में छायेगा अंधेरा- दीखेंगे आकाश में तारे

२१ जून २०२० में होने वाला कंकणाकृति सूर्यग्रहण वैज्ञानिकों के लिए शोध का विषय और आम आदमी के लिंए कौतूहल का विषय बनेगा। **ध्यान रहे-** इसे नंगी आखों से नहीं देखना चाहिए। विशेष चश्में या वैल्डिंग काम में आने वाले चशमे अथवा जल भरे पात्र में विम्ब का अवलोकन कर सकते हैं।

दिल्ली में ग्रहण का समय एवं दृश्याकृति

ग्रहणारम्भ	मध्य	ग्रहणान्त	कुल पर्वकाल
घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१०।२०	१२।०२	१३।४८	३।२८

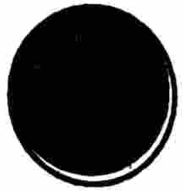

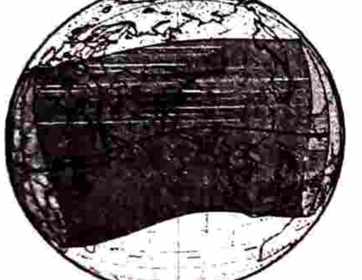

ग्रहण का सूतक- ता.२० जून २०२० शनिवार की रात्रि में १० बजकर २० मिनट से प्रारम्भ हो जायेंगी। सूतकों में बाल, वृद्ध, रोगी, आसक्तजनों को छोड़कर अन्य किसी को भोजन, शयनादि नहीं करना चाहिए।

यह ग्रहण मृगशिर नक्षत्र एवं मिथुन राशि में हो रहा है, सो यह मेष, सिंह, कन्या, मकर, मीन राशियों के लिए श्रेष्ठ। वृष, तुला, धनु राशि वालों को मध्यम और मिथुन, कर्क, वश्चिक और कुम्भ राशि वालों के लिये नेष्ट फलप्रद रहेगा। **जिन विदुषी महिलाओं के उदर में शिशु पल रहे हों,** उन्हें तीक्ष्ण धारदार चाकू, छुरी, दंरात, गंड़ासा आदि-से **फल, सब्जी** इत्यादि नहीं काटना चाहिए। साड़ी के पल्लू को गेरु से रंगकर बैठना चाहिए। **सम्भव हो सके तो साड़ी के पल्ले की झोली में** फल या मेवा लेकर बैठना चाहिए। ग्रहणान्त में झोली का सामान सफाई कर्मचारी को दे देना चाहिए।

ग्रहण में क्या करें? और क्या नहीं?

ग्रहणजन्य दूषित समय को स्वाध्याय, भगवत भजन, कीर्तन, स्मरणादि में व्यतीत करना चाहिए। ग्रहणारम्भ से पूर्व स्नान, शुरु होने पर हवन, समाप्त होते समय दान और ग्रहणान्ते पुनः स्नान करके शुद्ध वस्त्राभूषण धारण करें। देवदर्शनोपरान्त कुछ खान-पान लेना और ग्रहणकाल में आलस्य प्रमाद मिथ्यापवाद से बचे रहना चाहिए। **देवदर्शन-** ता.२१ जून रविवार में प्रातःकाल देवदर्शन नहीं हो सकेंगे।

ग्रस्यमाने भवेत्स्नानं ग्रस्ते होमो विधीयते। मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्ते स्नानं विधीयते॥
सर्वगंगासमं तोयं सर्वेव्याससमाद्विजाः। सर्वभूमि समं दानं ग्रहणे चन्द्र सूर्ययोः॥

खग्रास कालीन सूर्य के ऊपर दौड़ती काली पट्टी

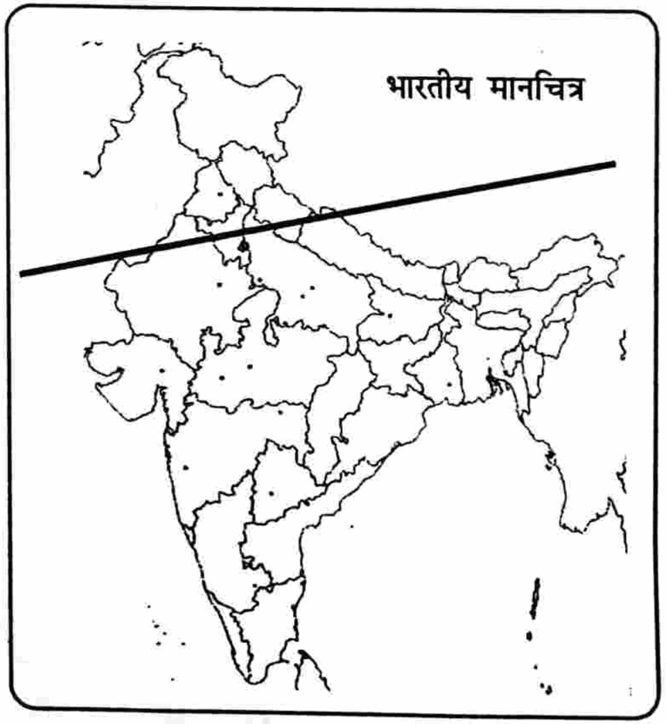

इस मानचित्र के ऊपर जो काली लाइन खीचीं गई है उन स्थानों पर खग्रास सूर्यग्रहण दिखाई देगा। इन स्थानों पर ग्रहण के समय एक काली पट्टी सी तेज गति से दौड़ती हुई दिखाई देगी। **यह भारत के शहर चमोली, देहरादून, जोशीमठ, कुरुक्षेत्र सिरसा और सूरतगढ़ आदि क्षेत्रों में दिखाई देगी।** यहाँ पर वैज्ञानिक एवं शोधकर्त्ता छात्र इकट्ठे होंगे और भविष्य के लिए नये शोध (इतिहास) रचेंगे।

भारत के अन्य नगरों में ग्रहण समय

नगर	प्रारम्भ	मध्य	समाप्त
अयोध्या	१०।३०	१२।१६	१४।०२
अलीगढ़	१०।२१	१२।०४	१३।५१
आगरा	१०।२०	१२।०३	१३।५१
अगरतला	१०।५६	१२।४५	१४।२४
अहमदाबाद	१०।०४	११।४२	१३।३२
आईजोल	११।०१	१२।५०	१४।२७
अजमेर	१०।१२	११।५२	१३।४१
प्रयागराज	१०।२८	१२।१४	१४।०१
अमृतसर	१०।२०	११।५८	१३।४२
बरेली	१०।२५	१२।०८	१३।५५
बेंगलुरु	१०।१३	११।४८	१३।३२
बीकानेर	१०।११	११।५०	१३।३७
भरतपुर	१०।१९	१२।०१	१३।४९
भागलपुर	१०।४२	१२।३१	१४।१४
भोपाल	१०।१५	११।५७	१३।४७
भुवनेश्वर	१०।३८	१२।२६	१४।१०
कन्नूर	१०।०७	११।३८	१३।२०
चमोली ✱	१०।२७	१२।०९	१३।५४
चण्डीगढ़	१०।२४	१२।०४	१३।४९
चैन्नई	१०।२२	११।५९	१३।४१
दार्जलिंग	१०।४७	१२।३५	१४।१६
देहरादून✱	१०।२४	१२।०५	१३।५०
दिल्ली	१०।२०	१२।०२	१३।४८
डिब्रूगढ़	११।०८	१२।५५	१४।२९
द्वारिका	०९।५७	११।३१	१३।२०
इटावा	१०।२२	१२।०६	१३।५४
ग्वालियर	१०।१९	१२।०३	१३।५१
गांधीनगर	१०।०४	११।४३	१३।३३
गंगटोक	१०।४८	१२।३६	१४।१७
गया	१०।३६	१२।२४	१४।०९
गुवाहाटी	१०।५७	१२।४६	१४।२४
हरिद्वार	१०।२५	१२।०६	१३।५१
हजारीबाग	१०।३७	१२।२५	१४।१०
हुबली	१०।०६	११।४३	१३।३१
हैदराबाद	१०।१५	११।५६	१३।४४

नगर	प्रारम्भ	मध्य	समाप्त
इम्फाल	११।०५	१२।५३	१४।२९
इटानगर	११।०४	१२।५१	१४।२७
जयपुर	१०।१५	११।५६	१३।४४
जालंधर	१०।२३	१२।०१	१३।४५
जम्मू	१०।२२	११।५९	१३।४१
जोशीमठ ✱	१०।२८	१२।१०	१३।५४
झुंझुनू	१०।१५	११।५६	१३।४४
करनाल	१०।२१	१२।०२	१३।४८
कन्याकुमारी	१०।१८	११।४२	१३।१५
केवलुर	१०।१९	११।५५	१३।३८
कवरत्ती	१०।००	११।२८	१३।१०
कानपुर	१०।२५	१२।१०	१३।५७
कोहिमा	११।०५	१२।५३	१४।२९
कोचीन	१०।११	११।३९	१३।१८
कूचबिहार	१०।५१	१२।३९	१४।१९
कटक	१०।३९	१२।२७	१४।१०
कोल्हापुर	१०।०३	११।४०	१३।२८
कोटा	१०।१३	११।५४	१३।४४
कोलकाता	१०।४६	१२।३६	१४।१७
कोरापुट	१०।२८	१२।१४	१३।५९
कोजीकोड	१०।०८	११।३९	१३।२०
कुर्नूल	१०।१४	११।५३	१३।४०
कुरुक्षेत्र✱	१०।२१	१२।०२	१३।४७
लखनऊ	१०।२७	१२।१२	१३।५९
मथुरा	१०।२०	१२।०२	[illegible]
मुरादाबाद	१०।२४	१२।०६	१३।५३
मदुरई	१०।१८	११।४७	१३।२४
मंगलुरु	१०।०५	११।३७	१३।२२
मिदनापुर	१०।४३	१२।३२	१४।१४
माउंटआबू	१०।०६	११।४४	१३।३४
मुम्बई	१०।०१	११।३८	१३।२८
मुर्शिदाबाद	१०।४७	१२।३६	१४।१८
मुजफ्फरपुर	१०।३८	१२।२६	१४।१०
मेरठ	१०।२२	१२।०३	१३।५०
मैसुरु	१०।११	११।४३	१३।२७
नागपुर	१०।१८	१२।०२	१३।५१

नगर	प्रारम्भ	मध्य	समाप्त
नालगोंडा	१०।१७	११।५८	१३।४६
नासिक	१०।०४	११।४२	१३।३२
नैल्लोर	१०।२०	११।५९	१३।४३
नोगोंग	१०।२१	१२।०६	१३।५४
पणजी	१०।०३	११।३९	१३।२७
पटना	१०।३७	१२।२५	१४।०९
पांडीचेरी	१०।२२	११।५६	१३।३७
पोर्टब्लेयर	११।१६	१२।५३	१४।१९
पुणे	१०।०३	११।४१	१३।३०
पुरी	१०।३८	१२।२६	१४।०९
रायपुर	१०।२५	१२।११	१३।५८
राजमुंदरी	१०।२७	१२।११	१३।५६
राजकोट	१०।००	११।३६	१३।२६
रांची	१०।३७	१२।२५	१४।१०
रोहतक	१०।१९	१२।००	१३।४७
सम्बलपुर	१०।३२	१२।२०	१४।०५
शिलोंग	१०।५८	१२।४७	१४।२५
शिमला	१०।२४	१२।०३	१३।४८
सिबसागर	११।०७	१२।५४	१४।२९
सिल्चर	११।०१	१२।५०	१४।२७
सिलीगुडी	१०।४७	१२।३६	१४।१७
सिलवासा	१०।०२	११।४०	१३।३०
सिरसा✱	१०।१७	११।५६	१३।४२
श्रीनगर	१०।२४	१२।००	१३।४१
श्रृंगेरी	१०।०७	११।४१	१३।२६
सूरतगढ़✱	१०।१५	११।५३	१३।३९
तमेलांग	११।०५	१२।५३	१४।२९
तंजावुर	१०।२०	११।५२	१३।३१
तिरुवनंतपुर	१०।१५	११।४०	१३।१५
तिरुनवेली	१०।१९	११।४६	१३।२२
त्रिचूर	१०।११	११।४१	१३।२१
उदयपुर	१०।०८	११।४७	१३।३७
उज्जैन	१०।११	११।५२	१३।४२
वडोदरा	१०।०५	११।४३	१३।३४
वाराणसी	१०।३१	१२।१८	१४।०४
विजयावाड़ा	१०।२२	१२।०३	१३।५०

इस ग्रहण को निम्नांकित विदेशों में भी देखा जा सकेगा-

अफगानिस्तान, अल्जीरिया, अर्मेनिया, अजरबेजान, बहरीन, बांग्लादेश, बुल्गारिया, बुरुण्डी, कम्बोडिया, मध्यअफ्रीका, चाड, चीन, कोंगु, साइप्रस, पूर्वीतिमोर, इजिप्ट, इथोपिया, जोर्जिया, ग्रीक, हंगरी, इण्डोनेशिया, ईरान, इराक, इजराइल, इटली, जापान, कजाकिस्तान, कोरिया, लाओस, किर्गीस्तान, लीबिया, मेडागास्कर, मलेशिया, मंगोलिया, मोरक्को, मोजाम्बिक, म्यानमार, नेपाल, नाइजीरिया, ओमान, पाकिस्तान, फिलीपींस, रूमानिया, कतर, रूस, रवांडा, साऊदीअरब, सोमालिया, सूडान, सीरिया, ताईवान, तंजानिया, थाईलैण्ड, टर्की, उगांडा, यूक्रेन, उज्बेकिस्तान, वीयतनाम, यमन, जाम्बिया, जिम्बांबे आदि।

✱ विदेशों में खग्रास सूर्यग्रहण ✱

१४ दिसम्बर २०२० सोमवार की रात्रि में भा.स्टैं.टा. के अनुसार १९।०४ से २३।२४ बजे के मध्य पश्चिम के देश दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका, उरुग्वे, अर्जेन्टीना, बोलीविया, ब्राजील, चिली, इक्वाडोर, पराग्वे, पेरु आदि देशों में खग्रास सूर्यग्रहण होगा। उस समय रात्रि होने के कारण भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

नोट:- भारत में कहीं भी इस ग्रहण का सूतक-पातक दोष मान्य नहीं होगा।

✱ तीन उपछायी चन्द्रग्रहण ✱

५ जून २०२० में उपछायी चन्द्रग्रहण होगा। ५ जुलाई २०२० में उपछायी चन्द्रग्रहण होगा। ३० नव.२०२० में उपछायी चन्द्रग्रहण होगा। चन्द्रमा पृथ्वी की विरल छाया में से गुजरेगा, जिससे मामूली सी चन्द्रकांति मलिन हो जायेगी। वास्तव में ज्यौतिर्गणित की दृष्टि से इसे ग्रहण नहीं माना जाता है।

✱ हरिद्वार में कुम्भपर्व का सुयोग ✱

आगामी संवत् २०७८ चैत्र शुक्ल पक्ष द्वितीया दिन बुधवार १४ अप्रैल २०२१ मेषसंक्रांति के पावनपर्व में गुरु कुम्भ राशि में एवं सूर्य चन्द्रमा मेष राशि में होने से हरिद्वार में श्रीगंगाजी के तट पर कुम्भ स्नानार्थियों को जन्म जन्मान्तरों की पुनरावृत्ति से छुटकारा मिलेगा। सौख्य समृद्धि का प्रादुर्भाव होगा। स्कन्दपुराण में ऐसा उल्लेख है-

कुम्भ राशिगते जीवे यद्दिने मेषगो रविः। हरिद्वार कृतं स्नानं पुनरावृत्तिवर्जनम्॥
पद्मिनीनायके मेषे कुंभ राशिगते गुरौ। गङ्गाद्वारे भवेद्योगःकुम्भ नामातदोत्तमः॥

ध्यान रहे- जिस वर्ष हरिद्वार में कुम्भ पर्व होता है, उस वर्ष वैशाख पूर्णिमा के दिन उज्जैन में अर्धकुम्भ और भाद्रपद अमावस्या गोदावरी तट नासिक में अर्धकुम्भ का सुयोग बनता है, सो दोनों स्नान २६ मई २०२१ बुधवार तथा ६ सितम्बर २०२१ में मान्य होंगे। सन् २०२२ में मेषार्क दिन से पूर्व दिन गुरु मीन राशि में चला जायेगा। इसलिए कुम्भपर्व नहीं मनाया जा सकेगा।

❀ शुभ संवत् २०७७ शाके १९४२ (अप्रैल २०२० से मार्च २०२१ ई. तक) पूर्णशुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः ❀

गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थजम्बू फलचारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम्॥

शुक्र उदयास्त - ज्येष्ठ शुक्ल नवमी ता.३१ मई २०२० रविवार को शुक्र पश्चिम में अस्त होकर केवल ९ दिन पश्चात् आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी ९ जून २०२० मंगलवार को पूर्व दिशा में उदय होगा।

पुनः शुक्रोदयास्तकाल- माघ शुक्ल द्वितीया ता.१३ फरवरी २०२१ शनिवार को शुक्र पूर्व में अस्त होकर दो मास पश्चात् आगामी संवत् २०७८ में १८ अप्रैल २०२१ को उदय होगा।

गुरु उदयास्त- पौष शुक्ल चतुर्थी ता. १७ जनवरी २०२१ रविवार को गुरु पश्चिम में अस्त होकर एक मास पश्चात् माघ शुक्ल चतुर्थी सोमवार १५ फरवरी २०२१ को पूर्व दिशा में उदय होगा।

गुरु गणना- सम्वत् २०७७ के आरम्भ २९ मार्च २०२० तक धनु के नवांश में रहेगा। गुरु २९ मार्च से २९जून तक मकर में नीच का गुरु नींच के नवांश में अतिनेष्ट रहेगा। ता.३० जून से धनु का गुरु अपने तथा मित्र के नवांश में गतिशील रहते हुए २० नवम्बर २०२० तक श्रेष्ठ रहेगा। २१ नवम्बर से २२ दिसम्बर तक मकर में गुरु परम नीचांशों में निर्वल कहा जायेगा। ता.२३ दिस. से २१ जनवरी २०२१ तक मीन-मेष के नवांश में गुरु श्रेष्ठ समझें। ता.२१ जनवरी से १८ फरवरी तक नेष्ट, आगे १८ फरवरी से १९ मार्च तक श्रेष्ठ जानें, पुनः सम्वत्सरान्ते नेष्ट समझें। ध्यान रहें- इस वर्ष जून तक गुरु नींच राशि में शनि से त्रस्त निर्बल, आगे १ सितम्बर २०२० तक धनु में स्वगृही केतू से प्रभावित नेष्ट जानें। आगे अक्टूबर नवम्बर पूर्वार्ध में श्रेष्ठ रहेगा, पुनः २० नवम्बर से २२ दिसम्बर तक नीचांशों में चलेगा। आगे सम्वत्सरान्ते शनि के क्षेत्र में अप्रभावी कहा जायेगा।

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	रेखा	लतादिदोष रेखाएँ	चंद्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	✷ लग्न दिवा-रात्रौ समय शुद्धि, अन्यान्य विवरण परिहार सूत्र ✷
वैशाख कृष्ण ९	गुरु	१६-४-२०२०	धनि.	९	।।।।।।ऽ।।	मकर	मेष	मकर	विवाह लग्न रात्रौ घं.२मि.५४ बजे से कुम्भादि श्रेष्ठ जानें, अन्यान्य चिन्त्येत्बुधः
वैशाख कृष्ण १०	शुक्र	१७-४-२०२०	धनि.	९	।।।।।।ऽ।।	मकर	मेष	मकर	विवाह लग्न निशायां भद्रोत्तर घं.२०मि.४६ बजे से वृश्चिक शुक्र पूज्य अन्य चिन्तनीयम्
वैशाख कृष्ण १३	चन्द्र	२०-४-२०२०	उ.भा.	७	ऽशु।।।ऽचोऽ।।।	मीन	मेष	मकर	सूर्यसाक्षी में ल.१५।५८ से कन्यायां चन्द्र बुध पूज्य गोधूलि श्रेष्ठ अन्य २।५८ से ३।१० तक कुम्भ शुभ जानें।
वैशाख शुक्ल २	शनि	२५-४-२०२०	रोहि.	६	।।ऽशु.ऽ।ऽअ.ऽ।।।	वृष	मेष	मकर	रात्रौ २०।५७ अक्षय३सुयोगे अत्यावश्यके विवाह लग्न २।१८ से कुम्भ मीन श्रेष्ठ स्वयंसिद्धिमु.
वैशाख शुक्ल ३	रवि	२६-४-२०२०	मृग.	८	।।।ऽगु.।।।ऽ।।	वृष	मेष	मकर	अक्षयतृतीया स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त लग्नचिन्त्येत्बुधः स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये.........पाताले च धनागमम्।
वैशाख शुक्ल ४	चन्द्र	२७-४-२०२०	मृग.	७	।।ऽशुऽगु।ऽनृ।।।।	मिथुन	मेष	मकर	भद्रोत्तरल.१५।३०से कन्या तुला गोरजे शुभः, अन्यान्यचिन्त्येत्बुधः धेनुधूरि वेला लगन सकल..
वैशाख शुक्ल ८	शुक्र	१-५-२०२०	मघा	६	।।।ऽऽरो.ऽ।ऽ।	सिंह	मेष	मकर	वि.ल.रात्रौ मघायां १।५३ बजे से कुम्भ-मीन चन्द्र दान पूजनादि से श्रेष्ठ जानें।
वैशाख शुक्ल ९	शनि	२-५-२०२०	मघा	७	।।।ऽ।ऽ।ऽ।	सिंह	मेष	मकर	केवल दिवा लग्न १५।९ से कन्या तुला श्रेष्ठ धेनुधूरि वेला लगन सकल सुमंगल मूल।
वैशाख शुक्ल ११	चन्द्र	४-५-२०२०	हस्त	७	ऽऽ।।।ऽअ.।।।	कन्या	मेष	मकर	रात्रि ल.मीन ३।९ से चन्द्रदान पूजनादि से शुभ जानें, तिथिक्षय तंदुलदानेन परिहारः।
वैशाख शुक्ल १३	मंगल	५-५-२०२०	चित्रा	८	ऽ।।।।ऽ।।।	कन्या	मेष	मकर	सूर्यसाक्षी में गोधूलि लग्न श्रेष्ठ,रात्रि घं.३ मि.६ बजे से मीन चन्द्र पूजनादि से शुभ जानें।
वैशाख शुक्ल १४	बुध	६-५-२०२०	स्वाती	८	।।।।ऽनृ.।ऽ।।	तुला	मेष	मकर	दिवा लग्न कन्यान्य गोरजे श्रेष्ठ निशायां ३।२ बजे से मीन शुभः भद्रावास पाताले शुभः।
ज्येष्ठ कृष्ण ३	रवि	१०-५-२०२०	मूल	६	।।ऽ।ऽऽरो.।ऽ।।	धनु	मेष	मकर	दि.ल.१४।३८से कन्या, तुला रात्रौ मीन २।४६ बजे से, मित्रक्षेत्रेन्दु युतिदोषाऽभावः।
ज्येष्ठ कृष्ण ६	बुध	१३-५-२०२०	श्रवण	७	ऽ।।।ऽअं.ऽ।।।	मकर	मेष	मकर	सूर्यसाक्षी में लग्न कन्या तुला निशायां मीन मेष २।३४ से मासान्ते अत्यावश्यके ग्राह्याः
ज्येष्ठ कृष्ण १०	रवि	१७-५-२०२०	उ.भा.	६	ऽमंगु.।।।ऽअऽऽ।।	मीन	वृष	मकर	भद्रोत्तर ल. तुला १६।२८ से, धेनुधूरि वेला लग्न.... निशायां लग्न मेष ३।४४ बजे से श्रेष्ठ

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	रेखा	लतादिदोष रेखाएँ	चंद्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	✷ दिवा-रात्रौ समय शुद्धि, अन्यान्य विवरण परिहार सूत्र ✷
ज्येष्ठ कृष्ण ११	चन्द्र	१८-५-२०२०	रेवती	८	S॥॥।S॥	मीन	वृष	मकर	दिवा लग्न तुला, मध्यरात्र्यौपरान्त ३।४० से मेष श्रेष्ठ जानें।
ज्येष्ठ कृष्ण १२	मंगल	१९-५-२०२०	अश्वि.	७	Sशु.॥।Sनृ.S॥।	मेष	वृष	मकर	विवाह लग्न गोधूलि वेलायां श्रेष्ठ, अन्यान्य मीन लग्न २।११ बजे से शुभ जानें।
ज्येष्ठ कृष्ण १३	बुध	२०-५-२०२०	अश्वि.	८	Sशु.॥॥S॥।	मेष	वृष	मकर	भद्रात्पूर्वे गोधूलि लग्न श्रेष्ठ धेनुधूरि वेला लगन सकल सुमंगल मूल क्षीणेन्दु अत्यावश्यके
ज्येष्ठ शुक्ल ७	शुक्र	२९-५-२०२०	मघा	८	॥॥।SS॥	सिंह	वृष	मकर	दि.ल.१५।४१ से तुला-वृश्चिक, गोधूलि वेलायां शुभ: रात्रौ २।५७ से मेष श्रेष्ठ
आषाढ़ कृष्ण ६	गुरु	११-६-२०२०	धनि.	७	।S॥।Sरो.।S॥	कुम्भ	वृष	मकर	केवल दिवा लग्न १२।३२ से कन्या तुला श्रेष्ठ जानें, अन्य चिन्तन करें।
आषाढ़ कृष्ण १०	चन्द्र	१५-६-२०२०	रेवती	८	S॥॥।S॥	मीन	मिथुन	मकर	सूर्यसाक्षी में लग्न १२।२८ से कन्यादि श्रेष्ठ, अत्यावश्यके ग्राह्या रविनिरंश:
आषाढ़ कृष्ण १०	मंगल	१६-६-२०२०	अश्वि.	६	Sवु.॥।Sअ.SS॥	मेष	मिथुन	मकर	केवल रात्रि लग्न २४।२० बजे से मीन श्रेष्ठ जानें।
आषाढ़ कृष्ण १३	शुक्र	१९-६-२०२०	रोहिणी	९	॥Sशु.॥॥॥।	वृष	मिथुन	मकर	दिवा ल.१२।१ से कन्या तुला रात्रि वेलायां २५।३५ बजे से मेष अर्थेन्दुक्षीण तंदुलदानेन शुभ:
आषाढ़ शुक्ल ७	शनि	२७-६-२०२०	उ.फा.	६	।S॥।Sअ.SS॥	कन्या	मिथुन	मकर	वि.ल.२२।११ से कुम्भ, अन्यान्य मेष वृष १।४ बजे से चिन्तयेत्बुध:।
आषाढ़ शुक्ल ८	रवि	२८-६-२०२०	हस्त	५	S।SS।S।S	कन्या	मिथुन	मकर	दि.ल. भद्रोत्तर १३।४६ से तुला वृश्चिक, निशायां १ बजे से मेष वृष चिन्तनीयम्
आषाढ़ शुक्ल ९	चन्द्र	२९-६-२०२०	चित्रा	८	॥॥Sनृ.S॥।	तुला	मिथुन	मकर	सूर्यसाक्षी लग्न वृश्चिक निशायां कुम्भ मेष वृष, अबूझ मुहूर्त भड्डरी नवमी श्रेष्ठ
आषाढ़ शुक्ल १०	मंगल	३०-६-२०२०	स्वाती	९	॥॥॥।S॥	तुला	मिथुन	धनु	विवाह लग्न वृश्चिक १५।५५ से शुक्र पूज्य, रात्रौ २१।४९ से कुम्भ, २३।२६ से मेष वृष श्रेष्ठ
कार्तिक शुक्ल ११	बुध	२५-११-२०२०	उ.भा.	८	S॥॥।S॥	मीन	वृश्चि.	मकर	वि.ल. १५।९ से मेष लोकप्रसिद्धि मुहूर्त (देवउठान) अन्यान्य लग्न चिन्तयेत्बुध:
कार्तिक शुक्ल १२	शुक्र	२७-११-२०२०	अश्वि.	६	SS॥।Sअ.S॥।	मेष	वृश्चि.	मकर	वि.ल.गोधूलि वेलायां ततोऽअग्रे १८।३३ से मिथुन चिन्तयेत्बुध:
कार्तिक शुक्ल १५	चन्द्र	३०-११-२०२०	रोहिणी	८	॥।S।S॥	वृष	वृश्चि.	मकर	सूर्यसाक्षी लग्न मेष शुक्रपूज्य, रात्रौ १८।२१ से मिथुन, अन्यान्य लग्नावश्यके चिन्तयेत्बुध:
मार्गशीर्ष कृष्ण १	मंगल	१-१२-२०२०	रोहिणी	८	॥।SSचो.।S॥	वृष	वृश्चि.	मकर	वि.ल. धनु श्रेष्ठ अन्यान्य अत्यावश्यके लग्न चिन्तयेत्बुध:।
मार्गशीर्ष कृष्ण ६	रवि	६-१२-२०२०	मघा	६	SS॥।Sअ.S॥।	सिंह	वृश्चि.	मकर	दि.ल.मेष१४।२६से, शुक्रपूज्य रात्रौ २४।४८ से कन्या तुला, विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतीपातश्च..
मार्गशीर्ष कृष्ण ७	चन्द्र	७-१२-२०२०	मघा	७	SS॥।S॥।	सिंह	वृश्चि.	मकर	लग्न धनु एवं कुम्भ चन्द्रदान पूजनादि से शुभ जानें
मार्गशीर्ष कृष्ण ९	बुध	९-१२-२०२०	हस्त	७	S॥॥।S।S	कन्या	वृश्चि.	मकर	दि.ल.१४।१५से मेष रात्रौ सिंह २२।२० से, अन्य तुला श्रेष्ठ, मासदग्धाश्चतिथयोमध्यदेशे..
मार्गशीर्ष कृष्ण १०	गुरु	१०-१२-२०२०	चित्रा	६	॥।Sमं.Sचो.SS॥	तुला	वृश्चि.	मकर	सूर्यसाक्षी में लग्न १४।११से अन्य गोरजे, रात्रौ तुला श्रेष्ठ २।५०बजे से
मार्गशीर्ष कृष्ण ११	शुक्र	११-१२-२०२०	स्वाती	९	॥॥॥।S॥	तुला	वृश्चि.	मकर	वि.ल. मेष १४।७से, निशायां तुला २।४६ से श्रेष्ठ। तिथि क्षीण चावल अनुदानत: गुरुदानेनशुभ

✤ पंजाबादि द्विगर्तदेश विशेष संभागीय विवाह मुहूर्त्ता: ✤

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	रेखा	लतादिदोष रेखाएँ	चंद्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	दिवा-रात्रौ समय शुद्धि, अन्यान्य विवरण परिहार सूत्र
आषाढ़ शुक्ल १२	गुरु	२-७-२०२०	अनु.	८	SS॥॥॥	वृश्चि.	मिथुन	धनु	दिवा लग्न १३।२७से तुला अन्य कुम्भ २१।५१ बजे से
आषाढ़ शुक्ल १४	शनि	४-७-२०२०	मूल	७	॥S॥॥SS।	धनु	मिथुन	धनु	सूर्यसाक्षी लग्न तुला वृश्चिक १३।१९ बजे से रात्रौ २१।४३ से कुम्भ अन्य चिन्तयेत्बुध:
आषाढ़ शुक्ल १५	रवि	५-७-२०२०	उ.षा.	७	॥Sगु.शS॥॥S।	धनु	मिथुन	धनु	विवाह लग्न निशायां मेष वृष २४।३२ बजे से श्रेष्ठ मृत्युवान दोषाऽभाव:
श्रावण कृष्ण २	मंगल	७-७-२०२०	श्रवण	९	॥॥।S॥।	मकर	मिथुन	धनु	दिवा लग्न तुला वृश्चिक रात्रौ कुम्भ मेष वृष भद्रा निवास पाताल की श्रेष्ठ
श्रावण कृष्ण ३	बुध	८-७-२०२०	धनि.	९	॥॥।Sनृ.॥॥	कुम्भ	मिथुन	धनु	भद्रोत्तर लग्न १३।३ बजे से तुला वृश्चिक अन्य २४।२० से मेष
श्रावण कृष्ण ६	शनि	११-७-२०२०	उ.भा.	७	S।Sमं.॥।S॥।	मीन	मिथुन	धनु	मीनेन्दु युतिदोषाऽभाव: लग्न तुला वृश्चिक रात्रौ कुम्भ, मेष, वृष, भद्रा दानेन श्रेष्ठ

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	रेखा	लतादिदोष रेखाएँ	चंद्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	दिवा-रात्रौ समय शुद्धि, अन्यान्य विवरण परिहार सूत्र
श्रावण कृष्णा ७	रवि	१२-७-२०२०	रेवती	६	ऽ ।। ।।ऽरो. ।ऽ ।ऽ	मीन	मिथुन	धनु	लग्न तुला वृश्चिक १२।४७ से अन्य कुम्भ मेष वृष मास दग्धाश्च तिथियोमध्यदेशेविवर्जिता:
श्रावण कृष्णा ८	चन्द्र	१३-७-२०२०	अश्वि.	६	ऽ ।। ।। ।ऽऽ ।ऽ	मेष	मिथुन	धनु	विवाह लग्न तुला वृश्चिक रात्रौ कुम्भ वृष श्रेष्ठ
श्रावण शुक्ल २	बुध	२२-७-२०२०	मघा	८	।ऽ ।। ।।ऽ ।।।	सिंह	कर्क	धनु	विवाह लग्न रात्रौ २०।३२ से कुम्भ मेष वृष चन्द्र शुक्र पूज्य
श्रावण शुक्ल ३	गुरु	२३-७-२०२०	मघा	८	।। ।। ।ऽचो.ऽ ।।।	सिंह	कर्क	धनु	केवल दिवा लग्न १२।०५ से तुला वृश्चिक
श्रावण शुक्ल ४	शुक्र	२४-७-२०२०	उ.फा.	७	।। ।ऽ ।।ऽऽ ।।	कन्या	कर्क	धनु	रात्रि लग्न कुम्भ २०।२५ से पादभेदेन वेधाऽभाव: रेखावृद्धि:
श्रावण शुक्ल ५	शनि	२५-७-२०२०	हस्त	७	ऽ ।। ।।ऽरो. ।। ।ऽ	कन्या	कर्क	धनु	विवाह लग्न कुम्भ २०।२१ बजे से अन्य चिन्तयेत्बुध:
श्रावण शुक्ल ६	रवि	२६-७-२०२०	चित्रा	७	।। ।।ऽमं. ।ऽऽ ।।	तुला	कर्क	धनु	गोधूलि वेलायां श्रेष्ठ अन्य लग्न कुम्भ, मेष, वृष आवश्यके ग्राह्या
श्रावण शुक्ल १०	बुध	२९-७-२०२०	अनु.	८	।। ।। ।। ।ऽऽ ।	वृश्चि.	कर्क	धनु	दिवा लग्न ८ शुक्र पूज्य रात्रौ २०।०५ से कुम्भ, मेष २२।५८ से शुभ:
श्रावण शुक्ल १२	शुक्र	३१-७-२०२०	मूल	६	ऽ ।ऽऽबु.ऽनृ. ।। ।।।	धनु	कर्क	धनु	दिवा रात्रौ लग्नचिन्तयेत्बुध: पादभेदेन बुध वेधाऽभाव: रेखावृद्धि:
श्रावण शुक्ल १५	चन्द्र	३-८-२०२०	श्रवण	७	।। ।। ।ऽरो.ऽऽ ।।	मकर	कर्क	धनु	सूर्यसाक्षी लग्न तुला वृश्चिक निशायां कुम्भ मेष वृष चिन्तयेत्बुध:
भाद्रपद कृष्णा ४	शुक्र	७-८-२०२०	उ.भा.	८	।। ।। ।।ऽऽ ।।	मीन	कर्क	धनु	दिवा लग्न १३।३२ से वृश्चिक अन्य १९।३० से कुम्भ, २२।२४ से मेष वृष
भाद्रपद कृष्णा ५	शनि	८-८-२०२०	रेवती	६	ऽ ।ऽमं. ।।ऽनृ. ।ऽ ।।	मीन	कर्क	धनु	सूर्यसाक्षी लग्न ११।३ से तुला वृश्चिक रात्रौ २२।२० से मेष वृष ग्राह्या:
भाद्रपद कृष्णा ६	रवि	९-८-२०२०	रेवती	६	ऽ ।ऽ ।। ।।ऽ ।ऽ	मीन	कर्क	धनु	केवल दिवा लग्न १०।५९ से तुला वृश्चिक रात्रौ अश्विन्यां भुजंगपात:
भाद्रपद कृष्णा ९	गुरु	१३-८-२०२०	रोहिणी	१०	।। ।। ।। ।। ।।	वृष	कर्क	धनु	विवाह लग्न २३।२५ से वृष, ३।४४ से कर्क श्रेष्ठ। स्वर्गेभद्रा शुभेकार्ये.........
भाद्रपद शुक्ल २	गुरु	२०-८-२०२०	उ.फा.	९	।। ।। ।।ऽ ।।।	सिंह	सिंह	धनु	रात्रिलग्न २३।५० से वृष अन्य कर्क ३।१६ बजे से चिन्तनीयम्
भाद्रपद शुक्ल ३	शुक्र	२१-८-२०२०	उ.फा.	८	।। ।। ।ऽनृ.ऽ ।।।	कन्या	सिंह	धनु	सायं गोधूलि वेलायां अन्य वृष कर्क चिन्तयेतबुध:
भाद्रपद शुक्ल ४	शनि	२२-८-२०२०	हस्त	८	ऽऽ ।। ।। ।। ।।	कन्या	सिंह	धनु	गोरजे: सोग्राग्र: मीन १९।५९से, अन्य २३।०० बजे से वृष, ३।९ से कर्क
भाद्रपद शुक्ल ५	रवि	२३-८-२०२०	चित्रा	७	।। ।। ।ऽचो.ऽऽ ।।	तुला	सिंह	धनु	गोधूलि अन्य वृष कर्क श्रेष्ठ, धेनुधूरि वेला लगन सकल सुमंगल मूल
भाद्रपद शुक्ल ६	चन्द्र	२४-८-२०२०	स्वाती	९	।। ।।ऽमं. ।। ।।।	तुला	सिंह	धनु	विवाह लग्न चिन्तयेत्बुध: वृश्चिक १२।१९ से
भाद्रपद शुक्ल ७	मंगल	२५-८-२०२०	अनु.	८	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	वृश्चि.	सिंह	धनु	सूर्यसाक्षी में गोधूलि वेला श्रेष्ठ, अन्य मीन कर्क श्रेष्ठ
भाद्रपद शुक्ल १२	रवि	३०-८-२०२०	श्रवण	७	ऽसू. ।। ।।ऽनृ.ऽ ।।।	मकर	सिंह	धनु	विवाह गोधूलि अन्य मीन वृष कर्क ग्राह्या
भाद्रपद शुक्ल १३	चन्द्र	३१-८-२०२०	श्रवण	१०	।। ।। ।। ।। ।।	मकर	सिंह	धनु	गोरजे कुम्भ सोग्राग: मीन वृष १९।२४ बजे से शुभ:
भाद्रपद शुक्ल १४	मंगल	१-९-२०२०	धनिष्ठा	९	।। ।। ।ऽचो. ।। ।।	कुम्भ	सिंह	धनु	केवल दिवा लग्न ११।४९ से अभिजितमुहूर्त्ते श्रेष्ठ
द्वि.आश्वि.शुक्ल३	चन्द्र	१९-१०-२०२०	अनु.	१०	।। ।। ।। ।। ।।	वृश्चि.	तुला	धनु	सूर्यसाक्षी लग्न कुम्भ १४।४१ से अन्य गोधूलि श्रेष्ठ, रात्रौ १।३९ से सिंह
द्वि.आश्वि.शुक्ल५	बुध	२१-१०-२०२०	मूल	८	।। ।।ऽऽनृ. ।। ।।	धनु	तुला	धनु	गोधूलि वेलायां शुभ निशायां मिथुन चं.गु. पूज्य अन्य सिंह १।३१ से
द्वि.आश्वि.शुक्ल९	रवि	२५-१०-२०२०	धनिष्ठा	७	।ऽ ।। ।ऽरो. ।।ऽ ।	कुम्भ	तुला	धनु	दिवा कुम्भ, गोधूलि रात्रौ मिथुन सिंह २०।४२ बजे से शुभ जानें
द्वि.आश्वि.शुक्ल१२	बुध	२८-१०-२०२०	उ.भा.	६	ऽ ।। ।।ऽशु.ऽअ.ऽ ।।।	मीन	तुला	धनु	सूर्यसाक्षी में लग्न १४।६ से कुम्भ सोग्रांग्र: गोरजे अन्य मिथुन सिंह ग्राह्या
द्वि.आश्वि.शुक्ल१४	शुक्र	३०-१०-२०२०	अश्वि.	६	ऽ ।। ।।ऽनृ.ऽऽ ।।	मेष	तुला	धनु	दिवा ल. कुम्भ १३।५८ से, अन्य मिथुन कर्क २०।२३ से धेनुधूरि वेला लगन सकल ....
द्वि.आश्वि.शुक्ल१५	शनि	३१-१०-२०२०	अश्वि.	७	ऽ ।। ।। ।ऽऽ ।।	मेष	तुला	धनु	शरद्पूर्णिमायां लग्न चिन्तयेत्बुध:

मास पक्ष तिथि	वार	तारीख	नक्षत्र	रेखा	लतादिदोष रेखाएँ	चंद्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	दिवा-रात्री समय शुद्धि, अन्यान्य विवरण परिहार सूत्र
कार्तिक कृष्ण ३	मंगल	३-११-२०२०	रोहिणी	९	॥॥ऽरो.॥॥	वृष	तुला	धनु	सूर्यसाक्षी में विवाह लग्न कुम्भ, गोधूलि मिथुन सिंह श्रेष्ठ जानें।
कार्तिक कृष्ण ८	चन्द्र	९-११-२०२०	मघा	८	॥॥ऽऽ॥	सिंह	तुला	धनु	विवाह लग्न १३।१८ से कुम्भ, मिथुन १९।४३ से, धेनुधूरि वेला लगन सकल सुमंगल मूल।
कार्तिक कृष्ण १२	गुरु	१२-११-२०२०	हस्त	६	ऽ॥॥ऽरो.।ऽ।ऽ	कन्या	तुला	धनु	दिवा लग्न १३।६ से कुम्भ, गोरजे, अन्य १९।३१ से मिथुन, २४।४ बजे से सिंह गुरुपूज्य
कार्तिक कृष्ण १३	शुक्र	१३-११-२०२०	चित्रा	७	।ऽशु.।ऽ।ऽ॥।	तुला	तुला	धनु	लग्न १३।२ से कुम्भ, अन्य गोधूलि पूज्य तथाग्रे मिथुन सिंह ग्राह्या भद्रा निवास पाताले
कार्तिक शुक्ल ६	शुक्र	२०-११-२०२०	श्रवण	८	॥॥ऽनृ.ऽ॥।	मकर	वृश्चि.	मकर	विवाह लग्न कुम्भ ११।३५ से रात्रि लग्न मिथुन १९।० बजे से अन्य चिन्तयेत्बुधः
कार्तिक शुक्ल ७	शनि	२१-११-२०२०	धनिष्ठा	९	॥॥॥।ऽ॥	मकर	वृश्चि.	मकर	लग्न मेष १५।२५ बजे से गोधूलि वेला श्रेष्ठ, अन्यान्य चिन्तनीयम्
कार्तिक शुक्ल १०	मंगल	२४-११-२०२०	उ.भा.	६	ऽ॥॥ऽरो.ऽऽ।ऽ	मीन	वृश्चि.	मकर	गोधूलिवेलायां श्रेष्ठ, धेनुधूरि वेला लगन सकल सुमंगल मूल....

पंजाब, सिन्ध, कश्मीर, हिमाचलप्रदेश सम्भागीय देशाचारःकुलाचारो जात्याचारो विशेषतः। कर्त्तव्यो विदुषा तत्र सारासारं विचार्य च॥ मान्यतानुसार देवशयन कालांश चतुर्मास में भी विवाह लग्न मुहूर्त सम्पन्न होते हैं, तदेशीय जनमात्रस सुविधार्थ बृहद्दैवज्ञरंजन शास्त्रीय निबन्ध ग्रंथ पृष्ठ ६५८ व ६५९ प्रमाणं ग्रामवचनं विवोहादौ तथात्यये। अतः परम्परायातं धर्मं वदन्ति ते खलु॥ देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यो देशे देशे या स्थितः सैव कार्या॥ हमारे पंचांग कार्यालय में शंका समाधान हेतु अनेक विद्वानों के टेलीफोन आते हैं। शिकायत रहती है, कि श्री ब्रजभूमि पंचांग में उत्तर नहीं छपे, ध्यान रहे- पत्रांकित उत्तर ही छापे जाते हैं न कि दूरभाषीय। विवाह मुहूर्तों में कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टय- चित्रा श्रवण धनिष्ठाऽश्विन्याधिकानि चत्वारि। तत्राऽपि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यम्॥ के अनुसार चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा और अश्विनी इन चार नक्षत्रों के विवाह मुहूर्त्त समाहत कर दिये गये हैं, जिन्हें धर्मसिन्धु पृष्ठ ४०९ आचार्य हरिदत्त ने श्रेष्ठ कहा है। आशा है द्विजाचार्य शंकाशील न होकर यजुर्वेदीय शाखा सूत्रानुसार ग्रहण कर अनुग्रहीत करेंगे, ऐसी हमें आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है।

इस वर्ष पंजाब आदि देशों में विवाह निर्णय हेतु त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पृष्ठ १२५ पर देखें।

साक्षेपयुक्त विवाह मुहूर्त्ताः

श्री राजधानीपंचांग में सुनिश्चित्र किये गए सभी मुहूर्त्त शास्त्रोक्तदृष्ट्या शुद्ध होते हैं। जिन लग्न मुहूर्त्तों में किंचित दोष परिलक्षित हुए हैं, उन्हें पूर्ण शुद्ध मुहूर्त्तों में स्थान न देकर यहाँ दर्शाया गया है। ताकि सुविज्ञजन अपनी-अपनी सुविधा, देशकाल, परिस्थित्यानुसार मुहूर्त्तों का चयनकर लाभ के भागीदार बन सकें। समय ही सर्वोपरीय है, जिसमें लग्न की शुद्धता से सभी दोष निर्दोष हो जाते हैं। यथा- सर्वे दोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।

(सन् २०२० ई.)

१३ अप्रैल चन्द्रे संक्रांतिदिन मूलेकेतुयुति, भद्रादोषः
१५ " बुधे उषा.शनियुति मृत्युवानदोषः
२१ " भौमे रेवत्यां क्षीणेन्दु वैधृतिपातदोष
१ मई शुक्रे आश्लेषा मृत्युयोग २५।४तक
३ " रवि उफायां मृत्युवान, भद्रादोष
८ " शुक्रे अनुराधायां रविवेध वर्जियेत्
१२ " भौमे उषायां युतिवेध वानदग्ध तिथि
१४ " गुरौ धनिष्ठायां संक्रांतिदिन
२४ " रवि मृगशिर युति वेध एकार्गलदोषः
सोग्रांग्रः शुक्रास्तः
१३ जून शनौ मासान्ते मृत्युवानदोषः
१४ " रवि उभायां संक्रांति दिन
२० " शनौ मृगशिरायां क्षीणेन्दुः
२५ " गुरौ मघायां मृत्युवान दोषः
२६ " शुक्रे मघायां लग्नाऽभावः तिथिक्षीणः
३ जुला. शुक्रे मूलकेतु युति नीचेन्दु दोषः
६ " चन्द्रे उषायां युति अग्निवाण
१४ जुला. भौमे अश्विन्यां मृत्युवानदोषः
१६ " गुरौ रोहिण्यां संक्रान्तिदिन लग्नाऽभावः
१७ " शुक्रे रोहिण्यां मृत्युवानदोषः
१८ " शनौ मृगशिर वेधक्षीणेन्दु दोषः
२७ " चन्द्रे स्वात्यां मृत्युवानदोषः
२८ " भौमे स्वात्यां लग्नाऽभावः
२ अग. रवि उषायां युतिवेधदोषः
४ " भौमे धनिष्ठायां वेधदोषः
५ " बुधे धनिष्ठायां लग्नाऽभावः
१० " चन्द्रे अश्विन्यां भुजंगपातदोषः
१४ " शुक्रे मृगशिर वेध मृत्युवानदोषः
१९ " बुधे मघायां क्षीणेन्दु दोषः
२६ " बुधे अनुराधायां युति वाण दग्धदोषः
२७ " गुरौ मूलभे युति मृत्युवान दग्धातिथि
२९ " शनौ उषाभे लता, युति राहुवेध
२२ अक्टू. गुरौ उषायां युति वेध दोषः
२३ " शुक्रे उषायां युति वेध चोरवान नेष्ट
२४ " शनौ श्रवणभे भुजंगपात दोषः
२९ " गुरौ उभायां रेवतीयुति वेध दोषः
४ नव. बुधे मृगशिर राहुयुतिवेषदोषः
११ " बुधे उफायां पातवेध दग्धातिथिदोषः
१४ " शनौ स्वात्यां क्षीणेन्दु दोषः
१७ " भौमे मूल मृत्युवानदोष नेष्ट
१९ " गुरौ उषा. राहुवेध दोषः
२२ " रवि धनिष्ठा व्याघात भद्रा
२६ " गुरौ रेवती अश्विनी मृत्युवान
२ दिस. बुधे मृगशिर लग्नाऽभावः
८ " भौमे उफायां वेधवान, उपग्रहदोष

अग्रे धनु खरमास नेष्ट
आगे पश्चिमास्त गुरु अग्रे शुक्रास्त
संवत्सरान्ते व्यवधान कारकः।

विवाहके लिए शुभ समय अंग्रेजी मास-तारीखें (त्रिबल शुद्धि कोष्ठक) सम्वत् 2077

वर-वधू के राश्यानुसार सूर्यबल, गुरुबल तथा चन्द्रबल का संशोधन करके विवाह हेतु शुद्ध समय अंग्रेजी मास तारीखें नीचे लिखी हैं। जिस किसी भी राशि वाले वर-कन्या का परस्पर विवाह करना हो, उन दोनों की राशियों के सामने जिन मासों में जो-जो तारीखें समान मिल जायें, वह दिन तारीखें विवाह के लिए शुभ हैं। ऐसा समझना चाहिए। **अप्रैल २०२० से मार्च २०२१ ई. तक**

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)
मेष	(१४ अप्रैल से १४ मई तक उच्चस्थ रवि ग्राह्य, आगे ३० मई तक रवि मामूली पूजनादि से शुभ जानें) **अप्रैल**- १६, १७, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **जून**- ११, १५, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५,	**मेष**	(इस वर्ष गुरु पूजनादिसे शुभ जानें।) **अप्रैल**- १६, १७, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **जून**- ११, १५, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०, ११,
वृष	(मई, जून, जुलाई, नव., दिस. और जनवरी में रवि मामूली पूजासे शुभ जानें) **मई**- १७, १८, १९, २०, **जून**- ११, १५, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ९, १०, ११,	**वृष**	**अप्रैल**- १६, १७, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १३, १७, १८, १९, २०, **जून**- ११, १५, १६, १९, २७, २८, २९, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ९, १०, ११,
मिथुन	(जून उत्तरार्ध, जुलाई पूर्वार्ध, फरवरी उत्तरार्ध में रवि पूजा से शुभ जानें) **अप्रैल**- १७, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ६, १०, **जून**- १५, १६, १९, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, १०, ११,	**मिथुन**	इस वर्ष आठवाँ गुरु नेष्ट माना जायेगा। शास्त्राज्ञा-**रजस्वलायाःकन्यायां गुरुशुद्धिं न चिन्तयेत्। अष्टमेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्॥** अत्यावश्यकता में बड़ी उम्र की लड़की का विवाह त्रिगुणार्चन गुरु पूजा विधान से करा सकते हैं। **अप्रैल**- २५, २६, **जून**- २९, ३०,**नवम्बर**- २५, ये पांच साहे अबूझ मुहूर्त्त संज्ञक श्रेष्ठ हैं। बाकी द्विजाचार्य स्वयं सुनिश्चित करें।
कर्क	**अप्रैल**- १६, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **जून**- २९, (नव., जन. तथा फर. में रवि पूजनादि से शुभ जानें) **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०,	**कर्क**	**अप्रैल**- १६, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **जून**- १५, १६, १९, २७, २८, २९, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०,
सिंह	(**अप्रैल में उच्चस्थ रवि ग्राह्यः**) **अप्रैल**- १६, १७, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १९, २०, २९, **जून**- ११, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५,	**सिंह**	(इस वर्ष गुरु मामूली पूजा से शुभ जानें) **अप्रैल**- १६, १७, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १९, २०, २९, **जून**- ११, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १,६, ७, ९, १०, ११
कन्या	(मई व जनवरी में रवि पूजनादि से शुभ जानें) **मई**- १७, १८, २९, **जून**- ११, १५, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०, ११,	**कन्या**	**अप्रैल**- १६, १७, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १३, १७, १८, २९, **जून**- ११, १५, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०, ११,
तुला	(**अप्रैल, मई, जून, नवम्बर तथा** फरवरी में रवि पूजनादि से शुभ जानें) **अप्रैल**- १७, २०, २५, २६, २७, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १०, **जून**- १५, १६, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, २७, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०, ११,	**तुला**	इस वर्ष चौथा गुरु नेष्ट माना जायेगा। शास्त्राज्ञा- **रजस्वलायाः कन्यायां गुरु शुद्धिं न चिन्तयेत्। चतुर्थेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्॥ अत्यावश्यके रजस्वलायां विवाहस्त्रिगुणार्चनात गुरुपूजायां शुभं दद्यात्॥ त्रिगुण पूजा होने पर गुरु शुभ फल देता है।** अबूझ मुहूर्त संज्ञक श्रेष्ठ लग्न- **अप्रैल**- २५, २६, **जून**- २९, ३०, **नवम्बर**- २५,
वृश्चि.	**अप्रैल**- १६, २०, २५, २६,(मई उत्तरार्ध, जून, नवम्बर, दिसम्बर में रवि की मामूली पूजा **से शुभ जानें**) **मई**- १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०, ११,	**वृश्चि.**	(इस वर्ष तीसरा गुरु पूजनादि से शुभ जानें) **अप्रैल**- १६, २०, २५, २६, **मई**- १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **जून**- १५, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर**- २५, २७, ३०, **दिसम्बर**- १, ६, ७, ९, १०, ११,

नोटः- वर-वधु नक्षत्रानुसार तारागणना पाठक स्वयं करें। तारीख भी जांच लें। सभी ग्रह उच्चराशिमें, अपनी राशिमें, मित्र के क्षेत्रमें, अथवा श्रेष्ठ नवांश वर्गोत्तममें रहने पर अनिष्ट स्थान के भी शुभ माने जाते हैं।

नोटः- राशि से बारहवाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है। पाणिग्रहे सुरतोऽभिषेके यात्रान्नप्राशने व्रतबन्धने च। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैःप्रोक्तः शुभो द्वादशगो हिमांशु॥-गर्गः **ज्यो.पं.प्रेमपाल कौशिक**

विवाह के लिए शुभ समय अंग्रेजी मास-तारीखें (त्रिबल शुद्धि कोष्ठक) सम्वत् 2077

उदाहरण- वृश्चिक राशि वाले लड़के का विवाह मीन राशि वाली लड़की के साथ करना है, तो देखिए वृश्चिक और मीन राशियों के सामने अप्रैल की १६,२०,२५,२६, व मई की १,२,४,६,१०,१३,१७,१८,१९,२०,२९ तारीखें दोनों तरफ(वर-कन्या के कोष्ठकों में)समान मिलती हैं जो कि विवाह के लिए शुभ है। इनमें से किसी भी तारीख को सुविधानुसार विवाह कर सकते हैं। **अप्रैल २०२० से मार्च २०२१ ई.**

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)
धनु	**अप्रैल-** १६, १७, २५, २६, २७, **मई-** १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १९, २०, २९, (जून उत्तरार्ध, जुलाई तथा जनवरी में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) **जून-** ११, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर-** २५,	धनु	(इस वर्ष गुरु श्रेष्ठ रहेगा) **अप्रैल-** १६, १७, २५, २६, २७, **मई-** १, २, ४, ५, ६, १०, १३, १९, २०, २९, **जून-** ११, १६, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर-** २५, २७, ३०, **दिसम्बर-** १, ६, ७, ९, १०, ११,
मकर	(मई, जन., फर. में रवि की मामूली पूजा से शुभ जानें) **मई-** १७, १८, **जून-** ११, १५, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर-** २५, ३०, **दिसम्बर-** १, ९, १०, ११,	मकर	(इस वर्ष गुरु पूजनादि से शुभ जानें) **अप्रैल-** १६, १७, २०, २५, २६, २७, **मई-** ४, ५, ६, १०, १३, १७, १८, **जून-** ११, १५, १९, २७, २८, २९, ३०, **नवम्बर-** २५, ३०, **दिसम्बर-** १, ९, १०, ११,
कुम्भ	(जून, फरवरी, मार्च में रवि पूजनादि से शुभ जानें) **अप्रैल-** १६, १७, २०, २५, २६, २७, **मई-** १, २, ६, १०, १३, **जून-** १५, १६, २९, ३०, **नवम्बर-** २५, २७, **दिसम्बर-** १, ६, ७, १०, ११,	कुम्भ	इस वर्ष बारहवाँ गुरु नेष्ट रहेगा। शास्त्राज्ञा- **सर्वत्रापि शुभं दद्यात् द्वादशाब्दात्परं गुरुः। रजस्वलायां कन्यायां गुरु शुद्धिं न चिन्तयेत्॥** कन्या रजोदर्शन होने से गुरु शुद्धि की चिन्ता न करें। **द्वादशेऽपि प्रकर्तव्यो** विवाहस्त्रिगुणार्चनात्॥ **गुरु त्रिगुण पूजनार्चन कराकर विवाह** कर देना चाहिए। अबूझ मुहूर्त- **अप्रैल-** २५, २६, **जून-** २९, ३०, **नवम्बर-** २५,
मीन	**अप्रैल-** १६, १७, २०, २५, २६, **मई-** १, २, ४, ५, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **जून-** ११, **नवम्बर-** २५, २७, ३०, **दिसम्बर-** १, ६, ७, ९, १०,	मीन	**अप्रैल-** १६, १७, २०, २५, २६, **मई-** १, २, ४, ५, १०, १३, १७, १८, १९, २०, २९, **जून-** ११, १५, १६, १९, २७, २८, २९, **नवम्बर-** २५, २७, ३०, **दिसम्बर-** १, ६, ७, ९, १०,

लग्नानाम् दोष निवृत्ति हेतु शास्त्रीय परिहार

विवाह में मुख्य रूप से लता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि, इन दस दोषोंका विचार किया जाता है। इनमें से पापग्रहकृत युति, वेध, मृत्युबाण एवं क्रांतिसाम्य (महापातदोष) अपरिहार्य होने से त्याज्य माने गये हैं। **युतिदोष-** चन्द्रमा वृष, मिथुन, सिंह एवं कन्या राशि में हो तो युतिदोष नहीं होता। अर्थात् रोहि., मृग., मघा, उफा., हस्त और चित्रा नक्षत्र के विवाह मुहूर्तोंमें युतिदोष का परिहार होने से विवाह शुभफलदायक रहता है। **वेधदोष-** शुभ ग्रह बुध, गुरु, शुक्र का चरणगत वेध ही त्याज्य माना गया है, सम्पूर्ण नक्षत्र नहीं। पापग्रह सूर्य, भौम, शनि, राहु तथा केतु से विद्ध नक्षत्रों का हम अपने पंचांगों के विवाह मुहूर्तोंमें सर्वथा त्याग करते हैं। **मृत्युबाण-** सूर्य के १।१०।१९।२८ भोग्यांश से अग्रिमांशोंका समय मृत्युबाण से दूषित रहता है, जिसका परिहार न होने से सर्वथा त्याज्य मानते हैं। **क्रान्तिसाम्य-** स्थूल न लेकर गणितांगत ही लिया जाता है, जो कि महापात गणित प्रक्रिया द्वारा सिद्धि होता है। हम अपने पंचांगोंमें उसी का उल्लेख करते है। **लतादोष-** उज्जैन के आसन्न क्षेत्रोंमें ही माना जाता है, देश के अन्य भागोंमें नहीं। इसी तरह **पातदोष-** कुरुक्षेत्र में, **युतिदोष-** बंगाल में, **जामित्रदोष-** मथुरा में, **एकार्गलदोष-** कश्मीर में, **उपग्रहदोष-** कश्मीर के पश्चिम भाग में और **दग्धातिथिदोष-** भोपाल के आसन्न क्षेत्रोंमें माना जाता है। **'सर्वत्रवर्ज्यश्च भुजङ्गपातः'** अतः शूल योगान्ते नक्षत्र भुजंगपात से दूषित होने के कारण सभी जगह त्याज्य है। **जामित्रदोष-** चन्द्रमा उच्च का, शुभग्रह की राशि में, मित्रके वर्ग में हो तो जामित्रदोष सुखद रहता है।

लग्न- चाहे विवाह की हो या अन्य किसी शुभ कार्य की, लग्न से ६।८ शुक्र-चन्द्र यदि नीच, शत्रुक्षेत्री हों तो दोषावह नहीं होते। आठवें स्थान का मंगल कर्क, मिथुन, कन्या का हो, अथवा अस्त हो तो दोषकारक नहीं होता। अतः लग्नेश छटे आठवें होने पर दोषमुक्त नहीं कहा जा सकता। **कर्त्तरीदोष-** लग्न से ४।५।१२ या १०वें भाव में गुरु, शुक्र या बुध हों तो कर्त्तरीदोष नहीं रहता। कर्त्तरीदोष कारक ग्रह नीच, शत्रुक्षेत्री या अस्त हो तो दोष समाप्त हो जाता है। लग्न से द्वितीय भाव में शुभग्रह तथा बारहवें भाव में गुरु हो तो कर्त्तरी दोष मान्य नहीं। बल्कि ग्रह संयोग से शुभ फलदायक बन जाता है।

अन्धे, बहरे, पंगु एवं बधिर लग्न- जो माने गये हैं, वह अपने स्वामी से या गुरु से दृष्ट हों तो दोषमुक्त हो जाते हैं। लग्न से १।४।५।९।१०वें स्थान में बुध, गुरु, शुक्र में से कोई ग्रह हो तो वर्गदोष, अस्तदोष, ऋतु, तिथि, मास, पक्ष, दग्धा तिथि, अन्ध, कांण, बधिर आदि सभी दोष समाप्त हो जाते है। बुध बैठा हो तो सौ दोष, शुक्र दो सौ दोष तथा गुरु एक लाख दोषोंको समाप्तकर शुभ फल देने में समर्थ होता है।

सप्तमस्थ ग्रह- विवाह लग्न से ही दोषकारक होते है, क्योंकि उक्तस्थान दाम्पत्य जीवन से सम्बन्ध रखता है। अन्य कार्योंमें इसका विचार आवश्यक नहीं, देखना सिर्फ यह होता है कि लग्न अशुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त तो नहीं है। लग्न में बैठे बुध गुरु शुक्र तथा छटे-आठवें स्थान के पाप ग्रहोंको बहुत ही शुभ फलदायक माना गया है। **लग्न की गिनती-** कुछ आचार्य कर्ताकी राशि से लग्न ४।८।१२वीं होने पर ठीक नहीं, ऐसा कहते हैं। उनकी यह धारणा सार्थक नहीं, यह नियम तो केवल ग्रहगणना पर लागू होता है। पंचांग में लग्न मुहूर्त सोच विचारकर सुनिश्चित किये जाते हैं, जो शुभफलप्रद रहते है।

☆ द्विरागमन (गौना) मुहूर्त्त ☆

१७ अप्रै. शुक्रे धनिष्ठायां लग्न वृष
२६ " रवि रोहिण्यां अक्षयतीज
३० " गुरौ पुष्य लग्न चिन्तनीय
७ मई गुरौ स्वात्यां पूर्णिमा श्रेष्ठ
१० " रवि मूलभे लग्न चिन्तनीय
१९ नव. गुरौ उषा. मध्याह्ने धातायोग
२५ " बुधे उभायां लोकप्रसिद्धिमुहूर्त्त
२६ " गुरौ रेवत्यां लग्न चिन्तनीय
३० " चन्द्रे रोहिण्यां अभिजितमुहूर्त्त
२ दिस. बुधे मृगशिर अमृतयोग
५ " शनौ पुष्यभे मित्रयोग श्रेष्ठ
१० " गुरौ चित्रा भद्रोत्तर लग्न कुम्भ

नोटः- पूर्वाचार्योंकि मतानुसार गुरु-शुक्र अस्त, शिशुत्व-वृद्धत्व में भी साल भीतर द्विरागमन शुभ होता है। यथा- **अस्तेऽथवा शिशुत्वे बालत्वे गुरुशुक्रयोः। शुभो द्विरागमोयावद् वर्षमेकं विवाहिताः॥** रेवत्यादि छः नक्षत्रों (रे. अ. भ. कृ. रो. मृग.) में गतिशील चन्द्रमा के रहते हुए शुक्र अन्धा रहता है। कश्यप, वशिष्ठ, अत्रि, भृगु, अंगिरा, भारद्वाज व वत्स गोत्रवालों को सम्मुख शुक्र का दोष नहीं लगता। यथा- **काश्यपेशु वशिष्ठेषु चात्रि भृग्वङ्गिरःसु च। भारद्वाजेषु वात्स्येषु प्रतिशुक्रो न दुष्यति॥**

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त

१९ अप्रै. रवि पूभायां सिंह लग्न श्रेष्ठ
२७ " रवि रोहिणी अक्षय तृतीया
३० " गुरौ पुष्ययोग शुभ लग्न चिन्त.
१७ मई रवि पूभा. भद्रोत्तर लग्न कन्या
१८ " चन्द्रे उभायां लग्न श्रेष्ठ
२४ " रवि मृगशिर सौम्य योग
२७ " बुधे पुष्यभे लाभामृत चौघड़िया

नोटः- आवश्यकतानुसार तीर्थस्थान में किसी पर्व विशेष के अवसर पर चन्द्रबल देखकर बिना उपनयन मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत किया जा सकता है। वंश परम्परा (कुलाचार) वेद शाखानुसार उपाकर्म के दिन श्रावणी पूर्णिमादि में भी लग्नशुद्धि देखकर यज्ञोपवीत संस्कार करा सकते हैं।

☆ चूड़ाकरण (मुंडन) मुहूर्त्त ☆

१७ अप्रै. शुक्रे धनिष्ठायां धातायोग श्रेष्ठ
२६ " रवि रोहिणी स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त
३० " गुरु पुष्यामृत शुभ योगे
७ मई गुरौ स्वाती बुद्धजयंती१० ।१३से
१५ " शुक्रे धनिष्ठायां ८ ।२२ बजे तक
२७ " बुधे पुष्यभे लग्न शुभ जानें
२५ नव. बुधे उभायां लोकप्रसिद्धमुहूर्त्त
२७ " शुक्रे अश्विनी ८ ।२७ उपरान्त
३० " चन्द्रे रोहिण्यां गुरुनानक जयंती
२ दिस. बुधे मृगशिर अमृतयोगे
१० " गुरौ चित्रायां भद्रोत्तर १२ ।५१से

☆ कर्णवेध मुहूर्त्त ☆

नोटः- चूड़ाकरण मुहूर्त्तों में कर्णवेध संस्कार सविधि किया जा सकता है। कुलाचार मान्यतानुसार देव स्थान, तीर्थस्थान, मंगलकार्य, पर्वोत्सवों के शुभ अवसर पर चन्द्र, तारा एवं लग्नबल विचारकर मुंडन तथा कर्णवेध कुलगुरु की आज्ञानुसार सम्पन्न करा सकते हैं।

जमीन खरीदने का मुहूर्त्त

१७ अप्रै. शुक्रे धनि.१२ ।३० तक श्रेष्ठ
२६ " रवि रोहिणी स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त
३० " गुरु पुष्यामृत शुभयोगे
७ मई गुरौ भद्रोत्तर स्वात्यां श्रेष्ठ जानें
१५ " शुक्रे धनिष्ठा धातायोग
२४ " रवि मृगशिर सौम्य योगे
२७ " बुधे पुष्यभे वृद्धियोगे
१० जून बुधे श्रवण छत्रयोग श्रेष्ठ
१२ " शुक्रे शतभिषा भद्रोत्तर ल. श्रेष्ठ
१५ " चन्द्रे रेवत्यां लग्नचिन्तनीयम्
२४ " बुधे पुष्यभे मध्याह्नकाले
२ जुला. गुरौ अनुराधा आनन्दयोगे
१२ " रवि रेवत्यां स्थिरयोगे
१३ " चन्द्रे रेवत्यां सिंह लग्ने
२९ " बुधे अनुराधायां धातायोगे
३ अग. चन्द्रे ९ ।२८ उप. श्रवणयोगे
५ " बुधे श्रव.धनि. मित्रयोगे शुभः
६ " गुरौ शतभिषा भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
१४ " शुक्रे मृगशिर भद्रोत्तर १४ ।१ उप.
२३ " रवि चित्रायां पद्मयोग श्रेष्ठ
३१ " चन्द्रे श्रवणभे सिद्धि योग उत्तम
१९ अक्टू. चन्द्रे अनुराधा मानसयोगे
२५ " रवि धनिष्ठा विजयादशमी
२६ " चन्द्रे शतभिषा अमृतयोगे
३१ " शनौ अश्विनी महर्षि बाल्मीकज.
८ नव. रवि पुष्यामृत श्रीवत्सयोगे
१२ " गुरौ हस्तभे धनतेरस
२६ नव. गुरौ रेवती सर्वार्थसिद्धियोग
३० " चन्द्रे रोहिण्यां कार्तिकपूर्णिमा
२ दिस. बुधे मृगशिर अमृतयोगे
५ " शनौ पुष्यभे मित्रयोगे श्रेष्ठ
१० " गुरौ चित्रायां भद्रोत्तर श्रेष्ठ

जमीन जायदाद क्रय-विक्रय मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्र- अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती, **उभयपक्षीय श्रेष्ठ तिथियाँ-** २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, **श्रेष्ठ वार-** रवि, चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार। **वर्जित समय-** धनु-मीन संक्रांति, पितर पक्ष होलाष्टक और गुरु-शुक्रास्त काल जानें।

नोटः- इस वाणिज्य युग में भवन निर्माण, गृहप्रवेश एवं अन्यान्य मुहूर्त्तों की बहुत आवश्यकता महसूस की जाती है। इस संदर्भ में वृषभचक्र कालगणना परित्वेन मुहूर्त्त न्यूने ही बन पाते हैं। अतः सुयोग्य ज्योतिर्विद् सूक्ष्मातिसूक्ष्म तिथि, नक्षत्र, क्षण, वार, मान्यता के अनुसार मुहूर्त्त शोधन का कार्य सविधि सम्पन्न करा सकते हैं। आप अपनी सुविधानुसार श्रीराजधानी पंचांग कार्यालय में सम्पर्क करके अपनी राशि नामानुसार रू.११०१/- भेजकर समाधान (श्रेष्ठ मुहूर्त्त) निकलवा सकते हैं।

☆ गृहारम्भ मुहूर्त्त ☆

७ मई गुरौ स्वाती लग्न वृषादि ६ ।३ उप.
१० " रवि मूले सिद्धियोग ल.५ ।५१से३
२७ " बुधे पुष्य ७ ।२७से मिथुनादि ल.श्रेष्ठ
२८ " गुरु पुष्यामृतयोगे प्रातः७ ।२६तकश्रे.
२९ जुला. बुधे अनु.८ ।३२ उप. स्थिर ल.५
३१ " शुक्रे मूलभे ८ ।४० से कन्या ल.श्रे.
३ अग. चन्द्रे श्रवण ल.कन्या तुला अभि.मु.
५ " बुधे धनि. शत. लग्न चिन्त्येत्बुध
६ " गुरौ शत.भद्रात्पूर्वे लग्न ८ ।५८ से
२६ " बुधे अनु. सौम्ययोगे ल.कन्या,तुला
२८ " शुक्रे मूल लग्न कन्यादि ३ श्रेष्ठ
३० " रवि उषा. अमृतयोगे
३१ " चन्द्रे श्रवणे सिद्धियोगे ल.तुला
२५ अक्टू. रवि धनि. लग्न धनु विजयादशमी
२६ " चन्द्रेशत.अमृतयोगे ल.१० ।२८ से
२८ " बुधे उभा.१० ।२० से धनु श्रेष्ठ
२९ " गुरौ उभा. लग्न धनु मकर
३१ " शनौ अश्विनी शरदपूर्णिमायां ल.चि
२१ नव. शनौ धनि.अभि.११ ।५२सेस्थिरयोग
२५ " बुधे उभा. मध्याह्ने कुम्भलग्ने
२६ " गुरौ रेवती ल.८ ।२६ से धनु-कुंभ
२७ " शुक्रे अश्वि.८ ।२२ से ल.धनादिश्रे.
३० " चन्द्रेरोहि.८ ।२७ से अभिजितश्रेष्ठ
२ दिस. बुधे मृग.अमृतयोग ल.८ ।६ से धनु
५ " शनौपुष्य लग्न चिन्त्येत्बुधः

☆ गृह प्रवेश मुहूर्त्त ☆

१७ अप्रै. शुक्रे धनि.कलशचक्रशुभः७ ।२३ से
१२ ।२० तक श्रेष्ठ भद्रापाताले
१८ " शनौशत.क.चक्रशुभः ल.७ ।१९उप.

२० अप्रै. चन्द्रे उभा. क.च.शुभः७।२२ से वृषादिश्रे.
२६ " रवि रोहिणी अक्षयतीज, स्वयंसिद्धमुहूर्त्त
२९ " बुधे पुन. क.च.शुभः वृषादि ल.६।३५से
३० " गुरु पुष्यामृतयोगे कलशचक्र शुभ है
७ मई गुरौ स्वात्यां वैशाखीपूनो बुद्धजयंती
१८ " चन्द्रे उभा. क.च.शुभः अभिजितमुहूर्त्त
२० " बुधे अश्वि. क.च.शुभः लग्नचिन्तनीय
२७ " बुधे पुष्य ७।२७ उप. कर्क सिंह
१७जुला. शुक्रे रोहिणी आवश्यके रविनिरंशः
१८ " शनौ मृगशिरायां कलशचक्रशुभ ल. सिंह
२६ " रवि हस्त क.च.शुभः अभिजितमुहूर्त्त
२९ " बुधे अनु. कलशचक्रशुभ धातायोग में
३१ " शुक्रे मूल क.च.शुभः अभिजितमु. श्रेष्ठ
३ अग. चन्द्रे श्रवण भद्रोत्तर ९।३० से कन्यायां
१४ " शुक्रे मृग. क.च.शुभः वृषेन्दु भद्रास्वर्गे
१७ " चन्द्रे पुष्य क.च.शुभःभद्रात्पूर्वे लग्न श्रेष्ठ
२४ " चन्द्रे स्वाती क.च.शुभः छत्रयोग लग्न ८
२६ " बुधे अनु. क.च.शुभः ल.तुला वृश्चिक
२८ " शुक्रे मूल क.च.शुभः स्थिरयोग ९।५४उप.
३० " रवि उषा.क.च.शुभः लग्नचिन्तयेत्बुधः
३१ " चन्द्रे श्रवण क.च.शुभः अभिजितमुहूर्त्त श्रे.
२१अक्टू बुधे मूल क.च.शुभःल.धनु मकर श्रेष्ठ
२३ " शुक्रे उषा. क.च.शुभः आनंदयोग में श्रेष्ठ
२४ " शनौ श्रवण क.च.शुभःस्थिरयोगे लग्न श्रेष्ठ
२५ " रवि धनि. कलशचक्रशुभः स्वयंसिद्धमुहूर्त्त
२६ " चन्द्रे शत. कलशचक्रशुभः अमृतयोगे श्रेष्ठ
२९ " गुरौ उभा. क.च.शुभः छत्रयोगे लग्न श्रेष्ठ
८ नव. रवि पुष्यामृतयोगे श्रीवत्सयोगे
११ " बुधे उफा. कलशचक्रशुभः ल.९।२४से
१२ " गुरौ हस्त कलशचक्रशुभः लग्नचिन्तनीय

२१ नव. शनौ श्रवण क.च.शुभः स्थिरयोगे श्रेष्ठ
२२ " रवि धनि. क.च.शुभः अभिजिन्मुहूर्त्ते
२५ " बुधे उभा. क.च.शुभःलोकप्रसिद्धमुहूर्त्त
२७ " शुक्रे अश्वि. क.च.शुभः लग्नचिन्तनीयम्
५ दिस. शनौ पुष्यभे मित्रयोगे लग्न मकर कुम्भ
१० " गुरौ हस्त क.च.शुभः भद्रोत्तर ल.कुम्भ

सर्वेदोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।

☆ जीर्णानि गृहप्रवेश मुहूर्त्त ☆

नीचे लिखे पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त उन सबके लिए ग्राह्य हैं, जिन्हें नौकरी में ट्रांसफर के कारण मकान बदलने पड़ते हैं, अथवा किराए के मकान खालीकर दूसरी जगह निवास करना होता है। देशकाल परिस्थित्यावसात् इन मुहूर्त्तों में गुरु शुक्र का अस्त काल, अधिमास दोष, गुर्वादित्य (सिंहे सिंहांशक) दोष, कलशचक्रशुद्धि, होलाष्टक आदि का विचार नहीं किया जाता है। अत्यन्त व्यस्तता वाले इस वाणिज्य युग में रविवार को अधिकांश आचार्य ग्राह्य मानते हैं।

१७ अप्रै. शुक्रे धनिष्ठायां धातायोगे
१८ " शनौ शतभिषा लग्नचिन्तयेत्बुधः
२० " चन्द्रे उभायां लग्न श्रेष्ठ चिन्तनीय
२६ " रवि रोहिण्यां स्वयं सिद्धिमुहूर्त्त
२९ " बुधे पुनर्वसु लग्न चिन्तयेत्बुधः
३० " गुरौ गुरुपुष्यामृत शुभयोगे
४ मई चन्द्रे उफायां श्रीवत्सयोगे श्रेष्ठ
७ " गुरौ स्वात्यां भद्रोत्तर लग्न श्रेष्ठ
१० " रवि मूलभे सिद्धियोग श्रेष्ठ
१५ " शुक्रे धनिष्ठा धातायोग शुभः
१८ " चन्द्रे उभायां लग्न चिन्तनीयम्
२० " बुधे अश्विन्यां स्थिर सिंह लग्ने

२४ मई रवि मृगशिर सौम्य योगे
२७ " बुधे पुष्यभे लग्न चिन्तयेत्बुधः
१ जून चन्द्रे हस्तभे श्रीगंगादशहरा
५ " शुक्रे अनुराधां सत्यव्रत पूर्णिमायां
१० " बुधे श्रवण छत्रयोग में श्रेष्ठ
१५ " चन्द्रे रेवत्यां लग्न चिन्तनीय
२४ " बुधे पुष्यभे लग्न श्रेष्ठ
१२जुला. रवि उभायां स्थिरयोग में श्रेष्ठ
१७ " शुक्रे रोहिणी मित्रयोग लग्न चिन्तनीय
१८ " शनौ मृगशिर लग्न चिन्तयेत्बुधः
२६ " रवि रविपुष्यामृतयोग शुभः
२९ " बुधे अनु.८।३२ उपरान्त श्रेष्ठ
३१ " शुक्रे मूलभे श्रेष्ठ लग्न तुला
३ अग. चन्द्रे श्रवण मध्याह्नकाले शुभः
६ " गुरौ शतभिषा भद्रात्पूर्वे लग्न श्रेष्ठ
९ " रवि रेवत्यां प्रवर्धमानयोगे
१४ " शुक्रे मृगशिर भद्रावास स्वर्गे श्रेष्ठ
१७ " चन्द्रे पुष्यभे लग्न चिन्तनीयम्
२१ " शुक्रे उफायां शुभ योगे वृश्चिक लग्न
२३ " रवि चित्रायां पद्मयोगे शुभः
२४ " चन्द्रे स्वात्यां छत्रयोगे श्रेष्ठ
२६ " बुधे अनुराधायां सौम्ययोगे
२८ " शुक्रे मूलभे स्थिर योगे लग्न श्रेष्ठ
३० " रवि उषा. अमृतयोगे श्रेष्ठ
३१ " चन्द्रे श्रवणभे सिद्धियोगे लग्न वृश्चिक
११अक्टू. रवि पुष्यामृत श्रीवत्सयोगे
२१ " बुधे मूलभे लग्न धनु मकर श्रेष्ठ
२३ " शुक्रे उषायां आनन्दयोग श्रेष्ठ
२४ " शनौ श्रवण स्थिर योगे लग्न चिन्त.
२५ " रवि धनिष्ठा स्वयं सिद्धमुहूर्त्त

२६ अक्टू चन्द्रे शतभिषा अमृतयोग शुभः
२९ " गुरौ उभायां छत्रयोगे शुभः
३१ " शनौ अश्विनी शरत्पूर्णिमायां
८ नव. रवि रविपुष्यामृत योगे
११ " बुधे उफायां लग्न श्रेष्ठ
१२ " गुरौ हस्तभे लग्न चिन्तनीयम्
१९ " गुरौ उषायां धातायोग में श्रेष्ठ
२१ " शनौ श्रवण-धनिष्ठायां श्रेष्ठ
२२ " रवि धनिष्ठायां भद्रोत्तर लग्न शुभः
२५ " बुधे उभायां भद्रात्पूर्वे लग्नचिन्त.
२७ " शुक्रे अश्विनी शुभयोगे ल.१०, ११
३० " चन्द्रे रोहिण्यां कार्तिकीपूर्णिमा
५ दिस. शनौ पुष्यभे मित्रयोगे
१० " गुरौ हस्तभे भद्रोत्तर लग्न श्रेष्ठ
१५ जन. शुक्रे धनिष्ठायां धातायोगे
२८ " गुरु पुष्यामृतयोगे श्रेष्ठ
२५ फर. गुरु पुष्यामृतयोगे लग्नचिन्तनीय्

राहुकाल ज्ञानाय चक्र

रवि	सायं	१६।३०	से	१८।००	तक
चन्द्र	प्रातः	७।३०	से	९।००	तक
मंगल	दिवा	१५।००	से	१६।३०	तक
बुध	दिवा	१२।००	से	१३।३०	तक
गुरु	दिवा	१३।३०	से	१५।००	तक
शुक्र	प्रातः	१०।३०	से	१२।००	तक
शनि	प्रातः	९।००	से	१०।३०	तक

☆ अभिजित् मुहूर्त्त ☆

मध्यम मानेन दिन में ११।३६ से १२।२४ बजे के मध्य अभिजित् मुहूर्त्त वर्तमान रहता है, जिसमें सभी दोष निवारण की क्षमता कही गई है। किसी मुहूर्त्त विशेष में लग्न की शुद्धता परिलक्षित न हो तो अभिजित् मुहूर्त्त में कार्य सम्पादन कर लाभ के

भागीदार बन सकते हैं। विशेष विवरण पंचांग के मुहूर्त प्रकरण में देखें।

☆ उद्योग संचालन मुहूर्त ☆

१८ अप्रै. शनौ शत. स्थिर लग्न ७।१९ से
२६ " रवि रोहिणी स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त
३० " गुरौ गुरुपुष्यामृत शुभयोगे
७ मई गुरौ स्वाती भद्रोत्तर लग्न ६।३से
२० " बुधे अश्विनी शुभलग्न११।४१से
२७ " बुधे पुष्यभे ल.८।५४ से शुभ
२४ जून बुधे पुष्यभे लग्न चिन्तयेत्बुधः
१३ जुला. चन्द्रे अश्विनी स्थिरल.१०।३७से
३ अग. चन्द्रे श्रवण ल.११।७से कन्यादि
६ " गुरौ शत.ल.८।५४सेकन्या तुला
१० " चन्द्रे अश्वि.अभि.मु.स्वर्गेभद्रा..
३१ " चन्द्रे श्रवण सिद्धियोग ल.७, ८
२५ अक्टू रवि धनि.विजया१०स्वयंसिद्धिमु.
२६ " चन्द्रे शतभिषाल.९,१०अमृतयोगे
३१ " शनौ अश्वि.ल.९,१०,११शरद्१५
८ नव. रवि पुष्यामृतयोगे श्रीवत्सयोगेश्रे.
१२ " गुरौ हस्तभे ल.धनु-मकर श्रेष्ठ
२१ " शनौ श्रवणल.१०,११,स्थिरयोग
२२ " रवि धनि.शत. भद्रोत्तर ल.श्रेष्ठ
२७ " शुक्रे अश्वि.८।२७से लग्न३श्रेष्ठ
३० " चन्द्रे रोहि.कार्तिक१५,ल.चिन्त.
५ दिस. शनौ पुष्यभे मित्रयोग में श्रेष्ठ

☆ कम्प्यूटर-मोबाइल-आधुनिक उपकरण मुहूर्त्त ☆

१७ अप्रै. शुक्रे धनि.१०।३०तक लग्न३,४
१८ " शनौ शत. स्थिर ल.७।१९से
२६ " रवि रोहि. अक्षयतीज, धातायोग

३० अप्रै. गुरौ पुष्यामृतयोगे श्रेष्ठलग्न
७ मई गुरौ स्वात्यां भद्रोत्तर लग्न श्रेष्ठ
१३ " बुधे श्रवण भद्रावास पाताले शुभ
२० " बुधे अश्वि.शुभल.११।४१उप.
२४ " रवि मृग.ल.९।६से १३।४३तक
१० जून बुधे श्रवण छत्रयोग ल.चिन्त.
१२ " शुक्रे शत.भद्रोत्तरल.१०।११सेअभि.
१५ " चन्द्रे रेवती लग्नचिन्तयेत्बुधः
२४ " बुधे पुष्यभे लग्न कर्क-सिंह
२७ " शनौ उफायां लग्नचिन्तयेत्बुधः
२ जुला. गुरौ अनु. आनन्दयोगे श्रेष्ठ
१२ " रवि रेवत्यां स्थिरलग्ने सिंह श्रेष्ठ
१३ " चन्द्रे अश्वि.लग्न चिन्तयेत्बुधः
१७ " शुक्रे रोहिण्यां अभिजितमुहूर्त्ते
२५ " शनौ उफायां लग्न११।५७ बजे
२६ " रवि हस्तभे अभिजितमुहूर्त्ते
२९ " बुधे अनुराधायां धातायोगे
३ अग. चन्द्रे श्रवण लग्न मध्याह्नकाले
६ " गुरौ शत. लग्न ८।५४ उप.
१० " चन्द्रे अश्वि. स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये..
२१ " शुक्रे उफायां शुभयोगे ल.चिन्त.
२३ " रवि चित्रायां लग्नचिन्तयेत्बुधः
३० " रवि उषायां अमृतयोगे श्रेष्ठ
३१ " चन्द्रे श्रवण,सिद्धियोग,ल.७,८
१९ अक्टू. चन्द्रे अनु. मानसयोगे ल.९,१०
२६ " चन्द्रे शतभिषायां अमृतयोगेशुभः
२९ " गुरौ रेवत्यां छत्रयोगे ल.९श्रेष्ठ
३१ " शनौ अश्वि.शरदपूर्णिमायां श्रेष्ठ
८ नव. रवि पुष्यामृतयोगे श्रीवत्सयोगे
११ " बुधे उफायां ल.धनु मकर श्रेष्ठ

१२ नव. गुरौ हस्तभे ल.धनु मकर शुभः
२१ " शनौ श्रवण-धनिष्ठायां शुभजानें
२२ " रवि शत.भद्रोत्तर लग्न शुभजानें
२५ " बुधे उभायां ल.मकर-कुम्भ श्रे.
२७ " शुक्रे अश्वि. वरियानयोगे शुभः
३० " चन्द्रे रोहिणी अभिजित्मुहूर्त्ते
२ दिस. बुधे मृगशिर लग्न चिन्त.
५ " शनौ पुष्यभे लग्न मकर-कुम्भ
१० " गुरौ चित्रायां लग्न १२।५१उप.

☆ विप्पणी व्यापार मुहूर्त ☆

१५ अप्रै. बुधे उषायां ७।३० से वृषादिल.
१८ " शनौ शतभिषायां ल.वृष मिथुन
२० " चन्द्रे उभायां लग्न चिन्तनीय
२६ " रवि रोहिण्यां धातायोग में श्रेष्ठ
२९ " बुधे पुनर्वसु मिथुन कर्क लग्न
३० " गुरौ पुष्यामृत शुभयोगे
७ मई गुरौ स्वात्यां भद्रोत्तर श्रेष्ठ
१३ " बुधे श्रवण नक्षत्रे छत्रयोगे
१५ " शुक्रे धनिष्ठायां धातायोगे
१८ " चन्द्रे उभायां मध्याह्नकाले
२० " बुधे अश्विन्यां भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
२४ " रवि मृगशिर सौम्ययोगे
२७ " बुधे पुष्यभे लग्न श्रेष्ठ
१ जून चन्द्रे हस्तभे श्रीगंगादशमी
३ " बुधे स्वाती लग्न चिन्तनीय
१० " बुधे श्रवण छत्रयोग में श्रेष्ठ
११ " गुरौ धनिष्ठायां श्रीवत्सयोगे
१२ " शुक्रे शतभिषा सौम्ययोगे
१५ " चन्द्रे रेवत्यां भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
२४ " बुधे पुष्यभे लग्न चिन्तनीय

२७ जून शनौ उफायां १०घं.१०मि.उप.
२ जुला. गुरौ अनु. आनन्दयोग में श्रेष्ठ
११ " शनौ उभायां भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
१२ " रवि उभा. रेवती स्थिर योग
१७ " शुक्रे रोहिण्यां मित्रयोगे शुभः
१८ " शनौ मृगशिर लग्न चिन्त.
२६ " रवि हस्तभे लग्न कन्या तुला
३ अग. चन्द्रे उषायां भद्रोत्तर लग्न शुभ
५ " बुधे धनिष्ठायां मित्रयोगे
८ " शनौ उभायां लग्न कन्या तुला
९ " रवि रेवत्यां प्रवर्धमान योगे
१४ " शुक्रे मृगशिर लग्न चिन्तयेत्बुधः
१७ " चन्द्रे पुष्यभे भद्रोत्तर श्रेष्ठ
२१ " शुक्रे उफायां शुभयोग में श्रेष्ठ
२४ " चन्द्रे स्वात्यां छत्रयोग में श्रेष्ठ
२६ " बुधे अनुराधायां सौम्य योगे
३० " रवि उषायां अमृतयोगे श्रेष्ठ
३१ " चन्द्रे श्रवण सिद्धियोग श्रेष्ठ
३ अक्टू शनौ रेवती अश्विनी धातायोगे
४ " रवि अश्विनी आनन्दयोगे
७ " बुधे रोहिण्यां शुभयोगे
१० " शनौ पुनर्वसु अभिजितमुहूर्त्त
११ " रवि पुष्यामृतयोगे श्रीवत्सयोगे
१९ " चन्द्रे अनुराधा मानस सुयोगे
२३ " शुक्रे उषायां आनन्दयोगे
२५ " रवि धनिष्ठायां स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त
२६ " चन्द्रे शतभिषा लग्न चिन्तनीय
२९ " गुरौ उभायां छत्रयोगे ग्राह्य
३१ " शनौ अश्विनी शरद्पूर्णिमा
६ नव. शुक्रे पुनर्वसु अभिजित्मुहूर्त्त
८ " रवि पुष्यामृतयोगे

११ नव. बुधे उफायां लग्न चिन्तनीय
२० " शुक्रे उषायां आनन्दयोगे
२१ " शनौ श्रवण धनिष्ठा स्थिर योग
२५ " बुधे उभायां श्रेष्ठ मुहूर्त्त
२७ " शुक्रे अश्विनी मध्याह्नकाले
३० " चन्द्रे रोहिण्यां पूर्णिमायां
२ दिस. बुधे मृगशिर अमृतयोगे
५ " शनौ पुष्यामृत श्रेष्ठ योगे
१० " गुरौ चित्रायां भद्रोत्तर श्रेष्ठ
१५ जन. शुक्रे धनिष्ठायां धातायोग
१८ " चन्द्रे उभायां अभिजितमुहूर्त्त
२१ " गुरौ अश्विनी मानसयोगे
२५ " चन्द्रे मृगशिर आनन्दयोगे
२८ " गुरु पुष्यामृत श्रेष्ठ योगे
४ फर. गुरौ स्वाती स्थिर योगे
२० " शनौ रोहिणी श्रीवत्सयोगे
२२ " चन्द्रे मृगशिर आनन्दयोगे
३ मार्च बुधे स्वात्यां मध्याह्नकाले
५ " शुक्रे अनुराधा भद्रोत्तर श्रेष्ठ
१० " बुधे श्रवण छत्रयोगे श्रेष्ठ
११ " गुरौ धनिष्ठा श्रीवत्सयोगे

वस्तु खरीदने (संग्रह) के शुभ नक्षत्र-

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती माने गये हैं। रिक्ता व क्षयः तिथि एवं भौमवार रहित सभी दिन ग्राह्य कहे गये हैं।

बेचने (बिक्री) के नक्षत्र-

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्ले,

मघा, पू.फा., उ.फा., विशाखा, मूल, पूषा., उषा., पू.भा. और उ.भा., वारों में गुरु, सोम श्रेष्ठ माने गये हैं। मुहूर्त्त चिन्तामणि में मघा के बजाय ज्येष्ठा को निषेध कहा है। अतः युक्तियुक्त विचारकर काम में लेना चाहिए। व्यापार में गुरु शुक्रास्त काल क्षयाधिमास, खरमास, होलाष्टक, पितरपक्ष, सिंहस्थकाल, लुप्तसंवत्सर आदि का दोष मान्य नहीं रहता। यह तो मन की इच्छावृत्ति पर आधारित कृत्य हैं। सर्वार्थसिद्धि, अमृत सिद्धि, रविपुष्य, गुरुपुष्यामृत एवं रवियोग से शुरु होने वाला दिन व्यापारवृद्धि, उत्तरोत्तर सौख्य- समृद्धि में सहायक होता है। कृत्य करने वाले का मान-सम्मान बढ़ता है तथा नित्यानन्द का अनुभव होता रहता है।

☆ वाहन लेन-देन मुहूर्त्त ☆

२६ अप्रै. रवि रोहिणी स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त
३० " गुरु पुष्यामृतयोगे शुभ रहे
७ मई गुरौ स्वात्यां लग्न ७।५९ से श्रेष्ठ
२० " बुधे अश्विनी लग्न कर्क सिंह
२४ " रवि मृगशिर सौम्ययोगे ल.४,५
२७ " बुधे पुष्य नक्षत्रे लग्न श्रेष्ठ
१० जून बुधे श्रवणभे ल.७।५८से
१२ " शुक्रे शतभिषां सौम्ययोगे श्रेष्ठ
१५ " चन्द्रे रेवती लग्नचिन्तयेत्बुधः
२४ " बुधे पुष्यभे लग्न सिंह कन्या
२जुला.गुरौ अनुराधायां आनन्दयोगे
८ " बुधे धनिष्ठा भद्रावास पातालेश्रे.
१३जुला.चन्द्रे रेवत्यां ल. सिंह कन्या श्रेष्ठ
१७ " शुक्रे रोहिण्यां मित्रयोगे श्रेष्ठ
१८ " शनौ मृगशिर अभिजितमुहूर्त्त
२६ " रवि हस्त मानसयोग ९।३२से
३अग. चन्द्रे श्रवण ९।२८ उप. श्रेष्ठ
५ " बुधे धनिष्ठा शतभिषा मित्रयोगे
२३ " रवि चित्रायां पद्मयोगे श्रेष्ठ
२६ " बुधे अनुराधा श्रीराधाष्टमी श्रेष्ठ
३१ " चन्द्रे श्रवणभे सिद्धियोग में
१९अक्टू.चन्द्रे अनुराधा लग्न धनु मकर
२५ " रवि धनिष्ठा स्वयंसिद्धिमुहूर्त्त
२६ " चन्द्रे शतभिषा अमृतयोगे श्रेष्ठ
३१ " शनौ अश्विन्यां शरद्पूर्णिमा
७नव. शनौ पुष्य अभिजितमुहूर्त्त श्रेष्ठ
८ " रवि पुष्यामृत योग में श्रेष्ठ
१३ " शुक्रे चित्रायां भद्रावास पाताले
२० " शुक्रे श्रवण ९।२१ से लग्न शुभः
२१ " शनौ श्रवण धनिष्ठा लग्न चिन्त.
२७ " शुक्रे अश्विनी अभिजिन्मुहूर्त्त
३० " चन्द्रे रोहिण्यां लग्न चिन्तयेत्बुधः
२दिस.बुधे मृगशिर लग्न धनु मकर श्रेष्ठ
५ " शनौ पुष्यभे मित्रयोगे शुभः
१० " गुरौ हस्त चित्रायां लग्न श्रेष्ठ

नोटः- कार, बस, ट्रक, स्कूटर, मोटर साईकिल, वायुयान आदि वाहन लेने पर अपने देवस्थान में या शक्ति स्थान में दर्शनार्थ अवश्य जाना चाहिए। कुलगुरु आचार्य से पूजा कराते समय सिंदूर से स्वस्तिक चिह्न, शुभ-लाभ एवं मारुति यन्त्र बनवाकर वाहन चलाने से अत्यन्त लाभ होता है।

☆ देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

१५ अप्रै. बुधे उषायां स्थिर लग्न २, ५
१८ " शनौ शतभिषा अभिजितमुहूर्त्त
२० " चन्द्रे उभायां ल.मिथुन अभि.मु.
२६ " रवि रोहिण्यां स्वयंसिद्धमुहूर्त्त
३० " गुरौ गुरुपुष्यामृतयोग शुभः
७ मई गुरौ स्वात्यां भद्रोत्तर लग्नश्रेष्ठ
१५ " शुक्रे धनिष्ठायां धातायोगे ल.श्रेष्ठ
१८ " चन्द्रे उभायां अभिजिन्मुहूर्त्तें
२५ " चन्द्रे आर्द्रायां लग्न कर्क सिंह श्रे.
२७ " बुधे पुष्यभे लग्न चिन्तयेत्बुधः
२८ " गुरौ गुरुपुष्यामृतयोगे ल.मिथुन
१२ जून शुक्रे शतभिषायां सौम्ययोगे
१५ " चन्द्रे रेवत्यां अभिजितमुहूर्त्तें
२४ " बुधे पुष्यभे लग्न चिन्तयेत्बुधः
२७ " शनौ उफायां ल.९।१३ उप.

सर्वेदोषाः विनश्यन्ति लग्न शुद्धिर्यदाभवेत्।

☆तामसी देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त☆

२जुला.गुरौ अनुराधायां
११ " शनौ उभायां भद्रात्पूर्वे
१२ " रवि रेवत्यां स्थिर योग
१७ " शुक्रे रोहिणी लग्न सिंह
२५ " शनौ उफायां लग्न चिन्त.
२९ " बुधे अनुराधा धातायोगे
३अग. चन्द्रे श्रवण भद्रोत्तर श्रेष्ठ
५ " बुधे धनिष्ठायां मित्रयोगे
८ " शनौ उभायां लग्न चिन्तनीय
१७ " चन्द्रे पुष्यभे लग्न श्रेष्ठ
२१ " शुक्रे उफायां शुभ योगे
२३ " रवि चित्रायां लग्न चिन्त.
२६अग. बुधे अनुराधायां सौम्य योगे
२८ " शुक्रे मूलभे लग्न चिन्त.
३० " रवि उषायां अभिजितमु.
१९अक्टू चन्द्रे अनुराधा मानस योगे
२१ " बुधे मूल अभिजितमुहूर्त्ते
२५ " रवि धनिष्ठा विजयादशमी
२६ " चन्द्रे शतभिषायां
३१ " शनौ अश्विनी भद्रोत्तर
५नव. गुरौ आर्द्रायां लग्न चिन्त.
८ " रवि पुष्यामृत श्रीवत्सयोगे
१२ " गुरौ हस्त नक्षत्रे श्रेष्ठ लग्न
२१ " शनौ श्रवणे स्थिर योगे
२२ " रवि धनिष्ठायां मध्याह्नकाले
२५ " बुधे उभा. लोक प्रसिद्ध मुहूर्त्त
२७ " शुक्रे अश्विनी लग्न चिन्त.
३० " चन्द्रे रोहिणी कार्तिकपूनो
२दिस. बुधे मृगशिर मध्याह्ने
५ " शनौ पुष्य नक्षत्रे श्रेष्ठ
१० " गुरौ चित्रा भद्रोत्तर लग्न श्रेष्ठ

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

१० मई रवि मूल ८।३ उपरांत सिंह
९जुला. गुरौ शत.लग्न ८।२५ से सिंह
२२अग. शनौ हस्तभे अभिजितमुहूर्त्ते

श्री दुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

२ मई शनौ मघायां दिन में ११।३५तक
२९ जून चन्द्रे हस्त चित्रा लग्न चिन्त.
२५अक्टू रवि धनिष्ठायां लग्न धनु मकर
२३नव. चन्द्रे शतभिषा अमृतयोगे

श्री शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

२१ मई गुरौ भरणी स्थिर लग्न सिंह
२० जून शनौ रोहिण्यां श्रीवत्सयोगे

श्री गौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

२६ अप्रै. रवि रोहि.स्वयंसिद्धमुहूर्त्त
२४ जून बुधे पुष्यभे लग्न सिंह कन्या

श्रीविष्णु रामकृष्ण प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

१२ अग. बुधे कृति. श्रीकृष्णजन्माष्टमी
अत्यावश्यकेसिद्धियोगेग्राह्य

☆ अभिजित् मुहूर्त्त ☆

मध्यम मानेन दिन में ११।३६ से १२।२४ बजे के मध्य अभिजित् मुहूर्त्त वर्त्तमान रहता है, जिसमें सभी दोष निवारण की क्षमता कही गई है। किसी मुहूर्त्त विशेष में लग्न की शुद्धता परिलक्षित न हो तो अभिजित् मुहूर्त्त में कार्य सम्पादन कर लाभ के भागीदार बन सकते हैं। विशेष विवरण पंचांग के मुहूर्त्त प्रकरण में देखें।

☆ अक्षरारम्भ मुहूर्त्त ☆

२६ अप्रै. रवि रोहिणी अक्षयतृतीया
२९ " बुधे पुनर्वसु लग्न अभिजितमु.
३० " गुरौ गुरुपुष्यामृत श्रेष्ठ योगे
७ मई गुरौ स्वाती बुद्धपूर्णिमा
२४ " रवि मृगशिर सौम्ययोगे
२५ " चन्द्रे आर्द्रायां आनन्दयोगे
२७ " बुधे पुष्यभे श्रुतिपंचमी
१५ जून चन्द्रे रेवत्यां अभिजितमुहूर्त्त
२४ " बुधे पुष्यभे लग्न श्रेष्ठ

☆ विद्यारम्भ मुहूर्त्त ☆

२६ अप्रै. रवि रोहिणी आखातीज
२९ " बुधे पुनर्वसु लग्नचिन्त.

३० अप्रै. गुरौ गुरुपुष्यामृतयोगे
७ मई गुरौ स्वा.श्रीबुद्धपूर्णिमा
१३ " बुधे श्रवण छत्रयोगे श्रेष्ठ
२० " बुधे अश्विनी सुखदयोगे
२४ " रवि मृगशिर सौम्ययोगे
२५ " चन्द्रे आर्द्रायां आनन्दयोगे
२७ " बुधे पुष्यभे श्रुतिपंचमी
१५ जून चन्द्रे रेवत्यां अभिजितमु.
२४ " बुधे पुष्यभे लग्न श्रेष्ठ
२ जुला. गुरौ अनु.आनन्दयोगे
५ " रवि पूषायां गुरुपूर्णिमा

☆ नलकूपारम्भ मुहूर्त ☆

१५ अप्रै. बुधे उषायां लग्न ३, ४
२० " चन्द्रे उभायां अभिजितमु.
२६ " रवि रोहिणीअक्षयतृतीया
३० " गुरौ पुष्यामृतयोग शुभः
१८ मई चन्द्रे उभायां लग्न कर्क
२७ " बुधे पुष्यभे लग्न श्रेष्ठ
१२ जून शुक्रे शतभिषा ल.कर्क
१५ " चन्द्रे रेव.कर्क ल.७।३९से
२४ " बुधे पुष्य ल.कर्क सिंह
२६ " शुक्रे मघायां लग्नचिन्त.
२ जुला. गुरौ अनु. आनन्दयोगे
१३ " चन्द्रे रेवती लग्नचिन्त.
१७ " शुक्रे रोहिणी मित्रयोगे
२३ " गुरौ मघा कन्या तुला ल.
२९ " बुधे अनुराधा धातायोग
३ अग. चन्द्रे उषा. पूर्णिमायां श्रेष्ठ
५ " बुधे धनि शत.मित्रयोग
६ " गुरौ शतभिष भद्रात्पूर्वे

१४ अग. शुक्रे मृग.स्वर्गेभद्राशुभे..
२१ " शुक्रे उफायां शुभयोगे
२६ " बुधे अनुराधा सौम्ययोगे
३१ " चन्द्रे श्रवण सिद्धियोग
१९ अक्टू चन्द्रे अनुराधा ल.धनु
२२ " गुरौ पूषायां धातायोग में
२६ " चन्द्रे शतभिषा अमृतयोग
२९ " गुरौ उभायां छत्रयोगे
३१ " शनौ अश्विनी शरद्पूनो
११ नव. बुधे उफायां लग्न धनु
१२ " गुरौ हस्तभे ९।२० उप.
१९ " गुरौ पूषायां धातायोग
२० " शुक्रे उषा. आनन्दयोगे
२५ " बुधे उभा. मध्याह्नकाले
२६ " गुरौ रेवत्यां मित्रयोगल.श्रे
३० " चन्द्रे रोहिणी पूर्णिमायां
२ दिस. बुधे मृगशिर मकर कुंभ
५ " शनौ पुष्यनक्षत्रे मित्रयोगे
१० " गुरौ हस्तभे भद्रात्पूर्वेश्रे.

श्रीगणेश, लक्ष्मीन्द्र, वरुण, कुबेर, कुलदेवता, वास्तुभगवान् तथा भैरव भगवान् का सविधि पूजन करके उपरोक्त मुहूर्त्तों में नल लगाने, बोरिंग करवाने, कूँआ-बावड़ी खुदवाने पर उसमें उत्तम जल की प्राप्ति होती है।

हलप्रवहण वीजोप्ति मुहूर्त

२७ मार्च शुक्रे अश्विन्यां श्रेष्ठ
३० " चन्द्रे रोहिणी प्रवर्धमान
३ अप्रै. शुक्रे पुष्यभे श्रेष्ठ
८ अप्रै. बुधे चित्रायां श्रेष्ठ
१५ " बुधे उत्तराषाढ़ा
१७ " शुक्रे धनिष्ठायां
२९ " बुधे पुनर्वसु श्रेष्ठ
३० " गुरौ गुरुपुष्यामृतयोगे
७ मई गुरौ स्वात्यां पूर्णिमायां
१३ " बुधे श्रवण नक्षत्रे
१८ " चन्द्रे उत्तराभाद्रपद
२७ " बुधे पुनर्वसु पुष्यनक्षत्रे
१ जून चन्द्रे हस्त नक्षत्रे
१० " बुधे श्रवण छत्रयोगे
११ " गुरौ धनिष्ठा श्रीवत्सयोगे
१५ " चन्द्रे रेवतीनक्षत्रे
२४ " बुधे पुष्य नक्षत्रे
२ जुला. गुरौ अनुराधा आनन्दयोगे
८ " बुधे धनिष्ठा मित्रयोग
१३ " चन्द्रे रेवत्यां लग्न श्रेष्ठ
१७ " शुक्रे रोहिणी मित्रयोगे
२३ " गुरौ मघायां शुभः
२७ " चन्द्रे चित्रायां लग्न चिन्त.
३० " गुरौ अनुराधायां श्रेष्ठ
३ अग. चन्द्रे उत्तराषाढ़ा श्रेष्ठ
५ " बुधे धनिष्ठायां मित्रयोगे
६ " गुरौ शतभिषा भद्रात्पूर्वे
१० " चन्द्रे अश्विनी श्रेष्ठ
१४ " शुक्रे मृगशिर मानसयोग
१७ " चन्द्रे पुष्य भद्रात्पूर्वे
२१ " शुक्रे उफायां शुभयोग
२४ " चन्द्रे स्वात्यां छत्रयोग
२८ " शुक्रे मूल स्थिर योग

१९ अक्टू चन्द्रे अनुराधा मानसयोग
२६ " चन्द्रे शतभिषा अमृतयोग
३१ " शनौ अश्विनी पूर्णिमा
६ नव. शुक्रे पुनर्वसु मुहूर्त्त श्रेष्ठ
११ " बुधे उत्तराफाल्गुनी श्रेष्ठ
१२ " गुरौ हस्तभे लग्न शुभ
१९ " गुरौ उत्तराषाढ़ा शुभ
२० " शुक्रे उत्तराषाढ़ा श्रेष्ठ
२५ " बुधे उत्तराभाद्रपद
२६ " गुरौ रेवती मित्रयोग
३० " चन्द्रे रोहिणी पूर्णिमायां
५ दिस. शनौ पुष्यभे मित्रयोगे
१० " गुरौ हस्त भद्रोत्तर
१६ " बुधे पूषा. श्रीवत्सयोगे
१७ " गुरौ उषा. सौम्ययोगे
२४ " गुरौ अश्विनी मानसयोग
१ जन. शुक्रे पुष्यभे शुभः
८ " शुक्रे स्वाती भद्रात्पूर्वे
१५ " शुक्रे धनिष्ठा धातायोग
२८ " गुरौ गुरुपुष्यामृतयोग
३ फर. बुधे चित्रायां ल.११,१२
८ " चन्द्रे मूलभे लग्न शुभः
१७ " बुधे अश्विनी शुभः
२२ " चन्द्रे मृगशिर आनन्दयोग
२५ " गुरौ गुरुपुष्यामृतयोग
३ मार्च बुधे स्वाती शुभयोग
१० " बुधे श्रवणभे श्रेष्ठ
११ " गुरौ धनिष्ठा श्रीवत्सयोग
२४ " बुधे पुष्यभे शुभः
३१ " बुधे स्वात्यां लग्न शुभः

वायलर(भट्टी) मुहूर्त्त

१९ अप्रै. रवि पूर्वाभाद्रपद
२६ " रवि रोहिणी अक्षयतृतीया
४ मई चन्द्रे उफा. श्रीवत्सयोग
७ " गुरौ स्वाती पूर्णिमा
१८ " चन्द्रे उत्तराभाद्रपद
२० " बुधे अश्विनी भद्रात्पूर्वे
२४ " गुरौ मृगशिर सौम्य
२७ " बुधे पुष्य नक्षत्रे श्रेष्ठ
२८ " गुरौ गुरुपुष्यामृतयोगे
२४ जून बुधे पुष्य नक्षत्रे श्रेष्ठ
२ जुला. गुरौ अनुराधा आनन्दयोग
५ " रवि पूषा. गुरुपूर्णिमा
१० " शुक्रे पूर्वाभाद्रपद श्रेष्ठ
१२ " रवि उत्तराभाद्रपद श्रेष्ठ
१३ " चन्द्रे रेवती लग्न श्रेष्ठ
१७ " शुक्रे रोहिणी मित्रयोग
२६ " रवि हस्तभे मानसयोग
३ अग. चन्द्रे श्रव. भद्रोत्तर९।२८से
५ " बुधे धनिष्ठायां मित्रयोग
६ " गुरौ शतभिषायां श्रेष्ठ
१४ " शुक्रे मृगशिर नक्षत्रे
२० " गुरौ पूफायां गद्योग
२१ " शुक्रे उफायां शुभयोगे
२३ " रवि चित्रायां पद्मयोगे
२४ " चन्द्रे स्वाती छत्रयोगे
३० " रवि उत्तराषाढ़ा अमृतयोग
३१ " चन्द्रे श्रवण सिद्धियोग

चुनाव में नामांकन मुहूर्त्त

दोनों पक्ष की शुभ तिथियाँ- २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ और कृष्ण पक्ष की १ श्रेष्ठ

शुभ वार- रवि, सोम, बुध एवं शुक्रवार श्रेष्ठ जानें।

सूर्य की होरा- टेंडर लेने, चुनाव लड़ने, नौकरी आदि के फार्म भरने, पर्चा जमा करने, राजकाज का चार्ज लेने, शपथ ग्रहण करने में सर्वश्रेष्ठ रहती है। वार चाहे जो भी हो, सूर्य की होरा या राशीश की होरा में सफलता सुनिश्चित मिलती है।

शुभ नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, उ.भा.और रेवती।

शुभ लग्न- जिससे नवम एवं दशम भाव प्रभावशाली हों अर्थात् कोई पापग्रह न हो और लग्न भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो। राशि से चन्द्रमा शुभ स्थान में हो।

शपथग्रहण- जहाँ तक हो सके स्थिर लग्न में करनी चाहिए।

☆ नृत्यारम्भ मुहूर्त्त ☆

पुष्य, उ.फा., हस्त, ज्येष्ठा, उ.षा., धनिष्ठा, शतभिषा, उ.भा. व रेवती नक्षत्र, सत् तिथियाँ, मंगलवार को छोड़कर सभी वार नृत्यारम्भ, कलाकृति, नाटक, गायन, कला, संगीत फिल्मादि के लिए श्रेष्ठ हैं।

☆ श्रीमद् भागवत सप्ताह मुहूर्त्त ☆

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन शुक्लपक्ष, कार्तिक और मार्गशीर्ष अत्यन्त श्रेष्ठ, अन्यान्य आचार्यों के मत से चैत्र(मीनसंक्रांति) व पौष (धनु संक्रांति) को छोड़कर सभी मास श्रेष्ठ माने गये हैं। भद्रादोष रहित तिथियाँ २।३।५।६।१०।११।१२।१५ वार सोम, बुध, गुरु व शुक्र श्रेष्ठ जानें। रविवार व शनिवार को मध्यम जानें।

नक्षत्र- अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, पू.भा. तथा रेवती श्रेष्ठ हैं।

पितरमोक्ष के लिए- मृत्युतिथि, श्राद्धदिन, अगहन शुक्ल चौदस अथवा अमावस्या में भागवत् कथा का शुभारंभ होना चाहिए।

☆ अखण्ड पाठारम्भ मुहूर्त्त ☆

गुरु आश्रित नक्षत्र से श्रीरामचरित मानस पाठारम्भ मुहूर्त्त दिन नक्षत्र तक गिनने पर १६ की संख्या तक अर्थलाभ-सिद्धिप्रद, आगे २४ तक गिनने पर नेष्ट, उपरान्त २७ तक गिनने पर मोक्षप्रद जानें। शुक्लपक्ष में देवप्रीत्यर्थ तथा कृष्ण पक्ष में पितर बाधा एवं रोगशान्त्यर्थ श्रेष्ठ रहता है। गोस्वामी जी ने हरिनाम को जैसे भी बने स्मरण कर लिया जाए तो सर्वथा मंगलदायक कहा है।

☆ बिटोड़ा रखने एवं काष्ठ संग्रह ☆ का मुहूर्त्त

सूर्याश्रित नक्षत्र से चान्द्र नक्षत्र तक साभिजित् गणना करके देख लें- ६ नक्षत्र श्रेष्ठ, २ शवदाह नेष्ट, ४ सर्पभय के नेष्ट, ४ श्रेष्ठ, ४ रोगभय, ४ असुख और आगे के ४ नक्षत्रों में शुभ रहता है। दोहा- **रविनक्षत्र से षट् भलो, षट् खोटो शुभ चारि। आठ अशुभ शुभ चारि है, उपले धरो विचारि॥** बिटोड़ा (उपले, कण्डे) रखते समय वार (दिन) चाहे जो भी हो, पंचकों के (धनिष्ठादि पांच नक्षत्र) छोड़कर भद्रादि कुयोग रहित दिन में बिटोड़ा रखने से शुभ होता है।

सूक्ष्माति सूक्ष्म क्रांतिसाम्य महापात

योग	प्रारम्भ	समय	समाप्त	समय
व्यतिपात	०६-०४-२०२०	१६-०८	०६-०४-२०२०	२०-०६
वैधृतिपात	१८-०४-२०२०	२२-५४	१८-०४-२०२०	२८-१५
व्यतिपात	०२-०५-२०२०	०८-५८	०२-०५-२०२०	१४-१०
वैधृतिपात	१४-०५-२०२०	०६-४३	१४-०५-२०२०	१३-४९
व्यतिपात	२७-०५-२०२०	२१-२५	२८-०५-२०२०	०६-२९
वैधृतिपात	०८-०६-२०२०	२०-३८	०९-०६-२०२०	१०-४४
वैधृतिपात	०३-०७-२०२०	१८-३५	०४-०७-२०२०	०७-३१
व्यतिपात	१७-०७-२०२०	०९-१०	१७-०७-२०२०	१८-०८
वैधृतिपात	२९-०७-२०२०	१५-०५	२९-०७-२०२०	२१-१९
व्यतिपात	११-०८-२०२०	२१-५३	११-०८-२०२०	२७-४४
वैधृतिपात	२३-०८-२०२०	२८-४९	२४-०८-२०२०	०९-१२
व्यतिपात	०५-०९-२०२०	२९-१४	०६-०९-२०२०	१०-०६
वैधृतिपात	१८-०९-२०२०	२१-५४	१८-०९-२०२०	२५-३८
वैधृतिपात	१४-१०-२०२०	१८-०६	१४-१०-२०२०	२१-५७
व्यतिपात	२६-१०-२०२०	१८-२०	२६-१०-२०२०	२३-३३
वैधृतिपात	०९-११-२०२०	१०-५४	०९-११-२०२०	१६-२०
व्यतिपात	२०-११-२०२०	२९-०४	२१-११-२०२०	१२-०२
वैधृतिपात	०४-१२-२०२०	२५-१६	०५-१२-२०२०	१०-४५
व्यतिपात	१६-१२-२०२०	३०-५०	१७-१२-२०२०	१८-३८
वैधृतिपात	२८-१२-२०२०	१६-४८	२८-१२-२०२०	२९-१२
व्यतिपात	१०-०१-२०२१	११-५०	१०-०१-२०२१	१९-४०
वैधृतिपात	२३-०१-२०२१	१५-३३	२३-०१-२०२१	२२-३२
व्यतिपात	०४-०२-२०२१	२९-४०	०५-०२-२०२१	१०-३६
वैधृतिपात	१७-०२-२०२१	२४-५४	१७-०२-२०२१	३०-०१
व्यतिपात	०२-०३-२०२१	१९-२९	०२-०३-२०२१	२३-२३
वैधृतिपात	१५-०३-२०२१	०८-४९	१५-०३-२०२१	१३-१७
वैधृतिपात	०९-०४-२०२१	१७-४४	०९-०४-२०२१	२२-१७

स्थूल क्रांतिसाम्य मेष-सिंह, वृष-मकर, मिथुन-धनु इत्यादि राशियों में परस्पर सूर्य चन्द्र के रहने से बनता है। पंचांगकार उसे नहीं मानते। ऊपर गणित सिद्धि सूक्ष्म क्रांतिसाम्य महापात छपा है, जिसे सर्वत्र माना जाता है।

❁ भैरव - भवानी संवाद ❁

प्रश्न- शिवाशक्ति शिर नाय कर, पूछत भैरव लाल।
सम्वतानन्द आ गया, कहो भुवन के हाल॥
उत्तर-भैरवजी कौशिक सुनो, जगत का सारा साल।
ग्रह गोचर अति नेष्ट हैं, होंहि सभी बेहाल॥
राजा बुध मन्त्री शशी, निर्बल पाप मझार।
हो हल्ला हो जगत् में, नित बाढें पापाचार॥
मेघ दुर्ग फलपति रवी, पद अधिकारी तीन।
पिता-पुत्र के राज में, बुद्धी होयहि क्षीन॥
अस्त्र-शस्त्र खटकें जगत, मचती हा! हा!! कार।
मारधाड़ आतंकभय, शान्ति खड़ी लाचार॥
आतंकी उत्पात नित, ईसा-मूसाकादि का द्विन्द।
मचे खलबली जगत् में, सोचे ना मति मन्द॥
अति वर्षा कहीं बाढ़ भय, कहीं सूखे की मार।
फसल समय पर ना उगें, खेती बन्टाधार॥
बादलफाटे बरष कर, ज्वालामुखी प्रचण्ड।
मानव लोभी मन को, मिले कर्म का दण्ड॥
नई नई नित खोज में, बढ़ते विज्ञान जहान।
अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में, भारत बने महान॥
माताभ्राता के घर बसें, विज्ञान बढ़े भरपूर।
अन्तरिक्ष में घर मिले, अब रहे न मामा दूर॥
वाहन नित बढ़ते चलें, होए टूटफूट तकरार।
बिना ड्राईवर के चलें, रक्षक जगदाधार॥
कौशिक करनी नेक करि, शिर पर है जगदीश।
सुमिर गुरु माता पिता, नय्या खैवें ईश॥

* सन् सम्वत् विवरण *

अथाऽस्मिन्वर्षे सृष्टितोगताब्दाः १९५५८८५१२१ कल्पादितो गताब्दाः१९७२९४९१२१ तत्रकृतयुगप्रमाणम् १७२८००० त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६००० द्वापरयुगप्रमाणम् ८६४००० कलियुग प्रमाणम् ४३२००० कलिगताब्दाः५१२१ शेषाब्दाः ४२६८७९ प्रधानस्य गङ्गावतीर्थः बौद्धावतारः तथाग्रे: कलिशेषाब्दे ८२१ कल्किऽवतारस्य धर्मोद्धारकः !स्वस्ति श्रीमन्नृपतिवीर विक्रमादित्य राज्यात् सम्वत् २०७७, शकसम्वत् १९४२, सन् २०२०-२१, हिजरी १४४१-४२, महावीरजैन सं.२५४६ व ४७, फसली १४२७ व २८, भा.स्वतन्त्र सं.७३ व ७४, मेषाऽर्केबङ्गला सं.१४२७, कौल्लम सं. ११९५ व ९६ प्रवर्तते। श्रीरामरावण युद्धतोगताब्दाः ८८०१६२, श्रीकृष्णाऽवतारतोगताब्दाः५२४६,कुरुपाण्डवयुद्धतोगताब्दाः५१२१

* सम्वत् २०७७ मध्ये राजादि विवरण *

अथाऽस्मिन्वर्षे राजाबुधः। मन्त्रीचन्द्रः। सस्येशोगुरुः। धान्येशो भौमः। मेघेशोसूर्यः। रसेशोशनिः। नीरसेशोगुरुः। फलेशोसूर्यः। धनेशोबुधः। दुर्गेशोसूर्यः। एते दशाधिकारिणः। तत्रबार्हस्पत्यमानेन प्रभवादि षष्टियब्दानां मध्ये रुद्रविंशतिकायां ८ आनन्दनाम संवत्सरः प्रवर्तते। तस्यमेषाऽर्क समये गतमासादिः ०।२७।३३।४ भोग्यमासादिः ११।२।२६।५६ अग्निदैवतं युगम्। वर्षनाम आषाढ़ः। मेघनाम आवर्तः। रोहिणीनिवासःसंधिगतेः। समय निवास वणिकगृहे।

* संवत् आदि के विश्वामान *

संवत्विश्वा १८, समयवाहन सिंचाणुः। स्तंभ २, सोमवत्यमाः३, सोमपंचमी २, अंगारकीचतुर्थी २, भानुसप्तमी १, बुधाष्टमी २, रविदशमी १, समयमुहूर्त्ताः३९५, समयदिनानि ३८४, तिथिक्षयः१७, तिथिवृद्धिः११, उत्पत्तिविश्वा १०५, खपतिविश्वा ९६, वर्षाविश्वा ९, धान्य १३, तृण १३, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धिः१५, क्षयः१५, विग्रह ११, ऐक्यम् ११३, शनिदृष्टि उत्तरे। सत्यआधा, धर्मड्योढ़ा, पाप विश्वा १८, ग्रहण १ सूर्यस्य भारत भूमण्डले।

क्षुधाविश्वा १३, तृष्णा १३, निद्रा १३, आलस्य ७, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फलनिष्पत्ति १३, उत्साह ३, उग्रता ५, पुण्य ९, व्याधि ११, व्याधिनाश ९, आचार ९, अनाचार १५, मृत्यु १३, जन्म ५, देशोपद्रव ११, देशस्वास्थ्य १७, चोरभय ७, चोरभयनाश १७, उद्भिज (वृक्ष लता वेलादि) २, जरायुज (मनुष्य गौ आदि वर्ग) ३, अण्डज (पक्षी एवं विषाक्तजीव)१५, स्वेदज (जूं,खटमल आदि कीट) १७।

* अथ दशाधिकारी शुभाशुभ फलम् *

बुधस्य राज्ये सजलं महीतले गृहे गृहे तूर्य विवाहमंगलम्।
प्रकुर्वन्ते दान दयाजनोपि स्वस्थं सुभिक्षं धन धान्य संकुलम्॥

राजा बुध का फल- समयोचित श्रेष्ठ वर्षा से धान्यादि उत्पादन अच्छा रहे। जीव सुखी रहें। घर गृहस्थी परिवार में नित्योत्सव विवाहादि मंगल कार्य होते रहें। जनता स्वस्थ्य एवं सानन्द रहे।

शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपिधरा रमते सुखमंडिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि सुशोभिताः॥

मन्त्री चन्द्र का फल- वर्षा अधिक होने से पैदावार बढ़े। श्वेत वस्तुओं में मन्दी से राहत मिले। प्रदेश तथा महानगर शोभायमान लगें। स्वदेश में विकास कार्यों को बल मिले।

कणपतौ सुरराज पुरोहिते सकल सौख्यकरः श्रुतिपूर्वकाः।
जलधरा जलदा बहुसम्पदा रसपयांसि बहूनि वसुनि वै॥

सस्येश गुरु का फल- वर्षा समय पर होने से पैदावार अच्छी हो, भावों में गिरावट प्रजा में सुख शान्ति बनी रहे। धार्मिक कार्य होते रहें। रसीले पदार्थ खूब मिलें।

भूमिजे ग्रीष्म धान्येशे ग्रीष्मधान्य महार्घकम्।
शालिक्षु घृत तैलादि महर्घाणि भवन्ति च॥

धान्येश मंगल का फल- ग्रीष्मऋतु में धान्य, जौं, गेंहू, चना, अरहर और चावल ईख(गुड़, शक्कर) घृत तेल आदि में तेजी हो, वर्षा कहीं कम कहीं अधिक रहे। कहीं खाद्यपदार्थों की कमी पड़े। जनता में हो-हल्ला मचे।

जलदपे यदि वासरपे तदा सरसि वै रमते जनता रमम्।
यवचणेक्षुनीवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते॥

मेघपति रवि का फल- जनता सुख शान्ति का अनुभव करे। खेती में पैदावार उद्योगों में उत्पादन बढ़े। कहीं भयविवाद हो। जौं, चना, ईख, चावलादि समय पर मिलते रहें।

रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अजगवौ गजवाजि खरोष्ट्रहाः जनपदेषु नरा न रसैर्युताः॥

रसपति शनि का फल- रसपदार्थ गुड़, खांड, नमक, घी, तेल आदि का उत्पादन कम हो, महंगाई बढ़े, वर्षा की कमी त्रस्त करे। प्रजा में रोगोपद्रवादि का भय बना रहे। पशु हानि परेशान करे।

हरिद्रापीत वस्तूनि पीतवस्त्रादिकं च यत्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा॥

नीरसेश गुरु का फल- हल्दी, पीले पदार्थ, सोना, पीतल, धातु, रंग, फल, फूल मेवादि में मन्दी रहे। प्रजाजनों में प्रेम बढ़े।

द्रुमवती फलपुष्पवती धरा प्रमुदिता फलभोग विशेषता।
बहुजलंजलदोभुविमुञ्चति क्वचिदपि प्रमितं फलपो रविः॥

फलेश रवि का फल- समयोचित वर्षा से वृक्षों में फल, फूल लगें, सब्जियाँ अच्छी हों। जनता नित्यानन्द करती रहें। शासन सुचारु रूप से चलता रहे।

द्रविणपो हिमरश्मि सुतोयदा विविध संग्रह वस्तु फलार्थदा।
द्विजवराजप यज्ञसंयुताः कृषिविशेष विशेषित मानसाः॥

धनेश बुध का फल- संग्रह की हुई वस्तुओं में आगे चलकर लाभ मिले। द्विजाचार्य यज्ञादि सत्कर्म करते रहें। कृषिकार्यों में पर्याप्त उन्नति से खुशहाली बढ़े। प्रजाजनों में सौहार्दपूर्ण मैत्री की भावना पनपे। सुख का संचार हो।

नयविशेषकरस्तरणिस्तदा गतभय नरराज पुरोगमाः।
समधिकेन तदा नृपतोन्यतः पथिसुसंब्रजतां न भयं क्वचित्॥

दुर्गेश सूर्य का फल- राज्य में न्यायप्रियता की वृद्धि हो। सरकारी तौर पर विषमता कम करने के लिए प्रयत्न किये जायें। फिर भी श्रेष्ठता की कमी रहे। भौतिक विकास को बल मिले।

आनन्दनाम सम्वत्सर फलम्

आनंदाब्देऽखिला लोकाः सर्वानन्दचेतसः।
राजानः सुखिनः सर्वे बहु सस्यार्घ वृष्टिभिः॥

आनन्द नामक सम्वत्सर में अधिकांश लोग सुखी रहें। अन्नादि की पैदावार अच्छी हो। समयोचित वर्षा से मौसम सुहावना बने। आनन्दानुभुति का अनुभव होता रहे।

आषाढ़ाब्दे तु राजानः सर्वदा कलहोत्सुकाः।
क्वचिदीनिःक्वचिद्धीतिःक्वचिवृद्धिःजलंक्वचित्॥

वर्षनाम आषाढ़ का फल- राजे महाराजे(नेता) आपस में तकरार करते रहेंगे। कहीं किंचित भयविषाद का कारण बने। समयोचित वर्षा विशेष के फलस्वरूप अन्नादि की पैदावार अच्छी रहे।

मेघनाम फलम्- आवर्ते छिन्नवृष्टिःस्यात्- इस वर्ष आवर्त नामक मेघ होने से कहीं वर्षा कम तो कहीं अधिक होगी।

रोहिणीवास फलम्- खण्ड वृष्टिश्च संधिषु- रोहिणी का निवास संधि में होने से इस वर्ष वर्षा न्यूनाधिक मात्रा में होगी।

समय निवास फलम्- वणिक् गृहे शुभं नास्ति- संवत् का वासा बनिया के घर होने से शुभ रहेगा। वाणिज्य कर्म सकुशल चलते रहेंगे। विदेशों से लेन-देन भी खूब बढ़ेगा। व्यापारीवर्ग फायदे में रहेगा।

सारांश

वर्षेश अर्थात् राजा का प्रभाव कश्मीर, अफगानिस्तान में सर्वाधिक होता है। ऐसे ही मन्त्री का पूर्वीप्रदेश व कलिंगादि में, सस्येश का ईशान व मध्यदेश में, धान्येश का नर्मदातट (मध्यप्रदेश)में, मेघेश का मगध देश(बिहार)में, रसेश का कोंकण और गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर मालवादि में, फलेश का पश्चिमी भाग कश्मीरादि तथा धनेश व दुर्गेश का फल सर्वत्र समान घटित होता है।

❋ आर्षमान विचार ❋

अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृत्तिका टारो॥
मही माहि खलबली प्रकाशै, कहै भड्डरी साख विनाशै।

श्रीसम्वत् २०७७ में **अक्षयतृतीया** वाले दिन रोहिणी का योग अर्धाधिक होने से अति उत्तम है। **पौष की अमावस** में मूल नक्षत्र का योग न होने से नेष्ट है। **श्रावण शुक्ल पूर्णिमा** में श्रवण का संयोग अच्छा है। **कार्तिकी पूर्णिमा** में कृतिका नक्षत्र का संयोग आधा होने से मध्यम है। वर्ष के चार आर्षमानों में से दो श्रेष्ठ तथा दो नेष्ट हैं। अतः आनन्द नाम का यह सम्वत्सर सबके लिए मध्यम फलप्रद रहेगा। भारत का सर्वतोन्मुखी विकास होगा। संसार में शाखवृद्धि से पड़ौसी देशों को ईर्ष्या होगी। सत्तारूढ़ पार्टी से सभी छुद्रदल द्वेषपूर्ण वर्ताव रखेंगे।

❋ वर्ष के चार स्तम्भ ❋

चैत्र शुदी प्रतिपदा- में रेवती नक्षत्र का योग पूर्ण होने से जल का स्तम्भ सुदृढ़ बना है। वर्षा समयोचित श्रेष्ठ होगी। सिंचाई के संसाधन बढ़ेंगे। अन्नादि का उत्पादन अच्छा होगा। देश विदेश में व्यापार बढ़ेगा।

वैशाख शुदी प्रतिपदा- में भरणी नक्षत्र सुदृढ़ है, सो तृण का स्तम्भ अच्छा माना जायेगा। धरा पर घास-फूँस तृण अंकुर बनस्पतियाँ अधिक होंगी। पशुचारे, ईंधन की कमी नहीं रहेगी। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु सुखी रहेंगे।

ज्येष्ठ शुदी प्रतिपदा- में मृगशिर नक्षत्र न होने से वायु का स्तम्भ लड़खड़ा गया है। इस वर्ष वायुवेग अनियमित रहेगा। चक्रवात, समुद्रीतूफान, आंधी-तूफान, बडम्बर सालमध्ये कई बार संसार में जानलेवा सिद्धि होंगे।

आषाढ़ शुदी प्रतिपदा- में पुनर्वसु नक्षत्र न होने से अन्न का स्तम्भ ठीक नहीं बना है। कृषिकार्य, उद्योगधन्धों में व्यवधान होगा। महंगाई बढ़ेगी। कहीं दैनिक उपयोगी चीजें न मिलने से हाय-तौबा मचेगी। सामाजिक दंगे-फसाद जानलेवा हो सकते हैं।

वर्ष के चार आर्षमानों में से दो श्रेष्ठ तथा दो नेष्ट बने हैं। अतः सम्वत्सर का फल मध्यम घटित होगा। अन्तर्राष्ट्रीय विश्व समुदाय में भारत नया कीर्तिमान स्थापित करेगा। अगर किसी देश में भारत पर सैन्यबल प्रयोग का सोच भी लिया तो यह मुँहतोड़ जबाब देने में हिचकेगा नहीं।

गुर्राफल- इस्लामिक हिजरी सन् १४४२ का राजा **शुक्र है**, जिसकी शुरुआत २१ अगस्त २०२० को कुम्भ लग्न से हो रही है। लग्न का मालिक शनि राजा शुक्र का मित्र है, सो यह **युद्ध के लिए** उकसा सकता है। तीसरे विश्वयुद्ध की आहट तो सुनाई पड़ने ही लगी है। सन् २०२० के पूर्वार्ध में गुरु शनि की युति नेष्ट होगी। विरोधी ग्रह प्रतियोग भी कम खतरनाक नहीं है। **अन्तरिक्ष में अस्त्र-शस्त्र** खटकने लगें, मिसाइलें चलने लगें तो आश्चर्य नहीं। **अबकी** बार लड़ाई तेल, पानी, खनिजपदार्थों को लेकर होगी।

नागफल- इस वर्ष द्वादश नागों में से बारहवाँ वृष नामक नाग है, जिसका फल '**वर्षप्रबोध**' में ऐसा लिखा है-

यदावृषाभिधानस्यभुजंगाख्योयदाभवेत्।
तदासस्यादिकाल्पत्वंसुतरामीतितोभयम्॥

जिस वर्ष वृष नाम के नागराज होते हैं, उस वर्ष अन्न कम होता है। टिड्डी, चूहा, कातरा का भय बना रहता है। किंवा जलाधिक्य क्षति का कारण बनता है।

शनि की साढ़ेसाती ढैय्या एवं लघुकल्याणी ढैय्या विचार

सम्वत् २०७७ में शनि मकर राशि में भ्रमण करेगा। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में द्वितीया भाग तक लौटने के बाद २९ सितम्बर २०२० में मार्गी होकर २२ जनवरी २०२१ को श्रवण नक्षत्र में प्रवेश कर जायेगा। **ध्यान रहे**- शनि इस वर्ष उषा. -श्रवण नक्षत्र एवं मकर **राशि वालों** को त्रस्त करेगा।

शनि के दुष्प्रभाव से बचने के लिए- लोहवान युक्त वर्तिका कड़वे तेल के दीपक में डालकर सन्ध्या समय पीपलवृक्ष के नीचे ज्योति जलाऐं। बन्दरों को प्रत्येक शनि तथा मंगलवार को चना गुड़ खिलायें। भीगे हुए उर्द पक्षियों को डालें। काले तिल, मिश्रित कड़वे तेल का मर्दन करें। असहायों को भोजन करवाएं। कम्बलादि दान दें। ११ या २१ कच्चे नारियल संख्यानुसार सिर से घुमाकर बहते जल में छोड़ दें, ग्रहदोष शान्त होकर मस्तिष्क हल्का हो जायेगा। धनायु कारोबार की वृद्धि से सौख्य-समृद्धि बढ़ेगी, मंगलोत्सव की खुशी होगी।

❋ २४ जनवरी २० से मकरके शनि का राशिफल ❋

मेष १०	कर्क ७	वृश्चि. ३	ताम्रपादफल- धनवृद्धि यशोपलब्धि, राजसमाज में मान सम्मान बढ़े।
वृष ९	कन्या ५	धनु २D	रजतपादफल- वृष कन्या राशि वाले यश प्राप्त करें। धनु राशि वाले उन्नति की ओर अग्रसर हों।
मिथुन ८C	तुला ४C	कुम्भ १२A	लौहपादफल- मिथुन तुला राशिवाले धन संचय करें। कुम्भ राशिवाले हर्षविषाद के भागीदार बनें।
सिंह ६	मकर १B	मीन ११	स्वर्णपादफल- मकर राशि वाले चिन्तित रहें। सिंह मीन राशि वाले परेशानी महसूस करें।

A चढ़ती साढ़ेसाती लौहपादउत्तम। B हृदयके बीचकी ढैय्या रोग चिंता C- लघुकल्याणी भौतिकविकास। D- उतरती साढ़ेसाती फल उत्तम।

❋ दसनाम शनि स्त्रोत ❋

कोंणस्थ पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौदन्तको यमः।
सौरिः शनैश्चरो मंदः पिप्पलादेन संस्तुतः॥
एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाययःपठेत्।
शनैश्चर कृता पीड़ा न कदाचित भविष्यति॥

३० मार्च से ३० जून २०२० तक गुरु नीच राशि मकर में चलेगा। ३० जून को लौटकर स्वराशि धनु में आ जायेगा। २० नवम्बर को पुनः बृहस्पति मकर में चला जायेगा।

मकर के गुरु का राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फलम्
मेष	लाभालाभ समान
वृष	हर्ष-विषाद
मिथुन	आर्थिक क्षति
कर्क	पारिवारिक क्षोभ
सिंह	कटुता-वादिता
कन्या	यशोपलब्धि
तुला	हानि अपयश
वृश्चिक	पुरुषार्थ वृद्धि
धनु	अर्थलाभ की खुशी
मकर	चिन्ता-व्यथा
कुम्भ	अनावश्यकक्षोभ
मीन	मंगलोतसव खुशी

४ नव. २०१९ तक वृश्चिक के गुरु का राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फलम्
मेष	अर्थलाभ
वृष	चिन्ता क्षोभ
मिथुन	घर गृहस्थ लाभ
कर्क	सुखोपभोग
सिंह	ज्ञानार्जन लाभ
कन्या	मिथ्याविवाद
तुला	पुरुषार्थवृद्धि
वृश्चिक	आर्थिकलाभ
धनु	संशय प्रमाद
मकर	मिथ्या अपवाद
कुम्भ	मंगल मिलन
मीन	गृहस्थ में खुशी

नोट- इस वर्ष मिथुन में राहु और धनु में केतु गतिशील रहेगा। दोनों राशियाँ अन्य ग्रहचाल के प्रभाव में दूषित रहेगी। अनावश्यक क्षोभ, पड़ौसी से अनबन, अधिकारी से कहासुनी से बचे रहें। कर्त्तव्य का सही ढंग से पालन करें। अच्छा-खासा लाभ होगा।

❋ लाभ-खर्च ज्ञानाय कोष्ठक ❋

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
खर्च	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ-खर्च देखने की विधि- अपनी राशि के लाभ खर्च अंक जोड़कर एक घटा दें, शेष में आठ का भाग देने पर १, २, ६, ७ रहे तो वर्ष में उत्तम लाभ मिले, सौख्य समृद्धि का प्रादुर्भाव हो। यदि ३, ४, ५, ० शेष बचे तो लाभ कम और खर्चाधिक्य से क्षोभ हो।

राहुकाल ज्ञानाय चक्र

रवि	सायं	१६ ।३०	से	१८ ।००	तक
चन्द्र	प्रातः	७ ।३०	से	९ ।००	तक
मंगल	दिवा	१५ ।००	से	१६ ।३०	तक
बुध	दिवा	१२ ।००	से	१३ ।३०	तक
गुरु	दिवा	१३ ।३०	से	१५ ।००	तक
शुक्र	प्रातः	१० ।३०	से	१२ ।००	तक
शनि	प्रातः	९ ।००	से	१० ।३०	तक

राहुकाल किस दिन कब से कब तक रहेगा। साथ के चक्र से सहज जान सकते हैं। राहुकाल से दूषित समय का नर्मदा से दक्षिणी भारत में बहुत विचार किया जाता है। उत्तर भारत में मान्यता नगण्य थी। अब उत्तर भारत में मान्यता बढ़ती जा रही है।

यमगण्ड ज्ञानाय चक्र / गुलिक योग ज्ञानायचक्र

	यमगण्ड					गुलिक				
रवि	दिवा	१२ ।००	से	१३ ।३०	तक	दिवा	१५ ।००	से	१६ ।३०	तक
चन्द्र	प्रातः	१० ।३०	से	१२ ।००	तक	दिवा	१३ ।३०	से	१५ ।००	तक
मंगल	प्रातः	९ ।००	से	१० ।३०	तक	दिवा	१२ ।००	से	१३ ।३०	तक
बुध	प्रातः	७ ।३०	से	९ ।००	तक	प्रातः	१० ।३०	से	१२ ।००	तक
गुरु	प्रातः	६ ।००	से	७ ।३०	तक	प्रातः	९ ।००	से	१० ।३०	तक
शुक्र	दिवा	१५ ।००	से	१६ ।३०	तक	प्रातः	७ ।३०	से	९ ।००	तक
शनि	दिवा	१३ ।३०	से	१५ ।००	तक	प्रातः	६ ।००	से	७ ।३०	तक

☆ अभिजित् नक्षत्र ☆

ता.	मास	प्रारम्भ घं. मि.	से	समाप्ति घं.मि.	तक
१५	अप्रैल	१४ ।४१	"	२२ ।५२	"
१२	मई	२२ ।२६	"	- । -	"
१३	"	- । -	"	६ ।३७	"
९	जून	७ ।५७	"	१५ ।५५	"
६	जुलाई	१७ ।१०	"	२४ ।५४	"
२	अगस्त	२५ ।१३	"	- । -	"
३	"	- । -	"	९ ।०१	"
३०	"	७ ।४०	"	१५ ।३५	"
२६	सितम्बर	१३ ।१३	"	२१ ।१०	"
२३	अक्टू.	१९ ।२२	"	२७ ।१०	"
१९	नवम्बर	२७ ।२५	"	- । -	"
२०	"	- । -	"	११ ।०५	"
१७	दिसम्बर	१३ ।२८	"	२१ ।०३	"
१३	जनवरी	२३ ।४३	"	- । -	"
१४	"	- । -	"	७ ।०४	"
१०	फरवरी	८ ।१९	"	१५ ।१०	"
९	मार्च	१४ ।४३	"	२२ ।२१	"
५	अप्रैल	२० ।०७	"	२७ ।४४	"

नोटः- उत्तराषाढ़ा और श्रवण नक्षत्र के मध्य राशिचक्र में अभिजित् नामक नक्षत्र वर्तमान रहता है, जिसका विवरण प्रायः पंचांगकार नहीं देते। पाठकों की सुविधा हेतु प्रतिवर्ष हम अपने श्री **राजधानी पंचांग एवं श्री ब्रजभूमि पंचांग** में इसका उल्लेख करते हैं। किस मास व किस तारीख में कितने बजे से कितने बजे तक अभिजित् नक्षत्र रहेगा, यह ऊपर दर्शाया गया है। उक्त अवधि में बच्चे का जन्म हो तो, शास्त्रानुसार उसका अभिजित् नक्षत्र के चार चरण जू, जे, जो, खा प्रथमाक्षर तुल्य नामकरण रखना चाहिए।

❖ श्री वृद्धि सौख्यसमृद्धि में सहायक श्रीगणेशादि देवपूजन और लग्न मुहूर्त्त ❖

आओ माता लक्ष्मी, गणपति ऋद्धि सिद्धि दातार।
आन विराजो काज में, कर दो मम उद्धार॥

१४ नवम्बर २०२० कार्तिक कृष्ण १४ शनिवार में सायंकालीन अमावस्या में श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) पर्व मनाया जायेगा। सूक्ष्म वेधसिद्ध ज्योतिर्गणित से बने **श्रीराजधानी एवं श्री ब्रजभूमि पंचांग** के अनुसार १४-११-२०२० शनिवार में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी दिन में २ बजकर १७ मिनट तक रहेगी, तदोपरान्त अमावस्या शुरु हो जायेगी। अत: इस वर्ष दीपावली पर्व शनिवार १४ नवम्बर में ही मनाया जायेगा। इस दिन स्वाती नक्षत्र प्रदोषकाल में २० बजकर ८ मिनट तक रहेगा, जिसके बाद रात्रि में विशाखा भोग करेगा। शनिवार में स्वाती से बना सिद्धियोग कार्य सफलता हेतु अच्छा होता है। स्वाती नक्षत्र चर-चल संज्ञक होने के कारण वाहन लेन-देन, उद्योगकर्म, दुकानदारी, चित्रकारी, शिक्षक, स्कूलसंचालन, श्रृंगार प्रसाधन एवं अन्यान्य कर्म के लिए अच्छा माना जायेगा।

दिन के लग्न मुहूर्त्त

कुछ व्यापारी अपने उद्योगधन्धे, व्यवसाय, दुकानदारी, प्रतिष्ठान आदि में लक्ष्मीपूजन के लिए धनुलग्न को श्रेष्ठ मानते हैं, क्योंकि लग्न का स्वामी ग्रह गुरु है, शुभग्रह होने से गुरु सबकी सफलता में सहायक रहता है। इस वर्ष धनु लग्न प्रात: ९।१२ बजे शुरु होकर ११।१६ बजे तक रहेगी। **ध्यान रहे-** लग्न में लग्नेश गुरु अति बलिष्ठ माना जायेगा। **शनिवार में राहुकाल ९।० से १०।३० बजे तक** रहेगा, सो इस दिन शुभ के चौघड़िया में किंचित कोई दोष मान्य नहीं होगा।

दिन के चौघड़िया- प्रात: ६।४७ से काल का, ८।८ से शुभ का, ९।२८ से रोग का, १०।४७ से उद्वेग का, १२।७ से चर का, १३।२५ से लाभ का, १४।४४ से अमृत का और सायं १६।४ बजे से काल का चौघड़िया मुहूर्त्त वर्त्तमान रहेगा।

दीपावली दिन लग्नारम्भ- मकर लग्न ११।१६ से, कुम्भ लग्न १२।५८ से, मीन लग्न १४।२६ से, मेष लग्न १५।५२ से शुरु होगी। लग्नों का अपना महत्त्व होता है। मकर लग्न में लग्नेश शनि स्वयं बलवान होकर बैठा है, तत्काल कर्मक्षेत्र दशमभाव में सूर्य-बुध-चन्द्र का सुयोग कार्यफल विकसित होने का संकेत है। कुम्भ लग्न में लग्नेश व्ययभाव में होने के कारण व्ययाधिक होने की सम्भावना है। भाग्य में सूर्य के साथ बुध चन्द्र का योग भाग्यविकास में सहायक कहा जायेगा। कारोबार वृद्धि के साथ-साथ मान-सम्मान मन खुश करेगा। **मीन लग्न-** में लग्नेश की कृपा बलवती होने से विकास की गति प्रबल होगी। राज-समाज में नया कुछ करने का मन बनेगा। **मेष लग्न** में सायंकाल १७।२७ बजे से प्रदोषकाल की व्याप्ति पूजाकार्य के लिए सर्वोत्तम मानी जायेगी। **'प्रदोष समये राजन् कर्त्तव्या दीपमालिका'** सूत्रानुसार हे राजन! आप उत्तम द्विजाचार्य द्वारा सर्वप्रथम स्वस्तिवाचन, कलशपूजन संकल्प कराकर **श्रीगणेश, महालक्ष्मी, ऋद्धि-सिद्धि, इन्द्र, वरुण, कुबेरभण्डारी, शक्तियों सहित ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कुलदेवता, स्थानदेवता, सूर्यादि समस्त ग्रहनक्षत्र मण्डल** की पूजनार्चन करायें। तदन्तर वही बसना(खाता), कलमदान, रोकड़ापूजन एवं अत्याधुनिक उपकरण कम्पयूटर आदि की सविधि पूजा करने तथा करवाने वाले वर्षमध्ये उत्तरोत्तर लाभोन्नति की ओर अग्रसर होते रहेंगे। नवोदित मेहमान, मंगलोत्सव, व्यवसाय में उन्नति हर्ष का कारण बनेगी। देश देशान्तर की लम्बी यात्रा, भूमि वाहनादि की खरीद-फरोख्त होगी। राज समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। **ध्यान रहे** मेष लग्न में गोधूलिवेलालग्न समस्त मंगलों की खान समाहृत जो हो जायेगी- **धेनुधूरि वेला लगन, सकल सुमंगल मूल॥** इस समय में कोई शुभकार्य कभी बिगड़ता ही नहीं।

रात्रि के लग्न मुहूर्त्त

इस वर्ष शनिवार दीपावली की रात्रि वेला में लाभ, उद्वेग, शुभ, अमृत और चर के पांच चौघड़िया मुहूर्त १७।२५ बजे शुरु होकर निशीथकाल रात्रि में २५ बजकर ४७ मिनट तक रहेंगे। चौघड़िया मुहूर्त्त सभी श्रेष्ठ हैं। लाभ के स्वामी बुध, उद्वेग के रवि, शुभ के गुरु, अमृत के चन्द्र और चर के शुक्र माने गये हैं।

सायंकाले **वृष लग्न** १७।२७ से शुरु होगी। इसी लग्न में प्रदोषकाल वर्त्तमान रहेगा, जिसे श्रीगणेश लक्ष्मीपूजन के लिए सर्वोत्तम माना गया है- **'प्रदोषसमये राजन् कर्त्तव्या दीपमालिका' वृषलग्न** में राहु कुछ गड़बड़ी करेगा, सो द्विजाचार्य को राहु का विशेषपूजन करा लेना चाहिए। श्री गणेशजी की प्रार्थना- **प्रणम्य शिरसा देवं गौरी पुत्रं विनायकम्। भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थ सिद्धये॥**

गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थजम्बू फलचारु भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

दीपावली की रात्रि में मिथुन लग्न १९।२३ से शुरु होकर २१।३० तक रहेगी, जिसमें शुभ अमृत के दोनों चौघड़िया मुहूर्त अति सुन्दर बनें। लग्न पर गुरु का शुभप्रभाव कार्य विशेष में उन्नतिकारक रहेगा। पूजन कराकर लाभ के भागीदार बनें।

दीपावली की रात्रि में कर्क लग्न- २१।३० से २३।५६ बजे के मध्य भोग करेगी। इसी लग्न में अमृत का चौघड़िया २२।३३ से २४।५ बजे तक रहेगा। अमृत के चौघड़िया में आप किसी तरह का पूजन कराकर लाभार्थी बन सकते हैं। सिंह लग्न निशीथकाल २४।५ बजकर ५ मिनट से शुरु होगी। **निशीथे लक्ष्म्यादि पूजनं कृत्यं शुभम्** सूत्रानुसार यह समय महालक्ष्मी पूजन के लिए सर्वोत्तम कहा गया है। निशीथकाल में समुद्रमन्थन के समय लक्ष्मी जी का प्रादुर्भाव हुआ था, इसलिए इस समय को सभी द्विजाचार्य श्रेष्ठ मानते हैं।

श्रीगणेश, महालक्ष्मी, इन्द्र, वरुण, कुबेरभण्डारी, ऋद्धि-सिद्धि, शक्तिन सहित श्री ब्रह्मा विष्णु महेश नवग्रहमण्डल देवतादि पूजन कराकर बही-बसना पूजन करने तथा कराने वाले साल मध्ये उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होते चले जाते हैं। लक्ष्मीजी की कृपा बनी रहती है। पूजन द्विजाचार्य से कराने पर लक्ष्मी का भण्डार कभी खाली नहीं होता, क्योंकि उसमें पुण्य का अंश मिल जाता है।

लक्ष्मी के भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों ज्यों दे त्यों त्यों बढ़े, बिन खर्चे घट जात॥

समुद्र से प्रादुर्भूत विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी आश्रय ग्रहणार्थ सद्गृहस्थ, दुकान, कारखाना, उद्योग, ऑफिस, स्टोर आदि का निरीक्षण करती हैं। किसने कितनी स्वच्छता से घर सजाया है और किसने नहीं। कहाँ में निवास करूँ अथवा कहाँ नहीं। यह भी देखती हैं कि कौन मेरी भक्ति में संलग्न है-**अर्धरात्रे भ्रमत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहान्। अत: स्वलंकृतालिप्ता दीपैर्जाग्रज्जनोत्सवा:॥** जहाँ अच्छा लगता है, वहीं ठहर जाती हैं। इसलिए मनुष्य अलंकारों से युक्त तथा पुष्प माल्यादि से सुशोभित चन्दन लगाकर दीपकों के उजाले में उत्सव करते हुए जागते रहें।

सूर्यादि ग्रहों के निरयन राशि नक्षत्र प्रवेश, वक्री-मार्गी उदयास्त विवरण संवत् 2077

सूर्य नक्षत्र राशि सञ्चार

ता. मास	नक्षत्र	राशि	घं. मि.
३१ मार्च	रेवती		६।५७
१३ अप्रैल	अश्विनी	मेष	२०।२३
२७ "	भरणी		१२।०८
११ मई	कृत्तिका		६।२२
१४ "		वृष	१७।१६
२४ "	रोहिणी		२६।३४
७ जून	मृगशिर		२४।२८
१४ "		मिथुन	२३।५४
२१ "	आर्द्रा		२३।२७
५ जुला.	पुनर्वसु		२३।०४
१६ "		कर्क	१०।४८
१९ "	पुष्य		२२।३६
२ अग.	श्लेषा		२१।२८
१६ "	मघा	सिंह	१९।१२
३० "	पूफा.		१५।०६
१३ सित.	उफा.		९।०२
१६ "		कन्या	१९।०८
२६ "	हस्त		२४।२८
१० अक्टू.	चित्रा		१३।३४
१७ "		तुला	७।०६
२३ "	स्वाती		२३।५९
६ नव.	विशा.		८।२४
१६ "		वृश्चि.	६।५४
१९ "	अनुराधा		१४।१२
२ दिस.	ज्येष्ठा		१८।३३
१५ "	मूल	धनु	२१।३२
२८ "	पू.षा.		२३।४६
१० जन.	उ.षा		२५।४६
१४ "		मकर	८।२४
२० "	अभिजित् प्रवृत्तौ		२१।२१
२३ "	श्रवण		२७।५९
२४ "	अभिजित् निवृत्तौ		२४।५९
६ फर.	धनिष्ठा		७।११
१२ "		कुम्भ	२१।१२
१९ फर.	शत.		११।३६
४ मार्च	पूभा.		१७।५९
१४ "		मीन	१८।०४
१७ "	उभा.		२६।२२
३१ "	रेवती		१३।१४

मंगल राशि सञ्चार

४ मई		कुम्भ	२०।४०
१८ जून		मीन	२०।१५
१६ अग.		मेष	१८।३०
१० सित.	वक्री		६।१०
४ अक्टू.		मीन	१०।०५
१४ नव.	मार्गी		६।५०
२४ दिस.		मेष	१०।२०
२१ फर.		वृष	२८।३५

बुध राशि सञ्चार

७ अप्रै.		मीन	१४।२०
२४ "		मेष	२६।३५
९ मई		वृष	९।४७
२४ "		मिथुन	२३।५८
१८ जून	वक्री		१०।३०
१२ जुला.	मार्गी		१३।५७
१ अग.		कर्क	२७।३०
१७ "		सिंह	८।३०
२ सित.		कन्या	१२।०४
२२ "		तुला	१६।५७
१४ अक्टू.	वक्री		६।३५
३ नव.	मार्गी		२३।२०
२८ "		वृश्चि.	७।०५
१७ दिस.		धनु	११।३८
४ जन.		मकर	२७।५६
२५ "		कुम्भ	१६।५६
३० "	वक्री		२१।२२
४ फर.		मकर	२२।३८
२१ "	मार्गी		६।५९
११ मार्च		कुम्भ	१२।३१
३१ मार्च		मीन	२४।४२

गुरु नक्षत्र राशि सञ्चार

२९ मार्च	उषा.२	मकर	२७।४५
१४ मई	वक्री		२०।०२
३० जून	उषा.१	धनु	५।३३
२६ जुला.	पूषा.४		१५।१०
६ सित.	पूषा.३		२२।३२
१३ "	मार्गी		६।१३
१९ "	पूषा.४		१८।२९
३० अक्टू.	उषा.१		१२।५४
२० नव.	उषा.२	मकर	१३।१४
७ दिस.	उषा.३		२०।४६
२३ "	उषा.४		११।०९
६ जन.	श्रव.१		२७।४१
२१ "	श्रव.२		८।४०
४ फर.	श्रव.३		९।४०
१८ "	श्रव.४		१३।१०
४ मार्च	धनि.१		२५।५८
२० "	धनि.२		८।३१
५ अप्रै.	धनि.३	कुम्भ	२४।२२

शुक्र राशि सञ्चार

२८ मार्च		वृष	१५।३८
१३ मई	वक्री		१२।१५
२५ जून	मार्गी		१२।२०
३१ जुला.		मिथुन	२९।१०
३१ अग.		कर्क	२६।०३
२७ सित.		सिंह	२५।०२
२३ अक्टू.		कन्या	१०।४५
१६ नव.		तुला	२५।०२
१० दिस.		वृश्चि.	२९।१७
३ जन.		धनु	२९।०३
२७ "		मकर	२७।३०
२० फर.		कुम्भ	२६।२१
१६ मार्च		मीन	२७।०१
१० अप्रै.		मेष	६।२८

शनि नक्षत्र राशि सञ्चार

३ अप्रै.	उषा.४	७।२०
११ मई	वक्री	९।४०
१९ जून	उषा.३	५।३९
६ अग.	उषा.२	७।२९
२९ सित.	मार्गी	१०।४४
२० नव.	उषा.३	६।५२
२४ दिस.	उषा.४	२३।२०
२२ जन.	श्रव.१	१७।३६
१९ फर.	श्रव.२	२९।२७
२५ मार्च	श्रव.३	९।२९

इस वर्ष शनि मकर राशि में चलेगा

राहुकेतु नक्षत्र राशि सञ्चार

	राहु	केतु	
२० मई	मृग.४	मूल२	१३।३८
२२ जुला.	मृग.३	मूल१	११।३१
२३ सित.	मृग.२	ज्ये.४	८।३०
२३ "	वृष	वृश्चि.	८।३०
२५ नव.	मृग.१	ज्ये.३	६।५४
२६ जन.	रोहि.४	ज्ये.२	२८।४०
३० मार्च	रोहि.३	ज्ये.१	२५।४७

हर्शल नक्षत्र सञ्चार

११ मई	भर.१		२३।२०
१५ अग.		वक्री	१९।५६
२ दिस.	अश्वि.४		९।४०
१४ जन.		मार्गी	१४।१०
२५ फर.	भर.२		२१।३५

हर्शल मेष राशि में गतिशील रहेगा।

नेपच्यून नक्षत्र सञ्चार

३० मई	पूभा.३		५।३५
२३ जून		वक्री	१०।१०
१७ जुला.	पूभा.२		११।१०
२९ नव.		मार्गी	६।१०
१५ मार्च	पूभा.३		२४।३४

नेपच्यून कुम्भ में गतिशील रहेगा।

प्लूटो नक्षत्र सञ्चार

२५ अप्रै.	वक्री		२४।२०
२८ जून	उषा.१	धनु	२९।१०
४ अक्टू.	मार्गी		१९।००
३० दिस.	उषा.२	मकर	२८।५१

मंगल उदयास्त

विक्रमाब्द २०७७ में मंगल अस्त नहीं होगा

बुध उदयास्त

२२ अप्रै.	अस्त	पूर्व	२५।०५
१६ मई	उदय	पश्चि.	१४।३२
२२ जून	अस्त	पश्चि.	१७।०६
९ जुला.	उदय	पूर्व	२७।३७
५ अग.	अस्त	पूर्व	१७।१३
३१ "	उदय	पश्चि.	२८।१०
१९ अक्टू.	अस्त	पश्चि.	१८।४२
२ नव.	उदय	पूर्व	१५।१९
२६ "	अस्त	पूर्व	१९।१९
१० जन.	उदय	पश्चि.	२१।०५
१ फर.	अस्त	पश्चि.	११।५७
१४ "	उदय	पूर्व	२४।३३
६ अप्रै	अस्त	पूर्व	६।२५

गुरु उदयास्त

१७ जन.	अस्त	पश्चि.	१४।१०
१५ फर.	उदय	पूर्व	२६।१०

शुक्र उदयास्त

३१ मई	अस्त	पश्चि.	१८।१४
९ जून	उदय	पूर्व	११।०७
१३ फर.	अस्त	पूर्व	११।३९

नोट-शुक्र चैत्र शुदी षष्ठी में उदय होगा।

शनि उदयास्त

७ जन.	अस्त	पश्चि.	१२।५९
९ फर.	उदय	पूर्व	२१।५९

★ दैनिक ग्रह स्पष्ट ★

तत्काल ग्रह स्पष्ट करने की विधि- जिस समय के लिए ग्रह स्पष्ट करने हों, उसमें से ५ घं. ३० मि. घटा दें, शेष घं. मि. चालन धन होगा। चालन तुल्य लाघवाङ्क कोष्ठक (पृष्ठ ८४-८५) से लाघवाङ्क दशमलव सहित प्राप्त करें। पुन: ग्रहगति के अनुसार लाघवङ्क लेकर पूर्व प्राप्त लाघवाङ्क में जोड़ दें। कुल योग को लाघवाङ्क कोष्ठक में देखें। जहाँ समानाङ्क मिलें, उनके ऊपर कला बाईं ओर विकला अथवा (अंश कलादि) को प्रात:कालीन ग्रह स्पष्ट ग्रह में जोड़ने पर तत्कालीन ग्रह स्पष्ट हो जायेगा। यदि वक्री ग्रह हो तो उक्त फल घटाना चाहिए। गति साधन सूत्र- दिनद्वयग्रहान्तरं पूर्वदिने स्पष्टस्य सूक्ष्म गतिः।

उदाहरण- २८ मार्च २०२० चैत्र शुक्ल चतुर्थी शनिवार में १५।४० बजे शुक्र स्पष्ट करना है, तो १५।४० में से ५।३० घटाने पर १० घं. १० मि. चालन धन हुआ। चालन तुल्य लाघवाङ्क कोष्ठक पृष्ठ ८४ से .३७३० लाघवाङ्क प्राप्त किये। ता.२९ मार्च शुक्र स्पष्ट १।०।३३।११ में से ता.२८ मार्च के शुक्र स्पष्ट ०।२९।३५।३८ को घटाया तो ५७ कला ३३ विकला गति स्पष्ट हुई। गति तुल्य लाघवाङ्क १.३९८५ लेकर पूर्व प्राप्त लाघवाङ्क में जोड़ने पर .३७३०+१.३९८५ = १.७७१५ अंक हुये, जिनके अनुसार लाघवाङ्क कोष्ठक से अनुपातेन फल २४ कला ३२ विकला लेकर ता.२८ मार्च के शुक्र स्पष्ट ०।२९।३५।३८ में जोड़ दिया तो १ राशि ० अंश ० कला १० विकला तत्काल शुक्र स्पष्ट हो गया। इससे स्पष्ट है कि शुक्र ने कुछ समय पहले वृष राशि में प्रवेश किया है।

मार्च सन् २०२० ई. प्रात: घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।०३, वेंकटेश (प्लूटो) ९।००।०७।२८

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि १२ बजे	
२५	११।१०।४०।१०	११।१७।१४।४३	९। १।४९। ९	१०।१२।५६।१६	८।२९।२०।१२	०।२६।४०। ४	९। ६। ४।२४	२। ९।३८।५९	०।१०।३९।३६	१०।२४।५२।५४	२।५२	७। २	१९।२९	१२।१०।४६	२५
२६	११।११।३९।३७	११।२९। ६।५७	९। २।३०।५१	१०।१३।५९।४९	८।२९।२८।३३	०।२७।३९। ३	९। ६। ८।३९	२। ९।३५।४९	०।१०।४२।४२	१०।२४।५५। ६	२।१३	७।३२	२०।२०	१२।१४।४२	२६
२७	११।१२।३९। २	०।११। ०।५०	९। ३।१२।३३	१०।१५। ५।४९	८।२९।३६।४६	०।२८।३७।३५	९। ६।१२।४९	२। ९।३२।३८	०।१०।४५।५०	१०।२४।५७।१८	२।३८	८। ३	२१।१३	१२।१८।३९	२७
२८	११।१३।३८।२५	०।२२।५८।१७	९। ३।५४।१५	१०।१६।१४। ९	८।२९।४४।५०	०।२९।३५।३८	९। ६।१६।५४	२। ९।२९।२७	०।१०।४८।५८	१०।२४।५९।२९	३। १	८।३६	२२। ७	१२।२२।३५	२८
२९	११।१४।३७।४६	१। ५। १।५२	९। ४।३५।५६	१०।१७।२४।४३	८।२९।५२।४७	१। ०।३३।११	९। ६।२०।५४	२। ९।२६।१६	०।१०।५२। ८	१०।२५। १।४०	३।२५	९।१२	२३। २	१२।२६।३२	२९
३०	११।१५।३७। ५	१।१७।१४।४७	९। ५।१७।३८	१०।१८।३७।२४	९। ०। ०।३५	१। १।३०।१५	९। ६।२४।५०	२। ९।२३। ५	०।१०।५५।१९	१०।२५। ३।५०	३।४८	९।५३	२३।५९	१२।३०।२८	३०
३१	११।१६।३६।२१	१।२९।४०।५५	९। ५।५९।२०	१०।१९।५२। ९	९। ०। ८।१५	१। २।२६।४६	९। ६।२८।४०	२। ९।१९।५४	०।१०।५८।३१	१०।२५। ५।५९	४।११	१०।३९	-। -	१२।३४।२५	३१

अप्रैल सन् २०२० ई. प्रात: घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।०६, वेंकटेश (प्लूटो) ९।००।४२।२६

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	११।१७।३५।३४	२।१२।२४।३५	९। ६।४१। ३	१०।२१। ८।५१	९। ०।१५।४७	१। ३।२२।४६	९। ६।३२।२६	२। ९।१६।४४	०।११। १।४५	१०।२५। ८। ८	४।३५	११।३०	०।५५	१२।३८।२२	१
२	११।१८।३४।४६	२।२५।३०।११	९। ७।२२।४५	१०।२२।२७।२७	९। ०।२३।१०	१। ४।१८।११	९। ६।३६। ७	२। ९।१३।३३	०।११। ४।५९	१०।२५।१०।१६	४।५८	१२।२८	१।५२	१२।४२।१८	२
३	११।१९।३३।५५	३। ९। १।३९	९। ८। ४।२७	१०।२३।४७।५३	९। ०।३०।२४	१। ५।१३। १	९। ६।३९।४३	२। ९।१०।२२	०।११। ८।१४	१०।२५।१२।२३	५।२१	१३।३१	२।४४	१२।४६।१५	३
४	११।२०।३३। २	३।२३। १।३२	९। ८।४६। ९	१०।२५।१०। ७	९। ०।३७।३०	१। ६। ७।१४	९। ६।४३।१४	२। ९। ७।११	०।११।११।३०	१०।२५।१४।२९	५।४४	१४।३७	३।३३	१२।५०।११	४
५	११।२१।३२। ८	४। ७।२९।५६	९। ९।२७।५१	१०।२६।३४। ५	९। ०।४४।२७	१। ७। ०।५०	९। ६।४६।३७	२। ९। ४। १	०।११।१४।४७	१०।२५।१६।३५	६। ६	१५।४४	४।१८	१२।५४। ८	५
६	११।२२।३१।१०	४।२२।२३।३४	९।१०। ९।३४	१०।२७।५९।४६	९। ०।५१।१५	१। ७।५३।४७	९। ६।५०। ०	२। ९। ०।५०	०।११।१८। ५	१०।२५।१८।४०	६।२९	१६।५२	५। १	१२।५८। ४	६
७	११।२३।३०।१०	५। ७।३५।३०	९।१०।५१।१५	१०।२९।२७। ७	९। ०।५७।५४	१। ८।४६। २	९। ६।५३।१६	२। ८।५७।३९	०।११।२१।२४	१०।२५।२०।४४	६।५२	१८। १	५।४१	१३। २। १	७
८	११।२४।२९। ८	५।२२।५५।३९	९।११।३२।५७	११। ०।५६। ७	९। १। ४।२५	१। ९।३७।३६	९। ६।५६।२७	२। ८।५४।२८	०।११।२४।४४	१०।२५।२२।४७	७।१४	१९। १	६।२१	१३। ५।५७	८
९	११।२५।२८। ५	६। ८।१२।२९	९।१२।१४।३९	११। २।२६।४४	९। १।१०।४६	१।१०।२८।२७	९। ६।५९।३२	२। ८।५१।१८	०।११।२८। ४	१०।२५।२४।४९	७।३७	२०।१७	७। २	१३। ९।५४	९
१०	११।२६।२७। ०	६।२३।१४।५९	९।१२।५६।२१	११। ३।५८।५८	९। १।१६।५८	१।११।१८।३३	९। ७। २।३२	२। ८।४८। ७	०।११।३१।२५	१०।२५।२६।५१	७।५९	२१।२५	७।४४	१३।१३।५१	१०
११	११।२७।२५।५२	७। ७।५४।३३	९।१३।३८। ३	११। ५।३२।४८	९। १।२३। ०	१।१२। ७।५२	९। ७। ५।२७	२। ८।४४।५६	०।११।३४।४७	१०।२५।२८।५१	८।२१	२२।३२	८।२९	१३।१७।४७	११
१२	११।२८।२४।४३	७।२२। ६। ७	९।१४।१९।४५	११। ७। ८।१४	९। १।२८।५४	१।१२।५६।२३	९। ७। ८।१६	२। ८।४१।४५	०।११।३८। ९	१०।२५।३०।५०	८।४३	२३।३५	९।१८	१३।२१।४४	१२
१३	११।२९।२३।३१	८। ५।४८।१२	९।१५। १।२७	११। ८।४५।१४	९। १।३४।३७	१।१३।४४। ४	९। ७।११। ०	२। ८।३८।३५	०।११।४१।३२	१०।२५।३२।४९	९। ५	-। -	१०।१०	१३।२५।४०	१३
१४	०। ०।२२।१८	८।१९। २।१२	९।१५।४३। ९	११।१०।२३।५०	९। १।४०।१२	१।१४।३०।५४	९। ७।१३।३९	२। ८।३५।२४	०।११।४४।५६	१०।२५।३४।४६	९।२६	०।३३	११। ५	१३।२९।३७	१४
१५	०। १।२१। ४	९। १।५१।३३	९।१६।२४।५०	११।१२। ४। १	९। १।४५।३६	१।१५।१६।५१	९। ७।१६।१२	२। ८।३२।१३	०।११।४८।२०	१०।२५।३६।४३	९।४८	१।२६	१२। २	१३।३३।३३	१५
१६	०। २।१९।४७	९।१४।२०।३६	९।१७। ६।३१	११।१३।४५।४६	९। १।५०।५१	१।१६। १।५३	९। ७।१८।४०	२। ८।२९। २	०।११।५१।४५	१०।२५।३८।३८	१०। ९	२।१३	१२।५८	१३।३७।३०	१६
१७	०। ३।१८।२९	९।२६।३४। ५	९।१७।४८।१२	११।१५।२९। ८	९। १।५५।५६	१।१६।४५।५७	९। ७।२१। ३	२। ८।२५।५२	०।११।५५।१०	१०।२५।४०।३२	१०।३०	२।५४	१३।५४	१३।४१।२६	१७
१८	०। ४।१७। ९	१०। ८।३६।३०	९।१८।२९।५१	११।१७।१४। ५	९। २। ०।५१	१।१७।२९। १	९। ७।२३।१९	२। ८।२२।४१	०।११।५८।३५	१०।२५।४२।२६	१०।५१	३।३१	१४।४८	१३।४५।२३	१८
१९	०। ५।१५।४७	१०।२०।३२।५८	९।१९।११।३०	११।१९। ०।३८	९। २। ५।३५	१।१८।११। ४	९। ७।२५।३१	२। ८।१९।३०	०।१२। २। १	१०।२५।४४।१८	११।१२	४। ४	१५।४१	१३।४९।२०	१९

अप्रैल सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।०६, वेंकटेश (प्लूटो) ९।००।४२।२६

तारीख	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु (व.) रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	संक्रांति इ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपातकाल	तारीख
२०	०। ६।१४।२४	११। २।२३।५४	९।१९।५३। ९	११।२०।४८।४९	९। २।१०।१०	११।१८।५२। ३	९। ७।२७।३६	२। ८।१६।१९	०।१२। ५।२७	१०।२५।४६। ९	२२।३३	४।३५	२२।३३	[illegible]	२०
२१	०। ७।१२।५९	११।१४।१५। २	९।२०।३४।४६	११।२२।३८।३७	९। २।१४।३४	११।१९।३१।५५	९। ७।२९।३६	२। ८।१३। ९	०।१२। ८।५३	१०।२५।४७।५८	२२।५३	५। ५	२१।२४	[illegible]	२१
२२	०। ८।११।३२	११।२६। ७।३०	९।२१।१६।२२	११।२४।३०। २	९। २।१८।४८	११।२०।१०।३८	९। ७।३१।३०	२। ८। ९।५८	०।१२।१२।२०	१०।२५।४९।४९	२२।१४	५।३५	२८।२६	[illegible]	२२
२३	०। ९।१०। ३	०। ८। २।५६	९।२१।५७।५७	११।२६।२३। ६	९। २।२२।५२	११।२०।४८। ९	९। ७।३३।१९	२। ८। ६।४७	०।१२।१५।४७	१०।२५।५१।३४	२२।३४	६। ५	२२। १	[illegible]	२३
२४	०।१०। ८।३३	०।२०। २।५४	९।२२।३९।३१	११।२८।१७।४८	९। २।२६।४५	११।२१।२४।२५	९। ७।३५। १	२। ८। ३।३६	०।१२।१९।१४	१०।२५।५३।२०	२२।५३	६।३८	२०। २	[illegible]	२४
२५	०।११। ७। ०	१। २। ८।१९	९।२३।२१। ४	०। ०।१४। ७	९। २।३०।२७	११।२१।५९।२४	९। ७।३६।३८	२। ८। ०।२५	०।१२।२२।४२	१०।२५।५५। ४	२३।१३	७।२३	२०।५८	[illegible]	२५
२६	०।१२। ५।२६	१।१४।२२।१८	९।२४। २।३५	०। २।११। २	९। २।३३।५९	११।२२।३३। १	९। ७।३८।१०	२। ७।५७।१५	०।१२।२६। ८	१०।२५।५६।४८	२३।३३	७।५२	२२।५३	[illegible]	२६
२७	०।१३। ३।४९	१।२६।४३।४४	९।२४।४४। ५	०। ४।११।३२	९। २।३७।२०	११।२३। ५।१५	९। ७।३९।३५	२। ७।५४। ४	०।१२।२९।३५	१०।२५।५८।२९	२३।५२	८।३६	२२।५२	[illegible]	२७
२८	०।१४। २।११	२। ९।१८। ५	९।२५।२५।३४	०। ६।१२।३५	९। २।४०।३०	११।२३।३६। १	९। ७।४०।५५	२। ७।५०।५३	०।१२।३३। २	१०।२६। ०।१०	२४।११	९।२५	२३।४६	[illegible]	२८
२९	०।१५। ०।३०	२।२२। ७।१८	९।२६। ७। १	०। ८।१५। ८	९। २।४३।३०	११।२४। ५।१७	९। ७।४२। ८	२। ७।४७।४२	०।१२।३६।२९	१०।२६। १।४९	२४।२९	१०।२०	-।-	[illegible]	२९
३०	०।१५।५८।४७	३। ५।१४।३२	९।२६।४८।२७	०।१०।१९। ६	९। २।४६।१९	११।२४।३२।५८	९। ७।४३।१६	२। ७।४४।३१	०।१२।३९।५६	१०।२६। ३।२७	२४।४८	११।१९	०।३९	[illegible]	३०

मई सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।०९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ९।००।५०।५९

तारीख	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु (व.) रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	संक्रांति इ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपातकाल	तारीख
१	०।१६।५७। ३	३।१८।४२।४५	९।२७।२९।५१	०।१२।२४।२४	९। २।४८।५६	११।२४।५९। ०	९। ७।४४।१८	२। ७।४१।२१	०।१२।४३।२३	१०।२६। ५। ३	१५। ६	२२।२२	१।२८	२४।३६।३८	१
२	०।१७।५५।१६	४। २।३४। ६	९।२८।११।१३	०।१४।३०।५७	९। २।५१।२३	११।२५।२३।२२	९। ७।४५।१५	२। ७।३८।१०	०।१२।४६।४९	१०।२६। ६।३८	१५।२४	२३।२६	२।१३	२४।४०।३५	२
३	०।१८।५३।२७	४।१६।४९। ८	९।२८।५२।३४	०।१६।३८।३५	९। २।५३।३९	११।२५।४५।५८	९। ७।४६। ५	२। ७।३४।५९	०।१२।५०।१६	१०।२६। ८।१२	१५।४२	२४।३२	२।५५	२४।४४।३१	३
४	०।१९।५१।३६	५। १।२६। ०	९।२९।३३।५४	०।१८।४७। १	९। २।५५।४३	११।२६। ६।४४	९। ७।४६।५०	२। ७।३१।४८	०।१२।५३।४२	१०।२६। ९।४३	१५।५९	२५।३८	३।३४	२४।४८।२८	४
५	०।२०।४९।४३	५।१६।२०। ३	१०। ०।१४।११	०।२०।५६।२८	९। २।५७।३७	११।२६।२५।३८	९। ७।४७।२८	२। ७।२८।३८	०।१२।५७। ७	१०।२६।११।१४	१६।१७	२६।४५	४।१३	२४।५२।२४	५
६	०।२१।४७।४९	६। १।२३।५३	१०। ०।५६।२७	०।२३। ६।२०	९। २।५९।२०	११।२६।४२।३५	९। ७।४८। १	२। ७।२५।२७	०।१३। ०।३२	१०।२६।१२।४३	१६।३४	२७।५३	४।५२	२४।५६।२१	६
७	०।२२।४५।५२	६।१६।२८।१६	१०। १।३७।४२	०।२५।१६।३०	९। ३। ०।५१	११।२६।५७।३३	९। ७।४८।२८	२। ७।२२।१६	०।१३। ३।५७	१०।२६।१४।१०	१६।५०	२९। १	५।३३	२५। ०।१८	७
८	०।२३।४३।५४	७। १।२३।३२	१०। २।१८।५४	०।२७।२६।४३	९। ३। २।११	११।२७।१०।२७	९। ७।४८।४९	२। ७।१९। ५	०।१३। ७।२२	१०।२६।१५।३६	१७। ७	२०।१०	६।१६	२५। ४।१४	८
९	०।२४।४१।५५	७।१६। १।१५	१०। ३। ०। ५	०।२९।३६।४३	९। ३। ३।२१	११।२७।२१।१३	९। ७।४९। ५	२। ७।१५।५५	०।१३।१०।४६	१०।२६।१७। ०	१७।२३	२१।१७	७। ४	२५। ८।११	९
१०	०।२५।३९।५४	८। ०।१५।२२	१०। ३।४१।१४	१। १।४६।११	९। ३। ४।१८	११।२७।२९।५०	९। ७।४९।१४	२। ७।१२।४४	०।१३।१४।१०	१०।२६।१८।२३	१७।३९	२२।२०	७।५६	२५।१२। ७	१०
११	०।२६।३७।५१	८।१४। २।४७	१०। ४।२२।२१	१। ३।५४।५१	९। ३। ५। ५	११।२७।३६।१४	९। ७।४९।१८	२। ७। ९।३३	०।१३।१७।३३	१०।२६।१९।४४	१७।५४	२३।१७	८।५२	२५।१६। ४	११
१२	०।२७।३५।४७	८।२७।२३।१२	१०। ५। ३।२६	१। ६। २।२६	९। ३। ५।४०	११।२७।४०।२२	९। ७।४९।१६	२। ७। ६।२२	०।१३।२०।५५	१०।२६।२१। ३	१८। ९	-।-	९।५०	२५।२०। ०	१२
१३	०।२८।३३।४१	९।१०।१८।३३	१०। ५।४४।२८	१। ८। ८।३९	९। ३। ६। ४	११।२७।४२।१२	९। ७।४९। ८	२। ७। ३।१२	०।१३।२४।१७	१०।२६।२२।२१	१८।२४	०। ८	२०।४८	२५।२३।५७	१३
१४	०।२९।३१।३५	९।२२।५२।१७	१०। ६।२५।२८	१।१०।१३।१३	९। ३। ६।१७	११।२७।४१।४१	९। ७।४८।५४	२। ७। ०। १	०।१३।२७।३८	१०।२६।२३।३७	१८।३९	०।५२	२१।४५	२५।२७।५३	१४
१५	१। ०।२९।२७	१०। ५। ८।४०	१०। ७। ६।२५	१।१२।१५।५५	९। ३। ६।१८	११।२७।३८।४७	९। ७।४८।३४	२। ६।५६।५०	०।१३।३०।५९	१०।२६।२४।५२	१८।५३	१।३९	२२।४१	२५।३१।५०	१५
१६	१। १।२७।१८	१०।१७।११।२२	१०। ७।४७।२०	१।१४।१६।३०	९। ३। ६। ७	११।२७।३३।३०	९। ७।४८। ९	२। ६।५३।३९	०।१३।३४।१८	१०।२६।२६। ५	१९। ७	२। ५	२३।३५	२५।३५।४७	१६
१७	१। २।२५। ८	१०।२९। ७।५८	१०। ८।२८।१२	१।१६।१४।४७	९। ३। ५।४६	११।२७।२५।४८	९। ७।४७।३७	२। ६।५०।२९	०।१३।३७।३७	१०।२६।२७।१६	१९।२१	२।३७	२४।२७	२५।३९।४३	१७
१८	१। ३।२२।५७	११।१०।५९।४७	१०। ९। ९। ०	१।१८।१०।३६	९। ३। ५।१३	११।२७।१५।४१	९। ७।४७। ०	२। ६।४७।१८	०।१३।४०।५६	१०।२६।२८।२५	१९।३४	३। ७	२५।१८	२५।४३।४०	१८
१९	१। ४।२०।४४	११।२२।५१।३४	१०। ९।४९।४६	१।२०। ३।४६	९। ३। ४।२८	११।२७। ३।१०	९। ७।४६।१७	२। ६।४४। ७	०।१३।४४।१३	१०।२६।२९।३३	१९।४७	३।३७	२६।१०	२५।४७।३६	१९
२०	१। ५।१८।३०	०। ४।४६।२५	१०।१०।३०।२८	१।२१।५४।११	९। ३। ३।३२	११।२६।४८।१४	९। ७।४५।२९	२। ६।४०।५६	०।१३।४७।२९	१०।२६।३०।३९	२०। ०	४। ७	२७। २	२५।५१।३३	२०
२१	१। ६।१६।१५	०।१६।४६।५२	१०।११।११। ६	१।२३।४१।४५	९। ३। २।२५	११।२६।३०।५७	९। ७।४४।३४	२। ६।३७।४६	०।१३।५०।४५	१०।२६।३१।४३	२०।१२	४।३९	२७।५६	२५।५५।२९	२१
२२	१। ७।१३।५९	०।२८।५४।५४	१०।११।५१।४१	१।२५।२६।२२	९। ३। १। ६	११।२६।११।२१	९। ७।४३।३४	२। ६।३४।३५	०।१३।५३।५९	१०।२६।३२।४५	२०।२४	५।१३	२८।५१	२५।५९।२६	२२
२३	१। ८।११।४२	१।११।११। ३	१०।१२।३२।१२	१।२७। ७।५८	९। २।५९।३६	११।२५।४९।२९	९। ७।४२।२८	२। ६।३१।२४	०।१३।५७।१३	१०।२६।३३।४६	२०।३६	५।५१	२९।४८	२६। ३।२२	२३
२४	१। ९। ९।२३	१।२३।३९।३१	१०।१३।१२।३९	१।२८।४६।३०	९। २।५७।५४	११।२५।२५।२७	९। ७।४१।१७	२। ६।२८।१३	०।१४। ०।२६	१०।२६।३४।४४	२०।४७	६।३३	२०।४६	२६। ७।१९	२४
२५	१।१०। ७। ३	२। ६।१८।२१	१०।१३।५३। २	२। ०।२१।५४	९। २।५६। १	११।२४।५९।२०	९। ७।३९।५९	२। ६।२५। ३	०।१४। ३।३७	१०।२६।३५।४१	२०।५८	७।२१	२१।४२	२६।११।१६	२५

मई सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।०९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ९।००।५०।५९

तारीख	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (व.) रा. अं. क. वि.	शुक्र (व.) रा. अं. क. वि.	शनि (व.) रा. अं. क. वि.	राहु (व.) रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	क्रांति उ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि स्पष्ट	तारीख
२६	१।११। ४।४१	२।१९। ९।३६	१०।१४।३३।२१	२। १।५४। ९	९। २।५३।५८	१।२४।३१।१६	९। ७।३८।३७	२। ६।२१।५२	०।१४। ६।४७	१०।२६।३६।३६	२१। ८	८।१५	२२।३६	१६।१५।२२	२६
२७	१।१२। २।१८	३। २।१४।२३	१०।१५।१३।३५	२। ३।२३।११	९। २।५१।४३	१।२४। १।२१	९। ७।३७। ९	२। ६।१८।४१	०।१४। ९।५६	१०।२६।३७।३०	२१।१९	९।१३	२३।२६	१६।१९। ९	२७
२८	१।१२।५९।५४	३।१५।३३।४८	१०।१५।५३।४५	२। ४।४८।५९	९। २।४९।१७	१।२३।२९।४५	९। ७।३५।३५	२। ६।१५।३०	०।१४।१३। ४	१०।२६।३८।२१	२१।२८	१०।१५	-।-	१६।२३। ५	२८
२९	१।१३।५७।२९	३।२९। ८।५४	१०।१६।३३।५१	२। ६।११।२९	९। २।४६।४०	१।२२।५६।३९	९। ७।३३।५६	२। ६।१२।११	०।१४।१६।११	१०।२६।३९।१०	२१।३८	११।१८	०।१२	१६।२७। २	२९
३०	१।१४।५५। १	४।१३। ०।१२	१०।१७।१३।५१	२। ७।३०।४०	९। २।४३।५२	१।२२।२२।१३	९। ७।३२।११	२। ६। ९। ८	०।१४।१९।१६	१०।२६।३९।५८	२१।४७	१२।२१	०।५४	१६।३०।५८	३०
३१	१।१५।५२।३२	४।२७। ७।२५	१०।१७।५३।४७	२। ८।४६।२८	९। २।४०।५४	१।२१।४६।३९	९। ७।३०।२१	२। ६। ५।५८	०।१४।२२।२०	१०।२६।४०।४४	२१।५६	१३।२५	१।३३	१६।३४।५५	३१

जून सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।१४, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ९।००।३३।१९

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (व.)	शुक्र (व.)	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	क्रांति उ. +	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	१।१६।५०। १	५।११।२८।५७	१०।१८।३३।३८	२। ९।५८।५२	९। २।३७।४५	१।२१।१०।११	९। ७।२८।२६	२। ६। २।४७	०।१४।२५।२३	१०।२६।४१।२८	२२। ४	१४।२९	२।१०	१६।३८।५१	१
२	१।१७।४७।३०	५।२६। १।४३	१०।१९।१३।२५	२।११। ७।४६	९। २।३४।२५	१।२०।३३। २	९। ७।२६।२६	२। ५।५९।३६	०।१४।२८।२४	१०।२६।४२। ९	२२।१२	१५।३४	२।४७	१६।४२।४८	२
३	१।१८।४४।५७	६।१०।४१। ०	१०।१९।५३। ६	२।१२।१३। ९	९। २।३०।५५	१।१९।५५।२८	९। ७।२४।२०	२। ५।५६।२५	०।१४।३१।२४	१०।२६।४२।४९	२२।१९	१६।४०	३।२६	१६।४६।४५	३
४	१।१९।४२।२३	६।२५।२०।४८	१०।२०।३२।४२	२।१३।१४।५५	९। २।२७।१५	१।१९।१७।४२	९। ७।२२।१०	२। ५।५३।१५	०।१४।३४।२२	१०।२६।४३।२८	२२।२६	१७।४८	४। ७	१६।५०।४२	४
५	१।२०।३९।४९	७। ९।५४।३१	१०।२१।१२।१४	२।१४।१३। २	९। २।२३।२५	१।१८।३९।५९	९। ७।१९।५४	२। ५।५०। ४	०।१४।३७।१९	१०।२६।४४। ४	२२।३३	१८।५६	४।५२	१६।५४।३८	५
६	१।२१।३७।१४	७।२४।१५।४७	१०।२१।५१।४०	२।१५। ७।२४	९। २।१९।२४	१।१८। २।३६	९। ७।१७।३४	२। ५।४६।५३	०।१४।४०।१५	१०।२६।४४।३८	२२।४०	२०। १	५।४२	१६।५८।३४	६
७	१।२२।३४।३७	८। ८।१९।२३	१०।२२।३१। ०	२।१५।५७।५६	९। २।१५।१४	१।१७।२५।४५	९। ७।१५। ८	२। ५।४३।४२	०।१४।४३। ९	१०।२६।४५।१०	२२।४६	२१। ३	६।३६	१७। २।३१	७
८	१।२३।३१।५९	८।२२। १।५०	१०।२३।१०।१५	२।१६।४४।३४	९। २।१०।५४	१।१६।४९।४३	९। ७।१२।३८	२। ५।४०।३२	०।१४।४६। १	१०।२६।४५।४१	२२।५१	२१।५८	७।३४	१७। ६।२७	८
९	१।२४।२९।२१	९। ५।२१।३४	१०।२३।४९।२४	२।१७।२७।११	९। २। ६।२४	१।१६।१४।४१	९। ७।१०। ३	२। ५।३७।२१	०।१४।४८।५२	१०।२६।४६।१०	२२।५६	२२।४६	८।३४	१७।१०।२४	९
१०	१।२५।२६।४२	९।१८।१८।५६	१०।२४।२८।२७	२।१८। ५।४४	९। २। १।४४	१।१५।४०।५३	९। ७। ७।३३	२। ५।३४।१०	०।१४।५१।४१	१०।२६।४६।३६	२३। १	२३।२८	९।३३	१७।१४।२०	१०
११	१।२६।२४। ३	१०। ०।५५।५३	१०।२५। ७।२३	२।१८।४०। ६	९। १।५६।५५	१।१५। ८।३१	९। ७। ४।३९	२। ५।३०।५९	०।१४।५४।२८	१०।२६।४७। १	२३। ५	-।-	१०।३०	१७।१८।१७	११
१२	१।२७।२१।२३	१०।१३।१५।३१	१०।२५।४६।१३	२।१९।१०।१३	९। १।५१।५७	१।१४।३७।४५	९। ७। १।५०	२। ५।२७।४९	०।१४।५७।१४	१०।२६।४७।२३	२३। ९	०। ५	११।२६	१७।२२।१४	१२
१३	१।२८।१८।४३	१०।२५।२२।४७	१०।२६।२४।५६	२।१९।३५।५९	९। १।४६।५०	१।१४। ८।४६	९। ६।५८।५६	२। ५।२४।३८	०।१४।५९।५८	१०।२६।४७।४४	२३।१३	०।३८	१२।१९	१७।२६।१०	१३
१४	१।२९।१६। २	११। ७।१९। ९	१०।२७। ३।३२	२।१९।५७।२०	९। १।४१।३४	१।१३।४१।४१	९। ६।५५।५८	२। ५।२१।२७	०।१५। २।४०	१०।२६।४८। ३	२३।१६	१। ९	१३।११	१७।३०। ७	१४
१५	२। ०।१३।२१	११।१९।१२।१०	१०।२७।४२। १	२।२०।१४।१२	९। १।३६। ९	१।१३।१६।३८	९। ६।५२।५६	२। ५।१८।१६	०।१५। ५।२०	१०।२६।४८।२०	२३।१९	१।३८	१४। २	१७।३४। ३	१५
१६	२। १।१०।३९	०। १। ५।१८	१०।२८।२०।२२	२।२०।२६।३२	९। १।३०।३६	१।१२।५३।४३	९। ६।४९।४९	२। ५।१५। ६	०।१५। ७।५९	१०।२६।४८।३५	२३।२२	२। ८	१४।५४	१७।३८। ०	१६
१७	२। २। ७।५७	०।१३। २।४०	१०।२८।५८।३५	२।२०।३४।१८	९। १।२४।५४	१।१२।३३। २	९। ६।४६।३८	२। ५।११।५५	०।१५।१०।३५	१०।२६।४८।४८	२३।२३	२।३९	१५।४७	१७।४१।५६	१७
१८	२। ३। ५।१५	०।२५। ७।५३	१०।२९।३६।४०	२।२०।३७।३१	९। १।१९। ३	१।१२।१४।३७	९। ६।४३।२३	२। ५। ८।४४	०।१५।१३।१०	१०।२६।४८।५९	२३।२४	३।११	१६।४२	१७।४५।५३	१८
१९	२। ४। २।३२	१। ७।२३।५६	११। ०।१४।३६	२।२०।३६।१२	९। १।१३। ६	१।११।५८।३३	९। ६।४०। ४	२। ५। ५।३३	०।१५।१५।४३	१०।२६।४९। ८	२३।२५	३।४८	१७।३८	१७।४९।४९	१९
२०	२। ४।५९।४९	१।१९।५३। ६	११। ०।५२।२४	२।२०।३०।२६	९। १। ७। १	१।११।४४।५१	९। ६।३६।४२	२। ५। २।२३	०।१५।१८।१३	१०।२६।४९।१५	२३।२६	४।२९	१८।३७	१७।५३।४६	२०
२१	२। ५।५७; ६	२। २।३६।५१	११। १।३०। ३	२।२०।२०।१८	९। १। ०।४८	१।११।३३।३२	९। ६।३३।१५	२। ४।५९।१२	०।१५।२०।४२	१०।२६।४९।२०	२३।२६	५।१६	१९।३५	१७।५७।४३	२१
२२	२। ६।५४।२२	२।१५।३५।४९	११। २। ७।३२	२।२०। ५।५९	९। ०।५४।२८	१।११।२४।३६	९। ६।२९।४४	२। ४।५६। १	०।१५।२३। ९	१०।२६।४९।२३	२३।२६	६। ८	२०।३१	१८। १।३९	२२
२३	२। ७।५१।३८	२।२८।४९।५३	११। २।४४।५२	२।१९।४७।४०	९। ०।४८। १	१।११।१८। ४	९। ६।२६।११	२। ४।५२।५०	०।१५।२५।३३	१०।२६।४९।२४	२३।२५	७। ६	२१।२३	१८। ५।३६	२३
२४	२। ८।४८।५३	३।१२।१८।१३	११। ३।२२। २	२।१९।२५।३७	९। ०।४१।२८	१।११।१३।५४	९। ६।२२।३३	२। ४।४९।४०	०।१५।२७।५६	१०।२६।४९।२३	२३।२४	८। ८	२२।११	१८। ९।३२	२४
२५	२। ९।४६। ८	३।२५।५९।३०	११। ३।५९। २	२।१९। ०।१२	९। ०।३४।४८	१।११।१२। ५	९। ६।१८।५२	२। ४।४६।२९	०।१५।३०।१६	१०।२६।४९।२०	२३।२३	९।११	२२।५५	१८।१३।२९	२५
२६	२।१०।४३।२२	४। ९।५२। ५	११। ४।३५।५२	२।१८।३१।४४	९। ०।२८। २	१।११।१२।३४	९। ६।१५। ८	२। ४।४३।१८	०।१५।३२।३४	१०।२६।४९।१५	२३।२२	१०।१५	२३।३५	१८।१७।२५	२६
२७	२।११।४०।३५	४।२३।५४। १	११। ५।१२।३२	२।१८। ०।४०	९। ०।२१।१०	१।११।१५।२०	९। ६।११।२१	२। ४।४०। ७	०।१५।३४।५०	१०।२६।४९। ९	२३।१९	११।१८	-।-	१८।२१।२२	२७
२८	२।१२।३७।४७	५। ८। ३।१३	११। ५।४९। १	२।१७।२७।२८	९। ०।१४।१३	१।११।२०।२०	९। ६। ७।३०	२। ४।३६।५६	०।१५।३७। ४	१०।२६।४९। ०	२३।१६	१२।२१	०।१२	१८।२५।१९	२८
२९	२।१३।३५। ०	५।२२।१७।२३	११। ६।२५।१९	२।१६।५२।४३	९। ०। ७।११	१।११।२७।३१	९। ६। ३।३७	२। ४।३३।४५	०।१५।३९।१५	१०।२६।४८।४९	२३।१३	१३।२४	०।४८	१८।२९।१५	२९
३०	२।१४।३२।१२	६। ६।३४। ०	११। ७। १।२६	२।१६।१६।५६	९। ०। ०। ४	१।११।३६।५०	९। ५।५९।४१	२। ४।३०।३४	०।१५।४१।२४	१०।२६।४८।३७	२३।१०	१४।२८	१।२५	१८।३३।१२	३०

जुलाई सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।१९, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।२१।५७।११

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (व.)	गुरु (व.)	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून (व.)	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
१	२।१५।२९।२४	६।२०।५०।१६	११। ७।३७।२२	२।१५।४०।४६	८।२९।५२।५२	१।११।४८।१४	९। ५।५५।४३	२। ४।२७।२४	०।१५।४३।३१	१०।२६।४८।२२	२३। ९	१५।३४	२। ४	१८।३७। ८	१
२	२।१६।२६।३५	७। ५। ३। ६	११। ८।१३। ७	२।१५। ४।५०	८।२९।४५।३६	१।१२। १।४०	९। ५।५१।४१	२। ४।२४।१३	०।१५।४५।३५	१०।२६।४८। ६	२३। २	१६।३९	२।४६	१८।४१। ५	२
३	२।१७।२३।४६	७।१९। ९।१३	११। ८।४८।४०	२।१४।२९।४४	८।२९।३८।१६	१।१२।१७। ५	९। ५।४७।३८	२। ४।२१। २	०।१५।४७।३८	१०।२६।४७।४८	२२।५७	१७।४५	३।३२	१८।४५। १	३
४	२।१८।२०।५७	८। ३। ५।१४	११। ९।२४। १	२।१३।५६। ६	८।२९।३०।५२	१।१२।३४।२५	९। ५।४३।३२	२। ४।१७।५२	०।१५।४९।३७	१०।२६।४७।२८	२२।५२	१८।४८	४।२३	१८।४८।५८	४
५	२।१९।१८। ७	८।१६।४८। ५	११। ९।५९।१०	२।१३।२४।३१	८।२९।२३।२५	१।१२।५३।३६	९। ५।३९।२४	२। ४।१४।४१	०।१५।५१।३५	१०।२६।४७। ६	२२।४७	१९।४६	५।१९	१८।५२।५४	५
६	२।२०।१५।१८	९। ०।१५।१५	११।१०।३४। ६	२।१२।५५।३२	८।२९।१५।५४	१।१३।१४।३६	९। ५।३५।१४	२। ४।११।३०	०।१५।५३।३०	१०।२६।४६।४२	२२।४१	२०।३७	६।१८	१८।५६।५१	६
७	२।२१।१२।२८	९।१३।२५। ५	११।११। ८।४९	२।१२।२९।४१	८।२९। ८।२१	१।१३।३७।२०	९। ५।३१। १	२। ४। ८।१९	०।१५।५५।२२	१०।२६।४६।१६	२२।३४	२१।२२	७।१८	१९। ०।४८	७
८	२।२२। ९।४०	९।२६।१७। ४	११।११।४३।१९	२।१२। ७।२४	८।२९। ०।४६	१।१४। १।४६	९। ५।२६।४७	२। ४। ५। ९	०।१५।५७।१२	१०।२६।४५।४९	२२।२८	२२। २	८।१८	१९। ४।४४	८
९	२।२३। ६।५१	१०। ८।५१।५१	११।१२।१७।३५	२।११।४९। ८	८।२८।५३। ८	१।१४।२७।४९	९। ५।२२।३१	२। ४। १।५९	०।१५।५९। ०	१०।२६।४५।२०	२२।२१	२२।३७	९।१५	१९। ८।४१	९
१०	२।२४। ४। ३	१०।२१।११।१५	११।१२।५१।३७	२।११।३५।१३	८।२८।४५।२८	१।१४।५५।२६	९। ५।१८।१४	२। ३।५८।४८	०।१६। ०।४५	१०।२६।४४।४८	२२।१३	२३। ९	१०। ९	१९।१२।३७	१०
११	२।२५। १।१४	११। ३।१८। ५	११।१३।२५।२५	२।११।२५।५७	८।२८।३७।४७	१।१५।२४।३५	९। ५।१३।५५	२। ३।५५।३७	०।१६। २।२७	१०।२६।४४।१५	२२। ५	२३।३९	११। २	१९।१६।३४	११
१२	२।२५।५८।२७	११।१५।१६। १	११।१३।५८।५७	२।११।२१।३६	८।२८।३०। ४	१।१५।५५।१०	९। ५। ९।३५	२। ३।५२।२७	०।१६। ४। ७	१०।२६।४३।४१	२१।५७	-। -	११।५४	१९।२०।३०	१२
१३	२।२६।५५।४०	११।२७। ९।२१	११।१४।३२।१४	२।११।२२।२२	८।२८।२२।२१	१।१६।२७।१०	९। ५। ५।१३	२। ३।४९।१६	०।१६। ५।४५	१०।२६।४३। ४	२१।४९	०। ८	१२।४५	१९।२४।२७	१३
१४	२।२७।५२।५३	०। ९। २।४१	११।१५। ५।१४	२।११।२८।२३	८।२८।१४।३७	१।१७। ०।३०	९। ५। ०।५१	२। ३।४६। ५	०।१६। ७।१९	१०।२६।४२।२६	२१।४०	०।३८	१३।३७	१९।२८।२३	१४
१५	२।२८।५०। ७	०।२१। ०।४६	११।१५।३७।५८	२।११।३९।४७	८।२८। ६।५२	१।१७।३५। ९	९। ४।५६।२७	२। ३।४२।५४	०।१६। ८।५१	१०।२६।४१।४६	२१।३०	१।१०	१४।३१	१९।३२।२०	१५
१६	२।२९।४७।२१	१। ३। ८।१३	११।१६।१०।२६	२।११।५६।३८	८।२७।५९। ८	१।१८।११। २	९। ४।५२। ३	२। ३।३९।४४	०।१६।१०।२१	१०।२६।४१। ४	२१।२१	१।४४	१५।२६	१९।३६।१७	१६
१७	३। ०।४४।३६	१।१५।२९। ९	११।१६।४२।३५	२।१२।१८।५८	८।२७।५१।२४	१।१८।४८। ७	९। ४।४७।३७	२। ३।३६।३३	०।१६।११।४८	१०।२६।४०।२०	२१।११	२।२३	१६।२४	१९।४०।१३	१७
१८	३। १।४१।५२	१।२८। ७। २	११।१७।१४।२७	२।१२।४६।४९	८।२७।४३।४१	१।१९।२६।२२	९। ४।४३।१२	२। ३।३३।२२	०।१६।१३।१२	१०।२६।३९।३५	२१। ०	३। ७	१७।२२	१९।४४।१०	१८
१९	३। २।३९। ८	२।११। ४।१४	११।१७।४६। ०	२।१३।२०। ९	८।२७।३५।५९	१।२०। ५।४२	९। ४।३८।४६	२। ३।३०।११	०।१६।१४।३३	१०।२६।३८।४८	२०।५०	३।५७	१८।२०	१९।४८। ६	१९
२०	३। ३।३६।२५	२।२४।२१।४९	११।१८।१७।१४	२।१३।५८।५८	८।२७।२८।१९	१।२०।४६। ७	९। ४।३४।११	२। ३।२७। १	०।१६।१५।५१	१०।२६।३७।५९	२०।३९	४।५४	१९।१५	१९।५२। ३	२०
२१	३। ४।३३।४३	३। ७।५९।१०	११।१८।४८। ९	२।१४।४३।१३	८।२७।२०।४०	१।२१।२७।३३	९। ४।२९।५३	२। ३।२३।५०	०।१६।१७। ७	१०।२६।३७। ९	२०।२७	५।५६	२०। ६	१९।५५।५९	२१
२२	३। ५।३१। ०	३।२१।५४। ५	११।१९।१८।४४	२।१५।३२।५२	८।२७।१३। ३	१।२२। ९।५८	९। ४।२५।२६	२। ३।२०।३९	०।१६।१८।२०	१०।२६।३६।१६	२०।१५	७। १	२०।५२	१९।५९।५६	२२
२३	३। ६।२८।१९	४। ६। २।५०	११।१९।४८।५८	२।१६।२७।५०	८।२७। ५।२९	१।२२।५३।११	९। ४।२०।५९	२। ३।१७।२८	०।१६।१९।३०	१०।२६।३५।२३	२०। ३	८। ६	२१।३४	२०। ३।५२	२३
२४	३। ७।२५।३७	४।२०।२०।४४	११।२०।१८।५१	२।१७।२८। ४	८।२६।५७।५८	१।२३।३७।३५	९। ४।१६।३३	२। ३।१४।१८	०।१६।२०।३८	१०।२६।३४।२७	१९।५१	९।११	२२।१३	२०। ७।४९	२४
२५	३। ८।२२।५६	५। ४।४२।४७	११।२०।४८।२३	२।१८।३३।२९	८।२६।५०।३०	१।२४।२२।४३	९। ४।१२। ८	२। ३।११। ७	०।१६।२१।४२	१०।२६।३३।३१	१९।३८	१०।१५	२२।५०	२०।११।४६	२५
२६	३। ९।२०।१६	५।१९। ४।१९	११।२१।१७।३३	२।१९।४३।५८	८।२६।४३। ५	१।२५। ८।४२	९। ४। ७।४२	२। ३। ७।५६	०।१६।२२।४४	१०।२६।३२।३२	१९।२५	११।१८	२३।२७	२०।१५।४२	२६
२७	३।१०।१७।३६	६। ३।२१।३२	११।२१।४६।२०	२।२०।५९।२६	८।२६।३५।४४	१।२५।५५।२९	९। ४। ३।१८	२। ३। ४।४५	०।१६।२३।४२	१०।२६।३१।३२	१९।११	१२।२२	-। -	२०।१९।३९	२७
२८	३।११।१४।५६	६।१७।३१।४१	११।२२।१४।४५	२।२२।१९।४६	८।२६।२८।२८	१।२६।४३। ४	९। ३।५८।५४	२। ३। १।३४	०।१६।२४।३८	१०।२६।३०।३०	१८।५८	१३।२६	०। ४	२०।२३।३५	२८
२९	३।१२।१२।१७	७। १।३२।५१	११।२२।४२।४७	२।२३।४४।४७	८।२६।२१।१६	१।२७।३१।२४	९। ३।५४।३२	२। २।५८।२२	०।१६।२५।३१	१०।२६।२९।२७	१८।४४	१४।३०	०।४४	२०।२७।३२	२९
३०	३।१३। ९।३८	७।१५।२४।२८	११।२३।१०।२६	२।२५।१४।२१	८।२६।१४। ८	१।२८।२०।२८	९। ३।५०।१०	२। २।५५।१२	०।१६।२६।२२	१०।२६।२८।२३	१८।२९	१५।३४	१।२८	२०।३१।२८	३०
३१	३।१४। ७। ०	७।२९। ५।३१	११।२३।३७।४०	२।२६।४८।१७	८।२६। ७। ६	१।२९।१०।१४	९। ३।४५।५०	२। २।५२। १	०।१६।२७। १	१०।२६।२७।१७	१८।१४	१६।३७	२।१६	२०।३५।२५	३१

अगस्त सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।२४, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।२१।१२।४८

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	३।१५। ४।२२	८।१२।३५।३७	११।२४। ४।३०	२।२८।२६।२१	८।२६। ०। १	२। ०। ०।४२	९। ३।४१।३१	२। २।४८।५०	०।१६।२७।५३	१०।२६।२६।१०	१८। ०	१७।३६	३।१०	२०।३९।२१	१
२	३।१६। १।४५	८।२५।५४।१०	११।२४।३०।५५	३। ०। ८।१९	८।२५।५३।१७	२। ०।५१।४९	९। ३।३७।१४	२। २।४५।३९	०।१६।२८।३५	१०।२६।२५। १	१७।४४	१८।२९	४। ७	२०।४३।१८	२
३	३।१६।५९। ९	९। ९। ०।२८	११।२४।५६।५३	३। १।५३।५५	८।२५।४६।३२	२। १।४३।३५	९। ३।३२।५८	२। २।४२।२९	०।१६।२९।१३	१०।२६।२३।५१	१७।२९	१९।१६	५। ६	२०।४७।१५	३
४	३।१७।५६।३४	९।२१।५३।५१	११।२५।२२।२६	३। ३।४२।५०	८।२५।३९।५२	२। २।३५।५८	९। ३।२८।४४	२। २।३९।१८	०।१६।२९।४९	१०।२६।२२।४०	१७।१३	१९।५८	६। ५	२०।५१।११	४
५	३।१८।५३।५९	१०। ४।३३।५५	११।२५।४७।३१	३। ५।३४।४५	८।२५।३३।१९	२। ३।२८।५७	९। ३।२४।३२	२। २।३६। ७	०।१६।३०।२२	१०।२६।२१।२७	१६।५७	२०।३५	७। ३	२०।५५। ८	५

अगस्त सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।२४, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।२१।१२।४८

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून (व.)	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१ रवजे	
६	३।१९।५१।२६	१०।१७। ०।४९	११।२६।१२। ८	३। ७।२९।१९	८।२५।२६।५२	२। ४।२२।३२	९। ३।२०।२२	२। २।३२।५६	०।१६।३०।५१	१०।२६।२०।१३	१६।४०	२१। ८	७।५९	२०।५९। ४	६
७	३।२०।४८।५३	१०।२९।१५।२५	११।२६।३६।१७	३। ९।२६।१०	८।२५।२०।३२	२। ५।१६।४०	९। ३।१६।१३	२। २।२९।४६	०।१६।३१।१८	१०।२६।१८।५८	१६।२४	२१।३९	८।५३	२१। ३। १	७
८	३।२१।४६।२२	११।११।१९।३१	११।२६।५९।५६	३।११।२४।५७	८।२५।१४।२०	२। ६।११।२०	९। ३।११। ८	२। २।२६।३५	०।१६।३१।४२	१०।२६।१७।४१	१६। ७	२२। ९	९।४६	२१। ६।५७	८
९	३।२२।४३।५३	११।२३।१५।४५	११।२७।२३। ५	३।१३।२५।१७	८।२५। ८।१४	२। ७। ६।३३	९। ३। ८। ४	२। २।२३।२४	०।१६।३२। ३	१०।२६।१६।२४	१५।५०	२२।३८	१०।३७	२१।१०।५४	९
१०	३।२३।४१।२४	०। ५। ७।४०	११।२७।४५।४३	३।१५।२६।४८	८।२५। २।१६	२। ८। २।१६	९। ३। ४। ३	२। २।२०।१३	०।१६।३२।२१	१०।२६।१५। ५	१५।३२	२३। ९	११।२९	२१।१४।५०	१०
११	३।२४।३८।५७	०।१६।५९।२९	११।२८। ७।४९	३।१७।२९।११	८।२४।५६।२६	२। ८।५८।२८	९। ३। ०। ४	२। २।१७। ३	०।१६।३२।३६	१०।२६।१३।४५	१५।१४	२३।४१	१२।२१	२१।१८।४७	११
१२	३।२५।३६।३१	०।२८।५६। २	११।२८।२९।२२	३।१९।३२। ४	८।२४।५०।४४	२। ९।५५।१०	९। २।५६। ९	२। २।१३।५२	०।१६।३२।४८	१०।२६।१२।२४	१४।५६	-।-	१३।१५	२१।२२।४४	१२
१३	३।२६।३४। ७	१।११। २।२२	११।२८।५०।२२	३।२१।३५।११	८।२४।४५।११	२।१०।५२।१८	९। २।५२।१६	२। २।१०।४१	०।१६।३२।५७	१०।२६।११। १	१४।३८	०।१८	१४।११	२१।२६।४०	१३
१४	३।२७।३१।४४	१।२३।२३।३२	११।२९।१०।४८	३।२३।३८।१५	८।२४।३९।४५	२।११।४९।५४	९। २।४८।२५	२। २। ७।३०	०।१६।३३। ३	१०।२६। ९।३८	१४।२०	०।५९	१५। ८	२१।२९।३८	१४
१५	३।२८।२९।२३	२। ६। ४।१०	११।२९।३०।३८	३।२५।४१। १	८।२४।३४।२९	२।१२।४७।५६	९। २।४४।३८	२। २। ४।२०	०।१६।३३। ६	१०।२६। ८।१४	१४। १	१।४६	१६। ६	२१।३४।३३	१५
१६	३।२९।२७। ३	२।१९। ७।५६	११।२९।४९।५२	३।२७।४३।१६	८।२४।२९।२१	२।१३।४६।२३	९। २।४०।५५	२। २। १। ९	०।१६।३३। ६	१०।२६। ६।४८	१३।४२	२।३९	१७। २	२१।३८।३०	१६
१७	४। ०।२४।४५	३। २।३७। १	०। ०। ८।३०	३।२९।४४।५१	८।२४।२४।२३	२।१४।४५।१४	९। २।३७।१४	२। १।५७।५८	०।१६।३३। ३	१०।२६। ५।२२	१३।२३	३।३८	१७।५५	२१।४२।२६	१७
१८	४। १।२२।२८	३।१६।३१।२४	०। ०।२६।३०	४। १।४५।३५	८।२४।१९।३३	२।१५।४४।२८	९। २।३३।३७	२। १।५४।४७	०।१६।३२।५८	१०।२६। ३।५४	१३। ४	४।४३	१८।४४	२१।४६।२३	१८
१९	४। २।२०।१२	४। ०।४८।३१	०। ०।४३।५१	४। ३।४५।२१	८।२४।१४।५४	२।१६।४४। ५	९। २।३०। ३	२। १।५१।३७	०।१६।३२।४९	१०।२६। २।२६	१२।४५	५।४९	१९।२९	२१।५०।१९	१९
२०	४। ३।१७।५८	४।१५।२३। ९	०। १। ०।३३	४। ५।४४। ३	८।२४।१०।२४	२।१७।४४। ५	९। २।२६।३३	२। १।४८।२६	०।१६।३२।३७	१०।२६। ०।५७	१२।२५	६।५६	२०।१०	२१।५४।१६	२०
२१	४। ४।१५।४५	५। ०। ८। ८	०। १।१६।३४	४। ७।४१।३७	८।२४। ६। ४	२।१८।४४।२५	९। २।२३। ७	२। १।४५।१५	०।१६।३२।२२	१०।२५।५९।२७	१२। ५	८। ३	२०।४८	२१।५८।१३	२१
२२	४। ५।१३।३३	५।१४।५५।१७	०। १।३१।५५	४। ९।३७।५८	८।२४। १।५३	२।१९।४५। ६	९। २।१९।४५	२। १।४२। ४	०।१६।३२। ४	१०।२५।५७।५६	११।४५	९। ८	२१।२६	२२। २।१३	२२
२३	४। ६।११।२३	५।२९।३६।५६	०। १।४६।३५	४।११।३३। ४	८।२३।५७।५४	२।२०।४६। ८	९। २।१६।२६	२। १।३८।५४	०।१६।३१।४३	१०।२५।५६।२५	११।२५	१०।१४	२२। ४	२२। ६। ६	२३
२४	४। ७। ९।१४	६।१४। ६।५८	०। २। ०।३२	४।१३।२६।५३	८।२३।५४। ४	२।२१।४७।२९	९। २।१३।१२	२। १।३५।४३	०।१६।३१।२०	१०।२५।५४।५२	११। ४	११।१९	२२।४४	२२।१०। २	२४
२५	४। ८। ७। ६	६।२८।२१।२९	०। २।१३।४७	४।१५।१९।२४	८।२३।५०।२५	२।२२।४९। ८	९। २।१०। २	२। १।३२।३२	०।१६।३०।५३	१०।२५।५३।१९	१०।४४	१२।२४	२३।२७	२२।१३।५९	२५
२६	४। ९। ४।५९	७।१२।१८।४९	०। २।२६।१७	४।१७।१०।३६	८।२३।४६।५७	२।२३।५१। ७	९। २। ६।५६	२। १।२९।२१	०।१६।३०।२३	१०।२५।५१।४६	१०।२३	१३।२८	-।-	२२।१७।५५	२६
२७	४।१०। २।५३	७।२५।५९। ६	०। २।३८। ७	४।१९। ०।२८	८।२३।४३।३९	२।२४।५३।२४	९। २। ३।५४	२। १।२६।१०	०।१६।२९।५१	१०।२५।५०।११	१०। २	१४।३१	०।१४	२२।२१।५२	२७
२८	४।११। ०।४९	८। ९।२३।३१	०। २।४९।१०	४।२०।४९। १	८।२३।४०।३२	२।२५।५५।५८	९। २। ०।५७	२। १।२२।५९	०।१६।२९।१६	१०।२५।४८।३७	९।४१	१५।३०	१। ५	२२।२५।४८	२८
२९	४।११।५८।४६	८।२२।३३।४१	०। २।५९।२८	४।२२।३६।१५	८।२३।३७।३६	२।२६।५८।५०	९। १।५८। ४	२। १।१९।४८	०।१६।२८।३८	१०।२५।४७। १	९।१९	१६।२५	२। ०	२२।२९।४५	२९
३०	४।१२।५६।४४	९। ५।३१। ९	०। ३। ९। ०	४।२४।२२।११	८।२३।३४।५०	२।२८। १।५९	९। १।५५।१६	२। १।१६।३८	०।१६।२७।५७	१०।२५।४५।२५	८।५८	१७।१३	२।५८	२२।३३।४२	३०
३१	४।१३।५४।४४	९।१८।१७।१०	०। ३।१७।४५	४।२६। ६।४९	८।२३।३२।१६	२।२९। ५।२५	९। १।५२।३३	२। १।१३।२७	०।१६।२७।१३	१०।२५।४३।४९	८।३६	१७।५६	३।५६	२२।३७।३८	३१

सितम्बर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।२८, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।२८।३६।२३

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून (व.)	क्रांति	चन्द्रोदय	चन्द्रास्त	सांपा.काल	तारीख
१	४।१४।५२।४५	१०। ०।५२।३५	०। ३।२५।४३	४।२७।५०।११	८।२३।२९।५३	३। ०। ९। ७	९। १।४९।५४	२। १।१०।१६	०।१६।२६।२६	१०।२५।४२।१२	८।१५	१८।३४	४।५४	२२।४१।३५	१
२	४।१५।५०।४८	१०।१३।१७।५६	०। ३।३२।५३	४।२९।३२।१८	८।२३।२७।४१	३। १।१३। ५	९। १।४७।२०	२। १। ७। ६	०।१६।२५।३७	१०।२५।४०।३५	७।५३	१९। ८	५।५१	२२।४५।३१	२
३	४।१६।४८।५२	१०।२५।३३।४३	०। ३।३९।१४	५। १।१३।१०	८।२३।२५।४०	३। २।१७।१९	९। १।४४।५१	२। १। ३।५५	०।१६।२४।४५	१०।२५।३८।५७	७।३१	१९।४०	६।४५	२२।४९।२८	३
४	४।१७।४६।५८	११। ७।४०।३५	०। ३।४४।४६	५। २।५२।४९	८।२३।२३।५१	३। ३।२१।४८	९। १।४२।२७	२। १। ०।४४	०।१६।२३।५०	१०।२५।३७।१९	७। ९	२०। ९	७।३८	२२।५३।२४	४
५	४।१८।४५। ६	११।१९।३९।४०	०। ३।४९।२८	५। ४।३१।१४	८।२३।२२।१३	३। ४।२६।३३	९। १।४०। ८	२। ०।५७।३३	०।१६।२२।५२	१०।२५।३५।४१	६।४७	२०।३९	८।३०	२२।५७।२१	५
६	४।१९।४३।१६	०। १।३२।४९	०। ३।५३।१९	५। ६। ८।२७	८।२३।२०।४६	३। ५।३१।३२	९। १।३७।५४	२। ०।५४।२३	०।१६।२१।५२	१०।२५।३४। ३	६।२४	२१। ९	९।२२	२३। १। ७	६
७	४।२०।४१।२७	०।१३।२२।३९	०। ३।५६।१८	५। ७।४४।३१	८।२३।१९।३०	३। ६।३६।४५	९। १।३५।४५	२। ०।५१।१२	०।१६।२०।४९	१०।२५।३२।२४	६। २	२१।४०	१०।१४	२३। ५।१४	७
८	४।२१।३९।४१	०।२५।११।३८	०। ३।५८।२६	५। ९।१९।२३	८।२३।१८।२६	३। ७।४२।१२	९। १।३३।४१	२। ०।४८। १	०।१६।१९।४३	१०।२५।३०।४५	५।३९	२२।१५	११। ७	२३। ९।११	८
९	४।२२।३७।५६	१। ७। ७। २	०। ३।५९।४१	५।१०।५३। ६	८।२३।१७।३४	३। ८।४७।५४	९। १।३१।४२	२। ०।४४।५०	०।१६।१८।३४	१०।२५।२९। ६	५।१७	२२।५३	१२। २	२३।१३। ७	९
१०	४।२३।३६।१४	१।१९।१०।४३	०। ४। ०। ४	५।१२।२५।३८	८।२३।१६।५३	३। ९।५३।४८	९। १।२९।४९	२। ०।४१।४०	०।१६।१७।२३	१०।२५।२७।२७	४।५४	२३।३६	१२।५७	२३।१७। ४	१०

सितम्बर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।२८, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।२८।३६।२३

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल (व.)	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल (व.)	नेपच्यून (व.)	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	उ. +	उदय	अस्त	[illegible]	
११	४।२४।३४।३४	२। १।२८।५६	०। ३।५९।३४	५।१३।५७। १	८।२३।१६।२३	३।१०।५९।५६	९। १।२८। १	२। ०।३८।२९	०।१६।१६।१०	१०।२५।२५।४७	४।३१	-।-	२३।५४	२३।२२। ०	११
१२	४।२५।३२।५६	२।१४। ६।५६	०। ३।५८।११	५।१५।२७।१६	८।२३।१६। ५	३।११। ६।१६	९। १।२६।१८	२। ०।३५।१८	०।१६।१४।५३	१०।२५।२४। ८	४। १	०।२६	२४।४१	२३।२४।५७	१२
१३	४।२६।३१।११	२।२७। ९।२६	०। ३।५५।५४	५।१६।५६।२०	८।२३।१५।५९	३।१३।१२।४९	९। १।२४।४१	२। ०।३२। ७	०।१६।१३।३५	१०।२५।२२।२१	३।४६	१।२१	१५।४३	२३।२८।५३	१३
१४	४।२७।२९।४५	३।१०।३९।५६	०। ३।५२।४४	५।१८।२४।१६	८।२३।१६। ४	३।१४।११।३५	९। १।२३।१०	२। ०।२८।५७	०।१६।१२।१३	१०।२५।२०।४१	३।२३	२।२२	१६।३३	२३।३२।५०	१४
१५	४।२८।२८।१४	३।२४।३९।४७	०। ३।४८।४०	५।१९।५१। ०	८।२३।१६।२१	३।१५।२६।३२	९। १।२१।४४	२। ०।२५।४६	०।१६।१०।४१	१०।२५।१९।१०	३। ०	३।२७	१७।११	२३।३६।४६	१५
१६	४।२९।२६।४४	४। ९। ७।२२	०। ३।४३।४४	५।२१।१६।३४	८।२३।१६।५०	३।१६।३३।४०	९। १।२०।२३	२। ०।२२।३५	०।१६। ९।२३	१०।२५।१७।३१	२।३६	४।३४	१८। १	२३।४०।४३	१६
१७	५। ०।२५।१६	४।२३।५७।३७	०। ३।३७।५४	५।२२।४०।५६	८।२३।१७।३०	३।१७।४१। ०	९। १।१९। ९	२। ०।१९।२४	०।१६। ७।५४	१०।२५।१५।५२	२।१३	५।४२	१८।४२	२३।४४।४०	१७
१८	५। १।२३।५०	५। ९। २।२५	०। ३।३१।१३	५।२४। ४। ३	८।२३।१८।२२	३।१८।४८।३१	९। १।१८। ०	२। ०।१६।१४	०।१६। ६।२३	१०।२५।१४।१३	१।५०	६।४९	१९।२०	२३।४८।३६	१८
१९	५। २।२२।२६	५।२४।११।३५	०। ३।२३।४१	५।२५।२५।५५	८।२३।१९।२५	३।१९।५६।१२	९। १।१६।५६	२। ०।१३। ३	०।१६। ४।४९	१०।२५।१२।३४	१।२७	७।५७	१९।५९	२३।५२।३३	१९
२०	५। ३।२१। ३	६। ९।१४।४७	०। ३।१५।१९	५।२६।४६।३०	८।२३।२०।४०	३।२१। ४। ४	९। १।१५।५९	२। ०। ९।५२	०।१६। ३।१३	१०।२५।१०।५६	१। ६	९। ४	२०।३९	२३।५६।२९	२०
२१	५। ४।१९।४३	६।२४। ३।१०	०। ३। ६। ७	५।२८। ५।४३	८।२३।२२। ७	३।२२।१२। ६	९। १।१५। ७	२। ०। ६।४१	०।१६। १।३५	१०।२५। ९।१८	०।४०	१०।१२	२१।२२	०। ०।२६	२१
२२	५। ५।१८।२४	७। ८।३०।४८	०। २।५६। ८	५।२९।२३।३४	८।२३।२३।४५	३।२३।२०।१८	९। १।१४।२२	२। ०। ३।३१	०।१५।५९।५५	१०।२५। ७।४०	०।१७	११।१९	२२। ९	०। ४।२२	२२
२३	५। ६।१७। ७	७।२२।३४।५३	०। २।४५।२१	६। ०।३९।५७	८।२३।२५।३५	३।२४।२८।४०	९। १।१३।४२	२। ०। ०।२०	०।१५।५८।१२	१०।२५। ६। ३	-। ६	१२।२४	२३। ०	०। ८।१९	२३
२४	५। ७।१५।५२	८। ६।१५।२५	०। २।३३।५०	६। १।५४।५०	८।२३।२७।३६	३।२५।३७।११	९। १।१३। ८	१।२९।५७। ९	०।१५।५६।२८	१०।२५। ४।२६	०।३०	१३।२६	२३।५५	०।१२।१५	२४
२५	५। ८।१४।३८	८।१९।३४।१६	०। २।२१।३५	६। ३। ८। ६	८।२३।२९।४८	३।२६।४५।५२	९। १।१२।४०	१।२९।५३।५८	०।१५।५४।४१	१०।२५। २।५०	०।५३	१४।२२	-।-	०।१६।१२	२५
२६	५। ९।१३।२६	९। २।३४।१४	०। २। ८।३८	६। ४।१९।४२	८।२३।३२।१२	३।२७।५४।४३	९। १।१२।१८	१।२९।५०।४७	०।१५।५२।५२	१०।२५। १।१४	१।१७	१५।१२	०।५२	०।२०। ८	२६
२७	५।१०।१२।१६	९।१५।१८।२४	०। १।५५। ०	६। ५।२९।३१	८।२३।३४।४७	३।२९। ३।४२	९। १।१२। २	१।२९।४७।३६	०।१५।५१। १	१०।२४।५९।३९	१।४०	१५।५६	१।५१	०।२४। ५	२७
२८	५।११।११। ८	९।२७।४९।३७	०। १।४०।४४	६। ६।३७।२६	८।२३।३७।३४	४। ०।१२।५१	९। १।११।५१	१।२९।४४।२६	०।१५।४९। ८	१०।२४।५८। ४	२। ३	१६।३५	२।४९	०।२८। २	२८
२९	५।१२।१०। १	१०।१०।१०।१८	०। १।२५।५२	६। ७।४३।१९	८।२३।४०।३१	४। १।२२। ९	९। १।११।४७	१।२९।४१।१५	०।१५।४७।१३	१०।२४।५६।३०	२।२७	१७।१०	३।४५	०।३१।५८	२९
३०	५।१३। ८।५५	१०।२२।२२।२२	०। १।१०।२४	६। ८।४७। १	८।२३।४३।३९	४। २।३१।३५	९। १।११।४९	१।२९।३८। ४	०।१५।४५।१७	१०।२४।५४।५७	२।५०	१७।४२	४।४०	०।३५।५५	३०

अक्टूबर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।३१, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।२८।२०।५२

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल (व.)	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल (व.)	नेपच्यून (व.)	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	उ. +	उदय	अस्त	[illegible]	
१	५।१४। ७।५२	११। ४।२७।१८	०। ०।५४।२४	६। ९।४८।२३	८।२३।४६।५९	४। ३।४१।११	९। १।११।५६	१।२९।३४।५३	०।१५।४३।१८	१०।२४।५३।२४	३।१३	१८।१२	५।३३	०।३९।५१	१
२	५।१५। ६।५१	११।१६।२६।१६	०। ०।३७।५४	६।१०।४७।१४	८।२३।५०।२९	४। ४।५०।५५	९। १।१२।१०	१।२९।३१।४२	०।१५।४१।१८	१०।२४।५१।५२	३।३७	१८।४१	६।२५	०।४३।४८	२
३	५।१६। ५।५२	११।२८।२०।२५	०। ०।२०।५५	६।११।४३।२०	८।२३।५४।११	४। ६। ०।४७	९। १।१२।२९	१।२९।२८।३१	०।१५।३९।१६	१०।२४।५०।२१	४। ०	१९।१०	७।१७	०।४७।४४	३
४	५।१७। ४।५५	०।१०।११।१२	०। ०। ३।३१	६।१२।३६।२८	८।२३।५८। ३	४। ७।१०।४८	९। १।१२।५५	१।२९।२५।२०	०।१५।३७।१२	१०।२४।४८।५१	४।२३	१९।४१	८। ९	०।५१।४१	४
५	५।१८। ४। ०	०।२२। ०।३१	११।२९।४५।४३	६।१३।२६।२२	८।२४। २। ५	४। ८।२०।५७	९। १।१३।२६	१।२९।२२। ९	०।१५।३५। ७	१०।२४।४७।२१	४।४६	२०।१४	९। २	०।५५।३७	५
६	५।१९। ३। ८	१। ३।५०।५७	११।२९।२७।३५	६।१४।१२।४४	८।२४। ६।१९	४। ९।३१।१४	९। १।१४। ४	१।२९।१८।५९	०।१५।३३। ०	१०।२४।४५।५२	५। ९	२०।५१	९।५५	०।५९।३४	६
७	५।२०। २।१८	१।१५।४५।५१	११।२९। ९। ९	६।१४।५५।१७	८।२४।१०।४२	४।१०।४१।३९	९। १।१४।४७	१।२९।१५।४८	०।१५।३०।५१	१०।२४।४४।२४	५।३२	२१।३१	१०।५०	१। ३।३१	७
८	५।२१। १।३०	१।२७।४९।१४	११।२८।५०।२८	६।१५।३३।३७	८।२४।१५।१७	४।११।५२।१२	९। १।१५।३६	१।२९।१२।३७	०।१५।२८।४१	१०।२४।४२।५७	५।५५	२२।१७	११।४६	१। ७।२७	८
९	५।२२। ०।४४	२।१०। ५।४०	११।२८।३१।३५	६।१६। ७।२३	८।२४।२०। २	४।१३। २।५३	९। १।१६।३२	१।२९। ९।२६	०।१५।२६।३०	१०।२४।४१।३१	६।१८	२३। ९	१२।४१	१।११।२४	९
१०	५।२३। ०। १	२।२२।४०। ८	११।२८।१२।३२	६।१६।३६। ८	८।२४।२४।५७	४।१४।१३।४१	९। १।१७।३३	१।२९। ६।१६	०।१५।२४।१७	१०।२४।४०। ७	६।४१	-।-	१३।३४	१।१५।२०	१०
११	५।२३।५९।२०	३। ५।३७।२७	११।२७।५३।२३	६।१६।५९।२५	८।२४।३०। २	४।१५।२४।३६	९। १।१८।४०	१।२९। ३। ५	०।१५।२२। ३	१०।२४।३८।४३	७। ३	०। ६	१४।२३	१।१९।१७	११
१२	५।२४।५८।४१	३।१९। १।४८	११।२७।३४।१०	६।१७।१६।४७	८।२४।३५।१८	४।१६।३५।३९	९। १।१९।५३	१।२८।५९।५४	०।१५।१९।४७	१०।२४।३७।२०	७।२६	१। ८	१५।१०	१।२३।१३	१२
१३	५।२५।५८। ५	४। २।५५।४३	११।२७।१४।५७	६।१७।२७।३२	८।२४।४०।४४	४।१७।४६।४९	९। १।२१।१२	१।२८।५६।४३	०।१५।१७।३०	१०।२४।३५।५८	७।४८	२।१२	१५।५२	१।२७।१०	१३
१४	५।२६।५७।३०	४।१७।११। ९	११।२६।५५।४८	६।१७।३१।४१	८।२४।४६।२०	४।१८।५८। ५	९। १।२२।३७	१।२८।५३।३३	०।१५।१५।१२	१०।२४।३४।३७	८।११	३।१८	१६।३२	१।३१। ६	१४
१५	५।२७।५६।५८	५। २। ८।४५	११।२६।३६।४४	६।१७।२८।१४	८।२४।५२। ६	४।२०। ९।२८	९। १।२४। ८	१।२८।५०।२२	०।१५।१२।५३	१०।२४।३३।१८	८।३३	४।२४	१७।११	१।३५। ३	१५
१६	५।२८।५६।२९	५।१७।१७।३१	११।२६।१७।५०	६।१७।१६।५४	८।२४।५८। १	४।२१।२०।५८	९। १।२५।४५	१।२८।४७।११	०।१५।१०।३३	१०।२४।३२। ०	८।५५	५।३२	१७।५०	१।३९। ०	१६

अक्टूबर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।३१, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।२८।२०।५२

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल (व.)	बुध (व.)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल (व.)	नेपच्यून (व.)	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
१७	५।२९।५६। १	६। २।३५।३६	११।२५।५९। ८	६।१६।५७।१७	८।२५। ४। ७	४।२२।३२।३३	९। १।२७।२७	१।२८।४४। ०	०।१५। ८।१२	१०।२४।३०।४३	९।१७	६।४१	१८।३०	१।४२।५६	१७
१८	६। ०।५५।३५	६।१७।५१।४७	११।२५।४०।४२	६।१६।२९। ७	८।२५।१०।२२	४।२३।४४।१५	९। १।२९।१६	१।२८।४०।५०	०।१५। ५।५०	१०।२४।२९।३७	९।३९	७।५०	१९।१२	१।४६।५३	१८
१९	६। १।५५।११	७। २।५५।२८	११।२५।२२।३४	६।१५।५२।१७	८।२५।१६।४७	४।२४।५६। ३	९। १।३१।१०	१।२८।३७।३९	०।१५। ३।२७	१०।२४।२८।१२	१०। १	९। ०	१९।५९	१।५०।४९	१९
२०	६। २।५४।४९	७।१७।३८।२१	११।२५। ४।४८	६।१५। ६।५४	८।२५।२३।२२	४।२६। ७।५६	९। १।३३।११	१।२८।३४।२८	०।१५। १। ३	१०।२४।२६।५९	१०।२२	१०। ९	२०।५०	१।५४।४६	२०
२१	६। ३।५४।२९	८। १।५५।३०	११।२४।४७।२७	६।१४।१३।२३	८।२५।३०। ६	४।२७।१९।५५	९। १।३५।१७	१।२८।३१।१७	०।१४।५८।३९	१०।२४।२५।४८	१०।४४	११।१५	२१।४५	१।५८।४२	२१
२२	६। ४।५४।११	८।१५।४५।१९	११।२४।३०।३२	६।१३।१२।२५	८।२५।३६।५९	४।२८।३२। ०	९। १।३७।२८	१।२८।२८। ७	०।१४।५६।१४	१०।२४।२४।३७	११। ५	१२।१६	२२।४४	२। २।३९	२२
२३	६। ५।५३।५५	८।२९। ८।५५	११।२४।१४। ६	६।१२। ५। ७	८।२५।४४। २	४।२९।४४।१०	९। १।३९।४६	१।२८।२४।५६	०।१४।५३।४८	१०।२४।२३।२९	११।२६	१३। ९	२३।४४	२। ६।३५	२३
२४	६। ६।५३।४०	९।१२। ९। ४	११।२३।५८।१२	६।१०।५२।५९	८।२५।५१।१४	५। ०।५६।२५	९। १।४२। ९	१।२८।२१।४५	०।१४।५१।२२	१०।२४।२२।२१	११।४७	१३।५६	-। -	२।१०।३२	२४
२५	६। ७।५३।२७	९।२४।४९।२५	११।२३।४२।५२	६। ९।३७।४९	८।२५।५८।३४	५। २। ८।४६	९। १।४४।३८	१।२८।१८।३४	०।१४।४८।५५	१०।२४।२१।१५	१२। ८	१४।३७	०।४३	२।१४।२९	२५
२६	६। ८।५३।१५	१०। ७।१३।४८	११।२३।२८। ७	६। ८।२१।४५	८।२६। ६। ४	५। ३।२१।११	९। १।४७।१२	१।२८।१५।२३	०।१४।४६।२८	१०।२४।२०।११	१२।२८	१५।१२	१।४०	२।१८।२५	२६
२७	६। ९।५३। ५	१०।१९।२५।५५	११।२३।१४। ०	६। ७। ९। ३	८।२६।१३।४२	५। ४।३३।४२	९। १।४९।५२	१।२८।१२।१३	०।१४।४४। ०	१०।२४।१९। ८	१२।४९	१५।४५	२।३५	२।२२।२२	२७
२८	६।१०।५२।५७	११। १।२९। ७	११।२३। ०।३१	६। ५।५६। ४	८।२६।२१।२९	५। ५।४६।१८	९। १।५२।३७	१।२८। ९। ३	०।१४।४१।३२	१०।२४।१८। ७	१३। ९	१६।१५	३।२९	२।२६।१८	२८
२९	६।११।५२।५१	११।१३।२६।१०	११।२२।४७।४२	६। ४।५०।५९	८।२६।२९।२५	५। ६।५८।५९	९। १।५५।२८	१।२८। ५।५२	०।१४।३९। ४	१०।२४।१७। ७	१३।२९	१६।४४	४।२१	२।३०।१५	२९
३०	६।१२।५२।४६	११।२५।१९।२१	११।२२।३५।३५	६। ३।५३।४४	८।२६।३७।२८	५। ८।११।४४	९। १।५८।२४	१।२८। २।४१	०।१४।३६।३६	१०।२४।१६। ९	१३।४९	१७।१३	५।१२	२।३४।११	३०
३१	६।१३।५२।४२	०। ७।१०।३२	११।२२।२४।११	६। ३। ५।५५	८।२६।४५।४१	५। ९।२४।३५	९। २। १।२६	१।२७।५९।३०	०।१४।३४। ८	१०।२४।१५।१३	१४। ८	१७।४३	६। ४	२।३८। ८	३१

नवम्बर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।३५, वेंकटेश (प्लूटो) ८।२८।३१।४६

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल (व.)	बुध (व.)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल (व.)	नेपच्यून (व.)	क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	६।१४।५२।४१	०।१९। १।२२	११।२२।१३।३०	६। २।२८।४२	८।२६।५४। १	५।१०।३७।३०	९। २। ४।३३	१।२७।५६।२०	०।१४।३१।३९	१०।२४।१४।१८	१४।२७	१८।१५	६।५७	२।४२। ४	१
२	६।१५।५२।४२	१। ०।५३।३३	११।२२। ३।३३	६। २। २।४७	८।२७। २।३०	५।११।५०।३०	९। २। ७।४६	१।२७।५३। १	०।१४।२९।११	१०।२४।१३।२५	१४।४६	१८।५०	७।५०	२।४६। १	२
३	६।१६।५२।४५	१।१२।४९। १	११।२१।५४।२३	६। १।४८।२९	८।२७।११। ७	५।१३। ३।३५	९। २।११। ३	१।२७।४९।५८	०।१४।२६।४३	१०।२४।१२।३३	१५। ५	१९।३०	८।४५	२।४९।५८	३
४	६।१७।५२।५०	१।२४।५०। ४	११।२१।४५।५८	६। १।४५।४१	८।२७।१९।५१	५।१४।१६।४४	९। २।१४।२६	१।२७।४६।४८	०।१४।२४।१५	१०।२४।११।४३	१५।२४	२०।१४	९।४१	२।५३।५४	४
५	६।१८।५२।५७	२। ६।५९।३०	११।२१।३८।२०	६। १।५४। २	८।२७।२८।४४	५।१५।२९।५७	९। २।१७।५४	१।२७।४३।३७	०।१४।२१।४७	१०।२४।१०।५५	१५।४२	२१। ३	१०।३६	२।५७।५१	५
६	६।१९।५३। ७	२।१९।२०।३४	११।२१।३१।२९	६। २।१२।५५	८।२७।३७।४४	५।१६।४३।१५	९। २।२१।२७	१।२७।४०।२६	०।१४।१९।१९	१०।२४।१०। ९	१६। ०	२१।५८	११।२९	३। १।४७	६
७	६।२०।५३।१८	३। १।५६।५८	११।२१।२५।२५	६। २।४१।३४	८।२७।४६।५२	५।१७।५६।३७	९। २।२५। ५	१।२७।३७।१५	०।१४।१६।५२	१०।२४। ९।२५	१६।१८	२२।५६	१२।१९	३। ५।४४	७
८	६।२१।५३।३१	३।१४।५२।३१	११।२१।२०। ९	६। ३।१९।१०	८।२७।५६। ७	५।१९।१०। ३	९। २।२८।४९	१।२७।३४। ४	०।१४।१४।२५	१०।२४। ८।४२	१६।३८	२३।५७	१३। ५	३। ९।४०	८
९	६।२२।५३।४६	३।२८।१०।४५	११।२१।१५।४२	६। ४। ४।४८	८।२८। ५।३१	५।२०।२३।३३	९। २।३२।३७	१।२७।३०।५४	०।१४।११।५८	१०।२४। ८। १	१६।५३	-। -	१३।४७	३।१३।३७	९
१०	६।२३।५४। ३	४।११।५४।२१	११।२१।१२। २	६। ४।५७।३५	८।२८।१५। १	५।२१।३७। ७	९। २।३६।३०	१।२७।२७।४३	०।१४। ९।३२	१०।२४। ७।२२	१७।१०	१। ०	१४।२६	३।१७।३३	१०
११	६।२४।५४।२३	४।२६। ४।१६	११।२१। ९।११	६। ५।५६।४१	८।२८।२४।३९	५।२२।५०।४५	९। २।४०।२८	१।२७।२४।३२	०।१४। ७। ७	१०।२४। ६।४५	१७।२७	२। ४	१५। ४	३।२१।३०	११
१२	६।२५।५४।४४	५।१०।३९। ०	११।२१। ७। ८	६। ७। १।१७	८।२८।३४।२४	५।२४। ४।२७	९। २।४४।३१	१।२७।२१।२१	०।१४। ४।४२	१०।२४। ६।१०	१७।४३	३। ९	१५।४१	३।२५।२७	१२
१३	६।२६।५५। ७	५।२५।३४। ६	११।२१। ५।५४	६। ८।१०।३९	८।२८।४४।१६	५।२५।१८।११	९। २।४८।३९	१।२७।१८।११	०।१४। २।१८	१०।२४। ५।३६	१७।५९	४।१६	१६।१९	३।२९।२३	१३
१४	६।२७।५५।३१	६।१०।४२।१४	११।२१। ५।२९	६। ९।२४। ८	८।२८।५४।१५	५।२६।३२। ०	९। २।५२।५२	१।२७।१५। ०	०।१३।५९।५५	१०।२४। ५। ५	१८।१५	५।२४	१७। ०	३।३३।२०	१४
१५	६।२८।५५।५८	६।२५।५४। ०	११।२१। ५।५२	६।१०।४१। ६	८।२९। ४।२१	५।२७।४५।५१	९। २।५७।१०	१।२७।११।४९	०।१३।५७।३२	१०।२४। ४।३५	१८।३०	६।३४	१७।४५	३।३७।१६	१५
१६	६।२९।५६।२६	७।१०।५९।१७	११।२१। ७। २	६।१२। १। ३	८।२९।१४।३४	५।२८।५९।४६	९। ३। १।३२	१।२७। ८।३८	०।१३।५५।११	१०।२४। ४। ८	१८।४५	७।४५	१८।३४	३।४१।१३	१६
१७	७। ०।५६।५६	७।२५।४८।५८	११।२१। ९। १	६।१३।२३।३१	८।२९।२४।५४	६। ०।१३।४४	९। ३। ५।५९	१।२७। ५।२८	०।१३।५२।५१	१०।२४। ३।४२	१९। ०	८।५५	१९।२९	३।४५। ९	१७
१८	७। १।५७।२७	८।१०।१६।११	११।२१।११।४७	६।१४।४८। ६	८।२९।३५।२०	६। १।२७।४४	९। ३।१०।३०	१।२७। २।१७	०।१३।५०।३१	१०।२४। ३।१९	१९।१५	१०। ०	२०।२८	३।४९। ६	१८
१९	७। २।५८। ०	८।२४।१७। २	११।२१।१५।२०	६।१६।१४।२६	८।२९।४५।५३	६। २।४१।४८	९। ३।१५। ६	१।२६।५९। ६	०।१३।४८।१३	१०।२४। २।५७	१९।२९	१०।५९	२१।३०	३।५३। २	१९
२०	७। ३।५८।३४	९। ७।५०।३२	११।२१।१९।४०	६।१७।४२।१५	८।२९।५६।३२	६। ३।५५।५३	९। ३।१९।४६	१।२६।५५।५५	०।१३।४५।५६	१०।२४। २।३७	१९।४२	११।५९	२२।३२	३।५६।५९	२०
२१	७। ४।५९। ९	९।२०।५८। ०	११।२१।२४।४५	६।१९।११।१६	९। ०। ७।१७	६। ५।१०। २	९। ३।२४।३१	१।२६।५२।४५	०।१३।४३।४०	१०।२४। २।२०	१९।५६	१२।३५	२३।३१	४। ०।५६	२१

नवम्बर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।३५, वेंकटेश (प्लूटो) ८।२८।३१।४६

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल (व.)	नेपच्यून (व.)	संक्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा. काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि १२ बजे	
२२	७। ५।५९।४५	१०। ३।४२।२३	११।२१।३०।३५	६।२०।४१।१७	९। ०।१८। ९	६। ६।२४।१३	९। ३।२९।२०	१।२६।४९।३४	०।१३।४१।२५	१०।२४। २। ४	२०। ९	१३।१३	-। -	४। ४।५२	२२
२३	७। ७। ०।२३	१०।१६। ७।३२	११।२१।३७। ९	६।२२।१२। ७	९। ०।२९। ७	६। ७।३८।२६	९। ३।३४।१३	१।२६।४६।२३	०।१३।३९।१२	१०।२४। १।५९	२०।२२	१३।४७	०।२९	४। ८।४९	२३
२४	७। ८। १। २	१०।२८।१७।४७	११।२१।४४।२७	६।२३।४३।३६	९। ०।४०।१०	६। ८।५२।४२	९। ३।३९।१०	१।२६।४३।१२	०।१३।३७। ०	१०।२४। १।३९	२०।३४	१४।२८	१।२३	४।१२।४५	२४
२५	७। ९। १।४२	११।१०।१७।२७	११।२१।५२।२७	६।२५।१५।३७	९। ०।५१।११	६।१०। ७। ०	९। ३।४४।१२	१।२६।४०। १	०।१३।३४।५०	१०।२४। १।३०	२०।४६	१४।४९	२।१६	४।१६।४२	२५
२६	७।१०। २।२३	११।२२।१०।३७	११।२२। १। ९	६।२६।४८। ३	९। १। २।३५	६।११।२१।२१	९। ३।४९।१७	१।२६।३६।५०	०।१३।३२।४१	१०।२४। १।२२	२०।५७	१५।१६	३। ८	४।२०।३८	२६
२७	७।११। ३। ५	०। ४। ०।५५	११।२२।१०।३२	६।२८।२०।४९	९। १।१३।५५	६।१२।३५।४४	९। ३।५४।२७	१।२६।३३।४०	०।१३।३०।३४	१०।२४। १।१७	२१। ८	१५।४५	३।५९	४।२४।३५	२७
२८	७।१२। ३।४८	०।१५।५१।२४	११।२२।२०।३५	६।२९।५३।५०	९। १।२५।२१	६।१३।५०। ९	९। ३।५९।४०	१।२६।३०।२९	०।१३।२८।२९	१०।२४। १।१४	२१।१९	१६।१७	४।५१	४।२८।३२	२८
२९	७।१३। ४।३२	०।२७।४४।४२	११।२२।३१।१७	७। १।२७। ३	९। १।३६।५३	६।१५। ४।३६	९। ४। ४।५७	१।२६।२७।१८	०।१३।२६।२५	१०।२४। १।१२	२१।२९	१६।५१	५।४५	४।३२।२८	२९
३०	७।१४। ५।१८	१। ९।४२।५६	११।२२।४२।३८	७। ३। ०।२४	९। १।४८।३०	६।१६।१९। ५	९। ४।१०।१९	१।२६।२४। ७	०।१३।२४।२३	१०।२४। १।१३	२१।३९	१७।२९	६।३९	४।३६।२५	३०

दिसम्बर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।३९, वेंकटेश (प्लूटो) ८।२९।०७।२६

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल (व.)	नेपच्यून (व.)	संक्रांति	चन्द्रोदय	चन्द्रास्त	सांपा. काल	तारीख
१	७।१५। ६। ४	१।२१।४७।५९	११।२२।५४।३६	७। ४।३३।५३	९। २। ०।१२	६।१७।३३।३७	९। ४।१५।४३	१।२६।२०।५७	०।१३।२२।२२	१०।२४। १।१६	२१।४९	१८।११	७।३५	४।४०।२२	१
२	७।१६। ६।५२	२। ४। १।२८	११।२३। ७।११	७। ६। ७।२६	९। २।११। ०	६।१८।४८।१०	९। ४।२१।१२	१।२६।१७।४६	०।१३।२०।२४	१०।२४। १।२१	२१।५८	१९। ०	८।३१	४।४४।१८	२
३	७।१७। ७।४२	२।१६।२४।५८	११।२३।२०।२२	७। ७।४१। ३	९। २।२३।५२	६।२०। २।४६	९। ४।२६।४४	१।२६।१४।३५	०।१३।१८।२७	१०।२४। १।२८	२२। ७	१९।५३	९।२५	४।४८।१४	३
४	७।१८। ८।३२	२।२९। ०। ७	११।२३।३४। ८	७। ९।१४।४२	९। २।३५।५०	६।२१।१७।२३	९। ४।३२।२०	१।२६।११।२४	०।१३।१६।३३	१०।२४। १।३७	२२।१५	२०।५०	१०।१६	४।५२।११	४
५	७।१९। ९।२४	३।११।४८।३८	११।२३।४८।२९	७।१०।४८।२३	९। २।४७।५२	६।२२।३२। ३	९। ४।३७।५९	१।२६। ८।१४	०।१३।१४।४०	१०।२४। १।४८	२२।२३	२१।५०	११। ३	४।५६। ७	५
६	७।२०।१०।१७	३।२४।५२।२१	११।२४। ३।२३	७।१२।२२। ६	९। २।५९।५९	६।२३।४६।४४	९। ४।४३।४२	१।२६। ५। ३	०।१३।१२।४९	१०।२४। २। २	२२।३०	२२।५१	११।४६	५। ०। ४	६
७	७।२१।११।११	४। ८।१३। १	११।२४।१८।५०	७।१३।५५।५०	९। ३।१२।११	६।२५। १।२८	९। ४।४९।२८	१।२६। १।५२	०।१३।११। १	१०।२४। २।१७	२२।३७	२३।५३	१२।२६	५। ४। ०	७
८	७।२२।१२। ७	४।२१।५१।५९	११।२४।३४।४९	७।१५।२९।३६	९। ३।२४।२८	६।२६।१६।१३	९। ४।५५।१७	१।२५।५८।४१	०।१३। ९।१४	१०।२४। २।३४	२२।४३	-। -	१३। २	५। ७।५७	८
९	७।२३।१३। ४	५। ५।४९।५२	११।२४।५१।२०	७।१७। ३।२४	९। ३।३६।४९	६।२७।३१। ०	९। ५। १।१०	१।२५।५५।३१	०।१३। ७।३०	१०।२४। २।५४	२२।४९	०।५६	१३।३८	५।११।५४	९
१०	७।२४।१४। २	५।२०। ६। ०	११।२५। ८।२२	७।१८।३७।१४	९। ३।४९।१४	६।२८।४५।४८	९। ५। ७। ६	१।२५।५२।२०	०।१३। ५।४८	१०।२४। ३।१५	२२।५५	१।५९	१४।१४	५।१५।५०	१०
११	७।२५।१५। २	६। ४।३८। ८	११।२५।२५।५५	७।२०।११। ५	९। ४। १।४४	७। ०। ०।३८	९। ५।१३। ५	१।२५।४९। ९	०।१३। ४। ८	१०।२४। ३।३९	२३। ०	३। ४	१४।५२	५।१९।४७	११
१२	७।२६।१६। २	६।१९।२२। ७	११।२५।४३।५७	७।२१।४५। ०	९। ४।१४।१९	७। १।१५।२९	९। ५।१९। ७	१।२५।४५।५८	०।१३। २।३१	१०।२४। ४। ५	२३। ५	४।११	१५।३३	५।२३।४३	१२
१३	७।२७।१७। ४	७। ४।११। १	११।२६। २।२८	७।२३।१८।५९	९। ४।२६।५७	७। २।३०।२२	९। ५।२५।१२	१।२५।४२।४८	०।१३। ०।५६	१०।२४। ४।३२	२३। ९	५।२०	१६।१९	५।२७।४०	१३
१४	७।२८।१८। ६	७।१९। ०।३९	११।२६।२१।२८	७।२४।५३। २	९। ४।३९।४०	७। ३।४५।१६	९। ५।३१।२०	१।२५।३९।३७	०।१२।५९।२३	१०।२४। ५। २	२३।१३	६।३०	१७।११	५।३१।३६	१४
१५	७।२९।१९। ९	८। ३।४०।२९	११।२६।४०।५६	७।२६।२७।११	९। ४।५२।२६	७। ५। ०।११	९। ५।३७।३१	१।२५।३६।२६	०।१२।५७।५३	१०।२४। ५।३४	२३।१६	७।३८	१८। ८	५।३५।३३	१५
१६	८। ०।२०।१३	८।१८। ४।४०	११।२७। ०।५२	७।२८। १।२६	९। ५। ५।१७	७। ६।१५। ८	९। ५।४३।४५	१।२५।३३।१५	०।१२।५६।२६	१०।२४। ६। ८	२३।१९	८।४२	१९।१०	५।३९।२९	१६
१७	८। १।२१।१८	९। २। ७।५७	११।२७।२१।१४	७।२९।३५।४७	९। ५।१८।११	७। ७।३०। ५	९। ५।५०। १	१।२५।३०। ५	०।१२।५५। १	१०।२४। ६।४४	२३।२१	९।३९	२०।१४	५।४३।२६	१७
१८	८। २।२२।२३	९।१५।४७।१५	११।२७।४२। २	८। १।१०।१७	९। ५।३१। ९	७। ८।४५। ३	९। ५।५६।२१	१।२५।२६।५४	०।१२।५३।३८	१०।२४। ७।२२	२३।२३	१०।२७	२१।१६	५।४७।२३	१८
१९	८। ३।२३।२९	९।२९। १।४३	११।२८। ३।१५	८। २।४४।५५	९। ५।४४।११	७।१०। ०। २	९। ६। २।४२	१।२५।२३।४३	०।१२।५२।१९	१०।२४। ८। ३	२३।२५	११। ९	२२।१६	५।५१।१९	१९
२०	८। ४।२४।३५	१०।११।५२।२९	११।२८।२४।५३	८। ४।१९।४२	९। ५।५७।१६	७।११।१५। २	९। ६। ९। ७	१।२५।२०।३२	०।१२।५१। २	१०।२४। ८।४५	२३।२६	११।४५	२३।१३	५।५५।१६	२०
२१	८। ५।२५।४१	१०।२४।२२।१८	११।२८।४६।५६	८। ५।५४।४०	९। ६।१०।२५	७।१२।३०। ३	९। ६।१५।३३	१।२५।१७।२१	०।१२।४९।४७	१०।२४। ९।२९	२३।२६	१२।१८	-। -	५।५९।१२	२१
२२	८। ६।२६।४७	११। ६।३५। ४	११।२९। ९।२१	८। ७।२९।४९	९। ६।२३।३६	७।१३।४५। ४	९। ६।२२। २	१।२५।१४।१०	०।१२।४८।३५	१०।२४।१०।१५	२३।२६	१२।४८	०। ८	६। ३। ९	२२
२३	८। ७।२७।५४	११।१८।३५।१७	११।२९।३२। ९	८। ९। ५।१०	९। ६।३६।५१	७।१५। ०। ६	९। ६।२८।३४	१।२५।११। ०	०।१२।४७।२७	१०।२४।११। ३	२३।२६	१३।१७	१। ०	६। ७। ५	२३
२४	८। ८।२९। १	०। ०।२७।४७	११।२९।५५।२०	८।१०।४०।४५	९। ६।५०।१०	७।१६।१५। ९	९। ६।३५। ७	१।२५। ७।४९	०।१२।४६।२०	१०।२४।११।५४	२३।२५	१३।४७	१।५२	६।११। २	२४
२५	८। ९।३०। ७	०।१२।१७।१८	०। ०।१८।५१	८।१२।१६।३२	९। ७। ३।३१	७।१७।३०।१२	९। ६।४१।४३	१।२५। ४।३७	०।१२।४५।१७	१०।२४।१२।४६	२३।२४	१४।१७	२।४४	६।१४।५८	२५
२६	८।१०।३१।१४	०।२४। ८।१३	०। ०।४२।४४	८।१३।५२।३४	९। ७।१६।५५	७।१८।४५।१६	९। ६।४८।२१	१।२५। १।२६	०।१२।४४।१७	१०।२४।१३।४०	२३।२२	१४।५०	३।३७	६।१८।५५	२६
२७	८।११।३२।२२	१। ६। ४।२९	०। १। ६।५६	८।१५।२८।५१	९। ७।३०।२२	७।२०। ०।२१	९। ६।५५। १	१।२४।५८।१५	०।१२।४३।१९	१०।२४।१४।३६	२३।१९	१५।२६	४।३१	६।२२।५२	२७

दिसम्बर सन् २०२० ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।३९, वेंकटेश (प्लूटो) ८।२१।०७।२६

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल (व.)	नेपच्यून	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि २ बजे	
२८	८।१२।३३।२९	१।१८। १।२३	०। १।३१।२९	८।१७। ५।२३	९। ७।४३।५१	७।२१।१५।२६	९। ७। १।४२	१।२४।५५। ४	०।१३।४२।२४	१०।२४।१५।३४	२३।१७	१६। ७	५।२७	६।२६।४८	२८
२९	८।१३।३४।३६	२। ०।२५।२९	०। १।५६।२०	८।१८।४२।१०	९। ७।५७।२४	७।२२।३०।३२	९। ७। ८।२६	१।२४।५१।५४	०।१३।४१।३२	१०।२४।१६।३४	२३।१३	१६।५४	६।२३	६।३०।४५	२९
३०	८।१४।३५।४४	२।१२।५४।३५	०। २।२१।३०	८।२०।१९।१३	९। ८।१०।५९	७।२३।४५।३८	९। ७।१५।११	१।२४।४८।४३	०।१३।४०।४३	१०।२४।१७।३६	२३।१०	१७।४३	७।१९	६।३४।४२	३०
३१	८।१५।३६।५१	२।२५।३७।३६	०। २।४६।५८	८।२१।५६।३१	९। ८।२४।३६	७।२५। ०।४५	९। ७।२१।५९	१।२४।४५।३२	०।१३।३९।५७	१०।२४।१८।३९	२३। ५	१८।३४	८।१२	६।३८।३८	३१
जनवरी सन् २०२१ ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २४।०८।४५, वेंकटेश (प्लूटो) ९।००।०२।३२															
१	८।१६।३७।५९	३। ८।३४।४६	०। ३।१२।४४	८।२३।३४। ३	९। ८।३८।१६	७।२६।१५।५३	९। ७।२८।४८	१।२४।४२।२१	०।१३।३९।१४	१०।२४।१९।४५	२३। १	१९।२४	९। १	६।४२।३४	१
२	८।१७।३९। ८	३।२१।४५।४१	०। ३।३८।४६	८।२५।११।५०	९। ८।५१।५९	७।२७।३१। १	९। ७।३५।३८	१।२४।३९।११	०।१३।३८।३४	१०।२४।२०।५२	२२।५६	२०।२६	९।४६	६।४६।३१	२
३	८।१८।४०।१६	४। ५। १।३७	०। ४। ५। ५	८।२६।४९।५१	९। ९। ५।४३	७।२८।४६।१०	९। ७।४२।३०	१।२४।३६। ०	०।१३।३७।५७	१०।२४।२२। २	२२।५०	२१।२८	१०।२७	६।५०।२८	३
४	८।१९।४१।२५	४।१८।४५।३६	०। ४।३१।४१	८।२८।२८। २	९। ९।१९।३०	८। ०। १।१९	९। ७।४९।२४	१।२४।३२।४९	०।१३।३७।२३	१०।२४।२३।१३	२२।४४	२२।२९	११। ४	६।५४।२४	४
५	८।२०।४२।३४	५। २।३२।३६	०। ४।५८।३२	९। ०। ६।२४	९। ९।३३।१९	८। १।१६।२९	९। ७।५६।१९	१।२४।२९।३८	०।१३।३६।५२	१०।२४।२४।२५	२२।३८	२३।५१	११।४०	६।५८।२१	५
६	८।२१।४३।४३	५।१६।२९।३३	०। ५।२५।३९	९। १।४४।५२	९। ९।४७।१०	८। २।३१।४०	९। ८। ३।१५	१।२४।२६।२८	०।१३।३६।२४	१०।२४।२५।४०	२२।३१	-।-	१२।१५	७। २।१७	६
७	८।२२।४४।५२	६। ०।३५।१६	०। ५।५३। १	९। ३।२३।२४	९।१०। १। ३	८। ३।४६।५१	९। ८।१०।१३	१।२४।२३।१७	०।१३।३५।५९	१०।२४।२६।५६	२२।२३	०।५३	१२।५०	७। ६।१४	७
८	८।२३।४६। २	६।१४।४८।२०	०। ६।२०।३८	९। ५। १।५५	९।१०।१४।५८	८। ५। २। ३	९। ८।१७।१२	१।२४।२०। ६	०।१३।३५।३८	१०।२४।२८।१४	२२।१६	१।५७	१३।२९	७।१०।१०	८
९	८।२४।४७।११	६।२९। ६।४९	०। ६।४८।३०	९। ६।४०।२१	९।१०।२८।५५	८। ६।१७।१५	९। ८।२४।१२	१।२४।१६।५५	०।१३।३५।१९	१०।२४।२९।३४	२२। ७	३। ३	१४।११	७।१४। ७	९
१०	८।२५।४८।२१	७।१३।२८। २	०। ७।१६।३६	९। ८।१८।३५	९।१०।४२।५३	८। ७।३२।२७	९। ८।३१।१३	१।२४।१३।४५	०।१३।३५। ३	१०।२४।३०।५६	२१।५९	४।११	१४।५९	७।१८। ३	१०
११	८।२६।४९।३०	७।२७।४८।२८	०। ७।४४।५५	९। ९।५६।२९	९।१०।५६।५४	८। ८।४७।४०	९। ८।३८।१५	१।२४।१०।३४	०।१३।३४।५१	१०।२४।३२।१९	२१।५०	५।१९	१५।५२	७।२२। ०	११
१२	८।२७।५०।४०	८।१२। ३।४७	०। ८।१३।२९	९।११।३३।५५	९।११।१०।५५	८।१०। २।५३	९। ८।४५।१८	१।२४। ७।२३	०।१३।३४।४२	१०।२४।३३।४४	२१।४०	६।२४	१६।५२	७।२५।५७	१२
१३	८।२८।५१।४९	८।२६। ९।१६	०। ८।४२।१६	९।१३।१०।४२	९।११।२४।५९	८।११।१८। ६	९। ८।५२।२२	१।२४। ४।१२	०।१३।३४।३६	१०।२४।३५।११	२१।३०	७।२३	१७।५४	७।२९।५३	१३
१४	८।२९।५२।५८	९।१०। ०।२६	०। ९।११।१६	९।१४।४६।३७	९।११।३९। ३	८।१२।३३।१९	९। ८।५९।२७	१।२४। १। २	०।१३।३४।३३	१०।२४।३६।४०	२१।२०	८।१६	१८।५८	७।३३।५०	१४
१५	९। ०।५४। ६	९।२३।३३।३७	०। ९।४०।२९	९।१६।२१।२४	९।११।५३। ९	८।१३।४८।३२	९। ९। ६।३२	१।२३।५७।५१	०।१३।३४।३३	१०।२४।३८।१०	२१। ९	९। १	२०। ०	७।३७।४६	१५
१६	९। १।५५।१४	१०। ६।४६।३४	०।१०। ९।५४	९।१७।५४।४७	९।१२। ७।१७	८।१५। ३।४५	९। ९।१३।३९	१।२३।५४।४०	०।१३।३४।३६	१०।२४।३९।४२	२०।५८	९।४२	२१। ०	७।४१।४३	१६
१७	९। २।५६।२२	१०।१९।३८।४०	०।१०।३९।३१	९।१९।२६।२४	९।१२।२१।२५	८।१६।१८।५९	९। ९।२०।४५	१।२३।५१।२९	०।१३।३४।४३	१०।२४।४१।१४	२०।४६	१०।१५	२१।५६	७।४५।३९	१७
१८	९। ३।५७।२८	११। २।१०।५८	०।११। ९।२०	९।२०।५५।५२	९।१२।३५।३४	८।१७।३४।१२	९। ९।२७।५३	१।२३।४८।१९	०।१३।३४।५३	१०।२४।४२।४९	२०।३४	१०।४७	२२।५०	७।४९।३६	१८
१९	९। ४।५८।३४	११।१४।२६। ६	०।११।३९।२०	९।२२।२२।४४	९।१२।४९।४४	८।१८।४९।२५	९। ९।३५। ०	१।२३।४५। ८	०।१३।३५। ५	१०।२४।४४।२५	२०।२२	११।१७	२३।४३	७।५३।३२	१९
२०	९। ५।५९।३९	११।२६।२७।४९	०।१२। ९।३१	९।२३।४६।२९	९।१३। ३।५५	८।२०। ४।३८	९। ९।४२। ८	१।२३।४१।५७	०।१३।३५।२२	१०।२४।४६। ३	२०। ९	११।४६	-।-	७।५७।२९	२०
२१	९। ७। ०।४३	०। ८।२०।४७	०।१२।३९।५२	९।२५। ६।३१	९।१३।१८। ७	८।२१।१९।५०	९। ९।४९।१६	१।२३।३८।४६	०।१३।३५।४१	१०।२४।४७।४२	१९।५६	१२।१६	०।३५	८। १।२६	२१
२२	९। ८। १।४६	०।२०।१०। ४	०।१३।१०।२४	९।२६।२२।१२	९।१३।३२।२०	८।२२।३५। ३	९। ९।५६।२४	१।२३।३५।३६	०।१३।३६। ३	१०।२४।४९।२३	१९।४३	१२।४८	१।२७	८। ५।२२	२२
२३	९। ९। २।४८	१। २। ०।५६	०।१३।४१। ६	९।२७।३२।५०	९।१३।४६।३३	८।२३।५०।१५	९।१०। ३।३३	१।२३।३२।२५	०।१३।३६।२९	१०।२४।५१। ५	१९।२९	१३।२२	२।२१	८। ९।१९	२३
२४	९।१०। ३।४९	१।१३।५८।२९	०।१४।११।५८	९।२८।३७।३१	९।१४। ०।४६	८।२५। ५।२७	९।१०।१०।४२	१।२३।२९।१४	०।१३।३६।५७	१०।२४।५२।४८	१९।१५	१४। १	३।१५	८।१३।१५	२४
२५	९।११। ४।४९	१।२६। ७।२०	०।१४।४२।५९	९।२९।३५।४९	९।१४।१५। ०	८।२६।२०।३९	९।१०।१७।५१	१।२३।२६। ३	०।१३।३७।२९	१०।२४।५४।३३	१९। ०	१४।४६	४।११	८।१७।१२	२५
२६	९।१२। ५।४८	२। ८।३१।२२	०।१५।१४। ९	१०। ०।२६।३०	९।१४।२९।१४	८।२७।३५।५१	९।१०।२४।५९	१।२३।२२।५३	०।१३।३८। ४	१०।२४।५६।१९	१८।४५	१५।३६	५। ८	८।२१। ८	२६
२७	९।१३। ६।४६	२।२१।१३।२४	०।१५।४५।२८	१०। १। ८।५३	९।१४।४३।२९	८।२८।५१। ३	९।१०।३२। ८	१।२३।१९।४२	०।१३।३८।४२	१०।२४।५८। ६	१८।३०	१६।३२	६। ३	८।२५। ५	२७
२८	९।१४। ७।४४	३। ४।१४।४७	०।१६।१६।५५	१०। १।४२। ६	९।१४।५७।४४	९। ०। ६।१४	९।१०।३९।१६	१।२३।१६।३१	०।१३।३९।२४	१०।२४।५९।५५	१८।१४	१७।३३	६।५४	८।२९। १	२८
२९	९।१५। ८।४०	३।१७।३५।१९	०।१६।४८।३१	१०। २। ५।२७	९।१५।११।५९	९। १।२१।२६	९।१०।४६।२४	१।२३।१३।२०	०।१३।४०। ८	१०।२५। १।४५	१७।५८	१८।३६	७।४२	८।३२।५८	२९
३०	९।१६। ९।३५	४। १।१३। ९	०।१७।२०।१५	१०। २।१८।१५	९।१५।२६।१४	९। २।३६।३७	९।१०।५३।३२	१।२३।१०। ९	०।१३।४०।५५	१०।२५। ३।३६	१७।४२	१९।३९	८।२५	८।३६।५५	३०
३१	९।१७।१०।३०	४।१५। ५। ८	०।१७।५२। ७	१०। २।२०। ४	९।१५।४०।२९	९। ३।५१।४८	९।११। ०।३९	१।२३। ६।५८	०।१३।४१।४६	१०।२५। ५।२९	१७।२६	२०।४२	९। ४	८।४०।५१	३१

फरवरी सन् २०२१ ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।५०, वेंकटेश (प्लूटो) ९।०१।०३।४७

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (व.)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त)		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि ? बजे	
१	९।१८।११।२३	४।२९।७।१७	०।१८।२४।६	१०।२।१०।३८	९।१५।५४।४३	९।५।६।५९	९।११।७।४६	१।२३।३।४८	०।१२।४२।३९	१०।२५।७।२२	१७।९	२२।४५	९।४२	८।४४।४८	१
२	९।१९।१२।१५	५।१३।१५।२७	०।१८।५६।१३	१०।२।१४।५८	९।१६।८।५८	९।६।२२।१०	९।११।१४।५२	१।२३।०।३७	०।१२।४३।३५	१०।२५।९।१७	१६।५२	२२।४८	१०।१७	८।४८।४४	२
३	९।२०।१३।७	५।२७।२५।५३	०।१९।२८।२७	१०।२।१८।२५	९।१६।२३।१३	९।७।३७।२०	९।११।२१।५८	१।२२।५७।२६	०।१२।४४।३५	१०।२५।११।१३	१६।३४	२३।५१	१०।५२	८।५२।४२	३
४	९।२१।१४।९	६।११।३५।४०	०।२०।०।४९	१०।०।३६।३९	९।१६।३७।२७	९।८।५२।३१	९।११।२९।३	१।२२।५४।१५	०।१२।४५।३८	१०।२५।१३।९	१६।१६	-।-	११।२९	८।५६।३७	४
५	९।२२।१४।५०	६।२५।४२।५२	०।२०।३३।१८	९।२९।४५।४४	९।१६।५१।४१	९।१०।७।४२	९।११।३६।७	१।२२।५१।५	०।१२।४६।४३	१०।२५।१५।८	१५।५८	०।५६	१२।१	९।०।३४	५
६	९।२३।१५।३९	७।९।४६।२१	०।२१।५।५३	९।२८।४७।३	९।१७।५।५४	९।११।२२।५२	९।११।४३।१०	१।२२।४७।५४	०।१२।४७।५२	१०।२५।१७।७	१५।४०	२।१	१२।५४	९।४।३०	६
७	९।२४।१६।२८	७।२३।४५।२०	०।२१।३८।३६	९।२७।४२।१६	९।१७।२०।७	९।१२।३८।२	९।११।५०।१३	१।२२।४४।४३	०।१२।४९।३	१०।२५।१९।७	१५।२२	३।७	१३।४४	९।८।२७	७
८	९।२५।१७।१६	८।७।३९।१	०।२२।११।२५	९।२६।३३।१५	९।१७।३४।२०	९।१३।५३।१३	९।११।५७।१५	१।२२।४१।३२	०।१२।५०।१८	१०।२५।२१।८	१५।३	४।१२	१४।४०	९।१२।२४	८
९	९।२६।१८।२	८।२१।२६।१२	०।२२।४४।२१	९।२५।२२।०	९।१७।४८।३२	९।१५।८।२३	९।१२।४।१६	१।२२।३८।२२	०।१२।५१।३५	१०।२५।२३।१०	१४।४४	५।१२	१५।४०	९।१६।२०	९
१०	९।२७।१८।४८	९।५।५।३	०।२३।१७।२३	९।२४।१०।३१	९।१८।२।४३	९।१६।२३।३२	९।१२।११।१६	१।२२।३५।११	०।१२।५२।५६	१०।२५।२५।१३	१४।२४	६।६	१६।४२	९।२०।१७	१०
११	९।२८।१९।३२	९।१८।३३।१९	०।२३।५०।३२	९।२३।०।४०	९।१८।१६।५३	९।१७।३८।४१	९।१२।१८।१४	१।२२।३२।०	०।१२।५४।१९	१०।२५।२७।१७	१४।५	६।५४	१७।४५	९।२४।१३	११
१२	९।२९।२०।१५	१०।१।४८।३८	०।२४।२३।४७	९।२१।५४।९	९।१८।३१।२	९।१८।५३।५०	९।१२।२५।१२	१।२२।२८।४९	०।१२।५५।४५	१०।२५।२९।२२	१३।४५	७।३५	१८।४५	९।२८।१०	१२
१३	१०।०।२०।५७	१०।१४।४९।१	०।२४।५७।७	९।२०।५२।२६	९।१८।४५।१०	९।२०।८।५८	९।१२।३२।८	१।२२।२५।३९	०।१२।५७।१५	१०।२५।३१।२७	१३।२५	८।१२	१९।४३	९।३२।६	१३
१४	१०।१।२१।३७	१०।२७।३३।१५	०।२५।३०।३४	९।१९।५६।३८	९।१८।५९।१७	९।२१।२४।६	९।१२।३९।२	१।२२।२२।२८	०।१२।५८।४७	१०।२५।३३।३४	१३।५	८।४५	२०।३९	९।३६।३	१४
१५	१०।२।२२।१५	११।१०।१।११	०।२६।४।६	९।१९।७।३८	९।१९।१३।२२	९।२२।३९।१४	९।१२।४५।५६	१।२२।१९।१७	०।१३।०।२१	१०।२५।३५।४१	१२।४४	९।१५	२१।३३	९।३९।५९	१५
१६	१०।३।२२।५२	११।२२।१४।३२	०।२६।३७।४४	९।१८।२५।४९	९।१९।२७।२७	९।२३।५४।२०	९।१२।५२।४७	१।२२।१६।६	०।१३।१।५९	१०।२५।३७।४९	१२।२३	९।४५	२२।२५	९।४३।५६	१६
१७	१०।४।२३।२८	०।४।१५।२८	०।२७।११।२७	९।१७।५२।०	९।१९।४१।३०	९।२५।९।२६	९।१२।५९।३८	१।२२।१२।५६	०।१३।३।३९	१०।२५।३९।५८	१२।३	१०।१४	२३।१७	९।४७।५३	१७
१८	१०।५।२४।१	०।१६।७।५०	०।२७।४५।१६	९।१७।२५।४८	९।१९।५५।३१	९।२६।२४।३२	९।१३।६।२६	१।२२।९।४५	०।१३।५।२३	१०।२५।४२।७	११।४१	१०।४५	-।-	९।५१।४९	१८
१९	१०।६।२४।३३	०।२७।५६।१७	०।२८।१९।९	९।१७।७।१८	९।२०।९।३१	९।२७।३९।३७	९।१३।१३।१३	१।२२।६।३४	०।१३।७।८	१०।२५।४४।१७	११।२०	११।१८	०।१०	९।५५।४६	१९
२०	१०।७।२५।३	१।९।४५।५९	०।२८।५३।७	९।१६।५६।२०	९।२०।२३।२९	९।२८।५४।४१	९।१३।१९।५८	१।२२।३।२३	०।१३।८।५७	१०।२५।४६।२८	१०।५९	११।५५	१।४	९।५९।४२	२०
२१	१०।८।२५।३१	१।२१।४२।३०	०।२९।२७।९	९।१६।५२।३४	९।२०।३७।२६	१०।०।९।४४	९।१३।२६।४१	१।२२।०।१३	०।१३।१०।४८	१०।२५।४८।३९	१०।३७	१२।३७	२।५९	१०।३।३९	२१
२२	१०।९।२५।५७	२।३।५१।१८	१।०।१।१६	९।१६।५५।४१	९।२०।५१।२०	१०।१।२४।४७	९।१३।३३।२२	१।२१।५७।२	०।१३।१२।४२	१०।२५।५०।५१	१०।१५	१३।२४	२।५५	१०।७।३५	२२
२३	१०।१०।२६।२१	२।१६।१७।२९	१।०।३५।२८	९।१७।५।१८	९।२१।५।१३	१०।२।३९।४९	९।१३।४०।१	१।२१।५३।५१	०।१३।१४।३८	१०।२५।५३।३	९।५४	१४।१७	३।५०	१०।११।३२	२३
२४	१०।११।२६।४४	२।२९।५।१०	१।१।९।४३	९।१७।२१।०	९।२१।१९।४	१०।३।५४।५०	९।१३।४६।३९	१।२१।५०।४०	०।१३।१६।३७	१०।२५।५५।१६	९।३२	१५।१६	४।४३	१०।१५।२८	२४
२५	१०।१२।२७।५	३।१२।१७।१	१।१।४४।३	९।१७।४२।२४	९।२१।३२।५३	१०।५।९।५०	९।१३।५३।१४	१।२१।४७।३०	०।१३।१८।३९	१०।२५।५७।२९	९।९	१६।१८	५।३३	१०।१९।२५	२५
२६	१०।१३।२७।२३	३।२५।५३।४०	१।२।१८।२६	९।१८।९।६	९।२१।४६।३९	१०।६।२४।५०	९।१३।५९।४७	१।२१।४४।१९	०।१३।२०।४३	१०।२५।५९।४३	८।४७	१७।२३	६।१८	१०।२३।२२	२६
२७	१०।१४।२७।४०	४।९।५३।१५	१।२।५२।५३	९।१८।४०।४४	९।२२।०।२४	१०।७।३९।४९	९।१४।६।१८	१।२१।४१।८	०।१३।२२।४९	१०।२६।१।५७	८।२४	१८।२८	७।०	१०।२७।१८	२७
२८	१०।१५।२७।५६	४।२४।११।२९	१।३।२७।२४	९।१९।१६।५६	९।२२।१४।६	१०।८।५४।४८	९।१४।१२।४६	१।२१।३७।५७	०।१३।२४।५८	१०।२६।४।१२	८।४	१९।३३	७।३८	१०।३१।१५	२८

मार्च सन् २०२१ ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।५३, वेंकटेश (प्लूटो) ९।०१।५२।५०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	१०।१६।२८।९	५।८।४२।१०	१।४।१।५८	९।१९।५७।२३	९।२२।२७।४६	१०।१०।९।४६	९।१४।१९।१२	१।२१।३४।४६	०।१३।२७।९	१०।२६।६।२६	७।३९	२०।३७	८।१५	१०।३५।११	१
२	१०।१७।२८।२१	५।२३।१८।८	१।४।३६।३६	९।२०।४१।४६	९।२२।४१।२४	१०।११।२४।४३	९।१४।२५।३६	१।२१।३१।३५	०।१३।२९।२२	१०।२६।८।४१	७।१६	२१।४२	८।५१	१०।३९।८	२
३	१०।१८।२८।३२	६।७।५२।३०	१।५।११।१७	९।२१।२९।४८	९।२२।५४।५९	१०।१२।३९।३९	९।१४।३१।५७	१।२१।२८।२५	०।१३।३१।३९	१०।२६।१०।५७	६।५३	२२।४८	९।२८	१०।४३।४	३
४	१०।१९।२८।४०	६।२२।१९।३९	१।५।४६।२	९।२२।२१।१४	९।२३।८।३२	१०।१३।५४।३५	९।१४।३८।१६	१।२१।२५।१४	०।१३।३३।५७	१०।२६।१३।१३	६।३०	२३।५४	१०।८	१०।४७।१	४
५	१०।२०।२८।४८	७।६।३५।५५	१।६।२०।५०	९।२३।१५।४९	९।२३।२२।२	१०।१५।९।३१	९।१४।४४।३२	१।२१।२२।३	०।१३।३६।१७	१०।२६।१५।२८	६।७	-।-	१०।५२	१०।५०।५७	५
६	१०।२१।२८।५३	७।२०।३९।३०	१।६।५५।४१	९।२४।१३।२१	९।२३।३५।२९	१०।१६।२४।२६	९।१४।५०।४५	१।२१।१८।५२	०।१३।३८।४०	१०।२६।१७।४५	५।४४	१।१	११।४०	१०।५४।५४	६
७	१०।२२।२८।५८	८।४।३०।५	१।७।३०।३६	९।२५।१३।३८	९।२३।४८।५४	१०।१७।३९।२०	९।१४।५६।५६	१।२१।१५।४२	०।१३।४१।५	१०।२६।२०।१	५।२१	२।५	१२।३४	१०।५८।५१	७
८	१०।२३।२९।०	८।१८।८।१५	१।८।५।३४	९।२६।१६।२९	९।२४।२।१६	१०।१८।५४।१४	९।१५।३।४	१।२१।१२।३१	०।१३।४३।३२	१०।२६।२२।१७	४।५७	३।६	१३।३२	११।२।४७	८

मार्च सन् २०२१ ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।५३, वेंकटेश (प्लूटो) ९।०१।५२।५०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि स्वजे	
९	१०।२४।२१। १	९। १३४।४३	१। ८।४०।३५	९।२७।२१।४६	९।२४।१५।३५	१०।२०। ९। ७	९।१५। ९। ९	१।२१। ९।२०	०।१३।४६। २	१०।२६।२४।३४	४।३४	४। १	१४।३३	२१। ६।४६	९
१०	१०।२५।२१। ०	९।१४।५०। ६	१। ९।१५।३९	९।२८।२९।११	९।२४।२८।५१	१०।२१।२३।५९	९।१५।१५।१२	१।२१। ६। ९	०।१३।४८।३३	१०।२६।२६।५०	४।१०	४।५०	१५।३४	२१।१०।४०	१०
११	१०।२६।२८।५८	९।२७।५४।३१	१। ९।५०।४६	९।२९।३९। १	९।२४।४२। ३	१०।२२।३८।५१	९।१५।२१।११	१।२१। २।५९	०।१३।५१। ७	१०।२६।२९। ७	३।४७	५।३३	१६।३५	२१।१४।३७	११
१२	१०।२७।२८।५४	१०।१०।४७।४५	१।१०।२५।५७	१०। ०।५०।४५	९।२४।५५।१३	१०।२३।५३।४१	९।१५।२७। ७	१।२०।५९।४८	०।१३।५३।४३	१०।२६।३१।२४	३।२३	६।१०	१७।३३	२१।१८।३३	१२
१३	१०।२८।२८।४८	१०।२३।२९।१९	१।११। १।१०	१०। २। ४।२५	९।२५। ८।१९	१०।२५। ८।३१	९।१५।३३। ०	१।२०।५६।३७	०।१३।५६।२०	१०।२६।३३।४०	३। ०	६।४६	१८।२९	२१।२२।३०	१३
१४	१०।२९।२८।४०	११। ५।५८।५१	१।११।३६।२६	१०। ३।१९।५६	९।२५।२१।२२	१०।२६।२३।२१	९।१५।३८।५०	१।२०।५३।२६	०।१३।५९। ०	१०।२६।३५।५७	२।३६	७।१५	१९।२३	२१।२६।२६	१४
१५	११। ०।२८।३०	११।१८।१६।२६	१।१२।११।४५	१०। ४।३७।१२	९।२५।३४।२२	१०।२७।३८। ९	९।१५।४४।३७	१।२०।५०।१६	०।१४। १।४२	१०।२६।३८।१४	२।१२	७।४५	२०।१७	२१।३०।२३	१५
१६	११। १।२८।१८	०। ०।२२।४९	१।१२।४७। ६	१०। ५।५६।११	९।२५।४७।१७	१०।२८।५२।५६	९।१५।५०।२०	१।२०।४७। ५	०।१४। ४।२५	१०।२६।४०।३०	१।४९	८।१४	२१। ९	२१।३४।२०	१६
१७	११। २।२८। ४	०।१२।११।४५	१।१३।२२।३०	१०। ७।१६।४८	९।२६। ०। ९	११। ०। ७।४२	९।१५।५६। ०	१।२०।४३।५४	०।१४। ७।११	१०।२६।४२।४६	१।२५	८।४६	२२। २	२१।३८।१६	१७
१८	११। ३।२७।४७	०।२४। ९।५५	१।१३।५७।५७	१०। ८।३८।५९	९।२६।१२।५७	११। १।२२।२८	९।१६। १।३६	१।२०।४०।४३	०।१४। ९।५८	१०।२६।४५। २	१। १	९।१६	२२।५६	२१।४२।१३	१८
१९	११। ४।२७।२९	१। ५।५६।५८	१।१४।३३।२६	१०।१०। २।४३	९।२६।२५।४१	११। २।३७।१२	९।१६। ७। ९	१।२०।३७।३३	०।१४।१२।४७	१०।२६।४७।१८	०।३८	९।५१	२३।५०	२१।४६। ९	१९
२०	११। ५।२७। ८	१।१७।४५।२२	१।१५। ८।५७	१०।११।२७।५७	९।२६।३८।२२	११। ३।५१।५५	९।१६।१२।३८	१।२०।३४।२२	०।१४।१५।३७	१०।२६।४९।३४	०।१४	१०।३१	-। -	२१।५०। ६	२०
२१	११। ६।२६।४५	१।२९।४०।११	१।१५।४४।३०	१०।१२।५४।३९	९।२६।५०।५८	११। ५। ६।३७	९।१६।१८। ४	१।२०।३१।११	०।१४।१८।३०	१०।२६।५१।४९	+ ।१०	११।१५	०।५५	२१।५४। २	२१
२२	११। ७।२६।२०	२।११।४६।५४	१।१६।२०। ६	१०।१४।२२।४७	९।२७। ३।३०	११। ६।२१।१८	९।१६।२३।२६	१।२०।२८। ०	०।१४।२१।२४	१०।२६।५४। ४	०।३४	१२। ४	१।३९	२१।५७।५९	२२
२३	११। ८।२५।५२	२।२४।१०।५७	१।१६।५५।४३	१०।१५।५२।१९	९।२७।१५।५८	११। ७।३५।५८	९।१६।२८।४४	१।२०।२४।५०	०।१४।२४।२०	१०।२६।५६।१८	०।५७	१३। ०	२।३२	२२। १।५५	२३
२४	११। ९।२५।२२	३। ६।५७।२१	१।१७।३१।२३	१०।१७।२३।१६	९।२७।२८।२२	११। ८।५०।३६	९।१६।३३।५९	१।२०।२१।३९	०।१४।२७।१७	१०।२६।५८।३३	१।२१	१३।५९	३।२२	२२। ५।५२	२४
२५	११।१०।२४।५०	३।२०। ९।५९	१।१८। ७। ४	१०।१८।५५।३५	९।२७।४०।४२	११।१०। ५।१४	९।१६।३९। ९	१।२०।१८।२८	०।१४।३०।१६	१०।२७। ०।४७	१।४५	१५। २	४। ८	२२। ९।४८	२५
२६	११।११।२४।१५	४। ३।५०।५३	१।१८।४२।४७	१०।२०।२९।१७	९।२७।५२।५६	११।११।११।५०	९।१६।४४।१६	१।२०।१५।१७	०।१४।३३।१६	१०।२७। ३। ०	२। ८	१६। ७	४।५१	२२।१३।४५	२६
२७	११।१२।२३।३९	४।१७।५८।३०	१।१९।१८।३२	१०।२२। ४।२१	९।२८। ५। ७	११।१२।३४।२६	९।१६।४९।१९	१।२०।१२। ७	०।१४।३६।१८	१०।२७। ५।१३	२।३२	१७।१२	५।३१	२२।१७।४२	२७
२८	११।१३।२३। ०	५। २।३२।१४	१।१९।५४।१९	१०।२३।४०।४७	९।२८।१७।१३	११।१३।४९। ०	९।१६।५४।१७	१।२०। ८।५६	०।१४।३९।२१	१०।२७। ७।२५	२।५५	१८।१८	६। ८	२२।२१।३८	२८
२९	११।१४।२२।१९	५।१७।२२।३१	१।२०।३०। ७	१०।२५।१८।३६	९।२८।२९।१४	११।१५। ३।३३	९।१६।५९।१२	१।२०। ५।४५	०।१४।४२।२५	१०।२७। ९।३७	३।१९	१९।२५	६।४५	२२।२५।३५	२९
३०	११।१५।२१।३६	६। २।२१।४५	१।२१। ५।५६	१०।२६।५७।४६	९।२८।४१।११	११।१६।१८। ५	९।१७। ४। ३	१।२०। २।३४	०।१४।४५।३१	१०।२७।११।४९	३।४२	२०।३२	७।२३	२२।२९।३१	३०
३१	११।१६।२०।५१	६।१७।२०।३८	१।२१।४१।४७	१०।२८।३८।२०	९।२८।५३। २	११।१७।३२।३६	९।१७। ८।४९	१।१९।५९।२३	०।१४।४८।३८	१०।२७।१३।५९	४। ५	२१।४१	८। ३	२२।३३।२८	३१

अप्रैल सन् २०२१ ई. प्रातः घं. ५ मि. ३० बजे के निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २४।०८।५६, वेंकटेश (प्लूटो) ९।०२।२९।०५

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	११।१७।२०। ४	७। २।१०।४४	१।२२।१७।४०	११। ०।२०।१६	९।२९। ४।४९	११।१८।४७। ६	९।१७।१३।३१	१।१९।५६।१२	०।१४।५१।४७	१०।२७।१६।१०	४।२८	२२।५०	८।४६	२२।३७।२४	१
२	११।१८।१९।१६	७।१६।४५।४३	१।२२।५३।३४	११। २। ३।३६	९।२९।१६।३१	११।२०। १।३५	९।१७।१८। ९	१।१९।५३। १	०।१४।५४।५६	१०।२७।१८।१९	४।५१	२३।५७	९।३४	२२।४१।२१	२
३	११।१९।१८।२६	८। १। १।५१	१।२३।२९।३०	११। ३।४८।२०	९।२९।२८। ८	११।२१।१६। ३	९।१७।२२।४३	१।१९।४९।५०	०।१४।५८। ७	१०।२७।२०।२८	५।१४	-। -	१०।२७	२२।४५।१७	३
४	११।२०।१७।३३	८।१४।५७।४७	१।२४। ५।२८	११। ५।३४।२९	९।२९।३९।३९	११।२२।३०।३०	९।१७।२७।१२	१।१९।४६।३९	०।१५। १।१९	१०।२७।२२।३७	५।३७	१। १	११।२५	२२।४९।१४	४
५	११।२१।१६।४०	८।२८।३४। २	१।२४।४१।२७	११। ७।२२। ४	९।२९।५१। ६	११।२३।४४।५७	९।१७।३१।३७	१।१९।४३।२९	०।१५। ४।३२	१०।२७।२४।४४	६। ०	१।५९	१२।२६	२२।५३।११	५
६	११।२२।१५।४४	९।११।५२। ५	१।२५।१७।२७	११। ९।११। ५	१०। ०। २।२७	११।२४।५९।२२	९।१७।३५।५७	१।१९।४०।१८	०।१५। ७।४६	१०।२७।२६।५१	६।२३	२।४९	१३।२८	२२।५७। ७	६
७	११।२३।१४।४७	९।२४।५३।५४	१।२५।५३।२९	११।११। १।३२	१०। ०।१३।४२	११।२६।१३।४७	९।१७।४०।१३	१।१९।३७। ७	०।१५।११। २	१०।२७।२८।५७	६।४६	३।३३	१४।२८	२३। १। ४	७
८	११।२४।१३।४७	१०। ७।४१।२८	१।२६।२९।३३	११।१२।५३।२७	१०। ०।२४।५२	११।२७।२८।१०	९।१७।४४।२४	१।१९।३३।५६	०।१५।१४।१८	१०।२७।३१। ३	७। ८	४।१२	१५।२६	२३। ५। ०	८
९	११।२५।१२।४६	१०।२०।१६।३०	१।२७। ५।३८	११।१४।४६।४९	१०। ०।३५।५७	११।२८।४२।३३	९।१७।४८।३१	१।१९।३०।४६	०।१५।१७।३५	१०।२७।३३। ७	७।३१	४।४६	१६।२३	२३। ८।५७	९
१०	११।२६।११।४४	११। २।४०।२८	१।२७।४१।४५	११।१६।४१।३८	१०। ०।४६।५५	११।२९।५६।५४	९।१७।५२।३२	१।१९।२७।३५	०।१५।२०।५३	१०।२७।३५।११	७।५३	५।१७	१७।१७	२३।१२।५३	१०
११	११।२७।१०।४०	११।१४।५४।३२	१।२८।१७।५३	११।१८।३७।५४	१०। ०।५७।४८	०। १।११।१५	९।१७।५६।२९	१।१९।२४।२४	०।१५।२४।१२	१०।२७।३७।१४	८।१५	५।४७	१८।१०	२३।१६।५०	११
१२	११।२८। ९।३३	११।२६।५९।४६	१।२८।५४। ३	११।२०।३५।३६	१०। १। ८।३४	०। २।२५।३४	९।१८। ०।२२	१।१९।२१।१३	०।१५।२७।३२	१०।२७।३९।१६	८।३७	६।१६	१९। ३	२३।२०।४६	१२
१३	११।२९। ८।२५	०। ८।५७।२५	१।२९।३०।१३	११।२२।३४।४१	१०। १।१९।१५	०। ३।३९।५२	९।१८। ४। ९	१।१९।१८। ३	०।१५।३०।५३	१०।२७।४१।१७	८।५९	६।४६	१९।५६	२३।२४।४३	१३

सर्वार्थसिद्धि-अमृतसिद्धि तथा रविपुष्य-गुरुपुष्यामृत आदि योगों का विवरण, सम्वत् 2077 वि.

सर्वार्थ सिद्धि योग

तिथि, वार एवं नक्षत्रों के संयोग से बनने वाले शुभ योगों का विवरण नीचे घं.मि. प्रारम्भ व समाप्तिकाल में दिया है। अभिष्ट कार्य संपादन हेतु उपयोगी जानें।

ता. मास घं.मि. से घं.मि. तक
२६ मार्च ६।२२ " ३०।२१ "
२७ " ६।२१ " १०।०८ "
३० " ६।१८ " ३०।१६ "
२ अप्रैल ६।१४ " ३०।१३ "
१० " २१।५४ " ३०।०३ "
१२ " १९।१२ " ३०।०१ "
२१ " ५।५३ " १०।२२ "
२३ " ५।५१ " १६।०४ "
२५ " २०।५७ " २९।४८ "
२७ " ५।४८ " २४।२८ "
३० " ५।४५ " २५।५२ "
३ मई २१।४२ " २९।४२ "
८ " ८।३७ " २९।४९ "
१० " ५।३८ " २८।१२ "
१७ " १३।५७ " २९।३३ "
१९ " १९।५२ " २९।३२ "
२३ " ५।३० " २८।५१ "
२५ " ५।३० " ६।०९ "
२८ " ५।२९ " ७।२६ "
३१ " ५।२९ " २९।२८ "
४ जून १८।३६ " २९।२८ "
५ " ५।२८ " १६।४२ "
७ " ५।२८ " १४।१० "
१४ " ५।२७ " २४।२१ "
१६ जून ५।२७ से २९।२७तक
२० " ५।२७ " १२।०१ "
२८ " ५।३० " २९।३१ "
१ जुला. २६।३३ " २९।३१ "
२ " ५।३१ " २५।१३ "
५ " २३।०१ " २९।३३ "
६ " २३।११ " २९।३४ "
१२ " ५।३७ " ८।१७ "
१४ " ५।३७ " १४।०६ "
१५ " १६।४२ " २९।३८ "
२० " २१।२० " २९।४० "
२१ " २०।२९ " २९।४१ "
२६ " ५।४३ " १२।३६ "
२९ " ८।३२ " २९।४६ "
३० " ५।४६ " ७।४० "
२ अग. ६।५१ " २९।४८ "
३ " ७।१८ " २९।४८ "
९ " १९।०५ " २९।५१ "
११ " २४।५६ " २९।५२ "
१२ " ५।५२ " २९।५३ "
१७ " ६।४३ " २९।४२ "
१८ " ५।५५ " २८।०७ "
२६ " ५।५९ " १३।०३ "
३० " ६।०१ " १३।५१ "
३१ " ६।०२ " १५।०५ "
४ सित. २३।२७ " ३०।०५ "
६ " ६।०५ " २९।२३ "
८ " ८।२५ " ३०।०७ "
९ " ६।०७ " ३०।०७ "
१३ " १६।३३ " ३०।०९ "
१४ " ६।०९ " १५।५१ "
१५ सित. ६।१० से १४।२४तक
१९ " २५।१९ " ३०।१२ "
२१ " २०।४८ " ३०।१३ "
२६ " १९।२५ " ३०।१६ "
१ अक्टू. २९।५६ " ३०।१८ "
२ " ६।१८ " ३०।१९ "
४ " ६।२० " ११।५१ "
६ " ६।२१ " १७।५३ "
७ " ६।२१ " ३०।२२ "
९ " २४।२६ " ३०।२२ "
११ " ६।२३ " २५।१८ "
१७ " ११।५१ " ३०।२८ "
१९ " ६।२८ " २७।५१ "
२३ " २५।२७ " ३०।३२ "
२४ " ६।३२ " २६।३७ "
२९ " ११।५९ " ३०।३६ "
३० " ६।३६ " ३०।३६ "
२ नव. २३।४९ " ३०।३८ "
४ " ६।३९ " २८।५० "
६ " ६।४४ " ३०।४१ "
८ " ६।४२ " ८।४४ "
११ " २८।२४ " ३०।४५ "
१४ " ६।४७ " २०।०८ "
१६ " ६।४९ " १४।३५ "
२० " ९।२१ " ३०।५३ "
२१ " ६।५३ " ९।५२ "
२४ " १५।३१ " ३०।५६ "
२६ " ६।५७ " ३०।५७ "
२७ " ६।५७ " २४।२२ "
३० " ६।५९ " ३१।०० "
२ दिस. ७।०१ " १०।३७ "
३ दिस. १२।२० से ३१।०२तक
४ " ७।०२ " १३।३८ "
९ " १२।३२ " ३१।०७ "
१८ " ७।१२ " १९।०३ "
२२ " ७।१४ " २५।३६ "
२४ " ७।१५ " ३१।१६ "
२५ " ७।१६ " ७।३५ "
२८ " ७।१७ " ३१।१७ "
३१ " ७।१८ " ३१।१९ "
६ जन. ७।१९ " १७।०८ "
११ " ७।१८ " ०९।५३ "
२१ " ७।१८ " १५।३५ "
२३ " २१।३२ " ३१।१७ "
२५ " ७।१७ " २५।५४ "
२८ " ७।१५ " २७।४९ "
३१ " २५।१७ " ३१।१३ "
५ फर. १८।२७ " ३१।१० "
७ " १६।१४ " ३१।०९ "
१४ " १६।३२ " ३१।०४ "
१६ " २०।५५ " ३०।५८ "
२० " ६।५९ " ३०।५८ "
२२ " ६।५७ " १०।५७ "
२५ " ६।५४ " १३।१६ "
२८ " ९।३५ " ३०।५१ "
४ मार्च २३।५६ " ३०।४६ "
५ " ६।४६ " २२।३७ "
७ " ६।४४ " २०।५८ "
१४ " ६।३६ " २६।१८ "
१६ " ६।३४ " ३०।३३ "
२० " ६।२९ " १६।४४ "
२८ " ६।२० " ३०।१९ "
१ अप्रै. ७।२१ से २९।८तक
४ " २६।०५ " ३०।११ "
५ " २६।०४ " ३०।१० "
११ " ६।०३ " ८।५६ "

अमृत सिद्धि योग

३० मार्च १७।१७ से ३०।१६तक
२ अप्रै. १९।२७ " ३०।१३ "
२५ " २०।५७ " २९।४८ "
२७ " ५।४८ " २४।२८ "
३० " ५।४५ " २५।५२ "
१९ मई १९।५२ " २९।३२ "
२३ " ५।३० " २८।५१ "
२५ " ५।३० " ६।०९ "
२८ " ५।२९ " ७।२६ "
३१ " २७।०० " २९।२८ "
१६ जून ५।२७ " २९।२७ "
२० " ५।२७ " १२।०१ "
२८ " ८।४५ " २९।३१ "
१ जुला. २६।३३ " २९।३१ "
१४ " ५।३७ " १४।०६ "
२६ " ५।४३ " १२।३६ "
२९ " ८।३२ " २९।४६ "
२६ अग. ५।५९ " १३।०३ "
४ सित. २३।२७ " ३०।०५ "
२ अक्टू. ६।१८ " ३०।१९ "
३० " ६।३६ " १४।५६ "
२८ दिस. १५।३८ " ३१।१७ "
३१ " १९।४८ " ३१।१९ "
२३ जन. २१।३२ " ३१।१७ "
२५ " ७।१७ " २५।५४ "
२८ जन. ७।१५ से २७।४९ तक
१६ फर. २०।५५ " ३१।०२ "
२० " ६।५९ " ३०।५८ "
२२ " ६।५७ " १०।५७ "
२५ " ६।५४ " १३।१६ "
१६ मार्च ६।३४ " ३०।३३ "
२० " ६।२९ " १६।४४ "
२८ " १७।३५ " ३०।१९ "

रविपुष्य-गुरुपुष्यामृत योग

केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक हैं। रविपुष्य यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रसिद्धि, नगधारण एवं जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयस्कर है। गुरुपुष्यामृत योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होता है।

२ अप्रै. १९।२७ " ३०।१३ " गुपु
३० " ५।४५ " २५।५२ " "
२८ मई ५।२९ " ७।२६ " "
१३ सित. १६।३३ " ३०।०९ " रपु
११ अक्टू ६।२३ " २५।१८ " "
८ नव. ६।४२ " ८।४४ " "
३१ दिस. १९।४८ " ३१।१९ " गुपु
२८ जन. ७।१५ " २७।४९ " "
२५ फर. ६।५४ " १३।१६ " "

द्विपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र संयोग से बने द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग अपने नामानुसार द्विगुणित-त्रिगुणित फल हानि और लाभ में दिया करते

(शेष पृष्ठ 144 पर)

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ चैत्र शुक्ल पक्ष १

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे उत्तरगोले।
ता. २५ मार्च से ८ अप्रैल सन् २०२० ई. तक॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	गते	रा.चै.	प्र.चै.	मु.रज	मार्च	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
उत्पात	१	बु	२७	३७	१७	२६	रे	६०	०	–	–	ब्र	२३	०	१५	३५	बव	२७	३७	३०	२०	६	२३	१८	३१	१२	५	१२	२९	25	मीन	११	१०	४०	१०	इष्टि:, चैत्रनवरात्रारम्भ:, संवत्सरारम्भ:, गुडी१, कलशस्था. ध्वजारोपणं A
मित्र	२	गु	३३	४८	१९	५३	रे	२	१२	७	१५	ऐं	२५	१३	१६	२७	बा	०	४२	३०	२५	६	२२	१८	३२	१३	६	१३	३०	26	मे.७ ।१५	११	११	३९	३७	चन्द्रदर्शनमु.३०, सिंधारा२, श्रीझुलेलालज., पंचकस.७ ।१५, स.सि.योग
वज्र	३	शु	३९	३७	२२	१२	अ	९	२७	१०	८	वै	२७	१२	१७	१४	तै	६	४३	३०	२७	६	२१	१८	३२	१४	७	१४	१	27	मेष	११	१२	३९	२	गणगौरपूजन, मेला(राज.), मत्स्यज. सरहुल(बि)शावान८, स.सि.यो. B
ध्वांक्ष	४	श	४४	५२	२४	१७	भर	१६	१८	१२	५१	वि	२८	५०	१७	५२	व	१२	१५	३०	३२	६	२०	१८	३३	१५	८	१५	२	28	वृ.१९ ।२७	११	१३	३८	२५	भ.११ ।२४सेर४ ।२७तक, वृषमेंशुक्र:१५ ।३८, र.यो.१२ ।५१तक
कालदंड	५	र	४९	१५	२६	१	कृ	२२	२२	१५	१६	प्री	२९	५०	१८	१५	बव	१७	४	३०	३८	६	१९	१८	३४	१६	९	१६	३	29	वृष	११	१४	३७	४६	श्रीपंचमी, हयव्रत५, उषा. रमकरेगुरु:२७ ।४५, रोहिणीव्रत, पर्युषणप्रा. र.यो. C
प्रवर्ध	६	चं	५२	२०	२७	१४	रो	२७	२७	१७	१७	आ	२९	५८	१८	१७	कौ	२०	४७	३०	४०	६	१८	१८	३४	१७	१०	१७	४	30	मि.३० ।०	११	१५	३७	५	यमुना-**स्कन्दषष्ठी**, मे. माईसरखानाअमृतसर, स.सि.यो., र.यो.१७ ।२७तक
राक्षस	७	मं	५३	५२	२७	४९	मृ	३१	८	१८	४३	सौ	२९	०	१७	५२	गर	२३	६	३०	४५	६	१६	१८	३४	१८	११	१८	५	31	मिथुन	११	१६	३६	२१	भ.२७ ।४९से, रेवत्यांरवि:६ ।५७, पूषायांबुध:७ ।५६, नवपदओलीप्रा. जैन D
मूसल	८	बु	५३	३३	२७	४०	आ	३३	२	१९	२८	शो	२६	४०	१६	५५	वि	२३	४२	३०	४८	६	१५	१८	३४	१९	१२	१९	६	1	मिथुन	११	१७	३५	३४	भ.१५ ।४५तक, श्रीदुर्गाष्टमी, **अप्रैल**४ता.३०, अशोका८ भवान्युत्पत्ति:, मे. E
श्रीराम	९	गु	५१	१०	२६	४२	पुन	३३	२	१९	२७	अति	२२	४५	१५	२०	बा	२२	२१	३०	५२	६	१४	१८	३५	२०	१३	२०	७	2	क.१३ ।२८	११	१८	३४	४६	**श्रीरामनवमीव्रतोत्सव**, नवरात्रस., रामचरितमानसजयंती, स.सि.यो., र.यो. F
उत्पात	१०	शु	४६	५२	२४	५८	पु	३१	८	१८	४०	सु	१७	१७	१३	८	तै	१९	१	३०	५५	६	१३	१८	३५	२१	१४	२१	८	3	कर्क	११	१९	३३	५५	धर्मराज१०, उषा.४शनि:७ ।२०, र.यो. **आनन्द संवत्सर प्रा.**
ए.व्रत	११	श	४०	४५	२२	३०	श्ले	२७	१७	१७	७	धृ	१०	१८	१०	१९	व	१३	४९	३०	५७	६	१२	१८	३५	२२	१५	२२	९	4	सिं.१७ ।७	११	२०	३३	२	भ.११ ।४४सेर२ ।३०तक, **कामदाएकादशीव्रत**(सर्वे.)फूलडोल११वृन्दा. G
मुद्गर	१२	र	३३	२	१९	२४	म	२१	५२	१४	५६	शू	१ / ५२	५२ / १८	६ / २७	५६ / ६	बव	६	५४	३१	२	६	११	१८	३६	२३	१६	२३	१०	5	सिंह	११	२१	३२	८	प्रदोषव्रत, श्रीविष्णु१२, हरिदमनोत्सव:पामसन्डे, श्रवणेभौम:२४ ।१, H
केतु	१३	चं	२४	१२	१५	५१	पूफा	१५	१३	१२	१५	वृ	४१	५५	२२	५६	तै	२४	४७	३१	५	६	१०	१८	३६	२४	१७	२४	११	6	क.१७ ।३०	११	२२	३१	१०	अनङ्ग१३, **श्रीमहावीरजयंतीजैन**, रवियोग १२ ।१५से
धाता	१४	मं	१४	४३	१२	१	उफा	७ / ५१	४५ / ५५	९ / ३०	१४ / ६	ध्रु	३१	५	१८	३४	व	१४	४३	३१	१२	६	८	१८	३७	२५	१८	२५	१२	7	कन्या	११	२३	३०	१०	भ.१२ ।१सेर२ ।२तक, अन्वा., सत्यव्रत, शिवदमनक१४, **मीनेबुध:**१४ ।२० K
पूर्णिमा	१५	बु	४	५२	८	४	चि	५२	१७	२७	२	व्या	२०	७	१४	१०	बव	४	५२	३१	१५	६	७	१८	३७	२६	१९	२६	१३	8	तु.१६ ।३४	११	२४	२९	८	इष्टि:, **चैत्रीपूर्णिमा**, वैशाखस्नानारम्भ:, **श्रीहनुमज्जयंती**, ओली M

A वर्षफलश्रवण, श्रीगौतमज., आर्यसमाजस्था.दि., हेडगेवारजयंती B १० ।०८तक, र.यो.१० ।८से C १५ ।१६से D रवियोग E मनसादेवी-अन्नपूर्णापूजा, बैंक वार्षिक लेखाबन्दी, एप्रिलफूल
F १९ ।२७से G र.योग १७ ।७तक H कामदाएकादशीव्रत निम्बार्क K विश्वस्वास्थ्यदिवस, र.यो.९ ।१४तक M समाप्त, रोहि.शुक्र:१६ ।३, जलसंसाधनदिवस

चैत्र शु.८ बुधे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३२८३

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	११	२	९	१०	९	१	९	२	८
अं.	१७	१२	६	२१	०	३	६	९	९
क.	३५	२४	४१	८	१५	२२	३२	१६	१६
वि.	३४	३५	३	५१	४७	४६	२७	४४	४४
गति	५९ / १२	७५५ / ३६	४१ / ४२	७८ / ३६	७ / २३	५५ / २५	३ / ४१	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचार	रेव. १	आर्द्रा२	उषा.४	पूभा.१	उषा.२	कृत्ति.३	उषा.३	आर्द्रा१	मूल ३
नाड़ी	पाताल	स्वर्ग	पाताल	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

गुरु गणपति माँ सारदा, ईश्वर शीश नवाय। अब्दानन्द यह वत्सर कहिदो फल हरसाय॥ सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्योतिर्गणित से सिद्ध रुद्रबीसी के ८वें आनन्द नामक संवत्सर में समृद्ध लोगों को आनन्दानुभूति का अनुभव हो। समयोचित वृष्टि पैदावार वृद्धि से खुशहाली बढ़े। सहयोग की भावना पनपेगी। ३० जून २०२० तक भारत की प्रभाव राशि मकर में पापग्रह नेष्ट हैं। चौतरफा दंगे-फसाद होंगे। राजनीति के पटेबाज नेता हो-हल्ला मचायेंगे। चोर उचक्के लफंगे, असमाजिक तत्त्व अव्यवस्था फैलाने में लगे रहेंगे। **तेजी-मन्दी विचार-** मकर का मंगल घी, तेल, रसकश, पेयपदार्थ, अचार-मुरब्बा, चीनी, बूरा-बताशा, फल, हरीसब्जियाँ, शृंगारसामग्री, धातुओं में तेजी करेगा- **मकरे च स्थिते भौमे घृततैल महार्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां दुःख पीडनम्॥** अनाज, दाल, चावल, खाद्यसामग्री के भाव कम हो सकते हैं। व्यापार निजी सूझबूझ के अनुसार करना चाहिये। **आकाशलक्षण-** कभी कहीं आकाश स्वच्छ तो कहीं मेघों से घिरा रहेगा।

चैत्र शु. १५ बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकीअहर्गण:३२९०

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	५	९	११	९	१	९	२	८
अं.	२४	२२	११	०	१	९	६	८	८
क.	२९	५५	३२	५६	४	३७	५६	५४	५४
वि.	८	३९	५७	७	२५	३६	२७	२८	२८
गति	५८ / ५७	९१६ / ५०	४१ / ४२	९० / ३७	६ / २१	५० / ५१	३ / ५	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचार	रेव. ३	हस्त ४	श्रव. १	पूभा.४	उषा.२	कृत्ति.४	उषा.४	आर्द्रा१	मूल ३
नाड़ी	पाताल	स्वर्ग	पाताल	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग

यत्र-तत्र वायुवेग के साथ हल्की वर्षा हो सकती है। पर्वतीय सम्भागों में हिमपात, झन्झावात, भूस्खलन, भूकम्पादि महोत्पात की सम्भावना जाननी चाहिये, सर्द-गर्म की प्रतिक्रिया रोग पैदा करेगी। **नवरात्रारम्भ कलशस्थापना-** २५ मार्च वृष लग्न में करना अत्यन्त लाभदायक रहेगा। धनैश्वर्य का प्रादुर्भाव होगा। ध्यान रहे राहुकाल १२ ।० से १३ ।३० बजे तक रहेगा, उसे यत्न से त्याग देना चाहिये।

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ वैशाख कृष्ण पक्ष २

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तरगोले। ता. ९ से २३ अप्रैल सन् २०२० ई. तक॥

योगां:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदयास्त उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि.	तारीखें गते	रा. चै.	प्र. चै.	मु. शा.	अंग्रे.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५घं.३०मि. रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है
ति.क्षय	१	बु	५५	१७	२८	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	प्रतिपदाक्षयः
स्थिर	२	गु	४६	२०	२४	३८	स्वा	४५	२०	२४	१४	ह	१ / ५९	३० / ३२	१ / २१	५४ / ५५	तै	२०	४९	३१	२०	६	६	१८	३८	२७	२०	२७	१४	9	तुला	११	२५	२८	५	उभायांबुधः१९।२०, सौर्यदिवस अहर्गणचक्र ७ पंचांगीय ३२९१
मातंग	३	शु	३८	३५	२१	३१	वि	३९	३२	२१	५४	सि	५०	४०	२६	२१	व	१२	२८	३१	२५	६	५	१८	३९	२८	२१	२८	१५	10	वृ.१६।२९	११	२६	२७	०	भ.११।४से २१।३१तक, सबेरात यवनोत्सवः गुडफ्राईडे, रेलसप्ताह A
अमृत	४	श	३२	२५	१९	१	अनु	३५	१८	२०	१०	व्य	४३	८	२३	१८	बव	५	३०	३१	३३	६	३	१८	४०	२९	२२	२९	१६	11	वृश्चिक	११	२७	२५	५२	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २१।२५
काण	५	र	२८	२	१७	१५	ज्ये	३२	५५	१९	१२	वरि	३७	७	२०	५३	तै	२८	२	३१	३७	६	२	१८	४१	३०	२३	३०	१७	12	ध.१९।२२	११	२८	२४	४३	ईस्टरसन्डे, स.सि.योग १९।१२से, रवियोग १९।१२से
लुंबक	६	चं	२५	४३	१६	१८	मू	३२	३०	१९	१	परि	३२	४५	१९	७	व	२५	४३	३१	४०	६	१	१८	४१	१	२४	१	१८	13	धनु	११	२९	२३	३१	भ.१६।१८से२८।१४तक,अश्वि.मेषमेंसूर्य२०।२३,संक्रांतिमु.३०,वैशाखी B
मित्र	७	मं	२५	२७	१६	११	पूषा	३४	१०	१९	४०	शि	३०	०	१८	०	बव	२५	२७	३१	४२	६	०	१८	४१	२	२५	२	१९	14	म.२६।१	०	०	२२	१८	डा.अम्बेडकरजयंती, विशूबंगाल, कालाष्टमी, तेजीमन्दी सूचकांक C
वज्र	८	बु	२७	१०	१६	५१	उषा	३७	४०	२१	३	सि	२८	४७	१७	३०	कौ	२७	१०	३१	४७	५	५९	१८	४२	३	२६	३	२०	15	मकर	०	१	२१	४	शीतलापूजा, बूढ़ाबासोड़ा,
केतु	९	गु	३०	३२	१८	११	श्र	४२	४७	२३	५	सा	२८	५२	१७	३१	गर	३०	३२	३१	५०	५	५८	१८	४२	४	२७	४	२१	16	मकर	०	२	१९	४७	चण्डिकानवमी, (विवाह मुहूर्त धनिष्ठा)
धाता	१०	शु	३५	१५	२०	३	ध	४९	५	२५	३५	शुभ	३०	०	१७	५७	व	२	५४	३१	५५	५	५७	१८	४३	५	२८	५	२२	17	कु.१२।२०	०	३	१८	२९	भ.७।७से २०।३तक, पंचकप्रा.१२।२०, रेवत्यांबुधः२१।४२, (वि.मु. D
ए.व्रत	११	श	४०	५२	२२	१७	शत	५६	१०	२८	२४	शु	३१	५०	१८	४०	बव	८	४	३२	०	५	५६	१८	४४	६	२९	६	२३	18	कुम्भ	०	४	१७	९	वरुथिनीएकादशीव्रत (सर्वे.), श्रीबल्लभाचार्यज., पुरातत्त्वदिवस
चर	१२	र	४६	५८	२४	४२	पूभा	६०	०	–	–	ब्र	३४	५	१९	३३	कौ	१३	५५	३२	५	५	५५	१८	४५	७	३०	७	२४	19	मी.२४।३८	०	५	१५	४७	सा.वृषेभानुः२०।१७, ग्रीष्मऋतुप्रारम्भ, पक्षवर्धिनीद्वादशी
मूसल	१३	चं	५३	१२	२७	११	पूभा	३	४०	७	२२	ऐं	३६	२७	२०	२९	गर	२०	५	३२	८	५	५४	१८	४५	८	३१	८	२५	20	मीन	०	६	१४	२४	भ.२७।११से, सोमप्रदोषव्रत, (विवाह मुहूर्त उभा.)
सिद्धि	१४	मं	५९	२०	२९	३७	उभा	११	१२	१०	२२	वै	३८	५०	२१	२५	वि	२६	१६	३२	१२	५	५३	१८	४६	९	१	९	२६	21	मीन	०	७	१२	५९	भ.१६।२४तक,राष्ट्रीयवैशाखारम्भः,मासशिवरात्रि,स.सि.यो.१०।२२तक
उत्पात	३०	बु	६०	०	–	–	रे	१८	३२	१३	१७	वि	४०	५८	२२	१५	च	३२	१५	३२	१५	५	५२	१८	४६	१०	२	१०	२७	22	मे.१३।१७	०	८	११	३२	अन्वा.,पंचकस.१३।१७,,बुधास्तपूर्वस्यां२५।५,वसुन्धरारक्षणदिवस E
मावस	३०	गु	५	१०	७	५५	अ	२५	३३	१६	४	प्री	४२	४७	२२	५८	ना	५	१०	३२	२०	५	५१	१८	४७	११	३	११	२८	23	मेष	०	९	१०	३	इष्टिः स्नानदानादिअमापुण्यः, श्रीशुकदेवमुनिजयंती, बाबूकुँवरसिंहज F

A शुरु, स.सि.यो.२१।५४से B पर्व(पुण्यकाल १४।०से), बङ्गव सौर वैशाखारम्भः, फसली सन् १४२७प्रा., विशूकेरला, र.योग १९।१ तक श्रेष्ठ
C १५८४, रवियोग १९।४०तक D धनिष्ठा) E पितरकार्येऽमापुण्यः F (बिहार),स.सि.यो.१६।४तक

वैशाख कृ.८ बुधे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट, केतकीअहर्गणः३२९७

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	०	९	९	११	९	१	९	२	८
अं.	१	१	१६	१२	१	१५	७	८	८
क.	२१	५१	२४	४	४५	१६	१६	३२	३२
वि.	४	३३	५०	१	३६	५१	१२	१३	१३
गति	५८	७४९	४१	१०१	५	४५	२	३	३
	४३	३	४१	४५	१५	२	२८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	अश्वि१	उषा.२	श्रव.२	उभा.३	उषा.२	रोहि.२	उषा.४	आर्द्रा१	मूल ३
नाड़ी	स्वर्ग	पाताल	पाताल	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मास में पांच बुधवार श्रेष्ठ तो गुरुवार नेष्ट हैं- यत्रमासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते॥ पश्चिमोत्तर देश सम्भागों में सीमा विवाद, आतंकवाद जानलेवा सिद्धि होगा। कहीं युद्धोत्पात की सम्भावना बन सकती है। सरकार को सावधान रहना चाहिए। मकर में नीच के गुरु का फल- **मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोर दारुणम्। विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥** के अनुसार किसी देश-प्रदेश में दुर्भिक्ष के चलते हालात खराब हो सकते हैं। राजनैतिक उठापटक के चलते सरकार बदल जाये। प्रभावी नेता काल के गर्त में समा जाए, मारपीट हो जाए तो आश्चर्य नहीं। **तेजी-मन्दी विचार-** चल रहे साम्यक भावों में किंचित रद्दोबदल के बाद स्थिर लाइन बनेगी, क्योंकि ता.१३ में बैठी वृद्धावस्था की मेष संक्रांति मु.३० है। इमारती सामान, सरिया, सीमेन्ट, लकड़ी, रंगरोगन, पत्थर सभी प्रकार की धातु आदि में तेजी होगी। खाद्यपदार्थ, मेवा, मिष्ठान्न, अन्नादि के भाव पड़े रह सकते हैं। **आकाशलक्षण-** पक्ष के आरम्भ और अन्त में वायुवेग के साथ मौसम खराब होगा। ता.२२ में बुधास्त का फल- **उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः।** यत्र-तत्र बादलचाल, बूंदा-बांदी से राहत मिलेगी। देश के दक्षिण सम्भागों में गर्मी अधिक पड़ेगी। किंवा अग्निकाण्ड, ज्वालामुखी विस्फोट, प्राकृतिक महोत्पात, यान-खान रेलादि कुघटनाचक्र सम्भव है। पहाड़ी क्षेत्रों में बर्फबारी, झन्झावात से दुर्दिन हो सकते हैं।

वैशाख कृ.३० गुरौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३३०५

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	०	९	११	९	१	९	२	८
अं.	९	८	२१	२६	२	२०	७	८	८
क.	१०	२	५७	२३	२२	४८	३३	६	६
वि.	३	५६	५७	६	५२	९	१९	४७	४७
गति	५८	७११	४१	११४	३	३६	१	३	३
	३०	४८	३४	४२	५३	१६	४२	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	अश्वि३	अश्वि३	श्रव.४	रेव.३	उषा.२	रोहि.४	उषा.४	आर्द्रा१	मूल ३
नाड़ी	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ वैशाख शुक्ल पक्ष ३																					दिन मान		स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदयास्त				तारीखें					चन्द्र संचार	दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५घं.३०मि.				ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तरगोले। ता. २४ अप्रैल से ७ मई सन् २०२० ई. तक॥
योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल		घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि.	गते	रा. वै.	प्र. वै.	मु. शा	अंग्रे.	स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
मुद्गर	१	शु	१०	२७	१०	१	भर	३२	०	१८	३८	आ	४४	१०	२३	३०	बव	१०	२७		३२	२२	५	५०	१८	४७	१२	४	१२	२९	24	वृ.२५।१३	०	१०	८	३३	चन्द्रदर्शनमु.३०,अश्वि.मेषेबुधः२६।३५,धनि.भौमः२८।५२,देवदामोदरA
केतु	२	श	१५	५	११	५१	कृ	३७	५०	२०	५७	सौ	४५	३	२३	५०	कौ	१५	५		३२	२८	५	४९	१८	४८	१३	५	१३	१	25	वृष	०	११	७	०	वीरशिवाजीज., श्रीपरशुरामज. रमजान१ रोजेशुरु, अगस्ततारास्तB
धाता	३	र	१८	५५	१३	२२	रो	४२	४७	२२	५५	शो	४५	१०	२३	५२	गर	१८	५५		३२	३२	५	४८	१८	४९	१४	६	१४	२	26	वृष	०	१२	५	२६	भ.२५।५६से,**अक्षयतृतीया**,आखातीज,त्रेतायुगादि,वर्षीतपपारणजैनC
आनंद	४	चं	२१	४२	१४	२९	मृग	४६	४०	२४	२८	अति	४४	२७	२३	३५	वि	२१	४२		३२	३५	५	४८	१८	५०	१५	७	१५	३	27	मि.११।४२	०	१३	३	४९	भ.१४।२९तक, **भरण्यांरविः**१२।८, मृगेशुक्रः१६।५८, (वि.मु.मृग.)D
चर	५	मं	२३	२०	१५	७	आ	४९	२२	२५	३२	सु	४२	४८	२२	५४	बा	२३	२०		३२	३७	५	४७	१८	५०	१६	८	१६	४	28	मिथुन	०	१४	२	११	आद्यशंकराचार्यजयंती,श्रीसूरदासज,मे.मालदासतीदादरी,र.यो.२५।३२से
गद्	६	बु	२३	३५	१५	१२	पुन	५०	३७	२६	१	धृ	४०	०	२१	४६	तै	२३	३५		३२	४२	५	४६	१८	५१	१७	९	१७	५	29	क.११।५४	०	१५	०	३०	**श्रीरामनुजाचार्यज.**(ठभा.), रवियोग २६।१तक
शुभ	७	गु	२२	१५	१४	३९	पु	५०	१७	२५	५२	शू	३५	५५	२०	७	व	२२	१५		३२	४५	५	४५	१८	५१	१८	१०	१८	६	30	कर्क	०	१५	५८	४७	भ.१४।३९से२६।२तक,**श्रीगंगासप्तमी**,गंगोत्पत्तिः,स.सि.यो.२५।५२तक
मईडे	८	शु	१९	१५	१३	२६	श्ले	४८	२०	२५	४	गंड	३०	३३	१७	५७	बव	१९	१५		३२	५०	५	४४	१८	५२	१९	११	१९	७	1	सिं.२५।४	०	१६	५७	३	मई५ता.३१,मईडे,विश्वश्रमिकदिवस,भरण्यांबुधः१६।०,देवीबगलामुखीE
पद्म	९	श	१४	३७	११	३५	म	४४	४७	२३	३९	वृ	२३	५२	१५	१७	कौ	१४	३७		३२	५०	५	४४	१८	५२	२०	१२	२०	८	2	सिंह	०	१७	५५	१६	**श्रीजानकीनवमी** वैष्णवोत्सवः (वि.मु.मघा), रवियोग
ए.व्रत	१०	र	८	३५	९	९	पूफा	३९	५७	२१	४२	ध्रु	१६	०	१२	७	गर	८	३५		३२	५५	५	४३	१८	५३	२१	१३	२१	९	3	क.२७।६	०	१८	५३	२७	भ.१९।४०से, **मोहिनीएकादशीव्रत**स्मा., महावीरस्वामीकेवलज्ञानजैनF
श्रीवत्स	११	चं	१	१५	६	१२	उफा	३४	०	१९	१८	व्या	७/५७	१०/३३	८/२८	३४/४३	वि	१	१५		३३	०	५	४२	१८	५४	२२	१४	२२	१०	4	कन्या	०	१९	५१	३६	भ.६।१२तक,त्रिस्पर्शामोहिनीएकादशीव्रत वैष्णवानाम्,**कुम्भमेंमंगल**G
ति.क्षय	१२	चं	५२	५७	२६	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	द्वादशीक्षयः
सौम्य	१३	मं	४४	१०	२३	२१	ह	२७	२२	१६	३८	वज्र	४७	३०	२४	४१	कौ	१८	३४		३३	५	५	४१	१८	५५	२३	१५	२३	११	5	तु.२७।१४	०	२०	४९	४३	प्रदोषव्रत, देवीछिन्नमस्ताज. (वि.मु.चित्रा), रवियोग १६।३८से
कालदंड	१४	बु	३५	१०	१९	४४	चि	२०	२५	१३	५०	सि	३७	२२	२०	३७	गर	९	४०		३३	७	५	४०	१८	५५	२४	१६	२४	१२	6	तुला	०	२१	४७	४९	भ.१९।४४से,सत्यव्रत,श्रीनृसिंहज.,कूर्मज.(वि.मु.स्वा.)र.यो.१३।५०तक
पूर्णिमा	१५	गु	२६	२५	१६	१४	स्वा	१३	३५	११	६	व्य	२७	२७	१६	३९	वि	०	४७		३३	१०	५	४०	१८	५६	२५	१७	२५	१३	7	वृ.२७।१४	०	२२	४५	५२	भ.५।५९तक, **वैशाखीपूर्णिमा**, स्नानपूर्ण, **श्रीबुद्धजयंती**, कृत्ति.बुधःH

H २०।५०,देवयानीयात्रा सांभरलोक, पीपलपूजन, अन्वा.,यमप्रीतियर्थ जलकुंभदानं,टैगोरजयंती

A तिथि असम, ऋषिपाराशर जयंती — B (वि.मु.रोहि.), स.सि.यो.र.यो.२०।५७से — C चन्दनयात्रा, कल्पादि, **रोहिणीव्रत** (वि.मु.रोहि.) र.यो.२२।५५तक

D स.सि.यो.२४।२८तक, र.यो.१२।८से — E जयंती, (वि.मु.मघा) र.यो.२५।४से — F सौरऊर्जादि., स.सि.यो.२१।४२से, र.यो.२१।४२तक — G २०।४०(वि.मु.हस्त)

वैशाख शु.८ शुक्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३३१३

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	०	३	९	०	९	१	९	२	८
अं.	१६	१८	२७	१२	२	२४	७	७	७
क.	५७	४२	२९	२४	४८	५९	४४	४१	४१
वि.	३	४५	५१	२४	५६	०	१८	२१	२१
गति	५८ १३	८३१ २१	४१ २२	१२६ ३३	२ २७	२४ २२	० ५७	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	भर. २	श्ले. १	धनि. २	अश्वि४	उषा. २	मृग. १	उषा. ४	आर्द्रा१	मूल ३
नाड़ी	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मेष में उच्चांशगत सूर्य से बुध का द्विग्रह योग से नेष्ट हैं। अन्तर्राष्ट्रीय विश्व समुदाय में युद्धोत्पात का षड्यन्त्र रचा जायेगा। तेल-पानी के अभाव में त्राहि-त्राहि मचेगी। प्रभावी देश छोटे देशों पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास करेंगे। चल रहे सामयक कामों में गतिरोध क्षोभ का कारण बनेगा। पश्चिमोत्तर सीमा पर चौकसी बरतनी चाहिये। सैन्यबल बढ़ाना उत्तम रहेगा। शान्तिपरिचर्चा मात्र छलावा ही समझें। इस्लामिक देशों में संगठित प्रक्रिया जोर पकड़ती नजर आयेगी। ईसा-मूसा की लड़ाई ठन सकती है। कोई देश अन्तरिक्ष में महोत्पात कर सकता है। **तेजी मन्दी विचार-** चन्द्रदर्शनमु.३० साम्यार्घ कारक है। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं। कुम्भ का मंगल धान्यादि के भाव, जलोत्पन्न वस्तुओं में तेजी करेगा- **भूसुत कुम्भ राशिस्थः सर्वधान्य महर्घता। एवं प्रजायते ह्यर्थ लोकमध्ये तु निर्भया॥** तिथि घटा-बढ़ी का फल- **कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥** के अनुसार कहीं उपयोगी वस्तुओं की कमी के कारण महंगाई बढ़ेगी। रोजमर्रा की चीजें मिलना कठिन हो जायेंगी। **आकाशलक्षण-** देश के अधिकांश भागों में मौसम साफ रहेगा। धीरे-धीरे गर्मी का प्रकोप बढ़ता जायेगा। मरुस्थलों में धूलभरी आंधियाँ चलेंगी। उत्तरी संभागों में घामाछांई सी रहेगी। वायुवेग, मेघगर्जन, विद्युत्पात हल्की वर्षा हो सकती है। दक्षिण भारत में प्रचण्ड गर्मी, विस्फोट से त्राहि-त्राहि मचेगी।

वैशाख शु.१५ गुरौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३३११

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	६	१०	०	९	१	९	२	८
अं.	२२	१६	१	२५	३	२६	७	७	७
क.	४५	२८	३७	१६	०	५७	४८	२२	२२
वि.	५२	१६	५२	३०	५१	३३	२८	१६	१६
गति	५८ २	८१५ १६	४१ १२	१३० १३	१ २०	१२ ५४	० २१	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	भर. ३	स्वा. ३	धनि.३	भर. ४	उषा. २	मृग. २	उषा.४	आर्द्रा१	मूल ३
नाड़ी	भूमि	पाताल	भूमि	भूमि	पाताल	भूमि	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे उत्तरगोले। ता. ८ से २२ मई सन् २०२० ई. तक ॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	तारीखें गते	रा. वै	प्र. वै	मु. रम	मई	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५घं.३०मि. रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
मातङ्ग	१	शु	१८	२५	१३	१	वि	७	२५	८	३७	वरि	१८	८	१२	५४	कौ	१८	२५	३३	१२	५	३९	१८	५६	२६	१८	२६	१४	8	वृश्चिक	०	२३	४३	५४	इष्टिः, जिनवरव्रत प्रारम्भ जैन, स.सि.योग ८।३७तक.
अमृत	२	श	११	३०	१०	१५	अनु	२ / ५८	१२ / २५	६ / २१	३२ / १	परि	९	४२	९	३२	गर	११	३०	३३	१२	५	३९	१८	५६	२७	१९	२७	१५	9	ध.२९।०१	०	२४	४१	५५	भ.२१।९से, नारदजयंती वीणादान, वृषेबुधः९।०७, वृन्दावनपरिक्रमाA
सिद्धि	३	र	६	२	८	३	मू	५६	२५	२८	१२	शि	२ / ५६	३३ / ४७	६ / २८	३१ / २१	वि	६	२	३३	१७	५	३८	१८	५७	२८	२०	२८	१६	10	धनु	०	२५	३९	५४	भ.८।३तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २२।२०,(वि.मु.मूल)स.सि.योग
उत्पात	४	चं	२	२५	६	३५	पूषा	५६	२०	२८	९	सा	५२	३५	२६	३९	बा	२	२५	३३	२३	५	३७	१८	५८	२९	२१	२९	१७	11	धनु	०	२६	३७	५१	वक्रीशनिः९।४०, कृत्ति.रविः६।२२
मानस	५	मं	०	४२	५	५३	उषा	५८	१२	२८	५३	शुभ	५०	२	२५	३७	तै	०	४२	३३	२५	५	३६	१८	५८	३०	२२	३०	१८	12	म.१०।२०	०	२७	३५	४७	बुढ़वामंगल पूजापूर्वांचल, रवियोग २८।५३से
छत्र	६	बु	०	५७	५	५९	श्र	६०	०	–	–	शु	४८	५५	२५	१०	व	०	५७	३३	२८	५	३६	१८	५९	३१	२३	३१	१९	13	मकर	०	२८	३३	४१	भ.५।५९से १८।२५तक, वक्री शुक्रः१२।२५, रोहि.बुधः२६।५५, B
केतु	७	गु	३	१०	६	५१	श्र	१	५७	६	२२	ब्र	४९	१३	२५	१६	बव	३	१०	३३	३०	५	३५	१८	५९	१	२४	१	२०	14	कु.११।२६	०	२९	३१	३५	पंचकप्रा.११।२६, कालाष्टमी, वृषमें सूर्य १७।२६, संक्रांति मु.३०C
धाता	८	शु	७	०	८	२२	ध	७	१७	८	२९	ऐं	५०	३०	२५	४६	कौ	७	०	३३	३५	५	३४	१९	०	२	२५	२	२१	15	कुम्भ	१	०	२९	२७	संतदादूदयालपुण्यः नरेनाधाम, सहादतेहजरतअली, वि.परिवारदिवसD
आनंद	९	श	१२	०	१०	२२	शत	१३	४५	११	४	वै	५२	३०	२६	३४	गर	१२	०	३३	३७	५	३४	१९	१	३	२६	३	२२	16	कुम्भ	१	१	२७	१८	भ.२३।३२से, बुधोदयः पश्चि.१४।३२, इबादतरातमुस.
चर	१०	र	१७	५२	१२	४२	पूभा	२१	०	१३	५७	वि	५४	५५	२७	३१	वि	१७	५२	३३	४२	५	३३	१९	२	४	२७	४	२३	17	मी.७।१४	१	२	२५	८	भ.१२।४२तक, (वि.मु.उभा.), स.सि.योग १३।५७से
ए.व्रत	११	चं	२३	५७	१५	८	उभा	२८	३०	१६	५७	प्री	५७	१८	२८	२८	बा	२३	५७	३३	४२	५	३३	१९	२	५	२८	५	२४	18	मीन	१	३	२२	५७	अपराएकादशीव्रत(सर्वे) भद्रकालीग्यरस(पं.) (वि.मु.रेव.)
शुभ	१२	मं	२९	५७	१७	३१	रे	३५	५०	१९	५२	आ	५९	२७	२९	१९	तै	२९	५७	३३	४८	५	३२	१९	३	६	२९	६	२५	19	मे.१९।५२	१	४	२०	४४	पंचकस.१९।५२, बुढवामंगल, (वि.मु.अश्वि.) स.सि.यो.१९।५२से
सावित्री	१३	बु	३५	२५	१९	४२	अ	४२	४०	२२	३६	सौ	६०	०	–	–	गर	२	४१	३३	४८	५	३२	१९	३	७	३०	७	२६	20	मेष	१	५	१८	३०	भ.१९।४२से, प्रदोषव्रत, सा.मिथुनेभानुः१९।२०, मृग.४राहुः मूलरकेतुःE
पद्म	१४	गु	४०	१२	२१	३६	भ	४८	५०	२५	३	सौ	१	१०	५	५९	वि	७	४९	३३	५२	५	३१	१९	४	८	३१	८	२७	21	मेष	१	६	१६	१५	भ.८।३९तक, शबेकद्र मुस.
मावस	३०	शु	४४	२	२३	८	कृ	५४	२	२७	८	शो	२	१५	६	२५	च	१२	७	३३	५२	५	३१	१९	५	९	१	९	२८	22	वृ.७।३४	१	७	१३	५९	अन्वा., भावुका३०, वट्सावित्री व्रत पूजन, शनिजयंती, मे.शनि F

A वनविहार
B एकतादिवस, (वि.मु.श्रवण), र.यो.
C सौर बंगव ज्येष्ठारम्भः, शतेभौमः१४।०, वक्रीगुरुः२०।२
D तेजीमन्दी सूचकांक २६४०
E १३।३८, मृगे.बुधः२४।३८, सावित्रीव्रतारम्भः (वि.मु.अश्विनी)
F शिंगणापुर, रा.ज्येष्ठारम्भः, जमातुलविदा मुस.

ज्येष्ठ कृ.८ शुक्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रहस्पष्ट, केतकी अहर्गणः३३२७

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	१	१०	१०	१	९	१	९	२	८
अं.	०	५	७	१२	३	२७	७	६	६
क.	२९	८	६	१५	६	३८	४८	५६	५६
वि.	२७	४०	२५	५५	१८	४७	३४	५०	५०
गति	५७ / ५१	७२३ / ४२	४० / ५५	१२० / ३५	० / १	५ / १७	० / २५	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / अ.	व. / उ.	व. / उ.	व. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचार	कृति.२	धनि.४	शत.१	रोहि.१	उषा.२	मृग.२	उषा.४	आर्द्रा१	मूल ३
नाडी	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	भूमि	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मास में पांच शुक्रवार श्रेष्ठ हैं- शुक्रस्य पंचवारास्युः यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते ॥ राज-प्रजा में सौहार्द की भावना बढ़ेगी। उत्पादन अच्छा होगा। शान्ति परिचर्चा प्रभावी रहेगी। गुरु शुक्र शनि दो मास पर्यन्त वक्री चलेंगे। चौतरफा हा! हा!! कार मचवायेंगे। गुरु शनी एक राशि में, चलते वक्राचार। कष्ट प्रजा अति पावती, मचती हा! हा!!कार॥ राजनैतिक, सामाजिक वैमनस्य के चलते दंगे फसाद हो सकते हैं। प्रादेशिक सरकार पलट सकती है। सरकारी तौर पर कड़े कदम उठाये जा सकते हैं। कश्मीर के मामले में सचेत रहें। शान्तिवार्ता मात्र छलावा ही समझें। चीन भारत के खिलाफ हो सकता है। तेजी मन्दी विचार- सप्तमी में कुमारावस्था की बैठी संक्रांतिमु.३० साम्यार्घ कारक है। कालसर्प योग में तीन वक्री ग्रह अत्यन्त बिगाड़ करते हैं, फलतः महंगाई बढ़ती है। व्यापार में सरकार हस्तक्षेप भी करेगी। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं। श्रृंगारसामग्री, वस्त्र, धातु, तेल, रसकश, फल, फूल, सब्जियों में तेजी होगी। सोना, चांदी, शेयर, सर्राफा, सट्टा बाजार में उछाला आ सकता है। आकाशलक्षण- ग्रहराशिचार गतिपरिवर्तन बुधोदय के प्रभाव में मौसम खराब होगा- उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टि कारकः। चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे॥ ता.१३,१४,१५,१६,२१,२२ में बादलचाल, मेघगर्जन, वायुवेग, जहाँ-तहाँ बूंदा-बांदी होगी। यान-खान रेलादि व्यवधान भूकम्प, दिग्दाह सम्भव है।

ज्येष्ठ कृ.३० शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३३३४

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	०	१०	१	९	१	९	२	८
अं.	७	२८	११	२५	३	२६	७	६	६
क.	१३	५४	५१	२६	१	११	४३	३४	३४
वि.	५९	५४	४१	२२	६	२१	३४	३५	३५
गति	५७ / ४३	७३७ / ९	४० / ३१	१०१ / ३६	१ / ३०	२१ / ५२	१ / ६	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / अ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / उ.	व. / उ.	व. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचार	कृति.४	कृति.१	शत.२	मृग.१	उषा.२	मृग.१	उषा.४	मृग.४	मूल २
नाडी	पाताल	पाताल	स्वर्ग	भूमि	पाताल	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे उत्तरगोले। ता. २३ मई से ५ जून सन् २०२० ई. तक॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदयास्त उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	तारीखें गते	रा. ज्ये	प्र. ज्ये	मु. रम	मई	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दैनिक रवि स्पष्ट प्रात:५घं.३०मि. रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा. घंटा-मिनटोंमें है।
श्रीवत्स	१	श	४६	५७	२४	१७	रो	५८	२२	२८	५१	अति	२	३७	६	३३	किं	१५	२९	३३	५७	५	३०	१९	५	१०	२	१०	२९	23	वृष	१	८	११	४२	इष्टि: करवीरव्रतं, दशाश्वमेधघाट स्नानारंभ:(काशी), रोहिणीव्रत,A
सौम्य	२	र	४८	४५	२५	०	मृग	६०	०	-	-	सु	२	१३	६	२३	बा	१७	५१	३३	५७	५	३०	१९	५	११	३	११	३०	24	मि.१७ ।३०	१	९	९	२३	चन्द्रदर्शनमु.३०,रोहिण्यांरवि:२६ ।३४,मिथुनेबुध:२३ ।५८,तपनकालप्रा.
आनंद	३	चं	४९	३०	२५	१८	मृग	१	३७	६	९	धृ	० / ५४	५८ / ५२	५ / २१	५३ / ३	तै	१९	८	३४	०	५	३०	१९	६	१२	४	१२	१	25	मिथुन	१	१०	७	३०	रम्भातीजव्रत,शव्वाल१०,ईदुलफितर(मीठीईद)महाराणाप्रतापज.B
चर	४	मं	४९	७	२५	८	आ	३	५०	७	१	गंड	५५	५८	२७	५२	व	१९	१८	३४	२	५	२९	१९	६	१३	५	१३	२	26	क.२५ ।२०	१	११	४	४४	भ.१३ ।१३से२५ ।८तक, शहीदीगुरुअर्जुनदेव, बुढ़वामंगल, र.यो.७ ।२से
गद	५	बु	४७	३५	२४	३१	पुन	४	५५	७	२७	वृ	५२	२	२६	१८	बव	१८	२१	३४	२	५	२९	१९	६	१४	६	१४	३	27	कर्क	१	१२	२	१८	श्रुतिपंचमीजैन, नेहरूपुण्य:, रवियोग ७ ।२७तक
शुभ	६	गु	४४	५५	२३	२७	पु	४	५३	७	२६	ध्रु	४७	१३	२४	२२	कौ	१६	१५	३४	५	५	२९	१९	७	१५	७	१५	४	28	कर्क	१	१२	५९	५४	अरण्यषष्ठी, **जामित्रषष्ठी**, विन्ध्यवासिनीपूजा, व.रोहि.शुक्र:१२ ।२४,C
पूजाभिंड	७	शु	४१	५	२१	५५	श्ले	३	४०	६	५७	व्या	४१	३०	२२	५	गर	१३	०	३४	५	५	२९	१९	७	१६	८	१६	५	29	सिं.६ ।५७	१	१३	५७	२९	भ.२१ ।५५से,बड़पूजा(भिंड)आर्द्रायांबुध:१४ ।७,भद्रामुख२४ ।४०सेD
पद्म	८	श	३६	१०	१९	५७	म	१ / ५८	२२ / २	६ / २८	२ / ४२	ह	३४	५२	१९	२६	वि	८	३७	३४	७	५	२९	१९	८	१७	९	१७	६	30	सिंह	१	१४	५५	१	भ.८ ।५६तक,श्रीदुर्गाष्टमी,देवीधूमावतीज.,मे.क्षीरभवानी(क)र.यो.E
मित्र	९	र	३०	१७	१७	३६	उफा	५३	४७	२७	०	वज्र	२७	२७	१६	२८	बा	३	१३	३४	१०	५	२९	१९	९	१८	१०	१८	७	31	क.१० ।१६	१	१५	५२	३२	श्रीमहेशनवमी माहेश्वरीवंशे, **शुक्रास्त पश्चि.**१८ ।१४, F शुक्रअस्त
दशहरा	१०	चं	२३	४२	१४	५७	ह	४८	५५	२५	२	सि	१९	२८	१३	१५	गर	२३	४२	३४	१२	५	२८	१९	९	१९	११	१९	८	1	कन्या	१	१६	५०	१	भ:२५ ।३१से, **जूनमास**६ता.३०, **श्रीगंगादशहरा**, रामेश्वरप्रतिष्ठादि.G
ए.व्रत	११	मं	१६	३०	१२	४	चि	४३	३२	२२	५३	व्य	१०	५७	९	५१	वि	१६	३०	३४	१५	५	२८	१९	१०	२०	१२	२०	९	2	तु.११ ।५७	१	१७	४७	३०	भ.१२ ।४तक, **निर्जलाएकादशीव्रत**(सर्वे) भीमसैनीग्यारस, **बुढवा**H
धूम्र	१२	बु	९	२	९	५	स्वा	३८	५	२०	४२	वरि	२ / ५३	१० / २२	६ / २६	२० / ४१	बा	९	२	३४	१५	५	२८	१९	१०	२१	१३	२१	१०	3	तुला	१	१८	४४	५७	चम्पक१२,मे.खाटूश्याम(राज),**प्रदोषव्रत**,सावित्रीव्रतारम्भ:,पूभा.भौम:K
प्रवर्ध	१३	गु	१	३५	६	६	वि	३२	५०	१८	३६	शि	४४	५०	२३	२४	तै	१	३५	३४	१७	५	२८	१९	११	२२	१४	२२	११	4	वृ.१३ ।८	१	१९	४२	२३	भ.२७ ।१५से,स.सि.यो.१८ ।३६से,र.यो.१८ ।३६तक,दहीचूड़ामहोत्सव(बं)
ति.क्षय	१४	गु	५४	२७	२७	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	चतुर्दशीक्षय:
पूर्णिमा	१५	शु	४८	३	२४	४१	अनु	२८	५	१६	४२	सि	३६	४७	२०	११	वि	२१	१५	३४	१७	५	२८	१९	११	२३	१५	२३	१२	5	वृश्चिक	१	२०	३९	४९	भ.१३ ।५८तक,अन्वा.,**सत्यव्रतपूर्णिमा**,गुर्जराणांवट्सावित्रीव्रतपूर्णM

A स.सि.योग　B ४८१वीं मेवाड़　C वीरसावरकरजयंती,स.सि.यो.७ ।२६तक,र.यो.　D २६ ।३०तक,(वि.मु.मघा)　E २८ ।४२से　F तम्बाकूनिषेधदि.,स.सि.यो.,र.यो.
G बटुकभैरवजयंती,र.यो.२५ ।२तक　H मंगल,बाबा बालकनाथजयंती　K ९ ।४०,र.यो.२० ।४२से　M संतकबीरज.,मन्वादि,श्रीजगन्नाथजीस्नानयात्रारम्भ:,१५दिनदर्शननिषेध,पर्यावरणदिवस,स.सि.यो.१६ ।४२तक

ज्येष्ठ शु.८ शनौ प्रात:५घं.३०मि. के ग्रहस्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३४२

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	१	४	१०	२	९	१	९	२	८
अं.	१४	१३	१७	७	२	२२	७	६	६
क.	५५	०	१३	३०	४३	२२	३२	९	९
वि.	१	१२	५१	४०	५२	१३	११	८	८
गति	५७	८०७	३९	७५	२	३५	१	३	३
	३१	१३	५६	४८	५८	३४	५०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	रोहि.२	मघा ४	शत. ४	आर्द्रा१	उषा. २	रोहि.४	उषा. ४	मृग. ४	मूल २
नाड़ी	पाताल	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

ज्येष्ठ शु.१५ शुक्रे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रहस्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३४८

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	७	१०	२	९	१	९	२	८
अं.	२०	९	२१	१४	२	१८	७	५	५
क.	३९	५४	१२	१३	२३	३९	१९	५०	५०
वि.	४९	३१	१४	२	२५	५९	५४	४	४
गति	५७	८६१	३९	५४	४	३७	२	३	३
	२५	१६	२६	२२	१	२३	२०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	रोहि.४	अनु.२	पूभा.१	आर्द्रा३	उषा.२	रोहि.३	उषा.४	मृग.४	मूल २
नाड़ी	पाताल	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा यदिस्यान्मंदवासरा: । छत्रभंग:प्रजापीड़ा दुर्भिक्षं च तदादिशेत्॥ किसी देश-प्रदेश में राजनैतिक संकट गहरायेगा। उठापटक के चलते सत्ता बदल जाए, नेता कालकल्वित हो जाए तो आश्चर्य नहीं। कहीं उपयोगी वस्तुओं का अभाव त्रस्त करेगा। सरकारी तौर पर कड़े कदम उठाये जा सकते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में तनाव बढ़ेगा। विश्व दो भागों में बंटता नजर आयेगा। शनि की उत्तर दृष्टि से चीन, रूस, मंगोलिया, अफगानिस्तान, स्वीडन, पोलैंड, फिनलैंड आदि में अधिक उत्पात होंगे। ज्वालामुखी विस्फोट सम्भव है। **तेजी मन्दी विचार-** द्वितीया में चन्द्रदर्शन मु.३० साम्यार्घकारक हैं। **राहु के साथ बुध वाहन,** पशु-पक्षी, जीवजन्तुओं में तेजी करेगा- **बुधे मिथुन राशिस्थौ महार्घं च चतुष्पदाम्। तदा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरोभवेत्॥** हरी सब्जी, फल-फूल, घी, दूध, दही, मेवा, मिष्ठान्न, तेल, साबुन, पेयपदार्थ, सूतीवस्त्र, दाल, चावलोंमें तेजी हो सकती है। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं। **आकाशलक्षण-** गर्मी बेतहासा पड़ेगी। पक्ष के आरम्भ और अन्त में तीव्र वायुवेग, आंधी-तूफान, बवंडर के साथ बूंदा-बांदी होगी। लू से कुछ राहत मिलेगी। **शुक्रास्त का फल- उदयास्तगत: शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारक:।** **श्री गंगा दशहरा- ज्येष्ठ मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता। हरते दश पापानि तस्माद्दशहरा स्मृता॥** ब्रह्मपुराणके अनुसार ज्येष्ठशुदी दशमी हस्तनक्षत्र युक्त होनेसे दस पापों को हरती है। इसी को दशहरा कहते हैं।

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तरगोले। ता. ६ से २१ जून सन् २०२० ई. तक॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा. ज्ये	प्र. ज्ये	मु. सव	जून	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रात:५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
मूसल	१	श	४२	४०	२२	३२	ज्ये	२४	१७	१५	११	सा	२९	३५	१७	१८	बा	१५	२१	३४	२०	५	२८	१९	१२	२४	१६	२४	१३	6	ध.१५ ।११	१	२१	३७	१४	इष्टि:, गुरु हरगोविन्द जयंती
सिद्धि	२	र	३८	३७	२०	५५	मू	२१	४५	१४	१०	शुभ	२३	२५	१४	५०	तै	१०	३८	३४	२०	५	२८	१९	१२	२५	१७	२५	१४	7	धनु	१	२२	३४	३७	मृगे.रवि:२४ ।२८, वायुप्रवहणकाल, स.सि.योग १४ ।१०तक
उत्पात	३	चं	३६	१०	१९	५६	पूषा	२०	४०	१३	४४	शु	१८	२७	१२	५१	व	७	२३	३४	२२	५	२८	१९	१३	२६	१८	२६	१५	8	म.१९ ।४८	१	२३	३१	५९	भ.८ ।२५से १९ ।५६तक, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय २१ ।५८
मानस	४	मं	३५	२७	१९	३८	उषा	२१	२०	१३	५९	ब्र	१४	५५	११	२५	बव	५	४९	३४	२५	५	२७	१९	१३	२७	१९	२७	१६	9	मकर	१	२४	२९	२१	शुक्रोदय: **पूर्वस्यां** ११ ।७ **शुक्रउदय**
छत्र	५	बु	३६	३२	२०	४	श्र	२३	४२	१४	५६	ऐं	१२	४५	१०	३३	कौ	६	०	३४	२७	५	२७	१९	१४	२८	२०	२८	१७	10	कु.२७ ।४५	१	२५	२६	४२	पंचकप्रा.२७ ।४५, उर्स अमीर खुशरो
श्रीवत्स	६	गु	३९	१७	२१	१०	ध	२७	४७	१६	३४	वै	१२	०	१०	१५	गर	७	५४	३४	२७	५	२७	१९	१४	२९	२१	२९	१८	11	कुम्भ	१	२६	२४	३	भ.२१ ।१०से, (वि.मु.धनिष्ठा), रवियोग १६ ।३४से
सौम्य	७	शु	४३	३२	२२	५२	शत	३३	२०	१८	४७	वि	१२	२७	१०	२६	वि	११	२४	३४	२७	५	२७	१९	१४	३०	२२	३०	१९	12	कुम्भ	१	२७	२१	२३	भ.१० ।१तक, बालश्रमनिषेधदिवस, रवियोग १८ ।४७तक
कालदंड	८	श	४८	५०	२४	५९	पूभा	४०	०	२१	२७	प्री	१३	५५	११	१	बा	१६	११	३४	२७	५	२७	१९	१४	३१	२३	३१	२०	13	मी.१४ ।४७	१	२८	१८	४३	कालाष्टमीव्रत
स्थिर	९	र	५४	४०	२७	१९	उभा	४७	१५	२४	२१	आ	१५	५८	११	५०	तै	२१	४५	३४	३०	५	२७	१९	१५	३२	२४	१	२१	14	मीन	१	२९	१६	२	मिथुनमेंसूर्य२३ ।५४,संक्रांतिमु.४५, बंगवसौर आषाढ़ारम्भ:,पुन.बुध:A
मातंग	१०	चं	६०	०	–	–	रे	५४	३२	२७	१६	सौ	१८	२०	१२	४७	व	२७	३६	३४	३०	५	२७	१९	१५	१	२५	२	२२	15	मे.२७ ।१६	२	०	१३	२१	भ.१६ ।२९से,**पंचकस.**२७ ।१६,**तेजीमन्दीसूचकांक**१३०५,(वि.मु.रेव.)
अमृत	१०	मं	०	३२	५	४०	अ	६०	०	–	–	शो	२०	३२	१३	४०	वि	०	३२	३४	३०	५	२७	१९	१६	२	२६	३	२३	16	मेष	२	१	१०	३९	भ.५ ।४०तक, (वि.मु.अश्विनी) स.सि.योग
ए.व्रत	११	बु	५	५८	७	५०	अ	१	३०	६	३	अति	२२	२०	१४	२३	बा	५	५८	३४	३०	५	२७	१९	१६	३	२७	४	२४	17	मेष	२	२	७	५७	योगिनीएकादशीव्रत (सर्वे.)
पद्म	१२	गु	१०	३०	९	३९	भर	७	३७	८	३०	सु	२३	२३	१४	४८	तै	१०	३०	३४	३२	५	२७	१९	१६	४	२८	५	२५	18	वृ.१५ ।०	२	३	५	१५	प्रदोषव्रत, **मीनमें मंगल** २० ।१५, **वक्रीबुध:**१० ।३०, रानीझांसीपुण्य:
छत्र	१३	शु	१३	५५	११	१	कृ	१२	३७	१०	३०	धृ	२३	३०	१४	५१	व	१३	५५	३४	३५	५	२७	१९	१७	५	२९	६	२६	19	वृष	२	४	२	३२	भ.११ ।१सेर२३ ।२६तक,व.उषा.३शनि:५ ।३९,मासशिवरात्रि,**रोहिणीव्रत**B
श्रीवत्स	१४	श	१६	२	११	५२	रो	१६	२५	१२	१	शू	२२	३८	१४	३०	श	१६	२	३४	३५	५	२७	१९	१७	६	३०	७	२७	20	मि.२४ ।३०	२	४	५९	४९	अन्वा., सा.कर्कभानु:२७ ।१५, वर्षाऋतुप्रा., रविदक्षिणायने, दैत्यों C
मावस	३०	र	१६	५०	१२	११	मृ	१८	५२	१३	०	गंड	२०	४०	१३	४३	ना	१६	५०	३४	३५	५	२७	१९	१७	७	३१	८	२८	21	मिथुन	२	५	५७	६	इष्टि:, स्नानादि अमापुण्य:, **कंकणाकृति सूर्यग्रहण** १० ।२० से, D

A ९ ।२०, स.सि.यो.२४ ।२१ B (वि.मु.रोहि.) C की मध्यरात्रि, देवोंका मध्याह्न, स.सि.यो.१२ ।१तक
D आर्द्रायां रवि:२३ ।२७, चन्द्र-चन्द्र, स्त्री-स्त्री, वर्षा वाहन अश्व से आंधी-तूफान वर्षान्यून, वि.योगदिवस

आषाढ़ कृ.८ शनौ प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३५६

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	१	१०	१०	२	९	१	९	२	८
अं.	२८	२५	२६	१९	१	१४	६	५	५
क.	१८	२१	२४	३५	४६	८	५८	२४	२४
वि.	४३	४७	५६	५९	५०	४६	५६	३८	३८
गति	५७	७१७	३८	२१	५	२७	२	३	३
	१९	२२	३६	२१	१६	५	५८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	मृग. २	पूभा.२	पूभा.२	आर्द्रा४	उषा.२	रोहि.२	उषा.४	मृग.४	मूल २
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मास में पांच शनि-रविवार नेष्ट हैं- **शनिवारा यदा पंच जायंते रवि पंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला मही॥** धान्यादि के भाव तेज होंगे। राजनीति में उठा-पटक के चलते नेता लोग जनता को धर्म के नाम पर लड़वाने का प्रयास करेंगे। कहीं जमकर मारपीट हो सकती है। ता.२१ में कंकणाकृति सूर्यग्रहण एवं मिथुन में बनने वाला चार ग्रह संयोग अत्यन्त भयावह है- **एक राशौ यदा यान्ति चत्वार: पंच खेचरा:। प्लावयन्ति महीसर्वा रुधिरेण जलेन वा॥** आतंकी उत्पात के चलते पश्चिमी देशों में कहीं भारी रक्तपात होगा। भूख-प्यास से दु:खी जनता इधर से उधर भागती फिरेगी। विश्व परिषद में शान्तिपरिचर्चा होगी। असमाजिकतत्त्वों के खिलाफ कड़े कदम उठाये जा सकते हैं। **तेजी मन्दी विचार-** नौमी में प्रौढ़ावस्था की बैठी मिथुन संक्रांति मु.४५ मन्दी का संकेत है। अन्य ग्रहयोग तेजी की ओर इशारा करते हैं। अत: साम्यक भावों में दो तरफा चाल चलेगी। सर्राफा, शेयर एवं सट्टाबाजार में घट-बढ़ होगी। निर्माण सामग्री, वाहन, साईंस, डाक्टरी के उपकरण, स्टेशनरी, बर्फ तथा सब्जियों के भाव बढ़ सकते हैं। **आकाशलक्षण-** पक्षारम्भे शुक्रोदय के प्रभाव में और अमावस्या में सूर्यग्रहण के कारण आंधी-तूफान, मेघाडम्बर के साथ जहाँ-तहाँ हल्की वर्षा होगी। रविवार में होने वाले सूर्यग्रहण (चूड़ामणि ग्रहण) का बहुत तीखा प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। कई बार समुद्री तूफान का कारण बनते देखे गये हैं।

आषाढ़ कृ.३० रवि प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३६४

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	२	११	२	९	१	९	२	८
अं.	५	२	१	२०	१	११	६	४	४
क.	५७	३६	३०	२०	०	३३	३३	५९	५९
वि.	६	५१	३	१८	४८	३२	१५	१२	१२
गति	५७	७७८	३७	१४	६	८	३	३	३
	१६	५८	२९	१९	२०	५६	३१	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	मृग. ४	मृग. ३	पूभा.४	पुन. १	उषा. २	रोहि.१	उषा.३	मृग. ४	मूल २
नाड़ी	भूमि	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने, उत्तरगोले। ता. २२ जून से ५ जुलाई सन् २०२० ई. तक ॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदयास्त उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा. आ	प्र. आ	मु. स	जून	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	दैनिक रवि स्पष्ट प्रात:५घं.३०मि. रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टै.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
कालदंड	१	चं	१६	१७	११	५९	आ	२०	५	१३	३०	वृ	१७	४३	१२	३३	बव	१६	१७	३४	३२	५	२८	१९	१७	८	१	९	२९	22	मिथुन	२	६	५४	२२	गुप्तनवरात्रविधान(मिथिलांचल) चन्द्रदर्शनमु.४५, रा.आषाढ़ारम्भ: A
स्थिर	२	मं	१४	३७	११	१९	पुन	२०	१०	१३	३२	ध्रु	१३	५०	११	०	कौ	१४	३७	३४	३२	५	२८	१९	१७	९	२	१०	१	23	क.७।३२	२	७	५१	३८	श्रीजगन्नाथजीरथयात्रापुरी(उड़ीसा),मनोरथर(बं),उभा.भौम:२८।२० B
मातंग	३	बु	११	५५	१०	१४	पु	१९	१२	१३	९	व्या	९	७	९	७	गर	११	५५	३४	३२	५	२८	१९	१७	१०	३	११	२	24	कर्क	२	८	४८	५३	भ.२१।३०से,गुडीचाउत्सव(पुरी),श्रीबल्लभाचार्यपुण्य:,र.यो.१३।८से
अमृत	४	गु	८	१५	८	४७	श्ले	१७	२३	१२	२६	ह	३/५७	३८/३५	६/२८	५६/३१	वि	८	१५	३४	३०	५	२९	१९	१७	११	४	१२	३	25	सिं१२।२६	२	९	४६	८	भ.८।४७तक, **मार्गीशुक्र**:१२।२०, मेलास्यालकोट, र.यो.१२।२६तक
काण	५	शु	३	५२	७	२	म	१४	५०	११	२५	सि	५१	०	२५	५३	बा	३	५२	३४	३०	५	२९	१९	१७	१२	५	१३	४	26	सिंह	२	१०	४३	२२	हेरापंचमी(उड़ीसा), **कौमारिकीषष्ठी**, महावीरस्वामी गर्भकल्याणकC
ति.क्षय	६	शु	५८	५५	२९	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	षष्ठीक्षय: C नशाविरोधदिवस, मांडिटेकॅरामज. र.यो.११।२५से
लुंबक	७	श	५३	३५	२६	५६	पूफा	११	४०	१०	१०	व्य	४४	०	२३	६	गर	२६	१५	३४	३०	५	३०	१९	१८	१३	६	१४	५	27	क.१५।४९	२	११	४०	३५	भ.२६।५६से,**विवस्वत्सप्तमी**,सूर्यपूजा(वि.मु.उफा.)र.यो.१०।२०तक
मित्र	८	र	४७	४२	२४	३५	उफा	८	७	८	४५	वरि	३६	४५	२०	१२	वि	२०	३८	३४	३०	५	३०	१९	१८	१४	७	१५	६	28	कन्या	२	१२	३७	४७	भ.१३।४५तक, अष्टाह्निकापर्वजैन, (वि.मु.हस्त) स.सि.यो.
वज्र	९	चं	४१	४२	२२	१२	ह	४	१५	७	१३	परि	२९	१५	१७	१३	बा	१४	४२	३४	२७	५	३१	१९	१८	१५	८	१६	७	29	तु.१८।२५	२	१३	३५	०	**भड्डलीनवमी**,अबूझमुहूर्त,मे.शरीकभवानी(क),(वि.मु.चित्रा)र.D
ध्वांक्ष	१०	मं	३५	४५	१९	४९	चि	०/५६	१७/२०	५/२८	३८/३	शि	२१	४७	१४	१४	तै	८	४४	३४	२७	५	३१	१९	१८	१६	९	१७	८	30	तुला	२	१४	३२	१२	व.उषा.१**धनुमें गुरु** ५।३३, (वि.मु.स्वाती)
ए.व्रत	११	बु	२९	५५	१७	२९	वि	५२	३५	२६	३३	सि	१४	२३	११	१६	व	२	५०	३४	२७	५	३१	१९	१८	१७	१०	१८	९	1	वृ.२०।५६	२	१५	२९	२४	भ.६।३९से१७।२९तक,**जुलाई**७ता.३१;उल्टारथपुरी,**शयनीएकादशी**E
आनन्द	१२	गु	२४	२२	१५	१६	अनु	४९	१५	२५	१३	सा	७	१०	८	२३	बा	२४	२२	३४	२७	५	३१	१९	१८	१८	११	१९	१०	2	वृश्चिक	२	१६	२६	३५	प्रदोषव्रत, हरिवासर:१०।६बजेतक,उप.पारणकरें, स.सि.यो.२५।१३F
चर	१३	शु	१९	२०	१३	१६	ज्ये	४६	२७	२४	७	शुभ	१/५४	१७/०	५/२७	३९/८	तै	१९	२०	३४	२५	५	३२	१९	१८	१९	१२	२०	११	3	ध.२४।७	२	१७	२३	४६	रवियोग २४।७ तक
गद्	१४	श	१५	३	११	३३	मू	४४	३२	२३	२१	ब्र	४८	२५	२४	५४	व	१५	३	३४	२२	५	३२	१९	१७	२०	१३	२१	१२	4	धनु	२	१८	२०	५७	भ.११।३३से २२।५३तक, अन्वा., सत्यव्रत, चौमासी१४, जैनमुनीनांG
पूर्णिमा	१५	र	११	४०	१०	१३	पूषा	४३	४०	२३	१	ऐं	४३	४०	२३	१	बव	११	४०	३४	२०	५	३३	१९	१७	२१	१४	२२	१३	5	म.२९।४	२	१९	१८	७	इष्टि: **गुरुपूर्णिमा**, व्यासपूजा, पुन.रवि:२३।४, शिवशयनोत्सव:,K

A **बुधास्त पश्चि.** १७।६, व.आर्द्राबुध:१३।२० B जिल्काद११

D यो.१३।७से E व्रत(सर्वे.) देवशयनोत्सव: यमनियमादि चातुर्मास्यारम्भ:, जिनदत्तशूरीपुण्य: दादामेलाअजेर, पण्ढ़रपुरयात्रारम्भ:, डाक्टर्सडे, स.सि.यो.२६।३३से F तक, र.यो.२५।१३उप.
G चतुर्मासप्रा., विवेकानन्दपुण्य: K कोकिलाव्रत, मेलानैमिषारण्य, परिक्रमागोवर्धन, वायुपरीक्षा, सन्यासीनां यमनियमप्रारम्भ, चन्द्र-चन्द्र, स्त्री-पु. व.वाहन चातक वर्षाधिक्य हो, स.सि.यो.२३।१ने

आषाढ़ शु.८ रवि प्रात:५घं.३०मि. के ग्रहस्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३७१

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	२	५	११	२	९	१	९	२	८
अं.	१२	८	५	१७	०	११	६	४	४
क.	३७	३	४९	२७	१४	२०	७	३६	३६
वि.	४७	१३	१	२८	१३	२०	३०	५६	५६
गति	५७/१३	७५४/१०	३६/१८	३४/४५	७/२	७/११	३/५३	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	व./उ.	मा./उ.	व./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचार	आर्द्रा२	उफा.४	उभा.१	आर्द्रा४	उषा.२	रोहि.१	उषा.३	मृग.४	मूल २
नाड़ी	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

पंचार्क वासरे रोग पीड़ा लोकेषु जायते। मास में पांच रविवार रोगोत्पात, शोक, संताप को बढ़ाने वाले हैं। सू. बु. रा.और गु. चं. के. तीन-तीन ग्रह संयोग भी उपद्रवकारी हैं। **'तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा'** वाली कहावत चरितार्थ होना सम्भव है। वक्री धनु का गुरु चौतरफा हो-हल्ला मचवायेगा। **धनु राशि गतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्। धनक्षयस्तदा लोके चौराद्राजापि रोषित: ॥** चोर, उचक्के, असमाजिकतत्त्व, आतंकी कुकृत्य करते फिरेंगे। विरोधी विचारधारा वाले परस्पर टकरायेंगे। धन-धान्य राष्ट्रीय सम्पदा की हानि होगी। अन्तरिक्ष में युद्धादि उपद्रव सम्भव हैं। सुरक्षा प्रहरियों को सचेत रहना चाहिये। **तेजी मन्दी विचार-** एकम् में चन्द्रदर्शन मु.४५ महंगाई अभिवृद्धि का संकेत है। तिथि घटा-बढ़ी का फल पदार्थों की कमी से तेजी होना लिखा है- **कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥** कहीं रोजमर्रा की चीजें न मिलने से हाय-तौबा मचेगी। बढ़ती महंगाई पर अंकुश लगाना कठिन होगा। सरकार आयात-निर्यात नीति पर पुन:विचार कर सकती है। **आकाशलक्षण-** पक्षारम्भ में बुधास्त के प्रभाव से मौसम खराब होगा। किंवा आंधी-तूफान, मेघाडम्बर के चलते वर्षा होगी। यान-खान, वाहनादि बड़ा हादसा सम्भव है। **आषाढे शुक्ल पक्षे च द्वितीया नवमी दिने। चन्द्रजे भृगुवारा:स्यु: सुवृष्टिश्च महर्घता ॥** के अनुसार देश के दक्षिणपूर्व संभागों में वर्षा होगी, साथ ही साथ महंगाई भी बढ़ेगी।

आषाढ़ शु.१५ रवि प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३७८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहा
२	८	११	२	८	१	९	२	८	रा.
१९	१६	९	१३	२९	१२	५	४	४	अं.
१८	४८	५९	२४	२३	५३	३९	१४	१४	क.
७	५	१०	३१	२५	३६	२४	४१	४१	वि.
५७/११	८०७/१०	३४/५६	२८/५९	७/३१	२१/०	४/१०	३/११	३/११	गति
मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	व./उ.	मा./उ.	व./उ.	व./अ.	व./अ.	स्थिति
आर्द्रा४	पूषा.२	उभा.२	आर्द्रा३	उषा.१	रोहि.१	उषा.३	मृग.४	मूल २	नक्षत्रचार
स्वर्ग	भूमि	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग	नाड़ी

श्रीसम्वत् २०७७ शाके १९४२ श्रावण कृष्ण पक्ष ८

वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने, उत्तरगोले। ता. ६ से २० जुलाई सन् २०२० ई. तक॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	रा. आ	प्र. आ	मु. जि	जुलाई	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
मृत्यु	१	चं	९	३२	९	२२	उषा	४४	५	२३	११	वै	४०	०	२१	३३	कौ	९	३२	३४	२०	५	३३	१९	१७	२२	१५	२३	१४	6	मकर	२	२०	१५	१८	अशून्यशयनव्रतारम्भ:,कांवड़धारणमु.,**सोमवारव्रत**, स.सि.यो.२३।११से
लुंबक	२	मं	८	४०	९	२	श्र	४५	५२	२३	५५	वि	३७	२५	२०	३२	गर	८	४०	३४	१७	५	३४	१९	१७	२३	१६	२४	१५	7	मकर	२	२१	१२	२८	भ.२१।१०से
मित्र	३	बु	९	२०	९	१८	ध	४९	१०	२५	१४	प्री	३६	३	१९	५९	वि	९	२०	३४	१७	५	३४	१९	१७	२४	१७	२५	१६	8	कु.१२।३५	२	२२	९	४०	भ.९।१८तक, **पंचकप्रा.१२।३५**, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय२२।२,कांवड़A
वज्र	४	गु	११	३०	१०	११	शत	५३	५२	२७	८	आ	३५	५०	१९	५५	बा	११	३०	३४	१५	५	३५	१९	१७	२५	१८	२६	१७	9	कुम्भ	२	२३	६	५१	**बुधोदयपूर्वस्यां** २७।३७
ध्वांक्ष	५	शु	१५	५	११	३७	पूभा	५९	५२	२९	३२	सौ	३६	४२	२०	१६	तै	१५	५	३४	१५	५	३५	१९	१७	२६	१९	२७	१८	10	मी.२२।५६	२	२४	४	३	नागपंचमी **मरुस्थले-बंगेऽपि च**, कांवड़धारणमुहूर्त्त
धूम्र	६	श	१९	५२	१३	३३	उभा	६०	०	-	-	शो	३८	२३	२०	५७	व	१९	५२	३४	१२	५	३६	१९	१७	२७	२०	२८	१९	11	मीन	२	२५	१	१४	भ.१३।३३से २६।४०तक, विश्वजनसंख्यादिवस, रवियोग
स्थिर	७	र	२५	२५	१५	४७	उभा	६	४०	८	१७	अति	४०	३२	२१	५०	बव	२५	२५	३४	८	५	३७	१९	१६	२८	२१	२९	२०	12	मीन	२	२५	५८	२७	कालाष्टमी, **मार्गीबुध:१३।५७**, कांवड़धारणमुहूर्त्त, र.यो.८।१७तक
मातङ्ग	८	चं	३१	२०	१८	९	रे	१४	०	११	१३	सु	४२	५३	२२	४६	कौ	३१	२०	३४	८	५	३७	१९	१६	२९	२२	३०	२१	13	मे.११।१३	२	२६	५५	४०	पंचकस.११।१३,कांवड़धारणमु,**सोमवारव्रत**,स्वा.कल्याणदेवपुण्य:शुक्रताल
अमृत	९	मं	३६	५७	२०	२४	अ	२१	१२	१४	६	धृ	४४	५५	२३	३५	तै	४	८	३४	८	५	३७	१९	१६	३०	२३	३१	२२	14	मेष	२	२७	५२	५३	स.सि.योग ५।३७ से १४।६ तक
काण	१०	बु	४१	४२	२२	१९	भर	२७	४०	१६	४२	शू	४६	१५	२४	८	व	९	१९	३४	५	५	३८	१९	१६	३१	२४	३२	२३	15	वृ.२३।१५	२	२८	५०	७	भ.९।२२से २२।१९तक, स.सि.योग १६।४२से
ए.व्रत	११	गु	४५	१५	२३	४४	कृ	३३	५	१८	५२	गंड	४६	३७	२४	१७	बव	१३	२८	३४	५	५	३८	१९	१५	१	२५	१	२४	16	वृष	२	२९	४७	२१	**कामिकाएकादशीव्रत**(सर्वे.), **कर्कमें सूर्य** १०।४८, संक्रांतिमु.३०B
मित्र	१२	शु	४७	१५	२४	३३	रो	३७	०	२०	२७	वृ	४५	४५	२३	५७	कौ	१६	१५	३४	०	५	३९	१९	१५	२	२६	२	२५	17	वृष	३	०	४४	३६	कांवड़धारणमु., सौभाग्यसूचक **रोहिणीव्रत**, **तेजीमन्दीसूचकांक१७८४**
वज्र	१३	श	४७	३५	२४	४१	मृग	३९	१७	२१	२२	ध्रु	४३	३८	२३	६	गर	१७	२५	३४	०	५	३९	१९	१५	३	२७	३	२६	18	मि.८।५५	३	१	४१	५२	भ.२४।४१से, **प्रदोषव्रत**, कांवड़धारणमुहूर्त्त
ध्वांक्ष	१४	र	४६	१५	२४	९	आ	४०	०	२१	३९	व्या	४०	१०	२१	४३	वि	१६	५५	३३	५७	५	३९	१९	१५	४	२८	४	२७	19	मिथुन	३	२	३९	८	भ.१२।२५तक,**मासशिवरात्रिव्रत**,श्रीगंगाजलसे रुद्राभिषेक,**पुष्येरवि:**C
मावस	३०	चं	४३	२५	२३	२	पुन	३९	१०	२१	२०	ह	३५	२५	१९	५०	च	१४	५०	३३	५७	५	४०	१९	१४	५	२९	५	२८	20	क.१५।२५	३	३	३६	२५	अन्वा., **हरियाली३०**, **सोमोतीमावस** (पर्वदिन) **सोमवारव्रत**, स्नानD

A धारणमुहूर्त्त

B बंगव सौरश्रावणारम्भ:,रेवत्यांभौम:२७।३२

C २२।३६,चंद्र-चंद्र,स्त्री-स्त्री,व.वाहनगज वर्षा अधिक हो

D दानादि का विशेष महत्त्व, स.सि.यो.२१।२०से

श्रावण कृ.८ चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३८६

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	२	११	११	२	८	१	९	२	८
अं.	२६	२७	१४	११	२८	१६	५	३	३
क.	५५	९	३२	२२	२२	२७	५	४९	४९
वि.	४०	२१	१४	२२	२१	१०	१३	१६	१६
गति	५७	७९३	३३	६	७	३३	४	३	३
गति	१३	२०	०	१	४४	२०	२२	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
स्थिति	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पुन. ३	रेव. ४	उभा.४	आर्द्रा२	उषा. १	रोहि.२	उषा. ३	मृग. ४	मूल २
नाड़ी	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

त्रिगृही योग का प्रभाव पश्चिमी देशों पर प्रतिकूल पड़ेगा। आतंकी गतिविधियों के चलते जनता त्रस्त रहेगी। कहीं युद्धोत्पात के चलते रुण्ड-मुण्ड लुढ़कते फिरेंगे। भारत की प्रभाव राशि मकर में शनि रक्षा करेगा। फिर भी कांवड यात्रा के समय सावधानी बरतनी चाहिये। **'बम-बम भोले हर-हर महादेव'** का संबल सुरक्षा चक्र बनेगा। **मासशिवरात्रि-** इस वर्ष विवाद से रहित १९ जुलाई रविवार की है। भद्रावास मिथुन के चन्द्रमा होने से स्वर्ग में रहेगा, जो कि व्यवधान कारक नहीं। **श्रीगंगाजल से रुद्राभिषेक** सूर्योदय के बाद किसी भी समय कर सकते हैं। इस वर्ष आर्द्रा नक्षत्र भी भगवान शिवशंकर जी का है। शिवरात्रि तो प्रत्येक मास में पूजनीय होती है। लेकिन समाज में श्रावण मास और फाल्गुन में आने वाली दोनों शिवरात्रियाँ अधिक मान्य हैं। **ईशान संहित** के अनुसार फाल्गुन में ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव हुआ था अर्धरात्रि में- **शिवलिङ्गतयोद्भूत:कोटिसूर्य समप्रभ:। शिवरात्रि व्रतं नाम सर्वपाप प्रणाशनम्॥** इसलिये उसे महाशिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। श्रावण की शिवरात्रि में समुद्रमंथन से निकले हलाहल का पान लोकोपकार को ध्यान में रखते हुए किया था, तभी से सदाशिव नीलकंठ महादेव कहलाये, ऐसी जनश्रुति प्रसिद्ध है। विष की अकुलाहट से बचाने के लिये सबने जलाभिषेक करना शुरु किया था। तभी से यह परम्परा चल रही है। आजभी शिवभक्त **बम-बम भोले, हर हर महादेव** जयघोष के साथ भगते-दौड़ते जल चढ़ाने को आतुर रहते हैं।

श्रावण कृ.३० चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३३९३

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	२	११	२	८	१	९	२	८
अं.	३	२४	१८	१३	२७	२०	४	३	३
क.	३६	२१	१७	५८	२८	४६	३४	२७	२७
वि.	२५	४९	१४	५८	१९	७	१९	१	१
गति	५७	८१७	३०	४४	७	४१	४	३	३
गति	१८	२१	५५	१५	३९	२६	२६	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
स्थिति	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पुष्य १	पुन. २	रेव. १	आर्द्रा३	उषा. १	रोहि.४	उषा. ३	मृग. ४	मूल २
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	पाताल	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ श्रावण शुक्ल पक्ष १

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	रा. आ	प्र. श्रा	मु. जि	जुला	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.
प्रवर्ध	१	मं	३९	२०	२१	२४	पु	३७	२	२०	२९	वज्र	२९	४२	१७	३३	किं	११	२२	३३	५५	५	४०	१९	१४	६	३०	६	२९	21	कर्क	३	४	३३	४३
राक्षस	२	बु	३४	१२	१९	२२	श्ले	३३	५५	१९	१५	सि	२३	३	१४	५४	बा	६	४६	३३	५२	५	४१	१९	१३	७	३१	७	३०	22	सिं१९।१५	३	५	३१	०
मूसल	३	गु	२८	२५	१७	३	म	३०	५	१७	४३	व्य	१५	४७	१२	०	तै	१	१८	३३	५०	५	४१	१९	१३	८	१	८	१	23	सिंह	३	६	२८	१९
सिद्धि	४	शु	२२	१०	१४	३४	पूफा	२५	५०	१६	२	वरि	८ ०	८ २०	८ ५	५७ ५०	वि	२२	१०	३३	४८	५	४२	१९	१३	९	२	९	२	24	क.२१।३६	३	७	२५	३७
उत्पात	५	श	१५	५०	१२	२	उफा	२१	२७	१४	१७	परि	५२	३५	२६	४४	बा	१५	५०	३३	४७	५	४२	१९	१२	१०	३	१०	३	25	कन्या	३	८	२२	५६
मानस	६	र	९	३२	९	३२	ह	१७	१२	१२	३६	सि	४४	५७	२३	४२	तै	९	३२	३३	४२	५	४३	१९	१२	११	४	११	४	26	तु.२३।४९	३	९	२०	१६
मुद्गर	७	चं	३	३५	७	९	चि	१३	२०	११	३	सा	३७	४२	२०	४८	व	३	३५	३३	४०	५	४३	१९	१२	१२	५	१२	५	27	तुला	३	१०	१७	३६
तिक्षय	८	चं	५८	५	२८	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०
केतु	९	मं	५३	७	२६	५९	स्वा	९	५०	९	४०	शुभ	३०	५०	१८	४	बा	२५	३६	३३	३७	५	४४	१९	११	१३	६	१३	६	28	वृ.२६।४९	३	११	१४	५६
धाता	१०	बु	४८	५०	२५	१६	वि	७	०	८	३२	शु	२४	३३	१५	३३	तै	२०	५८	३३	३७	५	४४	१९	११	१४	७	१४	७	29	वृश्चिक	३	१२	१२	१७
ए.व्रत	११	गु	४५	७	२३	४९	अनु	४	४५	७	४०	ब्र	१८	४२	१३	१५	व	१६	५८	३३	३०	५	४६	१९	१०	१५	८	१५	८	30	वृश्चिक	३	१३	९	३८
चर	१२	शु	४२	२०	२२	४२	ज्ये	३	१५	७	४	ऐं	१३	३३	११	११	बव	१३	४३	३३	२७	५	४६	१९	९	१६	९	१६	९	31	ध.७।०४	३	१४	७	०
गद	१३	श	४०	२०	२१	५४	मू	२	३२	६	४७	वै	९	०	९	२२	कौ	११	२०	३३	२५	५	४६	१९	८	१७	१०	१७	१०	1	धनु	३	१५	४	२२
शुभ	१४	र	३९	१२	२१	२८	पूषा	२	४०	६	५१	वि	५	७	७	५०	गर	९	४६	३३	२०	५	४७	१९	७	१८	११	१८	११	2	म.१२।५८	३	१६	१	४५
राखी	१५	चं	३९	१०	२१	२८	उषा	३	४५	७	१८	प्री	२ ५१	२ ५३	६ २१	३७ ४५	वि	९	११	३३	१५	५	४८	१९	६	१९	१२	१९	१२	3	मकर	३	१६	५९	९

वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने उत्तरगोले।
ता. २१ जुलाई से ३ अगस्त सन् २०२० ई. तक॥

निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।

इष्टिः, नक्तव्रतारम्भः, स.सि.योग २०।२९से
चन्द्रदर्शनमु.१५,सिंधारा,सा.सिंहेभानुः१४।८,मृग.३राहुःमूल१केतुःA
भ.२७।४८से, **हरियालीतीज़**,मधुश्रवातीज, रा.श्रावणारम्भः, मृगेशुक्रःB
भ.१४।३४तक, विनायकचतुर्थी, वरद४, श्रवणतपजैन, र.यो.१६।२तक
नागपंचमीदेशाचारे,ॐकुरुकुल्येहूँफट्स्वाहा,श्रीअमरनाथयात्रारम्भःC
वर्णश्रृयालषष्ठी,व.पूषा.४गुरुः१५।१०,पुन.बुधः१०।३५,स.सि.यो.D
भ,७।९से१८।३तक,श्रीशीतला७सिन्ध,श्रीदुर्गाष्टमी,तुलसीदासज.,मे.E
अष्टमीक्षयः E नयनादेवीचिन्तपूर्णी(हिप्र.),**सोमवारव्रत**
रवियोग ९।४०से D र.योग १२।३६तक
वाद्ययन्त्रदिवस, स.सि.योग ८।३२से, रवियोग
भ.१२।३३से२३।४९तक,**पवित्राएकादशीव्रत**(सर्वे.),स.सि.यो.७।४०F
मिथुनमेंशुक्र२९।१०,श्रीविष्णुपवित्रार्पणम्,दधित्यागव्रतारम्भः,लक्ष्मीव्रतG
प्रदोषव्रत,अगस्त८ता.३१,**कर्केबुधः**२७।३०,**ईदुलजुहा(बकरीद)**H
भ.२१।२८से,**आश्लेषांरविः**२१।२८,चं.चं.स्त्री-पु.वर्षावाहनमेष वर्षाK
भ.९।२८तक,अन्वा.,**पूर्णिमाव्रत,रक्षाबन्धन** भद्रोत्तर,श्रावणीउपाकर्मM
C मे.जैत(मथुरा), श्रीकल्किजयंती, र.योग १४।१७से

A ११।३१,स्वा.करपात्रीज. B १९।५८,जिल्हेज१२,स्वर्णगौरीव्रत,झूलाप्रारम्भ,श्रीतिलक-चन्द्रशेखरज.,र.यो.१७।४३से F तक,र.यो.७।४०तक G हज्ज,पवित्रा११व्रतनिम्बार्क H तिलकपुण्यःर.यो.६।४७से
K सामान्य हो,स.सि.यो.६।५१से,र.यो. M पुष्येबुधः२४।२५,ऋषितर्पण,गायत्रीज.,श्रीअमरनाथदर्शन,संस्कृतदिवस,कोकिलाव्रतपूर्ण,हयग्रीवोत्पत्ति,भदैनीमंदिनपूजादर्शन,बंगवालोत्सव(उ.खं.),**सोमवारव्रत**,स.सि.यो.

श्रावण शु.७ चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३४०० **॥ फलम् ॥** **श्रावण शु.१५ चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३४०७**

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	३	६	११	२	८	१	९	२	८
अं.	१०	३	२१	२०	२६	२५	४	३	३
क.	१७	२१	४६	५९	३५	५५	३	४	४
वि.	३६	३२	२०	२६	४४	२१	१८	४५	४५
गति	५७ २०	८५० ९	२८ २५	८० २०	७ १६	४७ ३५	४ २४	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	पुष्य ३	चित्रा ४	रेव. २	पुन. १	पूषा. ४	मृग. १	उषा. ३	मृग. ३	मूल १
नाड़ी	भूमि	भूमि	पाताल	स्वर्ग	भूमि	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धिःस्यात् सुखं भवति सर्वदा॥ कृषिकार्यों में पर्याप्त उन्नति से पैदावार बढ़ेगी। कल-कारखानों में उत्पादनवृद्धि सौख्यसमृद्धि का कारण बनेगी। जनता में सौहार्दपूर्ण मैत्री की भावना बढ़ेगी। गुरु+केतु तथा राहु+शुक्र विरोधी ग्रह संयोग मास पर्यन्त समसप्तक योग में चलेगा। साम्प्रदायिक झगड़े-झमेले खूब होंगे। धर्म के नाम पर अत्याचार बढ़ेंगे। **देवगुरु के सामने, जब चलते शुक्राचार। धर्मविरोधी मर मिटें, करते पापाचार॥** पश्चिमोत्तर सीमा पर तनाव बढ़ेगा। कश्मीर समस्या तथा मन्दिर, मस्जिद विवाद का निवारण नहीं हो पायेगा। **तेजी मन्दी विचार-** चन्द्रदर्शनमु.१५ तेजीकारक है। धनु का गुरु गेंहू, जौं, चना, मटर, मेवाओं में तेजी करेगा। तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, चीनी, बूरा में मन्दी सम्भव है- **धनु राशिस्थे जीवे गोधूमादि महर्घता। वर्षाकाले भवेतत्र समर्घं च तिलं गुड़म्॥** धातु, मैटेरियल, वस्त्र, वारदाना, सर्राफा, शेयरबाजार ऊपर-नीचे होता रहेगा। **आकाशलक्षण-** पक्ष के आरम्भ और अन्त में मौसम खराब होगा। तीव्रवायुवेग, मेघगर्जन, बिजली, गाज कहीं वर्षाधिक्य से क्षति सम्भव है। जिस वर्ष आर्द्राप्रवेश रात्रि में होता है, उस वर्ष वर्षाकाल में पर्याप्त वर्षा हुआ करती है। वर्षा वाहन महिष से पूर्व उत्तर में वर्षा अधिक बाढ़ की सम्भावना जानें। रक्षाबन्धन- सोमवार में ९।२८ के बाद करें- **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥**

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहा
३	९	११	३	८	२	९	२	८	रा.
१६	९	२४	१	२५	१	३	२	२	अं.
५९	०	५६	५३	४६	४३	३२	४२	४२	क.
९	२८	५३	५५	३२	३५	५८	२१	२१	वि.
५७ २५	७७३ २३	२५ ३३	१०८ ५५	६ ४०	५२ २३	४ १४	३ ११	३ ११	गति
मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.	स्थिति
श्ले. १	उषा. ४	रेव. ३	पुन. ४	पूषा. ४	मृग. ३	उषा. ३	मृग. ३	मूल १	नक्षत्रचार
पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग	भूमि	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग	नाड़ी

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने उत्तरगोले। ता. ४ से १९ अगस्त सन् २०२० ई.तक ॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा.श्रा	प्र.श्रा	मु.जि	अंग्रे.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
लुंबक	१	मं	४०	१५	२१	५४	श्र	५	५५	८	१०	सौ	५८	३५	२९	१४	बा	९	४२	३३	१५	५	४८	१९	६	२०	१३	२०	१३	4	कु.२० ।५०	३	१७	५६	३४	इष्टि:, **पंचकप्रा.**२० ।५०, श्रवणतपपूर्ण
मित्र	२	बु	४२	३२	२२	५०	ध	९	१०	९	२९	शो	५८	१२	२९	६	तै	११	२३	३३	१०	५	४९	१९	५	२१	१४	२१	१४	5	कुम्भ	३	१८	५३	५९	अशून्यव्रतपूर्ण, **बुधास्त पूर्वस्यां** १७ ।१३
वज्र	३	गु	४६	३	२४	१४	शत	१३	४०	११	१७	अ	५८	४७	२९	२०	व	१४	१७	३३	१०	५	४९	१९	५	२२	१५	२२	१५	6	कुम्भ	३	१९	५१	२६	भ.११ ।३२से२४ ।१४तक,कज्जलीतीज,सातूड़ीतीज,व्र.उषा.२शनि.७ ।२१
ध्वांक्ष	४	शु	५०	४०	२६	६	पूभा	१९	१५	१३	३२	सु	६०	०	–	–	बव	१८	२१	३३	५	५	५०	१९	४	२३	१६	२३	१६	7	मी.६ ।५८	३	२०	४८	५३	**बहुलाचतुर्थीव्रत**, चन्द्रोदय२१ ।३९, टैगोरपुण्य:
धूम्र	५	श	५६	१०	२८	१८	उभा	२५	५२	१६	११	सु	०	१०	५	५४	कौ	२३	२५	३३	२	५	५०	१९	३	२४	१७	२४	१७	8	मीन	३	२१	४६	२२	आर्द्रायांशुक्र:१७ ।५६
प्रवर्ध	६	र	६०	०	–	–	रे	३३	५	१९	५	धृ	२	१०	६	४३	गर	२९	८	३२	५८	५	५१	१९	२	२५	१८	२५	१८	9	मे.११ ।५	३	२२	४३	५३	**पंचकस.**११ ।५, **हल-चन्दन षष्ठीव्रत** चन्द्रोदय२२ ।३८,ललहीछटिA
राक्षस	६	चं	२	७	६	४२	अ	४०	३५	२२	५	शू	४	३५	७	४१	व	२	७	३२	५५	५	५१	१९	१	२६	१९	२६	१९	10	मेष	३	२३	४१	२४	भ.६ ।४२से१९ ।५४तक, आश्ले.बुध:१९ ।५०, रवियोग २२ ।५तक
मूसल	७	मं	८	५	९	६	भर	४७	४०	२४	५६	गंड	६	५५	८	३८	बव	८	५	३२	५०	५	५२	१९	०	२७	२०	२७	२०	11	मेष	३	२४	३८	५७	श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत स्मा. चन्द्रउदय२३ ।४१, संतज्ञानेश्वरज., गुरुB
सिद्धि	८	बु	१३	३०	११	१६	कृ	५३	५२	२७	२५	वृ	८	५०	९	२४	कौ	१३	३०	३२	४७	५	५२	१८	५९	२८	२१	२८	२१	12	वृ.७ ।३३	३	२५	३६	३१	**श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतोत्सव** वैष्णव चन्द्रोदय २४ ।१८, स.सि.योग
उत्पात	९	गु	१७	४२	१२	५८	रो	५८	४०	२९	२१	ध्रु	९	५०	९	४९	गर	१७	४२	३२	४३	५	५३	१८	५८	२९	२२	२९	२२	13	वृष	३	२६	३४	७	भ.२५ ।३०से, **गोगानवमी** नन्दोत्सव: नन्दगाँव, **रोहिणीव्रत**
मानस	१०	शु	२०	२०	१४	१	मृग	६०	०	–	–	व्या	९	४०	९	४५	वि	२०	२०	३२	४०	५	५३	१८	५७	३०	२३	३०	२३	14	मि.१७ ।५८	३	२७	३१	४४	भ.१४ ।१तक
ए.व्रत	११	श	२१	५	१४	२०	मृग	१	४२	६	३५	ह	८	२	९	७	बा	२१	५	३२	३७	५	५४	१८	५७	३१	२४	३१	२४	15	मिथुन	३	२८	२९	२३	**अजाएकादशीव्रत**(सर्वे.), ७४वाँ **भा.स्वतन्त्रतादिवस**, ध्वजारोहणम्
ध्वांक्ष	१२	र	१९	५०	१३	५०	आ	२	५०	७	२	वज्र	४	५३	७	५१	तै	१९	५०	३२	३५	५	५४	१८	५६	१	२५	१	२५	16	क.२४ ।४८	३	२९	२७	३	गोवत्सपूजा, **प्रदोषव्रत**, अश्विनीमेषमें मंगल१८ ।३०, मघासिंहमें सूर्यC
धूम्र	१३	चं	१६	४०	१२	३५	पुन	२/५१	०/२७	६/२१	४३/४२	सि	०/५३	७/५८	५/२७	५८/३०	व	१६	४०	३२	३०	५	५५	१८	५५	२	२६	२	२६	17	कर्क	४	०	२४	४५	भ.१२ ।३५से२३ ।३७तक,छटीपूजन,मघासिंहेबुध:८ ।३०,कलियुगादि:D
आनंद	१४	मं	११	५०	१०	३९	श्ले	५५	३०	२८	७	वरि	४६	३५	२४	३३	श	११	५०	३२	२७	५	५५	१८	५४	३	२७	३	२७	18	सिं.२८ ।७	४	१	२२	२८	अन्वा., अघोराचौदस, कैलाशयात्रा(क.), स.सि.योग
मावस	३०	बु	५	३७	८	११	म	५०	२५	२६	६	परि	३८	१५	२१	१४	ना	५	३७	३२	२३	५	५६	१८	५३	४	२८	४	२८	19	सिंह	४	२	२०	१२	इष्टि:कुशाग्रहणी**पिठोरी**३०,सतीपूजा,अग्रवंशे,लोहार्गलयात्रा,कल्पसूत्रE

A हरिछटि(पूजागोरखपुर),भा.क्रांतिदिवस,र.यो.स.सि.यो.११ ।५से बछबारस, जयंतीमहाद्वादशी
B जम्भेश्वरजयंती,आद्यकालीजयंती,स.सि.यो.२४ ।५६से,द्रोणमे.दनकौर
C ११ ।१२,संक्रांतिमु.४५, बंगवसौरभाद्रपदप्रा., पर्यूषणपर्वजैन,
D मासशिवरात्रि, तेजीमन्दीसूचकांक२३९७, चं.चं.स्त्री-स्त्री,वर्षावाहन महिष अतिवृष्टि बाढ़,स.सि.योग
E पाठ जैन, मेला सुथरेशाह दिल्ली

भाद्रपद कृ.८ बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४१६

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	३	०	११	३	८	२	९	२	८
अं.	२५	२८	२८	१९	२४	९	२	२	२
क.	३६	५६	२९	३२	५०	५५	५६	१३	१३
वि.	३१	२	२२	४	४४	१०	९	५२	५२
गति	५७ ३६	७२६ २०	२१ ०	१२३ ७	५ ३३	५७ ८	३ ५३	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	श्ले. ३	कृति.१	रेव. ४	श्ले. १	पूषा.४	आर्द्रा१	उषा. २	मृग. ३	मूल १
नाड़ी	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥ के अनुसार मास में पांच मंगलवार नेष्ट हैं। देश-विदेश के विभिन्न भागों में जहाँ-तहाँ दंगे-फसाद होंगे। रक्तरंजित धरा अकुलायेगी। राजाओं में परस्पर वैर-विरोध बढ़ेगा। मध्यावधि चुनाव की आवाज बुलन्द होगी। उठा-पटक के चलते कहीं भारी परिवर्तन हो सकता है। ध्वजारोहण के आसन्न सरकार को सचेत रहना चाहिये। **गुरु शुक्र सम सप्तक, राहु केतु के संग। अनहोनी होवे तभी होय किसी से जंग॥** विरोधी ग्रह प्रतियोग के चलते कब-कहाँ अनहोनी हो जाए, कुछ नहीं कहा जा सकता। **तेजी मन्दी विचार-** पक्ष के आरम्भ में बाजार भाव स्थिर रह सकते हैं। पक्षान्ते सिंह का बुध अनाज, धातुएं, लकड़ी, बिल्डिंग मैटेरियल, शिक्षा सामग्री में तेजी करेगा- **सिंह राशौ बुध:स्याच्चेत महर्घं प्रभवेत्तदा॥** द्वादशी में बैठी सिंह संक्रांति मु.४५ मन्दी का संकेत है। अनिश्चित माहौल में व्यापार सामर्थ्यानुसार ही करें। **आकाशलक्षण-** द्वितीया में बुध अस्त तथा द्वादशी में मंगल सूर्य संचार के प्रभाव में मौसम खराब होगा- **उदयास्तगत: शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारक:। चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधावृष्टि: शनैश्चरे॥** के अनुसार जहाँ- तहाँ न्यूनाधिक वर्षा होगी। दक्षिण, पूर्व एवं उत्तर संभागों में आंधी-तूफान, मेघाडम्बर, अतिवृष्टि, बाढ़, झन्झावात से क्षति के योग बन रहे हैं। यान-खान रेलादि कुघटनाचक्र, भूकम्प, भूस्खलन की आशंका जाननी चाहिए।

भाद्रपद कृ.३० बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४२३

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहा
४	४	०	४	८	२	९	२	८	रा.
२	०	०	३	२४	१६	२	१	१	अं.
२०	४८	४३	४५	१४	४४	३०	५१	५१	क.
१२	३१	५१	२१	५४	५	३	३७	३७	वि.
५७ ४६	८७४ ३८	१६ ४२	११८ ४२	४ ३०	६० ०	३ ३०	३ ११	३ ११	गति
मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. अ.	व. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.	स्थिति
मघा १	मघा १	अश्वि१	मघा २	पूषा.४	आर्द्रा४	उषा.२	मृग. ३	मूल १	नक्षत्रचार
पाताल	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग	नाड़ी

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११

वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने उत्तरगोले। ता. २० अग. से २ सित. सन् २०२० ई. तक॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा.श्रा	प्र.भा	मु.जि	अंग्रे.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रात:५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
ति.क्षय	१	बु	५८	२७	२९	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	प्रतिपदाक्षय:, नक्तव्रतपूर्ण
गद्	२	गु	५०	४३	२६	१३	पूफा	४४	४५	२३	५०	शि	२९	२०	१७	४०	बा	२४	३५	३२	२०	५	५६	१८	५२	५	२९	५	२९	20	क.२९ ।१४	४	३	१७	५८	चन्द्रदर्शनमु.३०, तैलाधारतपजैन, रामदेवबीजद३५वाँ, रुणीचामेला A
शुभ	३	शु	४२	४२	२३	२	उफा	३८	४७	२१	२८	सि	२०	७	१४	०	तै	१६	४३	३२	१२	५	५७	१८	५०	६	३०	६	१	21	कन्या	४	४	१५	४५	हरितालिकाव्रत, वराहजयंती, मुहर्रम१हिजरीसन्१४४२प्रा.र.यो.२१ ।२८से
मृत्यु	४	श	३५	०	१९	५७	ह	३३	२	१९	१०	सा	१०	५८	१०	२०	व	८	५१	३२	१०	५	५७	१८	४९	७	३१	७	२	22	कन्या	४	५	१३	३३	भ.९ ।२९से१९ ।५७तक, उपाकर्म, **श्रीगणेशजयंती**, पत्थरचौथ, **कलंकचौथ** B
पद्म	५	र	२७	४५	१७	४	चि	२७	४७	१७	५	शुभ	२/५३	२/४८	६/२७	४७/२९	बव	१	२२	३२	५	५	५८	१८	४८	८	१	८	३	23	तु.६ ।०८	४	६	११	२३	ऋषिपंचमीजैनसंवत्सरी, क्षमावाणीपर्व, पर्युषणप्रा., रा.भाद्रपदारम्भ:, C
छत्र	६	चं	२१	२२	१४	३१	स्वा	२३	२२	१५	१९	ब्र	४६	१५	२४	२८	तै	२१	२२	३२	२	५	५८	१८	४७	९	२	९	४	24	तुला	४	७	९	१४	**सूर्यषष्ठी**, बलदेव६, हल६, लोलार्कछटिमे.वाराणसी, र.यो.१५ ।११तक
श्रीवत्स	७	मं	१५	५५	१२	२१	वि	१९	५७	१३	५८	ऐं	३९	३३	२१	४८	व	१५	५५	३१	५७	५	५९	१८	४६	१०	३	१०	५	25	वृ.८ ।१८	४	८	७	६	भ.१२ ।२१से २५ ।३०तक, मुक्ताभरण-**सन्तानसप्तमी, दूर्वाष्टमीव्रत**
सौम्य	८	बु	११	४०	१०	३९	अनु	१७	४०	१३	३	वै	३३	५०	१९	३१	बव	११	४०	३१	५५	५	५९	१८	४५	११	४	११	६	26	वृश्चिक	४	९	४	५९	म.लक्ष्मीव्रतप्रा.३दिन.**श्रीराधाष्टमीव्रतोत्सव**:श्रीदधीचज., स्वामीहरिदास D
कालदं	९	गु	८	३२	९	२५	ज्ये	१६	३०	१२	३६	वि	२९	०	१७	३६	कौ	८	३२	३१	५०	६	०	१८	४४	१२	५	१२	७	27	ध.१२ ।३६	४	१०	२	५३	**श्रीचन्दनवमी** जन्मोत्सव उदासीनसंप्रदाय, श्रीभागवतसप्ताहशुरु, र.यो.
स्थिर	१०	शु	६	३५	८	३८	मू	१६	३०	१२	३६	प्री	२५	७	१६	३	गर	६	३५	३१	४७	६	०	१८	४३	१३	६	१३	८	28	धनु	४	११	०	४९	भ.२० ।२९से, नवलदुर्गेमे.रामदेवजी.तेजा१०धूप१०जैन, र.यो.१२ ।३६तक
ए.व्रत	११	श	५	४०	८	१७	पूषा	१७	३२	१३	२	आ	२२	२	१४	५०	वि	५	४०	३१	४२	६	१	१८	४२	१४	७	१४	९	29	म.१९ ।१४	४	११	५८	४६	भ.८ ।१७तक, पद्मा-**जलझूलनी एकादशीव्रत**(सर्वे) श्रीवामनजयंती E
अमृत	१२	र	५	५०	८	२१	उषा	१९	३५	१३	५१	सौ	१९	४८	१३	५६	बा	५	५०	३१	४०	६	१	१८	४१	१५	८	१५	१०	30	मकर	४	१२	५६	४४	दधित्यागव्रतपूर्ण, **प्रदोषव्रत, पूफायां रवि:१५ ।६, ताजिया**, सू.चं. F
सिद्धि	१३	चं	६	५५	८	४८	श्र	२२	३२	१५	३	शो	१८	१७	१३	२१	तै	६	५५	३१	३७	६	२	१८	४१	१६	९	१६	११	31	कु.२७ ।५०	४	१३	५४	४४	**पंचकप्रा.२७ ।५०**, डोंगालीलाबरसाना, **कर्केशुक्र:२६ ।३, बुधोदयपश्चि.** G
उत्पात	१४	मं	८	५७	९	३८	ध	२६	२५	१६	३७	अति	१७	३०	१३	३	व	८	५७	३१	३२	६	३	१८	४०	१७	१०	१७	१२	1	कुम्भ	४	१४	५२	४५	भ.९ ।३८सेर२ ।१४तक, अन्वा.**सित.१**ता.३०, अनन्त१४, गणपतिविसर्जन H
पूर्णिमा	१५	बु	१२	०	१०	५१	शत	३१	१५	१८	३३	सु	१७	२८	१३	२	बव	१२	०	३१	३०	६	३	१८	३९	१८	११	१८	१३	2	कुम्भ	४	१५	५०	४८	इष्टि:, **प्रौष्ठपदीपूर्णिमा**, महालयारम्भ:, **कन्यायांबुध:१२ ।४**

G २८ ।१०, उफायांबुध:१३ ।१०, **ओनमपर्व**, स.सि.यो., र.यो.१५ ।३से १६ ।३७तक

A जैसलमेर, शंकरदेवतिथिअसम B चन्द्रदर्शननिषेध, सा.कन्यायांभानु:२१ ।१६, शरदऋतुप्रा., पुन.शुक्र:११ ।२१, शिवा४, र.यो.१९ ।१०तक C पूफायांबुध:२८ ।१, र.यो.१७ ।५से D जयंती, स.सि.यो.१३ ।३तक, र.यो.१३ ।३से

E कत्लरातमुस.दौलग्यारस, फूलडोलमे.चारभुजाजीमेवाड़, कटिपरिवर्तनोत्सव:, अगस्तोदय: F स्त्री-पु.वर्षावाहन मंडूक वर्षाधिक्य हो, स.सि.यो.१३ ।५१तक, र.यो.१३ ।५१से१५ ।६तक H सत्यव्रत

भाद्रपद शु.८ बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४३०

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	४	७	०	४	८	२	९	२	८
अं.	९	१२	२	१७	२३	२३	२	१	१
क.	४	४८	२६	१०	४६	५१	६	२९	२९
वि.	५९	४९	१७	३६	५७	७	५६	२१	२१
गति	५७	८२०	११	१०९	३	६२	३	३	३
	५४	१७	५०	५२	१८	१७	२	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	मघा ३	अनु. ३	अश्वि१	पूफा.२	पूषा.४	पुन.२	उषा.२	मृग.३	मूल १
नाड़ी	पाताल	भूमि	स्वर्ग	भूमि	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

बुधस्य पंचवारा:स्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥ प्रजा में सुख शान्ति का संचार होगा। उद्योगों में उत्पादन बढ़ने, खेती में पैदावार अच्छी होने से सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। गुरु शुक्र का सम सप्तक योग एवं शनिवारी एकादशी नेष्ट है- **एकादश्यां शनौ तस्मिञ्छत्रभंगोऽथवा भुवि। नगर ग्राम भंग:स्या द्वैरिचौराद्युपद्रवा॥** के अनुसार देश-विदेश प्रदेशों में कहीं भी राजनैतिक उपद्रवों के चलते सत्ता पलट सकती है। हालात खराब हो सकते हैं। चोर, उचक्के, लफंगे, असमाजिकतत्त्व, आतंकी मनमर्जी करते फिरेंगे। स्त्री जाति का अपमान असहनीय होगा। **तेजी मन्दी विचार-** चन्द्रदर्शनमु.३० साम्यार्घकारक है। तिथियों की घटा-बढ़ी का फल- **कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥** किसी महानगर, प्रदेश विशेष में उपयोगी वस्तुओं की भारी कमी से त्राहि-त्राहि मचेगी। महंगाई वृद्धि का व्यापारी फायदा उठायेंगे। **आकाशलक्षण-** पक्षान्तर्गत कभी कहीं आकाश स्वच्छ तो कभी कहीं मेघाडम्बर, विद्युत्पात वायुवेग झञ्झावात के चलते दुर्दिन होंगे। मासान्त में बुधोदय उपद्रव करेगा- **नोत्पात परित्यक्त: कदाचिदपि चन्द्रजो वज्रत्युदयम्। जलदहन पवनभय कृन्धान्यर्घ क्षय: विवृद्धयैर्वा॥** बचावकार्यों के लिए सचेत रहें। **श्रीराधाष्टमी व्रतोत्सव-** २६ अगस्त बुधवार में सम्पन्न किया जायेगा। विधिपूर्वक व्रत करने वाले वज्र का रहस्य जान लेने में सक्षम हो जाते हैं।

भाद्रपद शु.१५ बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४३७

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१०	०	४	८	३	९	२	८
अं.	१५	१३	३	२१	२३	१	१	१	१
क.	५०	१७	३२	३२	२७	१३	४७	७	७
वि.	४८	५६	५३	१८	४१	५	२०	६	६
गति	५८	७३५	६	१००	२	६४	२	३	३
	४	४७	२१	५२	१	१४	२९	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूफा.१	शत.२	अश्वि२	उफा.१	पूषा.४	पुन.४	उषा.२	मृग.३	मूल १
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्रीसम्वत् २०७७ शाके १९४२ प्र.आश्वि. कृष्ण पक्ष १२

शरदृतु, रविदक्षिणायने, उत्तरगोले। ता. ३ से १७ सितम्बर सन् २०२० ई. तक॥

योग	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा.भा	प्र.भा	मु.मु	सितं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
मुद्गर	१	गु	२५	५५	१२	२६	पूभा	३६	५५	२०	५०	धृ	१८	७	१३	१९	कौ	१६	०	३१	२५	६	४	१८	३८	१९	१२	१९	१४	3	मी.१४।२६	४	१६	४८	५२	पितरपक्षारम्भः, प्रतिपदाश्राद्धं, पुष्येशुक्रः२८।४८
केतु	२	शु	२०	४३	१४	२३	उभा	४३	२७	२३	२७	शूल	१९	२८	१३	५१	गर	२०	४७	३१	२०	६	४	१८	३६	२०	१३	२०	१५	4	मीन	४	१७	४६	५८	भ.२७।३१, द्वितीयाश्राद्धं, स.सि.योग २३।२७से
धाता	३	श	२६	२३	१६	३८	रे	५०	३३	२६	२०	गंड	२१	२२	१४	३८	वि	२६	२३	३१	१५	६	५	१८	३५	२१	१४	२१	१६	5	मे.२६।२०	४	१८	४५	६	भ.१६।३८तक, **पंचकस.**२६।२०, तृतीयाश्राद्धं, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदयA
आनंद	४	र	३२	३२	१९	६	अ	५८	१५	२९	२३	वृ	२३	४५	१५	३५	बा	३२	३२	३१	१३	६	५	१८	३४	२२	१५	२२	१७	6	मेष	४	१९	४३	१६	चतुर्थीश्राद्धं, व.पूषा.३गुरुः२२।३२, स.सि.योग
चर	५	चं	३८	५०	२१	३८	भर	६०	०	-	-	ध्रु	२६	१५	१६	३६	कौ	५	४१	३१	७	६	६	१८	३३	२३	१६	२३	१८	7	मेष	४	२०	४१	२७	पंचमीश्राद्धं
मूसल	६	मं	४४	५०	२४	२	भर	५	४३	८	२५	व्या	२८	३५	१७	३२	गर	११	५०	३१	२	६	६	१८	३१	२४	१७	२४	१९	8	वृ.१५।१७	४	२१	३९	४१	भ.२४।२से, षष्ठीश्राद्धं, हस्तेबुधः१५।५२, साक्षरतादि. स्वा.शिवानंदज.B
सिद्धि	७	बु	४९	५५	२६	५	कृ	१२	४३	११	१४	ह	३०	२०	१८	१५	वि	१७	२२	३०	५८	६	७	१८	३०	२५	१८	२५	२०	9	वृष	४	२२	३७	५६	भ.१३।४तक, सप्तमीश्राद्धं, पन्तजयंती, सौभाग्यसूचकरोहिणीव्रत, स.सि.C
उत्पात	८	गु	५३	३७	२७	३४	रो	१८	४८	१३	३८	वज्र	३१	१०	१८	३५	बा	२१	४६	३०	५५	६	७	१८	२९	२६	१९	२६	२१	10	मि.२६।३१	४	२३	३६	१४	जीवित्पुत्रिकाव्रतं, अष्टमीश्राद्धं, **वक्रीभौमः**६।१०, श्रीरामानुजाचार्यज.
मानस	९	शु	५५	२८	२८	१९	मृ	२३	१०	१५	२४	सि	३०	३८	१८	२३	तै	२४	३२	३०	४७	६	८	१८	२७	२७	२०	२७	२२	11	मिथुन	४	२४	३४	३४	मातृनवमी, सौभाग्यवतीनांश्राद्धं, श्रीविनोबाज.
मुद्गर	१०	श	५५	१५	२८	१४	आ	२५	४०	१६	२४	व्य	२८	३२	१७	३३	व	२५	२१	३०	४५	६	८	१८	२६	२८	२१	२८	२३	12	मिथुन	४	२५	३२	५६	भ.१६।१६से २८।१४तक, दशमीश्राद्धं
ए.व्रत	११	र	५२	४७	२७	१६	पुन	२६	०	१६	३३	वरि	२४	४३	१६	२	वव	२४	१	३०	४१	६	९	१८	२५	२९	२२	२९	२४	13	क.१०।३१	४	२६	३१	१९	इन्दिराएकादशीव्रतस्मा.-वैष्णवानां, ग्यारसश्राद्धं, **उफायांरविः**९।२D
धाता	१२	चं	४८	२०	२५	२९	पु	२४	१५	१५	५१	परि	१९	१५	१३	५१	कौ	२०	३३	३०	३७	६	९	१८	२४	३०	२३	३०	२५	14	कर्क	४	२७	२९	४५	इन्दिराएकादशीव्रत बल्लभ-निम्बार्क, द्वादशीश्राद्धं, सन्यासीनांश्राद्धं,E
आनंद	१३	मं	४२	५	२३	०	श्ले	२०	३५	१४	२४	शि	१२	७	११	१	गर	१५	१२	३०	३२	६	१०	१८	२३	३१	२४	३१	२६	15	सिं.१४।२४	४	२८	२८	१४	भ.२३।०से, **भौमप्रदोषव्रत**, त्रयोदशीश्राद्धं, इन्जीनियर्सडे, स.सि.यो.१४।२४तक
चर	१४	बु	३४	२५	१९	५६	म	१५	२५	१२	२०	सि	३ / ५४	४२ / १८	७ / २७	३९ / ५३	वि	८	१५	३०	२७	६	१०	१८	२१	१	२५	१	२७	16	सिंह	४	२९	२६	४४	भ.९।२८तक, श्ले.शुक्रः७।४५, दुर्मरणश्राद्धं, चतुर्दशीश्राद्धं, कात्यायनीज.F
मावस	३०	गु	२५	४५	१६	२९	पूफा	९	०	९	४७	शुभ	४४	८	२३	५०	च	०	५	३०	२२	६	११	१८	२०	२	२६	२	२८	17	क.१५।५	५	०	२५	१६	अन्वा., **सर्वपितृअमावस्या श्राद्धं**, तर्पणञ्च, पितरविसर्जन, चित्रायांG

G बुधः१६।४६, **विश्वकर्मापूजा, तेजीमन्दीसूचकांक** १५००

A २०।३९, **शिक्षकदिवस**, शान्तिदिवस
सू.चं., स्त्री-स्त्री वर्षावाहनचातक वर्षाधिक्य हो, स.सि.यो.१६।३३से
B र.यो. स.सि.यो.८।२५से
C योग, र.यो.११।१४तक
D **मार्गीगुरुः**६।१३, श्रीरामबरातमे.आगरा,
E हिन्दीदिवस, स.सि.यो.१५।५१तक
F **कन्यामें सूर्य** १९।८, संक्रांतिमु.३०, बंग व सौर आश्विनप्रा.

प्र.आश्विन कृ.८ गुरौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३४४५

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	४	१	०	५	८	३	९	२	८
अं.	२३	१९	४	१२	२३	९	१	०	०
क.	३६	१०	०	२५	१६	५३	२९	४१	४१
वि.	१४	४३	४	३८	५३	४८	४९	४०	४०
गति	५८ / २०	७३८ / १३	० / २३	९१ / २३	० / ३०	६६ / ८	१ / ४८	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / उ.	मा. / उ.	व. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचार	पूफा.४	रोहि.३	अश्विर	हस्त१	पूषा.३	पुष्य२	उषा.२	मृग.३	मूल१
नाड़ी	भूमि	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम शनैश्चरो। तदात्वग्निभयं विद्यादर्थवान्न महर्घता॥ शनिवारी तृतीया अग्निभय विषाद को बढ़ाने वाली है। विद्या अन्नादि में तेजी का चक्र चलेगा। प्रभावी देश छोटे देशों की सहायता से मना करेंगे। जिस वर्ष दो आश्विन मास होते हैं, उस वर्ष वर्षा अधिक होती है। अन्नादि की कमी पड़ने से जनता में त्राहि-त्राहि मचती है। विदेशों से आदान-प्रदान न के बराबर हो पाता है। करक मकर में शुक्र शनि का प्रतियोग सीमा विवाद को जन्म देने वाला है। कश्मीर समस्या और भी उलझ सकती है। सुरक्षा प्रहरियों को सैन्यबल वृद्धि कर लेनी चाहिए। **तेजी मन्दी विचार**- कन्या का बुध सोना, चांदी, गुड़, शक्कर में तेजी करेगा- **कन्या राशि गते बुधे कांचनं शुद्ध शर्करा:। मासे षष्ठे ददेल्लाभं पुनः सस्तो भविष्यति॥** खाद्यसामग्री संग्रह करने वालों को आगे चलकर लाभ होगा। ता.१० मंगल वक्री ता.१३ गुरु मार्गी होकर भावों में घट-बढ़ करेगा। चौदस में ऊभी कन्या की संक्रांतिमु.३० साम्यार्घकारक है। भाव अनिश्चित रहेंगे। **आकाशलक्षण**- कभी कहीं आकाश स्वच्छ तो कहीं बादलों से घिरा रहेगा। समुद्री तूफान, बवंडर का संयोग बनेगा। पूर्वी-उत्तरी क्षेत्र अतिवृष्टि भयंकर बाढ़ की चपेट में आ सकते हैं। **प्रायो ग्रहाणा मुदयास्तकाले समागमे मण्डलसंक्रमे च। पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्ध्रुवैं नियमेन चार्द्राम्॥** अगस्तोदय के बाद वर्षा बन्द हो जाती है, अन्यथा चौतरफा अतिवृष्टि क्षति का कारण बनती है।

प्र.आश्विन कृ.३० गुरौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३४५२

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	४	०	५	८	३	९	२	८
अं.	०	२३	३	२२	२३	१७	१	०	०
क.	२५	५७	३७	४०	१७	४१	१९	१९	१९
वि.	१६	३७	५४	५६	३०	०	९	२४	२४
गति	५८ / ३४	९०४ / ४८	६ / ४१	८३ / ७	० / ५२	६७ / ३१	१ / ९	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / अ.	व. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचार	उफा.२	पूफा.४	अश्विर	हस्त४	पूषा.३	श्ले.१	उषा.२	मृग.३	मूल१
नाड़ी	स्वर्ग	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्रीसम्वत् २०७७ शाके १९४२ प्र.आश्विन शुक्ल पक्ष१३

शरदृतु, रविदक्षिणायने उत्तरगोले। ता.१८ सित. से १ अक्टूबर सन् २०२० ई. तक॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा.भा	प्र.आ	मु.मु	सित.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
शुभ	१	शु	१६	३७	१२	५०	उफा	२/५४	०/४७	६/२८	५९/६	शु	३३	४५	११	४१	बव	१६	३७	३०	२०	६	११	१८	१९	३	२७	३	२९	18	कन्या	५	१	२३	५०	इष्टि, **पुरुषोत्तममास प्रारम्भः**, चन्द्रदर्शनमु.३०
काण	२	श	७	२५	९	१०	चि	४७	४८	२५	११	ब्र	२३	२२	१५	३३	कौ	७	२५	३०	१५	६	१२	१८	१८	४	२८	४	१	19	तु.१४।४३	५	२	२२	२६	पूषा.४गुरु:१८।२९, सफर मासर, र.यो. व स.सि.योग १५।२३से
ति.क्षय	३	श	५८	३५	२९	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	तृतीयाक्षयः
लुंबक	४	र	५०	३५	२६	२६	स्वा	४१	३७	२२	५१	ऐं	१३	३०	११	३६	व	२४	३५	३०	१३	६	१२	१८	१७	५	२९	५	२	20	तुला	५	३	२१	३	भ.१६।२से २६।२६तक, रवियोग २२।५१तक
मित्र	५	चं	४३	४२	२३	४२	वि	३६	२८	२०	४८	वै	१३ ४/५६	३० २०/१२	११ ७/२८	३६ ५७/४२	बव	१७	८	३०	७	६	१३	१८	१६	६	३०	६	३	21	वृ.१५।१९	५	४	१९	४३	र.योग व स.सि.योग २०।४८से
वज्र	६	मं	३८	१३	२१	३०	अनु	३२	४०	१९	१७	प्री	४९	१५	२५	५५	कौ	१०	५७	३०	५	६	१३	१८	१४	७	३१	७	४	22	वृश्चिक	५	५	१८	२४	सा.तुलायांभानु:१९।२, रविदक्षिणगोले, **शरदसम्पात**(विषुवदिन)A
ध्वांक्ष	७	बु	३४	१७	१९	५६	ज्ये	३०	२७	१८	२४	आ	४३	३३	२३	३८	गर	६	१५	३०	०	६	१३	१८	१३	८	१	८	५	23	ध.१८।२४	५	६	१७	७	भ.१९।५६से, रा.आश्विन्यारम्भः, मृग.२वृषेराहु:ज्ये.४वृश्चिकेकेतु:B
धूम्र	८	गु	३१	५७	१९	१.	मू	२९	४८	१८	९.	सौ	३९	७	२१	५३	वि	३	७	२९	५५	६	१४	१८	१२	९	२	९	६	24	धनु	५	७	१५	५२	भ.७।२९तक, रवियोग १८।९से
प्रवर्ध	९	शु	३१	१३	१८	४३	पूषा	३०	४०	१८	३०	शो	३५	५५	२०	३६	बा	१	३५	२९	५२	६	१४	१८	११	१०	३	१०	७	25	म.२४।४४	५	८	१४	३८	
राक्षस	१०	श	३१	५०	१८	५९	उषा	३२	५५	१९	२५	अति	३३	४८	१९	४६	तै	१	३१	२९	४५	६	१५	१८	९	११	४	११	८	26	मकर	५	९	१३	२६	हस्तेरवि:२४।२८, सू.चं.स्त्री-पु.,वर्षावाहन अश्वसे वर्षा मध्यम हो।C
ए.व्रत	११	र	३३	४५	१९	४६	श्र	३६	२२	२०	४९	सु	३२	४०	१९	२०	व	२	४७	२९	४०	६	१६	१८	८	१२	५	१२	९	27	मकर	५	१०	१२	१६	भ.७।२३से १९।४६तक, **कमला पुरुषोत्तमा एकादशीव्रत**(सर्वे.) D
शुभ	१२	चं	३६	४५	२०	५८	ध	४०	५२	२२	३७	धृ	३२	२२	१९	१३	बव	५	१५	२९	३७	६	१६	१८	७	१३	६	१३	१०	28	कु.९।४३	५	११	११	८	पंचक **प्रा.**९।४३, स्वात्यांबुध:६।२६, श.भगतसिंहजयंती
मृत्यु:	१३	मं	४०	४०	२२	३३	शत	४६	१५	२४	४७	शू	३२	४५	१९	२३	कौ	८	४२	२९	३२	६	१७	१८	६	१४	७	१४	११	29	कुम्भ	५	१२	१०	१	मार्गीशनि:१०।४४, **भौम प्रदोषव्रत**, रवियोग २४।४७ से
पद्म	१४	बु	४५	२०	२४	२५	पूभा	५२	२२	२७	१४	गंड	३३	४७	१९	४८	गर	१३	०	२९	३०	६	१७	१८	५	१५	८	१५	१२	30	मी.२०।३७	५	१३	८	५५	भ.२४।२५से, **बैंक अर्धवार्षिक लेखाबन्दी**, रवियोग २७।१४तक
पूर्णिमा	१५	गु	५०	४०	२६	३४	उभा	५९	५	२९	५६	वृ	३५	१५	२०	२४	वि	१८	०	२९	२५	६	१८	१८	४	१६	९	१६	१३	1	मीन	५	१४	७	५२	भ.१३।३०तक,अन्वा.,**अक्टूबर**१०ता.३१,**सत्यव्रत पूर्णिमा**,रक्तदानदि.E

A दैत्योंका दिनोदय, देवोंका सन्ध्यांश, तुलायांबुध:१६।५७, र.योग १९।१७तक B ८।३०,रात्रिदिनम्समम् C स.सि.यो.११।२५से,र.यो.
D मघा सिंहेशुक्र:२५।२, विश्वपर्यटकदिवस, र.योग २०।४९तक E अ.रा.बुजुर्गदिवस

प्र.आश्विन शु.८ गुरौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४५९ ॥ फलम् ॥ प्र.आश्वि. शु.१५ गुरौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४६६

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	५	८	०	६	८	३	९	१	७
अं.	७	६	२	१	२३	२५	१	२९	२९
क.	१५	१५	३३	५४	२७	३७	१३	५७	५७
वि.	५२	२५	५०	५०	३६	११	८	९	९
गति	५८	७९८	१२	७३	२	६८	०	३	३
	४६	५१	१५	१६	१२	४१	२८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	उफा.४	मूल २	अश्वि१	चित्रा३	पूषा.४	श्ले. ३	उषा. २	मृग. २	ज्ये. ४
नाड़ी	स्वर्ग	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	भूमि	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

१८सित.से १६अक्टू.२०२० तक आश्वि.अधिमास(पुरुषोत्तममास) रहेगा। मलमास देव-पितरपूजा, मंगलकृत्यों के लिए अनुपयोगी कहा जाने लगा, तब वह दु:खित होकर श्री विष्णुलोक बैकुंठधाम में गया। वहाँ अमूल्य सिंहासन पर विराजमान श्रीविष्णुजी को दण्डवत प्रणाम कर अपना दु:ख निवेदित करने लगा। मलमास को दु:खित देखकर भगवान द्रवित हो गये। मेरे इस लोक में तो कोई दु:खी नहीं है, परन्तु तुम परेशान क्यों हो? हे प्रभो! न तो मेरा कोई नाम है, न कोई मेरा स्वामी, ना ही कोई आश्रय इसीलिए भगवन् सब मेरा तिरस्कार करते हैं। तब दीनबन्धु बोले-

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
५	११	०	६	८	४	९	१	७	रा.
१४	४	०	१	२३	३	१	२९	२९	अं.
७	२७	५४	४८	४६	४१	११	३४	३४	क.
५२	१८	२४	२३	५९	११	५६	५३	५३	वि.
५८	७१८	१६	५८	३	६१	०	३	३	गति
५९	५८	३०	५१	३०	४४	१४	११	११	
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	स्थिति
ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	ठ.	अ.	अ.	
हस्त २	उभा.१	अश्वि१	स्वा. १	पूषा.४	मघा २	उषा. २	मृग. २	ज्ये. ४	नक्षत्रचार
स्वर्ग	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग	नाड़ी

वत्सागच्छमया सार्धंगोलोकं योगि दुर्लभम्। यत्रास्ते भगवान् कृष्ण:पुरुषोत्तम ईश्वरः॥ मलमास तुम मेरे साथ गोलोक में चलो, वहाँ भगवान श्री कृष्ण रहते हैं। उस द्रव्यलोक में बुढ़ापा, मृत्यु, शोक, भय आदि-व्याधि किंचित किसी को नहीं है। भगवान् श्रीविष्णु ने मलमास को गोलोक में जाकर श्रीकृष्ण के चरणों में नतमस्तक कराया, भगवान श्रीकृष्ण बोले हे विष्णुजी! आप इसे साथ लेकर आये हैं। अब मैं इसे अपने समान करता हूँ- **अहमेते यथा लोके प्रथितः पुरुषोत्तमः। तथायमपि लोकेषु प्रथितः पुरुषोत्तमः॥** जितने गुण मुझमें हैं, जिनसे मैं विश्व में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। उसी प्रकार मलमास भी पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध होगा। मैं स्वयं इस मास का स्वामी हो गया हूँ। व्रत उपवास, पूजा, यज्ञ, दानपुण्य, स्नान, ध्यान, नित्यनैमित्तिक कर्म सब इसमें अनन्त फल देने वाले होंगे।

श्रीसम्वत् २०७७ शाके १९४२ द्वि.आश्विन कृष्णपक्ष १४

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	रा. आ	प्र. आ	मु. स	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	शरदृतु, रविदक्षिणायने दक्षिणगोले। ता.२ से १६ अक्टूबर सन् २०२० ई. तक॥ निम्नलिखित धड़ा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टै.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
श्रीवत्स	१	शु	५६	३५	२८	५६	रेव	६०	०	–	–	ध्रु	३७	१२	२१	११	बा	२३	३७	२९	२२	६	१८	१८	३	१७	१०	१७	१४	2	मीन	५	१५	६	५१	श्रीगांधीजी व शास्त्रीजी जयंती, स.सि.योग
धाता	२	श	६०	०	–	–	रेव	६	१३	८	५०	व्या	३१	२७	२२	६	तै	२९	४१	२९	१५	६	१९	१८	१	१८	११	१८	१५	3	मे.८।५०	५	१६	५	५२	पंचक समाप्त ८।५०
आनंद	२	र	२	४३	७	२३	अ	१३	४३	११	५१	ह	४१	५२	२३	५	गर	२	४३	२९	१०	६	२०	१८	०	१९	१२	१९	१६	4	मेष	५	१७	४	५५	ध.२०।४८से, वक्री रेव.४ मीनमें मंगल१०।५, पशुकल्याणादि, स.सि.A
चर	३	चं	१	२५	१०	२	भर	२१	२८	१४	५५	वज्र	४४	१७	२४	३	वि	१	१५	२९	८	६	२०	१७	५९	२०	१३	२०	१७	5	वृ.२१।३१	५	१८	४	०	ध.१०।२ तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय२०।१४, वरिष्ट नागरिक दिवस
गद	४	मं	२५	२५	१२	३१	कृ	२८	५०	१३	५३	सि	४६	२०	२४	५३	बा	१५	२५	२९	२	६	२१	१७	५८	२१	१४	२१	१८	6	वृष	५	१९	३	८	सर्वार्थसिद्धियोग १७।५३तक
शुभ	५	बु	२१	५	१४	४३	रो	३५	३५	२०	३५	व्य	४३	५०	२५	२१	तै	२१	५	२९	०	६	२१	१७	५७	२२	१५	२२	१९	7	वृष	५	२०	२	१८	सौभाग्यसूचक रोहिणीव्रत, स.सि.योग, रवियोग २०।३५से
मृत्यु	६	गु	२५	३५	१६	३६	मृग	४१	७	२२	४९	वरि	४८	१७	२५	४१	व	२५	३५	२८	५५	६	२२	१७	५६	२३	१६	२३	२०	8	मि.१।४२	५	२१	१	३०	ध.१६।३६से २१।१२तक, चैहल्लुम, वायुसेनादिवस, र.यो.२२।४९तक
पद्म	७	शु	२८	३३	१७	४१	आ	४५	१०	२४	२६	परि	४३	३२	२५	२६	बव	२८	३७	२८	५२	६	२२	१७	५५	२४	१७	२४	२१	9	मिथुन	५	२२	०	४४	कालाष्टमी, पूफायांशुक्र:११।१८, विश्वडाकदिवस, स.सि.यो.२४।२६से
छत्र	८	श	२९	४५	१८	१६	पुन	४६	५२	२५	७	शि	४५	१३	२४	२७	कौ	२९	४५	२८	५०	६	२२	१७	५४	२५	१८	२५	२२	10	क.१८।५७	५	२३	०	१	चित्रायां रविः१३।३४, सू.चं.स्त्री-स्त्री वर्षा वाहन मंडूक मेघाडम्बरB
श्रीवत्स	९	र	२८	४५	१७	५३	पु	४३	१७	२५	१८	सि	४१	१२	२२	५२	गर	२८	४५	२८	४३	६	२३	१७	५२	२६	१९	२६	२३	11	कर्क	५	२३	५९	२०	ध.२१।१५से, स.सि.योग २५।१८तक
सौम्य	१०	चं	२५	३५	१६	३८	श्ले	४५	१३	२४	२९	सा	३५	२७	२०	३५	वि	२५	३५	२८	३७	६	२४	१७	५१	२७	२०	२७	२४	12	सिं२४।२१	५	२४	५८	४१	ध.१६।३८ तक
ए.व्रत	११	मं	२०	२५	१४	३५	म	४१	१२	२२	५८	शुभ	२८	१०	१७	४१	बा	२०	२५	२८	३३	६	२५	१७	५०	२८	२१	२८	२५	13	सिंह	५	२५	५८	५	कमला पुरुषोत्तमा एकादशीव्रत(सर्वे.)
स्थिर	१२	बु	१३	३५	११	५१	पूफा	३५	३७	२०	४०	शु	१९	३०	१४	१३	तै	१३	३५	२८	३०	६	२५	१७	४९	२९	२२	२९	२६	14	क.२५।४१	५	२६	५७	३०	प्रदोषव्रत, वक्रीबुध:६।३५, आखरीचहारशाम्बा मुस.
मातङ्ग	१३	गु	५	१८	८	३३	उफा	२८	४४	१७	५७	ब्र	१ ५१	४० १०	१० ३०	१६ ६	व	५	१८	२८	२५	६	२६	१७	४८	३०	२३	३०	२७	15	कन्या	५	२७	५६	५८	ध.८।३३ से १८।४३तक
ति.क्षय	१४	गु	५६	५	२८	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	चतुर्दशीक्षय:
मानस	३०	शु	४६	२५	२५	०	ह	२१	१८	१४	५७	वै	४८	१५	२५	४४	च	२१	१५	२८	२२	६	२६	१७	४७	३१	२४	३१	२८	16	तु.२५।२४	५	२८	५६	२९	अन्वा. दानादि देवपितृकार्येऽमा, अधिक माससमाप्त, सहादतेईमामC

A योग ६।२०से ११।५१तक B वर्षाधिक्य C हसन, विश्वखाद्यदिवस

द्वि.आश्विव. कृ.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४७५

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	२	११	६	८	४	९	१	७
अं.	२३	२२	२८	१६	२४	१४	१	२९	२९
क.	०	४०	१२	३६	२४	१३	१७	६	६
वि.	१	८	३२	८	५७	४१	३३	१६	१६
गति	५९ १९	७३३ १९	१९ ९	२३ १७	५ ५	७० ५५	१ ७	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	हस्त४	पुन.१	रेव.४	स्वा.३	पूषा.४	पूफा.१	उषा.२	मृग.२	ज्ये.४
नाड़ी	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	पाताल	भूमि	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मास में पांच शुक्रवार शुभ हैं- **शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** के अनुसार खेती में पैदावार वृद्धि, कल-कारखानों में उत्पादन अधिक होने से सौख्य-समृद्धि बढ़ेगी। प्रंजाजनों में खुशहाली का कारण बनेगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्ति परिचर्चा कामयाब रहेगी। आतंकवाद पर अंकुश लगाने के लिये कुछ नियम बनाये जा सकते हैं। **मकरे च यदा सौरि दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्। कामार्ताश्च विनश्यन्ति ह्यन्यदेशे शुभं भवेत्॥** किन्हीं देशों में सामाजिक तौर पर हालात बिगड़ सकते हैं अथवा कहीं भारी परिवर्तन सम्भव है।

द्वि.आश्विव.कृ.३० शुक्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३४८१

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	५	११	६	८	४	९	१	७
अं.	२८	१७	२६	१७	२४	२१	१	२८	२८
क.	५६	१७	१७	१६	५८	२०	२५	४७	४७
वि.	२९	३१	५०	५४	१	५८	४५	११	११
गति	५९ ३२	९१८ ५	१८ ४२	१९ ३७	६ ६	७१ ३५	१ ४२	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. अ.	व. उ.	व. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	चित्रा२	हस्त३	रेव.३	स्वा.४	पूषा.४	पूफा.३	उषा.२	मृग.२	ज्ये.४
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	भूमि	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

तेजी मन्दी विचार- पक्षान्तर्गत तिथियों की ह्रास-वृद्धि का फल अच्छा है- **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥** इस योग के चलते भावों में गिरावट दर्ज हो सकती है। सूर्य से भौम का समसप्तक योग बाजारभाव में तेजी का लक्षण है। भावों में किंचित गिरावट के बाद स्थिर लाइन बनेगी। चीनी, चावल, पेठा, बूरा-बताशा, तिल, खरबूजे का बीज, गुड़, मूंगफली में तेजी सम्भव है। **मार्ग गमन् करते हुये, बुध मार्गी हो जाय। चालू रुख मार्कीट का, एकदम पलटा खाय॥ आकाशलक्षण-** पक्षान्तर्गत घामाछांई सी चलेगी। तां.२, ३, १०, १५, १६, १७ में न्यूनाधिक वर्षा, तीव्रवायुवेग, भारी मेघाडम्बर, बिजली, गाज, हिमपात, अन्तरिक्ष उत्पात सम्भव है। आश्विन पुरुषोत्तम मास में असम्भावी कुघटनाचक्र का संकेत है।

श्रीसम्वत् २०७७ शाके १९४२ द्वि.आश्विन शुक्लपक्ष १५

शरदऋतु, रविदक्षिणायने दक्षिणगोले। ता.१७ से ३१ अक्टूबर सन् २०२० ई. तक॥

योग	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा.आ	प्र.का	मु.स	अंग्रे.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः५घं.३०मि. रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है
काल	१	श	३६	४२	२१	८	चि	१३	३०	११	५१	वि	३७	२०	२१	२३	किं	११	३३	२८	१७	६	२७	१७	४६	१	२५	१	२९	17	तुला	५	२९	५६	१	इष्टिः,शा.नवरात्रारम्भः कलशस्थापनं,तुलायांसूर्य७।६, संक्रांतिमु.३० A
लुंबक	२	र	२७	२७	१७	२७	स्वा	५/५९	५५/७	८/३०	५०/७	प्री	२६	४७	१७	११	बा	२	४	२८	१२	६	२८	१७	४५	२	२६	२	३०	18	वृ.२४।४८	६	०	५५	३५	चन्द्रदर्शनमु.४५, तेजीमन्दी सूचकांक २०२६, रवियोग
मानस	३	चं	११	७	१४	७	अनु	५३	२७	२७	५१	आ	१७	०	१३	१६	गर	११	७	२८	१०	६	२८	१७	४४	३	२७	३	१	19	वृश्चिक	६	१	५५	११	भ.२४।४२से, सिन्दूरतृतीया, बुधास्तपश्चि.२८।४२, रविउलअव्वल३ B
मुद्गर	४	मं	१२	५	११	१८	ज्ये	४९	१८	२६	११	सौ	८	१७	९	४७	वि	१२	५	२८	७	६	२८	१७	४३	४	२८	४	२	20	ध.२६।२१	६	२	५४	४९	भ.११।२८तक,उपांगललिताव्रत,उफायांशुक्रः१६।२०,र.यो.२६।२२से
केतु	५	बु	६	३२	९	७	मू	४६	४५	२५	१२	शो	०/५४	४५/४२	६/२८	४८/२३	बा	६	३२	२८	०	६	३०	१७	४२	५	२९	५	३	21	धनु	६	३	५४	२९	र.यो.२५।१२तक, गरबाडांस प्रा.(गुज.), श्रीसरस्वतीआवाहनम्
धाता	६	गु	२	५३	७	३९	पूषा	४६	१०	२४	५८	सु	५०	१०	२६	३४	ते	२	५३	२७	५७	६	३०	१७	४१	६	३०	६	४	22	धनु	६	४	५४	११	सरस्वतीपूजन,सा.वृश्चिकेभानुः२८।३१,हेमन्तऋतुप्रा.सु.चं.त्री-दु. C
आनंद	७	शु	१	२	६	५६	उषा	४७	२०	२५	२७	धृ	४७	२	२५	२०	व	१	२	२७	५२	६	३१	१७	४०	७	१	७	५	23	म.७।०५	६	५	५३	५५	भ.६।५६से,१८।५७तक,श्रीदुर्गाष्टमीपूजा,भद्रकाल्यावतारः,स्वात्यांरवि D
स्थिर	८	श	१	५	६	५८	श्र	५०	१२	२६	३७	शू	४५	१७	२४	३९	बव	१	५	२७	४७	६	३२	१७	३९	८	२	८	६	24	मकर	६	६	५३	४०	सरस्वतीबलिदानं,महानवमी,आयुधपूजा,श्रीदुर्गार्चनं,संयुक्तराष्ट्रदिवस E
[illegible]	९	र	२	५०	७	४१	ध	५४	३३	२८	२२	गंड	४४	४५	२४	२७	कौ	२	५०	२७	४३	६	३३	१७	३८	९	३	९	७	25	कु.१५।२९	६	७	५३	२७	पंचकप्रा.१५।२९, विजया१० दशहरामेला, अपराजिता-शमीपूजा F
अमृत	१०	चं	६	७	९	०	शत	६०	०	-	-	वृ	४५	१०	२४	३७	गर	६	७	२७	४०	६	३३	१७	३७	१०	४	१०	८	26	कुम्भ	६	८	५३	१५	भ.२१।५३से,श्रीमाध्वाचार्यज.सिन्दूरखेला(बं)भरतमिलाप,बौद्धावतार G
र.व्रज	११	मं	१०	३०	१०	४६	शत	०	५	६	३६	ध्रु	४६	२०	२५	६	वि	१०	३०	२७	३५	६	३४	१७	३६	११	५	११	९	27	मी.२६।३२	६	९	५३	५	भ.१०।४६तक, पापांकुशा एकादशीव्रत(सर्वे), व.चित्रायांबुधः१४।३२
पद्म	१२	बु	२५	४७	१२	५४	पूभा	६	२७	९	१०	व्या	४८	०	२५	४७	बा	१५	४७	२७	३०	६	३५	१७	३५	१२	६	१२	१०	28	मीन	६	१०	५२	५७	प्रदोषव्रत F नीलकंठदर्शन,सीमोल्लंघनं,सरस्वतीविसर्जन,र.यो.
छत्र	१३	गु	२१	४०	२५	२५	उभा	१३	३०	११	५९	ह	५०	२	२६	३६	तै	२१	४०	२७	३०	६	३५	१७	३५	१३	७	१३	११	29	मीन	६	११	५२	५१	र.योग स.सि.योग ११।५९से
श्रीवत्स	१४	शु	२७	५२	१७	४५	रे	२०	५०	१४	५६	वज्र	५२	१५	२७	३०	व	२७	५२	२७	२५	६	३६	१७	३४	१४	८	१४	१२	30	मे.१४।५६	६	१२	५२	४६	भ.१७।४५से,पंचकस.१४।५६,कोजागरीव्रत,लक्ष्मीन्द्रयोः पूजा,[illegible] H
[illegible]	१५	श	३४	२५	२०	१८	अ	२८	२२	१७	५७	सि	५४	३२	२८	२५	वि	१	३	२७	२२	६	३६	१७	३३	१५	९	१५	१३	31	मेष	६	१३	५२	४२	भ.७।१तक, अन्वा., शरदपूर्णिमा. क्षीरशयनोत्सवः, [illegible] K

A [illegible] मातामहश्राद्धं, श्रीअग्रसेनज.५१४४, अश्वादिकनीरांजन, यहूदीनववर्षारम्भः स.सि.योग B स.सि.यो.,र.यो.२७।५१तक C वर्षावाहनमहिष वर्षाधिक्य D २३।५१,कन्यायांशुक्रः२०।५४, बलिदानं, र.कार्तिकारम्भः,मे.ज्वालामुखीतारादेवी,ओलीप्रा. E स.सि.यो.२६।३७तक,र.यो.२६।३७से G रवियोग H गुरुः१२।५४, बारावफात(ईद-ए-मिलाद), बचतदिवस. शाकम्भरीदेवीदर्शन (देवबंद) [illegible] स.सि.यो.,र.यो.१४।५६तक K दीपदानं, नवान्नभक्षणं, हस्तेशुक्रः१७।८, अश्वयुजी,ओलीपूर्ण, ब्रजपरिक्रमा, नैमिषारण्यपरिक्रमाशुरु, कार्तिकस्नानारंभ, महर्षिबाल्मीकजयंती, स.पटेलज.एकतादिवस

द्वि.आश्विन शु.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३४८९

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	६	९	११	६	८	५	९	१	७
अं.	६	१२	२३	१०	२५	०	१	२८	२८
क.	५३	९	५८	५२	५१	५६	४२	२१	२१
वि.	४०	५	१२	५९	१४	२५	९	४५	४५
गति	५९	[illegible]	१५	३५	७	७२	२	३	३
	४३	२०	२०	१०	२०	२१	२१	११	११
स्थिति	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	स्वा.१	श्रव.१	रेव.१	स्वा.२	पूषा.४	उफा.२	उषा.२	मृग.२	ज्ये.४
नाड़ी	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥ मास में पांच शनिवार नेष्ट हैं। अमेरिका, ग्रीनलैंड, आईसलैंड, वोलीविया, कोलम्बिया, ब्राजील, अल्जीरिया, मोरक्को, नाइजीरिया, स्पेन, केन्या, अफ्रीका गणराज्य में कहीं भी प्राकृतिक महोत्पात, आंधी-तूफान, बवंडर, भूस्खलन, भूकम्प, ज्वालामुखीविस्फोट, जलाधिक्य, बाढ़ जानलेवा सिद्धि हो सकती है। खाड़ी के देशों में उपद्रवों के चलते महंगाई बढ़ेगी। खाने-पीने की वस्तुएं न मिलने से त्राहि-त्राहि मचेगी। मुस्लिम समुदाय एकता के सूत्र में बँधते नजर आयेंगे। सुरक्षा प्रहरियों को सचेत रहना चाहिये। **तेजी मन्दी विचार-** पक्षारम्भ में ऊभी तुला की संक्रांतिमु.३० साम्यार्घ है। चन्द्रदर्शनमु.४५ मन्दीकारक है। चालू मार्केट के भावों में किंचित रद्दोबदल के बाद स्थिर लाइन बनेगी। कन्या का शुक्र फसलों में क्षति करेगा। तेजी को बल देगा- **कन्या राशि गते शुक्रो सर्वसस्य विनश्यति। तत्र धान्यमहार्घाणि शालिश्चैव विशेषतः॥** गेंहू, जौं, चना, मटर, राजमा, सोयाबीन, सभी दालें, मेवा, चावल, चाय, कॉफी, धातुओं में तेजी करेगा। **आकाशलक्षण-** सूर्य राशिचार, बुधास्त के प्रभाव में मेघगर्जन, बिजली, गाज, आंधी-तूफान के साथ यत्र-तत्र वर्षा होगी। **उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यङ्गारके वृष्टिश्रिया वृष्टि शनैश्चरः॥** ता.२५, २९, ३०, ३१ में न्यूनाधिक वर्षा के योग बन रहे हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में दुर्दिन, किंवा यान-खान यातायात कुघटनाचक्र सम्भव है।

द्वि.आश्विन शु.१५ शनौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रहस्पष्ट, केतकी अहर्गणः३४९६

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	०	११	६	८	५	९	१	७
अं.	१३	७	२२	३	२६	९	२	२७	२७
क.	५२	१०	२४	५	४५	२४	१	५९	५९
वि.	४२	३२	११	५५	४१	३५	२६	३०	३०
गति	५९	[illegible]	१०	३७	८	७२	३	३	३
	५९	५०	४१	१३	२०	५५	७	११	११
स्थिति	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	स्वा.३	अश्वि३	रेव.२	चित्रा३	उषा.१	उफा.४	उषा.२	मृग.२	ज्ये.४
नाड़ी	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ कार्तिक कृष्ण पक्ष १६

हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने दक्षिणगोले। ता.१ से १५ नवम्बर सन् २०२० ई. तक॥

योगा	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	रा. का	प्र. का	मु. र०	नव.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
आनंद	१	र	४०	३०	२२	४१	भ	३५	४३	२०	५६	व्य	५६	३७	२१	१६	बा	७	२२	२७	२०	६	३७	१७	३३	१६	१०	१६	१४	1	वृ.२७ ।३९	६	१४	५२	४१	इष्टि:, कृषकभूमिपूजा, नवम्बर मास११ ता.३०
स्थिर	२	चं	४९	२७	२५	१३	कृ	५२	५७	२३	४९	वरि	५८	३०	३०	२	तै	१३	२८	२७	१५	६	३८	१७	३२	१७	११	१७	१५	2	वृष	६	१५	५२	४२	बुधोदय:**पूर्वस्यां** १५ ।१९, स.सि.योग २३ ।४९से
मातङ्ग	३	मं	५१	५५	२३	२४	रो	५१	३७	२६	२९	परि	५९	५०	३०	३४	व	१९	११	२७	१२	६	३८	१७	३१	१८	१२	१८	१६	3	वृष	६	१६	५२	४५	भ.१४ ।१८से २७ ।२४तक, **मार्गीबुध:**२३ ।२०, सौभाग्यसूचकरोहिणीव्रत
अमृत	४	बु	५६	२७	२९	१६	मृग	५५	२८	२८	५०	शि	६०	०	–	–	बव	२४	११	२७	७	६	३९	१७	३०	१९	१३	१९	१७	4	मि.१५ ।३९	६	१७	५२	५०	करवाचौथव्रत चन्द्रोदय२० ।१४, ईद-ए-मौलाद, स.सि.योग
काण	५	गु	५९	५०	३०	३६	आ	६०	०	–	–	शि	०	३५	६	५४	कौ	२८	८	२७	५	६	४०	१७	३०	२०	१४	२०	१८	5	मिथुन	६	१८	५२	५७	
पद्म	६	शु	६०	०	–	–	आ	०	७	६	४४	सि	०/५९	२२/७	६/३०	४०/२०	गर	३०	४३	२७	०	६	४१	१७	२९	२१	१५	२१	१९	6	क.२५ ।४४	६	१९	५३	७	विशा.रवि:८ ।१४, उर्सनिजामुद्दीन, र.यो.व स.सि.योग ६ ।४४से
छत्र	६	श	१	४५	७	२३	पुन	३	२७	८	४	शुभ	५६	३२	२९	१८	व	१	४५	२६	५८	६	४१	१७	२८	२२	१६	२२	२०	7	कर्क	६	२०	५३	१८	भ.७ ।२३से १९ ।२६तक, रवियोग ८ ।४४से
श्रीवत्स	७	र	१	५३	७	२९	पु	५	५	८	४४	शु	५२	२८	२७	४१	बव	१	५७	२६	५५	६	४२	१७	२८	२३	१७	२३	२१	8	कर्क	६	२१	५३	३१	अहोईअष्टमी(तारोदयपूजा),कालाष्टमी,चन्द्रोदय२३ ।५७,दाम्पत्याष्टमीA
सौम्य	८	चं	०	२७	६	५०	श्ले	४	५५	८	४१	ब्र	४६	५५	२५	२९	कौ	०	१७	२६	५०	६	४३	१७	२७	२४	१८	२४	२२	9	सिं.८ ।४१	६	२२	५३	४६	
ति.क्षय	९	चं	५६	५०	२९	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	नवमीक्षय:
आनंद	१०	मं	५१	२७	२७	२२	म	३/५१	०/२०	५/३०	५५/२७	ऐं	४०	०	२२	४३	व	२४	१४	२६	४७	६	४३	१७	२६	२५	१९	२५	२३	10	सिंह	६	२३	५४	३	भ.१६ ।२४से २७ ।२२तक
ए.व्रत	११	बु	४४	५०	२४	४०	उफा	५४	१०	२८	२४	वै	३१	४५	१९	२६	बव	१८	१३	२६	४५	६	४४	१७	२६	२६	२०	२६	२४	11	क.११ ।५६	६	२४	५४	२३	रमाएकादशीव्रतस्मा.वैष्ण,वल्लभ, चित्रायांशुक्र:१५ ।००, स्वात्यांबुध:B
राक्षस	१२	गु	३६	५२	२१	३०	ह	४७	५२	२५	५४	वि	२२	२५	१५	४३	कौ	१०	५१	२६	४०	६	४५	१७	२५	२७	२१	२७	२५	12	कन्या	६	२५	५४	४४	गोवत्सद्वादशी, गौसेवा,गोत्रिरात्रारम्भ:, नारीकर्तृकनीरांजनं, रमा११C
मूसल	१३	शु	२८	२	१७	५९	चि	४०	४३	२३	५	प्री	१२	२०	११	४२	गर	२	२७	२६	३७	६	४६	१७	२५	२८	२२	२८	२६	13	तु.१२ ।२९	६	२६	५५	७	भ.१७ ।४५से१७ ।५९तक,अन्वा,**प्रदोषव्रत**,रूप१४,नरक१४,तैलाभ्यंगD
सिद्धि	१४	श	१८	४५	१४	१७	स्वा	३३	२२	२०	८	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	श	१८	४५	२६	३२	६	४७	१७	२४	२९	२३	२९	२७	14	तुला	६	२७	५५	३१	**श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (दीपावली), दीपोत्सव, **मार्गीभौम:**६ ।५०, E
मावस	३०	र	९	३०	१०	३६	वि	२६	७	१७	१५	शो	४०	४२	२३	५	ना	९	३०	२६	३०	६	४८	१७	२४	३०	२४	३०	२८	15	वृ.११ ।५८	६	२८	५५	५८	इष्टि:, अमापुण्य:, **अन्नकूट गोवर्धनपूजा**, बलिपूजा, महावीरनिर्वाणF

A श्रीराधाकुण्डस्नानगोवर्धन, विश्नोईपंथदिवस, स.सि.यो.,र.योग ८ ।४४तक B २१ ।३२ C निम्बार्क, **धनतेरस**, आयुर्वेददिवस, यमदीपदानं, प्रसारणदिवस

D स्नान,श्रीहनुमज्जन्मलग्न१, स्वामीरामतीर्थ परिनिर्वाणदि., मासशिवरात्रि E कालरात्रिकमलाजयंती, गोत्रिरात्रसमाप्त, **बालदिवस**, स.सि.योग F जैनसम्वत्सरारम्भ:, म.दयानन्दपुण्य:, गोक्रीड़ा,द्यूतक्रीड़ा

कार्तिक कृ.८ चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५०५

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	३	११	६	८	५	९	१	७
अं.	२२	२८	२१	४	२८	२०	२	२७	२७
क.	५३	१०	१५	४	५	२३	३२	३०	३०
वि.	४६	४५	४२	४८	३१	३३	३७	५४	५४
गति	६०	८२३	३	५२	९	७३	३	३	३
	१७	३६	४०	४७	३०	३४	५३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	विशा१	श्ले.४	रेव.२	चित्रा४	उषा.१	हस्त४	उषा.२	मृग.२	ज्ये.४
नाड़ी	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

इस वर्ष शनिवार की दीपावली व्यापारी वर्ग के लिये श्रेष्ठ नहीं। रविवारी मावस का फल ऐसा लिखा है- **कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि भौम युता वापि सर्वलोक भयावहा॥** विश्व के अधिकांश देशों में भयातंक व्याप्त रहेगा। पड़ौसी देश एक-दूसरे को त्रस्त करने का प्रयास करेंगे। शान्तिप्रिय देश-प्रदेश एवं महानगरों में लोग सशंकित रहेंगे। सरकारी तौर पर सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध करने चाहिये। रूस, चीन, जापान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान की विचारधारा में परिवर्तन होगा। भारतीय कर्णधारों को सचेत रहना चाहिये। **तेजी मन्दी विचार-** मासिक ग्रहचाल बाजार भावों में भारी रद्दोबदल का संकेत है। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में प्रतिकूल हो सकते हैं। खाद्य सामग्री में मन्दी का झटका लग सकता है। वस्त्र, धातुएं, बिल्डिंग मैटैरियल, श्रृंगार प्रसाधन, मशीनरी, पुर्जे, साइंस के सामान, स्टेश्नरी, कागज के भाव बढ़ सकते हैं। **मीन राशि कुजश्चैव तृण काष्ठं चतुष्पदम्। महर्घं जायते सर्वं गृह्यते तत्र पण्डितैः॥** मार्कीट का रुख देखकर काम करें।

कार्तिक कृ.३० रवि प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५११

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	६	११	६	८	५	९	१	७
अं.	२८	२५	२१	१०	२९	२७	२	२७	२७
क.	५५	५४	५	४१	४	४५	५७	११	११
वि.	५८	०	५२	६	२१	५१	१०	४९	४९
गति	६०	९०५	१	७९	१०	७३	४	३	३
	२८	१७	१०	५७	१३	५५	२२	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	विशा३	विशा२	रेव.२	स्वा.२	उषा.१	चित्रा२	उषा.२	मृग.२	ज्ये.४
नाड़ी	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

आकाशलक्षण- पक्षान्तर्गत कहीं आकाश स्वच्छ तो कहीं बादलों से घिरा रहेगा। पर्वतीय प्रदेशों में तीव्र वायुवेग के साथ मौसम खराब होगा। उत्तरभारत में धीरे-धीरे ठंड बढ़ेगी। बुधोदय तथा मार्गी बुध मंगल कहीं भारी क्षति का कारण बन सकते हैं। **नोत्पात परित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो वक्रत्युदयम्। जलदहन पवनभय कृद्धान्यर्घं क्षयः विवृद्धयैर्वा॥** जलाधिक्य, बवंडर, प्राकृतिक उत्पात से हानि संभव है।

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ कार्तिक शुक्ल पक्ष १७

हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने दक्षिणगोले।
ता. १६ से ३० नवम्बर सन् २०२० ई. तक॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि.	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	रा. का	प्र. मा	मु. रठ	नवं.	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टै.टा. घंटा-मिनटोंमें है।
मानस	१	चं	०	४२	७	६	अनु	११	२५	१४	३५	अति	३०	५०	११	९	बव	०	४२	२६	२५	६	४९	१७	२३	३१	२५	१	२९	16	वृश्चिक	६	२९	५६	२६	चन्द्रदर्शनमु.१५,भाईदूज,यमर,विश्वकर्मा-चित्रगुप्तपूजा,तुलायांशुक्रः A
ति.क्षय	२	चं	५२	४७	२७	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	द्वितीयाक्षयः तेजीमन्दीसूचकांक२६२१ M तक,र.यो.२४।२२से
मुद्गर	३	मं	४६	१०	२५	१७	ज्ये	१३	४७	१२	२०	सु	२१	५५	१५	३५	तै	१९	२८	२६	२५	६	४९	१७	२३	१	२६	२	१	17	ध.१२।२०	७	०	५६	५६	रविडस्सानी४,लाजपतरायपुण्य:,र.यो.१२।२०से E शुक्रः१०।३५
केतु	४	बु	४१	५	२३	१६	मू	९	३२	१०	३९	धृ	१४	७	१२	२९	व	१३	३७	२६	२२	६	५०	१७	२३	२	२७	३	२	18	धनु	७	१	५७	२७	भ.१२।२७से २३।१६तक, छठिपूजाशुरु(बिहार), र.योग १०।३१तक
धाता	५	ग	३७	५०	२१	५९	पूषा	६	५५	९	३७	शू	७	४२	९	५६	बव	९	२७	२६	१७	६	५१	१७	२२	३	२८	४	३	19	म.१५।३३	७	२	५८	०	सौभाग्य-ज्ञानपंचमी,पाण्डवलाभ,नहायखायछठिपूजाप्रा.,अनु.रविः B
आनंद	६	शु	३६	३५	२१	२९	उषा	६	१५	९	२१	गंड	२ / ५१	५२ / ३७	८ / ३०	० / ४२	कौ	७	१२	२६	१७	६	५१	१७	२२	४	२९	५	४	20	मकर	७	३	५८	३४	सूर्यषष्ठी,डालाछठि,विशेषपूजा(बि)सायंसूर्यअर्घ्य,उषा.२मकरेगुरुः C
स्थिर	७	श	३७	१७	२१	४८	श्र	७	२७	९	५२	ध्रु	५७	४५	२९	५९	गर	६	५६	२६	१०	६	५३	१७	२१	५	३०	६	५	21	कु.२२।२०	७	४	५९	९	भ.२१।४८से,पंचकप्रा.२२।३०,सुबहकाअर्घ्य,सहस्रार्जुनज.,सा.धनुषि D
मातङ्ग	८	र	३९	५२	२२	५१	ध	१०	३५	११	८	व्या	५७	२०	२९	५०	वि	८	३४	२६	७	६	५४	१७	२१	६	१	७	६	22	कुम्भ	७	५	५९	४५	भ.१०।२०तक,गोपाष्टमी,गोपूजन,यवनादिदान,रा.मार्गशीर्षप्र.,स्वा. E
अमृत	९	चं	४४	२	२४	३२	शत	१५	२२	१३	४	ह	५८	०	३०	७	वा	११	५७	२६	५	६	५५	१७	२१	७	२	८	७	23	कुम्भ	७	७	०	२३	अष्टाह्निकाजैनव्रतारम्भ:,अक्षय-आँवला-कूष्माण्डनवमी,कृतयुगादि F
काण	१०	मं	४९	२५	२६	४२	पूभा	२१	२७	१५	३१	वज्र	५९	३०	३०	४४	तै	१६	४३	२६	०	६	५६	१७	२०	८	३	९	८	24	मी.८।५४	७	८	१	२	आशादशमी,आरोग्यव्रत,कंसवधलीला(मथुरा),गु.तेगबहादुरबलिदान G
[illegible]	११	बु	५५	३५	२१	१०	उभा	२८	२७	१८	१९	सि	६०	०	-	-	व	२२	३०	२६	०	६	५६	१७	२०	९	४	१०	९	25	मीन	७	९	१	४२	भ.१५।५६से२९।२०तक,प्रबोधिनीएकादशीव्रत(सर्वे),देवउठान,तुलसी H
मित्र	१२	गु	६०	०	-	-	रे	३५	५५	२१	१९	सि	१	३०	७	३३	बव	२८	४८	२५	५७	६	५७	१७	२०	१०	५	११	१०	26	मे.२१।११	७	१०	२	२३	पंचकस.२१।११,हरिवासर१२।११उप., श्रीखाटूश्यामजीविशालमेला K
वज्र	१२	शु	२	२	७	४६	अ	४३	३२	२४	२२	व्य	३	४५	८	२७	वा	२	२	२५	५७	६	५७	१७	२०	११	६	१२	११	27	मेष	७	११	३	५	प्रदोषव्रत,फतेहायजदहम११वींशरीफ(वि.मु.अश्वि.)स.सि.यो.२४।२२ M
ध्वांक्ष	१३	श	८	३०	१०	२१	भर	५०	५२	२७	१८	वरि	३	३०	८	२१	तै	८	३०	२५	५७	६	५७	१७	२०	१२	७	१३	१२	28	मेष	७	१२	३	४८	जैनदिवाकरचौथजयंती,बैकुंठचतुर्दशी,वृश्चिकेबुधः७।५,र.यो.२७।८तक
धूम्र	१४	र	१४	३२	१२	४७	कृ	५७	४०	३०	२	परि	७	५५	१०	८	व	१४	३२	२५	५५	६	५८	१७	२०	१३	८	१४	१३	29	वृ.९।५९	७	१३	४	३२	भ.१२।४७से २५।५३तक, चौमासीचौदसजैन, सत्यव्रत
[illegible]	१५	चं	२०	०	१४	५९	रा	६०	०	-	-	शि	९	२२	१०	४४	बव	२०	०	२५	५२	६	५९	१७	२०	१४	९	१५	१४	30	वृष	७	१४	५	१८	अन्वा.,कार्तिकीपूर्णिमा,स्नानपूर्ण,अनु.बुधः१०।३२,त्रिपुरोत्सवमेला P

A २०।२,वृश्चिकमेंसूर्यदे ५।४,संक्रांतिमु.३०,बंगवसौरमार्गशीर्षप्रा.,स.सि.यो.,मे.बटेश्वरप्रा. B १४।१२,इन्द्रिराज.,र.यो.९।३७से१४।१रतक C १३।१४,उषा.३शनि.६।५२,उत्सवदि,स.सि.यो.र.यो.९।२१से, D भानुः२६।११, वृश्चि.बुधः१८।३०,र.यो.स.सि.यो.९।५२तक F जुगलजोडीपरिक्रमावृन्दा,र.यो.१३।४से G दि.,स.सि.यो.१५।३१से,र.यो. H विवाह,मृग.१राहुःज्ये.३केतुः६।५४,भीष्मपंचकव्रतारम्भ:,चतुर्मासपूर्ण, ३वनपरिक्रमामथुरा, (वि.मु.उभा.)र.यो.१८।१३तक K कालीदासज.बुधास्तपूर्व.१९।१९,एन.सी.सी.वर्षगांठ,स.सि.यो. P रेणुकातीर्थगढ़गंगा,भीष्मपंचकस.,अष्टाह्निकापूर्ण, गुरुनानकजयंती, श्रीनिम्बार्काचार्यज.,रासपूर्णिमा,हरिहरक्षेत्रमे.सोनपुर Z

कार्तिक शु.८ रवि प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३५१८

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	७	१०	११	६	९	६	९	१	७
अं.	५	३	२१	२०	०	६	३	२६	२६
क.	५९	४९	३०	४१	१८	२४	२९	४९	४९
वि.	८५	२३	३५	१७	९	१३	२०	३४	३४
गति	६०	७९४	६	१०	१०	३४	४	३	३
	३८	९	३६	५०	५८	१३	५३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	अनु.१	धनि.४	रेव.२	विशा.१	उषा.२	चित्रा४	उषा.३	मृग.२	ज्ये.४
नाड़ी	भूमि	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धिःस्यात् सुखं भवति सर्वदा॥ के अनुसार कृषिकार्यों में उन्नति से पैदावार बढ़ेगी। उद्योगों में उत्पादन बढ़ने से सौख्य-समृद्धि होगी। महंगाई से राहत मिलेगी। विश्व समुदाय में शान्ति के प्रयास किये जायेंगे। पश्चिमोत्तर सीमा पर आतंकवादी नया गुल खिला सकते हैं। सूर्य के साथ केतु, मकर में नीच के गुरु से शनि का तामसी योग कहीं उपद्रव करा सकता है। सरकार कड़े कदम उठा सकती है। **वक्रस्थिते देवगुरौ दुर्भिक्षं घोर दारुणम्। पूर्वस्याम दक्षिणं चैव राजविग्रहम् च। पापबुद्धि रतालोका हा! हा!! भूता च मेदिनी॥** चौतरफा हा! हा!! कार मचेगा। **तेजी मन्दी विचार-** एकम् में बैठी वृश्चिक संक्रांति मु.३० चन्द्रदर्शनमु.१५ भाववृद्धि का लक्षण है। तिथि घटा-बढ़ी का फल- **जेहि पखवारे तिथि घटे, वाही में बढ़ जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥** के अनुसार भावों में उठा-पटक के बाद स्थिर लाइन बनेगी। व्यापार निजी सूझबूझ के अनुसार करने वाले लाभान्वित होंगे। **आकाशलक्षण-** पक्षान्तर्गत सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र राशि नक्षत्र चार बुधास्त के प्रभाव से यत्र-तत्र सर्वत्र न्यूनाधिक वर्षा होगी। नवम्बर के मध्य एवं अन्त में ४-६ दिन मौसम अधिक खराब हो सकता है। कार्तिकी पूर्णिमा पर ठंड अधिक बढ़ सकती है- उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। झन्झावात, दुर्दिन होने से यातायात में व्यवधान होगा। स्नान मेला में चौकसी बरतनी चाहिए।

कार्तिक शु.१५ चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३५२६

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	१	११	७	९	६	९	१	७
अं.	१४	९	२२	३	१	१६	४	२६	२६
क.	५	४२	४२	०	४८	१९	१०	२४	२४
वि.	१८	५६	३८	२४	३०	५	१९	७	७
गति	६०	७२५	११	९३	११	७४	५	३	३
	४६	३	५८	२९	४२	३२	२४	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	अनु.४	कृत्ति.४	रेव.२	विशा४	उषा.२	स्वा.३	उषा.३	मृग.१	ज्ये.३
नाड़ी	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

Z भृगुआश्रमबलिया,ददरीमेंस्नान,रोहिणीव्रत,रथयात्राजैन,चतुर्मासपूर्ण,(वि.मु.रो.)स.सि.यो.

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८

हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने दक्षिणगोले।
ता.१ से १४ दिसम्बर सन् २०२० ई. तक ॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	तारीखें गते	रा.मा	प्र.मा	मु.रज	दिसं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दैनिक रवि स्पष्ट (प्रात:५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है
मातङ्ग	१	मं	२४	३७	१६	५१	रो	३	४५	८	३०	सि	१०	१७	११	७	कौ	२४	३७	२५	५०	७	०	१७	२०	१५	१०	१६	१५	1	मि.२१।३३	७	१५	६	४	इष्टि:, मे.बटेश्वरसमाप्त, **दिस.१२ता.३१**, मंदिरोंमें देवदर्शन समयA
अमृत	२	बु	२८	२०	१८	२१	मृग	९	०	१०	३७	सा	१०	३०	११	१३	गर	२८	२०	२५	४७	७	१	१७	२०	१६	११	१७	१६	2	मिथुन	७	१६	६	५२	भ.३०।५३से, **ज्येष्ठायांरवि:**१८।३३, विशा.शुक्र:२८।३५, स.सि.यो.B
काण	३	गु	३१	०	१९	२६	आ	१३	१५	१२	२०	शुभ	९	५५	११	०	वि	३१	०	२५	४५	७	२	१७	२०	१७	१२	१८	१७	3	मिथुन	७	१७	७	४२	भ.१९।२६तक, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय१९।५३, स.सि.योग १२।२०से
लुंबक	४	शु	३२	३२	२०	३	पुन	१६	३०	१३	३८	शु	८	३२	१०	२७	बव	१	४६	२५	४५	७	२	१७	२०	१८	१३	१९	१८	4	क.७।१९	७	१८	८	३२	श्रीमायानन्दचैतन्यजयंती, नौसेनादिवस, स.सि.योग १३।३८तक
मित्र	५	श	३२	४७	२०	१०	पु	१८	३०	१४	२७	ब	६	१३	९	३२	कौ	२	३९	२५	४२	७	३	१७	२०	१९	१४	२०	१९	5	कर्क	७	१९	९	२४	
वज्र	६	र	३१	४०	१९	४४	श्ले	१९	१२	१४	४५	ऐं	२/५८	५०/२७	८/३०	११/२७	गर	२	१३	२५	४०	७	४	१७	२०	२०	१५	२१	२०	6	सिं.१४।४५	७	२०	१०	१७	भ.१९।४४से, (वि.मु.मघा), रवियोग १४।४५से
ध्वांक्ष	७	चं	२९	१५	१८	४७	म	१८	३५	१४	३१	वि	५२	५७	२८	१६	वि	०	२७	२५	३७	७	५	१७	२०	२१	१६	२२	२१	7	सिंह	७	२१	११	११	भ.७।१६तक, **महाकालभैरवाष्टमी**,भैरवसमुत्पत्ति-पूजनमंत्र-ॐC
धूम्र	८	मं	२५	३०	१७	१७	पूफा	१६	४५	१३	४७	प्री	४६	३०	२५	४१	कौ	२५	३०	२५	३७	७	५	१७	२०	२२	१७	२३	२२	8	क.१९।२८	७	२२	१२	७	ज्येष्ठायांबुध:२३।३०
प्रवर्ध	९	बु	२०	२७	१५	१७	उफा	१३	३५	१२	३२	आ	३९	०	२२	४२	गर	२०	२७	२५	३५	७	६	१७	२०	२३	१८	२४	२३	9	कन्या	७	२३	१३	४	भ.२६।४से, (वि.मु.हस्त), स.सि.योग १२।३२से
ए.व्रत	१०	गु	१४	२०	१२	५१	ह	९	१७	१०	५०	सौ	३०	४२	१९	२४	वि	१४	२०	२५	३२	७	७	१७	२०	२४	१९	२५	२४	10	तु.२१।४८	७	२४	१४	२	भ.१२।५१तक, **उत्पत्तिएकादशीव्रत** स्मा, **वृश्चिकमें शुक्र:**२९।१७,D
मूसल	११	शु	७	२२	१०	४	चि	४/५८	६०/२५	८/३०	४७/२९	शां	२१	४५	१५	४९	बा	७	२२	२५	३२	७	७	१७	२१	२५	२०	२६	२५	11	तुला	७	२५	१५	२	उत्पत्तिएकादशीव्रत वैष्णवानाम् (वि.मु.स्वाती)
ति.क्षय	१२	शु	५९	४७	३१	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	द्वादशीक्षय:
शुभ	१३	श	५१	५०	२७	५२	वि	५२	२०	२८	४	अति	१२	२२	१२	५	गर	२५	४८	२५	३२	७	८	१७	२१	२६	२१	२७	२६	12	वृ.२२।४०	७	२६	१६	२	भ.२७।५२से, **प्रदोषव्रत**
मृत्यु	१४	र	४४	०	२४	४४	अनु	४६	१७	२५	३९	सु	२/५३	५०/२२	८/२८	१६/२९	वि	१७	५५	२५	३२	७	८	१७	२१	२७	२२	२८	२७	13	वृश्चिक	७	२७	१७	४	भ.१४।४२तक, अनु.शुक्र:२१।२२, मेलापुरमण्डल देविका स्नान E
मावस	३०	चं	३६	३२	२१	४६	ज्ये	४०	४०	२३	२५	शू	४४	१५	२४	५१	च	१०	१६	२५	३२	७	९	१७	२१	२८	२३	२९	२८	14	ध.२३।२५	७	२८	१८	६	अन्वा., देवपितृकार्येऽमा, **सोमोतीमावस**, (स्नानादि पर्वदिन)

A परिवर्तन ब्रज,(वि.मु.रोहिणी) B १०।३७तक **C हं षं नं गं कं सं खं महाकालभैरवायनम:**, सशस्त्र सेना दिवस

D महावीरस्वामी दीक्षाकल्याणंक, मानवाधिकारदि. (वि.मु.चित्रा) E (जम्मूकश्मीर),श्रीबालाजीजयंती,मासशिवरात्रि

मार्गशीर्ष कृ.८ भौमे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५३४

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	७	४	११	७	९	६	९	१	७
अं.	२२	२१	२४	१५	३	२६	४	२५	२५
क.	१२	५१	३४	२९	२४	१६	५५	५८	५८
वि.	७	५९	४९	३६	२८	१३	१७	४१	४१
गति	६०/५७	८३७/५३	१६/३१	९३/४८	१२/२१	७४/४७	५/५३	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	ज्ये. २	पूफा.३	रेव. ३	अनु.४	उषा. ३	विशा२	उषा. ३	मृग. १	ज्ये. ३
नाड़ी	स्वर्ग	भूमि	पाताल	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

पांच बुधवारों का फल अच्छा है- **बुधस्य पंचवारा:स्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुखमुत्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥** प्रजा सुख शान्ति का अनुभव करेगी। दो वर्ग विशेषों में मैत्री की भावना पनपेगी। राष्ट्रनायक आतंकवाद को समाप्त करने के प्रयत्न करेंगे। किसी देश के हालात नाजुक हो सकते हैं। कोई देश किसी को मदद देना बन्द करेगा। देश की पश्चिमोत्तर सीमा पर तनाव बढ़ेगा। कश्मीर समस्या और भी उलझ सकती है। शान्तिवार्ता मात्र छलावा ही समझना चाहिए। **तेजी मन्दी विचार-** चल रहे बाजार भावों में रद्दोबदल हो सकता है। **कृष्ण पक्ष की तिथि घटे, शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥** उत्पादन बढ़ने, उपज की अच्छी उम्मीद से भावों में गिरावट दर्ज हो सकती है। सरकारी तौर पर व्यापार की समीक्षा की जा सकती है। विदेशों से आदान-प्रदान में खुली छूट मिल सकती है। ऊनीवस्त्र, मेवा, धातुओं में झटका लग सकता है। **आकाशलक्षण-** सूर्य के साथ ग्रह संयोग उपद्रवकारी है। पर्वतीय प्रदेशों में शीतलहर चलेगी। उत्तरभारत में ठिठुरन बढ़ेगी। झन्झावात, हिमपात, किंवा उपलवृष्टि से क्षति सम्भव है। **मार्ग महीना माहि जो, जेठा तपै न मूर। तो भाखै यों भड्डरी, निपजै सातौ तूर॥** भड्डरी के अनुसार इस महीने में ताप में कुछ तीव्रता जरूर होनी चाहिये, पैदावार तभी अच्छी होती है। अगहन में कोहरा छाने, पुरवाई हवा चलने से खड़ी फसलों में माहू नामक कीड़ा लग जाता है।

मार्गशीर्ष कृ.३० चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५४०

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	७	११	७	९	७	९	१	७
अं.	२८	१९	२६	२४	४	३	५	२५	२५
क.	१८	०	२१	५३	३९	४५	३१	३९	३९
वि.	६	३९	२८	२	४०	१६	२०	३७	३७
गति	६१/३	८७९/५०	१९/२८	९४/९	१२/४६	७४/५५	६/११	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	ज्ये. ४	ज्ये. १	रेव. ३	ज्ये. ३	उषा.३	अनु.१	उषा.३	मृग. १	ज्ये. ३
नाड़ी	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्रीसम्वत् २०७७ शाके १९४२ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९

हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने दक्षिणगोले। ता. १५ से ३० दिसम्बर सन् २०२० ई. तक॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	गते	रा. मा	प्र. पौ	मु. रउ	दिस	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा. घंटा-मिनटोंमें है।
छत्र	१	मं	२९	५२	११	६	मू	३५	५२	२१	३०	गंड	३५	५२	२१	३०	किं	३	१२	२५	३२	७	९	१७	२२	१	२४	१	२९	15	धनु	७	२९	२१	९	इष्टि:मूलधनुर्मेपूर्य२१ ।३२,संक्रांतिमु.३०,बंगवसौरपौषारम्भ:,(धनु A
श्रीवत्स	२	बु	२४	२०	१६	५४	पूषा	३२	१३	२०	३	वृ	२८	२५	१८	३२	कौ	२४	२०	२५	३०	७	१०	१७	२३	२	२५	२	३०	16	म.२५ ।५०	८	०	२०	१३	चन्द्रदर्शनमु.३०, विजयदिवस, तेजीमन्दीसूचकांक२३४०,
सौम्य	३	गु	२०	१५	१५	१७	उषा	३०	२	१९	१२	धु	२२	७	१६	२	गर	२०	१५	२५	३०	७	११	१७	२३	३	२६	३	१	17	मकर	८	१	२१	१८	भ.२६ ।५०से,मूलेधनुषिबुध:११ ।३८,जमादिउलअवल५,र.यो.११ ।२२से
धूम्र	४	शु	१७	५५	१४	२२	श्र	२९	३७	१९	३	व्या	१७	१३	१४	५	वि	१७	५५	२५	२७	७	१२	१७	२३	४	२७	४	२	18	मकर	८	२	२२	२३	भ.१४ ।२२तक, वैनायकीव्रत, र.यो.व स.सि.यो.१९ ।३तक
प्रवर्ध	५	श	१७	३२	१४	१४	ध	३१	५	१९	३९	ह	१३	५०	१२	४५	बा	१७	३२	२५	२५	७	१३	१७	२३	५	२८	५	३	19	कु.७ ।२१	८	३	२३	२९	पंचकप्रा.७ ।२१, **श्रीपंचमी**,बिहारी५, **श्रीरामजानकीविवाहोत्सव:**,श्री B
राक्षस	६	र	१९	५	१४	५२	शत	३४	२५	२१	०	वज्र	११	५५	१२	०	तै	१९	५	२५	२५	७	१४	१७	२४	६	२९	६	४	20	कुम्भ	८	४	२४	३५	स्कन्दषष्ठी,चम्पाषष्ठी(महा.)गुहा-मूलकषष्ठीबंगाल,र.यो.२१ ।०तक
मूसल	७	चं	२२	३२	१६	१५	पूभा	३९	३०	२३	२	सि	११	३०	११	५०	व	२२	३२	२५	२५	७	१४	१७	२४	७	३०	७	५	21	मी.१६ ।३२	८	५	२५	४१	भ.१६ ।१५से२१ ।२४तक,**मित्रसप्तमी**,नरसीमेहताज.,विष्णु-नन्दा-C
सिद्धि	८	मं	२७	३०	१८	१४	उभा	४५	५५	२५	३६	व्य	१२	१५	१२	८	बव	२७	३०	२५	२५	७	१४	१७	२५	८	१	८	६	22	मीन	८	६	२६	४७	रा.पौषारम्भ:, स.सि.यो.२५ ।३६तक, र.यो.२५ ।३६से
उत्पात	९	बु	३३	३०	२०	३९	रे	५३	१२	२८	३२	वरि	१३	५२	१२	४८	बा	०	३०	२५	२५	७	१५	१७	२५	९	२	९	७	23	मे.२८ ।३२	८	७	२७	५४	पंचकस.२८ ।३२,नन्दिनी२,जैनदिवाकरचौथपुण्य:,पं.बाबलियापुण्य:D
मानस	१०	गु	४०	५	२३	१७	अ	६०	०	–	–	परि	१६	२	१३	४०	तै	६	४७	२५	२५	७	१५	१७	२६	१०	३	१०	८	24	मेष	८	८	२९	१	दशादित्यव्रत,अश्वि.**मेषमेंमंगल**२० ।२०,ज्येष्ठाशुक्र:१३ ।२६,उषा.४ E
ए.व्रत	११	शु	४६	३५	२५	५४	अ	०	४७	७	३५	शि	१८	१५	१४	३४	व	१३	२०	२५	२५	७	१६	१७	२६	११	४	११	९	25	मेष	८	९	३०	७	भ.१२ ।३६से२५ ।५४तक,**मोक्षदाएकादशीव्रत**(सर्वे) श्रीगीताजयंती F
ध्वांक्ष	१२	श	५२	३५	२८	१८	भर	८	१५	१०	३४	सि	२०	१७	१५	२३	बव	१९	३५	२५	२७	७	१६	१७	२७	१२	५	१२	१०	26	वृ.१७ ।१५	८	१०	३१	१४	**अखण्डाद्वादशी**
धूम्र	१३	र	५७	४०	३०	२०	कृ	१५	५	१३	१८	सा	२१	४७	१५	५९	कौ	२५	७	२५	२७	७	१६	१७	२७	१३	६	१३	११	27	वृष	८	११	३२	२२	प्रदोषव्रत, **रोहिणीव्रत**, र.यो.१३ ।२८से
प्रवर्ध	१४	चं	६०	०	–	–	रो	२०	५२	१५	३८	शुभ	२२	२८	१६	१६	गर	२९	३६	२५	२७	७	१७	१७	२८	१४	७	१४	१२	28	मि.२८ ।३४	८	१२	३३	२९	पिशाचमोचन**श्राद्ध**, कपर्दीश्वरयात्रा(काशी), **पूषायांरवि:**२३ ।४६ G
राक्षस	१४	मं	१	३२	७	५४	मृ	२५	३५	१७	३१	शु	२२	१५	१६	११	व	१	३२	२५	२८	७	१७	१७	२८	१५	८	१५	१३	29	मिथुन	८	१३	३४	३६	भ.७ ।५४से२० ।२५तक,अन्वा.,सत्यव्रत,**श्रीदत्तजयंती**,र.यो.१७ ।३१तक
पूर्णिमा	१५	बु	४	७	८	५७	आ	२९	०	१८	५४	ब्र	२१	०	१५	४२	बव	४	७	२५	२८	७	१८	१७	२९	१६	९	१६	१४	30	मिथुन	८	१४	३५	४४	इष्टि:उदयापूर्णिमापुण्य:,षोड्सीत्रिपुरसुन्दरीश्रीविद्याजयंती,अन्नपूर्णाज.

A खरमासप्रारम्भ),श्रीमल्लारीभैरवषट्रात्रप्रा. B बांकेबिहारीप्राक्टयोत्सव:गुरुतेगबहादुरब.दि.,र.यो.१९ ।३९से C भद्रा७,सा.मकरेभानु:१५ ।३३,रविउत्तरायणे,दैत्यदिवस,देवमध्यनिशा,शिशिरऋतुप्रा. D चिड़ावा,उषा.४गुरु:११ ।२, बलिदानदिवस,र.यो. E शनि:२३ ।२०,उपभोक्तादिवस,स.सि.यो,र.योग F श्रीघालदासज.रामधामखेडापाजोधपुर,पूषाबुध:२१ ।२०,मौनी११जैन,**बड़ादिन**,श्रीमालवीयजयंती G स.सि.यो.,र.यो.१५ ।३८तक,पुन:२३ ।४६से

मार्गशीर्ष शु.८ भौमे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५४८

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	८	११	११	८	९	७	९	१	७
अं.	६	६	२९	७	६	१३	६	२५	२५
क.	२६	३५	९	२९	२३	४५	२२	१४	१४
वि.	४७	४	२१	४९	३६	४	२	१०	१०
गति	६१	७२०	२२	९५	१३	७५	६	३	३
	७	१३	४८	२१	१५	२	३२	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	मूल २	उभा.१	रेव. ४	मूल ३	उषा.३	अनु.४	उषा.३	मृग. १	ज्ये. ३
नाड़ी	स्वर्ग	भूमि	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मास में पांच मंगलवार नेष्ट तो बुधवार श्रेष्ठ हैं। शुभाशुभ फल समान घटित होंगे। यथा- **यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥** किसी देश-प्रदेश में राजनैतिक सामाजिक झगड़े-झमेले होंगे। पार्टियों में उठा-पटक के चलते प्रभावी नायक संकट ग्रस्त हो सकता है। मार्गशीर्ष में बैठी धनु संक्रांतिमु.३० का फल भी कुछ ऐसा ही लिखा है- **मार्गशीर्ष धनुषिहि यदाऽऽयाति दिवाकरः। तदादुर्भिक्षकं ज्ञेयं विपरीतात्सुखं भवेत्॥** किसी विशेषभाग महानगर में दुर्भिक्ष जैसे हालात बन सकते हैं। रोजमर्रा की चीजें मिलना कठिन हो सकती हैं। दो-दो ग्रह संयोग में महंगाई व मुनाफाखोरी बेतहासा बढ़ती है। सरकारी हस्तक्षेप के कारण जनता को कुछ राहत मिलती है। मेष में मंगल का फल- **भूमिपुत्रो यदा मेषे, सुभिक्षं सर्वधान्यकम्। प्रवालानि महर्घाणि, क्रोधवस्तु भवेन्नृपः॥** भावों में गिरावट के चलते संग्रह करने पर आगे लाभ होगा। **आकाशलक्षण-** इस पक्ष के आरम्भ और अन्त में यत्र-तत्र बूंदा-बांदी का संयोग बनेगा। पर्वतीय प्रदेशों में तीव्रवायुवेग, झन्झावात के चलते दुर्दिन होंगे। संचार व्यवस्था ठप्प हो सकती है। **चलत्यङ्गारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतौ।** ता.२४ में मेष का मंगल भारी हिमपात का कारण बन सकता है। **शकुन विचार- धन वा राजा धन वा देस। जहवाँ बरसै अहगन सेस॥** अगहन के उत्तरार्ध की वर्षा फसल के लिये अच्छी होती है। किंवा यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है।

मार्गशीर्ष शु.१५ बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५५६

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	२	०	८	९	७	९	१	७
अं.	१४	१२	२	२०	८	२३	७	२४	२४
क.	३५	५४	२१	११	१०	४५	१५	४८	४८
वि.	४४	३५	३०	१३	५९	३८	२१	४३	४३
गति	६१	७६३	२५	१७	१३	७५	६	३	३
	७	१	२८	१८	३७	७	४८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूषा. १	आर्द्रा२	अश्वि१	पूषा. ३	उषा. ४	ज्ये. ३	उषा. ४	मृग. १	ज्ये. ३
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ पौष कृष्ण पक्ष २०

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे दक्षिणगोले। ता.३१ दिस.से १३ जनवरी सन् २०२१ ई.तक॥

योगा:	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	गते	रा. पौ	प्र. पौ	मु. जमादि	दिसं.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रात:५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
सिद्धि	१	गु	५	३०	९	३०	पुन	३१	१५	१९	४८	ऐं	१८	५०	१४	५०	कौ	५	३०	२५	३०	७	१८	१७	३०	१७	१०	१७	१५	31	क१३।३५	८	१५	३६	५१	न्यू-ईयर-इव, सर्वार्थसिद्धियोग
उत्पात	२	शु	५	३५	९	३३	पु	३२	१७	२०	१४	वै	१५	४७	१३	३८	गर	५	३५	२५	३०	७	१९	१७	३१	१८	११	१८	१६	1	कर्क	८	१६	३७	५९	भ.२१।२२से, **जनवरी१ ता.३१ सन् २०२१ प्रारम्भ**, नववर्षारम्भ:
मानस	३	श	४	३५	९	९	श्ले	३२	२२	२०	१६	वि	११	४५	१२	१	वि	४	३५	२५	३२	७	१९	१७	३२	१९	१२	१९	१७	2	सिं२०।१६	८	१७	३९	८	भ.९।९तक, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय२०।४६, उषायांबुध:२७।५
मुद्गर	४	र	२	३७	८	२२	म	३१	३२	१९	५६	प्री	७	५	१०	९	बा	२	३७	२५	३५	७	१९	१७	३३	२०	१३	२०	१८	3	सिंह	८	१८	४०	१६	मूले **धनुषि शुक्र**:२९।३
ति.क्षय	५	र	५९	४५	३१	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	पंचमीक्षय:
केतु	६	चं	५६	७	२९	४६	पूफा	२९	५२	१९	१६	आ	१/५५	४०/४२	७/२१	५९/३६	गर	२७	५६	२५	३७	७	१९	१७	३४	२१	१४	२१	१९	4	क.२५।२	८	१९	४१	२५	भ.२९।४६से, **मकरेबुध**:२७।५६, रवियोग १९।१६से
धाता	७	मं	५१	५०	२८	३	उफा	२७	३२	१८	२०	शो	४९	१०	२६	५९	वि	२३	५८	२५	४०	७	१९	१७	३५	२२	१५	२२	२०	5	कन्या	८	२०	४२	३४	भ.१६।५४तक, रवियोग १८।२०तक
आनंद	८	बु	४६	५८	२६	६	ह	२४	३३	१७	८	अ	४२	१०	२४	११	बा	१९	२५	२५	४२	७	१९	१७	३५	२३	१६	२३	२१	6	तु.२८।२६	८	२१	४३	४३	कालाष्टमी, अष्टकाश्राद्ध, श्रवण१गुरु:२७।४१, पत्रकारदिवस, स.सि.A
चर	९	गु	४१	३५	२३	५७	चि	२१	५	१५	४५	सु	३४	४७	२१	१४	तै	१४	१७	२५	४५	७	१९	१७	३६	२४	१७	२४	२२	7	तुला	८	२२	४४	५२	पश्चिमास्तशनि:१२।५९
गद	१०	शु	३५	५२	२१	४०	स्वा	१७	१०	१४	११	धृ	२७	५	१८	९	व	८	४३	२५	४७	७	१९	१७	३७	२५	१८	२५	२३	8	वृ.३०।५६	८	२३	४६	२	भ.१०।४८से२१।४०तक, पौषी१०जैन, पार्श्वनाथ चन्द्रप्रभुज. श्रीसंघ
ए.व्रत	११	श	२९	५२	१९	१६	वि	१३	०	१२	३१	शू	१९	१०	१४	५९	बव	२	५२	२५	५०	७	१९	१७	३८	२६	१९	२६	२४	9	वृश्चिक	८	२४	४७	११	**सफलाएकादशीव्रत**(सर्वे.),प्रयागराजमेंकल्पवासप्रा.,प्रवासीभारतीयदि.
मृत्यु	१२	र	२३	५३	१६	५२	अनु	८	४५	१०	४९	गंड	११	१२	११	४८	तै	२३	५३	२५	५०	७	१९	१७	३८	२७	२०	२७	२५	10	वृश्चिक	८	२५	४८	२१	**प्रदोषव्रत,उषायांरवि**:२५।४६,**बुधोदय:पश्चि.**२१।५,श्रवणेबुध:३०।२१
पद्म	१३	चं	१८	५	१४	३२	ज्ये	४	३५	९	८	वृ	३/५५	२२/४५	८/२१	३९/३६	व	१८	५	२५	५२	७	१८	१७	३९	२८	२१	२८	२६	11	ध.९।८	८	२६	४९	३०	भ.१४।३२से २५।२७तक, **बाबानागपालपुण्य**:, शास्त्रीजीपुण्य: मासB
मित्र	१४	मं	१२	४०	१२	२२	मू	०/५७	४७/३५	७/३०	३७/२०	व्या	४८	४०	२६	४६	श	१२	४०	२५	५५	७	१८	१७	४०	२९	२२	२९	२७	12	धनु	८	२७	५०	४०	अन्वा.,श्रीजयप्रभविजयपुण्य:त्रिस्तुतिजैन,पितृकार्येऽमा,राष्ट्रीययुवादिवसC
मावस	३०	बु	७	५७	१०	२९	उषा	५५	२२	२९	२७	ह	४२	१७	२४	१३	ना	७	५७	२५	५७	७	१८	१७	४१	३०	२३	३०	२८	13	म.१२।७	८	२८	५१	४९	इष्टि:, **पौषीअमावस्यापुण्य**:, वकुलामावस(उड़ीसा), हत्तापनाशनD

A यो.१७।८तक B शिवरात्रि C स्वा.विवेकानन्दजयंती
D ब्रह्महत्या शमनार्थ स्नान(मद्रास), **लोहड़ी पंजाब**

पौष कृ.८ बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५६३

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	८	५	०	९	९	८	९	१	७
अं.	२१	१६	५	१	९	२	८	२४	२४
क.	४३	२९	२५	४४	४७	३१	३	२६	२६
वि.	४३	३३	२९	५२	१०	४०	१५	२८	२८
गति	६१	८४५	२७	९८	१३	७५	६	३	३
	९	४३	२२	३२	५३	११	५८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूषा.३	हस्त२	अश्वि२	उषा.२	उषा.४	मूल१	उषा.४	मृग.१	ज्ये.३
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मास में पांच गुरुवार नेष्ट हैं- **यत्र मासे पंचवारा: जायन्ते च बृहस्पते:। विग्रह: पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते॥** के अनुसार पश्चिमी देश-प्रदेशों में राजविग्रह, आन्तरिक कलह बढ़ायेगा। आतंकी एवं असमाजिक तत्त्व कुकृत्यों में लगे रहेंगे। युद्धोत्पाती षड्यन्त्र भारी विनाश का कारण बन सकता है। राजनीति के पटेबाज एक-दूसरे को बदनाम करने में लगे रहेंगे। **आगे पीछे बहुत ग्रह, रवि के शनि अगार। राजनीति सह द्विन्द से, होवे बहुत विगार॥** इस वर्ष गुरु-शुक्र का योग धार्मिक विवाद, दंगे-फसाद करवायेगा। **तेजी मन्दी विचार-** धनु का शुक्र मूल द्रव्य, खनिज पदार्थ, बीजमात्र में तेजी करेगा। मकर का बुध दु:ख-सुख की समान प्रतिक्रिया को जन्म देगा- **निशापतेश्च तनय: शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभाव: सुखं दुखं तथैव च शुभाशुभम्॥** उपयोगी चीजों की मांग बढ़ने से भावों में इजाफा होगा। दंगे-फसाद होने लगें, तब महंगाई बहुत बढ़ सकती है। **आकाशलक्षण-** पश्चिमास्त शनि एवं बुधोदय के प्रभाव से यत्र-तत्र वर्षा किंवा बर्फबारी, **ओलावृष्टि, झन्झावात के चलते दुर्दिन होंगे।** समूचे उत्तरभारत में शीतलहर चलेगी। जहाँ-तहाँ कोहरा छाने, मेघाडम्बर होने से खड़ी फसलों में क्षति होगी। **पानी बरसै आधे पूस। आधा गेंहू आधा भूस॥ यह लोकोक्तियों में प्रसिद्ध है।** ता.१० से १५ जनवरी के मध्य वर्षा के अच्छे योग बन रहे हैं। **पूस अमावस मूल को, सरसैं चारों वाय।** मेघगर्जन, विद्युत्पात चक्राकार वायु से क्षति सम्भव है।

पौष कृ.३० बुधे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५७०

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	८	०	९	९	८	९	१	७
अं.	२८	२६	८	१३	११	११	८	२४	२४
क.	५१	९	४२	१०	२४	१८	५२	४	४
वि.	४९	१६	१६	४२	५९	६	२२	१२	१२
गति	६१	८३१	२९	९५	१४	७५	७	३	३
	९	१०	०	५५	४	१३	५	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	उषा.१	पूषा.४	अश्वि३	श्रव.१	श्रव.१	मूल४	उषा.४	मृग.१	ज्ये.३
नाड़ी	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	स्वर्ग	पाताल	भूमि	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ पौष शुक्ल पक्ष २१

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे दक्षिणगोले। ता. १४ से २८ जनवरी सन् २०२१ ई.तक॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	रा. पौ	प्र. मा	मु. जअ	जन.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
केतु	१	गु	४	१७	९	१	श्र	५४	२२	२९	३	वज्र	३६	५२	२२	३	बव	४	१७	२५	५७	७	१८	१७	४१	१	२४	१	२९	14	मकर	८	२९	५३	५८	चन्द्रदर्शनमु.३०,खिचड़ीमहोत्सवारम्भ:,मकरमेंसूर्य८ ।१४,पुण्यकालA
धाता	२	शु	१	५५	८	४	ध	५४	५५	२९	१६	सि	३२	३७	२०	२१	कौ	१	५५	२५	५९	७	१८	१७	४२	२	२५	२	१	15	कु.१७ ।९	९	०	५४	६	पंचकप्रा.१७ ।९,खिचड़ी(खास),जमादिउस्सानी६,थलसेनादिवस,B
आनंद	३	श	१	७	७	४५	शत	५७	५	३०	८	व्य	२९	४०	१९	१०	गर	१	७	२६	०	७	१८	१७	४३	३	२६	३	२	16	कुम्भ	९	१	५५	१४	भ.१९ ।५७से, श्रीयतीन्द्रशूरीश्वरपुण्य: त्रिस्तुतिजैन, रवियोग
चर	४	र	२	५	८	८	पूभा	६०	०	–	–	वरि	२८	५	१८	३२	वि	२	५	२६	२	७	१८	१७	४३	४	२७	४	३	17	मी.२५ ।१९	९	२	५६	२१	भ.८ ।८तक, पश्चिमास्तगुरु:१४ ।१० **गुरु अस्त**
मूसल	५	चं	४	४७	९	१३	पूभा	१	०	७	४२	परि	२७	४७	१८	२५	बा	४	४७	२६	५	७	१८	१७	४४	५	२८	५	४	18	मीन	९	३	५७	२८	५६भोग गरुड़गोविन्द(मथुरा), रवियोग
सिद्धि	६	मं	९	१०	१०	५८	उभा	६	२७	९	५३	शि	२८	४०	१८	४६	तै	९	१०	२६	७	७	१८	१७	४५	६	२९	६	५	19	मीन	९	४	५८	३४	सा.कुम्भेभानु:२६ ।११, धनि.बुध:२१ ।५२, र.यो.व स.सि.यो.९ ।५३तक
उत्पात	७	बु	१४	५०	१३	१४	रे	१३	१२	१२	३५	सि	३०	२७	१९	२९	व	१४	५०	२६	१०	७	१८	१७	४६	७	३०	७	६	20	मे.१२ ।३५	९	५	५९	३९	भ.१३ ।१४से २६ ।३२तक, पंचकस.१२ ।३५, श्रीनन्दबाबाज., गुरुC
मानस	८	गु	२१	२०	१५	५०	अ	२०	४२	१५	३५	सा	३२	४०	२०	२२	बव	२१	२०	२६	११	७	१८	१७	४६	८	१	८	७	21	मेष	९	७	०	४३	रा.माघारम्भ:, श्रवणरगुरु:८ ।४०, स.सि.यो.१५ ।३५तक, ठप.रवियोग
मुद्गर	९	शु	२७	५७	१८	२९	भर	२८	२३	१८	३९	शुभ	३४	५७	२१	१७	कौ	२७	५७	२६	१२	७	१८	१७	४७	९	२	९	८	22	वृ.२५ ।२२	९	८	१	४६	भरण्यांभौम:१२ ।५९, श्रवणे१शनि:१७ ।३६
केतु	१०	श	३४	७	२०	५६	कृ	३५	३७	२१	३२	शु	३६	५२	२२	२	तै	१	२	२६	१८	७	१७	१७	४८	१०	३	१०	९	23	वृष	९	९	२	४८	शाम्बदशमी(ठड़ीसा), श्रवणेरवि:२७ ।५९, खरतरगच्छजैन, नेताजीD
ए.व्रत	११	र	३९	१०	२२	५७	रो	४१	४५	२३	५९	ब्र	३७	५५	२२	२७	व	६	३८	२६	२०	७	१७	१७	४९	११	४	११	१०	24	वृष	९	१०	३	४९	भ.९ ।५६से २२ ।५७तक, पुत्रदाएकादशीव्रत(सर्वे.), मन्वादि:, अभि.E
आनंद	१२	चं	४२	४७	२४	२४	मृग	४६	३२	२५	५४	ऐं	३७	५५	२२	२७	बव	१०	५८	२६	२५	७	१७	१७	५०	१२	५	१२	११	25	मि.१२ ।५७	९	११	४	४९	कल्पवाससमाप्त, कुम्भेबुध:१६ ।५६, उषा.शुक्र:११ ।३८, स.सि.योग
चर	१३	मं	४४	४८	२५	११	आ	४९	४७	२७	११	वै	३६	४०	२१	५६	कौ	१३	४७	२६	२७	७	१६	१७	५१	१३	६	१३	१२	26	मिथुन	९	१२	५	४८	प्रदोषव्रत, रोहि.४राहु:ज्ये.२केतु:२८ ।४०, गणतन्त्र दिवस ७२वाँ
गद्	१४	बु	४५	२	२५	१७	पुन	५१	२०	२७	४८	वि	३४	७	२०	५५	गर	१४	५५	२६	३०	७	१६	१७	५२	१४	७	१४	१३	27	क.२१ ।३९	९	१३	६	४६	भ.२५ ।१७से, मकरेशुक्र:२७ ।३०, रवियोग २७ ।४८तक
पूर्णिमा	१५	गु	४३	४५	२४	४५	पु	५१	२५	२७	४९	प्री	३०	२०	१९	२३	वि	१४	२४	२६	३५	७	१५	१७	५३	१५	८	१५	१४	28	कर्क	९	१४	७	४४	भ.१३ ।१तक,अन्वा.,पौषीपूर्णिमा,सत्यव्रत,माघस्नानारम्भ:,शाकंभरीF

A दिनभर,संक्रांतिमु.३०,बंगवसौरमाघारम्भ:,पूषा.शुक्र:२० ।२१,खरमाससमाप्त,पोंगलपर्व,माघविहू,श्रीगंगासागरयात्रारम्भ: B तेजीमन्दीसूचकांक२८५८ C गोविन्दसिंहजयंती,अभि.प्रवृत्तौरवि:२१ ।२१,श्रीराजेन्द्रसुरीश्वर जन्म-मोक्ष,त्रि:स्तुतिजैन D सुभाषजयंती,स.सि.यो.२१ ।३२से E निवृत्तौरवि:२४ ।५९,उ.प्र.दिवस,रोहिणीव्रत,र.योग F जयंती,मे.मंढ़ारदेवी सतारा(महा.),लालालाजपतरायजयंती,स.सि.यो.२७ ।४९तक

पौष शु.८ गुरौ प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५७८

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	९	०	०	९	९	८	९	१	७
अं.	७	८	१२	२५	१३	२१	९	२३	२३
क.	०	२०	३९	६	१८	१९	४९	३८	३८
वि.	४३	४७	५२	३१	७	५०	१६	४६	४६
गति	६१ ३	७०९ १७	३० ३२	७५ ४१	१४ १३	७५ १३	७ ९	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	उषा.४	अश्वि३	अश्वि४	धनि.१	श्रव.१	पूषा.३	उषा.४	मृग.१	ज्ये.३
नाड़ी	पाताल	स्वर्ग	स्वर्ग	भूमि	पाताल	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

सूर्य के साथ बनने वाला शुभाशुभ चार ग्रह संयोग नेष्ट है- **एक राशौ यदा यान्ति, चत्वार: पंच खेचरा: । प्लावयन्ति महीसर्वा, रुधिरेण जलेन वा ॥** के अनुसार विश्व के अनेक देशों में नाना प्रकार के उपद्रव होंगे। आतंकी कुकृत्य, युद्धोत्पात के चलते रक्तरंजित धरा अकुलायेगी। किंवा ज्वालामुखी विस्फोट, आंधी-तूफान, बडम्बर, भयंकर बर्फबारी से त्राहि-त्राहि मचेगी। अनेक जीव असामयिक काल के गर्त में समा जाएं तो आश्चर्य नहीं। सरकारी तौर पर बचावकार्य किये जायेंगे। प्रभावी देश मदद करने के लिये तत्पर रहेंगे। कालसर्पयोग का प्रभाव भारतीय भूभाग पर परिलक्षित होगा। **तेजी मन्दी विचार-** प्रतिपदा में चन्द्रदर्शनमु.३० एवं मकर की बैठी बाल्यावस्था की संक्रांति मु.३० साम्यार्घकारक है, अन्य ग्रहयोग तेजी का संकेत करते हैं। चाय, चीनी, मूंगफली, मेवा, ऊनीवस्त्र, मिर्चमसाले, रूई, बिनौला, खल, चना, पटसन, सभी धातुएं, सोयाबीन, बिजली, उपकरण तेज होंगे। शेयर, सर्राफा तथा सट्टाबाजार में उथल-पुथल होती रहेगी। **करक मकर दो बहिन हैं, जो बैठें एकहि वार। के परजा को पति मरे, कै पड़े अचिन्त्योकार॥** **आकाशलक्षण-** जलतत्त्व की राशि मकर में बनने वाले कई ग्रहों का संयोग भारतीय भूभाग पर असम्भावी कुघटनाचक्र का संकेत कर रहा है। भूकम्प, भूस्खलन, दिग्दाह, मेघगर्जन, बिजली, गाज, हिमपात दुर्दिन होने से कहीं भारी क्षति हो सकती है। यातायात एवं कृषिकार्यों में बाधा पड़ेगी।

पौष शु.१५गुरौ प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३५८५

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	३	०	१०	९	९	९	१	७
अं.	१४	४	१६	१	१४	०	१०	२३	२३
क.	७	१४	१६	४२	५७	६	३९	१६	१६
वि.	४४	४७	५५	६	४४	१४	१६	३१	३१
गति	६० ५६	८०० ३२	३१ ३६	२३ २१	१४ १५	७५ १२	७ ८	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	श्रव.२	पुष्य१	भर.१	धनि.३	श्रव.२	उषा.२	श्रव.१	रोहि.४	ज्ये.२
नाड़ी	पाताल	भूमि	भूमि	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ माघ कृष्ण पक्ष २२

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे दक्षिणगोले। ता.२९ जन. से ११ फरवरी सन् २०२१ ई.तक॥

निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	गते	रा. मा	प्र. मा	मु. जउ	जन.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	
मृत्यु	१	शु	४१	५	२३	४१	श्ले	५०	१२	२७	२०	आ	२५	२७	१७	२६	बा	१२	२५	२६	३९	७	१५	१७	५४	१६	९	१६	१५	29	सिं२७।२०	९	१५	८	४०	इष्टिः, काशिस्थ दशाश्वमेधघाट स्नानारम्भः
पद्म	२	श	३७	२५	२२	१२	म	४८	३	२६	२७	सौ	१९	४०	१५	६	तै	९	१५	२६	४२	७	१४	१७	५५	१७	१०	१७	१६	30	सिंह	९	१६	९	३५	वक्रीबुधः२१।२२, सर्वोदयपखवाड़ागुरु
छत्र	३	र	३२	५५	२०	२४	पूफा	४५	७	२५	१७	शो	१३	१२	१२	३१	व	५	१०	२६	४२	७	१४	१७	५५	१८	११	१८	१७	31	क.३०।५७	९	१७	१०	३०	भ.९।१८से २०।२४तक, **संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी** (सकटचौथ)A
श्रीवत्स	४	चं	२७	५७	१८	२४	उफा	४१	४७	२३	५६	अति	६/५१	१७/२	९/३०	४४/५०	बव	०	२६	२६	४८	७	१३	१७	५६	१९	१२	१९	१८	1	कन्या	९	१८	११	२३	फरवरीमास २ ता.२८, **बुधास्तःपश्चि.**११।५७
सौम्य	५	मं	२२	४५	१६	१९	ह	३८	१५	२२	३१	धृ	५१	४२	२७	५४	तै	२२	४५	२६	५०	७	१३	१७	५७	२०	१३	२०	१९	2	कन्या	९	१९	१२	१५	रवियोग २२।३१से
कालदंड	६	बु	१७	३०	१४	१२	चि	३४	४५	२१	६	शू	४४	२७	२४	५९	व	१७	३०	२६	५६	७	१२	१७	५८	२१	१४	२१	२०	3	तु.९।४८	९	२०	१३	७	भ.१४।१२से २५।१०तक, रवियोग २१।६तक
स्थिर	७	गु	१२	२०	१२	७	स्वा	३१	२२	१९	४४	गंड	३७	२०	२२	७	बव	१२	२०	२६	५७	७	११	१७	५८	२२	१५	२२	२१	4	तुला	९	२१	१४	९	श्रीरामानन्दाचार्य जयंती, **श्रीरामानन्दः स्वयंगमः प्रादुर्भूतो महीतले.**B
मातङ्ग	८	शु	७	२०	१०	७	वि	२८	१०	१८	२७	वृ	३०	२०	१९	१९	कौ	७	२०	२७	०	७	११	१७	५९	२३	१६	२३	२२	5	वृ.१२।४६	९	२२	१४	५०	अष्टकाश्राद्ध, स.सि.योग १८।२७से
अमृत	९	श	२	३७	८	१३	अनु	२५	१७	१७	१७	धु	२३	३५	१६	३६	गर	२	३७	२७	५	७	१०	१८	०	२४	१७	२४	२३	6	वृश्चिक	९	२३	१५	३९	भ.१९।१९से ३०।२५तक, **धनिष्ठायांरविः**७।११
ति.क्षय	१०	श	५८	७	३०	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	दशमीक्षयः
ए.व्रत	११	र	५४	५	२८	४७	ज्ये	२२	४२	१६	१४	व्या	१७	५	१३	५९	बव	२६	६	२७	१०	७	९	१८	१	२५	१८	२५	२४	7	ध.१६।१४	९	२४	१६	२८	षट्तिलाएकादशीव्रत स्मार्त्तानाम्, स.सि.योग १६।२४ से
लुंबक	१२	चं	५०	२५	२७	१९	मू	२०	२८	१५	२०	ह	१०	५०	११	२९	कौ	२२	१५	२७	१२	७	९	१८	३	२६	१९	२६	२५	8	धनु	९	२५	१७	१६	षट्तिलाएकादशीव्रत वैष्णव, शीतलनाथ जयंती जैन
मित्र	१३	मं	४७	२२	२६	५	पूषा	१८	४५	१४	३८	वज्र	५/५१	२/४०	१/३१	१/०	गर	१८	५४	२७	१५	७	८	१८	३	२७	२०	२७	२६	9	म.२०।३१	९	२६	१८	२	भ.२६।५से,**प्रदोषव्रत**,मेरुत्रयोदशी कल्याणंकजैन,**पूर्वोदयशनिः**२१।५९
वज्र	१४	बु	४५	०	२५	८	उषा	१७	३७	१४	११	व्य	५४	५५	२९	६	वि	१६	११	२७	१७	७	८	१८	३	२८	२१	२८	२७	10	मकर	९	२७	१८	४८	भ.१३।३६तक,रटन्तीकालिकापूजन,व.श्रवणेबुधः२२।४५,मासशिवरात्रि
मावस	३०	गु	४३	४०	२४	३५	श्र	१७	२२	१४	४	वरि	५१	०	२७	३१	च	१४	२०	२७	२२	७	७	१८	४	२९	२२	२९	२८	11	कु.२६।१३	९	२८	१९	३२	अन्वा., **पंचकप्रा.**२६।१३, देवपितृकार्ये **मौनीअमावस्या**, स्नानमेलाC

A चन्द्रोदय२०।४२, तिलकुटा-वक्रतुंडीचतुर्थी, स.सि.योग २५।१७से

B कालाष्टमी, व.मकरेबुधः२२।३८, श्रवण३गुरुः९।४०, श्रवणेशुक्रः२७।२ C प्रयागराज

माघ कृ.८ शुक्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३५९३

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	९	६	०	९	९	९	९	१	७
अं.	२२	२५	२०	२९	१६	१०	११	२२	२२
क.	१४	४२	३३	४५	५१	७	३६	५१	५१
वि.	५०	५२	१८	४४	४१	४२	७	५	५
गति	६० ४९	८४३ २९	३१ ३५	५८ ४१	१४ १३	७५ १०	७ ३	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	श्रव. ४	विशा.२	भर. ३	धनि.२	श्रव. ३	श्रव. १	श्रव. १	रोहि.४	ज्ये. २
नाड़ी	पाताल	पाताल	भूमि	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

भारत की प्रभाव राशि मकर में षट्ग्रही योग अत्यन्त नेष्ट हैं। **'षट्वैग्रहा ध्वन्ति समस्त भूपान्।'** जब कभी ६ ग्रह या उससे अधिक ग्रह एक राशि में संयोग चलते हैं, तब अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में क्षोभ का कारण बनते हैं। राष्ट्रनायक युद्धोत्पाती कुकृत्य करने लगते हैं। **गुरु शुक्रो यदैकस्थो नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशय॥** के अनुसार देश के किन्हीं भाग, महानगरों में जमकर दंगे-फसाद होते हैं। कहीं भारी बर्फबारी होती है। झन्झावात, दुर्दिन होने से अकाल जैसे हालात में जनता त्राहि-त्राहि करती फिरती है। चीन, पाकिस्तान से युद्ध के समय भी ठीक यही ग्रह योग कर्क-मकर में प्रभावी थे ऐसा ही योग अब बन रहा है। ईश्वरीय योगमाया से अनुनय विनय है कि राजाओं को सद्बुद्धि प्रदान करें। **तेजीमन्दी विचार-** चल रहे साम्यक भावों में कम ही घटा-बढ़ी होगी। वक्री बुध अनाज, दाल, चावल, चाय, काफी, मेवा, मिष्ठान्न, ऊनीवस्त्र, रूई, मूंगफली, चना, चबेना, दवा, दारू, मादकद्रव्यों में तेजी करेगा। सट्टा, शेयर, सर्राफा बाजार में दो तरफा चाल चलेगी। व्यापारियों को पूंजी सोच विचारकर ही लगानी चाहिए। **आकाशलक्षण-** भारत की प्रभाव राशि में सूर्य के साथ ग्रहों का जमघट असम्भावी कुघटनाचक्र, का संकेत है। भूकम्प, भूस्खलन, दिग्दाह, भारी हिमपात, मेघगर्जन, विद्युत्पात, किवां ज्वालामुखी विस्फोट, समुद्रीतूफान, चक्रवात की सम्भावना जाननी चाहिये। शीतल लहर प्रभावित करेगी।

माघ कृ.३० गुरौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३५९९

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	९	०	९	९	९	९	१	७
अं.	२८	१८	२३	२३	१८	१७	१२	२२	२२
क.	१९	३३	५०	०	१६	३८	१८	३२	३२
वि.	३२	१९	३२	४०	५३	४१	१४	०	०
गति	६० ४३	७९५ १९	३३ १५	६६ ३१	१४ ९	७५ ९	६ ५८	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	व. अ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	धनि.२	श्रव. ३	भर. ४	श्रव. ४	श्रव. ३	श्रव. ३	श्रव. १	रोहि.४	ज्ये. २
नाड़ी	भूमि	पाताल	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ माघ शुक्ल पक्ष २३

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे दक्षिणगोले। ता. १२ से २७ फरवरी सन् २०२१ ई.तक॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	गते	रा. मा	प्र. फा	मु. जउ	फर.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
धाता	१	शु	४३	२५	२४	२९	ध	१८	७	१४	२२	परि	४७	५७	२६	१८	किं	१३	३२	२७	२३	७	७	१८	४	१	२३	१	२९	12	कुम्भ	९	२९	२०	१५	इष्टिः,गुप्तनवरात्रविधान,**कुम्भमेंसूर्य**२२ ।२२,संक्रांतिमु.१५,बंगवसौरA
आनंद	२	श	४४	३५	२४	५६	शत	२०	१०	१५	१०	शि	४६	३	२५	३१	बा	१४	०	२७	२७	७	६	१८	५	२	२४	२	३०	13	कुम्भ	१०	०	२०	५७	चन्द्रदर्शनमु.३०,**शुक्रास्तःपूर्वस्यां**११ ।३१,बाबारामदेवबीजB **शुक्रअस्त**
चर	३	र	४७	१२	२५	५८	पूभा	२३	३७	१६	३२	सि	४५	१२	२५	१०	तै	१५	५३	२७	३२	७	५	१८	६	३	२५	३	१	14	मी.१० ।२२	१०	१	२१	३७	गौरीतृतीया(गोंतरी),**बुधोदयःपूर्वस्यां**२४ ।३३,रज्जब७,मेलाअजमेरC
गद्	४	चं	५१	२०	२७	३६	उभा	२८	३०	१८	२८	सा	४५	३२	२५	१७	व	१९	१६	२७	३७	७	४	१८	७	४	२६	४	२	15	मीन	१०	२	२२	१५	भ.१४ ।४७से२७ ।३६तक,तिल-वरद्चतुर्थी,कुन्दपुष्पादिD **गुरुउदय**
शुभ	५	मं	५६	४७	२९	४६	रे	३४	४०	२०	५५	शुभ	४६	५२	२५	४८	बव	२४	३	२७	४०	७	३	१८	७	५	२७	५	३	16	मे.२० ।५५	१०	३	२२	५२	पंचकस.२० ।५५,**वसंतपंचमी**,श्री५सरस्वतीजयंती,कृति.भौमः७ ।७,रतिE
मृत्यु	६	बु	६०	०	-	-	अ	४१	५५	२३	४८	शु	४८	५५	२६	३६	कौ	२९	५८	२७	४५	७	२	१८	८	६	२८	६	४	17	मेष	१०	४	२३	२८	मन्दारषष्ठी,दारिद्र्यहरणषष्ठी,शीतलद(बं)पर्युषणपर्व,र.यो.२३ ।४८तक
पद्म	६	गु	३	१०	८	१७	भर	४९	४०	२६	५३	ब्र	५१	२२	२७	३४	तै	३	१०	२७	५०	७	१	१८	९	७	२९	७	५	18	मेष	१०	५	२४	१	सा.मीनेभानु:१६ ।१५,वसन्तऋतुप्रा.,श्रवण४गुरु:१३ ।१०
छत्र	७	शु	९	५५	१०	५८	कृ	५७	२०	२९	५६	ऐं	५३	४५	२८	३०	व	९	५५	२७	५५	७	०	१८	१०	८	३०	८	६	19	वृ.९ ।३९	१०	६	२४	३३	भ.१० ।५८से२४ ।१५तक,रथ-भानु-आरोग्य-**अचला७**,अरुणोदयF
श्रीवत्स	८	श	१६	२०	१३	३१	रो	६०	०	-	-	वै	५५	३५	२२	१३	बव	१६	२०	२७	५७	६	५९	१८	१०	९	१	९	७	20	वृष	१०	७	२५	३	**भीष्माष्टमी**,श्राद्ध,रा.फाल्गुनारम्भः,**कुम्भेशुक्र**:२६ ।२१,**रोहिणीव्रत**,G
धाता	९	र	२१	५०	१५	४२	रो	४	२०	८	४२	वि	५६	२७	२९	३३	कौ	२१	५०	२८	२	६	५८	१८	११	१०	२	१०	८	21	मि.२१ ।४९	१०	८	२५	३१	**वृषमें मंगल** २८ ।३५, **मार्गीबुधः**६ ।५१, हिन्दीदिवस, र.यो.८ ।४२से
आनंद	१०	चं	२५	४७	१७	१६	मृग	१०	०	१०	५७	प्री	५६	०	२९	२१	गर	२५	४७	२८	५	६	५७	१८	११	११	३	११	९	22	मिथुन	१०	९	२५	५७	भ.२९ ।४१से,टा.दामोदरप्राकट्योत्सव:वृन्दा.,स.सि.यो.१० ।५७तक,र.यो.
ए.व्रत	११	मं	२७	५२	१८	५	आ	१३	५५	१२	३०	आ	५४	२	२८	३३	वि	२७	५२	२८	१०	६	५६	१८	१२	१२	४	१२	१०	23	मिथुन	१०	१०	२६	२१	भ.१८ ।५तक,**जयाएकादशीव्रत**(सर्वे)भैनीग्यारस(बं)वेणेश्वरमेलाH
गद्	१२	बु	२७	५५	१८	५	पुन	१५	५२	१३	१६	सौ	५०	३३	२७	८	बा	२७	५५	२८	१५	६	५५	१८	१३	१३	५	१३	११	24	क.७ ।०५	१०	११	२६	४४	प्रदोषव्रत, भीष्मद्वादशी
शुभ	१३	गु	२६	०	१७	१८	पु	१५	५५	१३	१६	शो	४५	३०	२५	६	तै	२६	०	२८	२०	६	५४	१८	१४	१४	६	१४	१२	25	कर्क	१०	१२	२७	५	मरुमहोत्सवजैसलमेर,मे.विराटनगर(राज)स.सि.यो.१३ ।१६तक,उप.र.यो.
मृत्यु	१४	शु	२२	२०	१५	४९	श्ले	१४	१२	१२	३४	अति	३९	१२	२२	३४	व	२२	२०	२८	२५	६	५३	१८	१५	१५	७	१५	१३	26	सिं१२ ।३४	१०	१३	२७	२३	भ.१५ ।४९से २६ ।४८तक, जितेन्द्ररथयात्राजैन, शतेशुक्रः१० ।२०,K
पूर्णिमा	१५	श	१७	१५	१३	४६	म	११	३	११	१७	सु	३१	५०	१९	३६	बव	१७	१५	२८	३०	६	५२	१८	१६	१६	८	१६	१४	27	सिंह	१०	१४	२७	४०	अन्वा.,स्नानादि **माघीपूर्णिमा**, **गुरुरविदासजयंती**, श्रीललिताजयंतीM

A फाल्गुनारंभः,सर्वोदयदिवस B बाबालालदयालज.तेजीमन्दीसूचकांक२३५२ C शरीफप्रा.र.यो.व स.सि.यो.१६ ।३२से D से देवपूजन,धनि.शुक्रः१८ ।३०,पूर्वोदयगुरुः२६ ।१०,र.यो.१८ ।२८तक
E कामोत्सवः, तक्षकपूजा, सरछोटूरामज. दुर्वासाऋषि मे.मथुरा, बांकेबिहारी होलीउत्सवप्रा, डंडारोपड, स.सि.यो.र.यो.२० ।५५से F स्नान, शतेरविः११ ।३६, श्रव.२शनिः२१ ।२७, देवनारायणगुर्जर, नर्मदाज.
G स.सि.योग H डूंगरपुर(राज.),र.योग १२ ।३०तक K जन्मदिन हजरतअली, उर्सबहरायच, श्रीभागवतपाठारम्भः र.योग १२ ।३४तक M माहानदी स्नानमेला

माघ शु.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रहस्पष्ट, केतकी अहर्गणः३६०८

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	१०	१	०	९	९	९	९	१	७
अं.	७	९	२८	१६	२०	२८	१३	२२	२२
क.	२५	४५	५३	५६	२३	५४	१९	३	३
वि.	३	५९	७	२०	२९	४१	५८	२३	२३
गति	६०	७१६	३४	३	१३	७५	६	३	३
	२८	३१	२	४६	५७	३	४३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	शत. १	कृत्ति.४	कृत्ति.१	श्रव. ३	श्रव. ४	धनि.२	श्रव. १	रोहि.४	ज्ये. २
नाडी	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	भूमि	पाताल	पाताल	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मास में पांच शुक्रवार श्रेष्ठ तो शनिवार नेष्ट हैं- **शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता:॥** अमेरिका तथा खाड़ी के अन्य देशों में भूकम्प, भूस्खलन, दिग्दाह, विस्फोट, अन्यान्य महोत्पात के कारण क्षति सम्भव है। ईशान दिशा के किसी देश-प्रदेश में भारी हानि हो सकती है। **ग्रहा सभी त्रैकादश, संयोग बने अब आय। युद्ध कहीं पर होयगा, कालबली भरमाय॥** ऐसे जब-जब योग बनते हैं, तब-तब धरा पर युद्धोत्पात हुआ करते हैं। सर्वत्र शान्ति के प्रयास किये जायेंगे। सरकारी तौर पर कड़े कदम उठाये जा सकते हैं।

तेजी मन्दी विचार- कुम्भ की बैठी बाल्यावस्था की संक्रांति मु.१५ तेजीकारक है। पक्षान्तर्गत उत्तरोत्तर महंगाई बढ़ती जायेगी। पक्षान्त में मार्गी होकर बुध चालू मार्कीट के रुख को बदल देगा- **वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की, एकदम पलटा खाय॥** वृष का मंगल सभी अनाज, चन्दन, कुमकुम, वस्त्र, कपास, लाल रंग की वस्तुओं में तेजी करेगा- **वृष राशौ यदा भौमः सर्वधान्य महर्घता। चन्दनं कुमकुम वस्त्रं कार्पासादि महार्घता॥ आकाशलक्षण-** शुक्र अस्त, बुध-गुरु उदय, ग्रह राशि नक्षत्र चार के प्रभाव से यत्र-तत्र बादलचाल, मेघगर्जन, बिजली, गाज के साथ वर्षा होगी। कहीं भारी हिमपात के कारण ठिठुरन बढ़ेगी। शीतलहर चलेगी। यातायात में बाधा पडेगी। खडी फसलों में क्षति सम्भव है। शकुन विचार- **माघ उँजेरी पंचमी, बहसी उत्तर बाय। तो जानौ कि भादवाँ, बिन जल कोरो जाय॥**

माघ शु.१५ शनौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३६१५

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	४	१	९	९	१०	९	१	७
अं.	१४	९	२	१८	२२	७	१४	२१	२१
क.	२७	५३	५२	४०	०	३९	६	४१	४१
वि.	४०	१५	५३	४४	२४	४९	१८	८	८
गति	६०	८५८	३४	३६	१३	७४	६	३	३
	१६	१४	३१	१२	४२	५९	२८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	शत. ३	मघा ३	कृत्ति.२	श्रव. ३	श्रव. ४	शत. १	श्रव. २	रोहि.४	ज्ये. २
नाडी	स्वर्ग	पाताल	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग	पाताल	पाताल	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे दक्षिणगोले। ता.२८ फरवरी से १३ मार्च सन् २०२१ ई.तक॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	रा. फा	प्र. फा	मु. रु	फर.	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं.३०मि.) रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
छत्र	१	र	११	७	११	१८	पूफा	६	५०	९	३५	धृ	२३	४२	१६	२०	कौ	११	७	२८	३२	६	५१	१८	१६	१७	९	१७	१५	28	क.१५।५	१०	१५	२७	५६	इष्टिः, विज्ञानदिवस, स.सि.योग ९।३५से
श्रीवत्स	२	चं	४	२०	८	३५	उफा	१/५६	५२/४०	७/२१	३६/३१	शूल	१५	८	१२	५४	गर	४	२०	२८	३५	६	५१	१८	१७	१८	१०	१८	१६	1	कन्या	१०	१६	२८	९	भ.१९।११से २९।४६तक, **मार्च मास ३** ता.३१
ति.क्षय	३	चं	५७	१७	२९	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	तृतीयाक्षयः
ध्वांक्ष	४	मं	५०	२५	२६	५९	चि	५१	३७	२७	२८	गंड	६/५७	२७/५०	९/२१	२४/५७	बव	२३	५१	२८	४२	६	४९	१८	१८	१९	११	१९	१७	2	तु.१६।२९	१०	१७	२८	२१	**चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय २१।४२
धूम्र	५	बु	४३	५२	२४	२१	स्वा	४६	५७	२५	३५	ध्रु	४९	३७	२६	३९	कौ	१७	९	२८	४५	६	४८	१८	१८	२०	१२	२०	१८	3	तुला	१०	१८	२८	३२	माँयशोदाजयंती, महाकालपूजाउज्जैन, भागवतभवनप्रतिष्ठादि.मथुराA
प्रवर्ध	६	गु	३७	५८	२१	५८	वि	४२	५३	२३	५६	व्या	४१	५५	२३	३३	गर	१०	५५	२८	५०	६	४७	१८	१९	२१	१३	२१	१९	4	वृ.१८।२१	१०	१९	२८	४०	भ.२१।५८से, **पूभायांरविः१७।५९**, धनिष्ठा१गुरुः२५।५८ स.सि.यो.B
राक्ष.	७	शु	३२	५०	१९	५४	अनु	३९	३७	२२	३७	ह	३४	५०	२०	४२	वि	५	२४	२८	५५	६	४६	१८	२०	२२	१४	२२	२०	5	वृश्चिक	१०	२०	२८	४८	भ.८।५६तक, कालाष्टमी, धनि.बुधः७।१५, र.यो.व स.सि.यो.२२।३७तक
मूस.	८	श	२८	३२	१८	१०	ज्ये	३७	१०	२१	३७	वज्र	२८	२७	१८	८	बा	०	४६	२८	५७	६	४५	१८	२०	२३	१५	२३	२१	6	ध.२१।३७	१०	२१	२८	५३	श्रीजानकीव्रत, अष्टकाश्राद्ध
सिद्धि	९	र	२५	८	१६	४७	मू	३५	३५	२०	५८	सि	२२	४५	१५	५०	गर	२५	८	२९	३	६	४४	१८	२१	२४	१६	२४	२२	7	धनु	१०	२२	२८	५८	भ.२८।१५से, समर्थगुरु रामदासनवमी, स.सि.योग २०।५८तक
उत्पात	१०	चं	२२	३२	१५	४४	पूषा	३४	५०	२०	३९	व्य	१७	४५	१३	४९	वि	२२	३२	२९	५	६	४३	१८	२१	२५	१७	२५	२३	8	म.२६।४०	१०	२३	२९	०	भ.१५।४४तक, महर्षिदयानन्दजयंती, पूभायांशुक्रः२६।३४, वि. महिलादि.
ए.व्रत	११	मं	२०	५०	१५	२	उषा	३४	५५	२०	४०	वरि	१३	२५	१२	४	बा	२०	५०	२९	१०	६	४२	१८	२२	२६	१८	२६	२४	9	मकर	१०	२४	२९	१	विजयाएकादशीव्रत(सर्वे.)
छत्र	१२	बु	२०	०	१४	४०	श्र	३५	५५	२१	२	परि	९	४७	१०	३५	तै	२०	०	२९	१५	६	४०	१८	२२	२७	१९	२७	२५	10	मकर	१०	२५	२९	०	प्रदोषव्रत, **श्रीशिवबरात**(हास्यरस)
श्रीवत्स	१३	गु	२०	०	१४	३९	ध	३७	४२	२१	४४	शि	६	५०	९	२३	व	२०	०	२९	२०	६	३९	१८	२३	२८	२०	२८	२६	11	कु.९।२३	१०	२६	२८	५८	भ.१४।३९से२६।५१तक, **पंचकप्रा.९।२३, महाशिवरात्रिव्रत**, चतुर्दशC
सौम्य	१४	शु	२१	०	१५	२	शत	४०	३०	२२	५०	सि	४	३५	८	२८	श	२१	०	२९	२५	६	३८	१८	२४	२९	२१	२९	२७	12	कुम्भ	१०	२७	२८	५४	शब-ए-मिराज मुस.
मावस	३०	श	२३	२	१५	५०	पूभा	४४	२०	२४	२१	सा	३	१०	७	५३	ना	२३	२	२९	२९	६	३७	१८	२५	३०	२२	३०	२८	13	मी.१७।५८	१०	२८	२८	४८	अन्वा., स्नानदानादि **देवपितृकार्येऽमापुण्यः**, शिवखप्परपूजा, **शनैश्चरी**D

A रवियोग २५।३५से B २३।५६से, रवियोग

C ज्योतिर्लिंगपूजा, रोहिण्यांभौमः११।४८, कुम्भेबुधः१२।३१, श्रीवैद्यनाथजयंती, मेलाराठौड़ा रामपुर D **मावस** मेला शनि शिंगनापुर

फाल्गुन कृ.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३६२२

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	७	१	९	९	१०	९	१	७
अं.	२१	२०	६	२४	२३	१६	१४	२१	२१
क.	२८	३९	५५	१३	३५	२४	५०	१८	१८
वि.	५३	३०	४२	२१	२९	२६	५४	५२	५२
गति	६०	[illegible]	३४	६०	१३	७४	६	३	३
	५	३५	५५	१७	२५	५४	११	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूभा.१	ज्ये.२	कृति.४	धनि.१	धनि.१	शत.१	श्रव.२	रोहि.४	ज्ये.२
नाड़ी	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	भूमि	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

'पंचार्क वासरे रोगपीड़ा लोकेषु जायते' मास में पांच रविवारों का फल उत्तेजनात्मक होने से जनता में क्षोभ होगा। मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरिजाघर, अन्यान्य धार्मिक विवाद विकराल रूप धारण कर सकता है। अंगारक योग का फल- **राहुरंगारकश्चैक राशि ऋक्ष गतो तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥** खड़ी फसलों में हानि होगी। मौसम की प्रतिकूलता किसानों के लिए परेशानी का कारण बनेगी। सरकारी तौर पर राहत कार्यों की घोषणा हो सकती है। देश-विदेशों से आवश्यक वस्तु आदान-प्रदान संधि समझौता सम्भव है। तब तो देश में खुशहाली बढ़ेगी।

फाल्गुन कृ.३० शनौ प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३६२९

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१०	१	१०	९	१०	९	१	७
अं.	२८	२३	११	२	२५	२५	१५	२०	२०
क.	२८	२९	१	४	८	८	३३	५६	५६
वि.	४८	१९	१०	२५	१९	३१	०	३७	३७
गति	५९	७४९	३५	७५	१३	७४	५	३	३
	५२	३२	१६	३१	३	५०	५०	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूभा.३	पूभा.२	रोहि.१	धनि.३	धनि.१	पूभा.२	श्रव.२	रोहि.४	ज्ये.२
नाड़ी	स्वर्ग	स्वर्ग	पाताल	भूमि	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	स्वर्ग

तेजी मन्दी विचार- चल रहे सामयक भावों में कोई खास परिवर्तन नहीं होगा। खोआ, पनीर, चीनी, बूरा, बताशा, सभी मेवायें, गुड़, शक्कर, फल, हरी सब्जियों के भाव बढ़ सकते हैं। सोयाबीन, खल, बिनौला, मूंगफली, मशीनरी, वाहन, धातु, वस्त्राभूषण, निर्माण की वस्तुएं तेज हो सकती हैं। **आकाशलक्षण-** कभी कहीं आकाश स्वच्छ रहेगा तो कभी बादल, वायुवेग के साथ न्यूनाधिक वर्षा का संयोग बनेगा। पक्ष के आरम्भ और अन्त में मेघगर्जन, बिजली, गाज, हिमपात, ओलावृष्टि सम्भव है। उत्तरभारत शीतलहर की चपेट में आ सकता है। शकुनविचार- **फाल्गुन माह बहे पुरवाई। तब सरसों के माहू खाई॥** खड़ी फसल सरसों आदि में चेंपा लग सकता है। श्री शिवबरात हास्यरस महोत्सव दिल्ली में प्रतिवर्ष शिवरात्रि के पहले दिन मनाया जाता है।

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे दक्षिणगोले। ता. १४ से २८ मार्च सन् २०२१ ई. तक॥

योगाः	तिथि	वार	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	योग	घटी	पल	स्टैं.टा. घं.	स्टैं.टा. मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदयास्त उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	गते	तारीखें रा. फा	प्र. चै	मु. रज	मार्च	चन्द्र संचार स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५घं.३०मि. रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित भद्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टैं.टा.घंटा-मिनटोंमें है।
स्थिर	१	र	२६	१५	१७	६	उभा	४९	१५	२६	१८	शुभ	२	३५	७	३८	बव	२६	१५	२९	३२	६	३६	१८	२५	१	२३	१	२९	14	मीन	१०	२९	२८	४०	इष्टिः, मीनमेंसूर्य१८।४, संक्रांतिमु.४५, बंगवसौरचैत्रारम्भः, (मीनखरमासA
मातङ्ग	२	चं	३०	३५	१८	४९	रे	५५	१७	२८	४२	शु	२	५५	७	४५	कौ	३०	३५	२९	३९	६	३५	१८	२६	२	२४	२	३०	15	मे.२८।४२	११	०	२८	३०	पंचकस.२८।४२, चन्द्रदर्शनमु.३०फुलेरादूज, लोकप्र.मु., श्रीरामकृष्णB
अमृत	३	मं	३६	०	२०	५८	अ	६०	०	–	–	ब्र	४	५	८	१२	तै	३	१७	२९	४०	६	३४	१८	२६	३	२५	३	१	16	मेष	११	१	२८	२८	पं.लेखरामवीरतृतीया, मीनेशुक्रः२७।१, शतेबुधः१८।३२, शावान८, स.C
काण	४	बु	४२	१७	२३	२८	अ	२	२२	७	३०	ऐं	६	०	८	५७	व	९	९	२९	४५	६	३३	१८	२७	४	२६	४	२	17	मेष	११	२	२८	४	भ.१०।१३से२३।२८तक, अविघ्नकरव्रत, उभायांरविः२६।२२, दिव्यांगदि.
पद्म	५	गु	४९	२	२६	९	भर	१०	३	१०	३३	वै	८	२७	९	५५	बव	१५	३९	२९	४७	६	३२	१८	२७	५	२७	५	३	18	वृ.१७।२०	११	३	२७	४७	B परमहंसजयंती, तेजीमन्दी सूचकांक१४७६
छत्र	६	शु	५५	४५	२८	४८	कृ	१८	२	१३	४३	वि	११	१०	१०	५८	कौ	२२	२४	२९	५३	६	३०	१८	२७	६	२८	६	४	19	वृष	११	४	२७	२९	उभायांशुक्रः१९।१४, सौभाग्यसूचक रोहिणीव्रत, र.योग १३।४३से
श्रीवत्स	७	श	६०	०	–	–	रो	२५	३७	१६	४४	प्री	१३	३५	११	५५	गर	२८	४५	२९	५७	६	२९	१८	२८	७	२९	७	५	20	मि.३०।४	११	५	२७	८	सा.मेषेभानुः१५।९, वसन्तसम्पात, महाविषुवदिन, रविउत्तरगोले, देवD
सौम्य	७	र	१	४५	७	१०	मृग	३२	१७	१९	२३	आ	१५	२५	१२	३८	व	१	४५	३०	०	६	२८	१८	२८	८	३०	८	६	21	मिथुन	११	६	२६	४५	भ.७।१०से २०।३५तक, अष्टाह्निकाप्रा.जैन, रात्रिदिनमसमम्
कालदंड	८	चं	६	२५	९	०	आ	३७	३३	२१	२७	सौ	१६	१०	१२	५४	बव	६	२५	३०	७	६	२६	१८	२९	९	१	९	७	22	मिथुन	११	७	२६	२०	संतदादूदयालज., होलाष्टकप्रा., श्रीजीमंदिर में लड्डुओं की होली, फागE
स्थिर	९	मं	९	१५	१०	७	पुन	४०	४७	२२	४४	शो	१५	२७	१२	३६	कौ	९	१५	३०	१०	६	२५	१८	२९	१०	२	१०	८	23	क.१६।२५	११	८	२५	५२	लट्ठमारहोली बरसाना, शहीददिवस, भक्तमीराबाईजयंती, र.योग
मातङ्ग	१०	बु	९	५७	१०	२३	पु	४१	५८	२३	११	अति	१३	७	११	३९	गर	९	५७	३०	१५	६	२४	१८	३०	११	३	११	९	24	कर्क	११	९	२५	२२	भ.२२।१०से, लट्ठमारहोलीनन्दगाँव, रवियोग २३।११तक
ए.व्रत	११	गु	८	३०	९	४७	श्ले	४१	२	२२	४८	सु	९	८	१०	२	वि	८	३०	३०	२०	६	२३	१८	३१	१२	४	१२	१०	25	सिंर२।४८	११	१०	२४	५०	भ.९।४७तक, आमलकीएकादशीव्रत(सर्वे.), मे.खाटूश्यामप्रा., श्रव.३F
काण	१२	शु	४	५७	८	२१	म	३८	१०	२१	३८	धृ	३/५६	२५/१५	७/२८	४४/५२	बा	४	५७	३०	२५	६	२२	१८	३२	१३	५	१३	११	26	सिंह	११	११	२४	१५	गोविन्दद्वादशी, मेलाखाटूश्याम(राज), प्रदोषव्रत, रवियोग २१।३८से
ति.क्षय	१३	शु	५९	३२	३०	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	त्रयोदशीक्षयः A प्रा.)स.सि.योग C सि.योग, र.योग
लुंबक	१४	श	५२	४२	२७	२६	पूफा	३३	४५	१९	५१	गंड	४७	५२	२५	३०	गर	२६	७	३०	२७	६	२१	१८	३२	१४	६	१४	१२	27	क.२५।१७	११	१२	२३	३९	भ.२७।२६से, रवियोग १९।५१तक
होली	१५	र	४४	५३	२४	१७	उफा	२८	७	१७	३५	वृ	३८	३७	२१	४७	वि	१८	४७	३०	३२	६	२०	१८	३३	१५	७	१५	१३	28	कन्या	११	१३	२३	०	भ.१३।५१तक, अन्वा.पूर्णिमापुण्यः, होलिकादहनसायं६।३३उप.प्रदोषG

D दिनोदय, दैत्यनिशाप्रवेश, स.सि.यो., धनि.२गुरुः८।३१, र.यो.१६।४४तक E निमन्त्रणनन्दगाँव, रा.चैत्रारम्भः, शाके१९४३प्रा.जलदिवस, र.यो.२१।२७से F शनिः९।२९, पूभा.बुधः२१।५६, श्रीरामचरणस्नेहीफूलडोलमे.शाहपुरा मेवाड़, लट्ठमारहोलीजन्मभूमि, रंगभरीग्यारस, शिव-पार्वतीकाशीआगमन, G काले, वायुपरीक्षा, नवान्नेष्टि, दारुणरात्रिहुताशनी, चैतन्यमहाप्रभुजयंती, अष्टकाश्राद्ध, पामसन्डे, ज्वालानिष्कासन फालेनगाँव, अष्टाह्निकापूर्ण, स.सि.यो.

फाल्गुन शु. ८ चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३६३८

ग्रहा	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	११	२	१	१०	९	११	९	१	७
अं.	७	११	१६	१४	२७	६	१६	२०	२०
क.	२६	४६	२०	२२	३	२१	२३	२८	२८
वि.	२०	५४	६	४७	३०	१८	२६	०	०
गति	५९ ३२	७४४ ३	३५ ३७	८९ ३२	१२ २८	७४ ४०	५ १८	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	उभा.२	आर्द्रा२	रोहि.२	शत.३	धनि.२	उभा.१	श्रव.२	रोहि.४	ज्ये.२
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	पाताल	स्वर्ग	भूमि	भूमि	पाताल	पाताल	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

मीन में सूर्य तेजी को बल देगा। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्तिपरिचर्चा निष्प्रभावी रहेगी। यूरोपियन देश अपनी अलग नीति बनाने में लगे रहेंगे और खाड़ी के देश ईसाई देशों के खिलाफ एकजुट होंगे। प्रभावी देशों में बारूद का ढ़ेर (हथियार भण्डार) ऊँचा होता चला जायेगा। भारत के कर्णधारों को विरोधी ताकतों से सावधान रहना चाहिये। विदेशी कूटनीतिज्ञ का आना, कश्मीर के मामले में चर्चा करना खतरे से खाली नहीं। पड़ौसी देश में भारी राजनीतिक उथल-पुथल क्षति का कारण बन सकती है। **तेजी मन्दी विचार-** तिथियों की घटा-बढ़ी का फल अच्छा है- जेहि **पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥** दैनिक उपयोगी वस्तुओं के भावों में गिरावट दर्ज की जा सकती है। पक्षारम्भ में कुमारावस्था की बैठी मीन संक्रांतिमु.४५ मन्दीकारक है। चन्द्रदर्शनमु.३० और मीन का शुक्र भी मन्दीकारक है। संक्रांति मुहूर्त्तान्तर फल ऐसा लिखा है- **पन्द्रह से पैंतालीस जाय। रतन भाव में अन्न बिकाय॥** त्यौहार पर तेजी होगी। **आकाशलक्षण-** पक्षान्तर्गत बादलचाल वायुवेग के साथ न्यूनाधिक वर्षा, सर्द-गर्म की प्रतिक्रिया, रोगोत्पात, हिमपात, झन्झावात, दुर्दिन भूकम्प से क्षति, यान-खान कुघटनाचक्र किंवा विस्फोट सम्भव है। **होलिकापूजन-** रविवार में १२।५८ से कर सकते हैं। भद्रावास कन्या के चन्द्रमा होने से पाताल में रहेगा, सो व्यवधानकारक नहीं। **होलिकादहन-** रात्रि में ६।३३ के बाद कभी भी कर सकते हैं।

फाल्गुन शु.१५ रवि प्रातः५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गणः३६४४

ग्रहा	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	५	१	१०	९	११	९	१	७
अं.	१३	२	१९	२३	२८	१३	१६	२०	२०
क.	२३	३२	५४	४०	१७	४९	५४	८	८
वि.	०	१४	१९	४७	१३	०	१७	५६	५६
गति	५९ १९	८९० १७	३५ ४८	९७ ४९	१२ १	७४ ३३	४ ५५	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	उभा.४	उफा.२	रोहि.३	पूभा.२	धनि.२	उभा.४	श्रव.३	रोहि.४	ज्ये.२
नाड़ी	भूमि	स्वर्ग	पाताल	स्वर्ग	भूमि	भूमि	पाताल	पाताल	स्वर्ग

श्री सम्वत् २०७७ शाके १९४२ चैत्र कृष्ण पक्ष २६

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे उत्तरगोले।
ता. २९ मार्च से १२ अप्रैल सन् २०२१ ई. तक॥

	ति.	वार	घटी पल स्टै.टा. घं.मि.	नक्षत्र	घटी पल स्टै.टा. घं.मि.	योग	घटी पल स्टै.टा. घं.मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	मि.	रा.चै	प्र.चै	मु.शा	ता.मा	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	निम्नलिखित पत्रा व्रतोत्सवादिका सभी समय स्टै.टा.घंटा-मिनटों में है
[illegible]	१	चं	[illegible]	ह	[illegible]	ध्रु	[illegible]	बा	१०	४०	३०	३८	६	१९	१८	३४	१६	८	१६	१४	29	तु २५।४९	११	१४	५२	१९	इष्टि:, वसन्तोत्सव:, होरेंडी, धूलिण्डी, अभ्यङ्गस्नान, [illegible] A
[illegible]	२	मं	[illegible]	चि	[illegible]	व्या	[illegible]	तै	२	९	३०	४०	६	१८	१८	३४	१७	९	१७	१५	30	तुला	११	१५	५२	३६	प.२७।४७से, संतुकारामजयंती, श्रीरंगजीमंदिरोत्सव: रेवत्यांशुक्र:११।३३ B
[illegible]	३	बु	[illegible]	स्वा	[illegible]	ह	[illegible]	वि	१९	३५	३०	४५	६	१६	१८	३४	१८	१०	१८	१६	31	वृ २५।५३	११	१६	५२	५१	प.१४।६तक, कल्यादि:, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय२१।४१, रेवत्यांरवि: C
[illegible]	४	गु	[illegible]	वि	[illegible]	सि	[illegible]	बा	११	५०	३०	४८	६	१५	१८	३४	१९	११	१९	१७	1	वृश्चिक	११	१७	५२	०४	अप्रैल४ता.३०, अप्रैलफूल, **बैंकवार्षिक लेखाबन्दी**, स.सि.योग
[illegible]	५	शु	[illegible]	ज्ये	[illegible]	व्य	[illegible]	तै	५	२	३०	५२	६	१४	१८	३५	२०	१२	२०	१८	2	ध.२७।०३	११	१८	५१	१६	प.२१।५८से, एकनाथषष्ठी, शीतलापूजन, मृगेभौम:२३।४, उभा.बुध: D
[illegible]	६	श	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	षष्ठीक्षय:
[illegible]	७	श	[illegible]	मू	[illegible]	व	[illegible]	वि	२३	१	३०	५५	६	१३	१८	३५	२१	१३	२१	१९	3	धनु	११	१९	५१	२६	प.१७।५तक, शीतलापूजा(बासोड़ा), रविर्योग २६।३७तक
[illegible]	८	र	[illegible]	पूषा	[illegible]	परि	[illegible]	बा	३३	२७	३०	५७	६	१२	१८	३५	२२	१४	२२	२०	4	धनु	११	२०	५०	३३	शीतलाष्टमीपूजन, केसरियामे.मेवाड़, कालाष्टमी, अष्टकाश्राद्ध, इष्टि: E
[illegible]	९	चं	[illegible]	उषा	[illegible]	शि	[illegible]	तै	२१	७	३१	२	६	११	१८	३६	२३	१५	२३	२१	5	म.८।०५	११	२१	५०	४०	धनिष्ठा३ **कुम्भेगुरु:**२४।२२, स.सि.योग २६।४१से
[illegible]	१०	मं	[illegible]	श्र	[illegible]	सि	[illegible]	व	२०	७	३१	५	६	१०	१८	३६	२४	१६	२४	२२	6	मकर	११	२२	४९	४६	प.२४।२३से २६।१३तक, दशमातापूजन, **बुधास्त पूर्वस्यां** ६।१५
[illegible]	११	बु	[illegible]	ध	[illegible]	सा	[illegible]	बव	२०	२४	३१	१२	६	८	१८	३७	२५	१७	२५	२३	7	कु.१५।३	११	२३	४८	५७	**पंचक प्रारम्भ** १५।३, **पापमोचनीएकादशीव्रत**(सर्वे.), स्वास्थ्यदिवस
[illegible]	१२	गु	[illegible]	शत	[illegible]	शु	[illegible]	कौ	२१	५०	३१	१५	६	७	१८	३७	२६	१८	२६	२४	8	कुम्भ	११	२४	४७	५७	पापमोचनी११व्रत निम्बार्क, जलसंसाधनदिवस
[illegible]	१३	शु	[illegible]	पूभा	[illegible]	शु	[illegible]	गर	२४	२१	३१	२०	६	६	१८	३८	२७	१९	२७	२५	9	मी.२८।१८	११	२५	४६	५६	प.२८।२७से, **प्रदोषव्रत**, रंगतेरस, रेवत्यांबुध:२१।४, सौर्यदिवस
[illegible]	१४	श	[illegible]	उभा	[illegible]	ब्र	[illegible]	वि	२७	५४	३१	२५	६	५	१८	३९	२८	२०	२८	२६	10	मीन	११	२६	४५	५४	प.१७।१४तक, अश्वि.**मेषेशुक्र:**६।२८, रेलसप्ताह, मासशिवरात्रि
[illegible]	३०	र	[illegible]	रे	[illegible]	ऐं	[illegible]	च	३२	२५	३१	३३	६	३	१८	४०	२९	२१	२९	२७	11	मीन	११	२७	४४	५०	अन्वा., **नौचन्दी मे.मेरठ**, पितरकार्येऽमा, स.सि.योग ८।५६तक
[illegible]	३०	चं	[illegible]	अ	[illegible]	वै	[illegible]	ना	४	५५	३१	३७	६	२	१८	४१	३०	२२	३०	२८	12	मे.११।२८	११	२८	४३	४३	इष्टि:, **पंचकस.**११।२८, सोमोती स्नान-दानादिअमापुण्य:, चान्द्रवर्ष F

A गणगौर पूजनारम्भ:(राज.)
B रोहि.३राहु: ज्ये.१केतु:२५।४७, शबेरात यवनोत्सव:
C १३।१४, **मीनेबुध:**२४।४२
D २२।५६, गुड़फाड़डे, रंगपंचमीउत्सव, र.योग
E सन्दे, श्रीऋषभदेवज. दीक्षादिवस, वर्षीतपप्रा., रंगजीरथोत्सव: वृन्दा.
F समाप्त, श्रीरस्तु:

चैत्र कृ.८ रवि प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३६५१

ग्रह	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
रा.	११	८	१	११	९	११	९	१	७
अं.	२०	१८	२८	५	२९	२२	१७	१९	१९
क.	१३	५३	५	३८	३९	३०	२७	५६	५६
वि.	३३	४७	२८	२९	३९	३०	१२	३९	३९
गति	५९ / ७	[illegible]	३५	१०९ / ३५	११ / २७	३८ / २७	६ / २५	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	रेव. २	पूषा. १	मृग. १	उभा. १	धनि. २	रेव. २	श्रव. ३	रोहि. ३	ज्ये. १
नाड़ी	पाताल	भूमि	भूमि	भूमि	भूमि	पाताल	पाताल	पाताल	स्वर्ग

॥ फलम् ॥

चैत्र में पांच सोमवार श्रेष्ठ तो भौमवार नेष्ट हैं- **सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धि:स्यात् सुखं भवति सर्वदा॥** कल कारखानों में उत्पादन बढ़ने, खेती में पैदावार अच्छी होने से सौख्य-समृद्धि बढ़ेगी। भाव अभिवृद्धि से जनता राहत की सांस लेगी। अन्तर्राष्ट्रीय विश्व परिषद में शान्ति परिचर्चा होगी। भारत का मान बढ़ेगा। पाकिस्तान, रूस, चीन, जापान, अफगानिस्तान, अमेरिका में युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा। स्वदेश के प्रहरियों को सचेत रहना चाहिये। **एक राशी गता होते सौम्य शुक्र दिनाधिपा:। सर्वधान्य महर्धत्वं मेघा स्वल्प जलप्रदा:॥** वर्षा, बवंडर, किंवा हिमपात का संयोग बनेगा। **तेजी मन्दी विचार-** ग्रहचाल के प्रभाव से बाजारभाव ऊँचे-नीचे होते रहेंगे। सरिया सीमेन्ट, पत्थर आदि में तेजी होगी। श्रृंगार सामग्री, रंगरोगन, वाहन, पशुधन, सूतीवस्त्र, फल, सब्जियाँ, पेयपदार्थ, मिष्ठान्न, पूजा सामग्री महंगी हो सकती है। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकैं, महंगाई हट जाय॥** अन्यान्य वस्तुओं के भाव पड़े रह सकते हैं। **आकाशलक्षण-** यत्र-तत्र बादलचाल, बूंदा-बांदी का योग बनेगा। आंधी-तूफान, बवंडर के चलते खलिहानों में अनाज की बरबादी होगी। **एक बूँद जो चैत मँह परै। सहस बूँद सावन मँह हरै॥** इस मास की वर्षा, बर्फबारी होना आगामी वर्षाकाल के लिये श्रेष्ठ नहीं होती। खलिहानों में अनाज की बरबादी हो जाती है। **-पं.प्रेमपाल कौशिक** ३०-६-२०१९

चैत्र कृ.३० चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि. के ग्रह स्पष्ट, केतकी अहर्गण:३६५१

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	११	१	११	१०	०	९	१	७
अं.	२८	२६	२८	२०	१	२	१८	१९	१९
क.	९	५१	५४	३५	८	२५	०	२१	२१
वि.	३३	४६	३	३६	३४	३४	२२	१३	१३
गति	५८ / ५२	७१७ / ३९	३६ / १०	१११ / ५	१० / ४१	७४ / १८	३ / ४७	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	रेव. ४	रेव. ४	मृग. २	रेव. २	धनि.३	अश्वि१	श्रव. ३	रोहि.३	ज्ये. १
नाड़ी	पाताल	पाताल	भूमि	पाताल	भूमि	स्वर्ग	पाताल	पाताल	स्वर्ग

अप्रैल की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मेष प्रात:	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला सायं	वृश्चिक रात्रि	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन प्रात:
१	६।५०	८।२६	१०।२२	१२।३५	१४।५६	१७।१३	१९।२९	२१।४९	०।०७	२।१०	३।५३	५।२१
२	६।४६	८।२२	१०।१८	१२।३१	१४।५२	१७।०९	१९।२५	२१।४५	०।०३	२।०६	३।४९	५।१७
३	६।४२	८।१८	१०।१४	१२।२७	१४।४८	१७।०५	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।०२	३।४५	५।१३
४	६।३८	८।१४	१०।१०	१२।२३	१४।४४	१७।०१	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५८	३।४१	५।०९
५	६।३४	८।१०	१०।०६	१२।१९	१४।४०	१६।५७	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५४	३।३७	५।०५
६	६।३०	८।०६	१०।०२	१२।१५	१४।३६	१६।५३	१९।०९	२१।२९	२३।४७	१।५०	३।३३	५।०१
७	६।२६	८।०२	९।५८	१२।११	१४।३२	१६।४९	१९।०५	२१।२५	२३।४३	१।४६	३।२९	४।५७
८	६।२२	७।५८	९।५४	१२।०७	१४।२८	१६।४५	१९।०१	२१।२१	२३।३९	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	९।५०	१२।०३	१४।२४	१६।४१	१८।५७	२१।१७	२३।३५	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	९।४६	११।५९	१४।१९	१६।३७	१८।५३	२१।१३	२३।३१	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	९।४२	११।५५	१४।१५	१६।३३	१८।४९	२१।०९	२३।२७	१।३०	३।१३	४।४१
१२	६।०६	७।४२	९।३८	११।५१	१४।११	१६।२९	१८।४५	२१।०५	२३ :२३	१।२६	३।०९	४।३७
१३	६।०२	७।३८	९।३४	११।४७	१४।०७	१६।२५	१८।४१	२१।०१	२३।१९	१।२२	३।०५	४।३३
१४	५।५८	७।३४	९।३०	११।४३	१४।०३	१६।२१	१८।३७	२०।५७	२३।१५	१।१८	३।०१	४।२९
१५	५।५४	७।३०	९।२६	११।३९	१३।५९	१६।१७	१८।३३	२०।५३	२३।११	१।१४	२।५७	४।२५
१६	५।५१	७।२७	९।२३	११।३६	१३।५६	१६।१४	१८।३०	२०।५०	२३।०८	१।११	२।५४	४।२२
१७	५।४७	७।२३	९।१९	११।३२	१३।५२	१६।१०	१८।२६	२०।४६	२३।०४	१।०७	२।५०	४।१८
१८	५।४३	७।१९	९।१५	११।२८	१३।४८	१६।०६	१८।२२	२०।४२	२३।००	१।०३	२।४६	४।१४
१९	५।३९	७।१५	९।११	११।२४	१३।४४	१६।०२	१८।१८	२०।३८	२२।५६	०।५९	२।४२	४।१०
२०	५।३५	७।११	९।०७	११।२०	१३।४०	१५।५८	१८।१४	२०।३४	२२।५२	०।५५	२।३८	४।०६
२१	५।३१	७।०७	९।०३	११।१६	१३।३६	१५।५४	१८।१०	२०।३०	२२।४८	०।५१	२।३४	४।०२
२२	५।२७	७।०३	८।५९	११।१२	१३।३२	१५।५०	१८।०६	२०।२६	२२।४४	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	८।५५	११।०८	१३।२८	१५।४६	१८।०२	२०।२२	२२।४०	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	८।५१	११।०४	१३।२४	१५।४२	१७।५८	२०।१८	२२।३६	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	८।४७	११।००	१३।२०	१५।३८	१७।५४	२०।१४	२२।३२	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	८।४३	१०।५६	१३।१६	१५।३४	१७।५०	२०।१०	२२।२८	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५।०७	६।४३	८।३९	१०।५२	१३।१२	१५।३०	१७।४६	२०।०६	२२।२४	०।२७	२।१०	३।३८
२८	५।०३	६।३९	८।३५	१०।४८	१३।०८	१५।२६	१७।४२	२०।०२	२२।२०	०।२३	२।०६	३।३४
२९	४।५९	६।३५	८।३१	१०।४४	१३।०४	१५।२२	१७।३८	१९।५८	२२।१६	०।१९	२।०२	३।३०
३०	४।५५	६।३१	८।२७	१०।४०	१३।००	१५।१८	१७।३४	१९।५४	२२।१२	०।१५	१।५८	३।२६

तारीख के सामने और लग्नों के नीचे लिखे अंक घंटा-मिनट लग्न प्रारम्भ होने का समय है।

मई की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	वृष प्रात:	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चि. सायं	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि	मेष प्रात:
१	६।२६	८।२२	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।३०	१९।४९	२२।०७	०।११	१।५३	३।२१	४।४६
२	६।२२	८।१८	१०।३२	१२।५१	१५।०९	१७।२६	१९।४५	२२।०३	०।०७	१।४९	३।१७	४।४२
३	६।१८	८।१४	१०।२८	१२।४७	१५।०५	१७।२२	१९।४१	२१।५९	०।०३	१।४५	३।१३	४।३८
४	६।१४	८।१०	१०।२४	१२।४३	१५।०१	१७।१८	१९।३७	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।०९	४।३४
५	६।११	८।०७	१०।२१	१२।४०	१४।५८	१७।१५	१९।३४	२१।५२	२३।५६	१।३८	३।०६	४।३१
६	६।०७	८।०३	१०।१७	१२।३६	१४।५४	१७।११	१९।३०	२१।४८	२३।५२	१।३४	३।०२	४।२७
७	६।०३	७।५९	१०।१३	१२।३२	१४।५०	१७।०७	१९।२६	२१।४४	२३।४८	१।३०	२।५८	४।२३
८	५।५९	७।५५	१०।०९	१२।२८	१४।४६	१७।०३	१९।२२	२१।४०	२३।४४	१।२६	२।५४	४।१९
९	५।५५	७।५१	१०।०५	१२।२४	१४।४२	१६।५९	१९।१८	२१।३६	२३।४०	१।२२	२।५०	४।१५
१०	५।५१	७।४७	१०।०१	१२।२०	१४।३८	१६।५५	१९।१४	२१।३२	२३।३६	१।१८	२।४६	४।११
११	५।४७	७।४३	९।५७	१२।१६	१४।३४	१६।५१	१९।१०	२१।२८	२३।३२	१।१४	२।४२	४।०७
१२	५।४३	७।३९	९।५३	१२।१२	१४।३०	१६।४७	१९।०६	२१।२४	२३।२८	१।१०	२।३८	४।०३
१३	५।३९	७।३५	९।४९	१२।०८	१४।२६	१६।४३	१९।०२	२१।२०	२३।२४	१।०६	२।३४	३।५९
१४	५।३५	७।३१	९।४५	१२।०४	१४।२२	१६।३९	१८।५८	२१।१६	२३।२०	१।०२	२।३०	३।५५
१५	५।३१	७।२७	९।४१	१२।००	१४।१८	१६।३५	१८।५४	२१।१२	२३।१६	०।५८	२।२६	३।५१
१६	५।२८	७।२४	९।३८	११।५७	१४।१५	१६।३२	१८।५१	२१।०९	२३।१३	०।५५	२।२३	३।४८
१७	५।२४	७।२०	९।३४	११।५३	१४।११	१६।२८	१८।४७	२१।०५	२३।०९	०।५१	२।१९	३।४४
१८	५।२०	७।१६	९।३०	११।४९	१४।०७	१६।२४	१८।४३	२१।०१	२३।०५	०।४७	२।१५	३।४०
१९	५।१६	७।१२	९।२६	११।४५	१४।०३	१६।२०	१८।३९	२०।५७	२३।०१	०।४३	२।११	३।३६
२०	५।१२	७।०८	९।२२	११।४१	१३।५९	१६।१६	१८।३५	२०।५३	२२।५७	०।३९	२।०७	३।३२
२१	५।०८	७।०४	९।१८	११।३७	१३।५५	१६।१२	१८।३१	२०।४९	२२।५३	०।३५	२।०३	३।२८
२२	५।०४	७।००	९।१४	११।३३	१३।५१	१६।०८	१८।२७	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५९	३।२४
२३	५।००	६।५६	९।१०	११।२९	१३।४७	१६।०४	१८।२३	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५५	३।२०
२४	४।५६	६।५२	९।०६	११।२५	१३।४३	१६।००	१८।१९	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।५१	३।१६
२५	४।५२	६।४८	९।०२	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१५	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४७	३।१२
२६	४।४८	६।४४	८।५८	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।११	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४३	३।०८
२७	४।४४	६।४०	८।५४	११।१३	१३।३१	१५।४८	१८।०७	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३९	३।०४
२८	४।४१	६।३७	८।५१	११।१०	१३।२८	१५।४५	१८।०४	२०।२२	२२।२६	०।०८	१।३६	३।०१
२९	४।३७	६।३३	८।४७	११।०६	१३।२४	१५।४१	१८।००	२०।१८	२२।२२	०।०४	१।३२	२।५७
३०	४।३३	६।२९	८।४३	११।०२	१३।२०	१५।३७	१७।५६	२०।१४	२२।१८	२४।००	१।२८	२।५३
३१	४।२९	६।२५	८।३९	१०।५८	१३।१६	१५।३३	१७।५२	२०।१०	२२।१४	२३।५६	१।२४	२।४९

लग्न सारिणी देखने की विधि- जिस लग्न के नीचे जिस तारीख के सामने जो समय लिखा हुआ है वह लग्न शुरु होने का समय है। जैसे- १ अप्रैल को मेष लग्न के नीचे ६ घं. ५० मि. लिखा है, इससे स्पष्ट है कि सुबह ६।५० बजे मेष लग्न आरम्भ हुई है। सिंह के नीचे १४।५६ लिखा है अतः दिन के २ बजकर ५६ मिनट से सिंह लग्न प्रारम्भ होगी। उसी समय कर्क लग्न समाप्त हो जायेगी, ऐसा जानें। घंटा-मिनट अर्धरात्रोत्तर (रेलवे नियमानुसार) २४ घंटा तक लिखे गये हैं। **जैसे-** धनु लग्न के नीचे मध्यरात्रि २४ घं. ७ मि. के स्थान पर ० घं. ७ मि. लिखा गया है।

जून की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मिथुन प्रात:	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चि. दिवा	धनु सायं	मकर रात्रि	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि	मेष रात्रि	वृष प्रात:
१	६।१९	८।३३	१०।५३	१३।१०	१५।२७	१७।४७	२०।०४	२२।०८	२३।५१	१।१८	२।४४	४।२०
२	६।१५	८।२९	१०।४९	१३।०६	१५।२३	१७।४३	२०।००	२२।०४	२३।४७	१।१४	२।४०	४।१६
३	६।११	८।२५	१०।४५	१३।०२	१५।१९	१७।३९	१९।५६	२२।००	२३।४३	१।१०	२।३६	४।१२
४	६।०७	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।१५	१७।३५	१९।५२	२१।५६	२३।३९	१।०६	२।३२	४।०८
५	६।०४	८।१८	१०।३८	१२।५५	१५।१२	१७।३२	१९।४९	२१।५३	२३।३६	१।०३	२।२९	४।०५
६	६।००	८।१४	१०।३४	१२।५१	१५।०८	१७।२८	१९।४५	२१।४९	२३।३२	०।५९	२।२५	४।०१
७	५।५६	८।१०	१०।३०	१२।४७	१५।०४	१७।२४	१९।४१	२१।४५	२३।२८	०।५५	२।२१	३।५७
८	५।५२	८।०६	१०।२६	१२।४३	१५।००	१७।२०	१९।३७	२१।४१	२३।२४	०।५१	२।१७	३।५३
९	५।४८	८।०२	१०।२२	१२।३९	१४।५६	१७।१६	१९।३३	२१।३७	२३।२०	०।४७	२।१३	३।४९
१०	५।४४	७।५८	१०।१८	१२।३५	१४।५२	१७।१२	१९।२९	२१।३३	२३।१६	०।४३	२।०९	३।४५
११	५।४१	७।५५	१०।१५	१२।३२	१४।४९	१७।०९	१९।२६	२१।३०	२३।१३	०।४०	२।०६	३।४२
१२	५।३७	७।५१	१०।११	१२।२८	१४।४५	१७।०५	१९।२२	२१।२६	२३।०९	०।३६	२।०२	३।३८
१३	५।३३	७।४७	१०।०७	१२।२४	१४।४१	१७।०१	१९।१८	२१।२२	२३।०५	०।३२	१।५८	३।३४
१४	५।२९	७।४३	१०।०३	१२।२०	१४।३७	१६।५७	१९।१४	२१।१८	२३।०१	०।२८	१।५४	३।३०
१५	५।२५	७।३९	९।५९	१२।१६	१४।३३	१६।५३	१९।१०	२१।१४	२२।५७	०।२४	१।५०	३।२६
१६	५।२१	७।३५	९।५५	१२।१२	१४।२९	१६।४९	१९।०६	२१।१०	२२।५३	०।२०	१।४६	३।२२
१७	५।१८	७।३२	९।५२	१२।०९	१४।२६	१६।४६	१९।०३	२१।०७	२२।५०	०।१७	१।४३	३।१९
१८	५।१४	७।२८	९।४८	१२।०५	१४।२२	१६।४२	१८।५९	२१।०३	२२।४६	०।१३	१।३९	३।१५
१९	५।१०	७।२४	९।४४	१२।०१	१४।१८	१६।३८	१८।५५	२०।५९	२२।४२	०।०९	१।३५	३।११
२०	५।०६	७।२०	९।४०	११।५७	१४।१४	१६।३४	१८।५१	२०।५५	२२।३८	०।०५	१।३१	३।०७
२१	५।०२	७।१६	९।३६	११।५३	१४।१०	१६।३०	१८।४७	२०।५१	२२।३४	०।०१	१।२७	३।०३
२२	४।५८	७।१२	९।३२	११।४९	१४।०६	१६।२६	१८।४३	२०।४७	२२।३०	२३।५७	१।२३	२।५९
२३	४।५४	७।०९	९।२९	११।४६	१४।०३	१६।२३	१८।४०	२०।४४	२२।२७	२३।५४	१।२०	२।५६
२४	४।५०	७।०५	९।२५	११।४२	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।४०	२२।२३	२३।५०	१।१६	२।५२
२५	४।४७	७।०१	९।२१	११।३८	१३।५५	१६।१५	१८।३२	२०।३६	२२।१९	२३।४६	१।१२	२।४८
२६	४।४३	६।५७	९।१७	११।३४	१३।५१	१६।११	१८।२८	२०।३२	२२।१५	२३।४२	१।०८	२।४४
२७	४।३९	६।५३	९।१३	११।३०	१३।४७	१६।०७	१८।२४	२०।२८	२२।११	२३।३८	१।०४	२।४०
२८	४।३५	६।४९	९।०९	११।२६	१३।४३	१६।०३	१८।२०	२०।२४	२२।०७	२३।३४	१।००	२।३६
२९	४।३१	६।४५	९।०५	११।२२	१३।३९	१५।५९	१८।१६	२०।२०	२२।०३	२३।३०	०।५६	२।३२
३०	४।२७	६।४१	९।०१	११।१८	१३।३५	१५।५५	१८।१२	२०।१६	२१।५९	२३।२६	०।५२	२।२८

जुलाई की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कर्क प्रात:	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चि. दिवा	धनु दिवा	मकर सायं	कुम्भ रात्रि	मीन रात्रि	मेष रात्रि	वृष रात्रि	मिथुन प्रात:
१	६।३७	८।५७	११।१५	१३।३१	१५।५१	१८।०९	२०।१२	२१।५५	२३।२३	०।४८	२।२४	४।२०
२	६।३३	८।५३	११।११	१३।२७	१५।४७	१८।०५	२०।०८	२१।५१	२३।१९	०।४४	२।२०	४।१६
३	६।२९	८।४९	११।०७	१३।२३	१५।४३	१८।०१	२०।०४	२१।४७	२३।१५	०।४०	२।१६	४।१२
४	६।२५	८।४५	११।०३	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।००	२१।४३	२३।११	०।३६	२।१२	४।०८
५	६।२१	८।४१	१०।५९	१३।१५	१५।३५	१७।५३	१९।५६	२१।३९	२३।०७	०।३२	२।०८	४।०४
६	६।१७	८।३७	१०।५५	१३।११	१५।३१	१७।४९	१९।५२	२१।३५	२३।०३	०।२८	२।०४	४।००
७	६।१३	८।३३	१०।५१	१३।०७	१५।२७	१७।४५	१९।४८	२१।३१	२२।५९	०।२४	२।००	३।५६
८	६।०९	८।२९	१०।४७	१३।०३	१५।२३	१७।४१	१९।४४	२१।२७	२२।५५	०।२०	१।५६	३।५२
९	६।०५	८।२५	१०।४३	१२।५९	१५।१९	१७।३७	१९।४०	२१।२३	२२।५१	०।१६	१।५२	३।४८
१०	६।०१	८।२१	१०।३९	१२।५५	१५।१५	१७।३३	१९।३६	२१।१९	२२।४७	०।१२	१।४८	३।४४
११	५।५७	८।१७	१०।३५	१२।५१	१५।११	१७।२९	१९।३२	२१।१५	२२।४३	०।०८	१।४४	३।४०
१२	५।५३	८।१३	१०।३१	१२।४७	१५।०७	१७।२५	१९।२८	२१।११	२२।३९	०।०४	१।४०	३।३६
१३	५।४९	८।०९	१०।२७	१२।४३	१५।०३	१७।२१	१९।२४	२१।०७	२२।३५	२४।००	१।३६	३।३२
१४	५।४५	८।०५	१०।२३	१२।३९	१४।५९	१७।१७	१९।२०	२१।०३	२२।३१	२३।५६	१।३२	३।२८
१५	५।४२	८।०२	१०।२०	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।१७	२१।००	२२।२८	२३।५३	१।२९	३।२५
१६	५।३८	७।५८	१०।१६	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।१३	२०।५६	२२।२४	२३।४९	१।२५	३।२१
१७	५।३४	७।५४	१०।१२	१२।२८	१४।४८	१७।०६	१९।०९	२०।५२	२२।२०	२३।४५	१।२१	३।१७
१८	५।३०	७।५०	१०।०८	१२।२४	१४।४४	१७।०२	१९।०५	२०।४८	२२।१६	२३।४१	१।१७	३।१३
१९	५।२६	७।४६	१०।०४	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।०१	२०।४४	२२।१२	२३।३७	१।१३	३।०९
२०	५।२२	७।४२	१०।००	१२।१६	१४।३६	१६।५४	१८।५७	२०।४०	२२।०८	२३।३३	१।०९	३।०५
२१	५।१८	७।३८	९।५६	१२।१२	१४।३२	१६।५०	१८।५३	२०।३६	२२।०४	२३।२९	१।०५	३।०१
२२	५।१४	७।३४	९।५२	१२।०८	१४।२८	१६।४६	१८।४९	२०।३२	२२।००	२३।२५	१।०१	२।५७
२३	५।११	७।३१	९।४९	१२।०५	१४।२५	१६।४३	१८।४६	२०।२९	२१।५७	२३।२२	०।५८	२।५३
२४	५।०७	७।२७	९।४५	१२।०१	१४।२१	१६।३९	१८।४२	२०।२५	२१।५३	२३।१८	०।५४	२।४९
२५	५।०३	७।२३	९।४१	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।३८	२०।२१	२१।४९	२३।१४	०।५०	२।४५
२६	४।५९	७।१९	९।३७	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।३४	२०।१७	२१।४५	२३।१०	०।४६	२।४१
२७	४।५५	७।१५	९।३३	११।४९	१४।०९	१६।२७	१८।३०	२०।१३	२१।४१	२३।०६	०।४२	२।३७
२८	४।५१	७।११	९।२९	११।४५	१४।०५	१६।२३	१८।२६	२०।०९	२१।३७	२३।०२	०।३८	२।३३
२९	४।४७	७।०७	९।२५	११।४१	१४।०१	१६।१९	१८।२२	२०।०५	२१।३३	२२।५८	०।३४	२।२९
३०	४।४३	७।०३	९।२१	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।१८	२०।०१	२१।२९	२२।५४	०।३०	२।२५
३१	४।३९	६।५९	९।१७	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।१४	१९।५७	२१।२५	२२।५०	०।२६	२।२१

लग्न परिवर्तन विधि- देशकाल सुबोधिनी तालिका के पाँचवें कालम से देशान्तर मि. सै. लेकर लग्नारम्भ समय में विपरीत संस्कार(धन का ऋण और ऋण का धन) करने से अभिष्ट स्थान का स्थूल लग्नारम्भ का समय निकलता है। **सूक्ष्मता लाने के लिए-** अभिष्ट दिन रविक्रांति एवं स्वस्थानीय अक्षांश तुल्य चरान्तरसारणी से मिनट ज्ञातकर यथावत संस्कार स्थूल लग्नारंभ समय में करने से स्पष्ट लग्नारंभ समय निकल आता है। प्रमुख नगरों की लग्न परिवर्तन तालिका इस पंचांग में पृष्ठ ७१ पर छपी है।

अगस्त की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	सिंह प्रात:	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चि. दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ सायं	मीन रात्रि	मेष रात्रि	वृष रात्रि	मिथुन रात्रि	कर्क प्रात:
१	६।५५	९।१३	११।३०	१३।४९	१६।०७	१८।२१	१९।५३	२१।२१	२२।४७	०।२२	२।१८	४।३१
२	६।५१	९।०९	११।२६	१३।४५	१६।०३	१८।०७	१९।४९	२१।१७	२२।४३	०।१८	२।१४	४।२७
३	६।४७	९।०५	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।०३	१९।४५	२१।१३	२२।३९	०।१४	२।१०	४।२३
४	६।४३	९।०१	११।२८	१३।३७	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।०९	२२।३५	०।१०	२।०६	४।१९
५	६।४०	८।५८	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५६	१९।३८	२१।०६	२२।३२	०।०७	२।०३	४।१६
६	६।३६	८।५४	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५२	१९।३४	२१।०२	२२।२८	०।०३	१।५९	४।१२
७	६।३२	८।५०	११।०७	१३।२६	१५।४४	१७।४८	१९।३०	२०।५८	२२।२४	२३।५९	१।५५	४।०८
८	६।२८	८।४६	११।०३	१३।२२	१५।४०	१७।४४	१९।२६	२०।५४	२२।२०	२३।५५	१।५१	४।०४
९	६।२४	८।४२	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।४०	१९।२२	२०।५०	२२।१६	२३।५१	१।४७	४।००
१०	६।२०	८।३८	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।३६	१९।१८	२०।४६	२२।१२	२३।४७	१।४३	३।५६
११	६।१६	८।३४	१०।५१	१३।१०	१५।२८	१७।३२	१९।१४	२०।४२	२२।०८	२३।४३	१।३९	३।५२
१२	६।१२	८।३०	१०।४७	१३।०६	१५।२४	१७।२८	१९।१०	२०।३८	२२।०४	२३।३९	१।३५	३।४८
१३	६।०८	८।२६	१०।४३	१३।०२	१५।२०	१७।२४	१९।०६	२०।३४	२२।००	२३।३५	१।३१	३।४४
१४	६।०४	८।२२	१०।३९	१२।५८	१५।१६	१७।२०	१९।०२	२०।३०	२१।५६	२३।३१	१।२७	३।४०
१५	६।००	८।१८	१०।३५	१२।५४	१५।१२	१७।१६	१८।५८	२०।२६	२१।५२	२३।२७	१।२३	३।३६
१६	५।५६	८।१४	१०।३१	१२।५०	१५।०८	१७।१२	१८।५४	२०।२२	२१।४८	२३।२३	१।१९	३।३२
१७	५।५२	८।१०	१०।२७	१२।४६	१५।०४	१७।०८	१८।५०	२०।१८	२१।४४	२३।१९	१।१५	३।२८
१८	५।४८	८।०६	१०।२३	१२।४२	१५।००	१७।०४	१८।४६	२०।१४	२१।४०	२३।१५	१।११	३।२४
१९	५।४४	८।०२	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१७।००	१८।४२	२०।१०	२१।३६	२३।११	१।०७	३।२०
२०	५।४०	७।५८	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५६	१८।३८	२०।०६	२१।३२	२३।०७	१।०३	३।१६
२१	५।३७	७।५५	१०।१२	१२।३१	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।०३	२१।२९	२३।०४	१।००	३।१३
२२	५।३३	७।५१	१०।०८	१२।२७	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५९	२१।२५	२३।००	०।५६	३।०९
२३	५।२९	७।४७	१०।०४	१२।२३	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५५	२१।२१	२२।५६	०।५२	३।०५
२४	५।२५	७।४३	१०।००	१२।१९	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।५१	२१।१७	२२।५२	०।४८	३।०१
२५	५।२१	७।३९	९।५६	१२।१५	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४७	२१।१३	२२।४८	०।४४	२।५७
२६	५।१७	७।३५	९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४३	२१।०९	२२।४४	०।४०	२।५३
२७	५।१३	७।३१	९।४८	१२।०७	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३९	२१।०५	२२।४०	०।३६	२।४९
२८	५।१०	७।२८	९।४५	१२।०४	१४।२२	१६।२६	१८।०८	१९।३६	२१।०२	२२।३७	०।३३	२।४६
२९	५।०६	७।२४	९।४१	१२।००	१४।१८	१६।२२	१८।०४	१९।३२	२०।५८	२२।३३	०।२९	२।४२
३०	५।०२	७।२०	९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१८	१८।००	१९।२८	२०।५४	२२।२९	०।२५	२।३८
३१	४।५८	७।१६	९।३३	११।५२	१४।१०	१६।१४	१७।५६	१९।२४	२०।५०	२२।२५	०।२१	२।३४

सितम्बर की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कन्या प्रात:	तुला दिवा	वृश्चि. दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन सायं	मेष रात्रि	वृष रात्रि	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह प्रात:
१	७।१२	९।२९	११।४९	१४।०६	१६।१०	१७।५३	१९।२०	२०।४६	२२।२२	०।१७	२।३१	४।५०
२	७।०८	९।२५	११।४५	१४।०२	१६।०६	१७।४९	१९।१६	२०।४२	२२।१८	०।१३	२।२७	४।४६
३	७।०४	९।२१	११।४१	१३।५८	१६।०२	१७।४५	१९।१२	२०।३८	२२।१४	०।०९	२।२३	४।४२
४	७।००	९।१७	११।३७	१३।५४	१५।५८	१७।४१	१९।०८	२०।३४	२२।१०	०।०५	२।१९	४।३८
५	६।५६	९।१३	११।३३	१३।५०	१५।५४	१७।३७	१९।०४	२०।३०	२२।०६	०।०१	२।१५	४।३४
६	६।५२	९।०९	११।२९	१३।४६	१५।५०	१७।३३	१९।००	२०।२६	२२।०२	२३।५७	२।११	४।३०
७	६।४८	९।०५	११।२५	१३।४२	१५।४६	१७।२९	१८।५६	२०।२२	२१।५८	२३।५३	२।०७	४।२६
८	६।४४	९।०१	११।२१	१३।३८	१५।४२	१७।२५	१८।५२	२०।१८	२१।५४	२३।४९	२।०३	४।२२
९	६।४०	८।५७	११।१७	१३।३४	१५।३८	१७।२१	१८।४८	२०।१४	२१।५०	२३।४५	१।५९	४।१८
१०	६।३६	८।५३	११।१३	१३।३०	१५।३४	१७।१७	१८।४४	२०।१०	२१।४६	२३।४१	१।५५	४।१४
११	६।३२	८।४९	११।०९	१३।२६	१५।३०	१७।१३	१८।४०	२०।०६	२१।४२	२३।३७	१।५१	४।१०
१२	६।२७	८।४४	११।०४	१३।२१	१५।२५	१७।०८	१८।३५	२०।०१	२१।३७	२३।३२	१।४६	४।०५
१३	६।२३	८।४०	११।००	१३।१७	१५।२१	१७।०४	१८।३१	१९।५७	२१।३३	२३।२८	१।४२	४।०१
१४	६।१९	८।३६	१०।५६	१३।१३	१५।१७	१७।००	१८।२७	१९।५३	२१।२९	२३।२४	१।३८	३।५७
१५	६।१५	८।३२	१०।५२	१३।०९	१५।१३	१६।५६	१८।२३	१९।४९	२१।२५	२३।२०	१।३४	३।५३
१६	६।११	८।२८	१०।४८	१३।०५	१५।०९	१६।५२	१८।१९	१९।४५	२१।२१	२३।१६	१।३०	३।४९
१७	६।०७	८।२४	१०।४४	१३।०१	१५।०५	१६।४८	१८।१५	१९।४१	२१।१७	२३।१२	१।२६	३।४५
१८	६।०३	८।२०	१०।४०	१२।५७	१५।०१	१६।४४	१८।११	१९।३७	२१।१३	२३।०८	१।२२	३।४१
१९	५।५९	८।१६	१०।३६	१२।५३	१४।५७	१६।४०	१८।०७	१९।३३	२१।०९	२३।०४	१।१८	३।३७
२०	५।५५	८।१२	१०।३२	१२।४९	१४।५३	१६।३६	१८।०३	१९।२९	२१।०५	२३।००	१।१४	३।३३
२१	५।५१	८।०८	१०।२८	१२।४५	१४।४९	१६।३२	१७।५९	१९।२५	२१।०१	२२।५६	१।१०	३।२९
२२	५।४७	८।०४	१०।२४	१२।४१	१४।४५	१६।२८	१७।५५	१९।२१	२०।५७	२२।५२	१।०६	३।२५
२३	५।४३	८।००	१०।२०	१२।३७	१४।४१	१६।२४	१७।५१	१९।१७	२०।५३	२२।४८	१।०२	३।२१
२४	५।३९	७।५६	१०।१६	१२।३३	१४।३७	१६।२०	१७।४७	१९।१३	२०।४९	२२।४४	०।५८	३।१७
२५	५।३५	७।५२	१०।१२	१२।२९	१४।३३	१६।१६	१७।४३	१९।०९	२०।४५	२२।४०	०।५४	३।१३
२६	५।३१	७।४८	१०।०८	१२।२५	१४।२९	१६।१२	१७।३९	१९।०५	२०।४१	२२।३६	०।५०	३।०९
२७	५।२७	७।४४	१०।०४	१२।२१	१४।२५	१६।०८	१७।३५	१९।०१	२०।३७	२२।३२	०।४६	३।०५
२८	५।२३	७।४०	१०।००	१२।१७	१४।२१	१६।०४	१७।३१	१८।५७	२०।३३	२२।२८	०।४२	३।०१
२९	५।१९	७।३६	९।५६	१२।१३	१४।१७	१६।००	१७।२७	१८।५३	२०।२९	२२।२४	०।३८	२।५७
३०	५।१५	७।३२	९।५२	१२।०९	१४।१३	१५।५६	१७।२३	१८।४९	२०।२५	२२।२०	०।३४	२।५३

नवांश जानने की विधि- लग्नारंभ घं. मि. को अग्रिम लग्नारंभ समय में से घटाने पर शेष घंटादि के कुल मिनटों को ९ से भाग करने पर लब्ध फल प्रत्येक नवांश का मान होता है। जो नवांश ज्ञात करना हो, उससे गत नवांश संख्यांक का गुणा एक नवांश मान से करके जो समय आये, उसे लग्नारम्भ के समय में जोड़ने से इच्छित नवांश का प्रारम्भ काल निकल आता है। मेष, सिंह, धनु में मेष से। वृष, कन्या, मकर में मकर से। मिथुन, तुला, कुम्भ में तुला से और कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश की गिनती कर्क से की जाती है।

अक्टूबर की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	तुला प्रात:	वृश्चि. दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा	मेष सायं	वृष रात्रि	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या प्रात:
१	७ ३०	९ ५०	१२ ०८	१४ ११	१५ ५४	१७ २२	१८ ४७	२० २३	२२ १९	० ३२	२ ५२	५ ०९
२	७ २६	९ ४६	१२ ०४	१४ ०७	१५ ५०	१७ १८	१८ ४३	२० १९	२२ १५	० २८	२ ४८	५ ०५
३	७ २२	९ ४२	१२ ००	१४ ०३	१५ ४६	१७ १४	१८ ३९	२० १५	२२ ११	० २४	२ ४४	५ ०१
४	७ १८	९ ३८	११ ५६	१३ ५९	१५ ४२	१७ १०	१८ ३५	२० ११	२२ ०७	० २०	२ ४०	४ ५७
५	७ १३	९ ३३	११ ५१	१३ ५४	१५ ३७	१७ ०५	१८ ३०	२० ०६	२२ ०२	० १५	२ ३५	४ ५२
६	७ ०९	९ २९	११ ४७	१३ ५०	१५ ३३	१७ ०१	१८ २६	२० ०२	२१ ५८	० ११	२ ३१	४ ४८
७	७ ०५	९ २५	११ ४३	१३ ४६	१५ २९	१६ ५७	१८ २२	१९ ५८	२१ ५४	० ०७	२ २७	४ ४४
८	७ ०१	९ २१	११ ३९	१३ ४२	१५ २५	१६ ५३	१८ १८	१९ ५४	२१ ५०	० ०३	२ २३	४ ४०
९	६ ५७	९ १७	११ ३५	१३ ३८	१५ २१	१६ ४९	१८ १४	१९ ५०	२१ ४६	२३ ५९	२ १९	४ ३६
१०	६ ५३	९ १३	११ ३१	१३ ३४	१५ १७	१६ ४५	१८ १०	१९ ४६	२१ ४२	२३ ५५	२ १५	४ ३२
११	६ ४९	९ ०९	११ २७	१३ ३०	१५ १३	१६ ४१	१८ ०६	१९ ४२	२१ ३८	२३ ५१	२ ११	४ २८
१२	६ ४५	९ ०५	११ २३	१३ २६	१५ ०९	१६ ३७	१८ ०२	१९ ३८	२१ ३४	२३ ४७	२ ०७	४ २४
१३	६ ४१	९ ०१	११ १९	१३ २२	१५ ०५	१६ ३३	१७ ५८	१९ ३४	२१ ३०	२३ ४३	२ ०३	४ २०
१४	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ १८	१५ ०१	१६ २९	१७ ५४	१९ ३०	२१ २६	२३ ३९	१ ५९	४ १६
१५	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ १४	१४ ५७	१६ २५	१७ ५०	१९ २६	२१ २२	२३ ३५	१ ५५	४ १२
१६	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ १०	१४ ५३	१६ २१	१७ ४६	१९ २२	२१ १८	२३ ३१	१ ५१	४ ०८
१७	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ ०६	१४ ४९	१६ १७	१७ ४२	१९ १८	२१ १४	२३ २७	१ ४७	४ ०४
१८	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ ०२	१४ ४५	१६ १३	१७ ३८	१९ १४	२१ १०	२३ २३	१ ४३	४ ००
१९	६ १७	८ ३७	१० ५५	१२ ५८	१४ ४१	१६ ०९	१७ ३४	१९ १०	२१ ०६	२३ १९	१ ३९	३ ५६
२०	६ १३	८ ३३	१० ५१	१२ ५४	१४ ३७	१६ ०५	१७ ३०	१९ ०६	२१ ०२	२३ १५	१ ३५	३ ५२
२१	६ ०९	८ २९	१० ४७	१२ ५०	१४ ३३	१६ ०१	१७ २६	१९ ०२	२० ५८	२३ ११	१ ३१	३ ४८
२२	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ४६	१४ २९	१५ ५७	१७ २२	१८ ५८	२० ५४	२३ ०७	१ २७	३ ४४
२३	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ४२	१४ २५	१५ ५३	१७ १८	१८ ५४	२० ५०	२३ ०३	१ २३	३ ४०
२४	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ३८	१४ २१	१५ ४९	१७ १४	१८ ५०	२० ४६	२२ ५९	१ १९	३ ३६
२५	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ३४	१४ १७	१५ ४५	१७ १०	१८ ४६	२० ४२	२२ ५५	१ १५	३ ३२
२६	५ ५०	८ १०	१० २८	१२ ३१	१४ १४	१५ ४२	१७ ०७	१८ ४३	२० ३९	२२ ५२	१ १२	३ २९
२७	५ ४६	८ ०६	१० २४	१२ २७	१४ १०	१५ ३८	१७ ०३	१८ ३९	२० ३५	२२ ४८	१ ०८	३ २५
२८	५ ४२	८ ०२	१० २०	१२ २३	१४ ०६	१५ ३४	१६ ५९	१८ ३५	२० ३१	२२ ४४	१ ०४	३ २१
२९	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ १९	१४ ०२	१५ ३०	१६ ५५	१८ ३१	२० २७	२२ ४०	१ ००	३ १७
३०	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ १५	१३ ५८	१५ २६	१६ ५१	१८ २७	२० २३	२२ ३६	० ५६	३ १३
३१	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ ११	१३ ५४	१५ २२	१६ ४७	१८ २३	२० १९	२२ ३२	० ५२	३ ०९

नवम्बर की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	वृश्चि. प्रात:	धनु दिवा	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा	मेष दिवा	वृष सायं	मिथुन रात्रि	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला प्रात:
१	७ ४५	१० ०३	१२ ०७	१३ ४९	१५ १७	१६ ४३	१८ १८	२० १४	२२ २८	० ४७	३ ०५	५ २१
२	७ ४१	९ ५९	१२ ०३	१३ ४५	१५ १३	१६ ३९	१८ १४	२० १०	२२ २४	० ४३	३ ०१	५ १७
३	७ ३७	९ ५५	११ ५९	१३ ४१	१५ ०९	१६ ३५	१८ १०	२० ०६	२२ २०	० ३९	२ ५७	५ १३
४	७ ३३	९ ५१	११ ५५	१३ ३७	१५ ०५	१६ ३१	१८ ०६	२० ०२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ ०९
५	७ २९	९ ४७	११ ५१	१३ ३३	१५ ०१	१६ २७	१८ ०२	१९ ५८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ ०५
६	७ २५	९ ४३	११ ४७	१३ २९	१४ ५७	१६ २३	१७ ५८	१९ ५४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०१
७	७ २१	९ ३९	११ ४३	१३ २५	१४ ५३	१६ १९	१७ ५४	१९ ५०	२२ ०४	० २३	२ ४१	४ ५७
८	७ १८	९ ३६	११ ४०	१३ २२	१४ ५०	१६ १६	१७ ५१	१९ ४७	२२ ०१	० २०	२ ३८	४ ५४
९	७ १४	९ ३२	११ ३६	१३ १८	१४ ४६	१६ १२	१७ ४७	१९ ४३	२१ ५७	० १६	२ ३४	४ ५०
१०	७ १०	९ २८	११ ३२	१३ १४	१४ ४२	१६ ०८	१७ ४३	१९ ३९	२१ ५३	० १२	२ ३०	४ ४६
११	७ ०६	९ २४	११ २८	१३ १०	१४ ३८	१६ ०४	१७ ३९	१९ ३५	२१ ४९	० ०८	२ २६	४ ४२
१२	७ ०२	९ २०	११ २४	१३ ०६	१४ ३४	१६ ००	१७ ३५	१९ ३१	२१ ४५	० ०४	२ २२	४ ३८
१३	६ ५८	९ १६	११ २०	१३ ०२	१४ ३०	१५ ५६	१७ ३१	१९ २७	२१ ४१	२४ ००	२ १८	४ ३४
१४	६ ५४	९ १२	११ १६	१२ ५८	१४ २६	१५ ५२	१७ २७	१९ २३	२१ ३७	२३ ५६	२ १४	४ ३०
१५	६ ५१	९ ०९	११ १३	१२ ५५	१४ २३	१५ ४९	१७ २४	१९ २०	२१ ३४	२३ ५३	२ ११	४ २७
१६	६ ४७	९ ०५	११ ०९	१२ ५१	१४ १९	१५ ४५	१७ २०	१९ १६	२१ ३०	२३ ४९	२ ०७	४ २३
१७	६ ४३	९ ०१	११ ०५	१२ ४७	१४ १५	१५ ४१	१७ १६	१९ १२	२१ २६	२३ ४५	२ ०३	४ १९
१८	६ ३९	८ ५७	११ ०१	१२ ४३	१४ ११	१५ ३७	१७ १२	१९ ०८	२१ २२	२३ ४१	१ ५९	४ १५
१९	६ ३५	८ ५३	१० ५७	१२ ३९	१४ ०७	१५ ३३	१७ ०८	१९ ०४	२१ १८	२३ ३७	१ ५५	४ ११
२०	६ ३१	८ ४९	१० ५३	१२ ३५	१४ ०३	१५ २९	१७ ०४	१९ ००	२१ १४	२३ ३३	१ ५१	४ ०७
२१	६ २७	८ ४५	१० ४९	१२ ३१	१३ ५९	१५ २५	१७ ००	१८ ५६	२१ १०	२३ २९	१ ४७	४ ०३
२२	६ २३	८ ४१	१० ४५	१२ २७	१३ ५५	१५ २१	१६ ५६	१८ ५२	२१ ०६	२३ २५	१ ४३	३ ५९
२३	६ १९	८ ३७	१० ४१	१२ २३	१३ ५१	१५ १७	१६ ५२	१८ ४८	२१ ०२	२३ २१	१ ३९	३ ५५
२४	६ १५	८ ३३	१० ३७	१२ १९	१३ ४७	१५ १३	१६ ४८	१८ ४४	२० ५८	२३ १७	१ ३५	३ ५१
२५	६ ११	८ २९	१० ३३	१२ १५	१३ ४३	१५ ०९	१६ ४४	१८ ४०	२० ५४	२३ १३	१ ३१	३ ४७
२६	६ ०८	८ २६	१० ३०	१२ १२	१३ ४०	१५ ०६	१६ ४१	१८ ३७	२० ५१	२३ १०	१ २८	३ ४४
२७	६ ०४	८ २२	१० २६	१२ ०८	१३ ३६	१५ ०२	१६ ३७	१८ ३३	२० ४७	२३ ०६	१ २४	३ ४०
२८	६ ००	८ १८	१० २२	१२ ०४	१३ ३२	१४ ५८	१६ ३३	१८ २९	२० ४३	२३ ०२	१ २०	३ ३६
२९	५ ५६	८ १४	१० १८	१२ ००	१३ २८	१४ ५४	१६ २९	१८ २५	२० ३९	२२ ५८	१ १६	३ ३२
३०	५ ५२	८ १०	१० १४	११ ५६	१३ २४	१४ ५०	१६ २५	१८ २१	२० ३५	२२ ५४	१ १२	३ २८

लग्न क्या है? प्रश्नोत्तर- अक्ष परिभ्रमण के साथ-साथ यह वसुन्धरा ३६५ दिन ६ घंटा ९ मिनट में सूर्य के चारों ओर घूमती हुई एक परिक्रमा पूर्ण कर लेती है। यही अवधि व्यवहारिक सौर वर्ष कहलाती है। ग्रहों के भ्रमण मार्ग को समान १२ भागों में विभाजित करके मेष, वृष, मिथुनादि राशियों के नाम से विभूषित किया गया है। खगोलीय गणनानुसार सूर्य का राशि संक्रमण होता हुआ मान लिया गया है। इससे ज्योतिष गणित में कोई अन्तर नहीं आता है।

शेष अग्रिम पृष्ठ पर

दिसम्बर की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	धनु प्रात:	मकर दिवा	कुम्भ दिवा	मीन दिवा	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन सायं	कर्क रात्रि	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चिक. प्रात:
१	८।०६	१०।१०	११।५३	१३।२०	१४।४६	१६।२२	१८।१७	२०।३१	२२।५१	१।०८	३।२५	५।४४
२	८।०२	१०।०६	११।४९	१३।१६	१४।४२	१६।१८	१८।१३	२०।२७	२२।४७	१।०४	३।२१	५।४०
३	७।५८	१०।०२	११।४५	१३।१२	१४।३८	१६।१४	१८।०९	२०।२३	२२।४३	१।००	३।१७	५।३६
४	७।५४	९।५८	११।४१	१३।०८	१४।३४	१६।१०	१८।०५	२०।१९	२२।३९	०।५६	३।१३	५।३२
५	७।५०	९।५४	११।३७	१३।०४	१४।३०	१६।०६	१८।०१	२०।१५	२२।३५	०।५२	३।०९	५।२८
६	७।४६	९।५०	११।३३	१३।००	१४।२६	१६।०२	१७।५७	२०।११	२२।३१	०।४८	३।०५	५।२४
७	७।४२	९।४६	११।२९	१२।५६	१४।२२	१५।५८	१७।५३	२०।०७	२२।२७	०।४४	३।०१	५।२०
८	७।३९	९।४३	११।२६	१२।५३	१४।१९	१५।५५	१७।५०	२०।०४	२२।२४	०।४१	२।५८	५।१७
९	७।३५	९।३९	११।२२	१२।४९	१४।१५	१५।५१	१७।४६	२०।००	२२।२०	०।३७	२।५४	५।१३
१०	७।३१	९।३५	११।१८	१२।४५	१४।११	१५।४७	१७।४२	१९।५६	२२।१६	०।३३	२।५०	५।०९
११	७।२७	९।३१	११।१४	१२।४१	१४।०७	१५।४३	१७।३८	१९।५२	२२।१२	०।२९	२।४६	५।०५
१२	७।२३	९।२७	११।१०	१२।३७	१४।०३	१५।३९	१७।३४	१९।४८	२२।०८	०।२५	२।४२	५।०१
१३	७।१९	९।२३	११।०६	१२।३३	१३।५९	१५।३५	१७।३०	१९।४४	२२।०४	०।२१	२।३८	४।५७
१४	७।१५	९।१९	११।०२	१२।२९	१३।५५	१५।३१	१७।२६	१९।४०	२२।००	०।१७	२।३४	४।५३
१५	७।११	९।१५	१०।५८	१२।२५	१३।५१	१५।२७	१७।२२	१९।३६	२१।५६	०।१३	२।३०	४।४९
१६	७।०७	९।११	१०।५४	१२।२१	१३।४७	१५।२३	१७।१८	१९।३२	२१।५२	०।०९	२।२६	४।४५
१७	७।०३	९।०७	१०।५०	१२।१७	१३।४३	१५।१९	१७।१४	१९।२८	२१।४८	०।०५	२।२२	४।४१
१८	६।५९	९।०३	१०।४६	१२।१३	१३।३९	१५।१५	१७।१०	१९।२४	२१।४४	०।०१	२।१८	४।३७
१९	६।५५	८।५९	१०।४२	१२।०९	१३।३५	१५।११	१७।०६	१९।२०	२१।४०	२३।५७	२।१४	४।३३
२०	६।५१	८।५५	१०।३८	१२।०५	१३।३१	१५।०७	१७।०२	१९।१६	२१।३६	२३।५३	२।१०	४।२९
२१	६।४७	८।५१	१०।३४	१२।०१	१३।२७	१५।०३	१६।५८	१९।१२	२१।३२	२३।४९	२।०६	४।२५
२२	६।४३	८।४७	१०।३०	११।५७	१३।२३	१४।५९	१६।५४	१९।०८	२१।२८	२३।४५	२।०२	४।२१
२३	६।४०	८।४४	१०।२७	११।५४	१३।२०	१४।५६	१६।५१	१९।०५	२१।२५	२३।४२	१।५९	४।१८
२४	६।३६	८।४०	१०।२३	११।५०	१३।१६	१४।५२	१६।४७	१९।०१	२१।२१	२३।३८	१।५५	४।१४
२५	६।३२	८।३६	१०।१९	११।४६	१३।१२	१४।४८	१६।४३	१८।५७	२१।१७	२३।३४	१।५१	४।१०
२६	६।२८	८।३२	१०।१५	११।४२	१३।०८	१४।४४	१६।३९	१८।५३	२१।१३	२३।३०	१।४७	४।०६
२७	६।२४	८।२८	१०।११	११।३८	१३।०४	१४।४०	१६।३५	१८।४९	२१।०९	२३।२६	१।४३	४।०२
२८	६।२०	८।२४	१०।०७	११।३४	१३।००	१४।३६	१६।३१	१८।४५	२१।०५	२३।२२	१।३९	३।५८
२९	६।१७	८।२१	१०।०४	११।३१	१२।५७	१४।३३	१६।२८	१८।४२	२१।०२	२३।१९	१।३६	३।५५
३०	६।१३	८।१७	१०।००	११।२७	१२।५३	१४।२९	१६।२४	१८।३८	२०।५८	२३।१५	१।३२	३।५१
३१	६।०९	८।१३	९।५६	११।२३	१२।४९	१४।२५	१६।२०	१८।३४	२०।५४	२३।११	१।२८	३।४७

जनवरी की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मकर प्रात:	कुम्भ दिवा	मीन दिवा	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क सायं	सिंह रात्रि	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चि. रात्रि	धनु प्रात:
१	८।०९	९।५२	११।२०	१२।४५	१४।२१	१६।१७	१८।३०	२०।५०	२३।०८	१।२४	३।४४	६।०१
२	८।०५	९।४८	११।१६	१२।४१	१४।१७	१६।१३	१८।२६	२०।४६	२३।०४	१।२०	३।४०	५।५७
३	८।०१	९।४४	११।१२	१२।३७	१४।१३	१६।०९	१८।२२	२०।४२	२३।००	१।१६	३।३६	५।५३
४	७।५७	९।४०	११।०८	१२।३३	१४।०९	१६।०५	१८।१८	२०।३८	२२।५६	१।१२	३।३२	५।४९
५	७।५३	९।३६	११।०४	१२।२९	१४।०५	१६।०१	१८।१४	२०।३४	२२।५२	१।०८	३।२८	५।४५
६	७।४९	९।३२	११।००	१२।२५	१४।०१	१५।५७	१८।१०	२०।३०	२२।४८	१।०४	३।२४	५।४१
७	७।४५	९।२८	१०।५६	१२।२१	१३।५७	१५।५३	१८।०६	२०।२६	२२।४४	१।००	३।२०	५।३७
८	७।४२	९।२५	१०।५३	१२।१८	१३।५४	१५।५०	१८।०३	२०।२३	२२।४१	०।५७	३।१७	५।३४
९	७।३८	९।२१	१०।४९	१२।१४	१३।५०	१५।४६	१७।५९	२०।१९	२२।३७	०।५३	३।१३	५।३०
१०	७।३४	९।१७	१०।४५	१२।१०	१३।४६	१५।४२	१७।५५	२०।१५	२२।३३	०।४९	३।०९	५।२६
११	७।३०	९।१३	१०।४१	१२।०६	१३।४२	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२९	०।४५	३।०५	५।२२
१२	७।२६	९।०९	१०।३७	१२।०२	१३।३८	१५।३४	१७।४७	२०।०७	२२।२५	०।४१	३।०१	५।१८
१३	७।२२	९।०५	१०।३३	११।५८	१३।३४	१५।३०	१७।४३	२०।०३	२२।२१	०।३७	२।५७	५।१४
१४	७।१८	९।०१	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२६	१७।३९	१९।५९	२२।१७	०।३३	२।५३	५।१०
१५	७।१४	८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२२	१७।३५	१९।५५	२२।१३	०।२९	२।४९	५।०६
१६	७।१०	८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१८	१७।३१	१९।५१	२२।०९	०।२५	२।४५	५।०२
१७	७।०६	८।४९	१०।१७	११।४२	१३।१८	१५।१४	१७।२७	१९।४७	२२।०५	०।२१	२।४१	४।५८
१८	७।०२	८।४५	१०।१३	११।३८	१३।१४	१५।१०	१७।२३	१९।४३	२२।०१	०।१७	२।३७	४।५४
१९	६।५८	८।४१	१०।०९	११।३४	१३।१०	१५।०६	१७।१९	१९।३९	२१।५७	०।१३	२।३३	४।५०
२०	६।५४	८।३७	१०।०५	११।३०	१३।०६	१५।०२	१७।१५	१९।३५	२१।५३	०।०९	२।२९	४।४६
२१	६।५०	८।३३	१०।०१	११।२६	१३।०२	१४।५८	१७।११	१९।३१	२१।४९	०।०५	२।२५	४।४२
२२	६।४६	८।२९	९।५७	११।२२	१२।५८	१४।५४	१७।०७	१९।२७	२१।४५	०।०१	२।२१	४।३८
२३	६।४२	८।२५	९।५३	११।१८	१२।५४	१४।५०	१७।०३	१९।२३	२१।४१	२३।५७	२।१७	४।३४
२४	६।३८	८।२१	९।४९	११।१४	१२।५०	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३७	२३।५३	२।१३	४।३०
२५	६।३४	८।१७	९।४५	११।१०	१२।४६	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३३	२३।४९	२।०९	४।२६
२६	६।३०	८।१३	९।४१	११।०६	१२।४२	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२९	२३।४५	२।०५	४।२२
२७	६।२६	८।०९	९।३७	११।०२	१२।३८	१४।३४	१६।४७	१९।०७	२१।२५	२३।४१	२।०१	४।१८
२८	६।२२	८।०५	९।३३	१०।५८	१२।३४	१४।३०	१६।४३	१९।०३	२१।२१	२३।३७	१।५७	४।१४
२९	६।१९	८।०२	९।३०	१०।५५	१२।३१	१४।२७	१६।४०	१९।००	२१।१८	२३।३४	१।५४	४।११
३०	६।१५	७।५८	९।२६	१०।५१	१२।२७	१४।२३	१६।३६	१८।५६	२१।१४	२३।३०	१।५०	४।०७
३१	६।११	७।५४	९।२२	१०।४७	१२।२३	१४।१९	१६।३२	१८।५२	२१।१०	२३।२६	१।४६	४।०३

गत पृष्ठ का शेष- जिस समय पृथ्वी, जिस राशि (जिस समय सूर्य जिस राशि में) होता है, उस समय प्रातः सूर्योदय समये स्वस्थानीय पूर्वी क्षितिज रेखा में वही राशि (लग्न) दृग्गोचर होती है। मध्याह्न में चौथी लग्न और सूर्यास्त समये सातवीं लग्न उदित रहती है। इसी क्रमानुसार आगे जानना चाहिए। जिस दिन जिस राशिस्थ सूर्य के जितने अंश भुक्त होते हैं, उस दिन सूर्योदय के समय उसी राशि (लग्न) का राश्यांश तुल्य भाग सूर्योदय से पहले ही बीत जाता है, इसलिए इष्ट समय की कुण्डली आकाशीय ग्रह स्थिति का नक्शा होती है। सम्पादक- पं.प्रेमपाल कौशिक

फरवरी की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कुम्भ प्रातः	मीन दिवा	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह सायं	कन्या रात्रि	तुला रात्रि	वृश्चि. रात्रि	धनु रात्रि	मकर प्रातः
१	७ ५०	९ १८	१० ४४	१२ १८	१४ १४	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ २२	१ ४१	३ ५९	६ ०२
२	७ ४६	९ १४	१० ४०	१२ १४	१४ १०	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ १८	१ ३७	३ ५५	५ ५८
३	७ ४२	९ १०	१० ३६	१२ १०	१४ ०६	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १४	१ ३३	३ ५१	५ ५४
४	७ ३८	९ ०६	१० ३२	१२ ०६	१४ ०२	१६ १६	१८ ३५	२० ५३	२३ १०	१ २९	३ ४७	५ ५०
५	७ ३५	९ ०३	१० २९	१२ ०३	१३ ५९	१६ १३	१८ ३२	२० ५०	२३ ०७	१ २६	३ ४४	५ ४७
६	७ ३१	८ ५९	१० २५	११ ५९	१३ ५५	१६ ०९	१८ २८	२० ४६	२३ ०३	१ २२	३ ४०	५ ४३
७	७ २७	८ ५५	१० २१	११ ५५	१३ ५१	१६ ०५	१८ २४	२० ४२	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ३९
८	७ २३	८ ५१	१० १७	११ ५१	१३ ४७	१६ ०१	१८ २०	२० ३८	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ३५
९	७ १९	८ ४७	१० १३	११ ४७	१३ ४३	१५ ५७	१८ १६	२० ३४	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ३१
१०	७ १५	८ ४३	१० ०९	११ ४३	१३ ३९	१५ ५३	१८ १२	२० ३०	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ २७
११	७ ११	८ ३९	१० ०५	११ ३९	१३ ३५	१५ ४९	१८ ०८	२० २६	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ २३
१२	७ ०७	८ ३५	१० ०१	११ ३५	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ १९
१३	७ ०३	८ ३१	९ ५७	११ ३१	१३ २७	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ १५
१४	६ ५९	८ २७	९ ५३	११ २७	१३ २३	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ ११
१५	६ ५५	८ २३	९ ४९	११ २३	१३ १९	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ ०७
१६	६ ५१	८ १९	९ ४५	११ १९	१३ १५	१५ २९	१७ ४८	२० ०६	२२ २३	० ४२	३ ००	५ ०३
१७	६ ४७	८ १५	९ ४१	११ १५	१३ ११	१५ २५	१७ ४४	२० ०२	२२ १९	० ३८	२ ५६	४ ५९
१८	६ ४३	८ ११	९ ३७	११ ११	१३ ०७	१५ २१	१७ ४०	१९ ५८	२२ १५	० ३४	२ ५२	४ ५५
१९	६ ३९	८ ०७	९ ३३	११ ०७	१३ ०३	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ ११	० ३०	२ ४८	४ ५१
२०	६ ३४	८ ०२	९ २८	११ ०२	१२ ५८	१५ १२	१७ ३१	१९ ४९	२२ ०६	० २५	२ ४३	४ ४६
२१	६ ३०	७ ५८	९ २४	१० ५८	१२ ५४	१५ ०८	१७ २७	१९ ४५	२२ ०२	० २१	२ ३९	४ ४२
२२	६ २६	७ ५४	९ २०	१० ५४	१२ ५०	१५ ०४	१७ २३	१९ ४१	२१ ५८	० १७	२ ३५	४ ३८
२३	६ २२	७ ५०	९ १६	१० ५०	१२ ४६	१५ ००	१७ १९	१९ ३७	२१ ५४	० १३	२ ३१	४ ३४
२४	६ १८	७ ४६	९ १२	१० ४६	१२ ४२	१४ ५६	१७ १५	१९ ३३	२१ ५०	० ०९	२ २७	४ ३०
२५	६ १५	७ ४३	९ ०९	१० ४३	१२ ३९	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ४७	० ०६	२ २४	४ २७
२६	६ ११	७ ३९	९ ०५	१० ३९	१२ ३५	१४ ४९	१७ ०८	१९ २६	२१ ४३	० ०२	२ २०	४ २३
२७	६ ०७	७ ३५	९ ०१	१० ३५	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०४	१९ २२	२१ ३९	२३ ५८	२ १६	४ १९
२८	६ ०३	७ ३१	८ ५७	१० ३१	१२ २७	१४ ४१	१७ ००	१९ १८	२१ ३५	२३ ५४	२ १२	४ १५

दैनिक लग्नारम्भ सारिणी में प्रत्येक मास की तारीखों के सामने लग्नों के नीचे जो घंटा मिनटों में समय लिखा हुआ है। उसको ऊपर की (लग्न) का आरम्भ काल समझें।

मार्च की दैनिक लग्नारम्भ सारिणी भा. स्टैं. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मीन प्रातः	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या सायं	तुला रात्रि	वृश्चि. रात्रि	धनु रात्रि	मकर रात्रि	कुम्भ प्रात.
१	७ २८	८ ५४	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१६ ५८	१९ १५	२१ ३२	२३ ५२	२ ०९	४ १३	५ ५५
२	७ २४	८ ५०	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५४	१९ ११	२१ २८	२३ ४८	२ ०५	४ ०९	५ ५१
३	७ २०	८ ४६	१० २२	१२ १६	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०७	२१ २४	२३ ४४	२ ०१	४ ०५	५ ४७
४	७ १६	८ ४२	१० १८	१२ १२	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ २०	२३ ४०	१ ५७	४ ०१	५ ४३
५	७ १२	८ ३८	१० १४	१२ ०८	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ १६	२३ ३६	१ ५३	३ ५७	५ ३९
६	७ ०८	८ ३४	१० १०	१२ ०४	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२१ १२	२३ ३२	१ ४९	३ ५३	५ ३५
७	७ ०४	८ ३०	१० ०६	१२ ००	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२१ ०८	२३ २८	१ ४५	३ ४९	५ ३१
८	७ ००	८ २६	१० ०२	११ ५६	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२१ ०४	२३ २४	१ ४१	३ ४५	५ २७
९	६ ५६	८ २२	९ ५८	११ ५२	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२१ ००	२३ २०	१ ३७	३ ४१	५ २३
१०	६ ५२	८ १८	९ ५४	११ ४८	१४ ०२	१६ २२	१८ ३९	२० ५६	२३ १६	१ ३३	३ ३७	५ १९
११	६ ४८	८ १४	९ ५०	११ ४४	१३ ५८	१६ १८	१८ ३५	२० ५२	२३ १२	१ २९	३ ३३	५ १५
१२	६ ४४	८ १०	९ ४६	११ ४०	१३ ५४	१६ १४	१८ ३१	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ २९	५ ११
१३	६ ४०	८ ०६	९ ४२	११ ३६	१३ ५०	१६ १०	१८ २७	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ २५	५ ०७
१४	६ ३६	८ ०२	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०६	१८ २३	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ २१	५ ०३
१५	६ ३२	७ ५८	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०२	१८ १९	२० ३६	२२ ५६	१ १३	३ १७	४ ५९
१६	६ २८	७ ५४	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१५ ५८	१८ १५	२० ३२	२२ ५२	१ ०९	३ १३	४ ५५
१७	६ २४	७ ५०	९ २६	११ २०	१३ ३४	१५ ५४	१८ ११	२० २८	२२ ४८	१ ०५	३ ०९	४ ५१
१८	६ २०	७ ४६	९ २२	११ १६	१३ ३०	१५ ५०	१८ ०७	२० २४	२२ ४४	१ ०१	३ ०५	४ ४७
१९	६ १६	७ ४२	९ १८	११ १२	१३ २६	१५ ४६	१८ ०३	२० २०	२२ ४०	० ५७	३ ०१	४ ४३
२०	६ १२	७ ३८	९ १४	११ ०८	१३ २२	१५ ४२	१७ ५९	२० १६	२२ ३६	० ५३	२ ५७	४ ३९
२१	६ ०८	७ ३४	९ १०	११ ०४	१३ १८	१५ ३८	१७ ५५	२० १२	२२ ३२	० ४९	२ ५३	४ ३५
२२	६ ०४	७ ३०	९ ०६	११ ००	१३ १४	१५ ३४	१७ ५१	२० ०८	२२ २८	० ४५	२ ४९	४ ३१
२३	६ ००	७ २६	९ ०२	१० ५६	१३ १०	१५ ३०	१७ ४७	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ४५	४ २७
२४	५ ५६	७ २२	८ ५८	१० ५२	१३ ०६	१५ २६	१७ ४३	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ४१	४ २३
२५	५ ५२	७ १८	८ ५४	१० ४८	१३ ०२	१५ २२	१७ ३९	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ३७	४ १९
२६	५ ४८	७ १४	८ ५०	१० ४४	१२ ५८	१५ १८	१७ ३५	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ३३	४ १५
२७	५ ४४	७ १०	८ ४६	१० ४०	१२ ५४	१५ १४	१७ ३१	१९ ४८	२२ ०८	० २५	२ २९	४ ११
२८	५ ४०	७ ०६	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १०	१७ २७	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ २५	४ ०७
२९	५ ३६	७ ०२	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ०६	१७ २३	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ २१	४ ०३
३०	५ ३२	६ ५८	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ०२	१७ १९	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ १७	३ ५९
३१	५ २८	६ ५४	८ ३०	१० २४	१२ ३८	१४ ५८	१७ १५	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ १३	३ ५५

लग्नों में वार्षिक संस्कार- लीपईयर सन् के जनवरी व फरवरी मासों में ३ मिनट धन तथा मार्च आदि १० मासों में १ मिनट ऋण संस्कार करना चाहिए। लीप ईयर द्वितीय वर्ष कुछ भी संस्कार न करें। तृतीयवर्ष में १ मिनट धन और चतुर्थ वर्ष में २ मिनट धन संस्कार करने पर लग्नारम्भ की सूक्ष्मता आ जाती है। **श्री राजधानी पंचांग** से पाठक देश के प्रत्येक शहर गांव की लग्न बना सकते हैं। प्रसिद्ध नगरों की लग्न परिवर्तन तालिका अग्रिम पृष्ठ पर छपी है।

भारत के प्रसिद्ध नगरों की लग्न परिवर्तन तालिका

नगर	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अयोध्या	-१९	-१७	-१७	-१७	-१८	-२०	-२२	-२३	-२३	-२४	-२२	-२०
अलवर	+३	+५	+६	+५	+४	+२	+१	-०	-१	-१	-०	+१
अलीगढ़	-३	-२	-२	-२	-३	-३	-३	-५	-५	-५	-४	-४
अजमेर	+१२	+१४	+१५	+१४	+१३	+१०	+८	+५	+५	+५	+७	+१०
अनूपशहर	-५	-४	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५
अहमदाबाद	+२२	+२७	+३०	+२९	+२५	+१९	+१३	+९	+६	+७	+११	+१७
अमृतसर	+६	+३	+१	+२	+५	+८	+११	+१४	+१५	+१४	+१२	+१०
अगरतला	-५२	-४८	-४६	-४७	-५०	-५५	-६०	-६५	-६७	-६६	-६२	-५७
आगरा	-२	+०	+०	+०	-१	-३	-५	-६	-७	-६	-५	-४
आबू	+२१	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१५	+१२	+८	+९	+१३	+१७
इलाहाबाद	-१६	-१३	-१२	-१२	-१५	-१८	-२१	-२३	-२५	-२४	-२२	-१९
इटावा	-६	-४	-३	-४	-५	-७	-८	-१०	-११	-११	-९	-७
उन्नाव	-११	-९	-८	-८	-१०	-१३	-१५	-१७	-१८	-१८	-१६	-१३
उदयपुर	+१८	+२१	+२३	+२२	+१९	+१५	+१३	+७	+५	+७	+१०	+१४
उज्जैन	+१०	+१४	+१८	+१७	+१३	+७	+१	-३	-६	-५	-१	+५
उरई	-७	-४	-३	-४	-६	-८	-११	-१३	-१५	-१४	-१२	-९
एटा	-५	-४	-३	-३	-४	-६	-७	-९	-९	-९	-७	-६
कलकत्ता	-४०	-३४	-३२	-३३	-३७	-४३	-५०	-५४	-५८	-५६	-५२	-४६
कानपुर	-११	-८	-७	-७	-९	-१२	-१५	-१८	-१८	-१८	-१६	-१३
काशी	-२१	-१७	-१६	-१६	-१९	-२२	-२६	-२९	-३१	-३०	-२८	-२४
कांगडा	-०	-३	-५	-४	-१	+३	+६	+१०	+१२	+११	+८	+५
गया	-२८	-२५	-२१	-२४	-२६	-३०	-३४	-३८	-४०	-३९	-३६	-३२
गोवाहाटी	-५६	-५४	-५३	-५३	-५५	-५८	-६०	-६२	-६४	-६३	-६१	-५९
ग्वालियर	-२	+०	+१	+१	-१	-३	-६	-८	-१०	-९	-७	-५
गोरखपुर	-२४	-२२	-२१	-२२	-२३	-२४	-२६	-२७	-२८	-२८	-२७	-२५
चण्डीगढ़	-१	-३	-४	-४	-२	+१	+४	+६	+८	+७	+५	+२
चिड़ावा	+६	+७	+७	+७	+७	+७	+६	+५	+५	+५	+६	+६
चुरु	+८	+८	+९	+९	+८	+७	+७	+६	+६	+६	+७	+८
चैन्नई	-१	+१२	+१९	+१६	+५	-९	-२४	-३६	-४३	-४१	-३०	-१५
जगन्नाथपुरी	-२८	-२०	-१६	-१७	-२४	-३३	-४१	-४९	-५३	-५१	-४५	-३६
जम्मू कश्मीर	+५	+१	-२	-१	+३	+८	+१३	+१८	+२०	+१९	+१५	+१०
जयपुर	+७	+७	+९	+९	+७	+५	+४	+३	+१	+२	+३	+५
जोधपुर	+१८	+२१	+२२	+२२	+२०	+१६	+१४	+१२	+११	+१२	+१३	+१६
जालंधर	+४	+१	+०	+१	+३	+६	+८	+११	+१३	+१२	+१०	+७
जींद	+३	+३	+४	+३	+३	+२	+३	+३	+४	+३	+३	+३
झांसी	-३	-०	+२	+१	-१	-५	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६
झरिया	-१८	-१३	-११	-१२	-१५	-२०	-२५	-२९	-३१	-३०	-२७	-२२
त्रिवेन्द्रम	+१५	+३२	+४१	+३७	+२३	+५	-१४	-३०	-३९	-३५	-२१	-२
दतिया	-२	-१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१२	-९	-६
देहरादून	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२	-१	-०	-०	-२	-३
धौलपुर	-१	+१	+२	+२	+०	-२	-४	-५	-६	-६	-५	-४
नागपुर	-२	+५	+७	+७	+१	-६	-१४	-२०	-२४	-२२	-१७	-९
नासिक	+१९	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+८	+२	-२	-१	-५	-१३
नीमच	+१३	+१७	+१८	+१९	+१६	+११	+६	+३	+०	+१	+४	+९
नैनीताल	-९	-१०	-१०	-१०	-१०	-९	-८	-८	-७	-७	-८	-९
पटना	-३०	-२७	-२५	-२६	-२८	-३१	-३५	-३७	-३९	-३८	-३६	-३३
पटियाला	+१	+०	+०	+०	+१	+३	+४	+५	+७	+६	+५	+४
पीलीभीत	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०	-१०
पूना	+२१	+३०	+३४	+३२	+२५	+१५	+६	-३	-८	-६	+१	+११
फिरोजपुर	+७	+६	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१५	+१६	+१६	+१३	+११
बम्बई	+२५	+३३	+३८	+३६	+२९	+१९	+१०	+२	-३	-१	+६	+१६
बदायूँ	-७	-६	-५	-५	-७	-७	-८	-९	-१०	-१०	-९	-८
बेंगलूरु	+१०	+२३	+२९	+२७	+१६	+२	-१३	-२६	-३३	-२९	-१८	-४
बीकानेर	+१६	+१७	+१८	+१८	+१७	+१६	+१५	+१४	+१३	+१३	+१५	+१६
बरेली	-८	-८	-७	-७	-७	-९	-९	-९	-९	-९	-९	-८
बुलन्दशहर	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-२	-१	-१	-२	-३
भटिण्डा	+७	+६	+६	+६	+७	+८	+१०	+११	+१२	+१२	+११	+१०
भरतपुर	+०	+१	+२	+२	+१	-१	-२	-४	-५	-५	-३	-२
भोपाल	+३	+८	+११	+१०	+६	+०	-५	-१०	-१२	-११	-७	-२
मथुरा	-१	+०	-०	-०	-०	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-२
मेरठ	-२	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-१	-१	-२	-२
मण्डी	+२	+५	+७	+६	+४	-०	-४	-७	-९	-८	-५	-२
मुरादाबाद	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६
मैसूर	+१४	+२८	+३५	+३२	+२१	+६	-१०	-२३	-३०	-२७	-१६	-१
रेवाडी	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२
रोहतक	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+३	+३	+३	+३	+२
लखनऊ	-१४	-१२	-११	-१२	-१३	-१४	-१६	-१७	-१८	-१८	-१७	-१५
लुधियाना	+२	+१	-१	-०	+२	+५	+७	+१०	+११	+११	+८	+६
विजयावाडा	-५	+६	+११	+९	+०	-११	-२३	-३३	-३९	-३६	-२८	-१६
शहजहाँपुर	-१०	-९	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-१३	-१२	-१२	-११
शिमला	-३	-५	-६	-५	-३	-१	+२	+४	+६	+६	+३	+१
सिलचर	-५९	-५६	-५४	-५५	-५८	-६१	-६५	-६८	-७०	-६९	-७०	-६३
श्रीनगर	+५	-१	-४	-२	+२	+८	+१५	+२०	+२३	+२२	+१७	+११
सहारनपुर	-२	-४	-४	-४	-३	-२	-०	+१	+२	+१	+०	+१
सूरत	+२४	+३०	+३३	+३३	+२७	+१९	+१२	+४	+१	+२	+९	+१६
हरिद्वार	-६	-७	-८	-७	-६	-४	-३	-२	-१	-१	-२	-३
हिसार	+६	+५	+५	+५	+५	+६	+६	+७	+७	+७	+७	+६
होशियारपुर	-९	-११	-१३	-१२	-९	-६	-३	+०	+२	+१	-१	-४

★ चर संस्कार सारिणी ★

क्रान्त्यांश	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल
१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७
२	३	३	४	४	४	५	५	५	५	६	६	७	७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४
३	४	४	५	६	७	७	७	८	८	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०	२१	२२
४	६	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२	२३	२४	३४	२६	२७	२८	२९
५	७	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३५	३७
६	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३९	४०	४२	४४
७	१०	११	१२	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२०	२३	२४	२५	२७	२८	२९	३१	३२	३४	३५	३७	३९	४०	४२	४४	४५	४७	४९	५१
८	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२२	२३	२५	२६	२७	२९	३१	३२	३४	३६	३८	३९	४१	४३	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५९
९	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२६	२८	२९	३१	३३	३५	३७	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६१	६३	६७
१०	१५	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५६	५८	६१	६३	६५	६८	७०	७४
११	१६	१८	२०	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८	६१	६३	६७	६९	७२	७५	७७	८१
१२	१७	१९	२१	२३	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५१	५४	५७	५८	६१	६३	६७	७०	७३	७६	७८	८२	८५	८९
१३	१९	२१	२३	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४१	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५८	६२	६४	६७	७०	७३	७६	८१	८३	८६	८९	९२	९७
१४	२१	२३	२५	२८	३१	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६३	६७	७०	७३	७६	७९	८२	८६	८८	९२	९६	१००	१०५
१५	२२	२४	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७२	७५	७८	८१	८४	८८	९२	९६	१००	१०३	१०७	११३
१६	२४	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६४	६६	७०	७३	७७	८०	८३	८७	९१	९५	९९	१०३	१०६	१११	११५	१२१
१७	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७१	७५	७८	८२	८५	८७	९२	९७	१०१	१०६	११०	११३	११८	१२३	१२९
१८	२६	२९	३३	३६	४०	४३	४६	५०	५३	५७	६१	६४	६८	७२	७५	८०	८३	८७	९१	९४	९९	१०३	१०७	११२	११६	१२१	१२६	१३१	१३७
१९	२८	३१	३५	३८	४२	४५	४९	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८३	८८	९२	९६	१००	१०५	१०९	११४	११९	१२५	१२८	१३३	१३८	१४५
२०	३०	३३	३७	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४	८८	९३	९८	१०२	१०६	१११	११६	१२०	१२५	१३१	१३६	१४१	१४७	१५३
२१	३१	३५	३९	४२	४६	५१	५५	५९	६४	६८	७२	७६	८०	८४	८९	९३	९८	१०३	१०७	११२	११७	१२२	१२७	१३२	१३८	१४३	१४९	१५६	१६२
२२	३३	३७	४१	४४	४८	५३	५८	६२	६७	७१	७५	८०	८५	८९	९४	९८	१०३	१०९	११३	११८	१२३	१२८	१३३	१३९	१४५	१५१	१५७	१६३	१७१
२३	३४	३९	४३	४७	५१	५६	६१	६५	७०	७५	७९	८४	८९	९४	९९	१०३	१०९	११४	११९	१२४	१३०	१३५	१४१	१४७	१५२	१५८	१६५	१७२	१८०
२४	३६	४१	४५	५०	५४	५९	६४	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९	११४	१२०	१२५	१३०	१३६	१४२	१४८	१५५	१६१	१६७	१७३	१८०	१८९
२५	३८	४२	४७	५२	५७	६२	६७	७२	७७	८२	८७	९२	९८	१०३	१०९	११४	१२०	१२६	१३२	१३८	१४४	१५०	१५६	१६२	१६८	१७५	१८२	१९०	१९८
२६	३९	४४	४९	५४	५८	६४	७०	७५	८०	८५	९१	९६	१०२	१०७	११३	११९	१२५	१३१	१३८	१४३	१४९	१५६	१६२	१७०	१७६	१८३	१९१	१९९	२०७
२७	४१	४६	५१	५६	६१	६७	७३	७८	८४	८९	९५	१०१	१०७	११३	११८	१२४	१३१	१३७	१४४	१४९	१५५	१६२	१७०	१७८	१८३	१९२	२००	२०८	२१७
२८	४३	४८	५४	५९	६४	६९	७६	८२	८८	९४	१००	१०६	११२	११८	१२४	१३०	१३७	१४३	१५०	१५६	१६३	१७०	१७८	१८६	१९२	२००	२०८	२१६	२२३

उत्तराक्षांशा: चरान्तर मिनटा: चरान्तर सारिणी

क्रान्त्यांश	यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन																					क्रांति दक्षिण हो तो धन / क्रांति उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	२	३	३	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	४	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	५	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	३	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	४	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	६	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	उपरोक्त मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें																					क्रांति के विपरीत समझें							

चरान्तर सारिणी में ऊपर की लाइन में ८ से ३६ तक अक्षांश हैं, और खड़ी लाइन में क्रान्त्यांश: १ से २४ तक अंकित है।

दिनमान ज्ञानम्- ठपरोक्त चर सारिणी में ८ से ३६ तक अक्षांश है और बांई ओर खड़ी लाइन में १ से २८ तक क्रान्त्यांश: दिये गये हैं। अभिष्ट दिन रविक्रांति एवं स्वस्थानीय अक्षांश तुल्य सारिणी से चर पल लेकर दुगना कर लें। दुगुणित चरपलों को सूर्यक्रांति उत्तर (२२ मार्च से २३ सितम्बर तक) हो तो ३० घटी में जोडने अथवा रविक्रांति दक्षिण (२४ सितम्बर से २१ मार्च तक) हो तो ३० घटी में से घटाने पर दिनमान बन जाता है। **उदाहरण-** १ अप्रैल २०१६ को कानपुर का दिनमान ज्ञात करना है, तो उस दिन दैनिक ग्रह स्पष्ट स्थिति के साथ रविक्रांति+ ४ अंश ३५ कला उत्तर धन है और कानपुर उत्तर अक्षांश २६।२७ पर बसा हुआ है। क्रांति एवं अक्षांश तुल्य अनुपात से चरपल २२ मिले, जिन्हें २२×२=४४ को ३० घटी में जोडा तो ३० घटी ४४ पल कानपुर का दिनमान बना।

सूर्योदयास्त ज्ञानम्- अभिष्ट दिन, अभिष्ट स्थानीय दिनमान को पांच से भाग करने पर लब्ध फल घंटा-मिनट स्थानीय धूपघड़ी के अनुसार सूर्यास्त काल होता है, जिसे १२ में घटाने पर सूर्योदय का समय निकल आता है। **स्थानीय धूपघड़ी** के सूर्योदयास्त समय को स्टैण्डर्ड टाइम में परिवर्तित करने के लिए दो संस्कार करने पड़ते हैं। **यथा- देशकाल सुबोधिनी तालिका के कालम नं. ४** में लिखित अभिष्ट स्थानीय स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै. संस्कार को विपरीत (ऋण को धन एवं धन को ऋण) करें। **दूसरा संस्कार-** वेलान्तर सारिणी पृष्ठ ७५ से मिनट-सैकेण्ड लेकर यथावत् संस्कार करने से स्थानीय धूपघड़ी वाला सूर्योदयास्त का समय स्टैं.टा. में बदल जाता है। वर्तमान में सभी घड़ियाँ स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार ही चलती हैं। स्टैं. टा. घंटा-मिनट में उल्लिखित तिथि, नक्षत्र, योगों के समाप्ति काल में से इच्छित स्थान का सूर्योदय घटाकर ढ़ाई से गुणा करने पर घटी-पल मान सुनिश्चित हो जाता है।

ग्रहों की दैनिक गति- अंश दशमलव में- दैनिक मध्यम गति ०.९८५६ कला से सूर्य भ्रमण करता हुआ भगणों का भोग कर रहा है। चन्द्रादि ग्रहों की गति इस प्रकार है। चन्द्र- १३° १७६, मंगल- ०.५२४०, बुध- ४° ०९२३, गुरु- ०.०८३१, शुक्र- १° ६०२१, शनि- ०.०३३५, राहु- ०.०५३ हर्शल ०.०११७, नेपच्यून ०.००६० अंश के बाद दशमलव संख्याओं को ६० से गुणा करने पर कला, पुनः ६० से गुणा करने पर विकला आ जाती है।

❋ लग्न सारिणी ❋

राजधानी दिल्ली इन्द्रप्रस्थ नगरे उत्तरअक्षांश २८ ।३८
पलभा ६ ।३३, अयनांश २४, चरखण्ड ६५ ।५२ ।२२

अंशा:→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३१	४०	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५१	०	८	१६	२४	३२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४२	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चिक	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४६	५८
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	११	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	९	१८	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३८	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४४

लग्नारम्भ जानने की दूसरी विधि- सिंह लग्न ०० अंश के नीचे २३ घटी ६ पल में से रविराश्यांश तुल्य सारिणी से प्राप्तांक १ घटी २२ पल को घटाया तो २१ घटी ४४ पल इष्ट पर सिंह लग्न का आरम्भ सिद्धि हुआ। जिसको २॥ से भाग दिया तो ८ घंटा ४२ मिनट हुए। इनको उसी दिन के सूर्योदय ६ घं. १५ मि. में जोड़ा तो १४ घं. ५७ मि. पर सिंह लग्न का आरम्भ हुआ। देखिये अप्रैल की लग्न प्रवेश सारिणी में ता.१ को सिंह लग्नारम्भ १४ घं. ५६ मि. छपा हुआ है। **लीप ईयर से तीसरा सन्** २०१४ होने के कारण लग्नों में वार्षिक संस्कार १ मि. धन होगा। तब बिल्कुल सही स्पष्ट लग्नारम्भ २४ ।५७ ही माना जायेगा।

दिनमान जानने की विधि- अभिष्ट दिन रविराश्यांश तुल्य लग्न सारिणी से घट्यादि अनुपात फल लेना, पुन: उससे सातवीं राशि अंश तुल्य कोष्ठक में जो घट्यादि फल प्राप्त हो उसमें से पूर्व प्राप्तांक घटा देना, शेष घट्यादि दिनमान होगा।

उदाहरण- सारिणी से प्राप्तांक १ ।२० को सातवीं राशि कन्या के सामने १७ अंश के नीचे अनुपात फल ३२ ।०८ में से घटाया तो ३० घटी ४८ पल दिनमान बना। **स्मरण रहे-** अभिष्ट अक्षांश वृत्तीय लग्न सारिणी से ही इच्छित स्थान का दिनमान सिद्धि होगा, अन्यथा नहीं।

इष्ट बनाने की नई विधि- जिस दिन जिस समय का इष्ट बनाना हो तत्कालीन स्टैंण्डर्ड टाइम घंटा-मिनट में से उसी दिन का सूर्योदय घटा दें। शेष घंटादि इष्टकाल होगा। जिसे ढ़ाई से गुणाकर घटी-पल बना लें। लग्न सारिणी में लिखे अंक भी घटी-पल होते हैं। **उदाहरण-** १ अप्रैल को दिन २ बजकर ५७ मिनट पर किसी का जन्म हुआ अथवा किसी की पद नियुक्ति फल ज्ञानार्थ इष्ट बनाना है तो दिन के २ घं. ५७ मि. को भा.स्टैं.टा. के अनुसार १४ घं.५७ मि. लिखकर उसमें से उसी दिन का सूर्योदय ६ घं. १५ मि. घटाया तो शेष ८ घं. ४२ मि. बचे। जिन्हें २॥ से गुणा किया तो २१ घटी ४५ पल शुद्ध इष्टकाल बना।

घट्यादि इष्ट परिमित लग्न जानने की विधि- तददिने रविराश्यांश तुल्य लग्न सारिणी से घट्यादि अनुपात फल लेकर इष्ट में जोड़ दें। जोड़ घटी के स्थान में ६० से अधिक हो तो ६० घटाकर कुलयोग तुल्य सारिणी में जहाँ समानांक मिलें, उनके बाईं ओर लिखी लग्न के ऊपर लग्न के भुक्तांश स्पष्ट होंगे।

उदाहरण- १ अप्रैल सन् २०१४ दिन के २ बजकर ५७ मिनट पर रविस्पष्ट (११ ।१७ ।०७ ।४०) तुल्य लग्न सारिणी से अनुपात फल घट्यादि १ ।२० लेकर इष्ट घट्यादि २१ ।४५ में जोड़ा तो २३ ।०५ हुए। जिनको पुन: लग्न सारिणी में देखा तो समानांक सिंह लग्न के सामने (०) अंश के नीचे लिखा मिला, इससे यह स्पष्ट हो गया कि सिंह लग्न का आरम्भ उसी समय हुआ है। सिंह लग्न नं. ५ को कुण्डली के १ तनभाव में रखकर घड़ी की सुईयाँ घूमने के उत्क्रम से अग्रिम राशियाँ रखते हुए कुण्डली पूर्ण कर लें। अभिष्ट समय जो ग्रह जिस राशि में चल रहा हो, उसे उसी राशि में कुण्डली में रख दिया जाता है। **टिप्पणी-** मध्य रात्रि १२ बजे के बाद का इष्ट बनाने के लिए इच्छित घं.मि. को २४ में जोड़कर सूर्योदय घटाने पर शेष इष्ट घंटादि होगा।

स्मरण रहे- जिस स्थान विशेष का इष्ट बनाना हो उसी स्थान का सूर्योदय घटाने पर शुद्ध इष्टकाल घं.मि. बनेगा। विभिन्न स्थानों का सूर्योदयास्त इस पंचांग में पृष्ठ ८२ से आगे छपा है।

✤ अथ दशम लग्न सारिणी (सर्वत्र उपयोगी) अयनांश: २४ ✤

अंश-	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
०	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृष	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
मिथुन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९
२	५५	६	१७	२८	३८	४८	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
कर्क	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	३३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
सिंह	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
४	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	२८	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५
कन्या	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३
५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५२	०	१०	१९	२८	३८	४७	५३	५	१५	२४	३३
तुला	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८
६	४३	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृश्चिक	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	४५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
धनु	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९
८	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
मकर	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५३	२	१२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२३	३०	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
११	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३३	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३४

दशम लग्न- भाव साधन की भारतवर्ष में चार पद्धतियाँ हैं। जिनमें सबसे सरल रीति (सर्वादि) द्वादश भाव समान करीब ३० अंश के होते हैं। लग्न स्पष्ट में १५ अंश जोड़ने पर प्रथम भाव की सन्धि होती है, पुनः १५ अंश जोड़ने से दूसरा भाव स्पष्ट हो जाता है। इसी प्रकार आगे जोड़ने से ससन्धि द्वादश भाव स्पष्ट हो जाते हैं। महर्षि पराशर जी ने भावलग्न और होरालग्न को पृथक्-पृथक् कहा है- यथा.... **'अथाहं सम्प्रवक्ष्यामि तवाग्रे द्विजसत्तम। भाव होरा घटी संज्ञ लग्नानीति पृथक-पृथक॥'**

भाव लग्न साधन प्रकार- इष्ट काल के घट्यादि को ६ से गुणा करके गुणनफल अंशादि को उदयकालीन स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से प्रथम भाव (लग्न) स्पष्ट होता है। इसमें उपरोक्त क्रिया करने से द्वादश भाव स्पष्ट करने के प्रबल समर्थक अनेकों ज्योतिर्विद् हैं। इनके अतिरिक्त त्रिकोणमिती से भी सभी भाव सिद्ध हो जाते हैं। लेकिन वह अत्यन्त कठिन है। मेरे विचार से पहली विधि सर्वश्रेष्ठ है। देखें- मुहूर्त मार्तण्ड, ज्योतिषरहस्य, बृहज्ज्योतिषसार आदि ग्रन्थ।

नत बनाने की विधि- दिनार्ध (दिन का आधा) से कम इष्ट हो तो दिनार्ध में से इष्ट को हीन करें, यह पूर्वनत् होता है। मध्याह्न (मध्यदिवस) पश्चात् का इष्ट हो तो जितना दिन शेष रहे, उसको दिनार्ध में घटाने पर पश्चिमनत् होता है। यह दिन के नत बनाने का तरीका है।

अब रात्रि के नत का प्रकार लिखते हैं- रात्र्यर्ध के पूर्व का इष्ट हो तो (सूर्यास्त के बाद इष्टकाल तक जितना समय बीते उसमें) दिनार्ध युक्त करने से पश्चिमनत् होता है। रात्र्यर्ध के पश्चात् का इष्ट हो तो शेष रात्रि में दिनार्ध युक्त करने से पूर्वनत् होता है। नत को इष्ट मानकर लग्नवत् क्रिया करें। **ध्यान रहे** नत् पश्चिम हो तो युक्त करना और नत् पूर्व हो तो हीन करना फिर उसे दशम सारिणी में देखें, जिस कोष्ठक में समानांक मिलें, उसके बाईं ओर लिखी राशि दशम लग्न एवं ऊपर लग्नांश स्पष्ट होंगे। जिन अंकों से दशम लग्न सिद्धि हुआ वही कला विकला है।

नोट:- निजीअनुभव एवं गुरुगम्य ज्ञानानुसार भावसाधन कर लाभ के भागीदार बनें।

रेलवे टाइम से देशी टाइम बनाने की विधि- जिस नगर का रेलवेऽन्तर मिनट धन हो, उसके मध्यान्तर को रेलवे टाइम में जोड़ देना और जहाँ ऋण हो वहाँ पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय होगा, उस मध्यम समय में जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट हों उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन का ऋण और ऋण का धन) संस्कार करने से अभीष्ट शहर का घंटा-मिनटात्मक स्पष्ट समय बन जायेगा।

समय भेद- वर्तमान समय में समस्त भूमण्डल पर जो समय प्रयोग में लाया जा रहा है। वह ब्रिटेन की राजधानी लंदन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है। सभी देशों ने अपने-अपने यहाँ व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैं.टा. चालू कर रखा है। भारतवर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, चोरा और जुमला आदि स्थानों से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर प्रसारित किया जाता है। जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा =४ मिनट+ के हिसाब से ८२।३० × ४ = ५ घं. ३० मि. का अन्तर ही ग्रीनविच टाइम और भारतीय स्टैं.टाइम का अन्तर सदैव बना रहता है।

भारत में ८२।३० देशान्तर रेखा से प्रसारित भा. स्टैं. टा. समस्त देश में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहार में बहुत सुविधा रहती है। अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के, किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को पहले समय भेद को भली प्रकार समझ लेना चाहिए।

इस समय समस्त घड़ियाँ स्टैं.टाइम से चल रही हैं। प्रायः धूप घड़ी का प्रचलन समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी तथा दिनार्द्ध व दिनमान आदि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि सर्वथा अनुचित है, क्योंकि कोई भी जन्म टाइम धूप घड़ी से नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाइम को देसी(धूपघडी) के समय में बदलने की विधि ऊपर लिख चुके हैं।

❋ मास तारीखोंपरि-वेलान्तरम् मिनट सैकेण्ड ❋

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	-	-	+	+	+	-	-	-
१	३ ३४	१३ २८	१२ ३५	४ ०७	२ ५२	२ २५	३ २३	६ २५	+ ०९	१० ०७	१६ २१	११ ०३
२	३ ५२	१३ ३६	१२ २२	३ ४९	३ ००	२ १६	३ ३५	६ २१	- १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ०७	२ ०७	३ ५६	६ ०७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ००	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ०८	६ ०२	० ४८	११ ०५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ०६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ०८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ०३
७	६ ०९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ०४	२ ०४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ०९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ००	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ०३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ०९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ०७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ०४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ०५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० ०२	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ०३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० १६	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ १९	९ २९	० २७	३ ४६	- ०३	५ ३७	४ ४२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ ११	३ ४६	+ ०९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ०४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	- ०३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ०८	५ १८	१४ ३०	१५ ०४	४ ००
१८	१० २१	१४ ०६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ ०१	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ ०१	८ ०३	० ४४	३ ४१	१ ०१	६ ०६	३ ४२	६ ०१	१४ ५३	१४ ३९	३ ०२
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ०४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ १४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ ०२
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ०४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६ ५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ ०२
२४	१२ ०४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ०६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ०७	१५ ४९	१३ ०४	- ०२
२६	१२ ३२	१३ ०७	५ ५७	२ ०८	३ ११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ०५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ ०२	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ०८	१६ ०७	१२ ०७	१ २८
२९	१३ ०९		५ ०२	२ ३६	२ ५०	३ ०९	६ २२	१ ०४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	-	-	+	+	+	-	-	-	+

साम्पातिककाल (Sidereal Time) ज्ञान सारिणी नं. १

सन्	घं. मि. सै.	सन्	घं. मि. सै.	सन्	घं. मि. सै.	सन्	घं. मि. सै.
१९३६*	६ ३७ ०४	१९६५	६ ४० ५५	१९९४	६ ४० ४८	२०२३	६ ४० ४०
१९३७	६ ४० ०३	१९६६	६ ३९ ५७	१९९५	६ ३९ ५१	२०२४*	६ ३९ ४३
१९३८	६ ३९ ०६	१९६७	६ ३९ ००	१९९६*	६ ३८ ५३	२०२५	६ ४२ ४३
१९३९	६ ३८ ०८	१९६८*	६ ३८ ०३	१९९७	६ ४१ ५३	२०२६	६ ४१ ४५
१९४०*	६ ३७ ११	१९६९	६ ४१ ०२	१९९८	६ ४० ५६	२०२७	६ ४० ४८
१९४१	६ ४० १०	१९७०	६ ४० ०५	१९९९	६ ३९ ५८	२०२८*	६ ३९ ५०
१९४२	६ ३९ १२	१९७१	६ ३९ ०७	२०००*	६ ३८ ५८	२०२९	६ ४२ ४९
१९४३	६ ३८ १५	१९७२*	६ ३८ १०	२००१	६ ४१ ५८	२०३०	६ ४१ ५२
१९४४*	६ ३७ १७	१९७३	६ ४१ १०	२००२	६ ४१ ००	२०३१	६ ४० ५५
१९४५	६ ४० १६	१९७४	६ ४० १२	२००३	६ ४० ०३	२०३२*	६ ३९ ५७
१९४६	६ ३९ १९	१९७५	६ ३९ १५	२००४*	६ ३९ ०६	२०३३	६ ४२ ५६
१९४७	६ ३८ २२	१९७६*	६ ३८ १७	२००५	६ ४२ ०६	२०३४	६ ४१ ५९
१९४८*	६ ३७ २५	१९७७	६ ४१ १६	२००६	६ ४१ ०८	२०३५	६ ४१ ०१
१९४९	६ ४० २५	१९७८	६ ४० १९	२००७	६ ४० ११	२०३६*	६ ४० ०३
१९५०	६ ३९ २७	१९७९	६ ३९ २२	२००८*	६ ३९ १४	२०३७	६ ४३ ०३
१९५१	६ ३८ ३०	१९८०*	६ ३८ २४	२००९	६ ४२ १३	२०३८	६ ४२ ०५
१९५२*	६ ३७ ३३	१९८१	६ ४१ २३	२०१०	६ ४१ १६	२०३९	६ ४१ ०७
१९५३	६ ४० ३३	१९८२	६ ४० २६	२०११	६ ४० १८	२०४०*	६ ४० १०
१९५४	६ ३९ ३५	१९८३	६ ३९ २८	२०१२*	६ ३९ २१	२०४१	६ ४३ ०९
१९५५	६ ३८ ३८	१९८४*	६ ३८ ३०	२०१३	६ ४२ २०	२०४२	६ ४२ १२
१९५६*	६ ३७ ४१	१९८५	६ ४१ ३०	२०१४	६ ४१ २५	२०४३	६ ४१ १५
१९५७	६ ४० ४०	१९८६	६ ४० ३२	२०१५	६ ४० २६	२०४४*	६ ४० १८
१९५८	६ ३९ ४३	१९८७	६ ३९ ३४	२०१६*	६ ३९ २९	२०४५	६ ४३ १७
१९५९	६ ३८ ४५	१९८८*	६ ३८ ३७	२०१७	६ ४२ २८	२०४६	६ ४२ २१
१९६०*	६ ३७ ४७	१९८९	६ ४१ ३६	२०१८	६ ४१ ३०	२०४७	६ ४१ २४
१९६१	६ ४० ४७	१९९०	६ ४० ३९	२०१९	६ ४० ३३	२०४८*	६ ४० २६
१९६२	६ ३९ ५०	१९९१	६ ३९ ४२	२०२०*	६ ३९ ३६	२०४९	६ ४३ २६
१९६३	६ ३८ ५३	१९९२*	६ ३८ ४५	२०२१	६ ४२ ३५	२०५०	६ ४२ २९
१९६४*	६ ३७ ५६	१९९३	६ ४१ ४४	२०२२	६ ४१ ३८	२०५१	६ ४१ ३१

सारिणी नं. ३

तारीख	साम्पातिककाल संस्कार + घं. मि. सै.
१	० ०० ००
२	० ०३ ५७
३	० ०७ ५३
४	० ११ ५०
५	० १५ ४६
६	० १९ ४३
७	० २३ ३९
८	० २७ ३६
९	० ३१ ३२
१०	० ३५ २९
११	० ३९ २६
१२	० ४३ २३
१३	० ४७ १९
१४	० ५१ १६
१५	० ५५ १२
१६	० ५९ ०९
१७	१ ०३ ०५
१८	१ ०७ ०२
१९	१ १० ५८
२०	१ १४ ५५
२१	१ १८ ५१
२२	१ २२ ४८
२३	१ २६ ४४
२४	१ ३० ४१
२५	१ ३४ ३७
२६	१ ३८ ३४
२७	१ ४२ ३०
२८	१ ४६ २७
२९	१ ५० २४
३०	१ ५४ २०
३१	१ ५८ १७

सारिणी नं. २ मासिक संस्कार -

	सामान्य वर्ष ३६५ दिन का घं. मि. सै.	लुप्त वर्ष ३६६ दिन का घं. मि. सै.		सामान्य वर्ष ३६५ दिन का घं. मि. सै.	लुप्त वर्ष ३६६ दिन का घं. मि. सै.
जनवरी	० ०० ००	० ०० ००	जुलाई	११ ५३ २७	११ ५७ २४
फरवरी	२ ०२ १३	२ ०२ १३	अगस्त	१३ ५५ ५०	१३ ५९ ४७
मार्च	३ ५२ ३७	३ ५६ ३४	सितम्बर	१५ ५८ ०३	१६ ०२ ००
अप्रैल	५ ५४ ५०	५ ५८ ४७	अक्टूबर	१७ ५६ २०	१८ ०० १७
मई	७ ५३ ०७	७ ५७ ०४	नवम्बर	१९ ५८ ३३	२० ०२ ३०
जून	९ ५५ २०	९ ५९ १७	दिसम्बर	२१ ५६ ५०	२२ ०० ४७

सन् १९३६ से २०५१ तक १ जनवरी ०० बजे का साम्पातिककाल ऊपर सारणी नं.१ में छपा है। सारिणी नं.२ में प्रत्येक मास और सारिणी नं.३ में प्रत्येक तारीख का अंकित है। तीनों सारणियों की सहायता से आप चाहे जिस सन् में इच्छित मास तारीख का साम्पातिक काल ज्ञात कर सकते हैं। **उदाहरण**– सन् २०१६ के सामने लिखे ६ घं. ३९ मि. २९ सै. से साम्पातिक काल में सारणी नं.*२ से १ अप्रैल का लुप्त वर्ष संस्कार ५ घं. ५८ मि. ४७ सै. लेकर जोड़ा तो १२ घं. ३८ मि. १६ सै. यह साम्पातिक काल १ अप्रैल २०१६ का सिद्ध हुआ। * चिह्न वाले लुप्त वर्ष (लीप ईयर) हैं। जोड़ते समय लुप्त वर्ष एवं सामान्य वर्ष का ध्यान रखें।

कोष्ठक - अ

घं. मि. सै.	मि. सै. प्र.सै.	सै. प्र.सै.	प्र.सै.	घं. मि. सै.	मि. सै. प्र.सै.	सै. प्र.सै.	प्र.सै.
१	०	९	५१	३१	५	५	३३
२	०	१९	४२	३२	५	१५	२४
३	०	२९	३४	३३	५	२५	१६
४	०	३९	२५	३४	५	३५	७
५	०	४९	१६	३५	५	४४	५९
६	०	५९	८	३६	५	५४	५०
७	१	९	०	३७	६	४	४१
८	१	१८	५१	३८	६	१४	३३
९	१	२८	४३	३९	६	२४	२४
१०	१	३८	३४	४०	६	३४	१५
११	१	४८	२६	४१	६	४४	७
१२	१	५८	१७	४२	६	५३	५८
१३	२	८	८	४३	७	३	५०
१४	२	१८	०	४४	७	१३	४१
१५	२	२७	५१	४५	७	२३	३२
१६	२	३७	४२	४६	७	३३	२४
१७	२	४७	३४	४७	७	४३	१५
१८	२	५७	२५	४८	७	५३	७
१९	३	७	१७	४९	८	२	५८
२०	३	१७	८	५०	८	१२	५०
२१	३	२६	५९	५१	८	२२	४१
२२	३	३६	५१	५२	८	३२	३२
२३	३	४६	४२	५३	८	४२	२४
२४	३	५६	३३	५४	८	५२	१५
२५	४	६	२५	५५	९	२	६
२६	४	१६	१६	५६	९	११	५८
२७	४	२६	८	५७	९	२१	४९
२८	४	३५	५९	५८	९	३१	४०
२९	४	४५	५०	५९	९	४१	३२
३०	४	५५	४२	६०	९	५१	२३

* देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारिणी *

उत्तर अक्षांश २८।३८

		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
	मि.	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	५०	५३	५६	५९	३	६	९	१२	१६	१९	२२	२६	२९	३३	३६	३९	४२
०	सै.	३०	२१	१२	४	६	८	११	१५	२०	२५	३३	४१	४८	५०	१०	२०	३४	४७	१	१८	३५	५३	८	२३	५६	१९	४२	६	२१	३६	५१
वृष.	घ.	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२
	मि.	४२	४६	५०	५३	५७	०	४	८	११	१५	१९	२२	२६	३०	३४	३८	४२	४६	५०	५४	५८	२	६	१०	१४	१८	२२	२६	३०	३४	३८
१	सै.	५१	२८	५	४३	२०	५७	३३	१४	४७	३६	१२	४७	५२	४१	३०	२०	१५	१०	४	३	२	१	४	६	१०	१७	२४	३२	३३	३४	३५
मिथुन	घ.	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	मि.	३८	४२	४६	५०	५४	५९	३	७	१२	१६	२१	२५	२९	३४	३८	४३	४७	५२	५६	१	५	१०	१५	१९	२४	२८	३३	३८	४२	४७	५२
२	सै.	३५	३५	३५	४५	५५	११	२९	५२	२०	३७	३	२९	५५	२४	५२	२१	५३	१५	५६	२५	५४	३३	८	४३	१८	५५	३२	१०	४७	२४	२
कर्क	घ.	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
	मि.	५२	५६	१	६	१०	१५	२०	२४	२९	३४	३८	४३	४७	५२	५७	१	६	११	१५	२०	२५	२९	३४	३९	४३	४८	५३	५७	२	७	१२
३	सै.	२	४१	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	३९	१८	५८	३८	१८	५८	३७	१६	५४	३३	१२	५१	३०	८	४६	२३	०	३८	१८	५८	४०
सिंह	घ.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
	मि.	१२	१७	२१	२५	३०	३५	४०	४४	४९	५३	५८	२	७	११	१६	२१	२६	३१	३४	३९	४३	४८	५२	५७	१	६	१०	१५	१९	२४	२९
४	सै.	४०	२४	२५	५०	३४	१८	१	३५	९	४३	१६	४९	२३	५५	२७	०	३१	२	३४	५	३६	७	३७	७	३८	८	३७	७	३६	४	३५
कन्या	घ.	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
	मि.	२९	३४	३८	४३	४७	५१	५६	०	५	९	१४	१८	२३	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५९	३	८	१२	१७	२१	२६	३०	३५	४०	४४
५	सै.	३५	३	३१	२	३०	५९	२८	५६	२६	५५	२३	५३	२२	५१	२०	४९	१८	४७	१८	४८	१८	४८	१८	४८	१९	४९	१९	५२	३४	१६	५८
तुला	घ.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०
	मि.	४४	४९	५४	५९	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३६	४०	४५	४९	५४	५९	३	८	१२	१७	२२	२६	३१	३६	४०	४५	५०	५४	५९	४
६	सै.	५८	४५	३२	२०	५३	२६	०	३७	१४	५१	२७	१	३७	१४	५१	२६	२	३९	१८	५६	३४	१२	५२	३१	१०	४९	२८	७	४४	२५	४
वृश्चि.	घ.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	मि.	४	८	१४	१८	२३	२८	३२	३७	४२	४६	५१	५६	०	५	१०	१४	१९	२४	२८	३३	३७	४२	४६	५१	५६	०	५	९	१४	१८	२३
७	सै.	४	२२	४	४६	२८	१०	३३	३५	२३	५२	३२	१२	५२	३०	७	४४	२२	००	३८	१४	५०	२५	५९	३३	८	४०	१२	४४	१४	४४	१४
धनु	घ.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	मि.	२३	२७	३२	३७	४१	४६	५०	५५	५९	३	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४१	४५	४९	५४	५८	२	६	१०	१४	१७	२१	२४	२७
८	सै.	१४	४२	१०	३५	५९	२३	४७	९	३१	५०	१०	२०	४१	५४	७	२०	३०	४०	५०	५३	५७	०	३	५	८	४	०	५६	१६	३७	५८
मकर	घ.	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	मि.	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५४	५८	२	५	९	१२	१६	१९	२३	२६	३०	३३	३६	४०	४३	४६	५०	५३	५६	५९	३	६	९	१२
९	सै.	५८	४९	४०	३१	२२	१३	५	४५	३५	७	४०	१३	४५	१६	४७	१७	४३	९	३६	५६	१७	३८	५८	१८	३८	४५	५२	०	१२	२४	३५
कुम्भ	घ.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
	मि.	१२	१५	१७	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५८	१	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३५	३८	४१
१०	सै.	३५	३६	३७	४०	४५	५०	५५	५७	५९	०	३	६	१०	८	६	५	१	५७	५२	४८	४४	४०	३६	२१	२३	१६	९	३	५५	४७	४१
मीन	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९
	मि.	४१	४४	४७	५०	५३	५५	५८	१	४	७	१०	१३	१६	१८	२१	२४	२७	२९	३३	३५	३७	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	२	४	७
११	सै.	४१	३२	२३	१५	७	५८	५०	४०	३०	२०	१३	६	०	३०	०	३०	०	३०	०	३३	३	४०	१३	४६	२०	२०	२०	२०	३	४६	३०

श्रीराजधानी पंचांग में दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ अन्तिम कालम में मध्यरात्रि १२ बजे का साम्पातिककाल घं. मि. सै. प्रतिवर्ष छाप दिया जाता है। जिस समय की कुण्डली बनानी हो, उसी समय का इष्ट साम्पातिककाल पहले दिल्ली के लिए बनायें।

दिल्ली के इष्ट साम्पातिककाल में आप किसी भी नगर का देशान्तर संस्कार देशकाल सुबोधिनी तालिका के कालम नं.५ और विदेशकाल सुबोधिनी तालिका के अन्तिम कालम से लेकर ऋण - धन + चिह्नानुसार यथावत् कर देंगे तो उसी स्थान का उसी समय का इष्ट साम्पातिककाल बन जायेगा। ध्यान रहे- देशान्तर संस्कार दिल्ली से पूर्व में प्रति एक रेखा = ४ मि. धन और पश्चिम में ऋण होता है।

जिस स्थान की कुण्डली बनानी हो उसी नगर का इष्ट साम्पातिककाल बनाकर उसे उसी नगराक्षांशों के आधार पर बनी लग्न सारिणी में देखने से जहाँ समानांक मिलें, उसके बाईं ओर लिखी लग्न राशि के ऊपर लग्न भुक्तांश स्पष्ट होंगे।

साम्पातिककाल गति प्रति घंटे में १० सैकेण्ड के हिसाब से धन होती है। स्पष्ट ज्ञानार्थ कोष्ठक 'अ' पृष्ठ ७५ पर सारिणी के नीचे छपा है।

साम्पातिककाल के २४ घंटों में घड़ी का समयमान २३ घं. ५६ मि. ४.०९५४ सैकेण्ड=०.९९८७ दिन है। प्रतिदिन साम्पातिककाल २४ घं. ३ मि. ५६.५५३६ सैकेण्ड की गति से आगे बढ़ता है।

उदाहरण- १ अप्रैल २०१६ को दिन के १४।५७ पर दिल्ली में साम्पातिक काल द्वारा लग्न ज्ञात करनी है तो पहले स्टैं. टा. १४।५७ को दिल्ली का लोकल टाइम बना लीजिए, **यथा**- देशकाल सुबोधिनी तालिका के कालम नं.४ में दिल्ली के सामने स्टैं. अन्तर २१मि.४ सै. ऋण को १४घं.५७ मि. से घटाया तो शेष १४घं. ३५मि. ५६सै. स्थानीय (लोकल टाइम बना) इस स्थानीय समयानुसार कोष्ठक(अ) से साम्पा.काल संस्कार ज्ञात किया-

	घं. मि. सै. प्र.सै.
को.अ से १४ घंटे साम्पा.काल सं.	०-०२-१८-००
३६ मिनट का साम्पा.काल सं.	००-०- ०५-५४-५०
कुल योग मिनटादि साम्पा.काल सं.	२-२३-५४-५०
+ दिल्ली का लोकल टाइम	१४-३५-५६-०-०
१ अप्रैल२०१६का साम्पा.काल जो ग्रह स्पष्ट स्थितिके साथ छपा है-	१२-३८-१६
सबका एकीकरण घंटादि इष्टसा.	२७-१६-३५-५४-५०

कुल योग २४ घंटा से अधिक होने के कारण २४ घटाकर शेष ३ घं. १६.मि ३५ सैकेण्ड को देश-विदेश की लग्न सारिणी में देखा तो सिंह लग्न के सामने ० अंश के नीचे ३ घं. १२ मि. ४० सै. लिखा मिला इससे यह स्पष्ट हुआ कि सिंह लग्न इष्ट साम्पातिकाकल से कुछ समय पहले अर्थात् ८५ सैकेण्ड पहले ही शुरु हुई है। दिल्ली में १४ घं. ५७ मिनट पर सिंह लग्न ० अंश पर उदय है।

किशनगढ़(राज.) में लग्न ज्ञात करनी है तो दिल्ली के इष्ट साम्पातिक काल ३घं. १६मि. ३५ सै. में से किशनगढ़ का देशान्तर संस्कार ९ मि.२८ सै. घटाया तो ३ घं. ७ मि. ७ सै. यह किशनगढ़ का इष्ट साम्पातिककाल दिन के १४ घं. ५७ मिनट का बना, जिसे देश-विदेश की लग्न सारिणी में देखा तो कर्क लग्न २९ अंश के आसन्न उदय होता हुआ मिला।

१४ घं. ५७ मि. पर दिल्ली में सिंह लग्न ० अंश पर उदय है तो **फार्मोसा** में क्या लग्न होगी? दिल्ली के इष्ट साम्पातिक काल ३ घं. १६ मि. ३५ सै. में फार्मोसा का देशान्तर संस्कार + २ घं. ५७मि. १२ सै. को जोड़ा तो ६ घं. १३मि.४७ सै. फार्मोसा का इष्ट साम्पातिककाल बना, जिसे देश-विदेश की लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने १० अंश के आसन्न उदय है। एक ही समय पर किशनगढ़ में कर्क लग्न, दिल्ली में सिंह और फार्मोसा में कन्या लग्न सिद्धि हुआ। कम समय व श्रम में चाहे जिस स्थान की कुण्डली तत्काल बना सकते हैं।

देशकाल सुबोधिनी तालिका

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
दिल्ली	२८।३८	७७।१४	-२१।०४	-००।००
उत्तर प्रदेश				
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	-०१।०४	+२०।००
अम्बेडकरनगर	२६।२०	८२।३८	+००।३२	+२१।३६
अलीगढ़	२७।५४	७८।०५	-१७।४०	+०३।२४
अकबरपुर	२६।२६	८२।३३	+००।१२	+२१।१६
अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	-१६।२८	+०४।३६
अमरोहा	२८।५४	७८।३१	-१५।५६	+०५।०८
अलीगंज	२७।२०	७९।१२	-१३।१२	+०७।५२
आगरा	२७।११	७८।०२	-१७।५२	+०३।१२
आजमगढ़	२६।०५	८३।१२	+०२।४८	+२३।५२
औरैय्या	२६।२८	७९।३१	-१३।१६	+०७।२८
इलाहाबाद	२५।२८	८१।५२	-०२।३२	+१८।३२
इटावा	२६।४७	७९।०२	-१३।५२	+०७।१२
उन्नाव	२६।३३	८०।३०	-०८।००	+१३।०४
उतरौला	२७।१९	८२।२८	-००।०८	+२०।५६
उरई	२५।५९	७९।२७	-१२।१२	+०८।५२
एटा	२७।३५	७८।४१	-१५।१६	+०५।४८
कन्नौज	२७।०३	७९।५८	-१०।०८	+१०।५६
कानपुर	२६।२७	८०।२१	-०८।३६	+१२।२८
कुशीनगर	२६।५५	८३।५९	+०५।५६	+२७।००
कौशाम्बी	२५।३८	८१।१०	-०५।२०	+२१।०४
गढ़मुक्तेश्वर	२८।४८	७८।०६	-१७।३६	+०३।२८
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२५	-२०।२०	+००।४४
गाजीपुर	२५।३६	८३।३५	+०४।२०	+२५।२४
गोंडा	२७।२८	८२।०१	-०२।०८	+१८।५६
गोरखपुर	२६।४६	८३।२३	+०३।३२	+२४।३६
चन्दौली	२५।१६	८३।३०	+०४।००	+२५।०४
चन्दौसी	२८।२७	७८।४७	-१४।५२	+०६।१२
चित्रकूट	२५।१२	८०।५४	-०६।२४	+१४।४०
छिबरामऊ	२७।१०	७९।२१	-१२।०४	+०९।००

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
जौनपुर	२५।४४	८२।४३	+००।५२	+२१।५६
झांसी	२५।२६	७८।३४	-१५।४४	+०५।२०
टूंडला	२७।१३	७८।१३	-१७।०८	+०३।५६
डिबाई	२८।१२	७८।१५	-१७।००	+०४।०४
देवरिया	२६।३२	८३।४७	+०५।०८	+२६।१२
प्रतापगढ़	२५।५३	८१।५८	-०२।०८	+१८।५६
पीलीभीत	२८।३८	७९।५०	-१०।४०	+१०।२४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	-११।३२	+०९।३२
फतेहपुर	२५।५५	८०।५२	-०६।५२	+१४।१२
फिरोजाबाद	२७।०९	७८।२४	-१६।२४	+०४।४०
फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	-०१।२८	+१९।३६
बरेली	२८।२२	७९।२७	-१२।२४	+०८।४०
बदायूँ	२८।०२	७९।०८	-१३।२८	+०७।३६
बलरामपुर	२७।२६	८२।११	-०१।१६	+१९।३६
बलिया	२५।४४	८४।१०	+०६।४०	+२७।४४
बस्ती	२६।४८	८२।४३	+००।५२	+२२।०८
बहरायच	२७।३४	८१।३७	-०३।३२	+१७।३२
बागपत	२८।५७	७७।१३	-२१।०८	-००।०४
बाराबंकी	२६।५६	८१।१०	-०५।२०	+१५।४४
बांदा	२५।२८	८०।२१	-०८।३६	+१२।२८
बिजनौर	२९।२३	७८।११	-१७।१६	+०३।४८
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५२	-१८।३२	+०२।३२
भदोही	२५।२५	८२।३४	+००।१६	+२१।२०
भिंगा श्रावस्ती	२७।४३	८१।५६	-०२।१६	+१८।४८
मऊ	२५।५७	८३।३४	+०४।१६	+२५।२०
मथुरा	२७।२८	७७।४१	-१९।१६	+०१।४८
महोबा	२५।२७	७९।५३	-१०।२८	+१०।३६
महाराजगंज	२७।०८	८३।३०	+०४।००	+२५।०४
मिर्जापुर	२५।०८	८२।३७	+००।२८	+२१।३२
मुजफ्फरनगर	२९।२८	७७।४३	-१९।०८	+०१।५६
मुरादाबाद	२८।५०	७८।५०	-१४।४०	+०६।२४

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
मेरठ	२९।००	७७।४५	-१९।००	+०२।०४
मैनपुरी	२७।१३	७९।०२	-१३।५२	+०७।१२
रामपुर	२८।४७	७९।०२	-१३।५२	+०७।१२
रायबरेली	२६।१४	८१।१४	-०५।०४	+१६।००
लखनऊ	२६।५१	८०।५५	-०६।२०	+१४।४४
ललितपुर	२४।४१	७८।२४	-१६।२४	+०४।४०
लखीमपुर	२७।५७	८०।४९	-०६।४४	+१४।२०
वाराणसीकाशी	२५।२०	८३।००	+०२।००	+२३।०४
शाहजहाँपुर	२७।५४	७९।५७	-१०।१२	+१०।५२
सहारनपुर	२९।५९	७७।३३	-१९।४८	+०१।१६
सम्भल	२५।३५	७८।३४	-१५।४४	+०५।२०
संतकबीरन.	२६।५०	८३।१०	+०२।४०	+२३।४४
शाहूजीम.	२५।३०	८१।१४	-०५।०४	+१६।००
सिद्धार्थनगर	२७।१५	८३।००	+०२।००	+२३।०४
सीतापुर	२७।३५	८०।४०	-०७।२०	+१३।४४
सुल्तानपुर	२६।१५	८२।०४	-०१।४४	+१८।२०
सोनभद्र	२४।४२	८३।०४	+०२।१६	+२३।२०
हरदोई	२७।२३	८०।१०	-०९।२०	+११।४४
हमीरपुर	२५।५८	८०।१०	-९।२०	+११।४४
हाथरस	२७।३६	७८।०६	-१७।३६	+०२।४८
उत्तराखंड				
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	-११।२०	+०९।४४
उत्तरकाशी	३०।४४	७८।२६	-१६।१६	+०४।४८
ऊधमसिंहन.	२८।५८	७९।२७	-१२।१२	+०८।५२
पौड़ीगढ़वाल	३०।०९	७८।४७	-१४।५२	+०६।१२
गोपेश्वर	३०।२४	७९।२१	-१२।३६	+०८।२८
चमोली	३०।१०	७९।००	-१४।००	+०७।०४
चम्पावत	२९।२०	८०।०६	-०८।५६	+१०।२८
टनकपुर	२९।०९	८०।१०	-०९।२०	+११।४४
देहरादून	३०।१९	७८।०४	-१७।४४	+०३।२०
नैनीताल	२९।२३	७९।२७	-१२।१२	+०८।५२

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
पिथौरागढ़	२९।३५	८०।१३	-०९।०८	+११।५६
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३०	-११।००	+०९।०४
बागेश्वर	२९।५२	७९।४२	-११।१२	+०९।५२
ऋषिकेश	३०।०७	७८।४२	-१५।१२	+०५।५२
रुद्रप्रयाग	३०।१६	७९।००	-१४।००	+०७।०४
हरिद्वार	२९।५८	७८।१०	-१७।२०	+०३।४४
हरियाणा				
अम्बाला	३०।२२	७६।५२	-२२।३२	-०१।२८
करनाल	२९।४२	७७।०२	-२१।५२	-००।४८
कालका	२९।४८	७६।५६	-२२।१६	-०१।१२
कुरुक्षेत्र	२९।५९	७६।४९	-२२।४४	-०१।४०
कैथल	२९।४८	७६।२६	-२४।१६	-०३।१२
गुड़गांव	२८।२७	७७।०४	-२१।४४	-००।४०
गोहाना	२९।०८	७६।४२	-२३।१२	-०२।०८
चरखीदादरी	२८।३७	७६।१८	-२४।४८	-०३।४४
जींद	२९।१८	७६।२०	-२४।४०	-०३।३६
टोहाना	२९।४३	७५।५३	-२६।२८	-०५।२४
नरवाना	२९।३७	७५।४५	-२७।००	-०५।५६
नारनौल	२८।०२	७६।१४	-२५।०४	-०४।००
पंचकूला	३०।४२	७६।५२	-२२।३२	-०१।२८
पलवल	२८।१०	७७।२०	-२०।४०	+००।२४
पानीपत	२९।२७	७७।००	-२२।००	-००।५६
फतेहाबाद	२९।३१	७५।२८	-२८।०८	-०७।०४
फरीदाबाद	२८।२५	७७।१८	-२०।४८	+००।१६
फिरोजपुर	२७।४७	७६।५७	-२२।१२	-०१।०८
भिवानी	२८।४८	७६।१८	-२४।४८	-०३।४४
महेन्द्रगढ़	२८।१७	७६।१०	-२५।२०	-०४।१६
यमुनानगर	३०।०७	७७।१८	-२०।४८	+००।१६
रेवाड़ी	२८।१३	७६।४०	-२३।२०	-०२।१६
रोहतक	२८।५४	७६।३८	-२३।२८	-०२।२४
लोहारु	२८।२६	७५।४८	-२६।४८	-०५।४४

देशकाल सुबोधिनी तालिका

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
सिरसा	२९।३१	७५।०५	-२९।४०	-०८।३६
सोनीपत	२८।५९	७७।०१	-२१।५६	-००।५२
हांसी	२९।०६	७६।००	-२६।००	-०४।५६
हिसार	२९।१०	७५।४६	-२७।००	-०६।००
		राजस्थान		
अनूपगढ़	२९।०७	७३।०६	-३७।३६	-१६।३२
अलवर	२७।३४	७६।३८	-२३।२८	-०२।२४
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	-१०।१६
अलीगढ़टोंक	२५।५८	७६।०६	-२५।३६	-०४।३२
आबू	२४।३७	७२।४४	-३९।०४	-१८।००
उदयपुर	२४।३५	७३।४२	-३५।१२	-१४।०८
करौली	२६।३०	७७।०१	-२१।५६	+००।५२
किशनगढ़	२६।३६	७४।५२	-३०।३२	-०९।२८
कोटा	२५।११	७५।५०	-२६।४०	-०५।३६
गंगानगर	२९।५०	७३।५१	-३४।३६	-१३।३२
चिड़ावा	२८।१५	७५।३८	-२७।२८	-०६।२४
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	-३१।१२	-१०।०८
चुरु	२८।१९	७५।०२	-२९।५२	-०८।४८
जयपुर	२६।५५	७५।५२	-२६।३२	-०५।२८
जालौर	२५।२२	७२।३८	-३९।२८	-१८।२४
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	-४६।१२	-२५।०८
जोधपुर	२६।१९	७३।०४	-३७।४४	-१६।४०
झालावाड़	२४।३६	७६।०९	-२५।३४	-०४।२०
झुंझुनू	२८।०७	७५।२५	-२८।२०	-०७।१६
टोंक	२६।११	७५।५०	-२६।४०	-०५।३६
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	-३५।०८	-१४।०४
देशनोक	२७।४८	७३।२०	-३६।४०	-१५।३६
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	-१८।२८	+०२।३६
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	-३४।३२	-१३।२८
नागौर	२७।११	७३।४४	-३५।०४	-१४।००
पाली	२५।४६	७३।२०	-३६।४०	-१५।३६

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
पुष्कर	२६।२८	७४।३३	-३१।४८	-१०।४४
फ़तेहपुर	२७।५२	७५।०२	-२९।५२	-०८।४८
बलोतरा	२५।४९	७२।१४	-४१।०४	-२०।००
ब्यावर	२६।०६	७४।२०	-३२।४०	-११।३६
बाड़मेर	२५।४५	७१।२४	-४४।२४	-२७।२०
बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	-३२।२४	-११।२०
बीकानेर	२८।०१	७३।२०	-३६।४०	-१५।३६
बूंदी	२५।२७	७५।४०	-२७।२०	-०६।१६
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	-२०।००	+०१।०४
भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	-३१।२०	-१०।१६
मेड़तासिटी	२६।३९	७४।०४	-३३।४४	-१२।४०
सवाईमाधोपुर	२५।५८	७६।२४	-२४।२४	-०३।२०
सादुलपुर	२८।३८	७५।२४	-२८।२४	-०७।२०
सिरोही	२४।५३	७२।५४	-३८।२४	+१७।२०
सीकर	२७।३६	७५।१०	-२९।२०	-०८।२०
		मध्य प्रदेश		
अम्बाह	२६।४३	७८।१३	-१७।०८	+०३।५६
इन्दौर	२२।४४	७५।५२	-२६।३२	-०५।२८
इटारसी	२२।३७	७७।४६	-१८।५६	+०२।०८
उज्जैन	२३।१०	७५।४४	-२७।०४	-०६।००
खण्डवा	२१।५०	७६।२०	-२४।२०	-०३।३६
खरगौन	२१।४९	७५।४०	-२७।२०	-०६।१६
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-१७।२०	+०३।४४
गुना	२४।४०	७७।३०	-२०।००	+०१।०४
छत्तरपुर	२४।५४	७९।३८	-११।२८	+०९।३६
छिन्दवाड़ा	२२।०३	७८।५८	-१४।०८	+०६।५६
जबलपुर	२३।१०	७९।५९	-१०।०४	+११।००
झाबुआ	२२।४५	७४।३७	-३१।३२	-१०।२८
टीकमगढ़	२४।४५	७८।५१	-१४।३६	+०६।२८
दमोह	२३।५०	७९।२९	-१२।०४	+०९।००
दतिया	२५।३९	७८।२७	-१६।१२	+०४।५२

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
देवास	२२।५८	७६।०७	-२५।३२	-०४।२८
धार	२२।३६	७५।१९	-२८।४४	-०७।४०
नरसिंहपुर	२२।५७	७९।१४	-१३।०४	+०८।००
नीमच	२४।२७	७४।५२	-३०।३२	-०९।२८
पन्ना	२४।४४	८०।१३	-०९।०८	+११।५६
बालाघाट	२१।४७	८०।१५	-०९।१२	+११।५२
बेतूल	२१।५१	७७।५३	-१८।२८	+०२।३६
भिण्ड	२६।३५	७८।४७	-१४।५२	+०६।१२
भोपाल	२३।१६	७७।२३	-२०।२८	+००।३६
मन्दसौर	२४।०४	७५।०५	-२९।४०	-०८।३६
मण्डला	२२।४०	८०।३५	-०७।४०	+१३।२४
मुरैना	२६।२५	७८।०४	-१७।४४	-०३।२०
रतलाम	२३।२०	७५।०६	-२९।३६	-०८।३२
रायसेन	२३।२०	७७।५०	-१८।४०	+०२।२४
रीवा	२४।३१	८१।१९	-०४।४४	+१६।२०
विदिशा	२३।३३	७७।५१	-१८।३६	+०२।२८
शहडोल	२३।२०	८१।२५	-०४।२०	+१६।४४
शिवपुरी	२५।४१	७७।४०	-१९।२०	+०२।२४
सतना	२४।३४	८०।५५	-०६।२०	+१४।४४
सागर	२३।५०	७८।४५	-१५।००	+०६।०४
सिवनी	२२।०५	७९।३४	-११।४४	+०९।२०
सीधी	२४।१८	८१।५०	-०२।४०	+१८।२४
सीहोर	२३।२९	८०।०९	-०९।२४	+११।४०
		छत्तीसगढ़		
अम्बिकापुर	२३।१०	८३।१०	+०२।४०	+२३।४४
दंतेवाड़ा	१८।५२	८१।२२	-०४।३२	+१६।३२
दुर्ग	२१।१२	८१।१७	-०४।५२	+१६।१२
बिलासपुर	२२।०५	८२।११	-०१।१६	+१९।४८
बैकुंठपुर	२३।१५	८२।३३	+००।१२	+२१।१६
रायगढ़	२१।५४	८३।२६	+०३।४४	+२४।४८
रायपुर	२१।१५	८१।४१	-०३।१६	+१७।४८

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
		पंजाब		
अमृतसर	३१।३७	७४।५५	-३०।२०	-०९।१६
अबोहर	३०।०७	७४।२८	-३२।०८	-११।०४
कपूरथला	३१।२२	७५।२४	-२८।२४	-०७।२०
गुरदासपुर	३२।०३	७५।२७	-२८।१२	-०७।०८
चंडीगढ़	३०।४४	७६।५२	-२२।३२	-०१।२८
जालंधर	३१।१९	७५।३४	-२७।४४	-०६।४०
थानेश्वर	२९।५८	७६।५६	-२२।१६	-०१।१२
नाभा	३०।२५	७६।०९	-२५।२४	-०४।२०
पटियाला	३०।२०	७६।२५	-२४।२०	-०३।१६
पठानकोट	३२।१८	७५।४२	-२७।१२	-०६।०८
फरीदकोट	३०।४०	७४।४२	-३१।१२	-१०।०८
फाजिल्का	३०।२५	७४।०४	-३३।४४	-१२।४०
फिरोजपुर	३०।५६	७४।४०	-३१।२०	-१०।३२
भटिण्डा	३०।१२	७४।५९	-३०।०४	-०९।००
रूपनगर	३१।१०	७६।२७	-२४।१२	-०३।०८
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	-२६।२४	-०५।२०
संगरूर	३०।१४	७५।५१	-२६।३६	-०५।३२
होशियारपुर	३१।३२	७५।५६	-२६।१६	-०५।१२
		हिमाचल प्रदेश		
ऊना	३१।३२	७६।१८	-२४।४८	-०३।४४
कल्पा	३१।३२	७८।१५	-१७।००	+०७।४४
कुल्लू	३१।५८	७७।०६	-२१।३६	-००।३२
केलंग	३२।४२	७७।०२	-२१।५२	-००।४८
चम्बा	३२।२९	७६।१०	-२५।२०	-०४।२०
धर्मशाला	३.२।१६	७६।२३	-२४।२८	-०३।२४
बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	-२२।००	-०१।५६
मण्डी	३१।४३	७६।५८	-२२।०८	-०१।०४
शिमला	३१।०६	७७।१३	-२१।०८	-००।०८
सिरमौर	३०।३३	७७।१८	-२०।४८	+००।१६

देशकाल सुबोधिनी तालिका

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
सोलन	३०।५५	७७।०९	-२१।२४	-००।२०
हमीरपुर	३१।४१	७६।३१	-२३।५६	-०२।५२
जम्मू-कश्मीर				
अखनूर	३२।५४	७४।३५	-३१।४०	-१०।३६
अनन्तनाग	३३।४३	७५।१७	-२८।५२	-०७।४८
ऊधमपुर	३२।५५	७५।०७	-२९।३२	-०८।२८
जम्मू	३२।४४	७४।५४	-३०।२४	-०९।२०
श्रीनगर	३४।०६	७४।५१	-३०।३६	-०९।३२
गुजरात				
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३८	-३९।२८	-१८।२४
आहवा	२०।४७	७३।४२	-३५।१२	-१४।०८
जूनागढ़	२१।३२	७०।३६	-४७।३६	-२६।३२
दादर नगर	२०।२०	७२।५०	-३८।४०	-१७।३६
द्वारिकापुरी	२२।१४	६९।०१	-५३।५६	-३२।५२
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४९	-५०।४४	-२९।४०
बड़ोदरा	२२।१८	७३।१२	-३७।१२	-१६।०८
भुज	२३।१६	६९।४४	-५१।०४	-३०।००
राजकोट	२२।१८	७०।५३	-४६।२८	-२५।३६
सूरत	२१।१२	७२।५०	-३८।४०	-१७।३६
महाराष्ट्र				
अमरावती	२०।५६	७७।४७	-१८।५२	+०२।१२
अक्कलकोट	१७।३३	७६।१२	-२५।१२	-०४।०८
अलीबाग	१८।३८	७२।५०	-३८।४०	-१७।३६
अहमदनगर	१९।०५	७४।४८	-३०।४८	-०९।४४
एचिलपुर	२१।१८	७७।३३	-१९।४८	+०१।१६
औरंगाबाद	१९।५२	७५।१९	-२८।४४	-०७।४०
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	-३२।५६	-११।५२
चन्द्रपुर	१९।५७	७९।१०	-१३।२०	+०७।४४
जलगांव	२१।०४	७५।३५	-२७।४०	-०६।३६
नागपुर	२१।०९	७९।०७	-१३।३२	+०७।३२

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
नासिक	२०।००	७३।४९	-३४।३४	-१३।४०
परभणी	१९।१५	७६।४८	-२२।४८	+०१।४४
पुणे	१८।३०	७३।५३	-३४।२८	-१३।२४
मुम्बई	१८।५७	७२।५०	-३८।४०	-१७।३६
लातूर	१८।२१	७६।२८	-२४।०८	-०३।०४
सोलापुर	१७।४३	७५।५५	-२६।२०	-०५।१६
गोआ				
पणजी	१५।४१	७३।१०	-३७।२०	-१६।१६
कर्नाटक				
धारवाड़	१५।२६	७५।०५	-२९।४०	-०८।३६
बेंगलुरु	१२।५८	७७।३५	-१९।४०	+०१।२४
बेलगांव	१५।५५	७४।३१	-३१।५६	-१०।५२
मैसूर	१२।१८	७६।३९	-२३।२४	-०२।२०
मंगलूर	१२।५२	७४।५१	-३०।३६	-०९।३२
होसपेट	१५।१६	७६।२२	-२४।३२	-००।०८
केरल				
ऊटकमण्ड	११।१७	७६।४४	-२३।०४	-०२।००
कोच्चि	०९।५८	७६।१५	-२५।००	-०३।५६
तिरुवनंतपुरम	०८।४४	७७।२०	-२०।४०	+००।२४
तमिलनाडु				
कन्याकुमारी	०८।०४	७७।३६	-१९।३६	+०१।२८
कोयंबटूर	११।००	७७।००	-२२।००	-००।५६
चैन्नई (मद्रास)	१३।०५	८०।१७	-०८।५२	+१२।१२
पांडिचेरी	११।५६	७९।५१	-१०।३६	+१०।२८
मदुरै	०९।५५	७८।०८	-१७।२८	+०३।३६
आन्ध्र प्रदेश				
अनन्तपुरम	१४।४१	७७।३७	-१९।३२	+०१।३२
आलमपुर	१५।५४	७८।०७	-१७।३२	+०३।३२
चित्तूर	१३।१३	७९।०६	-१३।३६	+०७।२८

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
विजयवाड़ा	१६।३१	८०।३९	-०७।२४	+१३।४०
विशाखापट्टू	१७।४२	८३।२०	+०३।२०	+२४।२४
तेलंगाना				
निजामाबाद	१८।४१	७८।०८	-१७।२८	+०३।३६
वारंगल	१७।५८	७९।३६	-११।३६	+०९।२८
हैदराबाद	१७।१८	७८।३०	-१६।००	+०५।०४
उड़ीसा				
कटक	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	+३४।४०
जगन्नाथपुरी	१९।४६	८५।४८	+१३।१२	+३४।१६
देवगढ़	२१।३२	८४।४५	+०९।००	+३०।०४
बालेश्वर	२१।३०	८६।५४	+१७।३६	+३८।४०
भवानीपाटणा	१९।५८	८३।०७	+०२।२८	+२३।३२
भुवनेश्वर	२०।१५	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२
राउरकेला	२२।१४	८४।५२	+०९।२८	+३०।३२
सम्बलपुर	२१।२८	८३।५९	+०५।५६	+२७।००
बिहार				
आरा	२५।३६	८४।४२	+०८।४८	+२९।५२
औरंगाबाद	२४।४५	८४।२५	+०७।४०	+२८।४४
गया	२४।४९	८५।०१	+१०।०४	+३१।०८
झरिया	२३।५०	८२।३३	+००।१२	+२१।०४
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८	+३४।५२
पटना	२५।३७	८५।१०	+१०।४०	+३१।४४
पूर्णिया	२५।४९	८७।३१	+२०।०४	+४१।०८
सहसराम	२४।५०	८४।०५	+०६।२०	+२७।२४
सीतामढ़ी	२६।३५	८५।२९	+११।५६	+३३।००
झारखंड				
गिरीडीह	२४।११	८६।२०	+१५।२०	+३६।२४
गोड्डा	२४।४०	८७।१०	+१८।४०	+३९।४४
रांची	२३।२३	८५।२३	+११।३२	+३२।२४
हजारीबाग	२३।५९	८५।२४	+११।३६	+३२।४०

नगर	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टैं. अन्तर मि. सै.	दिल्ली से देशान्तर सं. मि. सै.
पश्चिम बंगाल				
आसनसोल	२३।४२	८७।२०	+१९।२०	+४०।२४
कोलकाता	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०
दार्जिलिंग	२७।०३	८८।२८	+२३।१२	+४४।१६
पुरुलिया	२३।२०	८६।२५	+१५।४०	+३६।४४
बांकुड़ा	२३।१५	८७।०४	+१८।१६	+३९।२०
पूर्वोत्तर राज्य - स्थान विशेष				
अगरतला	२३।४९	९१।१८	+३५।१२	+५६।१६
आईजोल	२३।४५	९२।५२	+४१।२८	+६२।३२
इम्फाल	२४।४८	९३।५८	+४५।५२	+६६।५६
इटानगर	२६।५४	९३।३७	+४४।२८	+६५।३२
कोहिमा	२५।४१	९४।०७	+४६।२८	+६७।३२
गंगतोक	२७।२०	८८।३८	+२४।३२	+४५।३६
चेरापूंजी	२५।१७	९१।४५	+३७।००	+५८।०४
डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८
दिसपुर	२६।२०	९१।५८	+३७।५२	+५८।५६
शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५८।४०
सिलचर	२४।५०	९२।४८	+४१।१२	+६२।१६
नेपाल				
काठमाण्डू	२७।४२	८५।१७	+११।०८	+३२।१२

देशकाल सुबोधिनी तालिका के कालमों में क्रमशः नगर, उत्तरअक्षांश, पूर्व रेखांश से आगे के कालम में भा.स्टैं.टा. से स्थानीय समय का अन्तर मि.सै. में दिया गया है, जो कि ८२।३० देशान्तर रेखा से पश्चिम के शहरों में ऋण तथा पूर्व के शहरों के लिए धन होता है। आगे के कालम में लिखित देशान्तर समय संस्कार मि. सै. दिल्ली से पूर्व के शहरों के लिए धन और पश्चिम के शहरों में ऋण चिह्न से दर्शाया गया है। जिसकी सहायता से आप चाहे जिस स्थान का पंचांग, सूर्योदयास्त, दिनमान, तिथ्यादि सहज बना सकते हैं।

विदेशकाल सुबोधिनी तालिका

विदेशी राज. एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षे.स्टैं.टा. से स्थानीय समयांतर मि. सै.	ग्रीनविच स. से क्षे.स्टैं.टा. समयान्तर घं. मि.	भा.स्टैं.टा.से क्षे.स्टैं.टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से देशान्तरसमय संस्कार घं. मि. सै.
अदन	एडन	१३ ।२५उ.	४५ ।००पू.	-०० ।००	+०३ ।००	-०२ ।३०	-१ ।२८ ।५६
अम्मान	जोर्डन	३१ ।५७उ.	३५ ।५७पू.	+२३ ।४८	+०२ ।००	-०३ ।३०	-२ ।४५ ।०८
अर्जेंटाइना	द.अमेरिका	२६ ।१२द.	६४ ।४५प.	+४१ ।००	-०५ ।००	-१० ।३०	-९ ।२७ ।५६
न्यूसाउथवेल्स	आस्ट्रेलिया	३२ ।००उ.	१४६ ।१७पू.	-१४ ।५२	+१० ।००	+०४ ।३०	+४ ।३६ ।१२
अंकारा	तुर्किस्तान	३९ ।५२उ.	३२ ।५९पू.	+११ ।५६	+०२ ।००	-०३ ।३०	-२ ।५७ ।००
इथोपिया	इथोपिया	०८ ।१०उ.	३८ ।१४पू.	-०० ।००	+०३ ।००	-०२ ।३०	-२ ।३६ ।००
एडन	एडन	१२ ।५८उ.	४५ ।०१पू.	+०० ।०४	+०३ ।००	-०२ ।३०	-२ ।०८ ।५२
एथेन्स	ग्रीस	३७ ।५९उ.	२३ ।२०पू.	-२६ ।४०	+०२ ।००	-०३ ।३०	-३ ।३५ ।३६
ओटावा	कनाडा	४५ ।२६उ.	७५ ।४१प.	-०२ ।४४	-०५ ।००	-१० ।३०	-१० ।३५ ।४०
कराची	पाकिस्तान	२४ ।५१उ.	६७ ।००पू.	-३२ ।००	+०५ ।००	-०० ।३०	-० ।४० ।५६
काबुल	अफगानिस्तान	३४ ।३१उ.	६९ ।१२पू.	+०६ ।४८	+०४ ।३०	-०१ ।००	-० ।३२ ।०८
काण्डी	सीलोन	०७ ।११उ.	८० ।३२पू.	-०० ।००	+०५ ।३०	-०० ।००	+० ।१३ ।१२
काहिरा	मिश्र	३० ।०१उ.	३१ ।१३पू.	+०४ ।५२	+०२ ।००	-०३ ।३०	-३ ।०४ ।०४
कैनबरा	आस्ट्रेलिया	३५ ।१५उ.	१४९ ।८पू.	-०३ ।२८	+१० ।००	+०४ ।३०	+४ ।४७ ।३६
ग्रीनविच	इंगलैण्ड	५१ ।२९उ.	०० ।००पू.	+०० ।००	+०० ।००	-०५ ।३०	-५ ।०८ ।५६
जकार्ता	इण्डोनेशिया	०७ ।५७द.	११० ।२०पू.	-०८ ।४०	+०७ ।३०	+०२ ।००	+२ ।१२ ।२४
जिनेवा	स्वीट्जरलैंड	४६ ।१२उ.	०६ ।०९पू.	-३५ ।२४	+०१ ।००	-०४ ।३०	-४ ।४४ ।२०
जिब्राल्टर	जिब्राल्टर	३६ ।०७उ.	०५ ।२२प.	-८१ ।२८	-०१ ।००	-०४ ।३०	-५ ।३० ।२४
जेरूसलम	इजरायल	३१ ।४८उ.	३५ ।१२पू.	+२० ।४८	+०२ ।००	-०३ ।३०	-२ ।४८ ।०८
ट्रान्सवाल	द.अफ्रीका	२५ ।००द.	२९ ।००पू.	+०४ ।००	+०२ ।००	-०३ ।३०	-३ ।१२ ।५६
त्रिपोली	उ.अफ्रीका	३२ ।४५द.	१३ ।१५पू.	-०७ ।००	+०१ ।००	-०४ ।३०	-४ ।१५ ।५६
टोक्यो	जापान	३५ ।३९उ.	१३९ ।४५पू.	+१९ ।००	+०९ ।००	+०३ ।३०	+४ ।१० ।०४
ढाका	बांग्लादेश	२३ ।४३उ.	९० ।२५पू.	+०१ ।४०	+०६ ।००	+०० ।३०	+० ।५२ ।४४
तेहरान	ईरान	३५ ।४४उ.	५१ ।२७पू.	-०४ ।१२	+०३ ।३०	-०२ ।००	-१ ।४३ ।०८
दमास्कस	सीरिया	३३ ।३०उ.	३६ ।१८पू.	+२५ ।१२	+०२ ।००	-०३ ।३०	-२ ।४३ ।४४
नैरोबी	केन्या	०१ ।२०द.	३६ ।४४पू.	-३३ ।०४	+०२ ।३०	-०३ ।००	-२ ।४२ ।००
न्यूयार्क	अमेरिका	४० ।४३उ.	७४ ।००प.	+०४ ।००	-०५ ।००	-१० ।३०	-१० ।१६ ।५६
प्योंगयांग	उ.कोरिया	३९ ।००उ.	१२५ ।३०पू.	-३८ ।००	+०९ ।००	+०३ ।३०	+३ ।१३ ।०४
बीजिंग	चीन	३९ ।५०उ.	११६ ।२०पू.	-१४ ।४०	+०८ ।००	+०२ ।३०	+२ ।३६ ।२४
पेरिस	फ्रांस ॐ	४८ ।५०उ.	०२ ।२०पू.	-५० ।४०	+०१ ।००	-०४ ।३०	-४ ।५९ ।३६
फार्मोसा	फार्मोसा	२५ ।१८उ.	१२१ ।३२पू.	-५३ ।५२	+०९ ।००	+०३ ।३०	+२ ।५७ ।१२
फिजी	फीजी	१८ ।००उ.	१७९ ।०पू.	+०६ ।२६	+१२ ।००	+०६ ।३०	+६ ।४७ ।४४
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२ ।३२उ.	१३ ।२४पू.	-०६ ।२४	+०१ ।००	-०४ ।३०	-४ ।१५ ।२०

विदेशी राज. एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षे.स्टैं.टा. से स्थानीय समयांतर मि. सै.	ग्रीनविच स. से क्षे.स्टैं.टा. समयान्तर घं. मि.	भा.स्टैं.टा.से क्षे.स्टैं.टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से देशान्तरसमय संस्कार घं. मि. सै.
बुल्गारिया	यूरोप	४३ ।१८उ.	२६ ।१७पू.	+१४ ।५२	+०२ ।००	-०३ ।३०	-३ ।२३ ।४८
बॉन	पं.जर्मनी	५० ।४३उ.	०७ ।०६पू.	-३१ ।३६	+०१ ।००	-०४ ।३०	-४ ।४० ।३२
ब्रुसेल्स	बेल्जियम ॐ	५० ।५१उ.	०४ ।२१पू.	-४२ ।३६	+०१ ।००	-०४ ।३०	-४ ।५१ ।३२
वाशिंगटन	अमेरिका	३८ ।४३उ.	७७ ।००प.	-०८ ।००	-०५ ।००	-१० ।३०	-१० ।१६ ।५६
बगदाद	इराक	३३ ।१८उ.	४४ ।३०पू.	-०२ ।००	+०३ ।००	-०२ ।३०	-२ ।१० ।५६
बुडापेस्ट	हंगरी	४७ ।२९उ.	१९ ।०५पू.	+१६ ।२०	+०१ ।००	-०४ ।३०	-३ ।५२ ।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४ ।५०उ.	२० ।३७पू.	+२२ ।२८	+०१ ।००	-०४ ।३०	-३ ।४६ ।२८
बेलिंगटन	न्यूजीलैंड	४१ ।१९द.	१७४ ।४६पू.	-२० ।५६	+१२ ।००	+०६ ।३०	+६ ।३० ।०८
बैंकाक	स्याम	१३ ।४५उ.	१०० ।३०पू.	-१८ ।००	+०७ ।००	+०१ ।३०	+१ ।३३ ।०४
मास्को	रूस	५५ ।४५उ.	३७ ।३५पू.	-२९ ।४०	+०३ ।००	-०२ ।३०	-२ ।३८ ।३६
माण्डले	म्यानमार	२२ ।००उ.	९६ ।०५पू.	-०५ ।४०	+०६ ।३०	+०१ ।००	+१ ।१५ ।२४
मॉड्रिड	स्पेन ॐ	४० ।२५उ.	०३ ।४५प.	-७५ ।००	+०१ ।००	-०४ ।३०	-५ ।२३ ।५६
मैक्सिकोसिटी	मैक्सिको	१९ ।२५उ.	९९ ।१७प.	-३७ ।०८	-०६ ।००	-११ ।३०	-११ ।४६ ।०४
रंगून	म्यानमार	१६ ।४८उ.	९६ ।०८पू.	-०५ ।२८	+०६ ।३०	+०१ ।००	+१ ।१५ ।३६
रोम	इटली	४१ ।४५उ.	१२ ।२९पू.	-१० ।०४	+०१ ।००	-०४ ।३०	-४ ।१९ ।००
रियाद	साउदीअरब	२४ ।५०उ.	४६ ।१८पू.	+०५ ।१२	+०३ ।००	-०२ ।३०	-२ ।०३ ।४४
लन्दन	ब्रिटेन	५१ ।३२उ.	०० ।०५प.	-०० ।२०	-०० ।००	-०५ ।३०	-५ ।०९ ।१६
लिस्बन	पुर्तगाल	३८ ।४२उ.	०९ ।१०प.	-३६ ।४०	-०० ।००	-०५ ।३०	-५ ।४५ ।३६
ल्हासा	तिब्बत	२९ ।४०उ.	९१ ।०८पू.	+३४ ।३२	+०५ ।३०	+०० ।००	+० ।५५ ।३६
सिओल	द.कोरिया	३७ ।४०उ.	१२७ ।०पू.	-३२ ।००	+०९ ।००	+०३ ।३०	+३ ।१९ ।०४
सिंगापुर	मलाया	०१ ।१६उ.	१०३ ।४७पू.	-३४ ।५२	+०७ ।३०	+०२ ।००	+१ ।४६ ।२२
हांगकांग	हांगकांग	२२ ।१८उ.	११४ ।१०पू.	-२३ ।२०	+०८ ।००	+०२ ।३०	+२ ।२७ ।४४

विदेशकाल सुबोधिनी तालिका के पांचवें कालम में क्षेत्रीय स्टैं. टा. से स्थानीय समयान्तर मि.सै. में दिया गया है। छटे कालम में ग्रीनविच समय G.M.T. से क्षेत्रीय स्टैं.टा. का अन्तर घं. मि. में दर्शाया गया है। सातवें कालम में भारतीय स्टैं.टा. और क्षेत्रीय स्टैं.टा का जो अन्तर है वह बताया गया है। अन्तिम कालम में भारत की राजधानी दिल्ली से पूर्वापर देशान्तर समय संस्कार घं.मि.सै. में छपा है। जो कि साम्पातिक काल के लिए उपयोगी है।

ॐ यहाँ ग्रीनविच मध्यम समय G.M.T. भी व्यवहार में चालू है। ध्यान रहे- कनाडा, क्यूबा, इजिप्ट, आयरलैण्ड, इटली, पोलेण्ड, पुर्तगाल, सीरिया, टर्की, इंगलैण्ड और अमेरिका के क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन समय स्टैं.टा. से एक घंटा आगे रहता है। अर्थात् घडियाँ एक घंटा आगे कर दी जाती हैं।

पलभा ज्ञान सारिणी

१	० ।१२ ।३६	३१	७ ।१२ ।३८
२	० ।२५ ।०८	३२	७ ।२९ ।५५
३	० ।३७ ।४३	३३	७ ।४७ ।३४
४	० ।५० ।१९	३४	८ ।०५ ।३८
५	१ ।०३ ।००	३५	८ ।२४ ।०८
६	१ ।१५ ।४०	३६	८ ।४२ ।५६
७	१ ।२८ ।२४	३७	९ ।०२ ।३५
८	१ ।४१ ।१०	३८	९ ।२२ ।३२
९	१ ।५४ ।०२	३९	९ ।४३ ।०३
१०	२ ।०६ ।५६	४०	१० ।०४ ।०९
११	२ ।१९ ।५८	४१	१० ।२५ ।५३
१२	२ ।३३ ।०४	४२	१० ।४८ ।१७
१३	२ ।४६ ।१४	४३	११ ।११ ।२४
१४	२ ।५९ ।२९	४४	११ ।३५ ।१८
१५	३ ।१३ ।०५	४५	१२ ।१२ ।००
१६	३ ।२६ ।२५	४६	१२ ।२५ ।३३
१७	३ ।४० ।०६	४७	१२ ।५२ ।०७
१८	३ ।५३ ।५५	४८	१३ ।१९ ।३७
१९	४ ।०७ ।५३	४९	१३ ।४८ ।२५
२०	४ ।२२ ।०४	५०	१४ ।१८ ।०५
२१	४ ।३६ ।२४	५१	१४ ।४९ ।०७
२२	४ ।५० ।५२	५२	१५ ।२१ ।३१
२३	५ ।०५ ।३८	५३	१५ ।५५ ।२६
२४	५ ।२० ।३२	५४	१६ ।३१ ।००
२५	५ ।३५ ।४४	५५	१७ ।१५ ।२५
२६	५ ।५१ ।०८	५६	१७ ।४७ ।२८
२७	६ ।०६ ।५०	५७	१८ ।२८ ।४३
२८	६ ।२२ ।५०	५८	१९ ।१२ ।१२
२९	६ ।३९ ।०५	५९	१९ ।५८ ।१७
३०	६ ।५५ ।४३	६०	२० ।४७ ।०६

पलभा ज्ञान सारिणी में १ से ६० तक प्रत्येक अक्षांश की पलभा अंगुल व्यंगुल, प्र.व्य. दी गई है। अभिष्ट नगरीय अक्षांशतुल्य पलभा निकालने की विधि **उदाहरण-**

दिल्ली का अक्षांश २८ ।३८ है, इसलिए अंश २९ की पलभा ६ ।३९ ।०५ में से २८ की पलभा ६ ।२२ ।५० को घटाया तो १६ ।१५ मिले जिनको ३८ से गुणा किया तो ६१७ हुए और ६० से भाग दिया तो व्यंगुलात्मक १० ।१७ मिले। जिन्हें २८ की पलभा में जोड़ा तो ६ ।३३ ।०७ दिल्ली की पलभा सिद्धि हुई।

अ,व,क,ह,डा,चक्रके अन्दर ८ रिंग हैं। **पहले रिंग** (ऊपरीगोलेमें) ज्योतिषकी वर्णमालानुसार अश्विनी आदि नक्षत्रोंके चरणोंमें विहित चार-चार अक्षर प्रत्येक भागमें लिखे है। नक्षत्र २७ x ४ = १०८ अक्षर हैं। एक राशिमें ९ अक्षर अर्थात् सवा दो नक्षत्रकी होती है।

दूसरे रिंग में- नक्षत्र तथा राशि नाम लिखे हैं। कृतिका के १ चरण तक मेष राशि रहती है, अतः कृ.१ में एवं कृ. ३ वृ. इस तरह लिखा गया है। स्थानाभावके कारण नामके पहले अक्षरको लिखकर बिन्दी लगा दी जाती है।

तीसरे रिंगमें- राशियोंके वर्णका उल्लेख है जैसे मेषका वर्ण क्षत्री है तो अश्विनी भरणीकृतिकाके १भागतकक्षत्री लिखा है।

चौथेरिंगमें- पाद उल्लेख है अर्थात् राशि चतुष्पद है द्विपद है जलचर है वनचर है या कीट संज्ञक है। वश्य गुणावगुण जान सकते हैं।

पाँचवेंरिंगमें-नक्षत्रोंकी योनिलिखी है।

छटेरिंगमें- राशियोंके स्वामियों के नाम लिखे है जैसे- मे.वृ.का स्वामी भौम, वृ.तु. का शुक्र, मि.क. का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का रवि, ध.मि.कागुरु और म.कुं.का शनि है।

सातवेंरिंगमें- देव, नर, राक्षस, इत्यादि लिखा है अतः किस नक्षत्रका कौन सा गण है यह जान सकते है।

आठवेंरिंगमें- नक्षत्रोंकी नाडी आदि, मध्य, अन्त्य, मध्य, आदि, लिख दी गई है। वर-वधू गुण मिलान आसानी से कर सकते है।

अ व क ह डा चक्र राशि स्वामिवर्णवश्यदिज्ञानायचक्रम्

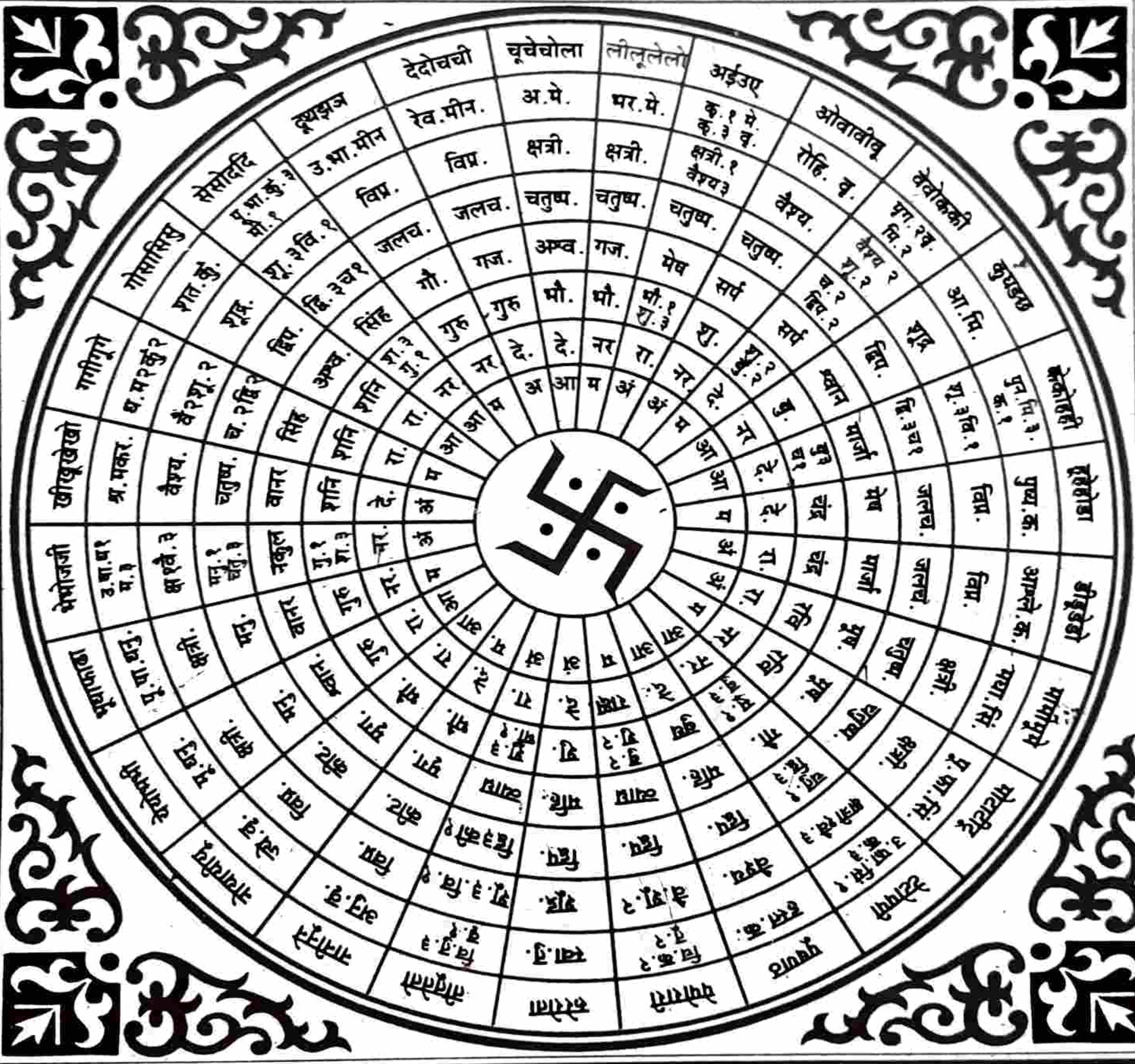

पंचांग परिवर्तन विधि-

जिस नगरका सूर्योदय ज्ञात करना हो उस नगरके सामने देशान्तर सूर्योदिनी तालिका में देशान्तर मि.में. धन हो तो ऋण और यदि ऋण हो तो धन संस्कार इस पंचांगमें उल्लिखित सूर्योदय में करने पर अभीष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय बन जायेगा। अभीष्ट दिन रविक्रान्ति एवं उक्त नगर के अक्षांश तुल्य चरान्तर मिनटोंका संस्कार मध्यमसूर्योदयमें करनेसे स्पष्टसूर्योदय होगा। चरान्तर मिनटोंको ५ से गुणाकर प्राप्त पलोंका विपरीत (धनको ऋण व ऋणको धन) संस्कार पंचांगके लिखित दिनमानमें करनेसे अभीष्ट नगरका दिनमान हो जायेगा। दिनमानको २॥ से भागकर प्राप्त घ.मि.को सूर्योदय में जोड़ने से सूर्यास्त काल होगा।

तिथ्यादि साधनम्- अभीष्ट नगरीय सूर्योदयान्तर मिनटोंके पलोंको इस पंचांगके घटी-पलोंमें (पूर्वमें धन पश्चिम में ऋण) संस्कार करने से इच्छित नगरमें तिथि नक्षत्र योगादिका स्पष्ट मान हो जायेगा।

ग्रह दोष नाशक परिहार-

राहुका बुध, राहु व बुध का शनि और राहु बुध और शनि तीनों का दोष नाशक मंगल, तथा मंगल,राहु, बुध शनि का दोष नाशक शुक्र है। शुक्र,राहु, बुध,शनि,मंगल पांचों का गुरु है। राहु, मंगल,बुध, गुरु,शुक्र, शनि इन छः के दोषनिवारण में चन्द्र तथा सभी ग्रहों का दोषनाशक सूर्य को समझें।

नोट- विस्तार सहित अ,ब,क,ह,ड चक्र जातक प्रकरण में, पृष्ठ १६ पर छपा है।

❀ स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार भारत के प्रसिद्ध नगरों में सूर्योदयास्त ❀

अंग्रेजी मास तारीख	अलीगढ़ उदय घं.मि.	अलीगढ़ अस्त घं.मि.	आगरा उदय घं.मि.	आगरा अस्त घं.मि.	कलकत्ता उदय घं.मि.	कलकत्ता अस्त घं.मि.	कानपुर उदय घं.मि.	कानपुर अस्त घं.मि.	गोहाटी उदय घं.मि.	गोहाटी अस्त घं.मि.	चण्डीगढ़ उदय घं.मि.	चण्डीगढ़ अस्त घं.मि.	जयपुर उदय घं.मि.	जयपुर अस्त घं.मि.	जम्मूकश्मीर उदय घं.मि.	जम्मूकश्मीर अस्त घं.मि.	जोधपुर उदय घं.मि.	जोधपुर अस्त घं.मि.	नागपुर उदय घं.मि.	नागपुर अस्त घं.मि.	पटना उदय घं.मि.	पटना अस्त घं.मि.	मद्रास उदय घं.मि.	मद्रास अस्त घं.मि.	मुम्बई उदय घं.मि.	मुम्बई अस्त घं.मि.	रतलाम उदय घं.मि.	रतलाम अस्त घं.मि.	लखनऊ उदय घं.मि.	लखनऊ अस्त घं.मि.	वाराणसी उदय घं.मि.	वाराणसी अस्त घं.मि.	हरिद्वार उदय घं.मि.	हरिद्वार अस्त घं.मि.
जनवरी १	७।१३	१७।३१	७।१२	१७।३२	६।२०	१६।५१	७।२	१७।२४	६।१४	१६।२१	७।२५	१७।२७	७।१९	१७।४१	७।३३	१७।३४	७।३०	१७।५३	६।५४	१७।३१	६।३९	१७।१५	६।३५	१७।५०	७।१५	१८।१	७।१५	१७।५५	६।५८	१७।२२	६।४७	१७।१५	७।२८	१७।२६
६	७।१३	१७।३४	७।१२	१७।३५	६।२२	१७।१३	७।२	१७।२७	६।१४	१६।२४	७।२७	१७।३०	७।१९	१७।४४	७।३४	१७।३७	७।३२	१७।५७	६।५४	१७।३३	६।४०	१७।१८	६।३७	१७।५३	७।१७	१८।१२	७।१६	१७।५८	७।००	१७।२५	६।४९	१७।१९	७।२८	१७।३०
११	७।१४	१७।३८	७।१३	१७।३९	६।२२	१७।१६	७।२	१७।३१	६।१४	१६।२६	७।२७	१७।३३	७।१९	१७।४८	७।३४	१७।४१	७।३३	१८।१	६।५४	१७।३६	६।४१	१७।२२	६।३८	१७।५६	७।१८	१८।१५	७।१७	१७।५८	७।१	१७।२८	६।४९	१७।२२	७।२८	१७।३३
१६	७।१४	१७।४१	७।१३	१७।४३	६।२२	१७।१०	७।२	१७।३५	६।१४	१६।२९	७।२६	१७।३८	७।१९	१७।५४	७।३३	१७।४६	७।३३	१८।१३	६।५३	१७।३९	६।४१	१७।२६	६।३९	१७।५७	७।१८	१८।१८	७।१७	१८।२	७।१	१७।३३	६।४९	१७।२६	७।२८	१७।३८
२१	७।१३	१७।४५	७।१२	१७।४६	६।२२	१७।१३	७।१	१७।३८	६।१३	१६।३३	७।२५	१७।४३	७।१९	१७।५७	७।३२	१७।५१	७।३३	१८।१७	६।५३	१७।४२	६।४०	१७।३०	६।३९	१८।१	७।१८	१८।२२	७।१७	१८।५	७।००	१७।३५	६।४९	१७।३०	७।२६	१७।४२
२६	७।११	१७।४९	७।१०	१७।५०	६।२१	१७।१६	७।०	१७।४३	६।१३	१६।३७	७।२२	१७।४८	७।१८	१८।१	७।३०	१७।५६	७।३१	१८।२१	६।५३	१७।४५	६।३९	१७।३४	६।३९	१८।३	७।१८	१८।२४	७।१६	१८।९	६।५९	१७।३९	६।४७	१७।३३	७।२४	१७।४६
३१	७।१०	१७।५३	७।८	१७।५४	६।२०	१७।२०	६।५७	१७।४७	६।१२	१७।१	७।१९	१७।५३	७।१६	१८।४	७।२७	१८।००	७।२९	१८।२६	६।५२	१७।४९	६।३७	१७।३८	६।३९	१८।६	७।१७	१८।२८	७।१४	१८।१२	६।५७	१७।४२	६।४५	१७।३७	७।२२	१७।५०
फरवरी ५	७।७	१७।५७	७।६	१७।५८	६।१८	१७।२३	६।५५	१७।५०	६।१	१७।१५	७।१६	१७।५८	७।१३	१८।९	७।२४	१८।५	७।२६	१८।२९	६।५२	१७।५१	६।३५	१७।४१	६।३८	१८।८	७।१५	१८।३०	७।१२	१८।१५	६।५३	१७।४६	६।४३	१७।४१	७।२२	१७।५३
१०	७।४	१८।१	७।३	१८।२	६।१५	१७।२६	६।५२	१७।५४	६।२	१७।१८	७।१२	१८।२	७।१०	१८।१३	७।२०	१८।१०	७।२३	१८।३२	६।५१	१७।५४	६।३२	१७।४५	६।३७	१८।१०	७।१३	१८।३३	७।९	१८।१९	६।५१	१७।४९	६।४०	१७।४४	७।१७	१७।५७
१५	७।०	१८।४	६।५९	१८।५	६।१२	१७।२९	६।४८	१७।५७	६।३	१७।२२	७।७	१८।६	७।६	१८।१६	७।१६	१८।१४	७।२०	१८।३६	६।४९	१७।५६	६।२८	१७।४९	६।३५	१८।११	७।११	१८।३५	७।६	१८।२२	६।४७	१७।५३	६।३७	१७।४८	७।१३	१८।१
२०	६।५६	१८।८	६।५५	१८।९	६।९	१७।३२	६।४४	१८।१	५।५९	१७।२५	७।२	१८।१०	७।२	१८।१९	७।११	१८।१८	७।१६	१८।४०	६।४५	१७।५९	६।२४	१७।५१	६।३३	१८।१३	७।८	१८।३७	७।३	१८।२४	६।४२	१७।५७	६।३३	१७।५१	६।५१	१८।५
२५	६।५१	१८।११	६।५०	१८।१२	६।५	१७।३४	६।४०	१८।४	५।५५	१७।२८	६।५८	१८।१४	६।५८	१८।२२	७।६	१८।२२	७।१२	१८।४३	६।४१	१८।१	६।२०	१७।५४	६।३१	१८।१४	७।५	१८।३९	६।५९	१८।२७	६।३८	१८।००	६।२९	१७।५४	६।५३	१८।९
मार्च २	६।४६	१८।१५	६।४५	१८।१५	६।१	१७।३७	६।३५	१८।७	५।५०	१७।३२	६।५३	१८।१९	६।५४	१८।२५	७।००	१८।२६	७।७	१८।४७	६।३८	१८।३	६।१५	१७।५८	६।२८	१८।१४	७।१	१८।४१	६।५४	१८।३०	६।३३	१८।३	६।२४	१७।५६	६।४८	१८।१२
७	६।४१	१८।१८	६।४०	१८।१८	५।५७	१७।३९	६।३०	१८।१०	५।४५	१७।३४	६।४७	१८।२२	६।४९	१८।२८	६।५४	१८।२९	७।३	१८।४९	६।३८	१८।५	६।११	१८।०	६।२५	१८।१५	६।५८	१८।४३	६।५०	१८।३२	६।२८	१८।६	६।२०	१७।५९	६।४२	१८।१६
१२	६।३५	१८।२१	६।३५	१८।२१	५।५२	१७।४१	६।२५	१८।१२	५।४०	१७।३६	६।४१	१८।२४	६।४४	१८।२८	६।४८	१८।२९	६।५८	१८।५१	६।३३	१८।६	६।५	१८।३	६।२२	१८।१६	६।५४	१८।४४	६।४६	१८।३४	६।२३	१८।९	६।१५	१८।२	६।३७	१८।१९
१७	६।३०	१८।२४	६।३०	१८।२४	५।४८	१७।४३	६।२०	१८।१५	५।३५	१७।३९	६।३५	१८।२८	६।३८	१८।३३	६।४२	१८।३३	६।४१	१८।५३	६।२९	१८।८	६।०	१८।५	६।१९	१८।१६	६।५०	१८।४५	६।४१	१८।३६	६।१८	१८।१२	६।१०	१८।४	६।३१	१८।२३
२२	६।२४	१८।२६	६।२४	१८।२६	५।४३	१७।४४	६।१५	१८।१७	५।२९	१७।४१	६।२९	१८।३१	६।३२	१८।३६	६।३६	१८।३९	६।४५	१८।५७	६।२०	१८।२२	५।५५	१८।७	६।१६	१८।१७	६।४५	१८।४७	६।३६	१८।३८	६।१२	१८।१४	६।४	१८।६	६।२५	१८।२५
२७	६।१९	१८।२९	६।१८	१८।२९	५।३८	१७।४६	६।९	१८।१९	५।२४	१७।४४	६।२३	१८।३४	६।२६	१८।३८	६।२९	१८।४२	६।४०	१८।५०	६।१५	१८।१३	५।५०	१८।९	६।१२	१८।१७	६।४१	१८।४८	६।३१	१८।४०	६।७	१८।१७	५।५९	१८।८	६।२०	१८।२८
अप्रैल १	६।१३	१८।३१	६।१४	१८।३१	५।३३	१७।४८	६।४	१८।२२	५।१८	१७।४६	६।१७	१८।३७	६।२०	१८।४१	६।२३	१८।४६	६।३४	१८।५२	६।११	१८।२५	५।४५	१८।१२	६।९	१८।१७	६।३७	१८।४९	६।२६	१८।४२	६।२	१८।१९	५।५४	१८।१०	६।१३	१८।३०
६	६।८	१८।३४	६।८	१८।३३	५।२९	१७।५०	५।५९	१८।२४	५।१३	१७।४८	६।११	१८।४०	६।१५	१८।४४	६।१७	१८।५०	६।२९	१८।५५	६।६	१८।२६	५।४०	१८।१४	६।६	१८।१८	६।३३	१८।५०	६।२१	१८।४३	५।५६	१८।२२	५।४९	१८।१३	६।७	१८।३४
११	६।२	१८।३६	६।३	१८।३६	५।२४	१७।५२	५।५४	१८।२६	५।८	१७।४९	६।५	१८।४३	६।९	१८।४७	६।११	१८।५३	६।२३	१८।५५	६।१	१८।२८	५।३५	१८।१६	६।२	१८।१८	६।२९	१८।५१	६।१७	१८।४५	५।५१	१८।२५	५।४३	१८।१५	६।००	१८।३८
१६	५।५७	१८।३९	५।५८	१८।३८	५।२०	१७।५३	५।४८	१८।२९	५।३	१७।५०	५।५९	१८।४६	६।५	१८।४९	६।५	१८।५६	६।१८	१९।०	५।५८	१८।२९	५।३०	१८।१९	५।५९	१८।१८	६।२५	१८।५३	६।१२	१८।४७	५।४६	१८।२८	५।३९	१८।१७	५।५५	१८।४१
२१	५।५२	१८।४२	५।५३	१८।४१	५।१५	१७।५५	५।४४	१८।३०	४।५८	१७।५५	५।५३	१८।४९	६।१	१८।५२	५।५९	१८।५९	६।१४	१९।२	५।५४	१८।३१	५।२५	१८।२०	५।५७	१८।१९	६।२१	१८।५४	६।८	१८।४९	५।४१	१८।३१	५।३४	१८।२०	५।५०	१८।४४
२६	५।४७	१८।४५	५।४८	१८।४४	५।१२	१७।५७	५।३९	१८।३४	४।५४	१७।५८	५।४८	१८।५२	५।४६	१८।५४	५।५३	१९।३	६।१०	१९।४	५।५०	१८।३३	५।२२	१८।२४	५।५४	१८।२०	६।१८	१८।५५	६।६	१८।५२	५।३६	१८।३३	५।३०	१८।२२	५।४५	१८।४७
मई १	५।४३	१८।४७	५।४५	१८।४६	५।८	१७।५९	५।३५	१८।३६	४।५०	१७।५०	५।४४	१८।५६	५।४२	१८।५७	५।४८	१९।६	६।५	१९।७	५।४७	१८।३५	५।१७	१८।२६	५।५२	१८।२१	६।१५	१८।५७	६।०	१८।५४	५।३१	१८।३५	५।२६	१८।२४	५।४०	१८।५०
६	५।३९	१८।५१	५।४१	१८।४९	५।५	१८।३	५।३२	१८।३९	४।४६	१७।५३	५।३९	१८।५९	५।३८	१८।५९	५।४३	१९।९	६।२	१९।१०	५।४४	१८।३७	५।१३	१८।२२	५।५०	१८।२२	६।१२	१८।५९	५।५७	१८।५६	५।२८	१८।३८	५।२२	१८।२७	५।३६	१८।५४
११	५।३५	१८।५३	५।३८	१८।५२	५।२	१८।४	५।२९	१८।४२	४।४३	१७।५६	५।३५	१९।३	५।३५	१९।२	५।३९	१९।१३	६।२	१९।१२	५।४१	१८।३९	५।१०	१८।२१	५।४८	१८।२३	६।१०	१९।०	५।५४	१८।५८	५।२४	१८।४०	५।१९	१८।२९	५।३२	१८।५६
१६	५।३२	१८।५६	५।३४	१८।५५	५।००	१८।६	५।२६	१८।४४	४।४०	१७।५९	५।३१	१९।७	५।३२	१९।४	५।३६	१९।१६	५।५५	१९।१५	५।३९	१८।४१	५।७	१८।२४	५।४७	१८।२४	६।८	१९।२	५।५२	१९।१	५।२२	१८।४३	५।१६	१८।३२	५।२९	१८।५९
२१	५।३०	१८।५८	५।३१	१८।५७	४।५८	१८।८	५।२३	१८।४७	४।३८	१८।२	५।२८	१९।१०	५।३१	१९।६	५।३३	१९।१९	५।५३	१९।१७	५।३७	१८।४३	५।५	१८।२७	५।४६	१८।२५	६।६	१९।४	५।५०	१९।३	५।१९	१८।४५	५।१४	१८।३४	५।२७	१९।२
२६	५।२९	१९।१	५।३०	१९।०	४।५६	१८।११	५।२१	१८।४९	४।३६	१८।४	५।२५	१९।१३	५।३७	१९।१	५।३०	१९।२३	५।५२	१९।२०	५।३६	१८।४६	५।४	१८।२९	५।४५	१८।२७	६।५	१९।६	५।४९	१९।५	५।१८	१८।४८	५।१२	१८।३७	५।२६	१९।५
३१	५।२७	१९।३	५।२८	१९।२	४।५५	१८।१३	५।२०	१८।५२	४।३५	१८।६	५।२३	१९।१६	५।३४	१९।१३	५।२८	१९।२६	५।५०	१९।२२	५।३४	१८।४७	५।२	१८।३१	५।४५	१८।२८	६।४	१९।८	५।४७	१९।८	५।१६	१८।५०	५।११	१८।३९	५।२४	१९।६
जून ५	५।२७	१९।६	५।२८	१९।४	४।५४	१८।१५	५।१९	१८।५४	४।३४	१८।८	५।२३	१९।१९	५।३४	१९।१५	५।२७	१९।२९	५।५०	१९।२५	५।३४	१८।४८	५।२	१८।३४	५।४५	१८।३०	६।४	१९।१०	५।४६	१९।१०	५।१६	१८।५२	५।११	१८।४२	५।२३	१९।९
१०	५।२६	१९।८	५।२७	१९।७	४।५४	१८।१७	५।१९	१८।५६	४।३४	१८।११	५।२२	१९।२२	५।३४	१९।१८	५।२७	१९।३२	५।५०	१९।२६	५।३४	१८।४९	५।२	१८।३६	५।४५	१८।३१	६।४	१९।१२	५।४७	१९।१२	५।१६	१८।५४	५।११	१८।४४	५।२२	१९।१२
१५	५।२६	१९।१०	५।२७	१९।९	४।५४	१८।१८	५।२०	१८।५८	४।३४	१८।१२	५।२३	१९।२३	५।३४	१९।२०	५।२७	१९।३४	५।४९	१९।२९	५।३५	१८।४९	५।२	१८।३८	५।४६	१८।३३	६।५	१९।१३	५।४७	१९।१४	५।१७	१८।५६	५।११	१८।४६	५।२१	१९।१५
२०	५।२७	१९।१२	५।२७	१९।११	४।५६	१८।२०	५।२०	१८।५९	४।३५	१८।१४	५।२३	१९।२५	५।३६	१९।२१	५।२८	१९।३५	५।४९	१९।३१	५।३६	१८।५३	५।३	१८।३९	५।४७	१८।३४	६।६	१९।१४	५।४८	१९।१५	५।१७	१८।५७	५।१२	१८।४७	५।२०	१९।१८
२५	५।२७	१९।१३	५।२८	१९।१२	४।५७	१८।२१	५।२२	१९।०	४।३६	१८।१५	५।२४	१९।२६	५।३७	१९।२२	५।२९	१९।३६	५।५०	१९।३२	५।३७	१८।५४	५।४	१८।४०	५।४८	१८।३५	६।७	१९।१५	५।४९	१९।१६	५।१८	१८।५८	५।१३	१८।४८	५।२१	१९।१९
३०	५।२९	१९।१३	५।३१	१९।१२	४।५८	१८।२१	५।२३	१९।१	४।३८	१८।१५	५।२६	१९।२५	५।३८	१९।२२	५।३१	१९।३६	५।५३	१९।३२	५।३९	१८।५६	५।५	१८।४०	५।४९	१८।३६	६।८	१९।१६	५।५१	१९।१७	५।२०	१८।५९	५।१४	१८।४९	५।२३	१९।१८

❀ स्टैण्डर्ड टाइम के अनुसार भारत के प्रसिद्ध नगरों में सूर्योदयास्त ❀

अंग्रेजी मास तारीख	अलीगढ़ उदय घं.मि.	अलीगढ़ अस्त घं.मि.	आगरा उदय घं.मि.	आगरा अस्त घं.मि.	कलकत्ता उदय घं.मि.	कलकत्ता अस्त घं.मि.	कानपुर उदय घं.मि.	कानपुर अस्त घं.मि.	गोहाटी उदय घं.मि.	गोहाटी अस्त घं.मि.	चण्डीगढ़ उदय घं.मि.	चण्डीगढ़ अस्त घं.मि.
जुलाई ५	५।३१	१९।१३	५।३३	१९।११	५।००	१८।२२	५।२६	१९।१०	४।३९	१८।१५	५।२८	१९।२६
१०	५।३४	१९।१२	५।३५	१९।११	५।२	१८।२२	५।२७	१९।११	४।४१	१८।१५	५।३०	१९।२६
१५	५।३७	१९।११	५।३८	१९।१०	५।४	१८।२१	५।२९	१९।१०	४।४४	१८।१४	५।३३	१९।२४
२०	५।३९	१९।९	५।४०	१९।८	५।६	१८।१९	५।३२	१८।५८	४।४६	१८।१२	५।३६	१९।२२
२५	५।४२	१९।७	५।४२	१९।६	५।८	१८।१८	५।३४	१८।५६	४।४९	१८।१०	५।३९	१९।१९
३०	५।४४	१९।५	५।४५	१९।४	५।१०	१८।१५	५।३६	१८।५४	४।५१	१८।८	५।४२	१९।१६
अगस्त ४	४।४६	१९।२	५।४७	१९।१	५।१२	१८।१३	५।३९	१८।५०	४।५३	१८।५	५।४६	१९।१२
९	५।४९	१८।५९	५।५०	१८।५७	५।१४	१८।१०	५।४२	१८।४६	४।५६	१८।१	५।४९	१९।७
१४	५।५१	१८।५५	५।५२	१८।५३	५।१६	१८।६	५।४४	१८।४३	४।५८	१७।५७	५।५२	१९।२
१९	५।५४	१८।५०	५।५५	१८।४९	५।१८	१८।२	५।४७	१८।३८	५।१	१७।५३	५।५६	१८।५७
२४	५।५७	१८।४५	५।५६	१८।४४	५।२०	१७।५८	५।४९	१८।३३	५।३	१७।४८	५।५९	१८।५१
२९	५।५९	१८।३९	५।५९	१८।३९	५।२१	१७।५४	५।५१	१८।२९	५।५	१७।४३	६।१	१८।४६
सितम्बर ३	६।२	१८।३३	६।२	१८।३२	५।२३	१७।४९	५।५३	१८।२३	५।७	१७।३८	६।४	१८।४०
८	६।४	१८।२८	६।५	१८।२७	५।२४	१७।४४	५।५५	१८।१६	५।९	१७।३३	६।७	१८।३४
१३	६।६	१८।२२	६।६	१८।२२	५।२६	१७।४०	५।५८	१८।१२	५।११	१७।२७	६।१०	१८।२८
१८	६।९	१८।१७	६।९	१८।१७	५।२७	१७।३४	५।५९	१८।६	५।१३	१७।२२	६।१२	१८।२१
२३	६।१०	१८।११	६।११	१८।११	५।२९	१७।२९	६।१	१८।१	५।१५	१७।१६	६।१५	१८।१५
२८	६।१२	१८।६	६।१२	१८।६	५।३०	१७।२५	६।३	१७।५६	५।१७	१७।११	६।१७	१८।९
अक्टूबर ३	६।१५	१८।००	६।१४	१८।००	५।३२	१७।२०	६।५	१७।५१	५।२०	१७।१४	६।२०	१८।१३
८	६।१७	१७।५४	६।१७	१७।५५	५।३४	१७।१५	६।७	१७।४५	५।२२	१७।१०	६।२४	१७।५७
१३	६।२०	१७।४९	६।२०	१७।५०	५।३५	१७।१०	६।१०	१७।४०	५।२४	१६।५५	६।२७	१७।५१
१८	६।२३	१७।४४	६।२२	१७।४४	५।३७	१७।६	६।१२	१७।३५	५।२७	१६।५०	६।३०	१७।४५
२३	६।२७	१७।३९	६।२६	१७।४०	५।४०	१७।२	६।१५	१७।३१	५।३०	१६।४५	६।३४	१७।४०
२८	६।३०	१७।३४	६।२९	१७।३५	५।४२	१६।५९	६।१८	१७।२७	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।३५
नवम्बर २	६।३४	१७।३०	६।३२	१७।३१	५।४५	१६।५६	६।२२	१७।२३	५।३६	१६।३८	६।४१	१७।३१
७	६।३७	१७।२६	६।३६	१७।२८	५।४८	१६।५३	६।२५	१७।२०	५।३९	१६।३४	६।४५	१७।२७
१२	६।४१	१७।२३	६।३९	१७।२५	५।५१	१६।५१	६।२९	१७।१७	५।४३	१६।३२	६।५०	१७।२४
१७	६।४४	१७।२२	६।४३	१७।२३	५।५४	१६।४९	६।३२	१७।१५	५।४६	१६।३०	६।५४	१७।२१
२२	६।४८	१७।२०	६।४७	१७।२२	५।५७	१६।४८	६।३६	१७।१३	५।५०	१६।२८	७।००	१७।१८
२७	६।५२	१७।२०	६।५१	१७।२१	६।१	१६।४८	६।४०	१७।१३	५।५४	१६।२८	७।४	१७।१६
दिसम्बर २	६।५४	१७।१८	६।५३	१७।१९	६।४	१६।४८	६।४४	१७।१२	५।५७	१६।२७	७।८	१७।१५
७	६।५९	१७।१९	६।५७	१७।२१	६।७	१६।४८	६।४८	१७।१२	६।१	१६।२८	७।१२	१७।१६
१२	७।३	१७।२१	७।१	१७।२२	६।१०	१६।५०	६।५१	१७।१३	६।४	१६।२९	७।१६	१७।१७
१७	७।६	१७।२२	७।५	१७।२३	६।१३	१६।५१	६।५४	१७।१५	६।७	१६।३१	७।१९	१७।१९
२२	७।१०	१७।२४	७।८	१७।२४	६।१६	१६।५४	६।५७	१७।१७	६।१०	१६।३२	७।२१	१७।२०
२७	७।११	१७।२७	७।१०	१७।२७	६।१८	१६।५६	६।५९	१७।२०	६।१२	१६।३५	७।२३	१७।२३
३१	७।१२	१७।३०	७।११	१७।३१	६।२०	१६।५८	७।०	१७।२३	६।१४	१६।३८	७।२५	१७।२६

अंग्रेजी मास तारीख	जयपुर उदय घं.मि.	जयपुर अस्त घं.मि.	जम्मूकश्मीर उदय घं.मि.	जम्मूकश्मीर अस्त घं.मि.	जोधपुर उदय घं.मि.	जोधपुर अस्त घं.मि.	नागपुर उदय घं.मि.	नागपुर अस्त घं.मि.	पटना उदय घं.मि.	पटना अस्त घं.मि.	मद्रास उदय घं.मि.	मद्रास अस्त घं.मि.
जुलाई ५	५।४०	१९।२२	५।३३	१९।३६	५।५५	१९।३१	५।४०	१८।५६	५।८	१८।४०	५।५१	१८।३६
१०	५।४२	१९।२१	५।३५	१९।३५	५।५७	१९।३१	५।४२	१८।५६	५।१०	१८।४०	५।५२	१८।३६
१५	५।४५	१९।२०	५।३७	१९।३४	५।५९	१९।३०	५।४४	१८।५५	५।१२	१८।३९	५।५३	१८।३६
२०	५।४८	१९।१८	५।४०	१९।३२	६।१	१९।२९	५।४६	१८।५४	५।१४	१८।३७	५।५५	१८।३६
२५	५।५०	१८।१६	५।४३	१९।२९	६।३	१९।२७	५।४८	१८।५२	५।१६	१८।३६	५।५६	१८।३५
३०	५।५३	१९।१३	५।४७	१९।२६	६।६	१९।२४	५।५०	१८।५०	५।१९	१८।३३	५।५७	१८।३४
अगस्त ४	५।५६	१९।१०	५।५०	१९।२२	६।९	१९।२१	५।५२	१८।४८	५।२१	१८।३०	५।५८	१८।३२
९	५।५८	१९।६	५।५३	१९।१७	६।१२	१९।१८	५।५३	१८।४५	५।२३	१८।२६	५।५९	१८।३०
१४	६।१	१९।२	५।५६	१९।१२	६।१४	१९।१४	५।५५	१८।४२	५।२६	१८।२३	६।००	१८।२८
१९	६।३	१८।५७	६।००	१९।६	६।१६	१९।१०	५।५७	१८।३८	५।२८	१८।१८	६।००	१८।२५
२४	६।५	१८।५३	६।३	१९।१	६।१८	१९।६	५।५८	१८।३४	५।३०	१८।१३	६।१	१८।२२
२९	६।७	१८।४८	६।६	१८।५६	६।२०	१९।१	६।००	१८।३०	५।३२	१८।९	६।१	१८।१९
सितम्बर ३	६।९	१८।४२	६।९	१८।५०	६।२३	१८।५५	६।१	१८।२५	५।३४	१८।१३	६।१	१८।१५
८	६।१२	१८।३७	६।१२	१८।४८	६।२५	१८।४९	६।२	१८।२१	५।३६	१७।५८	६।१	१८।१३
१३	६।१४	१८।३१	६।१५	१८।३७	६।२७	१८।४३	६।३	१८।१६	५।३८	१७।५२	६।१	१८।९
१८	६।१७	१८।२६	६।१८	१८।३०	६।३०	१८।३८	६।५	१८।११	५।४०	१७।४७	६।१	१८।५
२३	६।१८	१८।२०	६।२१	१८।२४	६।३२	१८।३२	६।६	१८।७	५।४१	१७।४२	६।१	१८।२
२८	६।२०	१८।१४	६।२४	१८।१७	६।३४	१८।२७	६।७	१८।२	५।४३	१७।३७	६।२	१७।५८
अक्टूबर ३	६।२३	१८।९	६।२८	१८।११	६।३६	१८।२१	६।९	१७।५७	५।४६	१७।३१	६।२	१७।५५
८	६।२६	१८।४	६।३१	१८।५	६।३८	१८।१५	६।१०	१७।५३	५।४८	१७।२६	६।२	१७।५२
१३	६।२८	१७।५८	६।३४	१७।५९	६।४१	१८।१०	६।१२	१७।४८	५।५०	१७।२१	६।२	१७।४८
१८	६।३१	१७।५३	६।३७	१७।५३	६।४४	१८।५	६।१३	१७।४४	५।५३	१७।१६	६।३	१७।४६
२३	६।३४	१७।४९	६।४१	१७।४८	६।४७	१८।०	६।१६	१७।४१	५।५५	१७।११	६।४	१७।४३
२८	६।३७	१७।४४	६।४५	१७।४३	६।५०	१७।५७	६।१८	१७।३७	५।५९	१७।७	६।५	१७।४१
नवम्बर २	६।४०	१७।४०	६।४९	१७।३८	६।५३	१७।५३	६।२०	१७।३४	६।२	१७।३	६।६	१७।३९
७	६।४३	१७।३७	६।५३	१७।३४	६।५६	१७।५०	६।२३	१७।३२	६।५	१७।०	६।८	१७।३८
१२	६।४७	१७।३४	६।५८	१७।३०	७।०	१७।४७	६।२६	१७।३०	६।८	१६।५८	६।१०	१७।३६
१७	६।५१	१७।३२	७।३	१७।२७	७।४	१७।४५	६।२९	१७।२९	६।११	१६।५६	६।१२	१७।३६
२२	६।५५	१७।३१	७।८	१७।२५	७।७	१७।४२	६।३२	१७।२८	६।१५	१६।५४	६।१४	१७।३६
२७	६।५९	१७।३१	७।१२	१७।२४	७।१०	१७।४२	६।३५	१७।२७	६।१९	१६।५४	६।१७	१७।३६
दिसम्बर २	७।२	१७।३१	७।१६	१७।२४	७।१३	१७।४२	६।३८	१७।२८	६।२३	१६।५३	६।१९	१७।३७
७	७।६	१७।३१	७।२०	१७।२४	७।१७	१७।४३	६।४१	१७।२८	६।२७	१६।५४	६।२२	१७।३८
१२	७।९	१७।३२	७।२३	१७।२५	७।२१	१७।४४	६।४५	१७।३०	६।३०	१६।५५	६।२५	१७।४०
१७	७।१२	१७।३४	७।२६	१७।२६	७।२५	१७।४५	६।४८	१७।३२	६।३३	१६।५७	६।२८	१७।४२
२२	७।१५	१७।३६	७।२९	१७।२८	७।२८	१७।४६	६।५०	१७।३४	६।३५	१६।५९	६।३०	१७।४४
२७	७।१७	१७।३८	७।३१	१७।३१	७।३०	१७।५०	६।५२	१७।३६	६।३८	१७।२	६।३२	१७।४७
३१	७।१९	१७।४०	७।३३	१७।३४	७।३०	१७।५२	६।५३	१७।३८	६।३९	१७।४	६।३४	१७।५०

अंग्रेजी मास तारीख	मुम्बई उदय घं.मि.	मुम्बई अस्त घं.मि.	रतलाम उदय घं.मि.	रतलाम अस्त घं.मि.	लखनऊ उ. घं.मि.	लखनऊ अस्त घं.मि.	वाराणसी उदय घं.मि.	वाराणसी अस्त घं.मि.	हरिद्वार उदय घं.मि.	हरिद्वार अस्त घं.मि.
जुलाई ५	६।१०	१९।१९	५।५३	१९।१९	५।२२	१८।५१	५।२५	[illegible]	५।२७	१९।२७
१०	६।११	१९।१९	५।५५	१९।१९	५।२३	१८।५१	५।२८	[illegible]	५।३०	१९।२६
१५	६।१३	१९।१९	५।५७	१९।१८	५।२६	१८।५०	५।२०	[illegible]	५।३२	१९।२५
२०	६।१५	१९।१९	५।५९	१९।१७	५।२८	१८।४९	५।२३	[illegible]	५।३५	१९।२३
२५	६।१७	१९।१८	६।१	१९।१५	५।३०	१८।४८	५।२५	[illegible]	५।३८	१९।२०
३०	६।१८	१९।१७	६।३	१९।१३	५।३३	१८।४७	५।२७	[illegible]	५।४१	१९।१७
अगस्त ४	६।२०	१९।१०	६।५	१९।८	५।३५	१८।४५	५।३०	१८।३८	५।४४	१९।१४
९	६।२२	१९।७	६।७	१९।४	५।३८	१८।४२	५।३२	१८।३५	५।४७	१९।१२
१४	६।२३	१९।५	६।१०	१९।१	५।४०	१८।३९	५।३४	१८।३२	५।४९	१८।५७
१९	६।२४	१९।१	६।११	१८।५७	५।४३	१८।३७	५।३६	१८।२७	५।५२	१८।५२
२४	६।२६	१८।५७	६।१३	१८।५३	५।४५	१८।३३	५।३९	१८।२२	५।५५	१८।४७
२९	६।२७	१८।५३	६।१५	१८।४८	५।४८	१८।२९	५।४१	१८।१९	५।५७	१८।४२
सितम्बर ३	६।२७	१८।४९	६।१६	१८।४३	५।५०	१८।२०	५।४३	१८।२२	६।०	१८।३३
८	६।२८	१८।४५	६।१८	१८।३८	५।५२	१८।१५	५।४४	१८।१७	६।२	१८।२७
१३	६।२९	१८।४१	६।१९	१८।३३	५।५४	१८।१०	५।४६	१७।५२	६।५	१८।२३
१८	६।३०	१८।३६	६।२१	१८।२८	५।५६	१८।१	५।४८	१७।५६	६।८	१८।१८
२३	६।३१	१८।३२	६।२२	१८।२३	५।५९	१७।५९	५।५०	१७।५१	६।११	१८।२३
२८	६।३२	१८।२७	६।२४	१८।१८	६।००	१७।५३	५।५२	१७।४६	६।१३	१८।१५
अक्टूबर ३	६।३३	१८।२३	६।२६	१८।१२	६।३	१७।४८	५।५४	१७।४०	६।२४	१७।५१
८	६।३४	१८।१९	६।२७	१८।८	६।५	१७।४५	५।५६	१७।३५	६।२८	१७।४४
१३	६।३५	१८।१५	६।३०	१८।४	६।८	१७।३७	५।५९	१७।३०	६।२०	१७।४८
१८	६।३७	१८।१२	६।३२	१७।५९	६।१०	१७।३२	६।१	१७।२५	६।२५	१७।४२
२३	६।३९	१८।८	६।३४	१७।५५	६।१४	१७।२८	६।४	१७।२२	६।२९	१७।३६
२८	६।४०	१८।५	६।३६	१७।५१	६।१७	१७।२३	६।७	१७।१७	६।३२	१७।३२
नवम्बर २	६।४२	१८।२	६।३९	१७।४८	६।२१	१७।१९	६।१०	१७।१४	६।३६	१७।२८
७	६।४५	१८।००	६।४२	१७।४४	६।२४	१७।१५	६।१३	१७।१०	६।४०	१७।२४
१२	६।४७	१७।५८	६।४५	१७।४२	६।२८	१७।१२	६।१६	१७।८	६।४३	१७।२१
१७	६।५०	१७।५७	६।४८	१७।४२	६।३१	१७।१२	६।२०	१७।६	६।४७	१७।१९
२२	६।५३	१७।५७	६।५२	१७।४०	६।३५	१७।९	६।२३	१७।५	६।५१	१७।१७
२७	६।५६	१७।५७	६।५५	१७।३९	६।३८	१७।७	६।२७	१७।४	६।५५	१७।१५
दिसम्बर २	६।५९	१७।५७	६।५९	१७।३९	६।४२	१७।८	६।३१	१७।४	६।५८	१७।१४
७	७।२	१७।५८	७।२	१७।४०	६।४५	१७।९	६।३४	१७।४	७।३	१७।१५
१२	७।५	१७।५९	७।५	१७।४०	६।४९	१७।११	६।३७	१७।५	७।८	१७।१६
१७	७।८	१८।१	७।८	१७।४२	६।५२	१७।१२	६।४१	१७।७	७।११	१७।१७
२२	७।११	१८।३	७।११	१७।४४	६।५४	१७।१४	६।४३	१७।९	७।१५	१७।१९
२७	७।१३	१८।६	७।१३	१७।४७	६।५७	१७।१७	६।४५	१७।१२	७।१७	१७।२१
३१	७।१४	१८।८	७।१४	१७।५०	६।५८	१७।२०	६।४७	१७।१४	७।१७	१७।२५

सूर्योदयास्तज्ञानम्- भारत के प्रसिद्ध नगरो का सूर्योदयास्त ५-५ दिन के अन्तर से छपा है। मध्यवर्ती तारीखों का अनुपात से जान लें। पूर्वापर ऋण-धन अन्तर एक देशान्तारेखा बराबर ४ मि. के हिसाब सेसंस्कार करने पर इच्छित स्थान का सूर्योदयास्त सहज बना सकते हैं।

उदाहरण-जयपुर देशान्तर ७५।५० और मेड़तासिटी ७४।१३ पर बसा है। दोनों का अन्तर १।४७X४ बराबर ७ मि. ८ सै. हुए। मेड़तासिटी पश्चिम में होने के कारण जयपुर से यहाँ ७ मि. ८ सै. बाद सूर्योदयास्त होगा। नोट:-सूर्योदयास्त बकी भुक्त संस्कार रहित है।

(घंटा) कलाक अथवा अंश, मिनट अथवा कला:

❁ लाघवांक (LOGARITHAM) कोष्ठक ❁

मि.	क: ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३क	मि.
००	—	१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	००
०१	३.१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७९५	३३८२	३००४	२६५७	२६३६	२०३६	१७५६	१८९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७७	०३७५	०१८२	०१
०२	२.८५७३	१.३६३०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९७	५३३०	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	०२
०३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	४२३६	३७८०	३३६८	२९९२	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	०३
०४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२	२९८६	२६४०	२३२०	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	०४
०५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१४	८९१२	७६९२	६७४१	५९६१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	०५
०६	२.३८०२	१.३३८८	१.०५८०	८८८८	७६७४	८७२६	५९४९	५२८९	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	०६
०७	२.३१३२	१.३३२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६६	०५५६	०३५५	०१६३	०७
०८	२.२५५३	१.३२५८	१.०५११	८८४२	७६३९	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	०८
०९	२.२०४१	१.३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९०	४१८८	३७३७	३३२९	२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४६०	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	०९
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३०	३३२३	२९५०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५३	१०
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२	३७२३	३३१६	२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	८७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०	२९३८	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६६	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	०९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४	१३
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५३५	६६१४	५८५५	५२०९	४६४६	४१४८	३७०२	३२९७	२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४२	०५३२	०३३२	०१४१	१४
१५	१.९८२३	१.२८३३	१.०२८०	८६८३	७५१८	६६००	५८४३	५१९९	४६३८	४१४१	३६९५	३२९१	२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११८९	०९५८	०७३८	०५२९	०३२९	०१३८	१५
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८५	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	३२७८	२९०९	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	८६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	४६११	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४१०९	३६६७	३२६५	२८९७	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२५	१९
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४५९४	४१०२	३६६०	३२५८	२८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५११	०३१३	०१२२	२०
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१७	०५०८	०३०९	०११९	२१
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२५४२	२२२९	१९३६	१६६६३	१४०५	११६२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.००३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७	२८६२	२६२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९३	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२६२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१८	६४३८	५७०६	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०२	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१३८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८५	०२८७	००९८	२८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८६	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	४०३२	३५९७	३२०१	२८३९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०५	०६८८	०४८१	०२८३	००९४	२९
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२६	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
३२	१.६५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१९	१३६३	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	११११	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३९९४	३५६३	३१७०	२८१०	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७०	०४६४	०२६७	००७९	३४

(घंटा) कलाक अथवा अंश, मिनट अथवा कला:

❁ लाघवांक (LOGARITHAM) कोष्ठक ❁

मि.	क. ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३क	मि.
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३४१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
३६	१.६०२०	१.१७६१	०.९६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५७	२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६४	०४५८	०२६१	००७३	३६
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	९२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६८	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३९
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९२	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१	४०
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४६४७	४४१५	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२७	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२३	१०८४	०८५७	०६४२	०४३७	०२४२	००५५	४२
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०१	३११४	२७५८	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३५	००४८	४४
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६२	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४६	०६३२	०४२८	०२३२	००४५	४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२९	०४२४	०२२९	००४२	४६
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२१	०४१८	०२२३	००३६	४८
४९	१.४६८२	१.१२०९	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१	२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१४	०४११	०२१६	००३०	५०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२४	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३४	४८४४	४३२४	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३७	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८	५४
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
५७	१.४०२५	१.०९०२	०.९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	२३५६	२०५६	१७७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

तत्काल ग्रह स्पष्ट करने की विधि :- श्री राजधानी पंचांग मे प्रतिदिन सुबह घं.५ मि. ३० बजे के लिए सूर्य चन्द्रादि सभी ग्रह रा. अं. क. वि. पर्यन्त स्पष्ट करके छाप दिये जाते हैं। जिस समय के लिए ग्रह स्पष्ट करने हों, उस समय में से ५ घं. ३० मि. घटा दें; शेष घं. मि. चालन धन होगा। चालन तुल्य लाघवांक कोष्ठक से दशमलव सहित लाघवांक प्राप्त करें। पुन: ग्रह गति के अनुसार लाघवांक लेकर पूर्व प्राप्त लाघवांक में जोड़ दें। कुल योग को लाघवांक कोष्ठक में देखे जहाँ समानांक मिले, उनके ऊपर कला व बाई ओर विकलादि प्राप्त फल को प्रात:कालीन स्पष्ट ग्रह में जोड़ने से और यदि वक्री ग्रह हो तो घटाने से तत्काल ग्रह स्पष्ट हो जायेगा। स्मरण रहे-अधिक गति से भ्रमण करने वाले (चन्द्र, बुध शुक्र) ग्रहों का चालन तुल्य फल अं. क. वि. भी हो सकता है। युक्तियुक्त विचार कर काम लेना चाहिए।

उदाहरण- १ अप्रैल सन् १९९८ ई. मे दिन के २ बजकर ५७ मिनट मे पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है तो १४ घं. ५७ मि. से ५ घं. ३० मि. घटाये शेष ९ घं. २७ मि. चालन बना। चालन तुल्य दशमलव सहित .४०४८ लाघवांक प्राप्त किये।

१ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट १।११।११।७ को २ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट १।२५।१५।० में से घटाया तो अंशादि १४।३।५३ गति सिद्धि हुई, जिसके अनुसार अनुपात से लाघवांक .२३२१ ग्रहण करके पूर्व प्राप्त लाघवांक मे जोड़ा तो कुल योग ६३६९ हुआ। कुल योग को पुन: लाघवांक कोष्ठक में देखा तो ५ अं. के नीचे ३२ क. के सामने ६३७२ लिखा मिला और ३३ क. के सामने .६३५९ है। अनुपात से ५ अं. ३२ क. १४ वि. ग्रहण करके १ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट १।११।११।७ मे जोड़ दिया तो १।१६।४३।२१ यह तत्काल चन्द्रस्पष्ट हुआ। यानी १४ घं. ५७ मि, बचे का चन्द्रमा स्पष्ट हो गया।

❋ अष्टकवर्गचक्रमिदंग्रहाणांरेखाबलाबलम् ❋

रवेरष्टकवर्ग:४८

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्रस्याष्टकवर्ग:४९

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

भौमस्याष्टकवर्ग: ३९

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

बुधाष्टकवर्ग: ५४

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

गुरोरष्टकवर्ग: ५६

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

शुक्राष्टकवर्ग: ५२

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	११				१०		११
	१२				११		

शनेरष्टकवर्ग: ३९

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

लग्नाष्टकवर्ग: ४९

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११	१२	११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

निसर्गमैत्रीचक्रम्

सू.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्र.
च. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु.	सू. च. मं.	बु. श.	बु. शु.	मित्राणि
बु.	शु. गु. म. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	म. गु.	बु.	समा:
शु. श.		बु.	चं.	बु. शु.	सू. च.	सू. चं. मं.	शत्रवः

अवस्थाचक्र

विषमे.	समे.
मृता. ३०	बाल.
वृद्धा. २४	कुमार
युवा. १८	युवा.
कुमार. १२	वृद्धा
बाल. ६	मृता.

अवस्थाजाग्रत

विषमे	समे
जाग्रत१०	सुसुप्त
सुप्त.२०	सुप्त.
सुसुप्त.३०	जाग्रत

तत्कालमैत्रीचक्र

मित्र	शत्रु
२	१
३	५
४	६
१०	७
११	८
१२	९

दिनकेसहम ऊपर से और रात्रि के सहम नीचे से करो.

सहमा	एतऊ.	एतेभ्य	एतयुक्त	सहमा.	एहीनक	इनमक.	एतेयु
पुण्यं	सुर्य	चंद्रात्	तनु	प्रसूति	बुधं	गुरुत:	तनु
गुरु:	चंद्र	सूर्यात्	तनु	जाड्य	शनि	भौमात्	बुध
यश:	पुण्यं	जीवात्	तनु	जलप	चंद्रं	शने:	लग्न
मित्र	पुण्यं	गरुस.	शुक्र	शत्रु	शनि	भौमात्	लग्न
महा.	भौम	पुण्या	तनु	दरिद्र	बुधं	पुण्यात्	बुध
आशा	शुक्र	शनित:	तनु	शास्त्र	शनि	गुरुत:	बुध
राज	सूर्य	शने:	तनु	बंदक	बुधं	चन्द्रात्	तनु
माता	शुक्रं	चंद्रात्	तनु	वंधन	शनि	पुण्यात्	तनु
उपाय	गुरुं	शने:	तनु	अश्व	सूर्य	पुण्यात्	लाभ
कर्म	बुधं	भौम	तनु	अन्यक	शनि	चंद्रात्	तनु
कली	भौम	गुरुत:	तनु	बुद्धि	सूर्य	जीवात्	तनु
चतुष्प.	६भाव	१२भा.	तनु	अंग	शनि	भौमात्	तनु
रात्रौ	शोधक	शोध्य	विमे	रात्रिमे	शोधक	शोध्य	

दिनरात्रिमे इकसार सहम.

सहमा.	एहीनक	इनप	एयुक्त.
भ्रातृ	शनि	गुरुत:	लग्न
पुत्र	चंद्रं	गुरुत:	लग्न
रोग	चन्द्रं	तनुत:	तनु
बंधु	चन्द्रं	बुधात्	तनु
मृत्यु	चन्द्रं	८भावा	शनि
यात्रा	धनेशं	धर्मात्	तनु
धन	धनेशं	धनात्	तनु
ऽन्यस्त्री	सूर्य्यं	शुक्रात्	तनु
वणिक्	बुधं	चन्द्रात्	तनु
विवाह	शनि	शुक्रात्	तनु
श्रद्धा	भौमं	शुक्रात्	तनु
प्रीति	पुण्यं	ज्ञानत:	तनु
व्यापार	बुधं	भौमात्	तनु
कन्या	चन्द्रं	शुक्रात्	तनु
संताप	चन्द्रं	शनित:	६ भा.
जलपा	शनि	कर्कार्द्ध:	तनु
गज	गुरु:	चंद्रत:	तनु
घातक	पुण्यं	गुरुत:	तनु

सहमफलम्-गुरुसहम के समानहीं ज्ञान-विद्याज्ञाती होते है। ऐसे ही यश: के समान बल देह और महात्म के सम शौर्य धैर्य माता के समान अंबु जीवित के समान उपाय विवाह समस्त्री. कलीसोही क्षमायात्रा के समान परदेशमार्ग होते है, और शोध्य से शोधक तक लग्न बीच मे नही आवे तो सहममे १ राशि और जोडदेनी अन्यथा नही॥

ग्रहो का भाग्योदयकालांश- रवि का २२ से २४ तक। चंद्र का २४ से २५ वर्ष तक। मंगल का २८ से ३२ वर्ष तक। बुध का ३२ से ३६ वर्ष तक। गुरु का १६ से २२ वर्ष तक। शुक्र का २५ से २८ वर्ष तक। शनि का ३६ से ४२ वर्ष तक तथा राहु ४२ से ४८ वर्ष तक और केतु ४८ से ५४ वर्ष तक प्रारब्ध विकासक होता है।

राहु का दोषनाशक बुध, राहु व बुध का दोषनाशक शनि और राहु बुध शनि इन तीनो का दोषनाशक मंगल। राहु, बुध, शनि, मंगल इन चारो का दोष नाशक शुक्र है। शु. रा. बु. श. म. शु. इन पांचो का दोषनाशक गुरु है। रा. म. बु. गु. श. शु. इन ६ कें दोष निवारण मे चन्द्र तथा सभी ग्रहो का दोषनाश सूर्य के बलवान होने पर समझे।

कष्ट:स्यादेकरेखायांद्वाभ्यामर्थक्षयो भवेत्। त्रिभि क्लेश विजाजीयाच्चतुर्भिस्समतांवदेत्॥ पंचभिश्च वदेत्सौख्यंषट्भिश्चैवधनागम:। सप्तभि:परमानंदमष्टभिस्सर्वसंपदाम्॥

टीका-जिस ग्रहका बल देखना हो उसकी रेखा जन्मकुंडली लिखके लगानी, फिर विचारणीयराशि मे ग्रह ने कितने रेखा पाया है, यह देखना होता है, यदि १ से ३ तक पाया तो निर्बली ग्रह हुआ, ४ पाया तो सम्, ५ से ८ पाया तो बली, ऐसे ही विचार विवाह जनेऊ आदि कार्यों मे करना। सब ग्रहों की रेखा एक जगह करने से आयु का निर्णय भी ठीक हो जाता है। जैसे- सूर्याष्टक वर्ग मे चन्द्रमा जिस स्थान पर बैठा हो, उससे तीसरे, छटे, दसवे और ग्यारहवे भाव मे शुभ फल देता है। शेष स्थानो मे होने पर अशुभ फल देता है। विशेष बृहत्पाराशरहोराशास्त्र मे देखें।

पंचधामैत्रीसप्तकवर्गफलम्

१ सप्तकवर्ग मे स्वगृहीका.	३०	०	०
२ मित्रमित्रको अतिमित्रताको	२२	३०	०
३ मित्रसमको मित्रहोयताको	१५	०	०
४ मित्रशत्रुकोसम होयताको	७	३०	०
५ समशत्रुका शत्रु होयताको	३	४५	०
६ शत्रुशत्रुको अतिशत्रु हो.	१	५२	३०

अष्टकवर्ग विचार:-

आदौ अष्टकवर्ग: शोध्योविज्ञै: तदप्राप्तौ। गोचरबलं विचिन्त्यं तदभावे वामवेधजं वीर्यम्॥ (मरीचि)

अष्टकवर्गे शुभै: श्रीमान् कर्म कुर्यात् नभश्चरै:। गोचरस्थै: तदप्राप्तौ, तदप्राप्तौ च वेधगै:॥ (संहितासार)

अष्टकवर्ग विचार:-

झष-चाप-कुलीस्थौ जीवोऽप्यशुभगोचर:। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (वृहस्पति)

अष्टकवर्ग विशुद्धेषु गुरु-शीतांशु-भानुष। व्रतोद्वाहौ च कर्तव्यौ गोचरेण कदापि न॥ (राजमार्त्तण्ड)

दीप्ताद्यवस्थाचक्रम्

ग्रह	अवस्था
उच्चस्थ	दिप्ताव १
स्वमे	स्वस्थ: २
ऽतिमित्रे	मुदित: ३
मित्रमे	शांत: ४
समभे	दीन: ५
शत्रुभे	दु:खित:६
सपापे	विकल: ७
खलगृहे	खल: ८
सार्के	कोपी ९

बालाद्यवस्थाचक्र

विषमे	अंश	समे
बाला	६	मृता
कुमारा	१२	वृद्धा
युवा	१८	युवा
वृद्धा	२४	कुमारा
मृताऽ	३०	बाला

॥ग्रहाणां दीप्ताद्यवस्था फलम्॥

दीप्तस्य-
पाकेप्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साह-शौर्यंधनवाहनेच। स्त्रीपुत्रलाभंसुखबंधु-पूज्यंक्षितीश्वरान्मानमुपैतिविद्याम्॥१॥

स्वस्थस्य-
स्वस्थस्यखेटस्यदशाविपाकेस्वस्थोनृपात्लब्धधनादिसौख्यम्। विद्यांयश: प्रीतिमहत्वमाराद्धर्थभूम्यात्मजधर्ममेति॥२॥

मुदितस्य-
मुदान्वितस्यापिदशाविपाकेवस्त्रादिभूगंधसुतार्थधैर्यम्। पुराणधर्मश्रवणादिमानदानदियानाम्बरभूषणाप्तिम्॥३॥

शांतस्य-
दशाविपाकेसुखधैर्यमेति शांतस्यभूपुत्रकलत्रयानम्। विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रैबह्वर्थदिशाधिपपूज्यतांच॥४॥

दीनस्य-
स्थानच्युतिर्बंधुविरोधतांचदीनस्यखेटस्यदशाविपाके। जीवत्यसौकुत्सितहीनवृत्यात्यक्तोजनैरोगनिपीड़ितश्च॥५॥

दुखितस्य-
दु:खान्वितस्यापिदशाविपाकेनानाविधैदु:खमुपैतिनूनै। विदेशगोबंधुजनैर्विहीनश्चौराग्निभूपैर्भयमातनोति॥६॥

विकलस्य-
वैकल्यखेटस्यदशाविपाकेवैकल्यामायातिमनाविकारम्। पित्रादिकानांमरणंविशेषात्स्त्रीपुत्रयानाम्बरचौरपीड़ाम्॥७॥

खलस्य-
दशाविपाकेकलहंवियोगंखलस्यखेटस्यपितुर्वियोगम्। वृद्धिंरिपूणांधनभूमिनाशमुपैतिनित्यंस्वजनैश्चवैरम्॥८॥

कोपिन:-
कोपान्वितस्यापिदशाविपाकेपापासमायांतिबहुविकारै। विद्यांयश:स्त्रीधनभूमिनाशंमूत्रादिकृच्छंत्वथनेत्ररोगम्॥९॥

❋ होरादिषट्वर्ग ज्ञानार्थचक्रम् ❋

अंश →	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला →	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
विकला	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
मेष १ होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्का	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
सप्त	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वाद	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
त्रिंशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृष २ होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्का	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
सप्त	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वाद	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
त्रिंशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
मिथुन ३ होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्का	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
सप्त	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वाद	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
त्रिंशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कर्क ४ होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्का	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
सप्त	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वाद	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
त्रिंशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
सिंह ५ होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्का	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
सप्त	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वाद	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
त्रिंशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कन्या ६ होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्का	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
सप्त	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वाद	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
त्रिंशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

अंश →	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
कला →	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
विकला	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
तुला ७ होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्का	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
सप्त	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वाद	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
त्रिंशां	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृश्चिक ८ होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्का	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
सप्त	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वाद	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
त्रिंशां	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
धनु ९ होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्का	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
सप्त	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
द्वाद	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
त्रिंशां	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मकर १० होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्का	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
सप्त	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
द्वाद	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
त्रिंशां	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
कुम्भ ११ होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
द्रेष्का	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
सप्त	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
द्वाद	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
त्रिंशां	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मीन १२ होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
द्रेष्का	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
सप्त	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
द्वाद	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
त्रिंशां	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्ग जानने की विधि- अभीष्ट लग्न के सामने लग्नस्पष्टांकों के नीचे क्रमशः होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश जो जो लग्नांक मिले, उन्हें क्रमशः होरादि कहें, कुण्डलियों के प्रथम भाव (लग्न) में रखकर कुण्डलियाँ बना लें। उदाहरण- पूर्वकृत् लग्न स्पष्ट ४।०।२३।१७ है। टेबिल सिंह लग्न ० अंश के नीचे क्रमशः होरादि लग्न ५।५।५।१।५।१ मिले, यही होरादि कुण्डलियों के लग्न सिद्ध हुए अर्थात् होरा लग्न सिंह, द्रेष्काण सिंह, सप्तमांश सिंह, नवमांश मेष, द्वादशांश सिंह और त्रिंशांश मेष लग्न मिला।

होरादि कुण्डलियों में ग्रह रखने की विधि- लाघवांक कोष्ठक के नीचे चन्द्रस्पष्ट १।१६।४३।२१ वृष राशि के १६ अंश ४३ कला के नीचे षट्वर्ग ज्ञानार्थ चक्र में ५।६।११।३।८।१२ अंक मिले। होरा कुण्डलियों में चन्द्र इन्हीं लग्नांक (राशियों में लगाना) लगेगा। अर्थात् होरा कुण्डली में चन्द्र सिंह में होगा तो द्रेष्काण में कन्या पर इसी प्रकार सप्तमांश कुण्डली में चन्द्र कुम्भ, नवमांश में मिथुन द्वादशांश में वृश्चिक और त्रिंशांश चक्र में मीन राशि लग्नांक पर लगाना होगा।

षट्वर्ग विचार और कुण्डली रचना

जन्म कुण्डली का विस्तारसहित फल जानने के लिए तनादि द्वादशभाव स्पष्ट करके चलित कुण्डली बनाई जाती है; तदनुसार भावविहित ग्रह योगायोग का अति सूक्ष्म विचार किया जाता है। इसके बाद फलित की अधिक गहराई में जानेके लिये होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश लग्नानुसार-पृथक्-पृथक् छह कुण्डलियाँ बनाकर जातकके जीवनमें होने वाली शुभाशुभ घटना (बनने वाली अच्छी-बुरी परिस्थिति) का सहज ही ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है। : ७१ पृष्ठ पर षट्वर्गज्ञानार्थचक्र दिया गया है, जिसकी सहायता से घण्टों के काम को मिनटोंमें करके लाभ कमा सकते हैं। पाठकों की विशेष जानकारी हेतु होरा, द्रेष्काण, सप्तमांशादि चक्र प्रस्तुत हैं।

❊ होराज्ञानम् ❊

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	१५
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	३०

❊ द्रेष्काणज्ञानम् ❊

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	२०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	३०

❊ सप्तमांशज्ञानम् ❊

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अंश	
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	४	१७
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८	३४
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२	५१
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७	८
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१	२५
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५	४२
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३०	०

❊ नवमांशज्ञानम् ❊

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	अं.	क.
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३	२०
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६	४०
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०	०
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३	२०
५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६	४०
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०	०
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३	२०
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६	४०
९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०	०

❊ द्वादशांशज्ञानम् ❊

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	अं.	क.
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२	३०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	५	०
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	७	३०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	१०	०
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१२	३०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१५	०
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१७	३०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	२०	०
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२२	३०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	२५	०
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२७	३०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	३०	०

विषमेत्रिशांशा:

अंश	मेष	मिथुन	सिंह	तुला	धनु	कुम्भ
५	१	१	१	१	१	१
१०	११	११	११	११	११	११
१८	९	९	९	९	९	९
२५	३	३	३	३	३	३
३०	७	७	७	७	७	७

समेत्रिशांशा:

वृष	कर्क	कन्या	वृश्चिक	मकर	मीन	अंश
२	२	२	२	२	२	५
६	६	६	६	६	६	१२
१२	१२	१२	१२	१२	१२	२०
१०	१०	१०	१०	१०	१०	२५
८	८	८	८	८	८	३०

❊ षट्वर्गफलम् ❊

होराकुण्डली- होरा लग्न सिंहमें सूर्य स्थितिहो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, साथमें गुरू-शुक्र हो तो सम्पत्तिवान, सुखी, मान्य, उच्चपदारूढ़शासक, शील सम्पन्न, नेतृत्वकर्त्ता होता है। होरेश पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो नीचप्रकृति, दुष्ट, प्रतिकूल आचरण प्रिय, कार्यकेप्रति लापरवाह होता है। यदि चन्द्रराशि कर्क, होरालग्न हो और उसमें चन्द्र स्थिति हो तो जातक शान्तस्वभाव, मातृभक्त, जल के सम्पर्कमें आने वाले कार्योंमें रूचि रखने वाला होता है। चन्द्र के साथ शुभ ग्रह हो तो साधुस्वभाव, शीलवान, धार्मिक, धनवान, एवं सुखी होता है। पाप ग्रह हो तो प्रतिकूल जानना चाहिए।

द्रेष्काणकुण्डली- से जातक के सहोदर भाई-बहनो के दु:ख-सुख का चिन्तन किया जाता है। द्रेष्काण लग्न का स्वामीग्रह त्रकभाव में पापपीड़ित हो और जन्मकुण्डलीके तीसरे भाव का स्वामी ६।८।१२ स्थान में हो तो जातक को भाई-बहिनों का सुख नही मिलता, अथवा वह उनसे दुखी रहता है या स्वयं उन्हें दु:खी करता रहता है। विस्तृत विवरण जातक ग्रन्थों में देखें।

सप्तमांशकुण्डली- से सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुषग्रह हो तो जातक को पुत्र, स्त्रीग्रह हो तो कन्याएं अधिक होती है। लग्न का स्वामी पापपीड़ित, पापग्रह की राशिमें हो तो सन्तति नीचकर्म करने वाली होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा युक्त हो तो सन्तति शुभाचरणप्रिय होती है। यदि लग्नेश भी छठे, आठवें भावमें पापपीड़ित हो तो जातक सन्तान हीन होता है।

नवमांशकुण्डली- का लग्नेश मंगल हो तो जातक की स्त्री क्रूर, कुलटा, लड़ाकू होती है। सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतलस्वभाव, गौरवर्ण, मिलनसार प्रकृति की और बुध से कलाप्रवीण, सुन्दर, चतुर, ज्ञानवान होती है। गुरु नवांश पात हो तो सुशीला धर्माचरण प्रिय होती है। शुक्र हो तो जातककी स्त्री श्रृंगारप्रिय, विलासी, शनि हो तो क्रूरस्वभाव वाली, कुलविरुद्ध आचरणप्रिय, नीच जातमन होती है। राहु व केतु से दुराचारिणी जाननी चाहिए। लग्नेश स्वराशिस्थ केन्द्र, त्रिकोणमें होने पर पूर्ण सुख मिलता है। भाग्येशके साथ २।११ वें भावमें लग्नेश उच्चका हो तो जातकको स्त्रियों से व ससुराल पक्ष से विशेष धन मिलता है। नवांशपति पापयुक्त व दृष्ट ६।८।१२ हो तो स्त्रीका सुख नही होता। पापग्रहों की संख्या तुल्य स्त्रियों से परेशानी होती है।

द्वादशांशकुण्डली- का लग्नेश शुभग्रह हो तो जातकके माता-पिता शुभाचरणयुक्त एवं पापग्रह हों तो पापयुक्त आचरणप्रिय जानना। द्वादशांशलग्न का स्वामी पुरुषग्रह स्वगृही, मित्रक्षेत्री या उच्चराशिस्थ १।४।५।७। ९।१०वें स्थान में स्थितिहो तो माता-पिता का पूर्ण सुख, प्रतिकूलहोनेसे जातकको सुख न के बराबर प्राप्त होता है।

त्रिशांशकुण्डली- से जीवन में होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का विचार किया जाता है। त्रिशांश लग्न का स्वामी पापयुक्त ६।८।१२वें भावमें हो तो जातकका जीवनान्त ग्रहानुकूल वस्तुविशेष के सम्पर्क से होता है। यदि सूर्य हो तो उच्चस्थान से गिरकर, चन्द्र हो तो जल में, मंगल से शस्त्र, शनि से वाहन, गुरु से वायु, शुक्र से विलासिता, बुध से व्यापारिक झन्झट एवं राहू केतू के सम्पर्क में होने से विषादि अपमृत्यु जाननी चाहिए। युक्तियुक्त सभी विषयोंको विचारकर फल कहना चाहिए।

फलंस्त्रीपुन्सयोस्तुल्यं ....

❋ अथ सूर्यादिग्रहाणां विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम् ❋

सूर्य दशा वर्ष ६ कृतिका उफा.उषा. अंतरदशा				जोड़			चन्द्र दशा वर्ष १० रोहिणी हस्त श्रवण अंतरदशा				जोड़			भौम दशा वर्ष ७ मृग.चित्रा धनिष्ठा अंतरदशा				जोड़		
ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.
सू	०	३	१८	०	३	१८	चं	०	१०	०	०	१०	०	मं	०	४	२७	०	४	२७
चं	०	६	०	०	९	१८	मं	०	७	०	१	५	०	रा	१	०	१८	१	५	१५
मं	०	४	६	१	१	२४	रा	१	६	०	२	११	०	बृ	०	११	६	२	४	२१
रा	०	१०	२४	२	०	१८	बृ	१	४	०	४	३	०	श	१	१	९	३	६	०
बृ	०	९	१८	२	१०	६	श	१	७	०	५	१०	०	बु	०	११	२७	४	५	२७
श	०	११	१२	३	९	१८	बु	१	५	०	७	३	०	के	०	४	२७	४	१०	२४
बु	०	१०	६	४	७	२४	के	०	७	०	७	१०	०	शु	१	२	०	६	०	२४
के	०	४	६	५	०	०	शु	१	८	०	९	६	०	सू	०	४	६	६	५	०
शु	१	०	०	६	०	०	सू	०	६	०	१०	०	०	चं	०	७	०	७	०	०

राहु दशा वर्ष १८ आर्द्रा स्वाती शत.. अंतरदशा				जोड़			गुरु दशा वर्ष १६ पुन.विशा. पू.भा. अंतरदशा				जोड़			शनि दशा वर्ष १९ पुष्य.अनु. उ.भा. अंतरदशा				जोड़		
ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	२	८	१२	बृ	२	१	१८	२	१	१८	श	३	०	३	३	०	३
बृ	२	४	२४	५	१	६	श	२	६	१२	४	८	०	बु	२	८	९	५	८	१२
श	२	१०	६	७	११	१२	बु	२	३	६	६	११	६	के	१	१	९	६	९	२१
बु	२	६	१८	१०	६	०	के	०	११	६	७	१०	१२	शु	३	२	०	९	११	२१
के	१	०	१८	११	६	१८	शु	२	८	०	१०	६	१२	सू	०	११	१२	१०	११	३
शु	३	०	०	१४	६	१८	सू	०	९	१८	११	४	०	चं	१	७	०	१२	६	३
सू	०	१०	२४	१५	५	१२	चं	१	४	०	१२	८	०	मं	१	१	९	१३	७	१२
चं	१	६	०	१६	११	१२	मं	०	११	६	१३	७	६	रा	२	१०	६	१६	५	१८
मं	१	०	१८	१८	०	०	रा	२	४	२४	१६	०	०	बृ	२	६	१२	१९	०	०

बुध दशा वर्ष १७ आश्ले.ज्ये. रेवती अंतरदशा				जोड़			केतु दशा वर्ष ७ मघा मूल अश्वि. अंतरदशा				जोड़			शुक्र दशा वर्ष २० पू.फा.पू.षा. भर. अंतरदशा				जोड़		
ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.	ग्र.	व.	मा.	दि.	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	२	४	२७	के	०	४	२७	०	४	२७	शु	३	४	०	३	४	०
के	०	११	२७	३	४	२४	शु	१	२	०	१	६	२७	सू	१	०	०	४	४	०
शु	२	१०	०	६	२	२४	सू	०	४	६	१	११	३	चं	१	८	०	६	०	०
सू	०	१०	६	७	१	०	चं	०	७	०	२	६	३	मं	१	२	०	७	२	०
चं	१	५	०	८	६	०	मं	०	४	२७	२	११	०	रा	३	०	०	१०	२	०
मं	०	११	२७	९	५	२७	रा	१	०	१८	३	११	१८	बृ	२	८	०	१२	१०	०
रा	२	६	१८	१२	०	१५	बृ	०	११	६	४	१०	२४	श	३	२	०	१६	०	०
बृ	२	३	६	१४	३	२१	श	१	१	९	६	०	३	बु	२	१०	०	१८	१०	०
श	२	८	९	१७	०	०	बु	०	११	२७	७	०	०	के	१	२	०	२०	०	०

विंशोत्तरीदशा परिलेख-महर्षि पराशरजीके अनुसार ओसतन मनुष्यमायु १२० वर्ष को सूर्यादि नवग्रहोंमें विभक्त किया गया है। जैसाकि उपरोक्त चक्रमें दर्शाया गया है। जन्म नक्षत्रानुसार शुभाशुभ दशाओ का उदय ही प्राणियोंके जन्मजन्मांतरो में संचित अच्छे-बुरे कर्मोंका फल होताहै। कृत्तिकादि २७ नक्षत्रोंको त्रिआवृत्ति (आ, चं, भौ, रा, जी, श, बु, के, शु) में बाँटा गया है, अर्थात् किसीका जन्मनक्षत्र कृत्तिका है, तो उसका जन्म विंशोत्तरीमतानुसार सूर्य ग्रह की महादशा मे हुआ है, ऐसा जानना चाहिए।

दशाका भुक्त-भोग्य जाननेकी विधि:- जन्म नक्षत्रके कुल घट्यादि मान को भभोग (सर्वक्ष:) कहते है। और जन्म समय तक उसी नक्षत्रके गत घट्यादि मानको भयात् (गतर्क्ष:) कहते है।

भयात् और भभोग की घटियों को पृथक्-पृथक् ६० से गुणाकर पल बना ले। भयात् के सर्वपलों को दशाके वर्षोंसे गुणाकर भभोगके सर्वपलों से भाग दें। लब्धांकफल वर्ष होंगे। शेषांक को १२ से गुणाकर पुन: भभोगके सर्वपलोंसे भाग देने पर लब्धांकफल मास आयेंगे। शेषांक को ३० से गुणाकर फिर भभोग के सर्वपलों से भाग देने से लब्धफल दिन सुनिश्चित हो जायेंगे। (इसी प्रकार ६० से गुणाकर भाग करने पर घटी पल निकलते हैं।) यह दशा के भुक्त वर्षादि होते हैं, जिन्हें दशाके कुलवर्षोंमें से घटाने पर शेष दशाके भोग्य वर्षादि निश्चित हो जाते है। नोट :- इसी प्रकार योगिनी दशा के जानें।

भयात्-भभोग बनाने की विधि:- प्रथम परिस्थि-इष्ट दिन पंचांग मे नक्षत्र का मान जन्मेष्टकाल से अधिक हो तो उसी (वर्तमान) नक्षत्रमें जन्म हुआ है। इस परिस्थितिमें पूर्वदिन व्याप्त नक्षत्र के घट्यादि मान को ६० घटी में घटा दें; शेष में इष्टकाल जोड़नेसे भयात् (गतर्क्ष:) होगा। और घटाये हुए अंकोमें इष्टदिन वर्तमान नक्षत्रके घट्यादि मानको जोड़ने पर भभोग (सर्वक्ष:) यानी नक्षत्र का कुलमान निकल आयेगा।

दूसरी परिस्थिति-इष्टकाल से नक्षत्र का मान कम हो तो अग्रिम नक्षत्र में जन्म हुआ है ऐसा जानना चाहिए। इस परिस्थिति में इष्टकाल में से नक्षत्र का मान घटा दें। शेष भयात् अर्थात् (गतर्क्ष:) होता है। इष्टदिन नक्षत्रमान को ६० घटी में से घटाकर शेष में अग्रिमदिन के नक्षत्रमान को जोड़नेसे भभोग (सर्वक्ष:) बन जाता है।

टिप्पणी- जन्म नक्षत्र का कुलमान भभोग (सर्वक्ष:) होता है और जन्मटाइम तक जितना जन्मनक्षत्र बीतजाय वह भयात् (गतर्क्ष:) कहलाता है।

अथ योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मंगला वर्ष १ आर्द्रा चि. श्रवण			पिंगला वर्ष २ पुन स्वाती धनिष्ठा			धान्या वर्ष ३ पुष्य वि. शत.			भ्रामरी वर्ष ४ अ. श्लेषा अनु.पूभा.			भद्रिका वर्ष ५ भर मघा ज्ये. उभा.			उल्का वर्ष ६ कृति पूफा मूल रेवती			सिद्धा वर्ष ७ रोहि. उफा पूषा.			संकटा वर्ष ८ मृग. हस्त उषा.		
द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पिं.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पिं.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पिं.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

❋ योगिनी दशाविचार ❋

मंगलादि योगिनी दशाओंके क्रमश:चन्द्र,सूर्य गुरु, मंगल,बुध,शनि,शुक्र स्वामी होते है। संकटा दशाके पूर्वार्ध १ से ४ वर्ष तक राहु और उत्तरार्ध ५ से ८ वर्ष तक केतु स्वामी कहे गये है शुभदशायें- मंगला,धान्या,भद्रिका और सिद्धा। अशुभदशायें-पिंगला,भ्रामरी,उल्का,औरसंकटा की मानी गई है। योगिनी तथा विंशोत्तरी दशाओ का जीवनकाल मे जब-जब शुभ सम्बन्ध बनता है, तब-तब जातक का सर्वतोन्मुखी विकास होता है। जन्मकुण्डली मे-भावेश ग्रहका किस भावेश ग्रहके साथ किस स्थान मे कैसा सम्बन्ध बना है उसीके अनुसार परस्पर ग्रहोंकी दशान्तरदशाओ मे शुभाशुभ फल भी घटित होते रहते है।

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन-सारिणी

अंश	मेष, सिंह व धनु राशिस्थ चन्द्र: ग्रह वर्ष	मास	दिन	वृष कन्या व मकर राशिस्थ चन्द्र: ग्रह वर्ष	मास	दिन	मिथुन, तुला व कुम्भ राशिस्थ चन्द्र: ग्रह वर्ष	मास	दिन	कर्क, वृश्चिक व मीन राशिस्थ चन्द्र: ग्रह वर्ष	मास	दिन	अंश
१	केतु ०	६	९	सूर्य १	११	१२	मंग.४	०	९	गुरु१३	२	१२	१
२	१	०	१८	२	४	२४	४	६	१८	१४	४	२४	२
३	१	६	२७	२	१०	६	५	०	२७	१५	७	६	३
४	२	१	६	३	३	१८	५	७	६	शनि०	११	१२	४
५	२	७	१५	३	९	०	६	१	१५	२	४	१५	५
६	३	१	२४	४	२	१२	६	७	२४	३	९	१८	६
७	३	८	३	४	७	२४	राहु ०	५	१२	५	२	२१	७
८	४	२	१२	५	१	६	१	९	१८	६	७	२४	८
९	४	८	२१	५	६	१८	३	१	२४	८	०	२७	९
१०	५	३	०	६	०	०	४	६	०	९	६	०	१०
११	५	९	९	चंद्र ०	९	०	५	१०	६	१०	११	३	११
१२	६	३	१८	१	६	०	७	२	१२	१२	४	६	१२
१३	६	९	२७	२	३	०	८	६	१८	१३	९	९	१३
१४	शुक्र१	०	०	३	०	०	९	१०	२४	१५	२	१२	१४
१५	२	६	०	३	९	०	११	३	०	१६	७	१५	१५
१६	४	०	०	४	६	०	१२	७	६	१८	०	१८	१६
१७	५	६	०	५	३	०	१३	११	१२	बुध ०	५	३	१७
१८	७	०	०	६	०	०	१५	३	१८	१	८	१२	१८
१९	८	६	०	६	९	०	१६	७	२४	२	११	२१	१९
२०	१०	०	०	७	६	०	१८	०	०	४	३	०	२०
२१	११	६	०	८	३	०	गुरु १	२	१२	५	६	९	२१
२२	१३	०	०	९	०	०	२	४	२४	६	९	१८	२२
२३	१४	६	०	९	९	०	३	७	६	८	०	२७	२३
२४	१६	०	०	मंग.०	४	६	४	९	१८	९	४	६	२४
२५	१७	६	०	०	१०	१५	६	०	०	१०	७	१५	२५
२६	१९	०	०	१	४	२४	७	२	१२	११	१०	२४	२६
२७	सूर्य०	१	२४	१	११	३	८	४	२४	१३	२	३	२७
२८	०	७	६	२	५	१२	९	७	६	१४	५	१२	२८
२९	१	०	१८	२	११	२१	१०	९	१८	१५	८	२१	२९
३०	१	६	०	३	६	०	१२	०	०	१७	०	०	३०

❋ विंशोत्तरीदशाभुक्तभोग्यज्ञानम् ❋

१ अप्रैल सन् १९९८ ई. दिन के २ बजकर ५६ मिनट पर राश्यादि चन्द्र स्पष्ट १।१६।४३।२१ है(जोकि विगत ...पृष्ठ पर लाघवांक कोष्ठक के नीचे स्पष्ट करके दिखाया गया है।) साथ वाली "चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा साधन सारणी" में स्पष्ट चन्द्र वृष राशि और १६ अंश के सामने चन्द्रमा की दशा के भुक्त वर्ष ४ मास ६ दिन ० मिले; जिनमें (नीचे और अग्रिम पृष्ठ पर छपी) सारिणी से ४३ कला का मान ६ मास १३ दिन ३० घटी और २१ विकला का मान १ दिन ३४ घटी ३० पल ग्रहण करके जोड़ने से कुल योग भुक्त वर्षादि ५।०।१५।४।३० हुए जिन्हें चन्द्र महादशा के कुल वर्ष १० में से घटाया तो शेष वर्षादि ४।११।१४।५५।३० रहे।

जोड़ने का तरीका

	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
वृष राशि १६ अंश का मान	४	६	०	०	०
४३ कला का मान		६	१३	३०	
२१ विकला का मान			१	३४	३०
कुल योग भुक्तवर्षादि →	५	००	१५	४	३०

नोट:- चन्द्रस्पष्ट की कला-विकला का फल ज्ञात करने के लिए नीचे ज्योतिषरहस्य से साभार सारिणी दी गई है, जिसमें १ से १० तक कला-विकला का फल दिया गया है। शेष ११ से ६० तक कला-विकला का फल (मास, दिन,घटी, पल) अग्रिम पृष्ठ पर छपी सारणी में देखें।

अष्टोत्तरी दशा विचार-

दक्षिण भारत में अष्टोत्तरीदशा का प्रचलन है। स्वरशास्त्र के अनुसार जिसका जन्म शुक्लपक्ष में हो उसका अष्टोत्तरीदशा द्वारा और कृष्णपक्ष में जन्मे जातकों का विंशोत्तरी दशा द्वारा शुभाशुभ फल ज्ञात करना चाहिए, लेकिन यह सर्वसम्मत नहीं है। अष्टोत्तरी- गणना में सूर्य की ६ वर्ष, चन्द्रमा की १५ वर्ष इसी प्रकार मंगल ८, बुध १७, शनि १०, गुरु १९ राहु १२ और शुक्र की महादशा २१ वर्ष रहती है। आर्द्रादि पापग्रहोंके नक्षत्र चार-चार और शुभग्रहोंके नक्षत्र तीन-२ में अभिजित् सहित दशाऐं भोग करती है।

नक्षत्र से अष्टोत्तरी दशा जानने का चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
आर्द्रा	मघा	हस्त	अनु.	पूषा.	धनि.	उभा	कृत्ति
पुन.	पूफा.	चित्रा	ज्येष्ठ	उषा.	शत.	रेवती	रोहि.
पुष्य	उफा.	स्वाती	मूल	अभि.	पूभा.	अश्वि.	मृग.
श्लेषा		विशा.		श्रव.		भरणी	

प्रत्यन्तरदशाविचार-जिस प्रकार प्रत्येकग्रह की महादशामें अन्यान्य ग्रहों की अन्तरदशायें भोग करती है, उसी प्रकार अन्तर दशाओंमें प्रत्यन्तरदशायें वर्तमान रहती हैं। जैसे:-सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तरदशा ३ मास १८ दिन है। इस ३ मास १८ दिन में उसी क्रम और परिणामनुसार प्रत्यन्तर भी होता है। प्रत्यन्तरदशा निकालने- का नियम यह है कि महादशाके वर्षों को अन्तर और प्रत्यन्तर दशा के वर्षों से गुणाकर ४० का भाग देने पर जो दिनादि आयेंगे वही प्रत्यन्तर दशा के दिनादि होगें।

क./वि.	सूर्य दशा वर्ष ६ कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.	चन्द्र दशा वर्ष १० कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.	मंगल व केतु दशा वर्ष ७ कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.	राहु दशा वर्ष १८ कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.
१	०	२	४२	०	२	४२	०	४	३०	०	४	३०	०	३	९	०	३	९	०	८	६	०	८	६
२	०	५	२४	०	५	२४	०	९	०	०	९	०	०	६	१८	०	६	१८	०	१६	१२	०	१६	१२
३	०	८	६	०	८	६	०	१३	३०	०	१३	३०	०	९	२७	०	९	२७	०	२४	१८	०	२४	१८
४	०	१०	४८	०	१०	४८	०	१८	०	०	१८	०	०	१२	३६	०	१२	३६	१	२	२४	०	३२	२४
५	०	१३	३०	०	१३	३०	०	२२	३०	०	२२	३०	०	१५	४५	०	१५	४५	१	१०	३०	०	४०	३०
६	०	१६	१२	०	१६	१२	०	२७	०	०	२७	०	०	१८	५४	०	१८	५४	१	१८	३६	०	४८	३६
७	०	१८	५४	०	१८	५४	१	१	३०	०	३१	३०	०	२२	३	०	२२	३	१	२६	४२	०	५६	४२
८	०	२१	३६	०	२१	३६	१	६	०	०	३६	०	०	२५	१२	०	२५	१२	२	४	४८	१	४	४८
९	०	२४	१८	०	२४	१८	१	१०	३०	०	४०	३०	०	२८	२१	०	२८	२१	२	१२	५४	१	१२	५४
१०	०	२७	०	०	२७	०	१	१५	०	०	४५	०	१	१	३०	०	३१	३०	२	२१	०	१	२१	०

क./वि.	गुरु दशा वर्ष १६ कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.	शनि दशा वर्ष १९ कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.	बुध दशा वर्ष १७ कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.	शुक्र दशा वर्ष २० कला मा.	दि.	घ.	विकला दि.	घ.	प.	क./वि.
१	०	७	१२	०	७	१२	०	८	३३	०	८	३३	०	७	३९	०	७	३९	०	९	०	०	९	०	१
२	०	१४	२४	०	१४	२४	०	१७	६	०	१७	६	०	१५	१८	०	१५	१८	०	१८	०	०	१८	०	२
३	०	२१	३६	०	२१	३६	०	२५	३९	०	२५	३९	०	२२	५७	०	२२	५७	०	२७	०	०	२७	०	३
४	०	२८	४८	०	२८	४८	१	४	१२	०	३४	१२	१	०	३६	०	३०	३६	१	६	०	०	३६	०	४
५	१	६	०	०	३६	०	१	१२	४५	०	४२	४५	१	८	१५	०	३८	१५	१	१५	०	०	४५	०	५
६	१	१३	१२	०	४३	१२	१	२१	१८	०	५१	१८	१	१५	५४	०	४५	५४	१	२४	०	०	५४	०	६
७	१	२०	२४	०	५०	२४	१	२९	५१	०	५९	५१	१	२३	३३	०	५३	३३	२	३	०	१	३	०	७
८	१	२७	३६	०	५७	३६	२	८	२४	१	८	२४	२	१	१२	१	१	१२	२	१२	०	१	१२	०	८
९	२	४	४८	१	४	४८	२	१६	५७	१	१६	५७	२	८	५१	१	८	५१	२	२१	०	१	२१	०	९
१०	२	१२	०	१	१२	०	२	२५	३०	१	२५	३०	२	१६	३०	१	१६	३०	३	०	०	१	३०	०	१०

क्र.	सूर्य दशा वर्ष ६						चन्द्र दशा वर्ष १०					
	कला			विकला			कला			विकला		
	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.
११	०	२१	४२	०	२१	४२	१	१९	३०	०	४९	३०
१२	१	२	२४	०	३२	२४	१	२४	०	०	५४	०
१३	१	५	६	०	३५	६	१	२८	३०	०	५८	३०
१४	१	७	४८	०	३७	४८	२	३	०	१	३	०
१५	१	१०	३०	०	४०	३०	२	७	३०	१	७	३०
१६	१	१३	१२	०	४३	१२	२	१२	०	१	१२	०
१७	१	१५	५४	०	४५	५४	२	१६	३०	१	१६	३०
१८	१	१८	३६	०	४८	३६	२	२१	०	१	२१	०
१९	१	२१	१८	०	५१	१८	२	२५	३०	१	२५	३०
२०	१	२४	०	०	५४	०	३	०	०	१	३०	०
२१	१	२६	४२	०	५६	४२	३	४	३०	१	३४	३०
२२	१	२९	२४	०	५९	२४	३	९	०	१	३९	०
२३	२	२	६	१	२	६	३	१३	३०	१	४३	३०
२४	२	४	४८	१	४	४८	३	१८	०	१	४८	०
२५	२	७	३०	१	७	३०	३	२२	३०	१	५२	३०
२६	२	१०	१२	१	१०	१२	३	२७	०	१	५७	०
२७	२	१२	५४	१	१२	५४	४	१	३०	२	१	३०
२८	२	१५	३६	१	१५	३६	४	६	०	२	६	०
२९	२	१८	१८	१	१८	१८	४	१०	३०	२	१०	३०
३०	२	२१	०	१	२१	०	४	१५	०	२	१५	०
३१	२	२३	४२	१	२३	४२	४	१९	३०	२	१९	३०
३२	२	२६	२४	१	२६	२४	४	२४	०	२	२४	०
३३	२	२९	६	१	२९	६	४	२८	३०	२	२८	३०
३४	३	१	४८	१	३१	४८	५	३	०	२	३३	०
३५	३	४	३०	१	३४	३०	५	७	३०	२	३७	३०
३६	३	७	१२	१	३७	१२	५	१२	०	२	४२	०
३७	३	९	५४	१	३९	५४	५	१६	३०	२	४६	३०
३८	३	१२	३६	१	४२	३६	५	२१	०	२	५१	०
३९	३	१५	१८	१	४५	१८	५	२५	३०	२	५५	३०
४०	३	१८	०	१	४८	०	६	०	०	३	०	०
४१	३	२०	४२	१	५०	४२	६	४	३०	३	४	३०
४२	३	२३	२४	१	५३	२४	६	९	०	३	९	०
४३	३	२६	६	१	५६	६	६	१३	३०	३	१३	३०
४४	३	२८	४८	१	५८	४८	६	१८	०	३	१८	०
४५	४	१	३०	२	१	३०	६	२२	३०	३	२२	३०
४६	४	४	१२	२	४	१२	६	२७	०	३	२७	०
४७	४	६	५४	२	६	५४	७	१	३०	३	३१	३०
४८	४	९	३६	२	९	३६	७	६	०	३	३६	०
४९	४	१२	१८	२	१२	१८	७	१०	३०	३	४०	३०
५०	४	१५	०	२	१५	०	७	१५	०	३	४५	०
५१	४	१७	४२	२	१७	४२	७	१९	३०	३	४९	३०
५२	४	२०	२४	२	२०	२४	७	२४	०	३	५४	०
५३	४	२३	६	२	२३	६	७	२८	३०	३	५८	३०
५४	४	२५	४८	२	२५	४८	८	३	०	४	३	०
५५	४	२८	३०	२	२८	३०	८	७	३०	४	७	३०
५६	५	१	१२	२	३१	१२	८	१२	०	४	१२	०
५७	५	३	५४	२	३३	५४	८	१६	३०	४	१६	३०
५८	५	६	३६	२	३६	३६	८	२१	०	४	२१	०
५९	५	९	१८	२	३९	१८	८	२५	३०	४	२५	३०
६०	५	१२	०	२	४२	०	९	०	०	४	३०	०

क्र.	मंगल व केतु दशा वर्ष ७						राहु दशा वर्ष १८					
	कला			विकला			कला			विकला		
	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.
११	१	४	३९	०	३४	३९	२	२९	६	१	२९	६
१२	१	७	४८	०	३७	४८	३	७	१२	१	३७	१२
१३	१	१०	५७	०	४०	५७	३	१५	१८	१	४५	१८
१४	१	१४	६	०	४४	६	३	२३	२४	१	५३	२४
१५	१	१७	१५	०	४७	१५	४	१	३०	२	१	३०
१६	१	२०	२४	०	५०	२४	४	९	३६	२	९	३६
१७	१	२३	३३	०	५३	३३	४	१७	४२	२	१७	४२
१८	१	२६	४२	०	५६	४२	४	२५	४८	२	२५	४८
१९	१	२९	५१	०	५९	५१	५	३	५४	२	३३	५४
२०	२	३	०	१	३	०	५	१२	०	२	४२	०
२१	२	६	९	१	६	९	५	२०	६	२	५०	६
२२	२	९	१८	१	९	१८	५	२८	१२	२	५८	१२
२३	२	१२	२७	१	१२	२७	६	६	१८	३	६	१८
२४	२	१५	३६	१	१५	३६	६	१४	२४	३	१४	२४
२५	२	१८	४५	१	१८	४५	६	२२	३०	३	२२	३०
२६	२	२१	५४	१	२१	५४	७	०	३६	३	३०	३६
२७	२	२५	३	१	२५	३	७	८	४२	३	३८	४२
२८	२	२८	१२	१	२८	१२	७	१६	४८	३	४६	४८
२९	३	१	२१	१	३१	२१	७	२४	५४	३	५४	५४
३०	३	४	३०	१	३४	३०	८	३	०	४	३	०
३१	३	७	३९	१	३७	३९	८	११	६	४	११	६
३२	३	१०	४८	१	४०	४८	८	१९	१२	४	१९	१२
३३	३	१३	५७	१	४३	५७	८	२७	१८	४	२७	१८
३४	३	१७	६	१	४७	६	९	५	२४	४	३५	२४
३५	३	२०	१५	१	५०	१५	९	१३	३०	४	४३	३०
३६	३	२३	२४	१	५३	२४	९	२१	३६	४	५१	३६
३७	३	२६	३३	१	५६	३३	९	२९	४२	४	५९	४२
३८	३	२९	४२	१	५९	४२	१०	७	४८	५	७	४८
३९	४	२	५१	२	२	५१	१०	१५	५४	५	१५	५४
४०	४	६	०	२	६	०	१०	२४	०	५	२४	०
४१	४	९	९	२	९	९	११	२	६	५	३२	६
४२	४	१२	१८	२	१२	१८	११	१०	१२	५	४०	१२
४३	४	१५	२७	२	१५	२७	११	१८	१८	५	४८	१८
४४	४	१८	३६	२	१८	३६	११	२६	२४	५	५६	२४
४५	४	२१	४५	२	२१	४५	१२	४	३०	६	४	३०
४६	४	२४	५४	२	२४	५४	१२	१२	३६	६	१२	३६
४७	४	२८	३	२	२८	३	१२	२०	४२	६	२०	४२
४८	५	१	१२	२	३१	१२	१२	२८	४८	६	२८	४८
४९	५	४	२१	२	३४	२१	१३	६	५४	६	३६	५४
५०	५	७	३०	२	३७	३०	१३	१५	०	६	४५	०
५१	५	१०	३९	२	४०	३९	१३	२३	६	६	५३	६
५२	५	१३	४८	२	४३	४८	१४	१	१२	७	१	१२
५३	५	१६	५७	२	४६	५७	१४	९	१८	७	९	१८
५४	५	२०	६	२	५०	६	१४	१७	२४	७	१७	२४
५५	५	२३	१५	२	५३	१५	१४	२५	३०	७	२५	३०
५६	५	२६	२४	२	५६	२४	१५	३	३६	७	३३	३६
५७	५	२९	३३	२	५९	३३	१५	११	४२	७	४१	४२
५८	६	२	४२	३	२	४२	१५	१९	४८	७	४९	४८
५९	६	५	५१	३	५	५१	१५	२७	५४	७	५७	५४
६०	६	९	०	३	९	०	१६	६	०	८	६	०

क्र.	गुरु दशा वर्ष १६						शनि दशा वर्ष १९					
	कला			विकला			कला			विकला		
	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.
११	२	१९	१२	१	१९	१२	३	४	३	१	३४	३
१२	२	२६	२४	१	२६	२४	३	१२	३६	१	४२	३६
१३	३	३	३६	१	३३	३६	३	२१	९	१	५१	९
१४	३	१०	४८	१	४०	४८	३	२९	४२	१	५९	४२
१५	३	१८	०	१	४८	०	४	८	१५	२	८	१५
१६	३	२५	१२	१	५५	१२	४	१६	४८	२	१६	४८
१७	४	२	२४	२	२	२४	४	२५	२१	२	२५	२१
१८	४	९	३६	२	९	३६	५	३	५४	२	३३	५४
१९	४	१६	४८	२	१६	४८	५	१२	२७	२	४२	२७
२०	४	२४	०	२	२४	०	५	२१	०	२	५१	०
२१	५	१	१२	२	३१	१२	५	२९	३३	२	५९	३३
२२	५	८	२४	२	३८	२४	६	८	६	३	८	६
२३	५	१५	३६	२	४५	३६	६	१६	३९	३	१६	३९
२४	५	२२	४८	२	५२	४८	६	२५	१२	३	२५	१२
२५	६	०	०	३	०	०	७	३	४५	३	३३	४५
२६	६	७	१२	३	७	१२	७	१२	१८	३	४२	१८
२७	६	१४	२४	३	१४	२४	७	२०	५१	३	५०	५१
२८	६	२१	३६	३	२१	३६	७	२९	२४	३	५९	२४
२९	६	२८	४८	३	२८	४८	८	७	५७	४	७	५७
३०	७	६	०	३	३६	०	८	१६	३०	४	१६	३०
३१	७	१३	१२	३	४३	१२	८	२५	३	४	२५	३
३२	७	२०	२४	३	५०	२४	९	३	३६	४	३३	३६
३३	७	२७	३६	३	५७	३६	९	१२	९	४	४२	९
३४	८	४	४८	४	४	४८	९	२०	४२	४	५०	४२
३५	८	१२	०	४	१२	०	९	२९	१५	४	५९	१५
३६	८	१९	१२	४	१९	१२	१०	७	४८	५	७	४८
३७	८	२६	२४	४	२६	२४	१०	१६	२१	५	१६	२१
३८	९	३	३६	४	३३	३६	१०	२४	५४	५	२४	५४
३९	९	१०	४८	४	४०	४८	११	३	२७	५	३३	२७
४०	९	१८	०	४	४८	०	११	१२	०	५	४२	०
४१	९	२५	१२	४	५५	१२	११	२०	३३	५	५०	३३
४२	१०	२	२४	५	२	२४	११	२९	६	५	५९	६
४३	१०	९	३६	५	९	३६	१२	७	३९	६	७	३९
४४	१०	१६	४८	५	१६	४८	१२	१६	१२	६	१६	१२
४५	१०	२४	०	५	२४	०	१२	२४	४५	६	२४	४५
४६	११	१	१२	५	३१	१२	१३	३	१८	६	३३	१८
४७	११	८	२४	५	३८	२४	१३	११	५१	६	४१	५१
४८	११	१५	३६	५	४५	३६	१३	२०	२४	६	५०	२४
४९	११	२२	४८	५	५२	४८	१३	२८	५७	६	५८	५७
५०	१२	०	०	६	०	०	१४	७	३०	७	७	३०
५१	१२	७	१२	६	७	१२	१४	१६	३	७	१६	३
५२	१२	१४	२४	६	१४	२४	१४	२४	३६	७	२४	३६
५३	१२	२१	३६	६	२१	३६	१५	३	९	७	३३	९
५४	१२	२८	४८	६	२८	४८	१५	११	४२	७	४१	४२
५५	१३	६	०	६	३६	०	१५	२०	१५	७	५०	१५
५६	१३	१३	१२	६	४३	१२	१५	२८	४८	७	५८	४८
५७	१३	२०	२४	६	५०	२४	१६	७	२१	८	७	२१
५८	१३	२७	३६	६	५७	३६	१६	१५	५४	८	१५	५४
५९	१४	४	४८	७	४	४८	१६	२४	२७	८	२४	२७
६०	१४	१२	०	७	१२	०	१७	३	०	८	३३	०

क्र.	बुध दशा वर्ष १७						शुक्र दशा वर्ष २०					
	कला			विकला			कला			विकला		
	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.	मा.	दि.	घ.	दि.	घ.	प.
११	२	२४	०	१	२४	९	३	९	०	१	३९	०
१२	३	१	४८	१	३१	४८	३	१८	०	१	४८	०
१३	३	९	२७	१	३९	२७	३	२७	०	१	५७	०
१४	३	१७	६	१	४७	६	४	६	०	२	६	०
१५	३	२४	४५	१	५४	४५	४	१५	०	२	१५	०
१६	४	२	२४	२	२	२४	४	२४	०	२	२४	०
१७	४	१०	३	२	१०	३	५	३	०	२	३३	०
१८	४	१७	४२	२	१७	४२	५	१२	०	२	४२	०
१९	४	२५	२१	२	२५	२१	५	२१	०	२	५१	०
२०	५	३	०	२	३३	०	६	०	०	३	०	०
२१	५	१०	३९	२	४०	३९	६	९	०	३	९	०
२२	५	१८	१८	२	४८	१८	६	१८	०	३	१८	०
२३	५	२५	५७	२	५५	५७	६	२७	०	३	२७	०
२४	६	३	३६	३	३	३६	७	६	०	३	३६	०
२५	६	११	१५	३	११	१५	७	१५	०	३	४५	०
२६	६	१८	५४	३	१८	५४	७	२४	०	३	५४	०
२७	६	२६	३३	३	२६	३३	८	३	०	४	३	०
२८	७	४	१२	३	३४	१२	८	१२	०	४	१२	०
२९	७	११	५१	३	४१	५१	८	२१	०	४	२१	०
३०	७	१९	३०	३	४९	३०	९	०	०	४	३०	०
३१	७	२७	९	३	५७	९	९	९	०	४	३९	०
३२	८	४	४८	४	४	४८	९	१८	०	४	४८	०
३३	८	१२	२७	४	१२	२७	९	२७	०	४	५७	०
३४	८	२०	६	४	२०	६	१०	६	०	५	६	०
३५	८	२७	४५	४	२७	४५	१०	१५	०	५	१५	०
३६	९	५	२४	४	३५	२४	१०	२४	०	५	२४	०
३७	९	१३	३	४	४३	३	११	३	०	५	३३	०
३८	९	२०	४२	४	५०	४२	११	१२	०	५	४२	०
३९	९	२८	२१	४	५८	२१	११	२१	०	५	५१	०
४०	१०	६	०	५	६	०	१२	०	०	६	०	०
४१	१०	१३	३९	५	१३	३९	१२	९	०	६	९	०
४२	१०	२१	१८	५	२१	१८	१२	१८	०	६	१८	०
४३	१०	२८	५७	५	२८	५७	१२	२७	०	६	२७	०
४४	११	६	३६	५	३६	३६	१३	६	०	६	३६	०
४५	११	१४	१५	५	४४	१५	१३	१५	०	६	४५	०
४६	११	२१	५४	५	५१	५४	१३	२४	०	६	५४	०
४७	११	२९	३३	५	५९	३३	१४	३	०	७	३	०
४८	१२	७	१२	६	७	१२	१४	१२	०	७	१२	०
४९	१२	१४	५१	६	१४	५१	१४	२१	०	७	२१	०
५०	१२	२२	३०	६	२२	३०	१५	०	०	७	३०	०
५१	१३	०	९	६	३०	९	१५	९	०	७	३९	०
५२	१३	७	४८	६	३७	४८	१५	१८	०	७	४८	०
५३	१३	१५	२७	६	४५	२७	१५	२७	०	७	५७	०
५४	१३	२३	६	६	५३	६	१६	६	०	८	६	०
५५	१४	०	४५	७	०	४५	१६	१५	०	८	१५	०
५६	१४	८	२४	७	८	२४	१६	२४	०	८	२४	०
५७	१४	१६	३	७	१६	३	१७	३	०	८	३३	०
५८	१४	२३	४२	७	२३	४२	१७	१२	०	८	४२	०
५९	१५	१	२१	७	३१	२१	१७	२१	०	८	५१	०
६०	१५	९	०	७	३९	०	१८	०	०	९	०	०

❊ वेधसिद्ध सूक्ष्मातिसूक्ष्म नवीनमानानुसार वर्ष-प्रवेश सारिणी ❊

गताब्दा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
बार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	०	२३	४६	९	३२
विपल	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०

गताब्दा	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
बार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९
पल	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५
विपल	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

गताब्दा	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
बार	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३
घटी	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३
पल	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४५	८	३१	५४	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	५	२८	५१	१४	३७
विपल	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०

गताब्दा	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
बार	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६
घटी	२९	४४	५९	१५	३०	४५	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४८	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८
पल	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२४	४७	१०
विपल	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

❊ वर्ष फल बनाने की सरल विधि ❊

वर्ष शुभाशुभ फलित हित जो, सम्वत् आमाब्द।
जन्म का सम्वत् हीन करि, जो बचे वर्ष शेषाब्द॥

वर्तमान संवत मे से जन्म का संवत् घटादे, जो वर्ष शेष बचे उन्हे शेषाब्द (गताब्द व ध्रुवांक) भी कहते है। गताब्द यानी गतवर्ष संख्यांकतुल्य वर्षप्रवेश सारिणीमे जो वारादिअंक प्राप्तहो, उन्हे जन्मके वारादि इष्टकालमे जोड़नेसे वर्षप्रवेश का वारादि इष्टकाल होता है। इसी वर्षेष्ट परिमित लग्नवत् क्रिया करनेसे वर्षारंभ का लग्न सिद्ध हो जाता है। नोट:- जोड़ घट्यादिके स्थानमे ६० से अधिक हो तो ६० घटाकर शेष ग्रहणकरे, और वार के स्थानमे १ बढ़ा दे, वारसंख्या ७ से अधिक हो तो ७ घटाकर शेषांक को रविवार से गिनती करे। स्मरण रहे-प्रतिवर्ष जन्म तारीखके आसन्न ही वर्षेष्ट सिद्धि होता है। वर्षप्रवेश कुण्डलीमे गोचरग्रह यथावत रखे जाते है। और वर्षप्रवेश कुण्डलीमे प्रधानग्रह मुन्था (देह धारिणी जीवनसाक्षिणी) मानी जातीहै। मुन्था लगाने की विधि-

दोहा- जन्म लग्न में मुन्था, जन्म समय बलवान।
भोग एक राशीवरष् कौशिक वचन प्रमान॥

जन्म समयमे मुन्था जन्मलग्नमे होती है। प्रतिवर्ष प्रतिएक राशिमे भोग करती हुई पुन:१३वे वर्षमे जन्मलग्नांक राशिमे मुन्था आ जाती है। मुन्थालगानेकीविधि:- गताब्द संख्यांकमे जन्मलग्नांक जोड़कर १२ का भाग दे। शेषांक लग्न (राशि) मे मुन्था लगादे। यदि शून्य शेष बचे भागपूरालगजावे तो १२वी राशि मे मन्था लगावे।

❊ वर्षमध्ये मुद्दादशा ज्ञानायचक्रम् ❊

ग्रहा :	रवि	चन्द	मंग	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दादशा जानने की विधि:- जन्मनक्षत्र संख्यामे गताब्द अर्थात् गतवर्ष संख्या जोड़कर २ घटा दे, ९ से भाग करनेपर जो शेष बचे उसीनम्बरकी दशा वर्षारम्भ मे होती है। इसके आगे क्रमश: सभी दशाये अपने-अपने निश्चित समयानुसार भोग करती हुई चक्र (वर्ष) पूरा करती है। नोट:- यदि शून्य ० शेष बचे, अर्थात् ९ का भाग पूरा लग जाय तो वर्षारम्भमे शुक्र की दशा जाननी चाहिए। अभिजित् रहित् नक्षत्र की गणना अश्विनी आदि मानकरकी जाती है।

❊ वर्षमध्ये योगिनीमुद्दादशा ज्ञानायचक्रम् ❊

योगिनी	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
मास	०	०	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

जानने की विधि:-गताब्द संख्यामे जन्मनक्षत्र संख्या जोड़कर तीन और जोड़ दे, ८ से भाग दे, शेष तुल्य मंगलादि योगिनी दशा जाने, अर्थात् वर्षारम्भ मे शेषांक तुल्य दशाभोग करेगी।

❊ त्रिराशि-पति ज्ञानार्थचक्रम् ❊

वर्षलग्नम्	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दिव्या	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्री	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु	श.	मं.	गु.	चं.

दिन मे वर्ष प्रवेश हो तो मेषादि राशियो के क्रमश: सूर्य, शुक्र, शनि आदि ग्रह त्रिराशिपति होते है और यदि रात्रिमे वर्ष प्रवेश हो तो गुरू, चन्द्र, बुधादिग्रह त्रिराशिपति माने जाते है।

त्रिपताकिचक्रम्

वर्षलग्न

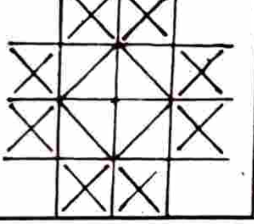

३ रेखा खड़ी और ३ रेखा तिरछी खींचनेपर त्रिपताकिचक्र बन जाता है। जैसाकि सामने अंकितहै। बीचवाली खड़ीरेखाके ऊपरी भाग मे वर्षलग्न रखकर कुण्डलीक्रम से राशियां (लग्न) रखने के बाद गताब्दवर्ष संख्यामे १ जोड़कर ९ का भाग देने से जो शेष बचे जन्मकालिक चन्द्राश्रित राशि (अत: चन्द्रमा जन्मसमय जिस राशि मे था) से उतनी संख्यामे जो राशिहो उस राशिमे चन्द्रमा को लिखे। तथा उसीसैक (गतवर्ष संख्या+१) मे ४ का भागदेने पर जो शेष बचे 'जन्मकालिक ग्रहाश्रित राशिसे' उतनी संख्यामे जो राशिहो उसमे अन्य ग्रहो को लिखे, राहू और केतू को उल्टा गिनकर रखना चाहिये। इसप्रकार त्रिपताकि चक्रमे सूर्यादि ग्रहोके न्यास करनेसे जहां चन्द्रमा स्थितिहो उस रेखाके दूसरे सिरेपर जो भी ग्रह हो उससे चन्द्रमा को विद्ध समझना चाहिये। यदि चन्द्रमा शुभग्रह से विद्ध या युक्तहो तो उसवर्ष मे शारीरिक सुख समृद्धि प्राप्त होती है। और पापग्रह से विद्ध हो तो अशुभफल समझना चाहिए।

❊ अथ वर्षेशाधिकारी ❊

१. जन्म लग्नेश २. वर्ष लग्नेश ३. मुन्थेश (मुन्थापति) ४. त्रिराशीश तथा दिनमे वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशिमे हो उसका स्वामी, ५. यदि रात्रिमे वर्षप्रवेश हो तो चन्द्राश्रित राशिका स्वामी इन पांचोका बल विचारकरके जो सबसे अधिक बलीहो और लग्नको देखता हो तो वह वर्षेश होता है। यदि लग्नको न देखता हो तो वह वर्षेश नही होता है। दो ग्रहोका बल यदि बराबर हो तो लग्नपर जिसकी दृष्टि विशेष हो वही वर्षेश होता है।

❊ मुन्था: ❊

जिस वर्षमे देहधारिणी जीवसाक्षिणी प्रधानग्रह मुन्था: शुभग्रह की राशिमे शुभग्रहो से दृष्ट व युक्त होकर वर्ष कुण्डलीके केन्द्रस्थान व त्रिकोणमे स्थिति होती है। उस वर्षमे भौतिक सुख समृद्धि का प्रादुर्भाव होता है। अत: सम्पूर्णवर्ष आनन्दमय व्यतीत होता है। और जिस वर्ष मे मुन्था: पापग्रहो से युक्त, दृष्ट अथवा पापग्रह की राशिस्थ होकर त्रकस्थान, ६,८,१२ वे भाव मे हो उस वर्षमे दैहिक-दैविक और भौतिकतापोकी वृद्धि होती है। जैसे छटे भाव मे मुन्था: हो तो शारीरिक कष्ट शत्रुओ के द्वारा सताया जाना इत्यादि। अष्टम या द्वादशभाव मे मुन्था: हो तो उस वर्षमे मृत्यु: अथवा मृत्युतुल्य कष्टके साथ-साथ व्यवसायक व्यवधान उत्पन्न होता है। दोष निवारण के लिए शांति प्रकरण मे देखे।

❊ मुद्दादशा का फल ❊

वर्षकुंडलो के छटे, आठवे बारहवे स्थान के स्वामियो की व पापग्रहो की दशाये अशुभफलदायक होती है। ग्रहोकी यथार्थ स्थितिका निरीक्षण कर तारतम्य से फल कहना चाहिए। यद्यपि यह कार्य विधि का है।

प्राचीन(सूर्यसिद्धान्तीय) मतानुसार वर्ष-प्रवेश सारिणी

गताब्दा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
बार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	४	२	१	६	५	४	२	१	६
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	१८	४	१९	३५	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	५२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

❀ वस्तु-ध्रुवांङ्क ❀

अफीम	अजमोद	आँवला	अश्व	अगर	इलायची	चिरौंजी	तिल	पीतल	मुरदाशंख	लोहा	सोना
८८४	१७१	७७४	८७१	१२	२१	७७८	१८	१०२	९४	२७८	६८
ऊन	ऊँट	कस्तूरी	कसुंबी	कपास	करडी	चिरायता	तीसी	वच	मूँग	लौंग	सोना
१५०	४८४	२८४	४६२	३५	१२५	२३०	१०८	७३	३५२	२७	९१
काँगनी	काष्ठ	काँसा	काँगड़ी	कथीर	कटु	चीनी	तुवर	बादाम	मूँज	शाली	हल्दी
२३४	८१	१०१	८१	१८२	२२४	१२८	५५७	७६०	२१	३२	५४
काँच	कुंकुम	कुलथी	कुरी	कलाय	कूट	चोला	तृण	दुशाला	मूँगफली	सौंचर	हरड़
२८७	९५	३३	७७	२७४	१०५	७२	७३५	२८	२१२	१२	८४७
उड़द	केसर	खजूर	गरी	गुंडाल	गेहूँ	चंदन	तेल	बहेड़ा	मेथी	सरसों	हरताल
१४३	२२७	१२६	१७६	८२	२८५	१२६	५४७	७८४	३६	८४०	७२५
कपूर	केराव	खली	गधा	गोंद	ग्वार	लालचंदन	दाख	बकरी	मोठ	सन	हाथी
९२	१०१	६२	२७४	२३५	९१	११५	३२०	३२१	६८२	८८२	४८२
कपड़ा	कोदव	खांड	गाय	गुड़	घृत	जस्ता	दाना	बाण	मोती	रूपा	हिंगलू
४८	१०९	२४७	२८३	६६	४४५	७८६	६२	१२५	८०	८८	८२७
चना	जीरा	पश्मीना	मसूर	लकड़ी	सार	यव	धनिया	बाजरा	राई	लहशुन	हींग
२४२	७७३	५२	२८३	२२४	८७२	७७२	४४२	७१८	४४१	१०१	२४
चावल	तमाखू	पारा	मटर	लाख	सुहागा	ज्वारी	नारियल	रेशम	सज्जी	बैल	भैंस
३७२	२८३	६२७	४८	८८	६७	७७७	३०४	५०	८८४	१४४	६८४
चाँदी	ताँबा	पीपल	मिर्च	लोध	सुपारी	जायफल	नील	रूई	शाक		
१२८	८९	१२८	६३०	८३०	१०८	१३	५३१	१७३	८८४		

तेजी मंदी परिज्ञानम्- श्रीराजधानी पंचांगमें प्रतिमास मेषादि संक्रांत्यासन्न मासादि ध्रुवांकसंख्या कुलयोग जोड़ दिये जाते है। जिन्हें तेजी-मन्दी सूचकांक भी कहते है। ऊपर अफीम, अजमोद, आंवला आदि वस्तुओंके ध्रुवांक लिखे है। जिस मासमें जिसवस्तुकी तेजी-मन्दी ज्ञात करनी हो उसी मासके मासादि ध्रुवांक योगमें वस्तुध्रुवांक जोड़कर ३ से भाग देने पर १ बचे तो मन्दी, २ बचे तो समान, और ० शेष बचे तो वह वस्तु उस मासमें तेज होगी जिसमें आप देख रहे है।

❀ **लेने-देनके लिए वर्जितसमय-** रविवार, मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग और हस्त नक्षत्रमें यदि ऋण लें तो कभी मुक्त न हो। बुधवारको द्रव्य देना नहीं चाहिए।

संक्रांति मुहूर्त- रवि संक्रमण समय वर्तमान चान्द्र नक्षत्र तत्तुल्य संक्रान्तिका भी मुहूर्त होता है।

नक्षत्र-मुहूर्त्तबोधक-चक्र

क्रम	नक्षत्र	मु०	क्रम	नक्षत्र	मु०	क्रम	नक्षत्र	मु०
१	अश्वि.	३०	१०	मघा	३०	१९	मूल	३०
२	भरणी	१५	११	पूफा.	३०	२०	पूषा.	३०
३	कृत्ति.	३०	१२	उफा.	४५	२१	उषा.	४५
४	रोहि.	४५	१३	हस्त	३०	२२	श्रवण	३०
५	मृग.	३०	१४	चित्रा	३०	२३	धनि.	३०
६	आर्द्रा	१५	१५	स्वाती	१५	२४	शतभि.	१५
७	पुन.	४५	१६	विशा.	४५	२५	पूभा.	३०
८	पुष्य	३०	१७	अनु.	३०	२६	उभा.	४५
९	श्लेषा.	१५	१८	ज्येष्ठा	१५	२७	रेवती	३०

नोटः शुक्लद्वितीया में चन्द्र दर्शन के समय जो नक्षत्रहो उसके अनुसार चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घ, ३०साम्यार्घ, ४५ समर्घ होते है।

❀ संयुक्ताक्षर राशि ज्ञान ❀

ज्ञानचन्द, द्वारिकाप्रसाद, क्षेमचन्द, त्रिलोकबाबू, ग्यारसीलाल, द्यालाराम की जन्मराशि व नक्षत्रचरण शास्त्रीयदृष्टिसे क्या मान्य होगा? और यदि हस्त नक्षत्रके तृतीयचरण (ण) पर किसी बच्चेका जन्म हो तो उसका क्या नाम रखा जाय? इस संदर्भ में शंकासमाधान हेतु हमारे यहां श्रीराजधानीपंचांग कार्यालयमें प्रतिवर्ष पत्र आते रहते है। इसलिए अ,ब,क,ह,डा चक्रानुसार बच्चोंके सुन्दरनाम रखनेके लिए अग्रिम पृष्ठोंमें तालिका दी गयी है। यह हमारा प्रथमप्रयास है। किसी जन्त्री या पंचांगमें ऐसा अनुपमटेबल छपा हो मेरी स्मृतिमें नहीं है। पाठकोंको लाभ होगा तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा। आर्द्राका तृतीयचरणाक्षर (ङ) हस्तका तृतीय (ण) और उ.भा. के चतुर्थचरण (ञ) पर किसीका नाम हो या ये अक्षर नामके आदिमें पायेगये हों ऐसा आजतक नहीं सुना अतः शतपदचक्रानुसार यदि ङ, ण, ञ, इन तीनों वर्णोंमें से कोई वर्ण जातकके जन्म नक्षत्रका चरण आ पड़े तो उस परिस्थितिमें क्रमशः घ, ठ, झ पर नाम रखना चाहिये यथा-

नामादौ नावलोक्यन्ते वर्णास्तु ङ,ञ,णाः क्वचित्।
तदेतेषु क्रमान्नाम धर्तव्यं घ, झ,ठाक्षरैः।।

नामका प्रथमअक्षर जिस नक्षत्रके जिस चरणमें हो वही उसका नक्षत्र और राशि जाननी चाहिये यथा- चन्द्रप्रभाकी मीन राशि होगी- **यन्नामाद्याक्षरं यस्य नक्षत्रस्य पदे भवेत्।**
तथैव तस्य नक्षत्रं विज्ञेयं गणकोत्तमैः।।

यदि नामके आदिमें संयुक्ताक्षर हो तो उसमें प्रथम वर्ण का ही ग्रहण करना चाहिये यथा-

यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षर लक्षणः।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले।

जैसे-श्रीपति नामके आदि में संयुक्त वर्ण 'श्र' के प्रथमवर्ण 'श' कार है, वह शतभिषाके द्वितीय चरणमें है इसलिये श्रीपति श्रवणकुमार या श्रीचन्द का जन्मनक्षत्र शततारका मान्य होगा। शतपद चक्रमें ऋकार नहीं कहा गया है, इसलिए ऋकार के स्थानमें रेफ (र) ग्रहण करना चाहिये। अर्थात किसीका नाम ऋद्धिनाथ या ऋषिकुमार है तो उसका चित्रानक्षत्र तीसराचरण एवं तुला राशि होगी। प्रमाण वाक्य-

अनुक्तत्वादृकारस्य रेफो ग्राह्यो विचक्षणैः।
ऋद्धिनाथस्य नक्षत्रं यथा चित्राख्यमेव हि।।

❀ दीर्घ और ह्रस्व स्वर भेद ❀

शतपदचक्र ज्योतिषीय मान्यतानुसार अकार और आकार तथा इकार और ईकार, उकार और ऊकार तथा एकार और ऐकार एवं ओकार और औकार परस्पर तुल्य समझे आते है, इसीप्रकार व और व एवं श और स ये दो-दो अक्षर समान माने गये है। जैसे- अमरनाथ, आनन्दस्वरूप दोनोंका एक ही कृतिका नक्षत्रका प्रथम चरण हुआ। ऐसे ही शक्तिश्वर और सविनयकुमार का शतभिषानक्षत्र द्वितीय चरणमें विहित कुम्भ राशि हुई। हस्तके द्वितीयचरणमें अक्षर (ष) को इसमें न मिलायें ऐसा करनेसे राशि व नक्षत्र सब पृथक हो जायेगा। अतः ष अक्षर के स्थान पर पुष्पेन्द्र, पुनीत, पूरन इत्यादि नाम रखने से राशि, नक्षत्र वही रहेगा, न मेलापक गुणोंमें अन्तर आवेगा।

शास्त्रवाक्य-

अ आ,इ ई,उ ऊ,ए ऐ,ओ औ,द्वौ मिथ:सामौ।
ब वौ, श, सौ, तथैवात्र ज्ञेयौ दैवविदा सदा।।

जिस नामके आदिमें संयुक्त अक्षर हो उसका आदि वर्ण ग्रहण करके ही राशि विचार करना चाहिये जैसेः ज्ञानचन्द नाम के आदि 'ज्ञ' शब्दकी उत्पत्ति पाणिनी व्याकरण भाषासूत्र के अनुसार (ज ञ क्षः) ज+ञ से यह अक्षर बना है, इसलिये ज्ञान का नक्षत्र उ.षा. तृतीय चरण व मकर राशि होती है। इसी प्रकार क्ष (क,ष संयोगवाद् क्षः) होने से क्षेमचन्द की राशि मिथुन व मृग. का तीसरा चरण होगा। (त+र र्क्षः) बराबर 'त्र' अक्षर है, इसलिये त्रिलोकचन्द की राशि तुला और नक्षत्र विशाखा होगा। (द व् इ का) द्वारिक में दकार ही प्रधान है अतः राशि कुम्भ और नक्षत्र पू.भा. होगा। द्रौपती, प्रियकान्त, प्रेमदत्त क्षेत्रपाल आदि में व्यवहितमध्य अक्षर को छोड़कर स्वर सहित आद्याक्षर से ही नक्षत्र माननीय होगा। इनमें क्रमशः द, पी, प, क की प्रधानता है। द्रुपदकुमारका उभा. नक्षत्र चरण १और मीन राशि है। **नोट-** अ,व,क,ह, डा चक्रमें कुछ और भी अक्षर ऐसे है, जिन पर नाम नहीं रखा जा सकता। जैसे (थ) पर लड़कीका नाम क्या रक्खें? इस परिस्थितिमें ज्योतिषी स्वतन्त्र चिन्तनकर नाम आगे पीछे के अक्षर पर रख सकता है, ध्यान रहे नक्षत्र व राशि पृथक् न हो जाय।

अवकहडाचक्र		राशिस्वामिवर्णवश्यादिज्ञानायचक्रम्									मासतिथ्यादिघातज्ञानायचक्रम्										नक्षत्राणांस्वामिस्वरूपादिज्ञानम्				
नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युञ्जा	हंसक	मा.	ति.	वार	नक्षत्र	योग	करण	प्र.	पुरुष	स्त्री	लग्न	स्वामि	स्वरूप	संज्ञा	मुखं	घ उ
अश्विनी	चू चे चो ला					अश्व	देव	आदि		तत्व		१						घात	घात		अश्विनीकु.	घोड़ा	क्षिप्र लघु	तिर्यक्	५०
भरणी	ली लू ले लो	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	मनुष्य	मध्य	पूर्व		कार्तिक	६	रवि	मघा	विष्कुंभ	बव	१	चन्द्र	चन्द्र	१	यम	भग	उग्र क्रूर	अध:	२४
कृत्तिका	अ ० ० ०					मेष	राक्षस	अन्त्य		अग्नि		११						मेष	मेष		अग्नि	छुरी	मिश्र साधा	अध:	३०
कृत्तिका	० इ उ ए					मेष	राक्षस	अन्त्य				५									अग्नि	छुरी	मिश्र साधा	अध:	३०
रोहिणी	ओ वा वि वु	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	मनुष्य	अन्त्य	पूर्व	पृथ्वी.	मार्गशीर्ष	१०	शनि	हस्त	शुक्ल	शकुनि	४	कन्या	धनु	२	ब्रह्मा	गाड़ी	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्व	४०
मृगशिरा	वे वो ० ०					सर्प	देव	मध्य				१५									चन्द्र	हरिण	मृदु मैत्र	तिर्यक्	१४
मृगशिरा	० ० क की					सर्प	देव	मध्य				२									चन्द्र	हरिण	मृदु मैत्र	तिर्यक्	१४
आर्द्रा	कू घ ङ. छ	मिथुन	बुध	शूद्र	मानव	श्वान	मनुष्य	आदि	पूर्व	वायु	आषाढ़	७	सोम	स्वाती	परिघ	कौलव	३	कुम्भ	धनु	४	शिव	मणि	तीक्ष्णदारुण	ऊर्ध्व	२१
पुनर्वसु	के को हा ०					मार्जार	देव	आदि	मध्या			१२									अदिति	मकान	चर चलं	तिर्यक्	३०
पुनर्वसु	० ० ० ही					मार्जार	देव	आदि				२									अदिति	मकान	चर चलं	तिर्यक्	३०
पुष्य	हू हे हो डा	कर्क	चन्द्रमा	विप्र	जलचर	मेष	देव	मध्य	मध्या	जल	पौष	७	बुध	अनुराधा	व्याघात	नाग	१	सिंह	मीन	७	गुरु	बाण	छिप्र लघु	ऊर्ध्व	२०
आश्लेषा	डी डू डे डो					मार्जार	राक्षस	अन्त्य				१२									सर्प	चक्र	तीक्ष दारु	अध:	३२
मघा	मा मी मू मे					मूषक	राक्षस	अन्त्य				३									पितर	घर	उग्र क्रूर	अध:	३०
पूर्वाफाल्गुनी	मो टा टी टू	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	मनुष्य	मध्य	मध्या	अग्नि	ज्येष्ठ	८	शनि	मूल	धृति	बव	१	मकर	वृश्चिक	१०	भग	मचान	उग्र क्रूर	अध:	२०
उत्तराफाल्गुनी	टे ० ० ०					गौ	मनुष्य	आदि				१३									अर्यमा	शय्या	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्व	१८
उत्तराफाल्गुनी	० टो पा पी					गौ	मनुष्य	आदि				५									अर्यमा	शय्या	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्व	२८
हस्त	पू ष ण ठ	कन्या	बुध	वैश्य	मानव	महिष	देव	आदि	मध्या	पृथ्वी	भाद्रपद	१०	शनि	श्रवण	शूल	कौलव	१	मिथुन	वृश्चिक	१२	रवि	हाथ	क्षिप्र लघु	तिर्यक्	२१
चित्रा	पे पो ० ०					व्याघ्र	राक्षस	मध्य				१५									त्वष्टा	मोती	मृदु मैत्र	तिर्यक्	२०
चित्रा	० ० रा री					व्याघ्र	राक्षस	मध्य				४									त्वष्टा	मोती	मृदु मैत्र	तिर्यक्	२०
स्वाती	रु रे रो ता	तुला	शुक्र	शूद्र	मानव	महिष	देव	अन्त्य	मध्या	वायु	माघ	९	गुरु	शतभिषा	शुक्ल	तैतिल	४	धनु	मीन	६	वायु	मूंगा	चर चल	तिर्यक्	१४
विशाखा	ती तू ते ० ०					व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य				१४									इन्द्राग्नि	तोरण	मिश्र साधा	अध:	१४
विशाखा	० ० ० तो					व्याघ्र	राक्षस	अन्त्य	मध्या /			१									इन्द्राग्नि	तोरण	मिश्र साधा	अध:	१४
अनुराधा	ना नी नू ने	वृश्चि.	मंगल	विप्र	कीट	मृग	देव	मध्य		जल	आश्विन	६	शुक्र	रेवती	व्यतिपात	गर	१	वृष	धनु	८	मित्र	भात	मृदु मैत्र	तिर्यक्	१०
ज्येष्ठा	नो या यी यू					मृग	राक्षस	आदि	अन्त्या			११									इन्द्र	कुण्डल	तीक्ष दारु	तिर्यक्	१४
मूल	ये यो भा भी				मानव /	श्वान	राक्षस	आदि				३									राक्षस	सिंहपु.	तीक्ष्णं दारु	अध:	५६
पूर्वाषाढ़ा	धू धा फा ढा	धनु	गुरु	क्षत्रिय		वानर	मनुष्य	मध्य	अन्त्या	अग्नि	श्रावण	८	शुक्र	भरणी	वज्र	तैतिल	१	मीन	कन्या	९	जल	हाथीदां	उग्र क्रूर	अध:	२४
उत्तराषाढ़ा	धे ० ० ०				चतुष्पद	नकुल	मनुष्य	अन्त्य				१३									विश्वेदेव	मचान	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्व	१०
उत्तराषाढ़ा	० भो ज जी				चतुष्पद /	नकुल	मनुष्य	अन्त्य				४									विश्वेदेव	मचान	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्व	१०
श्रवण	खी खू खे खो	मकर	शनि	वैश्य		वानर	देव	अन्त्य	अन्त्या	पृथ्वी	वैशाख	९	मंगल	रोहिणी	वैधृति	शकुनि	४	सिंह	वृश्चिक	११	विष्णु	वामन	चर चल	ऊर्ध्व	१०
धनिष्ठा	गा गी ० ०				जलचर	सिंह	राक्षस	मध्य				१४									वसु	मृदंग	चर चल	ऊर्ध्व	१०
धनिष्ठा	० ० गु गे					सिंह	राक्षस	मध्य				३									वसु	मृदंग	चर चल	ऊर्ध्व	१०
शतभिषा	गो सा सी सु	कुम्भ	शनि	शूद्र	मानव	अश्व	राक्षस	आदि	अन्त्या	वायु	चैत्र	८	गुरु	आर्द्रा	गंड	किंस्तुघ्न	३	धनु	मिथुन	३	वरुण	वृत्त	चर चल	ऊर्ध्व	१८
पूर्वाभाद्रपदा	से सो द ०					सिंह	मनुष्य	आदि				१३									अजपाद	मंच	उग्र क्रूर	अध:	१६
पूर्वाभाद्रपदा	० ० ० दी					सिंह	मनुष्य	आदि	अन्त्या /			५									अजपाद	मंच	उग्र क्रूर	अध:	१६
उत्तराभाद्रपदा	दू थ झ ञ	मीन	गुरु	विप्र	जलचर	गौ	मनुष्य	मध्य		जल	फाल्गुन	१०	शुक्र	आश्ले.	वज्र	चतुष्पाद	४	कुम्भ	कुम्भ	५	अहिर्बुध्न्य	यमल	ध्रुव स्थिर	ऊर्ध्व	२४
रेवती	दे दो चा ची					गज	देव	अन्त्य	पूर्व			१५									पूषा	मृदंग	मृदु मैत्र	तिर्यक्	१०

नामाक्षर तुल्य वर्ग कोष्टक - अपने वर्ग से पंचम शत्रु, चौथा मित्र और तीसरा उदासीन (सम) होता है।

अ इ उ ए ओ १	क ख ग घ ङ २	च छ ज झ ञ ३	ट ठ ड ढ ण ४	त थ द ध न ५	प फ ब भ म ६	य र ल व ७	श ष स ह ८
गरूड़ दिशा पूर्व	मार्जार दि. अग्नेय	सिंह दि. दक्षिण	श्वान दि. नैऋ	सर्प दि. पश्चिम	मूषक दि वायव्य	मृग दि उत्तर	मेढ़ा दि ईशान

कांकिणी-परित्वेन विचार- सर्वप्रथम साधक व साध्यके नाम के प्रथमाक्षर तुल्य वर्ग कोष्टक से वर्ग संख्या स्वामी व दिशा ज्ञातकरलें। प्रत्येक वर्गसे पाँचवां वर्ग उसका बैरी और उस पांचवे वर्गकी दिशाभी उसके लिए नेष्ट होती है। अत: उस (पांचवे) वर्गके अक्षरों से जिसकानाम शुरू होता है, उस नगर ग्राम, व्यक्ति, वस्तु, या दिशासे उसका सम्बन्ध सुखद नहीं रहता; उनकी ओरसे इसको झगड़ा झन्झट अथवा नुकसान या कुछ न कुछ परेशानियाँ उपस्थित होती ही रहती है। अतएव उनसे सम्बंध होनेपर साधकको बहुत सावधानी बर्तनी चाहिए। विस्तारसहित विवरण फलितसे सम्बन्धित ग्रंथोंमे देखें।

जातक प्रकरण

प्राणीमात्र के सभी क्रियाकलाप आयु पर ही निर्भर करते हैं, इसलिए ज्योतिषियोंको सर्वप्रथम आयु का विचारकर लेने के बाद ही अन्य विषयों पर दृष्टि डालनी चाहिए, यद्यपि फलितज्योतिष में आयु निर्धारण की अनेक रीतियां वर्णित हैं, उन सबमें महर्षिजैमिनी प्रोक्त आयुर्दाय गणित पद्धति की सर्वोपरीय मान्यता है।

अथ आयुर्दाय निर्णायक चक्र

दीर्घायु	मध्यमायु	अल्पायु
एक चर राशि में दूसरा चर राशि में	एक द्विस्वभाव राशिमें दूसरा द्विस्वभाव राशिमें	एक स्थिर राशि में दूसरा स्थिर राशि में
एक स्थिर राशि में दूसरा द्विस्वभाव राशिमें	एक चर राशि में दूसरा स्थिर राशि में	एक चर राशि में दूसरा द्विस्वभाव राशिमें

महर्षि जैमिनी के मत से आयुर्दाय के तीन भेद होते हैं। १.दीर्घायु २. मध्यमायु ३.अल्पायु। प्रत्येक का निर्णय भी तीन प्रकार से किया जाता है और प्रत्येक प्रकार में दो-दो अधिनायकों का विचार होता है। यथा-①लग्नेश अष्टमेश②शनि और शशि③लग्न और होरालग्न। प्रत्येक प्रकार के दो-दो अधिनायकों में से दोनों चरराशि में हों, या कोई एक द्विस्वभाव में, दूसरा स्थिर में हो तो जातक की दीर्घायु होती है। यदि दोनों द्विस्वभाव राशि में हो अथवा कोई एक स्थिर राशि में दूसरा चर में हो तो मध्यमायु समझना। यदि दोनों स्थिर राशि अथवा एक चर दूसरा द्विस्वभाव में हो तो जातकी की अल्पायु जाननी चाहिए।

नाम रखने की विधि

प्रथम परिस्थिति- इष्ट दिन पंचांग में दैनिक चान्द्रनक्षत्र का मान इष्ट काल से अधिक हो तो उसी (वर्तमान) नक्षत्र में शिशु का जन्म हुआ है। इस परिस्थिति में प्रथम दिन गत नक्षत्र के घट्यादिमान को ६०घटी में घटा दें। शेष में इष्टकाल जोड़ने पर भयात् (गतर्क्षः) होगा। घटाये हुए अंकों में इष्ट दिन नक्षत्र का घट्यादि मान जोड़ने पर भभोग (सर्वक्षः) यानि नक्षत्र का कुलमान होगा।

दूसरी परिस्थिति- इष्टकाल से नक्षत्र का मान कम हो तो अग्रिम नक्षत्र में जन्म हुआ है, ऐसा जानना। इस परिस्थितिमें इष्टकालमें से नक्षत्रका मान घटा दें, शेष भयात् (गतर्क्षः) होगा। इष्ट दिन नक्षत्रमान को ६०घटीमें घटाकर शेषमें अग्रिम दिनके नक्षत्रमान को जोड़ देने पर भभोग (सर्वक्षः) होगा। सम्पूर्ण (भभोग) मान के चार भाग कर देख लें। भयात् किस चरण तुल्य बना है। उसी नक्षत्र चरणाद्याक्षर तुल्य बच्चे का सुन्दरसा नाम रख दें। टिप्पणी- इष्ट बनाने की विधि लग्नसारणी के नीचे देखें और नक्षत्र चरणाक्षरों का विवरण अ,व,क,हा,डा चक्र में मिलेगा।

★ मूल जनने वृक्ष विभाग फलम् ★

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्ते	पुष्प	फल	शिखा
घटी ७	८	१०	११	१२	५	४	३
मूल नाशः	वंश क्षयः	भ्रात क्लेशः	मातुल मामाकष्ट	राज्य लाभ	राज्य मन्त्री	अधिक धनला	अल्प जीवी

★ आश्लेषा जनने अङ्ग विभाग फलम् ★

फलम्	मूल	स्कन्ध	त्वचा	शाखा	दल	पुष्प	फल
	अल्पायु	पिता हानि	मातृः नाश	हानिः	राज्य भयं	धन लाभ	धन लाभ
घटिकाः	४	१२	१३	७	९	५	१०

★ अथ् मूलनिवास चक्रम् ★

जन्ममासानुसारेण	वै.ज्ये.मार्ग.फा.	चै.श्रा.का.पौ.	आषा.आ.माघ.भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

☆ अथ गण्डमूल नक्षत्र और उनके फल ☆

अश्विनी ४ चरण फल	आश्लेषा ४ चरण फल	मघा ४ चरण फल
१. पिता को अशुभ	१. शान्ति से शुभ फल	१. माता को नेष्ट
२. धनैश्वर्यवान	२. धनैश्वरीय हानि	२. पितृभय कारक
३. मन्त्री पद प्राप्ति	३. माता को अशुभ	३. सुख समृद्धि
४. राज्यसम्मान	४. पिता को अशुभ	४. धनायु सुख समृद्धि

ज्येष्ठा ४ चरण फल	मूल नक्षत्र ४ चरण फल	रेवती ४ चरण फल
१.ज्येष्ठभ्राता को नेष्ट	१.पिता को नेष्ट	१.राज्यकार्य रत
२.लघुभ्राता को नेष्ट	२.जननी को नेष्ट	२.मंत्रित्व प्राप्ति
३.जननी को नेष्ट	३.धनायु अभिवृद्धि	३.धन-धान्य वृद्धि
४.स्वयं को नेष्ट	४.शान्ति से शुभदायक	४.कष्टसाध्य जीवन

नक्षत्र	समय और दान वस्तुएं	होम द्रव्य	जप के लिए वेदोक्त मन्त्राः
अश्विनी स्वामी अश्विनीकुमार	घृत,स्वर्ण, तुला दान प्रातःकाल	खांड यव घृत,मेवा	ॐअश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बले नेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः।। जप सं.५०००
आश्लेषा स्वामी सर्प	बछड़ा युक्त श्यामा गौ छाया दान सांयकाले	शर्करा युक्त घृत दूध	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यःसर्पेभ्यो नमः।। ॐसर्पेभ्योनमः।। जप संख्या १०००० नोटःकलयुगमें मन्त्रजप चारगुणी होनी चाहिए।
मघा स्वामी पितरः	काले वस्त्र काले तिल माषान्न मध्याह्न	तिल घृत तण्डुल	ॐ पितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधा नमःपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यःस्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरःशुन्धध्वम्। ॐपितरभ्योनमः। जपसं.१००००
ज्येष्ठा स्वामी इन्द्रः	स्वर्ण और नीलमणि वस्त्रदान प्रातःकाल	तिल घृत तण्डुल	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ शक्राय नमः।। जप संख्या ५०००
मूल स्वामी राक्षस	गो,छायादान वस्त्र दान कुमारीपूजन प्रदोषकाले	कन्द मूल गोघृत	ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्निꣳस्वे योनावभारुखा। तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुञ्चतु।। ॐ निऋत्ये नमः।। जप संख्या ५०००
रेवती स्वामी पूषाः	चांदीवस्त्रबैल पीतलछायादान प्रातःकाल	तिल,घी आज्य तण्डुल	ॐ पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इह स्मसि ।। ॐ पूष्णो नमः।। जप संख्या ५०००

अथ अभुक्त मूल विचार- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम ५घटी किसी के मत से ४ घटी, किसी के मत से १घटी और किसी के मत से आधी घटी का समय अभुक्तमूल कहलाता है। इसीतरह मूलके आदि की आठ घटी, चार, दो अथवा किसी के मत से आधी घटी का समय अभुक्त मूल होता है। उक्त समय में जो बच्चा जन्म ले उसका पिता उस बच्चेका ८ वर्ष तक मुंह न देखे, शान्तिविधान कराने पर शास्त्रीय बाधा नहीं होती है।

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्- त्रयोदशी की घटियों को ६०में से घटाकर चतुर्दशी की घटियाँ युक्तकर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल कहें, प्रथम भाग में शुभ। द्वितीय में पिता के लिए अशुभ। तृतीय में माता को कष्ट। चतुर्थ में मातुल (मामापक्ष)को नेष्ट। पंचम में अपने कुलको हानिकारक और छठे भागमें जन्मे जातक घरमें धन हानिकारक होते है। अरिष्ट समयमें शान्ति विधान परमावश्यकहै।

ज्येष्ठा जनने वृक्ष विभाग फलम्

विभाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१२
घटियाः	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	६०
फलम्	मातामह हानि	मातामह हानि	मातुल दादीहानि	मातृ नाशकर	स्वयंकी हानि	गोत्रज की हानि	उभयकुल हानि	ज्येष्ठभ्राता हानि	श्वसुर कुलहानि	सब तरहकी हानि	सुख समृद्धि

अरिष्टयोग

यदि जन्म लग्न वर्षलग्न एक हो और जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ होता है। जिसकी कुण्डली में चन्द्र अशुभ पड़ा हो,तो अवश्य कष्टप्रद होता है।

राशियोंमें विहित नक्षत्र चार चरणाक्षर तुल्य रखिए आप अपने बच्चोंके अत्यन्त सुन्दर नाम

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- मेष	अश्विनी	चु- चुन्नीलाल, चूड़ामणि	चुनमुन, चुन्नी
		चे- चेतन, चैतन्यस्वरूप, चेतराम	चेतना, चैतन्या, चेताली
		चो- चोखेलाल,	चौमुखी
		ला- लालमणि, ललितकुमार, लक्ष्मण, लक्ष्मीकांत	लता, ललिता, लवली, लक्ष्मी, लाजवंती,
	भरणी	ली- लीलाधर	लीलावती, लिपिका, लीना
		लू- लुकेश	लूसी
		ले- लेखराज	लेखा
		लो- लोकेन्द्र, लोकेश, लोचन	लोपामुद्रा, लोलिता,
	कृत्तिका	अ- अनुराग, अमित, अनिल, अवनीश, आमोद अंकज, अभिषेक, अजय, अतुल, अनुज	आशु, अन्नपूर्णा, अमृता, अनुपमा, अलका अंकिता, अंगूरी, आरती, आशारानी, अंजली
राशि- वृष		इ- इन्दुकान्त, इन्दुशेखर, ईश्वरदत्त, इन्द्रजीत	इन्दुप्रभा, इन्दिरा, इन्दुकांता, ईला, इन्दुमती
		उ- उमेश, उमाकुमार, उर्मिलकुमार, उत्तम, उमाशंकर,	उर्मिला, उमा, उल्का, उत्प्रेक्षा, उषा, उर्वशी
		ए- ऐश्वर्य कुमार, एटल सिंह	ऐश्वर्यप्रभा, ऐनी, एकतारानी
	रोहिणी	ओ- ओमवीर, ओमप्रकाश, ओंकार	ओमवती, ओमजा, ओजस्विनी
		वा- वालेन्दु, व्रजेश, बालमुकुन्द, बहुलकान्त, वकुलेश, वरुण, वंशीलाल, व्रजमोहन	वन्दना, बबीता, वसुधा, बाला, वर्षारानी
		वि- विनयप्रकाश, विदुमार, विवेक, विमल विपिनकुमार, वीरबल, विनोद	वीना, विन्देश्वरि, विन्नी, विमला, विनीता विभा, विद्या
		वु- बुधेन्द्र, बुधसैन, बुधराज	बुधेन्दी, बुलबुल
	मृगशिर	वे- वेदप्रकाश, वेदवीर, वेदराम	वेबी, वैजयन्ती, वेला, वैदेही
		वो- बोधराज, बोधासिंह,	बोधवती
राशि- मिथुन		क- कमल, कान्तीप्रसाद, कलानिधि, कन्हैया, कनिष्क, कपिल, क्षेमचन्द, कृष्णकांत	कविता, कल्पना, कामिनी, करूणारानी, कृति कमलेश, कमला, कांती
		की- कीर्तिप्रिय, किंशुक, किसलय, किशोरीलाल	कीर्तिलता, कीर्ति, किरणप्रभा, किमी
	आर्द्रा	कु- कुमुदकांत कुलानन्द, कुलदीप, कुलश्रेष्ठ, कुशाग्र, कुन्दनलाल	कुमकुम, कुसुमलता, कुसुम
		घ- घनश्याम, घनानन्द	घनाक्षरी, घनश्यामा
		ङ- (घ) घनश्याम, घनानन्द	घनाक्षरी, घनश्यामा
		छ- छयांक, छविकान्त, छत्रपति, छत्रपाल	छाया, छवि, छटा, छत्रेश्वरी, छिप्रा
	पुनर्वसु	के- केतनशंकर, कैलाशचन्द, केसरी, केहर	कैरवी, कैलाशी, केतकी
		को- कौशलकिशोर, कोमलप्रसाद, कोविद	कोमिला, कोमलांग, कोविदरानी
		ह- हंसराज, हरकेश, हरीशकुमार, हरीशंकर, हरवीर, हरिप्रसाद, हरिओम	हर्षप्रभा, हनी, हरदेई, हसैन्द्री

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- कर्क	पुन.	ही- हिमांशु, हीरालाल, हिमकर, हीरामणि	हिमांटेकी, हीपिका, हिमन्द्री, हिमानी,
	पुष्य	हु- हुकमचन्द	हुस्नी,
		हे- हेमन्तकुमार, हेमगिरि, हेमाद्रि	हेमवती, हेमलता, हेमाद्री, हेमन्त
		हो- होरीलाल, होतीलाल	
		डा- डालचन्द, डब्बू	डालिमा, डाली
	आश्लेषा	डी- डिक्सन	डिम्पल, डिम्पाटेडु
		डु- डुगरमल, डुडु	डुरमिलारानी
		डे- डेविड	डेमिला, डेजी
		डो- डोरीलाल, डोनी	डोली, डोलिमा
राशि- सिंह	मघा	मा- मनोज, मधुकर, मधुसूदन, महेन्द्र, मनीष, मणिकांत, मयंक, मंगलेश, मदन	मंजु, मनोरमा, माधुरी, माधवी, मंजुला, मधु, ममता, माया, मृदुला
		मी- मिन्टू, मिश्रीलाल, मिट्ठन	मीना, मीनाक्षी, मीनू, मिथिलेश
		मु- मुकेश, मुदितकुमार, मुकुल, मुन्नालाल मुरलीधर	मुक्ति, मुन्नी, मुनमुन, मुग्धा, मुकुरप्रभा, मुदिता
		मे- मैत्रेय, मेधावी, मेनपाल, मेघराज	मेधा, मैत्रेयी, मेनिका, मेघना
	पूर्वाफाल्गुनी	मो- मोनू, मोहन, मोहनीश, मोहनलाल, मोतीलाल	मोहिनी, मोनिका, मोहनीशा, मोना,
		टा- टारजन, ट्रावेन्द्र	टम्मीरानी
		टी- टिंकू, टीनू, टीकमसिंह	टीना, टिन्नी, टिवंकल, टिवकलिना
		टू- टूकेजकुमार, टूकीराम	टेकी
	उत्तराफाल्गुनी	टे- टेकचन्द	टेकी, टेविका
राशि- कन्या		टो- टोनी	टोनिका
		पा- पंकज, प्रतीक, प्रशान्त, परवीन, प्रदीप, पवन, परवेश, प्रवीणकुमार, प्रणय, प्रमोद	पारूल, प्रभा, प्रमिला, प्रज्ञा, प्राची, प्रतिमा, पामेला, प्रखर, प्रगति, प्रज्ञावती
		पी- प्रियव्रत, प्रियकांत, प्रियांशु, प्रीतमसिंह	प्रियंका, पिंकी, प्रीतिलता
	हस्त	पू- पुनीत, पुष्पेन्द्र, पूर्णेन्दु, पुण्यवीर, पूरनचन्द	पूनम, पूजा, पुष्पा, पुनीता, पूर्णिमा
		ष- पुनीत, पुष्पेन्द्र, पूर्णेन्दु, पुण्यवीर, पूरनचन्द	पूनम, पूजा, पुष्पा, पुनीता, पूर्णिमा
		ण- (ठा) ठाकुरदास	
		ठा- ठाकुरदास, ठाकुरप्रसाद	
	चित्रा	पे- प्रेमपाल, प्रेमसागर, प्रेमशंकर, प्रेमराज	प्रेमलता, प्रेरणा, प्रेमा
		पो- प्रोवेशचन्द	प्रोमिला

नोट: अ व क हा डा चक्र ज्योतिष की वर्णमाला में कुछ अक्षर ऐसे है जिनपर किसी नाम नही या बोलने मे अच्छा नही लगता वहां ज्योतिषी आगे पीछे के अक्षर पर नाम रखन में स्वतन्त्र होता है।

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- तुला	चित्रा	रा- राकेश, राजीव, राहुल, रमेश, रंजन, रवि रत्नाकर, ऋषिकुमार, ऋतुराज, ऋषिराज	राखी, राधा, रंजना, रतिका, रत्नप्रभा, रमा रश्मि, रजनी, रसना, रत्ना
		री- रीतेश, रिंकू, रिपुदमन, रिशांक	रीता, रीना, रिचा, रीतू, रिद्धिमा
	स्वाती	रू- रूपकिशोर, रुद्रदेव, रुद्रदत्त, रूपेश	रूबी, रूकमणी, रूचिता, रूपशिखा, रूपा
		रे- रेवतीप्रसाद, रैवतसिंह	रेनू, रेखा, रेशमा
		रो- रोहित, रोमेश, रोबिन, रोबट	रोजी, रोहिणी, रोशनी, रोचिता
		ता- तन्मय, तरूणकुमार, तपन, तनु, तपेश	ताप्ती, तृष्णा, तनुप्रिया, तरूलता, त्रैयम्बिका
	विशाखा	ती- त्रिलोकचन्द, त्रिदेवकुमार	तिलोत्तमा, त्रियनयना, तीक्षा, त्रिशला
		तू- तुहिनांशु, तुहिनचन्द, तुलसीराम, तुलाराम	तूलिका
		ते- तेजप्रताप, तेजसिंह, तेजपाल	तेजसी
राशि- वृश्चिक		तो- तोषचन्द, तोताराम	तोयशी
	अनुराधा	ना- नवीन, नवनेन्दु, नवनीत, नागार्जुन, नगेन्द्र	नम्रता, नवमल्लिका, नवनीता, नंदिनी
		नी- नीरज, निर्मल, निवेश, निर्भय, नीलकांत निपुणेश, नितीश, निशान्त	नीलम, नीतू, नीशा, नीरू, निर्मला, निरूपमा
		नू- नूतन	नूतन, नुपूर, नूरी
		ने- नेमिचन्द, नेतराम, नेत्रपाल	नेहा, नेमवती, नेहलिया
	ज्येष्ठा	नो- नोरत्न, नोवेश, नोहतशरण	
		या- यदुवेन्द्र, यज्ञदत्त, यशोमणि, यज्ञसैन यशपाल, यशवंत, यदुवीर	यशोधरा, यशवती, यशोदा, यतिका, यामिनी
		यी	
		यू- यूकेश, युगलकिशोर, यूपेन्द्र	युगेन्द्री, युगलेशकुमारी
राशि- धनु	मूल	ये-	
		यो- योगेन्द्र, योगेश	योगिता, योगेश्वरी, योकिला
		भा- भारतेन्दु, भानुप्रताप, भगवत, भद्रसैन, भागीरथ, भास्कर, भगवती प्रसाद	भावना, भानुप्रिया, भास्वती, भानुमती, भानवी भानुरेखा
		भी- भीमसैन, भीष्म, भीकमसिंह	भीनूरानी
	पूर्वाषाढ़ा	भू- भूपेन्द्र, भुवनेश, भूषण, भुजवीर	भूदेवी, भूषिता, भूमिजा, भूमिका
		धा- धर्मेन्द्र, धर्मांशु, धरणेश्वर, धीरज, धर्मदत्त धवलकांत, धर्मेश, ध्रुव	धनवती, धनेन्द्री, धनेश्वरि, धवली, धात्री धृति
		फा- फणीन्द्र, फतेहचन्द, फनीशकुमार	फनी, फरहा, फूलन, फूलवती
		ढा- ढिल्लोराम	ढिल्लोरानी
	उषा.	भे- भेटिव्यांश	भेव्यारानी

राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- मकर	उषा.	भो- भोजराज,	भोजवती
		जा- जानकीदास, जगप्रवेश, जतिन, जयपाल, जसवन्त, जयवीर	ज्योति, जयप्रभा, जागृती, ज्योत्सना, ज्योतिबाला
		जी- जीवाराम, जीवेश, जितेन्द्र, जीयालाल, ज्वाला प्रसाद	जीनिया, जिष्णु, जिज्ञासा
	अभि.	जू जे- जुगलकिशोर, जुग्यादेव, जैपालभारती	जूली,
		जो खा- जोगेन्द्र, खगेश, खगेन्द्र, जोगिन्दर	खुशरानी, खुबानी, ख्याति
	श्रवण	खी- खिलाड़ीराम,	खिलादेवी
		खू- खूबीराम	खुमानीदेवी
		खे- खेरातीलाल, खेमचन्द	खेलप्रिया
		खो-	
	धनिष्ठा	गा- गवनीश, ग्यारसीलाल, गंगाशरन	गार्गी, गतिका, गरिमा, गायत्री, गायारानी
		गी- गीतम, गिरधर, गिरीशकुमार, गिरिराज	गीता, गीतांजली, गीतिका, गिरिनन्दिनी
राशि- कुम्भ		गु- गुणवर्धन, गुट्लू, गुल्लू, गुरूप्रीति	गुड्डी, गुरमीत, गुंजन, गुंजिता, गुणवती
		गे- गेंदालाल, गेग्रीयलाल	
	शतभिषा	गो- गौरव, गोविन्द, गौरीशंकर, गोविल, गोरेशचन्द	गौरांगना, गौरी
		सा- संजय, सचिन, सतेन्द्र, सर्वेश, शरदचन्द शशिकांत, शशिभूषण, संदीप, सत्यव्रत	साधना, सरोज, सरिता, सारिका, सविता, सन्ध्या, शशी, साक्षी, स्वाती, संगीता
		सी- श्रीकांत, श्रीधर, शीतांशु, शीतलचन्द, सर्वेश शिवराज, शिवेन्दु, सिद्धार्थ, श्रीयांशु, श्रीचन्द्र	सीमा, श्रीप्रभा, शिक्षा, शिविका, शीला शिखा, शीला
		सु- सुकेश, सुधाकर, सुमित, सुरेश, सुरेन्द्र	सुभद्रा, शुचि, शुचिप्रभा, श्रुतिकीर्ति, सुमित्रा, सुधा
	पूर्वाभाद्रपद	से- शैलेन्द्र, सेवाराम, सेवकराम	शैलजा, शैलेन्द्री, सेवावती,
		सो- सौरभ, सोमेश, सोमदत्त, सोरनसिंह, शोभन	सोनिया, शोभा, शोभना, श्रोतिमा, शोभांगना
		दा- दामोदर, द्रुपद, द्वारिकाप्रसाद, दलवीर, दयानिधि, दयानन्द, दयाराम	दयावती, दुग्धिसुता
राशि- मीन		दी- दिनेश, दिनकर, दीपक, दीपेश, दीपांशु दीपेन्द्र, दिवस्पति, दिवेन्दु, दिलीप	दिव्यावती, दीपिका, दीप्ति, दीपशिखा
	उत्तराभाद्रपद	दु- दुलीचन्द, दुष्यन्त	दुलारी, दुर्गादेवी
		थ- थानसिंह	थानेश्वरी
		झ- झम्पनलाल	झिलमिली, झुनझुन
		ञ- झम्पनलाल	झिलमिली, झुनझुन
	रेवती	दे- देवेन्द्र, देवस्वरूप, देवराज, देवकीनन्दन, देवमणि, देवदास, देवीलाल, देवव्रत	देवप्रभा, देवकी, देवप्रिया, देवांगना, देवज्योति
		दो- दौलतराम	द्रौपदीद्युति
		च- चन्द्रकान्त, चन्द्रेश, चन्द्रमणि, चन्द्रभूषण	चन्द्रकान्ता, चंचल, चन्द्रिका, चारू, चन्द्रकला,
		ची- चीनू, चिन्टू, चित्रेश, चित्रक	चित्रलेखा, चित्रप्रभा, चित्रांगदा, चित्रा

पाया विचार- जन्मकुण्डली के १,६,११ वे स्थान में चन्द्रमा हो तो स्वर्णपाद, इसी प्रकार २,५,९ मे चांदी, ३,७,१० में तांबा ४,८,१२ वे भावमे चन्द्रमाहो तो लोहेके पाया से जन्म हुआ है ऐसा जानना चाहिए।

जन्मनक्षत्र से- आर्द्रादिदशकंरूपं विशाखादि युगलोहकम्।
पूर्वादि सप्तताम्रश्च रेवती षष्ठ स्वर्णकम्॥

आर्द्रा से दस नक्षत्र आ. पुन. पु. श्ले. म. पूफा. उफा. ह. चि. और स्वा. तक चांदीके पाया, विशा. अनु. ज्ये. मूल मे लोहपाद, पूषा. उषा. श्रव. धनि. शत. पूभा. उभा. तक ताम्रपाद और रेव. अश्वि. भ. कृ. रो. मृ. पर्यन्त नक्षत्रोमे जन्मलेने से स्वर्णपाद जानना। तांबा, चांदी श्रेष्ठ, लोहा और स्वर्णपाद फल नेष्ट होता है।

मंगली विचार

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय भर्तुः कन्याविनाशदः॥

जन्मकुण्डली के १।४।७।८।१२ वे भाव मे मंगल हो तो मंगली योग बनता है, जोकि दाम्पत्य जीवनमें व्यवधान कारक होता है। इसका शुक्र व चन्द्रमा से भी विचार करना चाहिए।

परिहार वाक्य-

भौमेन सदृशोभौमः पापो वा तादृशो भवेत्।
विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥
शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशोभवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्॥
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥
गुरूमंगलसंयोगे भौम दोषो न विद्यते।
चन्द्रमंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते॥
राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत्।
अथवा गुण बाहुल्यै भौमदोषो न विद्यते॥
अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते॥
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्युनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रणी नीचारिगृहे वार्कस्थेऽपि वा न कुज दोषः॥
केन्द्रे कोणे शुभाढ्यश्चेत् त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥

कन्या की जन्मकुण्डली में-

वाचस्पतौ नव-पंचम-केन्द्र-सस्थेजाताङ्गना भवति पूर्णविभूति युक्ता।
साध्वी सुपुत्र जननी सुखिवनी गुणाढ्या सप्ताष्ट यदि भवेदेश भग्रहोऽपि॥

॥शुभाशुभ योग॥

षष्ठाष्टेऽपि चन्द्रः सद्यो मरणाय पाप संदृष्टः।अष्टाभिः शुभ संदृष्टेर्वर्षमिश्रेस्वतद्र्धेन॥
शुक्लपक्षे निशायां च कृष्णजातो दिवा यदाषष्ठाष्टमगतश्चंद्रो न शिशुंहन्ति तातवत्॥

❋ नक्षत्र कष्टावली-ज्वरादिरोगोत्पातौशान्त्यर्थदानोपायज्ञानार्थ चक्रम् ❋

नक्षत्रनाम	कष्ट दिन	नक्षत्र चरणानुसार कष्ट दिन संख्या				शान्त्यर्थ धारणकरे	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	दानादि	जपार्थ मंत्राः	जप संख्या
१ अश्विनी	९ दिन	९	११	१०	२०	अपामार्गमूल	खांड, यव, घृत, मेवा	गुडोदन,तिल	भोजनदानम्	मृत्युञ्जय मंत्रजपः	५ सहस्र
२ भरणी	११ दिन	०	८०	४०	११	अगस्तमूल	घृत, मधु, तिलाक्षत	मिष्ठान्न(खिचडी)	गोन्नादिदानम्	यमायत्वेति मन्त्रः	१० सहस्र
३ कृत्तिका	९ दिन	९	११	१६	२८	कर्पासमूल	तिल, यव, घृत, शर्करा	पायस,घृत,मोदक	स्वर्णदानम्	अग्निर्मूर्धेति मन्त्रः	१० सहस्र
४ रोहिणी	७ दिन	७	९	१८	३०	अपामार्गमूल	तिलाज्य, घृत, यव	मध्वाज्य,क्षौद्र	घृतदानम्	ब्रह्मयज्ञेति मन्त्रः	५ सहस्र
५ मृगशिरा	एक मास	९	५	७	१०	जयन्तीमूल	दधि,मीठा,पायस,घी	दधि,शर्करा,शाल्यान्न	तिलदानम्	इमंदेवेति मन्त्रः	१० सहस्र
६ आर्द्रा	मृत्यु तुल्य	०	१८	०	०	सचन्दनाश्व	घृत,मधु,शर्करा	दध्योदन,मध्वाज्य	गोदानम्	नमस्ते रूद्रेति मन्त्रः	१० सहस्र
७ पुनर्वसु	७ दिन	७	१४	२	२१	अर्कमूल	घृत,दूध,तण्डुल	साज्य,पीततण्डुल	पित्तलदानम्	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	१० सहस्र
८ पुष्य	७ दिन	६	७	१०	२१	अपामार्गमूल	घृत,बूरा,पायस	समण्डक,मोदक	तैलान्नदानम्	बृहस्पतेति मन्त्रः	१० सहस्र
९ आश्लेषा	मृत्यु तुल्य	०	०	४१	०	पद्मावती	शर्करा,मेवाघृतबड़कादूध	हवि,दध्योदन	गोऽन्नादिदानम्	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	१० सहस्र
१० मघा	२० दिन	१५	७	१७	२०	भृंगराजमूल	तिल,घृत,तण्डुल	सतिलाज्य,दुग्धान्न	वस्त्राज्यदानम्	पितृभ्य इतिमंत्रः	१० सहस्र
११ पूर्वाफाल्गुनी.	मृत्यु तुल्य	०	१५	०	३०	कटहरीमूल	मालकांगिनी,तिल,घृत	घृतोदन,पायस	भोजनदानम्	भगप्रणेमीति मन्त्रः	१० सहस्र
१२ उत्तराफाल्गुनी	७ दिन	७	१४	७	६०	पद्मावती	मेवा,तिल,घृत,शर्करा	घृत,शर्करा,शाल्यन्न	अन्नदानम्	दध्यावर्द्धेति मन्त्रः	१० सहस्र
१३ हस्त	१५ दिन	१५	१७	१५	०	जातिमूल	दधि,मेवा,घृत,मीठा	मिष्ठान्न,पायस	तिलदानम्	उदुत्यंजातवेदेति मंत्रः	५ सहस्र
१४ चित्रा	११ दिन	११	९	९	१६	मलयजमूल	तिलाज्य,घृत,तण्डुल	विचित्रान्न,घृत	दुग्धदानम्	त्वष्टातुरियेति मन्त्रः	१० सहस्र
१५ स्वाती	मृत्यु तुल्य	६०	१७	३०	०	जातिमूल	तिल,यव,घृत,शक्कर	घृत,पायस	गोघृतदानम्	वायोरग्नेति मन्त्रः	१० सहस्र
१६ विशाखा	१५ दिन	१५	०	४	१३	गुञ्जामूल	आज्य,पायस,इन्द्रजौ,घी	सहवि,चित्रान्न	गोस्वर्णदानम्	इन्द्राग्नी इति मन्त्रः	१० सहस्र
१७ अनुराधा	स्थिर रोग	६०	१२	३६	३०	सुपुष्पमूल	यव,मीठा,घृत,आज्य	मध्वाज्य,गुड,माषान्न	गोघृतदानम्	नमोमित्रेति मन्त्रः	१० सहस्र
१८ ज्येष्ठा	मृत्यु तुल्य	६९	९	६	४	अपामार्गमूल	तिल,घृत,तण्डुल	दध्योदन,सुपुष्प	तिलान्नदानम्	त्रातार मिन्द्रेति मन्त्रः	५ सहस्र
१९ मूल	९ दिन	०	९	१५	६	मदारमूल	कन्दमूल,घृत, आज्य	सहवि,माषान्न	शैय्योपानदानम्	मातापुत्रेति मन्त्रः	५ सहस्र
२० पूर्वाषाढा	मृत्यु तुल्य	०	१५	२४	१०	कर्पासमूल	तिल,घृत,तण्डुल,मीठा	घृत,पायस,मिष्टान्न,हवि	गोमुक्तादानम्	आपोघमेति मन्त्रः	५ सहस्र
२१ उत्तराषाढा	एक मास	३०	२४	२६	१६	कर्पासमूल	तिल,आज्य,यव,मेवा	सहवि,पायस,तिलाज्य	भोजनदानम्	विश्वेदेवेति मन्त्रः	१० सहस्र
२२ श्रवण	११ दिन	६०	२४	६	९	अपामार्गमूल	तिल,आज्य,यव,शर्करा	सहवि,पायस	श्रीफलदानम्	विष्णोरराटेति मन्त्रः	१० सहस्र
२३ धनिष्ठा	१५ दिन	१५	४	२०	२१	भृंगराजमूल	तिल,आज्य,पायस,घी	पायस,मोदकपुष्पतिलपिष्ठ	अश्वान्नदानम्	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	१० सहस्र
२४ शतभिषा	११ दिन	४	४५	३	२२	कमलमूल	आज्य,घी,दध्योदन	घृत,गुड़,चित्रान्न	भोजनान्नदानम्	वरूणस्योत्तमिति मंत्रः	१० सहस्र
२५ पूर्वाभाद्रपदा	मृत्यु तुल्य	०	१२	२१	३९	भृङ्गराजमूल	क्षीर,आज्य,शर्करा,घी	दध्योदन,पायस	भोजनदानम्	अजेकचरणोक्त मन्त्रः	१० सहस्र
२६ उत्तराभाद्रपदा	७ दिन	१०	३	९	१५	अश्वत्थमूल	तिल,आज्य,यव,शर्करा	तिल,घृत,मुद्ग,माष	अन्नदानम्	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	१० सहस्र
२७ रेवती	स्थिर रोग	१८	१०	९	२०	अश्वत्थमूल	तिल,आज्य,तण्डुल,घी	सहवि,दध्यान्न	वृषभदानम्	पूषन्तव वर्वेति मन्त्रः	५ सहस्र

उपसूतिकाज्ञानम्- जन्मलग्न से चन्द्रमा तक जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना। उपसूतिकाओ मे स्त्री-पुरूष, वर्ण, जाति, अवस्थादि का विचार ग्रहानुसार करें। चन्द्रमा यदि लग्नसे सप्तम भाव तक हो तो प्रसूताके निकट अन्यथा दूरी पर थी ऐसा जानें। जन्मलग्न या लग्नेशके साथ अथवा द्वितीय एवं द्वादश भावमें जितने ग्रहहो उतनी उपसूतिका जाननी चाहिए। अन्तरिक्षजन्मज्ञानम्-प्रसूतिकाले मिथुन, कन्या, धनु और मीन लग्न हो तो पृथ्वी से ऊपर उच्चस्थान मे जन्म हुआहै ऐसा जानना। शेष लग्नोमे शिशु समतल भूमि पर होता है। शीर्षोदयराशियाँ-३।५।६।७।८।११ इनका नवांश लग्नमे हो तो बच्चेका जन्म सिर से और पृष्ठोदय १।२।४।९।१० राशियोके नवांशमे जन्म पैरो से एवं मीनका नवांश हो तो हाथोके बल जन्म हुआ समझें।

अथ मेषादिजन्मलग्नफलम्

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपक:।
सुधी: स्वजनहन्ता: च विक्रमी परवत्सल:।।

मेष लग्न में जिसका जन्म होता है वह उग्रस्वभाव, अभिमानी, गुस्सखोर, सुबुद्धिमान अपने बान्धवो का नाश करने वाला, पराक्रमी तथा दूसरोका प्यारा होताहै। नेष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८ विशेष दान-पुण्य परित्वेन पूर्ण आयु को भोगता है।

वृषलग्न भवोलोके गुण भक्त: प्रियंबद:।
गुणी कृती धनी लुब्ध: शूर: सर्वजन प्रिय:।।

वृष लग्नमे जिसका जन्म होताहै वह जातक लौकिक, गुणोमे प्रेम करने वाला, प्रिय बोलने वाला, गुणी, धनी, लोभी, वीर, समस्त जनसमुदाय का प्यारा होताहै। नेष्ट वर्ष १।२।८।३३।। ४४।६१ अन वस्त्रादि दान विप्रभोज्य महामृत्युञ्जय जपोरान्त आयु ९० वर्ष के निकट होती है।

मिथुनोदयसज्जातो मानी स्वजनवत्सल:।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्र्यरिमर्दक:।।

जिसकाजन्म मिथुन लग्नमे होताहै वह व्यक्ति मानी, स्वजनोका प्यारा, अल्पत्यागी, भोगी, धनाढ्य, कामी, दीर्घ सूत्री-चिरक्रिय (बड़ी देर से काम करने वाला) शत्रुओंका मानमर्दन करने वाला होताहै। नेष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५७ देवार्चन, गौ, दानादि परित्वेन पूर्णायु होती है।

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगीधर्मीजनप्रिय:।
मिष्टानपानभोगी च सुभाग्य: स्वजनप्रिय:।।

जिस जातकका जन्म कर्कलग्न मे होताहै वह भोगी, धर्मात्मा बहुजन, प्रिय, मिष्टानपान, भोगी, सुयश भाग्य वाला तथा कुटुम्बजनोका प्यारा होता है। नोट-भारत की जनता इस लग्नमे जन्म लेने वालो से बहुत स्नेह करतीहै। नेष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८ ।६२ जन्मकुण्डली में शुभाशुभ योगानुसार जप दानोपरान्त पूर्णायु होती है।

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दक:।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सौत्साही रणविक्रम:।।

सिंह लग्नमे जन्मेजातक भोगी, शत्रुओंका मान मर्दन करनेवाले, कृशोदर, स्वल्पपुत्रवान, उत्साही संग्राम मे पराक्रम दिखाने वाले होते हैं। नेष्ट वर्ष ५।१३।२८।३६।४८ भास्कर पूजन, दुर्गार्चनोपरांत आयु ८३ वर्ष।

कन्यालग्न भवोवालो नानाशास्त्र विशारद:।
सौभाग्यगुणसम्पन्न: सुन्दर: सुरतप्रिय:।।

जिसका कन्या लग्नमे होताहै वह बालक अनेक शास्त्रोमे चतुर, सामान्य गुण वाला, विषयाशक्त होता है। नेष्ट वर्ष ४।१६।२३ ।३६।५५, छायापात्र दान, गौदान, महामृत्युञ्जयजपोपरान्त पूर्णायु।

तुलालग्नोदयेजात: सुधी: सत्कर्मजीवन:।
विद्वान सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो नर पूजित:।।

तुला लग्नमे जन्मेजातक सुबुद्धिमान, सत्कर्मसे जीवन निर्वाह करने वाले, विद्वान, सर्वकला प्रवीण विद्वानोसे पूजित होतेहै। नेष्ट वर्ष ३।८।१५।३१।३५।४६।६२।६४ नेष्ट वर्षोमे शांति कराने से जातककी पूर्णायु होती है।

वृश्चिकोदयसंजात: शौर्यवानतिदुष्टधी:।
विज्ञानज्ञानसम्पन्न: सुखी सद्विग्रह: सुधी:।।

जिस जातकका जन्म वृश्चिक लग्नमे होताहै वह पराक्रमी, दुष्ट बुद्धि वाला, ज्ञान-विज्ञानसे सम्पन्न सुखी, दिव्य देह वाला सुविज्ञ होताहै। नेष्ट वर्ष ३।११।२८।३८ ।५१।६२ अरिष्टसमय के निवारण हेतु छायादान, महामृत्युञ्जयजाप ब्रह्मभोजनादिसे जातककीदीर्घायुहोती है।

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्धर्मवान्सुधी:।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञ: सर्वस्य पोषक:।।

धनु लग्नमे जिसकी उत्पत्ति होती है। वह नीतिवान धर्मवान तीव्रबुद्धि वाला अपने कुल मे श्रेष्ठ विद्वान सबका पोषण करने वाला होता है। नेष्ट वर्ष२।१०।१८। ३१।३८।४२ इनमे देवार्चन भौम पूजनादि अच्छा होता है। स्वल्पायु होतीहै तथा अन्य श्रेष्ठ ग्रहयोगसे दीर्घजीवी होते है।

मकरोदयसंजातो नीचकर्मा बहुप्रज:।
लुब्धोऽलसो विनष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यम:।।

जिसका जन्म मकर लग्नमे होताहै, वह जातक नीचकर्म करने वाला, बहुसन्तानवान, लोभी, आलसी होनेसे अपने कार्यको नष्टकरने वाला होताहै। नेष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७ छायापात्र, माषान्न, स्वर्ण, तेलादिदान, रूद्राभिषेकोपरान्त पूर्णायुको भोगताहै।

कुम्भलग्नोदये जातश्चलचित्तोऽतिसौहृद:।
परदाररतो नित्यं मृदुकायो महासुखी।।

कुम्भ लग्नमे जन्मेजातक चन्चलचित्त, बहुमित्र, विषयाशक्त, कोपलदेह वाले, महासुखी होते है। नेष्ट वर्ष २।१०।२८।३३।४८।६४ विशेष दान-पुण्य परित्वेन पूर्णायु।

मीनलग्नोदये जातो रत्नकांचनपूरित:।
अल्पकामोऽतिदौर्बल्य: दीर्घकालविचिंतिक:।।

मीन लग्नमे जन्मेजातक रत्नकांचनोंसे परिपूर्ण, स्वल्पकामी क्रशतन, दीर्घकालीन चिंतन करनेवाले होतेहै। नेष्ट वर्ष १।८। १८।२५।४८ गुरूपूजन, देवार्चनादिसे पूर्णायु को प्राप्त होतेहै।

अथ मेषादिजन्मराशिफलम्

मेष- राशि में जन्मे जातक साहसी, वीर, विपत्तियों में न घबराने वाले निडर होते हैं। जो निर्णय लेना होता है उसे वे स्वयंही ले डालतेहैं, अपने लक्ष्यके प्रति सतत जागरूक रहतेहुए अत्यंत खेलप्रिय होतेहैं, प्रेम से अघाते नही, मेष अग्नितत्व राशि होनेके कारण जातक प्रतिभाशाली ओजपूर्ण होतेहै। अन्यव्यक्ति सदैव इनसे प्रभावित होते रहतेहैं।

वृष- राशि मे जन्म लेने वाले अधिकांशत:हृष्ट-पुष्ट होतेहैं। परिश्रमी प्रतिकूल परिस्थितियोको अनुकूल बनाने वाले, सहनशील, धैर्यशाली हृदयंगम गृहस्थजीवन को सफलता पूर्वक चलाने वाले, समराशि होनेके कारण स्वल्पखर्च, समव्यवहार, ईमानदार, ख्याति प्राप्त होते हैं, अनुशासन प्रेमी, मानसिक दृढ़ता स्मरणशक्ति तेज होतीहै।

मिथुन- वायुतत्व प्रधान मिथुनराशिमे जन्मेजातक सौभाग्यशाली, बुद्धिजीवी वाक्यचातुर्य गुणोसे सम्पन्न, अपनेको परिस्थिति अनुसार बदल लेतेहैं।, अर्थात् ये स्थिरबुद्धि के नही होते, विषयाशक्त, वाल्यल्पकाल उत्तम नही कहा जा सकता, ३० वर्ष की आयुके बाद अपने निजी व्यवसाय से धनी बनते है। योजनाबद्ध कार्य करतेहुए सफलता प्राप्त करतेहैं। बेईमानी से धनकमाना इन्हे पसन्द नही, इसी से समाजमे सम्मान प्राप्त करतेहैं।

कर्क-जलतत्व चरराशिमे जन्मेजातक भावुकताप्रिय, बुद्धिजीवी, अपनी बुद्धिकी प्रबलताके कारण कठिन से कठिन कार्यको भी सहज कर लेतेहैं। अपने मित्रोकी राय इन्हे अधिक पसन्द होतीहै। जिसके फलस्वरूप समय-समय पर धोखा भी खाते रहते हैं, इनमे लीडरोके गुण हृदयंगम् होतेहैं और समय पाकर उभर आते हैं।

सिंह-राशिमे जन्मेजातक निडर, साहसी, विघ्नबाधाओ पर विजय प्राप्त करनेवाले, परिस्थितियोंके अनुकूल अपनेको ढालनेवाले १४-१५ घंटे काम करनेपर भी न थकनेवाले होतेहैं। अपनी सिंह रूपी गर्जना व वाक पटुता से दूसरोंको प्रभावित करते रहतेहैं। अल्पभाषी निजीकार्यमे व्यस्त रहतेहैं।

कन्या-राशिमे जन्मेजातक परिश्रमी अत्यंत विषयासक्त विघ्न-बाधाओ पर हसं-हंसकर विजय प्राप्त करनेवाले होतेहैं। व्यक्तित्वपूर्ण इनकी थाह पाना आसान नही, परिवार वालोंकी मदद भरपूर करतेहै, इनका ध्येय होता है पढ़ना, मनन करना और धनोपार्जनकर सुख प्राप्त करना, कुशल प्रशासक मैनेजर, वकील, जज, साहित्यकार और व्यापारमे इनके प्रयल सराहनीय होतेहैं।

तुला-राश्यान्तर्गत जन्मेजातक ईमानदार, कटु सत्य प्रिय, न्यायकारी, प्रलोभन परित्यागी, परिश्रममें विश्वास करनेवाले, शांतिप्रिय प्रेमीजनोंमे घनिष्ठ प्रेम करने वाले, हरएक विषयकी तुलना करने वाले शत्रुओंसे घिरा जीवन अस्त-व्यस्त रहताहै। यह विरोधपूर्ण बातें कटु व्यवहार टालकर अपनी कूटनीतिसे अपने सामूहिक व्यवहारमे रद्दोबदल करतेहुए सफलताकी सीमापर पहुंच जातेहै।

वृश्चिक-राशिमे जन्मेजातक कठोर परिश्रमी, चरित्रवान, ईमानदार अपनी कही हुई बातसे न मुकरने वाले, हठी होते हैं। विपरीत परिस्थितियोंको अनुकूल बनानेमे चतुर, प्रारम्भिक जीवनमे कम सुख लगभग २५ वर्षकी आयुके उपरांत सफलताओंकी ओर अग्रसर होतेहैं। इनमे स्वतन्त्र चिंतनका विशेष गुण होताहै। जिसके फलस्वरूप विशेष शोधपूर्ण कार्यरत डाक्टर, सर्जन इंजीनियर आदि पाए जातेहैं। गम्भीरता पूर्वक सोचविचारकर कदम बढाने वाले राष्ट्रभक्त स्वाभिमानी होते हैं।

धनु-राशिमे जन्मलेने वाले व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट सर्वांगसुन्दर आकर्षक होते हैं। ये अपने पास आनेवाले व्यक्तिके भावको तुरंत हृदयंगम् कर समयानुकूल उचित उत्तर देते है। घनिष्ठसम्बंध कायम करनेमे चतुर, नाच गानेमे भी अधिक बढ़-चढ़कर भाग लेतेहैं। शारीरिकश्रम की अपेक्षा बुद्धिजीवी होते है। विपत्तिमे भी हंसना, खाओ मौज उड़ाओ ऐसी भावना के होते हैं।

मकर- राश्यान्तर्गत जन्मे जातकोंमे सामाजिक गुण अधिक पाए जाते है। ये कभी दूसरोका अहित करनेमे हिचकिचाते नही, जिद्दी नम्बर एक के होतेहैं। इनके कहने और करने मे जमीन आसमान का अन्तर होता है। दाम्पत्य सुखोपभोग के साधन इन्हे पूर्णरूपेण प्राप्त होताहै।

कुम्भ- राशि वायुतत्व प्रधान होनेसे वात कफ प्रकृति युक्त जातक होते है मानसिकचिंतन अकब्बपराक्रमी दूरदर्शी, चंचलप्रवृत्ति, ओजपूर्ण, साहसी, अपने लक्ष्य के प्रति निरन्तर बढ़ने वाले, दृढ़निश्चयी, अत्यंतकामी होतेहै। कुम्भ मे जन्मेव्यक्ति अपने कार्यको कलपर छोड़ देते है। आलस्य प्रमादवस काम बिगड़ भी जाते है।

मीन-राश्यान्तर्गत जन्म लेनेवाले जातक जलप्रवासी, स्वच्छ हृदय, एकांकी होते है। नूतन लक्ष्यकी पूर्तिहेतु नितनई योजनाओंमे उलझे रहते है। दाम्पत्य सुख न्यून ही कहा जा सकता है, नेतागिरी के गुण समय पर उभर आते है। समराशि मे जन्मलेनेके कारण जातक आवश्यकतासे अधिक भार नही, उठाते, दोस्तोसे जीवनमे कईबार हानिउठानी पड़तीहै, कईबार तो इतने साहसहीन हो जातेहैं कि दुश्मन इनका सर्वस्व हरण कर लेते हैं।

※ मेषादि राशियों के लिये मास दशा देखने की सारिणी ※

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता. १३ अप्रै. से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१४मई से सूर्य दशा२० दिन तक	ता.३ अप्रैल से शुक्र दशा ७० दिनतक	ता.२२मार्च से राहु दशा ४२ दिनतक	ता.२२अप्रैल से राहु दशा ४२दिन तक	ता. २४मार्च से गुरु दशा ५८ दिनतक	ता. १८मार्च से शनि दशा ३६दिनतक	ता.१७अप्रैल से शनि दशा ३६दिनतक	ता. २२मार्च से बुधदशा ५६ दिनतक	ता. २४मार्च से मंगलदशा २८ दिनतक	ता.२३अप्रै. से मंगलदशा २८ दिनतक	ता. ३ अप्रैल से चन्द्र दशा ५० दिनतक
ता.४मई से चन्द्र दशा५० दिन तक	ता. ४जून से चन्द्र दशा५० दिन तक	ता. १५जून से सूर्य दशा २० दिनतक	ता.४मई से शुक्र दशा७० दिन तक	ता.४जून से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२२मई से राहु दशा ४२ दिन तक	ता. २३अप्रै. से गुरु दशा ५८ दिनतक	ता.२५मई से गुरु दशा ५८ दिनतक	ता.१८मई से शनिदशा ३६ दिनतक	ता.२१ अप्रै. से बुध दशा ५६ दिनतक	ता. २२मई से बुधदशा ५६दिन तक	ता. २५ मई से मंगलदशा २८ दिनतक
ता. २५ जून से मंगलदशा २८ दिन तक	ता.२७जौला. सेमंगल दशा २८ दिनतक	ता. ६ जुला. से चन्द्रदशा ५० दिनतक	ता.१६ जुला. से सूर्य दशा २० दिनतक	ता.१६ अग. से सूर्य दशा २० दिन तक	ता. ६ जुला. से शुक्रदशा ७० दिनतक	ता.२४जून से राहु दशा ४२दिनतक	ता.२५जुला. से राहु दशा ४२ दिनतक	ता. २५जून से गुरुदशा ५८दिनतक	ता.१९ जून से शनिदशा ३६ दिनतक	ता.२० जुला से शनिदशा ३६दिनतक	ता. २४जून से बुधदशा ५६ दिनतक
ता.२५ जुला. से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२५अग. से बुध दशा ५६ दिनतक	ता.२७अग.से मंगल दशा २८ दिनतक	ता. ६ अग. से चन्द्रदशा ५० दिन तक	ता. ६ सित. से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता. १७सित. से सूर्य दशा २० दिनतक	ता. ६ अग. से शुक्र दशा ७० दिनतक	ता. ६सित. से शुक्र दशा ७०दिनतक	ता. १५अग. से राहुदशा ४२ दिनतक	ता.२७जुला. से गुरुदशा ५८ दिनतक	ता.२७अग. से गुरुदशा ५८ दिनतक	ता.२१ अग. से शनिदशा ३६ दिनतक
ता.२१ सित. से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२१अक्टू. से शनिदशा ३६दिनतक	ता.२५सित. से बुधदशा ५६दिन तक	ता.२७सित. से मंगलदशा २८ दिनतक	ता.२७अक्टू. से मंगलदशा २८ दिनतक	ता.७अक्टू. से चन्द्र दशा ५० दिनतक	ता.१७अक्टू. से सूर्य दशा २०दिनतक	ता. १६ नव. से सूर्यदशा २० दिनतक	ता. ७अक्टू. से शुक्र दशा ७०दिनतक	ता.२५सित. से राहुदशा ४२ दिनतक	ता.२५अक्टू. से राहुदशा ४२ दिनतक	ता.२७ सित. से गुरूदशा ५८ दिनतक
ता.२७अक्टू. से गुरु दशा ५८दिन तक	ता.२६ नव. से गुरुदशा ५८ दिनतक	ता. २०नव. से शनिदशा ३६दिनतक	ता.२५अक्टू. से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२४ नव. से बुधदशा ५६दिनतक	ता. २६नव. से मंगलदशा २८ दिनतक	ता. ६ नव. से चन्द्र दशा ५० दिनतक	ता. ६ दिस. से चन्द्रदशा ५० दिनतक	ता. १५दिस. से सूर्यदशा २०दिनतक	ता.६नव. से शुक्रदशा ७० दिनतक	ता.६ दिस. से शुक्रदशा ७० दिनतक	ता. २४नव. से राहुदशा ४२ दिनतक
ता.२४ दिस. से राहु दशा ४२ दिन तक	ता. २२जून से राहु दशा ४२दिन तक	ता.२५दिस. से गुरु दशा ५८ दिनतक	ता.१९दिस. से शनिदशा ३६ दिनतक	ता.१८जन. से शनि दशा ३६दिनतक	ता.२३सित. से गुरु दशा ५६ दिनतक	ता. २५दिस. से मंगलदशा २८दिनतक	ता. २४जन. से मंगलदशा २८दिनतक	ता. ४जन. से चन्द्रदशा ५० दिनतक	ता. १४जन. से सूर्यदशा २० दिनतक	ता. १२ फर. से सूर्यदशा २० दिनतक	ता. ४ जन. से शुक्रदशा ७० दिनतक
ता. २ फर. से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता. ४ मार्च से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता. २०फर. से राहु दशा ४० दिनतक	ता.२४ जन. से गुरु दशा ५८ दिनतक	ता. २२फर. से गुरुदशा ५८दिनतक	ता. १७फर. से शनि दशा ३६दिनतक	ता. २२जन. से बुध दशा ५६दिनतक	ता. २०फर. से बुध दशा ५६दिनतक	ता. २२फर. से मंगलदशा २८दिनतक	ता. २फर. से चन्द्रदशा ५० दिनतक	ता. ४ मार्च से चन्द्र दशा ५० दिनतक	ता. २४मार्च से सूर्यदशा २० दिनतक

शनि विचरण पादफलज्ञानम्: जिस दिन ग्रह राशि परिवर्तन करे, उस दिन चन्द्रमा जिस राशि में हो वह राशि, जन्मराशि अथवा नामराशि से गिनने पर १।६।११ वी हो तो स्वर्णपाद से ग्रह का भ्रमण हो रहा है ऐसा जानें। इसी प्रकार २।५।९ रजतपाद ३।७।१० ताम्रपाद, ४।८।१२ लोहपाद समझें **फलम्-लोहे धनविनाश: स्यात्सर्वसौख्यं च कांचने। ताम्रे च समताज्ञेया सौभाग्य रजते भवेत्।।** स्मरण रहे- शनि, राहु केतु का लोहपाद, गुरु का स्वर्णपाद, और मंगल का ताम्रपाद शुभद होता है। स्व.स्व. कारकत्वेन पादफल शुभाशुभ जानकर निर्णय करें। रजतपाद फल सभी को श्रेष्ठ होता है। **शनि वाहन-** तिथि, वार, नक्षत्र और नामाक्ष जोड़कर ९ से भाग दें। १ शेष मे गदा, २ घोड़ा, ३ हाथी, ४ भैसा, ५ स्यार, ६ सिंह ७ कौआ, ८ मोर, ९ हंस होता है। वाहनफल- कलह, बुद्धिभ्रम, लाभ, व्याधि, भय, विजय, चिन्ता, सुख और सम्पत्ति दायक होता है। शनि की साढेसाती विचार- जिस राशि मे शनि भ्रमण करता है उससे बारहवी और दूसरी राशि को भी त्रस्त करता है। तीन राशियों का भोगकाल साढेसात वर्ष होता है। शनि की साढेसाती लगने से १०० दिन मुख पर रहता है। उसका फल हानिकारक होता है। ऐसे ही ४०० दिन दक्षिण भुजा मे फल विजय। दिन ६०० चरणों मे यत्र-तत्र भ्रमण दिन ४०० वामभुजा मे दु:ख। दिन ५००उदर मे लाभ। दिन३०० मस्तक पर राज्य लाभ। दिन २०० नेत्रों मे दु:खप्रद। दिन २०० गुदा मे दु:ख प्रद इस प्रकार शनि २७०० दिन साढे साती दशा भोगता है।

अथ शनिफलम्

मुखे दिन	१००	रोगं	उदरेदिन	५००	लाभं
द.करे	४००	लाभं	शिरसि	३००	सौभाग्यं
पादयो:	६००	भ्रमणं	नेत्रयो:	२००	मरणं
वाम करे	४००	निर्धनं	गुदे	२००	मरणं

※ सुयोगकुयोगादिज्ञानायचक्रम् ※

योगा:		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सिद्धियोग	तिथि -	+	+	३-८ १३	२-७ १२	५-१० १५-३०	१-६ ११	४-९ १४
क्रकचयोग	-	१२	११	१०	९	८	७	६
मृत्युयोग	-	१-६ ११	२-७ १२	१-६ ११	३-८ १३	४-९ १४	२-७ १२	५-१० १५
दग्ध	-	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्या	-	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन	-	१२	६	७	८	९	१०	११
अमृतसिद्धि	नक्षत्र	हस्त	मृग.	अश्वि	अनु	पुष्य	रेवती	रोहि.
सिद्धि योग	-	मूल	श्रवण	उभा	कृत्ति	पुन	पूभा	स्वाति
चरयोग	-	पूषा	आर्द्रा	विशा.	रोहि.	शत	मघा	मूल
उत्पात	-	विशा	पूषा	धनि	रेवती	रोहि.	पुष्य	उषा
मृत्यु	-	अनु	उषा	शत.	अश्वि.	मृग	श्ले	हस्त
काण	-	ज्येष्ठा	अभि	पूभा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
कालयोग	-	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पूषा
यमघंट	-	मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृत्ति.	रोहि.	हस्त
यमदंष्ट्रा	-	मघा धनि	मूल विशा.	कृति. भरणी	पुन. रेवती	उषा अश्वि.	रोहि. अनु.	श्रवण शत
दग्धनक्षत्र	-	भरणी	चित्रा	उषा	धनिष्ठा	उफा	ज्येष्ठा	रेवती
सर्वार्थसिद्धि योग	- - -	मू.३३ हअश्वि पुष्य	अनु. श्र.रो. मृ.पुष्य	उफाह अश्वि श्ले	ह.कृ. रो.अनु मृग.	पुन.पु रे.अनु अश्वि.	अश्वि. रे.अनु पुन.श्र	श्रव. रोहि. स्वाती
वारवेला	याम घटी	४ ३॥।	७ ३॥।	२ ३॥।	५ ३॥।	८ ३॥।	३ ३॥।	६ ३॥।
कुलिक	मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कंटक	-	६	४	२	१४	१२	१०	८
काललवेला	-	८	६	४	२	१४	१२	१०
अर्धयाम	-	७	९	३	९	१५	५	१
यमघंट	-	१०	८	६	४	२	१४	१२
विषघटी	-	२०	२	१२	१०	७	५	२५

रवियोग- सूर्याश्रित नक्षत्र से इष्ट दिन दैनिक चान्द्र नक्षत्र तक गिनने पर ४।६।९।१०।१३।२० वां नक्षत्र हो तो रवियोग बनता है, जोकि त्रयोदश कुयोगो का नाश करता है। रविपुष्य एवं गुरुपुष्य योग बनने पर दोषसमूह का नाश होता है।

❀ अथ सूर्यादिग्रहणां विविधविषयोपयोगी गुणधर्मज्ञानार्थचक्रम् ❀

ग्रहाः	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
Planets	Sun	Moon	Mars	Mercu.	Jupiter	Venus	Saturn	Ascen.N	Desce.N
सितारा	आफताब	माहताब	मिरीख	उतारूद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास	जनव.
एकपाद दृष्टि	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०
दोपाद दृष्टि	५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९
तीनपाद दृष्टि	४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७
नक्षत्र दृष्टि	५।१५	१५	७।८।१०।१५	९।१२।१५	१०।१५।१९	९।१२।१५	३।५।१५।१९	९।१५	९।१५
भाग्योदय वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
भोग्यकाल	१ मास	२। दिन	१॥ मास	१ मास	१३ मास	१ मास	३० मास	१८ मास	१८ मास
मित्र ग्रहाः	चं.मं.गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू.शु.रा.	सू. चं. मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु
सम ग्रहाः	बु.	मं.गु.शु.श.	शु. श.	मं.श.गु.	श.रा.	मं. गु.	गुरु	गुरु	०
शत्रु ग्रहाः	शु.श.रा	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं.मं.	सू.चं.मं.	०
उच्च राशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु
परमोच्चांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
नीचराशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन
परमनीचांश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
स्वगृह (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चि.	मिथु. कन्य.	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मीन
मूलत्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर
अंश तक	२०तक	४से३०तक	१८ तक	१६से२०तक	१३ तक	१० तक	२० तक	-	-
बलवत्तमभाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	-	-
कारकभाव	१।९।१०	४	३।६	४।१०	२।५।९।१०।११	७	६।८।१०।१२	-	-
शुभ-पाप	उग्र	शुभाशुभ	पाप	शुभाशुभ	शुभ	शुभ	पापाति	पाप	पाप
गुण	सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम

ग्रहाः	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
Planets	Sun	Moon	Mars	Mercu.	Jupit.	Venus	Saturn	Asc.N	Des.
सितारा	आफताब	माहताब	मिरीख	उतारूद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास	जनव.
ग्रहो के रत्न	माणिक	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	फिरोजा
स्त्री पुरूष	पुरूष	स्त्री	पुरूष	नपुंसक	पुरूष	स्त्री	नपुंसक	पुरूष	पुरूष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्यशूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अन्त्यज	शूद्र	निषाद
देवता	अग्नि	वरूण	स्कन्द	विष्णु	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनीविद्या	गारुडी	गुप्ततंत्र
काल-पुरूष	आत्मा	मन	सत्वशौर्य	वाणी	ज्ञानसुख	कामसुख	दुःख	[illegible]	[illegible]
आकार	चतुरस्त्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	[illegible]
समय	मध्यान्ह	अपरान्ह	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
धातु	सुवर्ण	चांदी	सुवर्ण	कांस्य	हीरसु	चांदी	लोहा	लोहा	लोहा
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंग	अपद	अपद
चरादि संज्ञा	स्थिर	चर	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	पक्षीस्थिर	चर	[illegible]
रस	तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाद	कषाद
स्थान	पशुभूमि	जलभूमि	दग्धभूमि	शमशान	देवस्थान	जलभूमि	उत्कर	ऊषर	ऊषर
प्रकृति	पित्त	श्लेष्म	पित्त	सम	सम	कफ	वात	वात	वात
अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रित	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
पदासीन	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मन्त्री	गुप्तचर	प्रेष्यदूत	सेवक	[illegible]
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्निदग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्रित	[illegible]
स्वभाव	क्रूर	सोम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप

ग्रहो के उपग्रह-

अर्थात् अब तक (सन् १९९८ तक) प्राप्त जानकारी के अनुसार किस ग्रह के इर्द गिर्द कितने चन्द्रमा चक्कर लगाते है यथा-पृथ्वी का चन्द्रमा १, इसी प्रकार मंगल के २, बृहस्पति के १६, शनि के २०, हर्शल के १५, नेपच्यून के ८, और प्लूटो का १ चन्द्रमा है। प्लूटो के उपग्रह के विषय मे सभी खगोलविद अभी एकमत नही है।

अनन्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त तारों की दूरी- ज्ञात करने के लिये विद्वानो ने जो विधि निकाली है वह है प्रकाशवर्ष अर्थात् सबसे तेज गति प्रकाश की होती है। सूर्य की किरणे ८ मिनट मे करीब १४,९६,००,००० किमी. की दूरी पार करके पृथ्वी तक पहुंच जाती है; इसीलिये कहा जाता है कि पृथ्वी और सूर्य के मध्य की दूरी ८ प्रकाश मिनट दर है। प्रति १ वर्ष मे प्रकाश करीब ९४,६३,००,००,००० किमी. की गति से चलता है।

हर्शल(यूरेनस–वरुण) का भगणकाल ८४ वर्ष ८ दिन है। प्रत्येक राशि मे लगभग ७ वर्ष तक रहता है। प्रकृति खल बलिष्ठ तमोगुणी अशुभ विलक्षण है। जलतत्त्व प्रधान ग्रह हर्शल की राशि कुम्भ है।, जिसमे स्वगृही माना जाता है। यह मिथुन तुला और कुम्भ मे अत्यंत बलवान समझा जाता है। मेष और वृश्चिक राशि मे अत्यंत घातक फल देता है। जन्म कुण्डली के ५।९।१०।११ वे भाव मे शुभ और अन्य स्थानो मे अशुभ फल देता है। हर्शल के कारकत्व समस्त वाहन यातायात, डाक, तार, टेलीफोन तथा बिजली विभाग। उच्च टेक्नोलॉजी, इन्जीनियर्स विभाग एवं भौतिक सुख दुःख संयोग वियोग माने गये है।

नेपच्यून (इन्द्र) का भगणकाल १६४ वर्ष २८५ दिन, प्रत्येक राशि मे लगभग १३ वर्ष २६७ दिन तक रहता है। यह जलतत्त्व प्रधान ग्रह है। नेपच्यून की राशि मीन है। यह अर्थ, धर्म, गुरु चन्द्रमा के समान शुभ है। जन्म कुण्डली के १।५।९ वे भाव मे सत्त्वप्रधान २।४।६।८।१२ वे भाव मे तम प्रधान और ११ वे स्थान मे रजप्रधान समझा जाता है। नेपच्यून को क्रमशः ११।७।३।४।१२ वी राशियाँ प्रिय है। यह ३।४।७।८।१२वी राशि मे बहुत ऊँचा शुभ फल देता है। नेपच्यून के कारकतत्त्व मे फल फूलदार वृक्ष वनस्पति, औषधि, खेती की पैदावार, वर्षण, अवर्षण, भूस्खलन, भूकम्प,झन्झावात,ओलावृष्टि हिमपात, आंधी तूफान।

ग्रहो से सम्बंधित जानकारी- हमारे इस सौर परिवार के मध्यस्थ भुवन भास्करभगवान सूर्य के इर्द-गिर्द परिक्रमा करने वाले ग्रहोमे सबसे नजदीक बुध ग्रह है, द्वितीय कक्षा मे शुक्र,तृतीय मे पृथ्वी, चतुर्थ मे मंगल, पंचम मे बृहस्पति, छठी कक्षा मे शनि, सातवी मे हर्षल (यूरेनस), आठवी मे नेपच्यून, और नवी कक्षा मे प्लूटोयम, निर्बाध गति से प्रदक्षिणा करता रहता है। पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमाको मिलाकर ११ सदस्यो से शोभायमान आकाश गंगा सहित अनेक तारासमूहोसे सुशोभित अंतरिक्ष बहुत ही सुहावना लगता है। **पृथ्वी से ग्रहों की दूरी(किलोमीटर में)-** चन्द्रमा ३८,००००० शुक्र ४,१४,००,००० बुध ९,१७,००, ००० सूर्य १४,९६,००,००० मंगल ७,८३,००,००० गुरु ६२, ८७, ००,००० शनि १,२७,७४,००,००० यूरेनस २,७२,०४,००,००० नेपच्यून ४,४४,४४,००,००० प्लूटो ५,७५,०४,००,०००.

ग्रहो का परिभ्रमण काल- पृथ्वी २३.५६, चन्द्रमा २७.३२, बुध ५८.६५ शुक्र २४.३ मंगल १.०२, गुरु ०.४१, शनि ०.४४, हर्षल ०.६५, नेपच्यून ०.७७, प्लूटो ६.३८

ग्रहो का परिक्रमा काल- दिवस दशमलव मे पृथ्वी ३६५.२५६३६ चन्द्र २७.२५६३०, बुध ८७.९६२६, शुक्र २२४.७००८, मंगल ६८६.९७९८२, गुरु ४३३२.५८८९६, शनि १०७५९.२२६२०, हर्षल ३०६८८.४४१७५ नेपच्यून ६०१८१.२७९११ और प्लूटो १०७३६.०५६४० है।

॥ मेषादि राशियोंकी संज्ञादि ज्ञानार्थ चक्रम् ॥

राशिनाम	पु.स्त्री	चरादि	तत्त्व	पृष्टकृश	पाद	वर्ण	गुण	धातु	शब्द	स्थान	क्रूरादि
मेष	पुरुष	चर	अग्नि	दृढ़	चतुष्पद	पाटलरक्त	तप्तदेह	पित्त	अतिरव	पर्वत	उग्र
वृष	स्त्री	स्थिर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्पद	श्वेत	शीत	वायु	अतिरव	समभूमि	सौम्य
मिथुन	पुरुष	द्विस्वभाव	वायु	मृदु	द्विपद	हरित	तप्त	समधा	दीर्घशब्द	वनचर	उग्र
कर्क	स्त्री	चर	जल	मृदु	अपद	पाटल	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य
सिंह	पुरुष	स्थिर	अग्नि	दृढ़	चतुष्पद	धूम्र	उष्ण	पित्त	दीर्घशब्द	पर्वत	उग्र
कन्या	स्त्री	द्विस्वभाव	पृथ्वी	कृश	द्विपद	पांडुरंग	शीत	वायु	अर्धशब्द	रामभूमि	सौम्य
तुला	पुरुष	चर	वायु	दृढ़	द्विपद	विचित्र	उष्ण	समधा	शब्दहीन	वनचर	उग्र
वृश्चिक	स्त्री	स्थिर	जल	कृश	बहुपद	श्वेत	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य
धनु	पुरुष	द्विस्वभाव	अग्नि	दृढ़	द्विपद	सुवर्ण	उष्ण	पित्त	अतिशब्द	पर्वत	उग्र
मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्पद	पीत	शीत	वायु	अतिशब्द	वनचर	सौम्य
कुम्भ	पुरुष	स्थिर	वायु	दृढ़	अपद	कुर्बर	उष्ण	समधा	खंडशब्द	समभूमि	उग्र
मीन	स्त्री	द्विस्वभाव	जल	दृढ़	अपद	धूम्र	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य

राशिनाम	बलस	विषम-सम	दिशा	स्त्रीसंग	क्रान्ति	जाति	उदय	ऋतु	दुरज	Zodiac	राशिनाम
मेष	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	पृष्ठोदय	वसन्त	हमल	Aries	मेष
वृष	रात्रि	सम	दक्षिण	मध्य	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	ग्रीष्म	सूर	Taurus	वृष
मिथुन	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	ग्रीष्म	जौज़ा	Gemini	मिथुन
कर्क	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	पृष्ठोदय	वर्षा	सर्तान्	Cancer	कर्क
सिंह	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	शीर्षोदय	वर्षा	असद	Leo	सिंह
कन्या	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	शीर्षोदय	शरत्	सुंबुला	Virgo	कन्या
तुला	दिवा	विषम	पश्चिम	अल्प	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	शरत्	मीज़ान	Libra	तुला
वृश्चिक	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	शीर्षोदय	हेमन्त	अकरब	Scorpio	वृश्चिक
धनु	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्री	पृष्ठोदय	हेमन्त	कौस	Sagitta	धनु
मकर	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	शिशिर	जदी	Capricor.	मकर
कुम्भ	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	शिशिर	दलु	Aquarius	कुम्भ
मीन	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	उभयोदय	बसन्त	हूत	Pisces	मीन

॥ तारागुण बोधक चक्र ॥

कन्या ↓ / वर →	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

॥ गणगुण चक्र ॥

कन्या ↓ / वर →	देव	म	रा
देव	६	५	१
मज	६	६	०
राक्ष	०	०	६

॥ नाडीगुण चक्र ॥

कन्या ↓ / वर →	आ	म	अं
आ	०	८	८
म	८	०	८
अं	८	८	०

॥ बश्य गुण चक्र॥

कन्या ↓ / वर →	द्वि.	चतु	जल	वन	की.
द्विपद	२	१	॥	०	१
चतुष्पद	१	२	१	०	१
जलचर	॥	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

॥ वर्ण गुण चक्र॥

कन्या ↓ / वर →	ब्रा.	क्ष.	वैश.	शू.
ब्रह्माण	१	०	०	०
छत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

तारा ज्ञानम्- वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक और कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देना, शेष बचे उससे तारा चक्र द्वारा गुण लेना। शेष यदि ३।५।७ बचे तो अशुभ जानें।

॥ योनिगुण बोधक चक्र ॥

कन्या ↓ / वर →	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	२	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	१	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	२	२	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गो	२	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	३
मृग	३	३	३	२	०	३	३	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

॥ ग्रहगुण चक्र ॥

कन्या ↓ / वर →	रवि	चन्द्र	मंग	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
र	५	५	५	४	५	०	०
च	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	४	१	॥	५	॥	५	४
गु	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	०	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

भकूट गुण ज्ञानम्- वर-कन्या की परस्पर राशि ३।११ व ४।१० तथा ७।७ हो तो ७ गुण लेना अन्यथा ० गुण लेना। यदि राशि स्वामी एक हो अथवा मैत्री सम्बन्ध हो । तो ६।८ तथा २।१२ एवं ५।९ भी ग्राह्य है अन्यथा नही। राशियों के परस्पर शुभाशुभ योगज्ञानार्थचक्रतीसरेपृष्ठपरदिया गया है।

वर-कन्या गुण गणना उदाहरण-

वर का नाम नीरज अनुराधा नक्षत्र राशि वृश्चिक, कन्याका नाम उर्मिला कृति. का नक्षत्र भाग२ राशि वृष होने के कारण गुण २४॥ मिलते हैं। गण नही मिला जिसके परिहार में एकाधिपत्य है। १८ से अधिक गुण मिलने पर यदि कोई दोष रहे तो उसका परिहार भी उसीमें हो जाताहै। यह धर्मसिन्धु की मान्यतानुसार है।

वर्गा	कन्या	गुण	वर
वर्ण	वैश्य	१	विप्र
वश्य	चतु.	१	कीटक
तारा		१॥	शेष५
योनि	मेष	३	मृग
ग्रहमै	शुक्र	३	भौम
गण	राक्षस	०	देव
भकूट	सात	७	सात
नाडी	अन्त्य	८	मध्या
	कुल २४॥		योग

❁वर कन्या गुण मेलापक सारणी आगेके पृष्ठ नं. (106)पर छपी है।

।। अथ विवाह संस्कार ।।

गर्भाधानादि (जन्मसे मृत्युपर्यन्त) षोडस संस्कारोंमें विवाह संस्कार सर्वश्रेष्ठ संस्कार माना गया है। शास्त्रसम्मत विधिवत् विवाह सम्पन्न होनेपर जीवात्मा मनुष्यजीवनके सर्वोपरीय उद्देश्य (धर्म अर्थ काम) का यथावत पालनकरते हुए मोक्षको प्राप्त कर सकता है।

जीवनकाल चार आश्रमोंमें विभाजित है यथा-**ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ** और **सन्यास**। इन चारों आश्रमोंका मुख्यआधार है 'गृहस्थ' स्त्रीको मुख्यरुप से धर्म,अर्थ,कामकीप्रदात्री माननेकेसाथ ही सन्तानसिद्धिका मुख्यसाधन समझकर विवाह के लिए समय शुद्धिका विशेष विचार किया जाता है यथा-

भार्या त्रिवर्गकणां शुभशीलयुक्ता शीलं शुभं भवति लग्नवशेन तस्या:।
तस्माद्विवाहसमय: परिचिन्त्यते हि तान्नघ्नतामुपगता: सुतशीलधर्मा:।।

सृष्टिके आदिकालसे वसुन्धरा पर अनेक महापुरुष ऋषिमहर्षि विद्वान ज्योतिषाचार्य, विज्ञान वेत्ताओंने इस विषय पर गहन अध्ययन चिन्तनमनन करके ग्रहादिकोंके प्रभावादिका सही आकलन कर कुछ नियम निश्चित कियेहैं **यथा**-विद्याध्ययन काल पूर्ण होनेपर जब लड़की लड़काकी उम्र विवाहके योग्य हो जाय, तब माता-पिता अपने कुलकी परम्परानुसार लड़कीं के अनुरुप सुयोग्य वरको टीका (वाग्दान) करें।

नोट: शादी तय (वाग्दान वाणी द्वारा संकल्प सगाई) करनेसे पहले योग्य ज्योतिर्विदसे वर-कन्याकी जन्मपत्री मिलान करवा लेनी चाहिए। जन्माङ्ग चक्रमें शुभाशुभ योगोंपर ध्यान देना चाहिए और वर्णादि अष्टकूट तथा राशियोंका शुभसंयोग देखकर ही निर्णय लेना चाहिए।

वरवरण मुहूर्त- अश्वि. कृति., रोहि., मृग., मघा., पूफा, उफा, हस्त चित्रा स्वाती, अनु, मूल. पूषा., उषा., श्रव.,धनि., पूभा., उभा., और रेव. नक्षत्र शुभवार लग्न मुहूर्तमें आचार्य-पुरोहित कन्याके पिता, भ्राता, एवं अभिभावकसे गणेशादि देवपूजन कराकर कुमकुम केशर आदिसे वरका तिलक करें, मोली (रक्षासूत्र), बांधें, श्रीफल, मिष्टान्न, पुष्पमाल्यादि वस्त्राभूषणादि से सम्मानित करें। उचित सम्बोधन करते हुए यह मन्त्र पढ़ें

तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नात: स्नाते ह्यरो गिणे।
अभ्यगेऽपतितेऽ वग्नीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति।।

कन्यावरणमुहूर्त- उपरोक्त नक्षत्र शुभवार लग्न मुहूर्तमें वस्त्राभूषण मिष्टान्नश्रीफल पुष्पमाल्यादिसे ससम्मानित कर कन्याका वरण करें, अर्थात् गोद भरें। उपरान्त गुरु ज्योतिषाचार्य द्विज के सम्मुख फल, फूल, मिष्टान्न, सदक्षिणा भेंट रखकर विवाहकी तारीख निश्चिय करायें।

विवाहके लिए ग्राह्य मास- वैशाख, ज्येष्ठ, त्रिभाग आषाढ़ (मिथुनार्क में) आगे प्रबोधिनी एकादशी के बाद (वृश्चिक के सूर्य में) कार्तिक व मार्गशीर्ष, (मकर के सूर्य में) माघ और (कुम्भ की संक्रान्ति में) फाल्गुन मास विवाहके लिए शुभ माना गया है। देशाचारकी प्रधानतासे चैत्र, पौष को छोड़कर अन्य सभी मासोंमें विवाह होते हैं।

देवशयन चातुर्मास्य- के विवाह मुहूर्त दैवज्ञरंजन ग्रन्थानुसार सिन्ध, पंजाब, कश्मीर हिमाचलादिमें देशाचरसे पण्डित वर्गमें ग्राह्य माने जाते हैं- **प्रमाणं ग्रामवचनं विवाहादौ तथात्यये यत: परम्परायातं धर्म वदन्ति ते खलु।। देशाचारस्तावदादौ विचिन्त्यो देशे देशे या स्थिति सैव कार्या।।**

।। शुभमास ।।

माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्यासंवरणेषु चादशमासा: प्रशस्यन्ते चैत्रपौषविवर्जिता।। सभी मांगलिक कार्योंमें विवाह तथा कन्याके वरणमें दशमास उत्तम कहे गये है। केवल चैत्र और पौषको छोड़कर। लेकिन यह सर्वमान्य नहीं है।

वर्जित काल- पातदोष, व्यतीपात, दग्धातिथि, क्षयतिथि, कृष्णा १३।१४।३० शुक्ला १।२ तिथि, संक्रान्ति, ग्रहण दिन नक्षत्र, गुरुशुक्रास्त दोष, मृत्युवान, वेध सूक्ष्म क्रांतिसाम्य, अन्यान्य कुयोग दिन विवाहमें वर्जित है।

शुभ नक्षत्र- **मूलमैत्रमृगरोहिणीकरै: पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितै:।** **मूल, अनु.,मृग.,रोहि.,हस्त.,रेवती,स्वाती,मघा.,उफा.,उषा. और उभा.** ये ग्यारह नक्षत्र विवाहके लिए सर्वमान्य शुभ है।

यजुर्वेदियोंके लिए ग्राह्य- कात्यायन सूत्र वाले यजुवैदियोंके लिए ग्रह्यसूत्रोक्त **'त्रिषुत्रिषूत्तरादिषु'** प्रमाणानुसार तीनों उत्तराओंसे परवर्ती तृतीय नक्षत्र-**अश्विनी, चित्रा, श्रवण** और **धनिष्ठा** ये चारोंनक्षत्र विवाहमें ग्राह्यमाने गये हैं। जिन्हें सत्यकृत्य मुक्तावली और धर्मसिन्धु (पृष्ठ ४०९) में आचार्य हरिदत्तके मत से **'चित्राश्रवणधनिष्ठाश्वनी नक्षत्र यजुर्वेदषियम्'** भी शुभ माना गया है। श्रीराजधानी पंचांगमें उपरोक्त सभी नक्षत्रोंमें विवाह मुहूर्त सुनिश्चित किये जाते हैं।अत:विद्वज्जन किसी भ्रममें न पड़कर वेद-सूत्र-शाखानुसार स्वीकार करें।

द्विजातियोंके विवाह मुहूर्तोंमें ८१ दोष धर्म शास्त्रमें कहे गये हैं; किन्तु उनमें १० महादोष **लता पात युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य महापातऔर दग्धा तिथि** ये मुख्य है। जिनमेंसे **वेध, मृत्युवान, क्रान्तिसाम्य** ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से सर्वत्र सर्वथा वर्जनीय है। शेष सात दोषोंमें से चार अल्प दोष रहने पर वे विवाह मुहूर्तकी लग्नशुद्धि से नष्ट हो जाते हैं- **'सर्वेदोषा: विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।'**

जिस विवाह मुहूर्तमें जो दोष होता है उसे (ɔ) वक्र रेखा द्वारा सूचित कर दिया जाता है; और (।) खड़ी रेखा शुद्धता की परिचायक है। कुल दश रेखायें दश दोषोंकी सूचक होती है।

लतादोष- मालवाप्रान्त (उज्जैन) तथा अहमदाबादसे सोमनाथ तक एवं सूरतके आसन्न माना जाता है। **पातदोष-** कुरुक्षेत्र बांगर (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) के ईट-गिर्ट क्षेत्रोंमें माना जाता है। **युतिदोष-** बंगालसे ढाका मुर्शिदाबाद मालवाके आसन्न तथा उड़ीसासे दक्षिण, मद्राससे उत्तर तीरवर्ती कलिंग (भुवनेश्वर) में माना जाता है। सू.मं.शु.श.रा.के की युति दरिद्र मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। विशेषत: शुक्रकी युति वर्जित है।

वेधदोष- सभी जगह वर्जित है। वास्तवमें निम्नचक्राकित एक नक्षत्रके प्रथम चरणमें ग्रह हो तो दूसरेका चतुर्थ चरण और चतुर्थ चरणमें ग्रह हो तो दूसरेका प्रथम चरण विद्ध होता है। एवं द्वितीय और तृतीय चरणमें परस्पर वेध होता है। चरण भेदसे मान्य वेध दोष ही अवश्य वर्जनीय है।

।। विवाह नक्षत्र वेध दोष चक्रम् ।।

अश्वि.	रोहि.	मृग	मघा	उफा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल.	उषा	श्रव.	धनि.	उभा.	रेव.
पूफा.	अभि.	उषा	श्रव.	रेव.	उभा.	पूभा.	शत	भर.	पुन.	मृग	मघा.	श्ले.	हस्त	उफा.

जामित्रदोष- मथुरा प्रान्तासन्न माना जाता है। लग्न तथा चन्द्रमासे ५५ वें नवांश यानी सातवीं राशीके उतने ही अंशोंमें समान ग्रह हो तो सूक्ष्म जामित्र अधिक दोषावह होता है।

।। बाणदोष ज्ञानाय चक्रम् ।।

बाणनाम	सूर्य के गतांश	वर्ज्य ५ कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	८।१७।२६	उपनयन में	रविवार	रात्रि में वर्ज्य
अग्नि	२।११।२०।२९	गृहारम्भ में	भौमवार	सदैव वर्ज्य
राज	४।१३।२२	राजकाज में	शनिवार	दिन में वर्ज्य
चोर	६।१५।२४	यात्रा में	भौमवार	रात्रि में वर्ज्य
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाह में	बुधवार	सान्ध्काल व०

मृत्युवाणदोषका कहीं कोई परिहार नहीं मिलता अत: विवाहमें अवश्य वर्जनीय है। वर्ज्य वार, वर्ज्य समयमें बनने वाला कोई भी वाणदोष अधिक भयावह हो जाता है। **एकार्गलदोष-** कश्मीरके आसन्न क्षेत्रोंमें माना जाता है। **उपग्रह दोष-** कश्मीरसे पश्चिम हिमालय तक तथा हिमाचलप्रदेश एवं पंजाब तक और आगराप्रान्त बलखबुखारा तक मान्य है। **क्रांतिसाम्य दोष-** युक्त विवाह मुहूर्त सभी स्थानोंके लिए वर्जित है। पंचांग में गाणितांगत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य दोष ही लिया जाता है। **दग्धातिथि-** दोष मध्यदेश (उज्जैन,भोपाल,नरसिंहपुर,जबलपुर) के आसन्न क्षेत्रोंमें ही माना जाता है।

नक्षत्रभेद से दोषपरिहार-

चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा:।
पौष्णाश्रुतिश्चोत्तरदेशजात: सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपात:।।
भुजंगक्रान्तिसाम्यं च बाणवेधं तथैव च।
लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत्।।

भुजंग क्रान्तिसाम्य, बाण और वेध दोषपूर्ण (विवाह मुहूर्त) बलहीन लग्नका विवाह कलियुगमें वर्जित है। नीचे युति वेध और जामित्रदोष परिहारार्थ ऋषि-महर्षियोंके वचन प्रस्तुत है-

स्वक्षेत्रग: स्वेच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधु:।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्यो: श्रेयसे सदा।।

विवाहकालमें चन्द्रमा स्वक्षेत्रीय हो, उच्च का हो अथवा मित्र क्षेत्री हो तो युति दोषका नाश करता है। दाम्पत्य जीवन सुखी बनता है। सदा अच्छा श्रेय मिलता है। वेध के विषय में नारद व वशिष्ठजी का मत

पादमेव शुभैर्विद्धम् शुभैर्नेव कृत्स्नत:।
अतोऽन्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्।।
तृतीयगो द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम्।
भिनत्तिवेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात्।।

वास्तवमें एक नक्षत्रके प्रथम चरणमें ग्रह हो तो दूसरेका चतुर्थ चरण और चतुर्थ चरणमें ग्रह हो तो दूसरेका प्रथम चरण विद्ध होता है एवं द्वितीय और तृतीय चरणमें परस्पर वेध होता है; जोकि अवश्य वर्जनीय है।

भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च।
शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत:।।

अस्यापवादमुहूर्त्तचिन्तामणौ-

ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च।
भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभऋक्षाणि प्रचक्षते।।

क्रूर ग्रहसे विद्ध और क्रूर ग्रहसे भुक्त या भोग्य नक्षत्र और पापग्रह युक्त एवं पापाक्रान्त होने वाले नक्षत्रोंको यदि चन्द्रमा भोगकर अग्रिम नक्षत्रपर पहुंच गया हो तो वह नक्षत्र शुभ होते है।

स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे।
हन्त्या जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्।। -व्यवहारसमुच्चय

चन्द्रमा उच्चका हो, शुभग्रहकी राशिमें हो, अपने वर्ग या मित्रके वर्गमें हो तो जामित्र दोषका हरणकर अत्यन्त सुख देता है पति-पत्नी सुखोपभोग करते है।

अन्य मत-

एकार्गलोपग्रहपातलता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषा:।
नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा।।

ज्योतिषशास्त्रके आविष्कारकर्ता पूर्वाचार्योंने जहां दोषोंका वर्णन किया है वहां यह भी बतलाया है कि कौन-सा दोष कहां मान्य होता है और किस दोषका क्या परिहार्य है। विवरणविगत पृष्ठ पर देखें

पंचांग किसी एक प्रान्त-प्रदेश या एक देशके लिये अथवा एक सम्प्रदाय एवं वर्ग विशेषके लिये नहीं बनता बल्कि वह सार्वभौम होता है। अनन्त शास्त्रोंका सार अनन्त विज्ञानका भण्डार रहस्मय अंकोंसे ओत-प्रोत, पांचों अंगों से परिपूर्ण होता है। अपने अपने प्रयोगमें आने वाले विशुद्ध ज्ञानको ग्रहण करना चाहिए।

अनन्तशास्त्रं बहुलाश्चविद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीर मिवाम्बुमध्यात्।।

त्याज्यदोषा:- कुलिकं क्रान्तिसाम्यं च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्य: पंचदोषैस्तु दूषित:।। अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशक:।। 'अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के।' अर्थात् वृहस्पतिवारको सूर्य अस्त होनेके पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्यास्तसे पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

कन्या रजस्वला दोष शान्ति-

विवाह लग्न समयादि कन्या रजस्वला हो तो फेरे कराने से पहले स्नान कराकर युंजानी (नकचोटनी) की आहुति निम्नलिखित शास्त्र वाक्यानुसार दिलवाकर विवाह करनेमें दोषनहीं यथा- स्नापयित्वा तु तां कन्या मर्चयित्वा यथा विधि। युंजानामनाहुति हुत्वा ततस्तन्त्रं प्रवर्तयेत्।। आहुतिमन्त्र:-युञ्जान: प्रथमं मनसस्तत्वाय सविता धिय:। अग्नि ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याऽभरत्। ।। तैत्तरीय सं. ४।१।१।१ नि.सि.पृ.६२१

वरस्य भास्करबलम् कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्य विवाहो नान्यथा भवेत्।।

वरके लिए सूर्यबल, कन्याके लिये गुरुबल तथा दोनोंके लिए चन्द्रबल देखना चाहिए। उपनयनमें लड़केकी राशिमें गुरु और चन्द्रबलका विचार करना चाहिए। अन्य सभी शुभ कार्योंमें चन्द्रबल देखा जाता है।

त्रिबल शुद्धि ज्ञानार्थ चक्रम्

	श्रेष्ठ	पूजा से शुभ	नेष्ट
राशि से सूर्य	३।६।१०।११	१।२।५।७।९	४।८।१२ वां गुरु नेष्ट उच्च, मित्र स्वग्रही
राशि से गुरू	२।५।७।९।११	१।३।६।१०	गुरु नेष्ट, श्रेष्ठमाना गयाहै
राशि में चन्द्र	३।६।७।१०।११ वां श्रेष्ठ	१।२।५।९।१२ वां	नोट: शुक्लपक्षमें २।५।९ वां तथा कृष्ण पक्ष में १२वां चन्द्र ग्राह्य माना है।

विशेष गुरु सूर्य स्वोच्च, स्वमित्र, स्वराशिस्थ, स्वनवांश वर्गोत्तम में ४।८।१२वें नेष्ट स्थानमें होने पर भी शुभ माने जाते है।

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरु:।
रिष्फाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचराशिस्थ: शुभोऽप्यसन।। रामदैवज्ञ

गुरु-सूर्य नीच या शत्रु राशिस्थहो तो शुभ होने पर भी अशुभ फलप्रद होते हैं। सूर्यके लिए परिहार वाक्य 'दैवज्ञ कल्पद्रुम'

स्वोच्चे स्वमित्र सबने स्वगृहे स्ववर्गे। स्वांशे ततश्च निधनंयचतुर्यगोऽपि। श्रेयस्तनीति अरिनीचगतोऽप्यनिष्टम्। तुल्यं फलं निगदितं रविजीवयोश्च।

तुला राशिवालोंके लिए २,५,९वें सूर्य शुभफलप्रद होते है, पूजाकी आवश्यकता नहीं, यथा प्रमाण-

धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशि जनितस्यशोभन:।

अन्य राशि वालोंके लिए २,५,९वें, सूर्य १३अंश बीतने पर शुभ होते है। अर्थात् पूज्य नहीं होते है, यथा प्रमाण-

गर्ग्यांगिऽरोवत्सवशिष्ठ गौतमपराशराद्या मुनयोवदन्ति।
द्वितीयपंचाङ्कगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परत:-शुभावहा:।।

जन्मराशि नामराशे: प्रधानता- विवाहे सर्वमांगल्ये-यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशे: प्रधानत्वं नामराशि न चिंतयेत्।। देशे ग्रामेगृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके नामराशे: प्रधानत्वं जन्मराशि न चिंतयेत्। कुर्यात्तोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानिकर्माणि नामराशौ बलान्विते। विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाचिन्तुयेत्सर्व: जन्मन ज्ञायते यदा।

स्त्रीणांचन्द्रबले विशेष- स्त्रीणांविधोर्बलमुशंति विवाह गर्भसंस्कारयोरितर कर्मसुभर्तुरेव। द्वादशचन्द्रे ग्राह्यकर्म- उत्सवे चाभिषेके च जनने व्रतबंधने पाणिग्रहेण चन्द्रोद्वादशग: शुभ:। पाणिग्रहे स्त्रीसुरतेऽभिषेके यात्रात्रमाशे व्रतबंधने च। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वे: शुभोद्वादशगो हिमांशु:।।

तारा देखना- जन्म नक्षत्रसे विवाह मुहुर्त नक्षत्र तक गिननेसे जो संख्या आये उसमें ९ का भाग दें। ३ शेष में विपत, ५ में प्रत्यरि और ७ शेष में वध तारा दूषित समझें। इससे अन्य संख्या शेष रहे तो नक्षत्र (तारा) बलवान समझें। अत्यावश्यकता में दानादि व्यवस्था।

प्रत्यरौ लवणं दद्यात् शाकंदद्यात् त्रिजन्मसु।
गुड़ं विपतितारायां वधे च तिलकांचनम्।।

।। अथ तारा (कूट) विचार ।।

कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्र तक और वरके नक्षत्र से कन्याके नक्षत्र तक गिनकर पृथक-पृथक ९ का भाग देनेसे १,२,४,६,८ और ० शेष शुभ जानना चाहिए, ३ शेषमें विपत, ५ शेषमें प्रत्यरि और ७ शेषमें वध (अशुभ) तारा (कूट) होता है जो विवाहमें वर्जित है।

ज्येष्ठविचार- प्रथम गर्भ वाले वर-कन्याका विवाह ज्येष्ठ मासमें नही करना चाहिए। दोनोंमें से एक ज्येष्ठा हो तो विवाह करने में दोष नही। अतः तीन ज्येष्ठ नही मिलने चाहिए। **अशौच निर्णय-** वाग्दान (टीका चढ़ने) के बाद वर-कन्याकी तीन पीढ़ीमें से किसी की मृत्युहो जाए तो एक मासके बाद अथवा सूतक निवृत्ति होने पर शान्ति कराके विवाह कराने में हानि नहीं। **विवाहकेपूर्व** नान्दीमुख श्राद्धके बाद एवं विनायक (गणेश) स्थापनाके बाद तीन पीढ़ी तक किसीकी मृत्यु हो जाए तो माता-पिताको अशौच नहीं लगता, निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिए।

दोषपरिहारवाक्य

न वर्गवर्णो न गणो न यौनिर्द्विर्द्विशे नैव षडष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा राशीश मैत्रीशुभदो विवाहे।।

अर्थ- वर्ग, वर्ण, गण, योनि अथवा अशुभ द्विर्द्वादश और षडष्टक,तारा विरुद्ध व अशुभ नवीं पांचवी राशियोंके विवाह भी शुभ होते है। अगर राशियोंके स्वामी परस्पर एक-दूसरे के मित्र हों।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्म तथैव।
नाड़ीदोषो न गणानाम न दोषोनक्षत्रैक्यो पादभेदे शुभंस्यात्।।

अर्थ- वर-कन्या की एक राशि हो और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हो, अथवा एक नक्षत्र और भिन्न-भिन्न राशि हो तो नाड़ी दोष और गण दोष नहीं होता है तथा एक नक्षत्रमें चरण भेद होने से शुभ होता है।

गण- अपने गणमें उत्तम प्रीति, देव मनुष्यमें मध्यम प्रीति, देव राक्षस गणमें **कलह** और नर राक्षस से मृत्यु होती है। **नाड़ी-**वर-कन्या दोनोंकी एक **ही नाड़ीहो तो एककी मृत्युहोती है।** नाड़ी भिन्न होने से सुख-समृद्धि होती है।

गणादि दोष परिहार-

राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वेवांशनाथयोः।
गणादिदौष्टयेऽप्युद्वाहः पुत्र-पौत्रप्रवर्धनः।।

राशीशों में मैत्री हो अथवा नवांशके स्वामियों में मैत्री हो तो गणादि दुष्ट रहने पर भी विवाह पुत्र-पौत्रों को बढ़ाने वाला होता है।

अथ राशिकूट-

मृत्युःषट्काष्टकेज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे।द्विर्द्वादशेदरिद्रत्वंद्वयोरन्यत्र सौख्यकृत्।।
वर-कन्या की राशियाँ परस्पर गिनने से ६।८ हों तो दोनों की मृत्यु, ९।५ हो तो सन्तान हानि, २।१२ हों तो दरिद्रता होती है। **दुष्टभकूट परिहार-** दोनोंकी राशि स्वामी ग्रह एक ही हो अथवा राशीश ग्रहों में मैत्री हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध रहे तो दुष्ट भकूट में भी विवाह शुभ होता है।
एकाधिपत्ये राशिशमैत्र्यांदुष्टभकूटकेनाड़ीनक्षत्रशुद्धिश्चेद्विवाहः शुभदस्तदा।।

।। विशेष वर्जनीय दोष।।

नाड़ी दोशोऽस्ति विप्राणं वर्ण दोषोऽस्ति भूमुजाम्।
वैश्यानां गणदोषःस्यात शद्राणां योनि दषणम्।।

नाड़ीदोष विप्रवर्ण, वर्णदोष क्षत्रियवर्ण, गणदोष वैश्यवर्ण, योनीदोष शूद्र वर्ण की राशियोंपर लागू होता है। **नाड़ी परिहार- रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवण रेवती। अहिर्बुध्न्यक्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते।। शुक्रेजीवे तथा** सौम्ये एकराशीशयो यदि। नाड़ीदोषो न वक्तव्य सर्वथा यत्नतो बुधैः। **वर्णपरिहार- हीनवर्ण यदाराशीराशीशो वर्ण उत्तमः। तदाराशीश्वरे ग्राह्यन्तद्राशिमेच चिन्तयेत्।। योनिपरिहार- सति सद्राशिकेऽपि योनिवैरं न दोषकृत। यदि स्यादचला योनिः पुंसो योनिर्वलो। गणपरिहार- सद्भकूटयोनि शुद्धिः ग्रहसंख्यं गुणत्रयम्। एकेकतमसदम वे नारीवागण शुभा।। ज्येष्ठत्वक्षणास्यवाद- एकराशौ पृथकधिष्ण्ये एकर्क्षे भिन्नराशिगः। एकाधिपत्ये मैत्र्या द्वितीयं स्वामिशुभम्। एकराशौ पृथग्धिष्ण्ये अन्त्यांत्यौ चरणौ यदा। अतीव शेभनः प्रोक्तो द्वितीयस्थो न दोषकृत्।।**

राशि पर से तेलादि लेपन के दिन

राशि नाम	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन	तुला	वृश्चि	धनु	मक	कुंभ	मीन
तेल संख्या	७	५	५	५	५	७	७	५	५	५	५	७

नोटः- अब लड़का-लड़कियोंके विवाह बड़ी उम्र में होने लगे है, इसलिए तेलोंकी संख्या कम करके लिखनी चाहिए। कन्या की राशि से तेल संख्या जानकर वर के दो तेलबान बढ़ाकर लिख दें। तैल लेपन- सोम, बुध और शनि से करें। रवि को पुष्प, गुरु को दूर्वा, भौम को गंगारज और शुक्र को गौ का गोबरडालनेसे तेलके दोष दूर हो जाते है।

टिप्पणीः राशियोंके परस्पर शुभ योग निम्न चक्रांकित एक-दूसरी राशिके अनुकूल हीशुभ होती है,अशुभ राशियां चक्रमें सीधे हाथको ओर अंकित है।

राशियों के परस्पर शुभाशुभ योग

शुभ नव-पंचम		मध्यम नव-पंचम		श्रेष्ठ द्विर्द्वादश		अशुभ द्विर्द्वादश		प्रीति षडाष्टक		शत्रु-षडाष्टक		अशुभ केन्द्र	
९	५	९	५	२	१२	२	१२	६	८	६	८	४	१०
मेष	सिंह	कुम्भ	मिथुन	मेष	मीन	तुला	वृश्चिक	मेष	वृश्चिक	वृष	धनु	मेष	कर्क
वृष	कन्या	मीन	कर्क	वृष	मिथुन	धनु	मकर	मिथुन	मकर	कर्क	कुम्भ	वृष	सिंह
मिथुन	तुला	कर्क	वृश्चिक	कर्क	सिंह	कुम्भ	मीन	सिंह	मीन	मेष	कन्या	कर्क	तुला
सिंह	धनु	कन्या	मकर	कन्या	तुला	मेष	वृष	तुला	वृष	मिथुन	वृश्चिक	कन्या	धनु
तुला	कुम्भ	अशुभ सम-सप्तक		वृश्चिक	धनु	मिथुन	कर्क	धनु	कर्क	सिंह	मकर	वृश्चिक	कुम्भ
वृश्चिक	मीन			मकर	कुम्भ							कर्क	मकर
धनु	मेष	कर्क	मकर	अपवाद				कन्या	कुम्भ	तुला	मीन	मिथुन	मीन
मकर	वृष	सिंह	कुम्भ	सिंह	कन्या								

टिप्पणीः तृतीय- एकादश सम्बन्ध किन्हीं भी राशियों का शुभ ही होता है, किन्तु सम-सप्तक (राशि-प्रतियोग) तथा केन्द्र (चतुर्थ-दशम) सम्बन्ध उपर्युक्त अशुभ सम-सप्तक अशुभ केन्द्र की राशियों के अलावा शेष राशियों का ही शुभ होता है।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या ↓	वर →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण → ↓		४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
		नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
मेष	४	अ.	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ −४	२२॥ −४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३५	११ ३६	९ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ −२	२२॥	१८॥ −६	२५॥ −६	१४ ३६	१३॥ ३५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२४॥ +४	२६॥ +४	अ.
	४	भ.	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०४१	२१॥ −४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५−	१८ ३५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२१॥ −१	१७॥ −१६	१७॥ ३६	१९॥ −१६	२० −१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० −१	२४ −२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	२६॥ +४	भ.
	१	कृ.	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ −६	२५॥ −६	२४॥ +५	१८ १२५	१२ ३१५	१३॥ १३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४	कृ.
वृष	३	कृ.	१८॥ −४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० ०१३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ −६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृ.
	४	रो.	२३॥ −४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५−	१९ १६	१५॥ ३६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५−	२४॥ −१	२४॥ −१	३०॥	२७	२७	१९ ३	रो.
	२	मृ.	२३॥ −४	१४॥ ३४	१८॥ −४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ −६	१८॥ −६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७	मृ.
मिथुन	२	मृ.	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ −४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० −२६	२३॥ −६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥	मृ.
	४	आ.	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० −४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२७ −१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ −६	२३ −६	१७॥ −१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥	आ.
	३	पुन.	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४−	२२॥ ०४	१७ −४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ −६	२३ −६	१७॥ −६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥	पुन.
कर्क	१	पुन	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ −६	२१ −६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५	पुन
	४	पुष्य	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ −५	१८ ३५	२१ −५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ −२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	पुष्य
	४	श्ले.	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० −५	२६ −५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५−	२१ १५	१३ ३५	श्ले.
सिंह	४	मघा	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ −२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६−	१९॥ १६−	१३ ३६	मघा
	४	पूफा	२६ +५	१८ ३५	२० १५−	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ −२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० −१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ −१	२३॥ ३	२५॥ −१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ −६	१७॥ ३६	२५॥ −६	पूफा
	१	उफा	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५−	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४−	२७॥ −१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ −१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ −६	२५॥ −६	उफा
कन्या	३	उफा	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२४−	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२१॥	२१॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ −६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥	उफा
	४	हस्त	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥	हस्त
	२	चि.	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ −६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥	चि.

वर्णवश्य आदि के संयोगसे निर्मित यह गुण-दोष मेलापक सारणी है। जिसमे ऊपरकी पंक्तिमे वर के नक्षत्र, तिरछीपंक्ति खडी लाइनमे कन्याके नक्षत्र लिखे है, सम्पात कोष्ठकोके ऊपरी भागमे गुण, संख्या तथा नीचे महादोषोके चिन्ह दिए है। चिन्होका अभिप्राय है, एकनाड़ी दोषकी जगह (३) गण महादोष (मनुष्य राक्षस)के स्थानमे (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) मे (६), नवपंचममे (५), द्विर्द्वादशमे (४), वैर योनिमे (२), लिखे है

प्रस्तुत है संशोधित परिवर्धित गुण मेलापक सारणी

✿ वर-वधू गुण मेलापक सारणी ✿

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या ↓		वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	↓	चरण →	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२
		नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.
तुला	२	चि.	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४
	४	स्वा.	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ −६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४
	३	वि.	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ −६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४
वृश्चिक	१	वि.	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ −५	१८ −५	१५॥ −५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७
	४	अनु.	२४॥ −६	१५॥ ३६	१९॥ −६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ −५	१८ ३५	२१ −५	२४॥	२०॥ ३	२९॥	२५	२६	११ ३
	४	ज्ये.	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ −६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३९६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ −५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४
धनु	४	मूल.	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७
	४	पूषा.	२६ +५	१८ ३५	१८ −१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ −१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३
	१	उषा.	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १
मकर	३	उषा.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ −६	२२ −६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५
	४	श्र.	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ −६	२१ −६	२२ −६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५
	२	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ −६	२१	१३ ३	२७	११॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५
कुम्भ	२	ध.	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६
	४	शत	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६
	३	पूभा.	१८ ३	२५ +२	२० −१	२४॥ −१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६
मीन	१	पूभा.	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ −१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ −१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१
	४	उभा.	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ −१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ −१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२
	४	रेव.	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥

कन्या ↓		वर →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	↓	चरण →	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
		नक्षत्र	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
तुला	२	चि.	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६	चि.
	४	स्वा.	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६	स्वा.
	३	वि.	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६	वि.
वृश्चिक	१	वि.	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	वि.
	४	अनु.	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	अनु.
	४	ज्ये.	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	ज्ये.
धनु	४	मूल.	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ २४+	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥	मूल.
	४	पूषा.	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४−	१५॥ ३४	१७॥ १४−	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१	पूषा.
	१	उषा.	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ −१४	२६॥ −१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३	उषा.
मकर	३	उषा.	२४ −१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ ४+	३०॥	३०॥	२२॥ ३	उषा.
	४	श्र.	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३	श्र.
	२	ध.	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध.
कुम्भ	२	ध.	१८ ३५	२० −५	२४॥ −५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२	ध.
	४	शत	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४	शत
	३	पूभा.	१८॥ १५+	२६ +५	२० −१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० −१४	२८॥ −१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२	पूभा.
मीन	१	पूभा.	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	११ १५−	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२	पूभा.
	४	उभा.	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ −१५	२४ −१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०	उभा.
	४	रेव.	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ −२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	रेव.

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहाँ (-) चिन्ह है, जहां (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह है वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है, और जिस जगह वरके नक्षत्रसे पूर्व वधू का नक्षत्र है (इसका भी महादोष है) वहां ० शून्य का चिन्ह है और जहां कोई भी महादोष नही मिलता वहां केवल गुण ही लिखे है। जैसे अश्विनी वर का नक्षत्र और भरणी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक मे केवल ३४ गुण ही लिखे है।

॥ शान्ति प्रकरण ॥

गुरु गायत्रीमंत्र : ओउम् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अशुभ ग्रहोंकी शांति हेतु ऋषि महर्षियोंने मंत्र जप, अनुष्ठान, दान, ग्रह दोष, शमन यंत्र, रत्न-उपरत्न धारणका विधान बतलाया है। जिसके करने से अशुभ ग्रहोंकी पीड़ा शांत होती है। इस सन्दर्भमें पाठकोंकी सुविधा हेतु ग्रहों से सम्बन्धित जपनीय मंत्र, तथा उनकी संख्या, ग्रह यंत्र, स्वरूप, रत्नादि और दान द्रव्य एवं दान करनेके समयादि की जानकारी दी गई है। नियत समय पर दान करने से दानका पूर्ण फल शीघ्र मिलता है।

सूर्यकाध्यान: पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।
सप्ताश्वःसप्तरज्जुश्च द्विभुजःस्यात् सदारविः॥

सूर्य यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

वैदिकमंत्र: ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

एकाक्षरीबीजमन्त्र: ॐ घृणिः सूर्याय नमः। तान्त्रिकमन्त्र ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। जप संख्या ७००० हजार।

प्रार्थना करें: ग्रहाणामादिरादित्यो लोकलक्षणकारकः।
विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः॥

सूर्य गायत्री: आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्य प्रचोदयात्॥

हवन हेतु समिधा: मदार। **दानद्रव्य:** माणिक, सोना, ताँबा, गेंहू, गुड़, घी, लालवस्त्र, फूल, केसर, मूंगा, लालगऊ, लालचन्दन, **दानका समय**-अरूणोदय। **रत्न:** मणिक्य (मानिक, चुन्नी Ruby, याकूत) ५ या ३ रत्ती सोनेकी अंगूठीमें रविपुष्य योगमें धारण करें। साधारण जन १५ चावल वजनका मानिक भी पहन सकते है॥ **उपरत्न:** विद्रुम सूर्यमणी (लालड़ी, जिसे फारसीमें लाल कहते है) कंटकिज Spinal तामड़ा या चुनड़ी Garnet जड़ी बिल्वमूल लेनी चाहिए।

चन्द्रकाध्यान: श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।
गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥

चन्द्र यन्त्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

वैदिकमंत्र: ॐ इमन्देवाऽअसपत्नं ᳲ सुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ᳲ राजा॥

एकाक्षरीबीजमंत्र: ॐ सों सोमाय नमः। **तान्त्रिकमंत्र:** ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः। जप संख्या ११००० हजार

प्रार्थना करें: रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः।
विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे विधुः॥

चन्द्रगायत्री- ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

हवन हेतु समिधा- पलास। **दानद्रव्य**-मोती, सोना, चांदी, चावल, मिश्री, दही, सफेदवस्त्र, सफेदपुष्प, शंख, कपूर, सफेदबैल, सफेद चन्दन, **दानका समय**-सन्ध्याकाल। **रत्न** मुक्ता (मोती Pearl मुखारीद) २।४।६ अथवा ११ रत्तीका धारण करें। ७ या ८ रत्ती वजन का न लें। चांदी या सोनेकी अंगूठीमें शुक्लपक्ष सोमवार, रोहिणी नक्षत्रके योगमें पहनें। उपरत्न-चन्द्रकांत moon stone निमरु-मोतीकी सीपकी पूछ (जड़) में मोती की सी आभा होती है; यह भी मोतीकी तरह खूब काम करती है। जड़ी-क्षीरणी (खिरनी) मूल लें

मंगलका ध्यान: रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूल गदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्यात् धरासुतः॥

भौम यन्त्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

वैदिकमन्त्र: ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपा ᳲ रेता ᳲ सिजिन्वति॥ **एकाक्षरी बीजमंत्र-** ॐ अं अंगारकाय नमः।

तान्त्रिक मन्त्र: ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। जपसंख्या १०००० हजार

प्रार्थना करें: भूमिपुत्रो महातेजा जगतो भयकृत्सदा।
वृष्टिकृद्-वृष्टिहर्ता च पीडां दहतु मे कुजः॥

भौमगायत्री मंत्र: ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

हवन हेतु समिधा: खादिर। **दानद्रव्य-** मूंगा, सोना, तांबा, मसूर, गुड़, घी, लालकपड़ा, लालकनेर का फूल, केसर, कस्तूरी, लालबैल, लालचन्दन। **दानका समय:** सूर्योदय के बाद ४८ मिनट तक। **रत्न** विद्रुम मणि- या प्रवाल (मूंगा coral मिरजान) ८ रत्ती का सोने की अँगूठी में मंगलवार को अनुराधा नक्षत्र में धारण करें। ५ या १४ रत्ती का कभी न पहनें। **उपरत्न** विद्रुम-मूल या संगमूंगी, ज्योतिरस (Blood Stone) जड़ी-नाग जिह्वा (अनन्त) मूल।

बुधकाध्यान- पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणि सिंहस्थो वरदो बुधः॥

बुध यन्त्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

वैदिक मन्त्र- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ᳲ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे। अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ **एकाक्षरीबीजमन्त्र-** ॐ बुं बुधाय नमः।

तान्त्रिक मन्त्र: ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। जपसंख्या ९००० हजार

प्रार्थना करें- उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥

बुधगायत्री मंत्र: ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नोबुधः प्रचोदयात्।

हवन के लिए समिधा: अपामार्ग (ओंगा) **दानद्रव्य**-पन्ना, सोना, कांसी, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, सबफूल, हाथीदांत, कपूर, शस्त्र, फल, **दान कासमय-** सूर्योदयके बाद २ घंटे तक। **रत्न:** मणि (पन्ना Emeare जमरुद) ६ अथवा ३ रत्ती का सोने की अँगूठी में बुधवार को उफा नक्षत्र में धारण करें। **उपरत्न** हरित नील मणि (Aquamarine) शिलामणि Agate (सुलेमानी पत्थर) टोडा और बेरुज संग जड़ी-वृद्धदारु मूल (विधारा की जड़)।

गुरुकाध्यान- देवदैत्यगुरु तद्वत् पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्रकमण्डलु॥

गुरु यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

वैदिकमन्त्र- ॐ बृहस्पते अति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा॥ **एकाक्षरी बीजमन्त्र:** ॐ बृं बृहस्पते नमः। **तान्त्रिक मन्त्र-** ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः। जपसं. १९००० हजार

प्रार्थना करें: देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहितेरतः।
अनेकशिष्यैः सम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः॥

गुरु गायत्रीमन्त्र- ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

हवन हेतु समिधा- पीपल। **दानद्रव्य-** सोना, पुखराज, कांसी, चने की दाल, खांड, घी, पीलावस्त्र, पीलाफूल, फल, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, हाथी। **दान का समय-** सायंकाल। **रत्न-पुष्पराग** (पुखराज Topaz) ? रत्ती का गुरुपुष्यामृत योग में धारण करें। इसके अभाव में १२ चावल अथवा ११ रत्ती का भी धारण कर सकते है। ध्यान रहे ६।१०।१४ रत्ती वजन का न पहने। उपरत्न Emerald संग सोनेला संग सोना मारवी आदि। जड़ी-भारंगी या केले का मूल लेना चाहिए।

शुक्रकाध्यान- श्वेतवर्णादण्डायुधा दानवादि पुरोहिता।
अग्निवर्णाष्टम्वयुत रथारूढ़ सुशोभिता॥

शुक्र यन्त्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

वैदिक मन्त्र- ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ᳲ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतम्मधु॥ **एकाक्षरीबीजमन्त्र-** ॐ शुं शुक्राय नमः। **तान्त्रिक मन्त्र:** ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। जपसंख्या १६००० हजार

प्रार्थना करें: दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महाद्युतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीड़ां दहतु मे भृगुः॥

शुक्र गायत्री मन्त्र- ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।

हवनहेतु समिधा- उदम्बर। **दानद्रव्य-** हीरा, सोना, चांदी, दूध, दही, चावल, मिश्री, चित्रितवस्त्र, सफेद फल फूल, घोड़ा, चन्दन। **दान का समय-** अरुणोदयकाल (सूर्योदय से पहले) **रत्न** वज्रमणि (हीरा Diamond अल्मास) ७ रत्ती का शुक्रवार को मृगशिर नक्षत्र में धारण करना चाहिये। ७ रत्ती की सामर्थ्य न हो तो दो रत्ती का पहनें। **उपरत्न**-संगदल्ला, संगतुरमूली Amethyst या Zircon या चांदी में जड़ी हुई मोती। जड़ी-सिंहपुच्छ का मूल।

शनिकाध्यान- इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः।
बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा॥

शनि यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

वैदिक मन्त्र- ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥ **एकाक्षरी बीजमन्त्र-** ॐ शं शनैश्चराय नमः।

तान्त्रिक मन्त्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः। जपसंख्या २३००० हजार

प्रार्थना करें: सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः॥

शनि गायत्री मन्त्र: ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।

हवनहेतु समिधा: शमी। **दानद्रव्य** नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, तेलसरसों, कालावस्त्र, कम्बलादि, कालेफल, फूल, कालीगौ, कस्तूरी, कालीभैंस, खड़ाऊँ, **दान का समय** मध्याह्नकाल। **रत्न नीलमणि** (नीलम Saphire याकूत कबूद) १० रत्ती का अथवा ७, ६, ३ रत्ती का शनिवार को श्रवण नक्षत्र में धारण करें। कम से कम ११ चावल के वजन का भी पहना जा सकता है। उपरत्न-पन्ना Crysolite संग लीली, संग जमुनियां जड़ी-बिच्छोल की जड़।

राहु का ध्यान- करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते।।

राहु यन्त्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

वैदिक मन्त्र- ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। एकाक्षरी बीजमन्त्र- ॐ रां राहवे नमः।
तान्त्रिक मन्त्रः ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। जपसंख्या १८००० हजार
प्रार्थना करें: अनेक रूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतुमे शिखी।।
राहुगायत्रीमन्त्र:- शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।
हवनहेतु समिधाः दूर्वा। दानद्रव्य- गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों, तेल, नीलावस्त्र, कम्बल, कालेफल, फूल, तलवार, काला घोड़ा, सूप, दान का समय रात्रि।
रत्न-गोमेदक (गोमेद Zircon जरकूनिया या जारगुन) ६ रत्ती का बुधवार को उ.फा. नक्षत्रमें धारण करें; ७, १० या १६ रत्ती का न होना चाहिए। उपरत्न: लाजवर्त, Sasdony संग तुरसावा, संग साफी। जड़ी श्वेत चन्दन।

केतु का ध्यान: धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगताः नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।।

केतु यन्त्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

वैदिक मन्त्र: ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याअपेशसे समुषद्भिरजा यथाः।। एकाक्षरी बीजमन्त्रः ॐ कें केतवे नमः।
तान्त्रिक मन्त्र: ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। जपसंख्या १७००० हजार
प्रार्थना करें: अनेक रूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी।।
केतु गायत्रीमन्त्र- ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतु प्रचोदयात्।
हवन हेतु समिधा- कुशा। दानद्रव्य- लहसुनियाँ, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, धूमिलफूल, नारियल, कम्बल, उड़द, केसरशस्त्र दानका समय रात्रि में।
रत्न- वैदूर्य (लहसुनियां Catseye फिरोजा) ६ रत्ती का गुरूपुष्य योग में धारण करें। गोमेद और लहसुनिया ३ रत्ती का भी ले सकते है; किन्तु २, ४, ११ या १३ रत्ती का कभी न लें। उपरत्न-लाजवर्त Turqaise संगमूसा, संगोदन्ती आदि। जड़ी-असगंध की जड़।
ग्रहशान्ति मन्त्र- ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी: भानुः शशि भूमिसुतोबुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतव:सर्वेग्रहा:शान्तिकरा भवन्तु।।
नोट : कलियुगमें जपसंख्या चतुर्गुणी अभीष्ट सिद्धि प्रदायक होती है। देशकाल परिस्थित्यानुसार ग्रहोंसे सम्बन्धित दानादि करके लाभके भागीदार बनें।

।। सभी ग्रहोंके दोष शान्त्यर्थ सामान्य औषधि स्नान ।।

लाजवन्ती (छुईमुई) कूट, खिल्ला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु हल्दी, सर्वोषधि, लोध, इन औषधियोंके जल से स्नान करने से सब ग्रहोंकी पीड़ा शान्त होती है। तथा गुरु के वचन, देव ब्राह्मणार्चन वेद पुराणादि श्रवण साधु सत्संग मन की शुद्धता जप, दान, यज्ञादि करने से दुष्ट स्थानोंमें स्थित ग्रहभी पीड़ा नहीं देते।
तथाः देवधीनं जगत, सर्वम् मंत्राधीनश्च देवता।
ते मंत्र ब्राह्मणाधीनः तस्मात ब्राह्मण देवता भवेत्।। (श्रीपतिः)

।। ग्रह शांतियर्थ रत्नादि धारण नियम ।।

नगमें बाल, रेखा, बिन्दु न हो वह टूटा फूटा न हो, जिस प्रकार मूर्तिकी प्राण प्रतिष्ठा मंत्रों द्वारा की जाती है, उसी प्रकार जिस ग्रहका नग हो उसी वार को उस ग्रहका १००० मंत्र जप, दशांश हवन करके नग धारणा करें। मासान्तर्गत लाभ प्रतीत हो तो ठीक अन्यथा नग बदल देना चाहिए।
नग लेने की सामर्थ्य न हो तो उपरत्न, यंत्र एवं शास्त्रोक्त नियमानुसार जड़ी धारण करना भी कम उपयोगी नहीं है। ग्रह यंत्र पंचांग शुद्धि देखकर तैयार करें। अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर यथा शक्ति सोने चाँदी या ताबेके ताबीजमें भरकर ग्रहानुरूप धागेमें पिरोकर पुरुष दाहिनी भुजा तथा स्त्रियाँ गलेमें धारण करें। प्रत्येक ग्रहकी जड़ी पुष्यार्क योगमें ग्रहण करनी चाहिये।

।। पञ्चक मरण शान्ति विधान ।।

पंचक प्रायश्चितके लिए दाहसंस्कार करते समय दाभके पाँच पुतले मृतक विधि से मृतक के साथ जलाने चाहिए। तदोपरान्त सपिण्डी कर्मके बाद पुण्याहवाचन हवन वेदीका निर्माणकर पाँच कलश गंगाजलसे भर कर एक ईशान दिशामें स्थापितकर चार-चारों दिशाओं में रक्खें। सुवर्णादि धातुओंकी धनिष्ठादि नक्षत्रोंके स्वामियोंकी पांच मूर्ति बनाकर कलशोंके ऊपर स्थापित कर, षोडशोपचारसे पूजन करें। धनिष्ठादि नक्षत्रोंके मंत्र ॐवसो पवित्र० ॐ वरुणस्योत्तम्भ०, ॐ उतनोहिर्बुध्र्य ॐ शिवोनामासि०, ॐपूषन्तव्रते० इन मंत्रोंका जप व इन्हीं से हवन करना। ५ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। संभव हो तो पंचकों में दाह न करें। शांति विधान के अभावमें मृतक परिवारमें पांच जीवोंकी हानि होना सम्भव है।

।। त्रिखल जन्म शान्ति विधान ।।

तीन पुत्रोंके बाद कन्या या ३ कन्याओंके बाद पुत्र का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है। पुत्र पिता के लिए, पुत्री माता के लिये नेष्ट होती है। शांतिहेतु भूशयन, तीन अन्न, तीन पात्र, तीन वस्त्र, महामृत्युञ्जय मंत्र का जाप यथा शक्ति कराने से शांति होती है।

।। दाँत निकलने का फल ।।

बच्चेके जन्म से ही दाँत निकले हुए हों तो माता-पिता का अरिष्ट हो, ऊपरकी पंक्तिमें दाँत से जन्म हो तो अधिक कष्ट हो। प्रथम ऊपरकी पंक्तिमें दाँत निकले तो मातुल (मामा) पक्षको भय हो। पहले मासमें स्वयं नष्ट, दूसरेमें छोटा भ्राता, तीसरेमें बहिन, चौथेमें कुटुम्बी भाई को कष्ट और पांचवेमें ज्येष्ठ भ्राता को कष्ट होता है। अशुभ फल शांत्यर्थ गंगाकी गोदमें पार्थिव पूजन मातुल पक्ष की ओर से शिशुके लिये वस्त्र, सप्तधान्य देकर मामा पुनः अपने निवास स्थानको चला जाय। ऐसा करनेसे भय नहीं होता।

।। प्रसव दोष शान्त्यर्थ ।।

जिस किसी के घरमें चैत्रमें कुतिया, वैशाखमें ऊंटनी, ज्येष्ठमें बिल्ली श्रावणमें गधी व घोड़ी, भाद्रपदमें गौ, कार्तिकमें स्त्री, मार्गशीर्षमें हथिनी, पौषमें बकरी, माघमें भैंस, बच्चा जन्मे तो पिता अथवा घर धनीकी छः मासमें मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। श्रावण मास के दिनमें घोड़ी माघ मध्ये बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घरधनी को महाभय होता है। इसकी शांति के लिए प्रसूत पशु गौ, भैंस, बकरी, घोड़ी, का दान शान्तिपाठ पुण्याहवाचन श्वेत सर्षपहवन व्याहृतमंत्रों द्वारा करने से शांति होती है।

।। पुष्या ।।

जिस वर्ष वर्षाकालमें बोलनामिणी, देवताओं प्रधान ग्रह पुष्य नक्षत्र में युक्त, दुष्ट या मंगल होकर त्रिक भवनमें स्थित होती है, उन वर्षमें मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट, उन बातों की वृद्धि होती है। शांत्यर्थ दान-मोती, तन्दुलान्न, सुवर्ण, सम्यग्वस्त्र, घृत, श्वेततुल्य, श्वेतवस्त्र, कपूर, मिश्री, श्वेतचन्दन, गौ दान, वर्ष और दक्षिणा, रत्न- लहसुनिया (वैदूर्यमणि) धारण करना चाहिए। दानका समय- प्रा, मध्य, सन्ध्या और सायंकाल पुष्पोदयकाल। सप्तधान्यों में जौ, उड़द, मूंग, गेहूं, धान्य (चावल) चना और कांगनी है। सर्वोषधि- कूट, जटामांसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन वच, चम्पक और नागरमोथा। अष्टगंध के द्रव्य- अगर, तगर, केशर, गोरोचन, कस्तूरी कुम्कुम तथा दोनों चन्दन है।

।। छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल ।।

अग्रिम तालिकामें पुरुषोंके दक्षिण अंगमें और स्त्रियोंके वामभाग में विचार करना, पुरुषों के वाम भागमें और स्त्रियोंके दक्षिण भागमें विपरीत भवनकी फल होता है। जो फल तालिकामें कहा है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़नेका जाने। सरटके गिरनेका तथा उतरनेके चढ़नेका फल वृथा होता है।

अवाङ्ग-विभागे (छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राजसम्मान	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभः	वामनेत्रे	ऐश्वर्यबंधन:
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दीर्घायुष्यम्	दक्षिणभुजे	इष्टबन्धन
हृदये	शुभागमनः	हस्तयोः	धनलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वामभ्रुवियो	कीर्ति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	मरणम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजन
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	सौभाग्यः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्यु
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जंघयो	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धन लाभः
दःमणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धन लाभः

।। मूल शांति ।।

पुनः मूल संज्ञक जन्मनक्षत्र आने पर मूल नक्षत्रमें हो, रिक्तातिथि क्रूरवार, क्षिप्र, मृदु, चर ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में मूल शान्ति करनी चाहिए। मूल, गण्डमूल नक्षत्र शुभाशुभ फल का पूर्ण विवरण श्रीराजधानी पंचांगके जातक प्रकरणमें मिलेगा।
गण्डेऽरिष्टे चन्दनं च कुष्ठं गोरोचनं तथा। स्वर्णेन मिलितं कृत्वा चतुर्भिः कलशैस्तः।।
सहस्र शीर्षामन्त्रेण बालकं स्नापयेत्सुतः। पितापुत्रं दिवा यावं भद्र युक्त च रात्रिकम्।।
स्नापयेत्पितृमातृभ्यां सव्यापो हस्तयोरपि। कांस्य पात्रे घृते: पूर्णे दद्याद्गण्डोपशान्तये।।
कृष्णा धेनु सुवर्ण च ब्रह्मणायां प्रदापयेत्। आश्लेषायां च मूलेऽपि शान्तिरेवविधीयते।।

॥ एक नक्षत्र जन्म दोष ॥

पिता पुत्र, माता-पुत्र व कन्या दो सहोदर भाइयोंका जन्म एक ही नक्षत्रमें हो तो दोनोंमें से एक की मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट हो, शान्त्यर्थ गौ, सुवर्ण छायादान हवनादि से अरिष्ट निवारण होता है। जन्म नक्षत्र मन्त्र से आहुति देनी चाहिए।

॥ पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यर्क्षाणि: ॥

यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।१२।१२।१३। इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं बु गु. शु. इन चारोंमें शुभ फल देती है। पु. अश्विनी. रो.मृ.पुनः उफा. ह. चि. स्वा.ध.रे.अनु.श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक है। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

॥ पल्ली-पाते कर्तव्य कर्म: ॥

पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्यु योग, दग्धा तिथि भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रह युक्त लग्नमें तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होनेसे अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप. होम. मृत्युञ्जय मन्त्र का जप व तिल स्वर्ण दान पञ्चगव्यसे स्नान तथा घृत का छाया पात्रदान कराना भी उत्तम है।

॥ काक-स्पर्शादौ फलम्: ॥

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्रीके मस्तक पर काक बैठना पति पुत्रका नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजनके कारण काक स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष कारक है। काकमैथुन देखना छः मासमें मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इष्टकार्य नाश करता है। विशेष कर दक्षिण दिशामें कुयोगके समय इसके दोष दूर करनेके लिये उड़दके आटेकी काक प्रतिमा मण्मय पात्रमें स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा, नैवेद्य देवे, ग्रामसे दक्षिण कीओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुखदीप, दक्षिणादिसे पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करें, (या करादे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्यसे स्नान भी करें इस विधानके करनेसे सम्पूर्ण दोष नाश होते है।

॥ काक विष्ठा विचार: ॥

शिरसि-मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे-शोकः। गुह्येसन्ताय कस्टम्। जंघयोः वाहन पीड़ा। पादयोः। प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीट कर देवे तो अशुभ जानो। और किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद-बीट करदे तो शुभ जानो।

॥ घर में उल्लू आदि: ॥

उल्लू, बगुला, गिद्ध, बाज, चील, चमगादड़, टटाटीगुली और जंगली कबूतर अद्भुत रूप से अचानक किसी के घर पर बैठ जाय तो घरधनी को नेष्ट होता है।

अङ्ग-स्फुरण फलम्

पुरुषोंका दायां अंग और स्त्रियोंका बायां अंग फड़कना शुभ है। मस्तकका स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनोंके लिये शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुलाभ
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीकष्ट	पृष्ठ	पराज्य
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख,	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वास्तदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीनाश	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यला	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजया	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लहसून, मस्सा, हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। शासकों के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती हं। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

॥ स्वप्न विचार ॥

सपने के गीत सदा अधूरे नहीं रहते पूरे भी हुआ करते है, जो अपना होता है, वह कभी सपना हो जाता है। जो सपना होता है, वह कभी अपना भी हो जाता है। स्वप्न जिसे हम निरी भावना या कोरी कल्पना कहते है, वह हमारे अन्तर्मनके रहस्यमय संकेत हुआ करते है। आदि काल से ही मानव-मन के लिये स्वप्न बड़े आकर्षण और जिज्ञासा का विषय बना रहा है। रात्रीकी श्यामल छाया में हमारी मुदी पलकोंको न जाने कौन-सी शक्ति अपनी कोमल पाणि-पंखुड़ियों से सहलाकर हमें एक विचित्र लोकमें ले जाती है, जिसे स्वप्न लोक कहते है। जिसमें प्रायः हमारी धरतीकी तरह सुख, दुःख, भय, क्रोध हास-विलासके प्रसंग उपस्थित होते है; परन्तु कभी कभी इस जागृत संसारसे भिन्न और विचित्र रूप में स्वप्न लोक ऐसा है, जहाँ हमें अपनी इच्छाके विरुद्ध भी जाना पड़ता है। स्वप्नोंके विषयमें हमारे प्राचीन ऋषियोंसे लेकर आधुनिक मनीषियोंने गहन विचार और छानबीन की है। इस विषयके पाश्चात्य विचारकोंमें फ्रायडेका स्थान मुख्य माना जाता है। उनके मतानुसार स्वप्न हमारी दबी हुई इच्छाओंका प्रकाशन मात्र है। हमें स्वप्नमें वही दिखाई, देगा जिसका हम कभी कभी विचार कर चुके है। विशेषतया हमारी वह इच्छायें जो किसी विशेष परिस्थितिवश जाग्रत अवस्थामें पूर्ण नही हो पाती स्वप्न में चरितार्थ होकर मानसिक तृप्ति देती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा इस श्री राजधानी पंचांग की रचना भी मेरे पूर्व देखे हुए स्वप्न की ही देन है। एक बार सन् १९६८ में रात्रिको सोनेके कुछ ही मिनट बाद मैंने एक स्वप्न देखा था और वह यह कि काशीमें भगवानजी ऊपर से एक पँचांग लिखकर डाल रहे है। इतनेमें ही वह दृश्य अदृश्य हो गया निद्राभी समाप्त हो गई, रात्रिभी इसी संकल्प-विकल्प में व्यतीत हो गई। प्रातःकाल मैंने उठकर कई पंचांगोंको परस्पर मिलान करके देखा तो सब में अन्तर पाया, इससे ओर सोचने के लिए विवश हो गया कि भगवानजी ही पंचांग लिखकर डालते है। तो अन्तर नहीं होना चाहिए नहीं। अखिल ब्राह्माण्ड नायक परमपिता-परमात्माकी आदिशक्ति जगत जननी जगदम्बा जिन जनों पर कृपा करके अन्तःकरणमें ज्योति जलाती है, उन्हींके द्वारा यह रचनायें होती है। स्वप्नके विषयमें कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता, इसके रहस्योद्घाटन के प्रयास अभी तक पूर्णरूपेण सफल नहीं हो सके है; फिर भी ऋषिकल्प महापुरुषोंके अनुभवपूर्ण खास-खास स्वप्नोंकी सूची नीचे दी जाती है; जिससे हर व्यक्ति आशातीत लाभ उठा सकता है। सायं का स्वप्न सात वर्ष में प्रातः कालके स्वप्न का फल सात दिनमें घटता है। इसी अनुपात में शेष रात्रि का फल जान लेना चाहिए।

॥ अनुभव सिद्ध स्वप्न और उनके फल ॥

अनाज भरना	-	धन लाभ	अन्न बेचना	-	नुकसान
मरण होना	-	दीर्घायु	आग उठाना	-	कष्ट पाना
आँधी देखना	-	सकटचिंता	आग देखना	-	धन लाभ
इमारत देखना	-	लाभ	ऊँट देखना	-	लाभ
ऊँचाई से गिरना	-	मानहानि	बिल्ली देखना	-	तरक्की पाना
कुत्ते का काटना	-	शत्रु भय	कुँएमें गिरना	-	परेशानी
नाव देखना	-	परेशानी	खून करना	-	सेहत पाना
चित्र देखना	-	राज्यलाभ	चीख मारना	-	संकट
जहान देखना	-	स्त्रीक्लेश	जहाज पर चढ़ना	-	तबादला
जवाहरात देखना	-	कार्यसफल	तख्त देखना	-	तरक्की पाना
तख्त पर बैठना	-	इज्जत पाना	जुआ देखना	-	धन लाभ
तालाब स्नान	-	इज्जत पाना	श्वेत सर्प काटना	-	लाभ
दरिया में नहाना	-	रोगनाश	दूध पीना	-	खुशी
पर्वत पर चढ़ना	-	तरक्की	पानी में डूबना	-	कष्ट पाना
बर्फ देखना	-	रोग चिन्ता	बन्दर देखना	-	धन लाभ
बारात देखना	-	रोग	बगीचा देखना	-	ऋण निवृत्ति
बादल देखना	-	लाभ	बिच्छू देखना	-	चिन्ता
मदिरा पीना	--	कष्ट पाना	भूषण की चोरी	-	सफर
मकान गिरना	-	तरक्की	मौत देखना	-	हानिकारक
मन्दिरोंमें जाना	-	रोग होना	मुँदरी पाना	-	परेशानी
रोटी खाना	-	खुशखबरी	मुर्दा रोते देखना	-	तरक्की
वृक्ष काटना	-	नुकसान	रीछ देखना	-	खुशी
वर्षा देखना	-	चिन्ता	विषखाना	-	चिन्ता
शरीर में तेल मलना	-	धन लाभ	वृक्ष पर चढ़ना	-	सफलता
इज्जत पाना	-	धन लाभ	शत्रु देखना	-	सफलता
सोना पाना	-	परेशानी	कपड़ा गिरना	-	कष्ट
सांप काटना	-	दुःख पाना	सांप देखना	-	धन लाभ
हाथी संवार	-	लाभ	स्त्री लड़ाई	-	शत्रु नाश
बांसुरी बजाना	-	इज्जत पाना	घोड़ा देखना	-	संकट दूर हो

प्रश्न प्रकरण

❀ नष्ट वस्तु ज्ञानाय चक्र ❀

संज्ञा	अन्धलो.	मन्दलो.	मध्यलो.	सुलोचन
नक्षत्र नाम	रोहि.,पुष्य, उफा.,विशा.पूषा. धनि.रेवती	अश्वि.,मृग.,श्ले. हस्त.अनुराधा उषा.शतभिषा	भर.,आर्द्रा,मघा. चित्रा.ज्येष्ठा अभि.पूभा.	कृति.,पुन.,पूफा. स्वाती.मूल. श्रवण,उभा.
दिशायां फलम्	पूर्वेगतम् शीघ्रलाभम्	दक्षिणो गतम् यत्नेनलाभम्	पश्चिमेगतम् खबरमात्रं	उत्तरेगमनं न खबर न लाभं

नष्टवस्तुज्ञानम्- प्रश्नकालीन तिथि, वार, नक्षत्र और लग्न योगमें ३ जोड़कर ५ का भागदें, यदि १ शेष बचे तो चोरी गई वस्तु पृथ्वीमें, २ बचे जलमें है मिलेनहीं, ३ बचे आकाश (उच्चस्थान) में है मिलेगी नहीं, ४ बचे अग्नि अथवा राज्यखजानेमें विलय हो गई ऐसाजानें और यदि ० शेष रहे तो वस्तु नही मिलेगी, केवल शोकसन्ताप ही रहेगा।

पशु खोने का प्रश्न- सूर्याश्रित नक्षत्रसे पशु (सफेद व लाल) खोने वाले दिन नक्षत्रों तक गिनती करें। ९ तक पशुको जंगलमें जानें। १० से १५ तक स्वस्थानके समीप, १६ से २२ तक शीघ्र घर आ जायेगा, २३ से २४ तक नष्टप्राय नहीं मिले, २५ से २७ तक मृत्यु हो गई ऐसा जानें। **टिप्पणी-** काले रंगके पशु बकरी, भैंस, गाय, कुत्ता आदि का प्रश्न हो तो जिस नक्षत्रमें शनि चल रहा हो उससे गिनती कर फल ऊपर लिखे अनुसार जानना चाहिए।यह मेरा स्वयंका अनुभव है। लगभग सही बैठता है।

॥ मेषादि लग्नोपरि प्रश्न, फल चक्रम् ॥

लग्न	मनश्चिन्ता प्रश्नः	रोगिणाम् प्रश्नः
मेष	मानवीय जीव की चिन्ता	देवी व कुल देव दोषः
वृषभ	चौपाये जीव पशु की चिन्ता	पितर अतृप्ति दोषः
मिथुन	गर्भस्थ संतान की चिन्ता	शांकिनी-डांकिनी दोषः
कर्क	व्यवसाय की चिन्ता	भूत पिशाचादि दोषः
सिंह	नभचर, थलचर जीव चिन्ता	स्वकुलीय मात्र दोषः
कन्या	दाम्पत्य सुखोपभोग की चिन्ता	स्वकुलीय देव दोषः
तुला	गुप्त दिए गए धन की चिन्ता	कुपित चण्डिका दोषः
वृश्चिक	दैहिक और भौतिक क्लेश	मृतवत्सा नारी दोषः
धनु	धनोपार्जन की चिन्ता	यक्षिणी व पिशाचिनी दोषः
मकर	शत्रु पर जय-पराजय चिन्ता	स्थान व ग्राम देव दोषः
कुम्भ	स्वकीय जायदाद की चिन्ता	अपुत्री कुलटा स्त्री दोषः
मीन	देव, भूतपिशाचादि की चिन्ता	आकाशगामी वायु प्रकोपः

स्वरोदय यंत्र राज- प्रश्नकर्त्ताः अभीष्ट प्रश्नके यथार्थ फलज्ञानार्थ मनमें अपने इष्ट का स्मरण कर स्वरोदय प्रश्नयंत्रके किसीभी कोष्टकमें दाहिने हाथकी तर्जनी अंगुली रखे, जिस कोष्टकमें अंगुली रखी जाय उसमें लिखित अंकके अनुसार शुभाशुभ फल ज्ञात करें। **टिप्पणी-** कोई भी सज्जन उपहासके लिए इस यंत्रका उपयोग न करें अन्यथा किसी अनिष्ट का उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं होगा।

❀ स्वरोदय यंत्र राज ❀

ए ८	अं १२	अ १	ओ १३	ई ६
इ ३		औ ५		ऋ ७
ऊ ४	उ ११	ऐ ९	अः १०	आ २

"अ-१" से विजय मिलेगी, "इ-३" से इच्छा प्रभु की जानि।
"उ-११" से उन्नति ना मिले, "ए-८" से कार्य विहानि॥
"ओ-१३" से आशा पूर्ण हो, "अं-१२" से इच्छित फल हानि।
अंगुली ऋ ७ रि री पै रखी, हुई पूर्ण इच्छा जानि॥
"आ-२" से आशा जानिये, "ई-६" से ईश्वर इच्छा बलवान।
"ऊ-४" से उतरा संकटजानि, "ऐ-९" से हार महान॥
"औ-५" से आशा मत करो, "अः-१०" से शुभ फल मान।
स्वर सारांश फल एहि 'कौशिक' वचन प्रमान॥

१. जिसकार्यका आपविचार कर रहे है उसकार्यमें शत-प्रतिशत विजय होगी। **२.** कार्य सम्पूर्ण होनेकी पूर्ण आशा है। आपको निराश नहीं होना चाहिए। अपने कर्तव्यके प्रति सचेत रहियेगा। **३.** प्रयत्न पूर्ण रखियेगा फल परमपिता-परमात्मा के अधीन है। **४.** अब आपका संकटकाल व्यतीत हो चुका है। पूर्व निर्धारित सभी योजनायें पूर्ण हो जायेंगी। **५.** कार्य विनाशक योग बन रहे है इसलिए किसी विशेष कार्य का शुभारम्भ न करें। **६.** आपके भाग्य परीक्षण का समय चल रहा है। इसीलिए अपने काम में संलग्न रहें। यथा- "मनोइच्छा विनष्ट होकर ईश्वर इच्छानुसार सभी कार्य होंगे। **७.** आपने अपने मनमें जिन विशेष कार्योंको विचार रक्खा है वे लगभग पूरे हो जायेंगे तत्परता कीजिए। भाग्य आपके साथ है। **८.** सावधान रहना चाहिए, समय आपके प्रतिकूल है। शत्रुओ द्वारा बने हुए कार्योंमें व्यवधान उत्पन्न होंगे। **९.** जिस कार्यका इस समय विचार कर रहे हो उसमें आपको विजय प्राप्त होनेकी सम्भावना है, माँ भगवतीका ध्यान करें। **१०.** समय सानुकूल है, अशुभ फलोंकी निवृत्तिके साथ-साथ शुभ फलों की बढ़ोत्तरी होनेसे मनमें नई स्फूर्ति का संचार होगा। **११.** आप अपने काममें संलग्न रहें, अभी उन्नति मिलना असम्भव है। **१२.** इच्छित फलकी हानि होने से मनमें खिन्नता, अंशाति, क्षोभ हो यत्र-तत्र व्यर्थ का ही भ्रमण करना पड़े, सावधान रहें। **१३.** आपकी सभी आशायें पूर्ण होंगी, समयका सदुपयोग करना चाहिए। भाग्य इस समय पूरा साथ दे रहा है।

साझे कारोबारमें किसको लाभ होगा?- मुहूर्त प्रकरणसे दोनोंके नाम वर्ग अक्षरानुसार कांकिणी ज्ञात कर लें। जिसकी कांकिणी अधिक होगी वही फायदे में रहेगा। स्मरण रहे कागेवार व्यक्तिको वही फलता है जिसका अपने वर्ग से तालमेल सही बैठता है।

पुत्र लाभ होगा कि नहीं?- तत्कालीन तिथि संख्याको ४ से गुणाकर, १ जोड़कर तदनन्तर वार तथा योगकी संख्या युक्त करके २ से भाग देना जो लब्धि आये उसको ३ से गुणाकरके ४ से भागदेना, जो शेष बचे उससे फल कहें। १ शेष बचे तो विलम्ब से पुत्र सन्तान होगी। चिरंजीविताके लिए पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए। शेष २ बचें तो पूर्व जन्मके पापके कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंश पुराण सुनने तथा सन्तानगोपाल के सवालक्ष जपसे सम्भव है कि ईश्वर कृपा करें। ३ शेष रहे तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीबकी कन्याका विवाह कर दें, या उस विवाह में गुप्त मदद करें, पुत्र का पूर्णसुख होगा । ० शेषमें सन्तान शीघ्र होगी।

गर्भिणी:- प्रश्नकालीनलग्न कुण्डलीके तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम स्थान में पुरुष ग्रह रवि, मंगल, गुरु स्थित हों तो पुत्र हो और अन्य ग्रह पड़े हो तो कन्या उत्पन्न हो। विशेषताः-गर्भिणी ऊर्ध्वमुख प्रश्न करे तो पुत्र, अधोमुख प्रश्न करनेसे कन्याका जन्म जानना चाहिए।

अंक प्रश्न:- प्रश्न कर्तासे १०८ अंकोंमें से कोई अंक कहलवाये वह अंक मुखसे उच्चारणकरें उसमें १२ का भागदें शेष १।७।९ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होगा। ४।५।८।१०शेषमें कार्यहानि, ११।३।१२ शेषमें कार्यसिद्ध होगा।

पथिकागमन विचार:- प्रश्नाक्षरोंको द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें। जो शेष बचे उसकाफल बताएं- १ आनेकी सोच रहा है। २. चल पड़ा है। ३. रास्तेमें है। ४. शीघ्र आ जाएगा। ५. देर से आएगा। ६. अस्वस्थ है। ७. नहीं आएगा। ८. मृत्यु या कष्टमें है।

देशान्तर से सूचना मिलेगी या नही?- प्रश्नलग्न चर हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान शुभग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो तो सूचना जल्दी मिलेगी स्थिर लग्नमें विलम्ब से पत्र मिले। प्रश्न लग्नमें चन्द्र हो और शुभ ग्रह देखता हो तो समाचार आयेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

विवाह होगा या नही?-प्रश्नलग्न से २।३।६।७।१०।११ स्थानोंमें स्थित चन्द्रको गुरु देखे तो विवाह हो जायेगा। यदि चन्द्रमाके साथ पापीग्रह हों या दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।१।११ स्थानमें चन्द्रमाको सूर्य, बुध, गुरु इनमें से कोई देखे अथवा व्ययेश सप्तममें और सप्तमेश लग्नमें हो अथवा २।४।७ इन राशियोंमें से किसी एक राशिमें चन्द्र या शुक्र हो तो विवाह अवश्य हो जायेगा।

जय-पराजय प्रश्न- यदि तीसरे भावसे, लेकर आठवें भाव तक शुभग्रह अधिक बलवान्हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवमभावसे दूसरेभाव तक शुभग्रह अधिक बलवान् हो तो मुद्दई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्नमें बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु के घरमें हो तो हार जायेगा।

❀ रोग त्रिनाड़ी चक्र ❀

आर्द्रा.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि	शत.	भर.	कृति	आदि
पुन.	मघा	हस्त	वि.	मूल	श्रव.	पू.भा	अश्वि.	रोहि	मध्य
पुष्य	अश्ले.	चित्रा	स्वा.	पूषा.	उषा.	उ.भा	रेव.	मृग.	अन्त्य

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्रमें एक नाड़ीपर हों तो रोगीकी मृत्यु होती है। प्रतिदिन देखनेसे जिसदिन यह योग मिले, उसदिन रोगीकी मृत्यु या कष्ट जानें। त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा युद्ध के समय भी वर्जित है।

।। रोगोत्पत्तौ कुयोगाः।।

रोगके शुरु वाले दिनमें रोगीकी राशि, जन्मनक्षत्र एवं जन्मलग्न से आठवें चन्द्रमा या लग्नेश आदि अन्य ग्रह पड़े हों अथवा यमघंट, यमदृष्टा मृत्युदादि कुयोग हों तो रोगका निदान कठिन होता है। यद्यपि प्रतिवर्ष निकृष्ट योगोंका उल्लेख कर देते है। फिर भी पाठकोंकी सुविधा हेतु वार, नक्षत्रादि से बनने वाले कुयोगोंके विषयमें लिख रहे है।

१. रविवारको भरणी, मघा, अनु, धनि, नक्षत्र, द्वादशी तिथि हो।
२. सोम में आर्द्रा, विशा, मूल, उषा नक्षत्र एवं २।७।१२ तिथियां हों।
३. मंगलको भर, कृत्ति., मघा व शत. नक्षत्र, नन्दा तिथि १।६।११ हो।
४. बुधवारमें अश्वि.,पुन.,चि.,वि., मू., पू.षा. नक्षत्र, ३।८।१३ तिथि हो।
५. गुरु. को मृग., मघा, ज्ये., व उषा. नक्षत्र, रिक्ता ४।९।१४ तिथि हो।
६. शुक्र. में रोहि., श्लेषा, श्रव., धनि, नक्षत्र, भद्रा २।७।१२ तिथि हो।
७.शनि. में हस्त, श्रव., शत., पू.भा.नक्षत्र,पूर्णा५।१०।१५ व ३०तिथि हो।
८. **सूर्य मंगल शनिवार में** ४।६।९।१२।१४।३० तिथि, भर., कृत्ति., आर्द्रा आश्ले., पूर्वा ३ विशा.,ज्ये.,धनि.,शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्रमें मारकेशका भी विचार कर लेना, क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं हां, ऐसे योगमें कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगोंमें से किसी भी योगमें रोगराम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय मंत्र का जप करनेसे सुख होता है।

कालस्यमुखदंष्ट्राज्ञानम्- दिन नक्षत्रसे रोगीके नाम नक्षत्र तक गिनने पर ५।१३।२३ संख्या हो तो कालका मुख होता है। इसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दृष्ट्रा (दाढ़ा) होता है। काल मुख या दाढ़ में जिस दिन गोचरमे नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त व्यक्तिकी मृत्युतुल्य हालत होती है। रोगोत्पत्ति, सर्पादि दर्शन, गिद्धके स्पर्श, विग्रह युद्धमें जाते समय मुख दष्ट्रा में नक्षत्र हो तो महाअशुभ होता है।

कालांगचक्रशुभाशुभफलम्- व्यक्ति के जिस अंगमें पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा, कंसर आदि विकार हो तो तत्काल प्रश्न कुण्डलीमें कालांग चक्रानुसार उस पीड़ित भाव को देखे। अतः जिस भावमें अशुभ ग्रह हो या वह भाव पाप दृष्ट हो या उसमें नीच अशुभग्रह हो तो उसमें अधिक कष्ट सम्भव है। शान्ति-हेतु उस ग्रह से सम्बन्धित विवरण शान्ति प्रकरण में देखें।

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंग	सिर	मुख	भुजायें	हृदय	उदर	कटिभाग	मूत्राशय वस्ति	गुप्तांग	जंघायें	घुटने	पिंडलियां	अंगुलियां पाद

नोट- कुछ दैवज्ञ भावोंके स्थान पर मेषादि द्वादश राशियों की कल्पना करके इसी प्रकार विचार करते है। अर्थात फल कहते है।

❀ तिथि कष्टावली चक्रम् ❀

ति. तिथीशाः	कष्ट दिन	बलि	दान
१ अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि	घृत अन्न दान
२ ब्रह्मा	५	पायस बलि	भोजन दान
३ गौरी	७	घृतान्न बलि	रक्तवस्त्र दान
४ गणेश	१६	मोदकान्न बलि	मूंगा दान
५ सर्प	२१	पायस बलि	दुग्ध दान
६ स्कन्दकार्तिकेय	१२	मोदकान्न बलि	चित्रवस्त्र दान
७ सूर्य	८	पायस बलि	ताम्रपात्र दान
८ शिव	१३	नानाभक्ष्य बलि	पीतवस्त्र दान
९ दुर्गा	१८	मिष्ठान्न बलि	रक्तवस्त्र दान
१० यम	२५	कृशरान्न बलि	नीलवस्त्र दान
११ विश्वेदेव	७	मोदकान्न बलि	पीतवस्त्र दान
१२ विष्णु	७	मोदकान्न बलि	श्वेतवस्त्र दान
१३ काम	१०	दधिशर्करा बलि	सुवर्ण दान
१४ शिव	६०	मिष्ठान्न बलि	क्षोद्रशाकभो
१५ चन्द्र	३	दर्ध्यादन बलि	चंदी दान
३० पितर	१८	पकान्न बलि	उत्तमान्न भोजन

❀ वार कष्टावली चक्रम् ❀

वार	वारेक	कष्ट दिन	बली एवं दान	दान का समय
सूर्यवार	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान	अरुणोदय
चंद्र "	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान	संध्याकाल
मंगल "	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान	सुबह
बुध "	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान	सुबह
गुरु "	ब्रह्मा	५	घृतगान्नबलि गुरुदान	संध्याकाल
शुक्र "	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान	अरुणोदय
शनि "	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान	मध्याह्नकाल

❀ सिद्धि होरा मुहूर्त्त ❀

★**सूर्य की होरा-** टेण्डर देने, नौकरी व राज कार्यके चार्ज लेने-देने तथा चुनाव में फार्म भरनेके लिए अच्छी होती है। ★**चन्द्र की होरा-** सब कार्योंके लिए शुभ मानी गई है। ★**मंगल की होरा-** युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्जदेना, सभा सोसाइटीमें जाना, दावा पेश करना मुकदमाके कार्यामें उत्तम होती है। ★**बुध की होरा-** विद्या कला काव्य का आरंभ कोषसंग्रह नया व्यापार, समझौता शुभ काम के लिए श्रेष्ठ है। ★**गुरु की होरा-** विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ोंसे मिलन, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक कार्योंके लिए शुभ है। ★**शुक्र की होरा-** यात्रा भूषण, नवीनवस्त्र धारण, सौभाग्यवर्धक उत्सवादिकार्य, सिनेमा शूटिंग के लिए उत्तम होती है। ★**शनि की होरा-**द्रव्य संग्रह, भूमि मकानकी नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्योके लिए शुभ होती है। **उदाहरण-** मंगलवार में आपने कार्य-सिद्धयर्थ किसी बड़े आदमी से मिलने जाना है इसके लिए गुरु की होरा उत्तम होती है- अतः उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है। चक्रमें मंगलवारके सामने देखा तो और २१ वें घण्टेमें गुरु की होरा मिली। अतः मंगलवारको सूर्योदय से ६ व १३ वें अथवा २० घण्टेंके बाद एक-एक घण्टे तक की गुरु होरा में आपको जाना चाहिए।

।। करण वार जानने का चक्र ।।

वा.	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो
→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.

गो.तुलसीदासजी के 'वचनामृत'

राम लखन कौशिक सहित, सुमिरहु करहु पयान।
लच्छि लाभ लै जगत जसु, मंगल सगुन प्रमान।।
भरत सत्रुसूदन लखन, सहित सुमिरि रघुनाथ।
करहु काज शुभ साज सब, मिलिहि सुमंगल साथ।।

अर्थ-श्रीविश्वामित्रजी सहित श्रीराम लक्ष्मणका स्मरण करके यात्रा करनेसे लक्ष्मी प्राप्तिके साथ-२ जगतमें सुयश प्राप्त होता है यह शकुन सच्चा मंगलमय है। और भरत-शत्रुघ्न एवं लक्ष्मण सहित श्रीरघुनाथजीका स्मरण कर सब शुभ साधनोंके सहित कार्यकरोगे तो साथ ही साथ सुन्दर यशभी मिलता जायेगा। अर्थात् मनोरथ सफलहो जायेंगे।

नकुल सुदरसन, दरसनी, क्षेमकरी चक चाष।
दसदिसि देखत सगुन शुभ, पूजहिं मन-अभिलाष।।
सुधा, साधु, सुरतरू सुमन, सुफल सुहावनि बात।
'तुलसी' सीतापति भगति, सगुन सुमंगल सात।।

अर्थ-नेवला मछली, दर्पण, क्षेमकरीचिड़िया, चकवा और नीलकण्ठ इन्हें दसो दिशाओंमें कहीं भी देखना शुभ शकुन है। और ये मनकी अभिलाषा पूर्ण करते है। गो. तुलसीदासजी कहते है कि अमृत, साधु कल्पवृक्ष, सुन्दर पुष्प, अच्छे फल सुहावनी बात श्रीसीता रामकी भक्ति ये सात सुन्दर शकुन है।

चलतसमयनेउरा मिल जायाबामभागचारा चखु[1] खाय।।
काग दाहिनेखेत सुहायासफल मनोरथ समझहु भाय।।
लोमा[2] फिर-फिरदरस दिखावैबायेंते दहिने मृग आवै।।
मृग बायें ते दाहिने, जो आवै तत्काल।
अनधनलक्ष्मी वहु मिलै, चलतै प्रात:काल।।
भड्डरऋषियहसगुनबतावै। सगरेकाजसिद्धहोइ जावै।।
नारिसुहागिनजलघटलावै। दधिमछलीजोसनमुख आवै।।
सनमुखधेनु पियावै बाछा। यहीसगुन है सब ते आछा।।

१. नीलकंठ २. लोमड़ी

"उष: प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पति:।
अंगिरा च मनोत्साह: ब्रह्मवाक्यं जनार्दन:।।"

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।।
एक सूद्र दो वैस असार। तीन विप्र औ छत्री चार।।
सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरि अशुभ विचार।।
तीनि धेनुगज सात प्रमान। चलत मिलै मत करौ पयान।
स्वान धुनै जो अङ्ग, अथवा लोटे भूमि पर।
तो निज कारज भंग, अतिहि कुसगुन जानियै।।
कलह करके जो चले, विल्ली डगर अगार।
पुष्पवती नारी मिले, होवे बहुत विगार।।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरिते दूरि निकटते निकट, समझो फल भरपूर।।

छींक विचार

एक नाक दो छींक। काम बनै सब ठीक।।
छीकतखड़ये छीकत नहिये, छीकत पराए घर ना जइये।
सम्मुख छीक लड़ाई भाषे, छीक दाहिनी द्रव्य विनासे।।
ऊंची छीक होय जयकारी, नीची छीक होय भयकारी।
छीकसूंघनी छलकरि लीनी, सज्जन जानो सो फल हीनी।।

यात्रा के लिए शुभ तिथि-२,३,५,७,१०,११,१३,१५ तथा कृष्णा १ भी ग्राह्य है। शुभ नक्षत्र- अश्वि. रोहि. मृग. पुन. पुष्य. पूफा. उफा. हस्त अनु. ज्येष्ठा. पूषा. उषा. श्रव. धनि. पूभा. उभा. रेव. शुभ होरा-चन्द्र बुध गुरु और शुक्र की जानें।

यात्रा समय लग्न विचार

दहिने सम्मुख लग्न जो, होई सिद्ध सब काज।
बायें मध्यम जानिये, पृष्ठे महा अकाज।।
जौन लग्न में रवि तपै, ताको यहै विचार।
पूर्व अग्नि तामे चलै, सो है अतिहि ख्वार।।

लग्नके दाहिने सम्मुखादिका विचार चन्द्रमाकी ही भाँति करना चाहिए अर्थात् जिन राशियोंमें चन्द्रमा जिस दिशामें रहता है, उन्ही राशियोंका लग्नभी उस दिशामें रहता है। लग्नमें सूर्यहो तो पूर्व एवं अग्नि कोणकी यात्रा न करें

दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त

वार	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग
चन्द्र.	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत
मंग.	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग
बुध.	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ
गुरू.	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ
शुक्र.	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर
शनि.	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल

चौघड़ियाविवरण- चौघड़िया मुहूर्तो के स्वामी उद्वेगके रवि, चर के शुक्र, लाभके बुध, अमृत के चन्द्र, कालके शनि, शुभ के गुरु और रोगकास्वामी भौम है, श्रेष्ठ समय शुभ, चर, अमृत और लाभके चौघड़ियाका होता है। अशुभ उद्वेग, रोग और काल का होता है। यत्न पूर्वक इनका त्याग करना चाहिए। दिनमानको ८ से भाग करने पर लब्ध एक चौघड़िया मुहूर्तका मान होता है, उसके घण्टा-मिनट बनाकर सूर्योदयमें जोड़नेसे उक्त चौघड़िया मुहूर्तोका समय आप सहज ज्ञात कर सकते है। इसी प्रकार रात्रिके चौघड़िया का समय ज्ञात करनेके लिए रात्रिमानको ८ से भागकर शेषको ढाई से गुणाकरनेपर लब्ध घण्टादि फल को सूर्यास्तमें जोड़नेसे रात्रिके प्रथम चौघड़ियाका

।। दिशा ज्ञानम् ।।

उदित सूर्य के सनमुख, खड़े हो जाओ सीना ताने।
कौशिक जी के वचन से, सुगम दिशा पहिचाने।।
सनमुख दिशा सु पूरब, पीठ पीछे पश्चिम।
बाईं ओर दिशा उत्तर की, दाहिनी ओर दक्षिण।।

यह नियम याम्योत्तर ३६ अक्षांश तक ही लागू होता है।

।। हवाई यात्रा मुहूर्त्त ।।

अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य., पूफा., उफा., हस्त., अनु., ज्येष्ठा मूल पूषा., उषा. शत. धनि. पूभा. उभा. रेवती. नक्षत्र तथा कुयोगरहित शुभ मुहूर्तमे यात्रा सफल होती है।

रात के चौघड़िया मुहूर्त्त

वार	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ
चन्द्र.	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर
मंग.	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल
बुध.	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग
गुरू.	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत
शुक्र.	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग
शनि.	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ

समाप्तिकालआ जायेगा। सभी आवश्यक कार्योमें चौघड़िया मुहूर्तका अपना विशेष महत्व है। श्रेष्ठ चौघड़ियामें से किसी भी दिशाकी यात्रामें इनके स्वामीका सूक्ष्म विचार कर लेना आवश्यक है। प्राय: सभी लोग उक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़ियामें से किसीभी दिशाकी यात्रा कर लेते है, किन्तु फल कभी-कभी उल्टा यानी अशुभ होता है। इसका कारण यह है कि यदि किसीको पूर्वमें जाना है वह 'अमृत' चौघड़ियाके समयमें चला गया तो उस चौघड़ियाका स्वामी चन्द्र होनेके कारण पूर्व दिशाके लिए वह चन्द्रदिशाशूल दोष कारक होगा- **"सौम शनीचर पूरब ना चालू"** के अनुसार तो फल श्रेष्ठकी बजाय अशुभ होना निश्चित प्राय: है।

जन्मराशि- विवाहेसर्वमांगल्ये यात्रादौग्रहगोचरे।
जन्मराशेप्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्।।
नामराशि-देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशे: प्रधानत्वंजन्मराशि न चिन्तयेत्।।

जन्मराशि ज्ञात न हो तब

विवाहं घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्।
नामभाद विचिन्तयेत् सर्वजन्म न ज्ञायते यदा।।

यात्रामें वर्जित घातचक्र

घाततिथिर्घातवार: घातनक्षत्र मेव च।
यात्रायां वर्जयत्प्राज्ञत्वन्यकर्मसु शोभनम्।।

घात तिथि वारादि का विवरण अवकहडा चक्र में देखें।

❀ गोरख पतरा (यात्रा मुहूर्त्त) ।। श्रीगोरखनाथ जी का वचनामृत ।। ❀

पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशी.	मासों की तिथियों का फल	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र.लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय जीवहानि पछतावा हो Z सहित घर आवे	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्ध व अर्थपूर्ण हो Y सकुशल घर आवे	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुःख	इष्टला	धन प्रा.
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे।	क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री प्रा.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ हो, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्यप्रा.	धनप्रा.	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट हो, कदाचित घर आवे।	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थला.
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्नादि Z	बिलम्ब	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीव नाश हो।	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशा पूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगे किन्तु Y	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री प्रा.
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यला	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

श्री गोरखनाथके पूछनेपर गुरू मत्स्येन्द्रनाथने कहा था कि उपरोक्त यात्रा मुहूर्त के अनुसार यात्रा करेगा, वह कुशल पावेगा। यह मुहूर्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोगका दोष नहीं लगेगा, यह स्वयं सत्यसिद्धभी है। मैने अपने जीवनकालमें इसी से अनेक मुहूर्त बनाए है। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्ध हुए है। पंचांगप्रेमी पाठकोंकी विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यह यहाँ प्रकाशित किया जाता है। इससे प्रत्येक माहकी, प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहरमें हर एक दिशाकी यात्रा का फल निर्दिष्ट किया गया है। प्रत्येक मासोंके नीचे दी गई तिथियों को उस मासके कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनोंकी समझनी चाहिए। इसमें १३।१४।१५ और ३० तिथियोंका उल्लेख नहीं है। सो १३ तिथिका फल ३ तीज तिथि के समान, १४ का फल ४ तिथि के समान और १५ का फल ५ तिथि के समान समझना चाहिए। ३० (अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह १ से ४ तक के प्रहरोंको दिन और रात दोनोंके लिए समान समझे।

● ● ●

नोट:- दिनमान का चतुर्थांश दिनके एक प्रहरका मान होता है। तथा रात्रिमान का चतुर्थांश रात्रिके एक प्रहरका मान होता है। प्रत्येक प्रहर लगभग तीन घन्टे का होता है।

❀ यात्रात्पूर्वग्राह्य वस्तुएँ ❀

रवि को पान सोम को दर्पण मंगल को गुड़ करिये अर्पण। बुध धनियाँ बीफे जीरा शुक्र कहै मोहि दही को पीरा। कहै सनी मैं अदरख पावौ सुख-संपति निश्चय घर लावौ।

विशेष

यात्री को एक दिन में यात्रा करके गन्तव्य स्थानमें पहुँचना सम्भव हो अथवा वापस आना हो तो दिशाशूल योगिनी आदि के विचारकी आवश्यकता नहीं।

विदिशा

चन्द्रवास, दिशाशूल समय व नक्षत्र शूल के विचार में आग्नेय कोण कों पूर्वमें, नैर्ऋत्य की दक्षिण में, वायव्य की पश्चिम में और ईशान की गणना उत्तर दिशा में की जाती है।

पञ्चकों में वर्जित

न गच्छे दक्षिण दिशायां षट्के च श्रवणादिके। गृहार्थं तृणकाष्टादेः शायादेः संग्रहं त्यजेत्।। श्रवणादि श्र. ध. श पू. उ. रे. ६ नक्षत्रोंमे दक्षिण दिशा की यात्रा, भवननिर्माण हेतु तृण, काष्ठका संग्रह तथा चारपाई, पलग आदि बनवाना त्याग दें। छत डालना वर्जित है।

❀ चन्द्रवासचक्रम् ❀

पूर्व: मेष सिंह धनु
दक्षिण: वृष कन्या मकर
पश्चिम: मिथुन तुला कुंभ
उत्तर: कर्क वृश्चिक मीन

सम्मुखेचार्थलाभ:स्याद्दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षतिः।। सर्वेदोषा लयंयान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे।।

❀ दिशाशूलदोषचक्रम् ❀

पूर्व: चन्द्र शनि
दक्षिण: गुरुवार
पश्चिम: रवि शुक्र
उत्तर: मंगल बुध

दिशाशूल ले जावो वामे राहु योगिनी पूठ। सम्मुख लेवे चन्द्रमा ल्यावे लक्ष्मी लूट।।

❀ योगिनीवासचक्रम् ❀

पूर्व: १/९
आग्नेय: ३/११
दक्षिण: ५/१३
नैर्ऋत्य: ४/१२
पश्चिम: ६/१४
वायव्य: ७/१५
उत्तर: २/१०
ईशान: ८/३०

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी। दक्षिणे धन हंत्री च सम्मुखे मरणाप्रदा।।

❀ कालराहुचक्रम् ❀

पूर्व: शनि
आग्नेय: शुक्र
दक्षिण: गुरु
नैर्ऋत्य: बुध
पश्चिम: मंगल
वायव्य: चन्द्र
उत्तर: रवि
ईशान: रवि

अर्कोत्तरे वायुदिशांच सोमे भौमेप्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च याम्ये गुरौवन्हिदिशां च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंतिकाल:

❀ नक्षत्रशूलचक्रम् ❀

पूर्व: ज्ये. पूषा. उषा.
दक्षिण: अ. पू.भा. उ.भा. रे.
पश्चिम: रो. पुष्य. मू.
उत्तर: पूफा उफा. हस्त विशा.

आग्नेय पूर्वदिग्ज्ञेया दक्षिणदिक् च नैर्ऋती। वायवी पश्चिमादिक् स्यादैशानी च तथोत्तरा।।

❀ समयशूलचक्रम् ❀

पूर्व: उषा:काल
दक्षिण: मध्याह्न
पश्चिम: गोधूलिबेला
उत्तर: मध्यरात्रि

"उषः प्रशस्यतेगर्ग: शकुनं च बृहस्पतिः। अंगिराश मनोत्साहः बह्म वाक्यं जनार्दनः।।"

दिशाओंके स्वामी- पूर्व के सूर्य, आग्नेय के शुक्र, दक्षिण के मंगल, नैर्ऋत्य के राहु, पश्चिम के शनि, वायव्य के चन्द्र, उत्तर के बुध और ईशान के गुरु है।

मुहूर्त्त प्रकरण

कालके प्रमुख पांच अङ्ग :- शुभाशुभ फल देनेमें समर्थ समय के पांचअंग प्रधान माने गये है। यथा- वर्ष, मास, दिन (तिथि) लग्न और मुहूर्त्त किसी काममें यदि सभी शुद्ध मिल जायें तो कार्यकी सफलता सुनिश्चित होती है। उपरोक्त पाँचोंकाल उत्तरोत्तर बली होते है। अर्थात् वर्ष अशुद्ध हो तो, मासकी शुद्धि से शुद्ध हो जाता है। दिन की शुद्धता से मास शुद्ध होता है। लग्नकी शुद्धिसे दिनकी शुद्धि होती है और मुहूर्त्तकी शुद्धिका अपना विशेष महत्व है ही इसीलिए लग्न की शुद्धता सर्वोपरीय मानी गई है - **"सर्वेदोषा: विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्"**

भद्रा मुख पुच्छ ज्ञानाय चक्रम्

भद्रा की तिथियाँ	भद्रा के मुख का समय	भद्रा के पुच्छ का समय
शुक्ल ४	१ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	४ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल ८	२ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	१ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल ११	३ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	२ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल १५	४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	३ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण ३	४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	३ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण ७	३ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	२ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण १०	२ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	१ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण १४	१ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	४ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य

भद्रा मुख-पुच्छ ज्ञानम्- भद्रा विहित (कुलसमय) को तीन स्थानमें रखकर पृथक-पृथक क्रमशः ४।६।१० से भाग करने पर प्रहर, षष्ट्यंश और दशमांश का मान निकल आता है। उपरोक्त चक्रमें शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथिमें जो भद्रा लिखी गई है उसके प्रथम प्रहर (यानि भद्रा के शुरु में) षष्ट्यंश तुल्य भद्रा का मुख होता है। और चतुर्थ प्रहर के अन्तमें दशमांश तुल्य भद्राका पुच्छकाल माना जाता है। प्रहर का मतलव भाग से है।

उदाहरण- वि.सं. २०५५ फाल्गुन शुक्ल १४ सोमवार १ मार्च १९९९ होलिकादहन के मुख्यकाल प्रदोषमें भद्राकी व्याप्ती व्यवधान कारक है। अतः भद्राके मुखका समय सर्वथा सभी शुभ कृत्योंमें वर्जित है। उक्त दिन १२।२४ से २४।२९ बजे के मध्य कुल समय १२ घं. ५ मि. तक भद्रा व्याप्त रहेगी। १२।५ को ४ से भाग करनेपर ३ घं. १ मि. प्रत्येक प्रहर का मान हुआ। पुनः १२।५ को ६ से भाग दिया तो २ घं. ० मि. ५० से. षष्ट्यंश हुआ। पूर्णिमाके ४ ये प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य भद्रा का मुख होता है सो भद्रारम्भ घं. १२ मि. २४ में तीन प्रहरका मान ९ घं. ३ मि. जोड़दिया १२।२४ + ९।३ बराबर २१ घं. २७ मि. से भद्रामुख प्रारम्भ होने का समय निकल आया। जिसमें षष्ट्यंश २ घं.५०से. जोड़ने पर २३ घ.२८मि. भद्रामुख समाप्तिकाल सुनिश्चित हो गया। **भद्रा अशुभ ही नही शुभ भी होती है। पुच्छकाल की प्रशंसा-**

पृथिव्यां यानि कर्माणि शुभान्यशुभानि च।
तानि सर्वाणि सिद्ध्यन्ति विष्टि पुच्छे न संशय॥

❀ साढ़ेतीन स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त ❀

चैत्र शु. प्रतिपदा, वैशाख शु. अक्षयतृतीया।, आश्विन शु. विजयादशमी और कार्तिक शु. प्रतिपदा ये ४ स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त है। इनमें किसी भी कार्यको करनेके लिए पंचांगशुद्धि देखनेकी आवश्यकता नहीं, चौथा अर्धबली होनेसे इन्हें साढेतीन मुहूर्त कहते है। इन्हें **अनबूझा** मुहूर्त भी कहते हैं।

❀ लोक प्रसिद्ध मुहूर्त्त ❀

१आषाढ शु. भड्डरि नवमी, २ कार्तिक शु. देवउठान, ३ माघ शु. वसन्त पंचमी, ४ फाल्गुन शु. फुलैरा दौज ये चारों मुहूर्त्त लौकिक व्यवहारमें प्रसिद्ध अभीष्ट सिद्धिदायक माने जाते है। पूर्वज इन्हें बड़ी ही श्रद्धाके साथ सभी शुभ कार्यो में अपनाते आये है।

❀ अभिजित् मुहूर्त्त ❀

अष्टमे दिवसस्यार्द्धे त्वभिजित् संज्ञक: क्षण:॥ प्रत्येक दिनका आठवाँ मुहूर्त्त अभिजित् मु. कहलाता है। जोकि '**मध्याह्नात्पूर्वापर**' २ घटी बराबर ४८ मिनटका होता है। दिनमानके आध समयको सूर्योदयमें जोड़ने से स्पष्ट मध्याह्नकाल हो जाता है। जिसमें २४ मि. घटाने और २४ मि. जोड़ने पर अभिजित् का मान निकल आता है। जिसमें अनेक दोष निवारणकी क्षमता है। अभिजित् में सभी शुभकार्य किये जा सकते है। बुधवारका दिन त्याज्य है।

❀ दोषसमूह नाशक रवियोग ❀

सूर्याश्रित नक्षत्रसे इष्टदिननक्षत्र ४।६।९।१०।१३।२० वाँ हो तो त्रयोदश कुयोग नाशक रवियोग होता है। हमअपने पंचागोंमें इसका स्पष्ट उल्लेख कर देते है।

❀ होमसमये अग्निवास ज्ञानम् ❀

अभीष्ट तिथि संख्यामें वार संख्या जोड़कर १ और मिलावें ४ से भाग दें ३।० शेष बचे तो अग्नि का वास पृथ्वीपर श्रेष्ठ, १ बचे तो आकाश में प्राणनाशक, २ शेष रहे तो पातालमें धन हानि कारक माना जाता है।

❀ विशेष ❀

विवाहयात्राव्रतगोचेषु चूडोपनीति ग्रहणे युगाद्यैः।
दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नेवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्॥

❀ होमाहुति शुभाशुभ ग्रहे मुखज्ञानम् ❀

रवि आश्रित नक्षत्रसे दैनिक चान्द्र नक्षत्र तक गिने ३ संख्या तक आहुति सूर्य ग्रह के मुखमें जाती है, तदुपरान्त ४ से ६ तक बुधके मुखमें। इसी प्रकार आगे निम्न चक्र से ज्ञान लें।

सू.	बु.	शु.	श.	च.	मं.	गु.	राहु	केतु	ग्रहा:
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

शुभ ग्रह के मुख में पड़ने से यज्ञाहुति मंगलकारी होती है। नोट- ग्रह दोष शान्त्यर्थ आहुतियों का विचार प्रसंगवश करना चाहिए।

❀ शिव वास ज्ञानम् ❀

अभीष्ट तिथि संख्याको दूना करके ५ और मिलावें। ७ सेभाग करने पर १ शेष बचे तो शिवजीका वास कैलाश पर श्रेष्ठ, २ शेषमें गौरीपार्श्वे श्रेष्ठ, ३ शेषमें वृषारुढ श्रेष्ठ, ४ शेषमें सभायां सन्ताप, ५ शेषमें ज्ञावेलायां पीडा, ६ शेषमें क्रीडायां दुःख और ० शेष रहने पर शिवका वास श्मशान भूमिमें होता है। जो मृत्युतुल्य माना जाता है।

❀ शिववास शुभ तिथि ❀

शुक्ल पक्ष	२	५	६	९	१२	१३
कृष्ण पक्ष	१	४	५	८	११	१२

❀ भवन निर्माण मुहूर्त्त ❀

वैशाख, आषाढ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ एवं फाल्गुन सौरमास तथा गुरु शुक्रके उदयकालमें शुभ। **शुभनक्षत्र-** अ.रो.मृग.पुन.पुष्य.उफा.ह. चि.स्वा.अनु.मू.उषा.श्र.ध.श.उभा.रे.। **शुभतिथि-** २।३।५।६।७।१०।११। १२।१३।१५ **स्थिर लग्नमें**, रोगमृत्युवान रविभौमवार व पृथ्वीशयनकाल रहित दिनमें मकान बनवानाशुभ है। **भूमिशयन: संक्रांति मितिदिन पञ्चम सप्तमनवमें जोय। दश इक्कीसा चौबीसवें षट्दिन पृथ्वी सोय॥** **द्वितीयमत-** सूर्याश्रितनक्षत्रसे५।७।९।१२।१९।२६ वें नक्षत्रमें भूशयन करती है। मात्र कुछ घटियाँ क्रमशः५।११।७।६।२।१० ही निषेध मानी गई हैं।

❀ निवास हेतु नगर का चयन ❀

जिस गाँव, नगर, महानगरीय स्थान विशेष में स्थायी रुप से रहना हो, फैक्ट्री, कारखाना, उद्योग, लगाना हो, दफ्तर या फर्म खोलनी हो तो उस स्थान की राशि, कर्त्ता (निवास करने वाले) की राशि से २।५।९।१०।११ वी हो तो शुभ जानें। १।७ होने पर शत्रुता, ३।६ होने पर हानि और ४।८।१२ हो तो रोगोपद्रवादि से कष्ट होता है।

❀ काकिणी परित्वेन विचार ❀

वर्ग वर्गसंख्या	अ वर्ग (१)	क वर्ग (२)	च वर्ग (३)	ट वर्ग (४)	त वर्ग (५)	प वर्ग (६)	य वर्ग (७)	श वर्ग (८)
वर्गाक्षर	अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
स्वामी	गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मृषक	मृग	मेड़ा
शत्रु	सर्प	मृषक	मृग	मेढ़ा	गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान
दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
स्वर संख्या	८	५	६	४	७	१	३	२

❀ काकिणी विचार ❀

निवास करने वालेकी वर्ग संख्याको दूना करके स्थानकी वर्ग संख्या जोड़कर ८ से भाग दें, जो शेष बचे वह प्रवासी की काकिणी होती है। और स्थान की वर्ग संख्या दूनी करके प्रवासीके वर्ग की संख्या जोड़कर ८ का भाग देने पर ग्रामकी काकिणी होती है। बसने वालेकी काकिणी अधिक हो तो उत्तम लाभप्रद जानें।

❀ काकिणी संख्या, लाभालाभ ज्ञानार्थ चक्र ❀

नगर का वर्ग	व्यक्ति का वर्ग: अवर्ग (१)	कवर्ग (२)	चवर्ग (३)	टवर्ग (४)	तवर्ग (५)	पवर्ग (६)	यवर्ग (७)	शवर्ग (८)	काकिणी
अवर्ग (१)	३ / ३ सम	५ / ४ लाभ	७ / ५ लाभ	१ / ६ हानि	३ / ७ हानि	५ / ० लाभ	७ / १ लाभ	१ / २ हानि	व्यक्ति नगर
कवर्ग (२)	४ / ५ हानि	६ / ६ सम	० / ७ हानि	२ / ० लाभ	४ / १ लाभ	६ / २ लाभ	० / ३ हानि	२ / ४ हानि	व्यक्ति नगर
चवर्ग (३)	५ / ७ हानि	७ / ० लाभ	१ / १ सम	३ / २ लाभ	५ / ३ लाभ	७ / ४ लाभ	१ / ५ हानि	३ / ६ हानि	व्यक्ति नगर
टवर्ग (४)	६ / १ लाभ	० / २ हानि	२ / ३ हानि	४ / ४ सम	६ / ५ लाभ	० / ६ हानि	२ / ७ हानि	४ / ० लाभ	व्यक्ति नगर
तवर्ग (५)	७ / ३ लाभ	१ / ४ हानि	३ / ५ हानि	५ / ६ हानि	७ / ७ सम	१ / ० लाभ	३ / १ लाभ	५ / २ लाभ	व्यक्ति नगर
पवर्ग (६)	० / ५ हानि	२ / ६ हानि	४ / ७ हानि	६ / ० लाभ	० / १ हानि	२ / २ सम	४ / ३ लाभ	६ / ४ लाभ	व्यक्ति नगर
यवर्ग (७)	१ / ७ हानि	३ / ० लाभ	५ / १ लाभ	७ / २ लाभ	१ / ३ हानि	३ / ४ हानि	५ / ५ सम	७ / ६ लाभ	व्यक्ति नगर
शवर्ग (८)	२ / १ लाभ	४ / २ लाभ	६ / ३ लाभ	० / ४ हानि	२ / ५ हानि	४ / ६ हानि	६ / ७ हानि	० / ० सम	व्यक्ति नगर

नोट : व्यक्ति और नगर के सामने बाईं ओर लिखी संख्याएं व्यक्ति और नगर की काकिणी संख्याएं है

❀ वास्तु पूजन ❀

जिस भूमि पर मनुष्यादिप्राणी वास करते है, उसे वास्तु कहा जाता है। वास्तु को शुभाशुभ परीक्षा पूजनादि सौख्य समृद्धि हेतु आवश्यक है। मत्स्यपुराण अ. २५१ में लिखा है कि अन्धकासुरके वधके समय भगवान शंकरके ललाटसे पृथ्वी पर जो स्वेदबिन्दु गिरे उनसे एक भंयकराकृतिवाला पुरुष प्रकट हुआ। जिसने अन्धकगणों का रक्तपान किया फिरभी अतृप्त हो त्रिलोकीको भक्षण करनेके लिए उद्यत हो गया। जिसे महादेवादि देवोंने पृथ्वी पर सुलाकर वास्तुदेवताके रुपमें प्रतिष्ठितकिया और उसके शरीरमें सभी देवताओंने वास किया, इसीलिए वह वास्तुपुरुष या वास्तुदेवता कहलाने लगा। देवताओंने वास्तुको गृहनिर्माणादिके वैश्वदेव बलिके तथा पूजन, यज्ञ, यागादिके समय पूजित होनेका वर देकर कहाकि वापी, कूप तड़ाग गृह, मन्दिर, बाग बगीचा जीर्णोद्धार यज्ञ मण्डप निर्माणादि के समय जो तुम्हारी पूजा प्रतिष्ठा अर्चना करेंगे उन्हें सभी प्रकारकी सौख्य समृद्धि मिलेगी। वास्तुदेवताका मूल मन्त्र-

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवान:।
यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्वशंनो भव द्विपदेशं चतुष्पदे।। ऋग्वेद ७।५४।१

❀ चन्द्रमा विचार ❀

मेष-मकर वृष कर्कट सोते, कार्य समय ऐसे शशि होते।
कन्या मिथुन तुला धनु ठाढ़े, कुम्भ मीन सिंह वृश्चिक बैठे।।

गृहारम्भ मुहूर्त शिल्प शास्त्र-

सोते कूप खुदाइऐ, बैठि बसइए ग्राम।
ठाडे कटक सिधारिए, शिल्प शास्त्र प्रमाण।।
चार वेद तिथि दुगुनकरि, नाम के अक्षर जोड़,
शिव के नैना भाग दे, विश्वकर्मा ईंट चहोड़।।
एक बचे लखछैश्वरी,दोय बचे धनवान।
शून्य बचे जीवै नही, शिल्प बचन प्रमान।।

नोट - तिथिकी गणना शु.१से, वार की रविवार से होती है। शिव के नेत्र ३ है। संक्रान्ति तुल्य मासोंमें निम्न चक्रमें देखकर नींम रखनी चाहिए।

❀ अथ खात (खोदना) चक्रम् ❀

सूर्य	विवाहे	देवालये	गृहारम्भे	जलाशये	शुभस्थान
सूर्य	२।३।४	१२।१२	५।६।७	१०।११।१२	अग्नेय दिशा
सूय	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	७।८।९	नैर्ऋत्य दिशा
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	४।५।६	वायव्य दिशा
सूर्य	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	१।२।३	ईशान दिशा

❀ गृहारम्भे शेष नाग फलम् ❀

फन दावे त्रिरिया डशे, पूंछ दबै भरतार।
जो कोई दावे मध्य मे, होय कुटुम्ब संहार।।

अर्थ- जो कोई शेष नागके मुख पर से मकान की नीव रखकर चिनाई शुरू कर दे तो उस मकान मालिक की स्त्री नहीं बचती, इसी तरह पूछ से स्वयं गृहकर्त्ता, ओर मध्यसे कुटुम्बकी हानि होती है इसलिए शेष को चाल बचाकर मुहूर्त्त करना चाहिए। खात चक्र से स्पष्ट जान लें।

❀ निवास के लिए अशुभ दिशा विभाग ❀

मेष राशिवालोंको नगर के उत्तरभाग, वृष-मिथुन सिंह और मकर राशिवालोंको मध्यभाग में बसना अशुभ फलप्रद होता है इसी प्रकार अन्य राशियोंका फल निम्नचक्र से जान लें।

दिशाएँ	मध्य	पूर्व	अग्नेय	दक्षिण	नैर्ऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
निषिद्ध राशिया	२।३।५।१०	८	१२	६	४	९	७	१	११

❀ काल की परिभाषा ❀

प्रतिदिन प्रत्येक स्थानका दिनमान न्यूनाधिक होता रहता है। अभीष्ट दिनके दिनमानको पांचसे विभाजित करनेपर प्रत्येक भागको जिस नामसे जाना जाता है उसका विवरण-१ **प्रात:काल** २ **संगवकाल या पूर्वाह्नकाल**, ३ **मध्याह्नकाल**, ४ **अपराह्नकाल** और ५ **सायंकाल कहलाता** है। सूर्योदय से गणनाशुरू होती है। दिनमान के १५ भाग करनेपर ८ वां भाग **अभिजित्** मुहूर्त कहलाता है। और १०वां भाग **विजयमुहूर्तके** नामसे जाना जाता है। **रात्रिमानके** १५ भाग करने पर ३ भागतक **प्रदोषबेला** ८ वांभाग **महानिशीथकाल**, १३ वांभाग **ब्रह्ममुहूर्त**, १४ वांभाग **उष:काल** और १५ वांभाग **अरूणोदयकाल** कहलाता है। **प्रात:सन्ध्या** सूर्योदय उपरान्त ७२मि. तक और **सायंसन्ध्या** सूर्यास्तके पश्चात् ७२ मि.तक होती है।

विशेष जानकारी

६० पल बराबर १ घड़ी, दण्ड व घटी
६० घटी बराबर १ दिन अहोरात्र
३६५ दिन ६ घंटा ९ मिनटका १ सौरवर्ष
२९ दिन १२ घंटा ४४ मिनटका एक चान्द्रमास
३५४ दिन ८ घंटा ४८ मिनटका एक चान्द्रवर्ष
२½ पल बराबर १मिनट १घटी बराबर २४ मि.
२½ घटी बराबर १ घंटा
६० घटी बराबर २४ घंटा

अधिमास सम्वत् में दिन संख्या लगभग ३८४ होती है। संवत् २०२०/२०३९ में क्षय मास हो चुका है आगे २१८० में होगा। क्षयमास वर्ष में दो अधिमास होते है।

आवश्यक मुहूर्त्ता:

मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र लग्न मासादि विवरण
रजोदर्शने स्नानम्	सत्	चं. बु. गु. शु.	अ. रो. मृ. पुष्य. उफा. ह. चि. स्वा. अनु. उषा. श्रव. धनि. श. उभा. रेव. नक्षत्र। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष माघ, फाल्गुन मास। शुक्लपक्ष, दिनके समय शुभ है।
गर्भाधान मुहूर्त	सत्	चं. बु. गु. शु.	रो. मृ. उफा. ह. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. श. उभा. रेवती नक्षत्र। कुयोरहितदिन ४ से १६ समरात्रेषु पुत्रेक्षुस्त्रीसमागमः॥
पुंसवनकर्म सीमन्तकर्म	सत्	शुभ दिन	रो. मृ. पुन. पुष्य. उफा. ह. मू. उषा. श्र. उभा. रेवती। नक्षत्र शुभ गर्भमासतः ३।६।८ श्री लक्ष्मी सहित विष्णु पूजन॥
सूतिकास्नान मुहूर्त	शुभ तिथि	र. चं. बु.गु.शु.	अ. रो. मृ. उफा. ह. चि. स्वा. अनु. उषा. उभा. रे. नक्षत्र शुभ। चन्द्रबल लग्नबल यत्नेनचिन्त्येत्बुधः॥
जातककर्म नामकरण	सत्	र. चं. बु.गु.शु.	अ. रो. मृ. पुन. पुष्य उफा. ह. चि. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. नक्षत्र। जन्मतः १०।११।१२वें दिनाः नामकरणशुभः।
मूल. नक्षत्र नामकरण	सत्	शुभ	आश्विन्याश्लेषामघा च मूलरेवत्या। मूलसंज्ञकषट्भानिजन्म। तत् नामकरणम्। पुनरावृत्तिजन्मनक्षत्रः तद्दिनेशुभमभूयात।
जल पूजन (कुँआपूजन)	सत्	चं. बु. गु. शु.	मृग.,पुन.,पुष्य, हस्त, चित्रा, अनु., मूल, श्रवण, और रेवती सद्भानि चैत्र,पौष,मलमास,मासान्त कुयोगदिन एवं गुरु शुक्रास्तकाल वर्ज्य है।
निष्क्रमण मुहूर्त	सत्	चं. बु. गु. शु.	चतुर्थमासे यात्रोक्त तिथि वार नक्षत्रेषु अथवा द्वादशदिने यज्ञोत्सव प्रसूता को बाहर प्रसंगे निष्क्रमणा शुभः।
अन्नप्राशन मुहूर्त	सत्	चं. बु. गु. शु.	शिशुजन्मतः ५।६।७।८।१० मासे शुक्लपक्षे। अ. रो. मृ. पुन. पुष्य उफा.ह.चि. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. शत. उभा. रे. नक्षत्र शुभ
कर्णवेध मुहूर्त	सत् तिथि	चं. बु. गु.शु.	अ. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. श्र. ध. रे. नक्षत्र शुभः है। (देवशयन, चैत्र, पौष, मास समवर्षेशु वर्जिताः)
चूड़ाकरण मुण्डन मु.	सत् शुभ	चं. बु. गु.शु.	अ. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्र., जन्मः ६।७ मासेषु शुभः। देशशयन चैत्र पौष समवर्ष निषेध
यज्ञोपवीत ब्राह्मण वैश्य और क्षत्रियोंके लिए	२।३।५ १०।११।१२ वर्जित पौष ११ माघ १२ ज्येष्ठ२	सू.च.बु. गु.शु. रविपुष्य गुरुपुष्या मृतयोग	अ.रो.मृ.आ.पुन.पु.श्ले.पूफा.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.पूषा.उषा.श्र.धनि. शत. पूभा. उभा. रे नक्षत्र ग्राह्यः वैशा. ज्ये. आषा. माघ फाल्गुन मासा शुभः। त्याज्याः-रोगवन्तः मृत्युवन्तः अन्यान्यअशुभ योगाः कष्टकारकाः द्विजमात्रेण यज्ञो पवीतम्। सामवेदीय शाखा वालों के लिए भौमवार शुभः।

मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र लग्न मासादि विवरण
वापीनलकूप तड़ागारम्भः	सत्	र.च.बु. गु.शु.श	अ. रो. मृ. आर्द्रा पुन. पुष्य मघा उफा. हस्त चि. स्वा अनु उषा ध. श. उभा. रे. शुभे मासे स्थिरे लग्ने च गुर्वोदये।
दत्तक पुत्र शिशु गोद	सत्	र. म. गु. शु.	अश्वि. पुष्य ह. चि. स्वा. वि. अनु. भ. नक्षत्र सिंह वृष लग्न में, त्याज्यः कुयोगरहित दिन वृश्चिक कुम्भ लग्न।
नौकर रखने का मुहूर्त	सत्	मं. श त्याज्य	अ. मृ पुष्य हस्त वि. स्वा. अनु. अभि. रे. राशीश मैत्री+नक्षत्र योनि मैत्री गण तथा वर्गप्रीति का चिन्तन करना श्रेष्ठ है।
विद्यारम्भः वेदारम्भः मुहूर्त	२।३।५ ६।१० ११।१२	चं. बु. गु. शु. शुभ	३या५वर्षे,अ.रो.मृ.आर्द्रा,पुन.पुष्य,पूफा,उफा.,हस्त स्वा.अनु.मूल,पूषा. उषा श्र. ध.श.पूभा.उभा.रे.सद्भानि अनध्याय वर्जित दिने (उत्तरायणे) तीनों पू० तीनों उ० सर्वमान्य नही श्रीगणेश, सरस्वती,लक्ष्म्यादि पूजनोपरान्त ज्ञानार्जन शुभः।
स्त्रीणं चोटी जूड़ाकरणम्	सत्	र. चं. गु. शु.	अ.रो. मृग. पुन. पुष्य उफा. ह. चि. स्वा. अनु. मूल. उषा. श्र. उभा रे नक्षत्र शुभः। लग्न २।३।४।५।१२।
चूड़ा पहरना	सत्	र. बु. गु. शु	अश्वि. हस्त. चित्रा स्वा. अनु. धनि., रेवती नक्षत्र सूर्यभाद्गणना ८ नेष्ट, ३ श्रेष्ठ, २ ने०, ७ श्रेष्ठ २ ने०, ४ श्रे०, १ नेष्ट।
रोगमुक्त स्नानम्	असत्	र.म.बु. गु. शु.	अश्वि. भ.कृ.मृग.आ.पुष्य पूफा. ह.चि. अनु.ज्ये.मू.पूषा.श्र.ध.श. पूभा. ये नक्षत्र वर लग्न और अशुभ चन्द्र में स्नान करें।
द्विरागमन (मुकलावा)	सत् तिथि	सभी वार	मेष वृश्चिक कुम्भस्थो रवौ, अ.रो.मृ.पुन.पु.उफा.ह.चि.स्वा.अनु. मू. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. सौम्ययुक्ता दृष्टे २।३।४।६।७।१२ लग्नेषु रवीज्य शुद्धियोगे सति। सम्मुखदक्षिणे विवर्जिते। भृगौ सत्।
गन्धर्व विवाह	सत्	रवि मं शनि	अ.कृ. आर्द्रा पुन. श्ले. ज्ये. ध. शत. इन नक्षत्रों में शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषेपि नास्ति।
द्वारशाखा	५।७ ८।९	चं. बु. गु.शु.	रविभाद्गणना ४ श्रे.,८ ने., ८ श्रे., ३ ने., ४ श्रे., काष्ठशा. अश्वि. ह.पुष्य,रो.मृ.,उत्तरा३, स्वा. श्र. पाषाणे ध. श. पूभा. रे। लग्न७।१०
चूल्हा भट्टी	सत्	शुभ वार	पूर्वा ३ रोहि. पुष्य, उत्तरा ३, अश्वि. आर्द्रा,रविभाद्गणना ६ श्रे.,४ ने. ,८ श्रे., ५ ने., २ श्रे., २ नेष्ट चन्द्रवलेसति शुभम्।
क्रय नक्षत्र मुहूर्त	सत्	चं.बु.गु. शु. श.	अश्वि ,मृग.,पुन.,पुष्य,हस्त चित्रा स्वा. अनु.,श्रवण,धनि.श.,रे., बुध में द्रव्य देना नहीं, हस्त में द्रव्य लेना नहीं चाहिए।
विक्रय नक्षत्र मुहूर्त	सत्	सभी दिन	भ.कृ.रो.आ.श्ले.म.पूफा.उफा.विशा.मू.पूषा.उषा.पूभा.उभा. नक्षत्र शुभदा, ५ है। रिक्ता व अमावस्थ तिथि एवं कुम्भ लग्ननिषेधः।

नोट : सत् तिथियां १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ असत् तिथियां ४।६।८।९।१२।१४।३० सूर्यभाव भौमयाद् गणना अथवा गुर्वाश्रित अर्थात् सूर्यादि ग्रहाश्रित नक्षत्र से दैनिक चान्द्र तक गणना कर फल प्रसंगानुसार जानना चाहिए।

वारोंमें करने योग्य कर्म

रविवार में राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना) नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार, सोना, तांबा ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊख्गन्ध में उत्पन्न गुड़ चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, वर्क सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अध्ययन (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, लाल धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, खेलकूद, चित्रकारी धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में धर्मानुष्ठादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न,सुगन्ध,वस्त्र,उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्रग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

❀ आवश्यक मुहूर्त्ताः ❀

मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र लग्न मासादि विवरण
ऋण का लेन देन			रवि, मंगल, संक्रान्तिके दिन, वृद्धियोग, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर, योग व हस्तमें ऋण लें तो मुक्ति न मिले। भौमप्रदोष व्रत से ऋण मुक्त हों।
बिटोरा	सत्		सूर्याश्रित नक्षत्रसे आगेके ६नक्षत्र,बिटोरा रखनेके श्रेष्ठ,आगे के ६ नेष्ट, आगे के ४ श्रेष्ट,आगेके ८नेष्ट और आगेके ४श्रेष्ट, भ.म.वि.कृ.मू.ज्ये.श्ले.मंगल त्याज्य
प्लास्टिक उद्योग	सत्	बु. गु. सोम	पुष्य और हस्त नक्षत्र उत्तम। मिश्र संज्ञकः विशाखा कृतिका मध्यम। अमृतसिद्धि, सर्वार्थसिद्धि योग अति उत्तम।
सौन्दर्य प्रसाधन	सत्	रवि चं. बु. शु.	रो..पुन..उफा..उषा..श्र..धनि..शत..शुभ। तिथि क्षय कुयोग रहित दिन में कार्यारम्भ करें। अमृत व सर्वार्थसिद्धियोग उत्तम।
वस्त्रोद्योग	सत्	चं. बु. गु. शु.	अ.,रो.,पुष्य,उफा,ह.,उषा.,श्र.,उभा,नक्षत्र शुभ है। राशि से चन्द्रमा का विचार अवश्य करें। उद्योग मुहूर्त देखें।
फिल्मनिर्माण व संचालन	२।५।७ १०।१५	बु. गु. शु.	अश्वि.,मृग.,पुष्य,ह.,चि.,अनु.,रे.,नक्षत्र में शुभ। फिल्मप्रसारण हेतु रविवार शुक्रवार सर्वोत्तम है। कर्त्ता के लिए चन्द्रमा शुभ हों।
स्वेटर अन्य बुनाई	भद्रापूर्णा जया	रवि चं. बु. शु.	रो.,मृग.,उफा,चि.,अनु.,उषा,उभा.,रेवती नक्षत्र में कार्यारम्भ अभीष्ट सिद्धिदायक होता है। शुभ योग देख लें।
कल-कारखाना	सत्	सो.मं. बु. शनि	अ.,पुन.,पुष्य,ह.,चि.,अनु.,ज्ये.,धनि., रे. नक्षत्र शुभ है। धातुओं से सम्बन्धित उद्योग में तिथि वारादि का निर्णय स्वयं करें। चर लग्न व पुन.,स्वा., श्र., शत., नक्षत्र भी शुभ है।
ईंट बनाना भट्टालगाना अग्निलगाना	सर्वतिथि ३०वर्ज्य	रवि.गु. शनि	अश्वि.,रो.,पुष्य,ह.,उफा.,उषा.,श्रव.,उभा.,रे. नक्षत्र शुभ अथेष्टि का निर्माण भौमभाद्गणना ५सौख्य,३मृत्यु,३सौख्य,५मृत्यु ७सौख्य,५ मृत्यु। अग्नि लगाना ७ शोक,५लाभ,७ रोग,४ क्षय,५ सुख होता है।
शीशा और चित्रात्मकला	सत्	र.च.बु. गु.शु.	अ.,मृग.,पुष्य,ह.,चित्रा,अनु.,अभि.,रे.नक्षत्र में शीशा उत्पादन चित्रात्मक शैली के सभी कार्य सफल होते है।
औषधि नि. व सेवन मु.	सत् तिथियां	रविसोम बु.गु.शु.	अ.,रोहि.,मृग.,पनु.,पुष्य,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मूल,अभि.,श्रव.,धनि.,शत.,रे. नक्षत्र और शुभ लग्न मुहूर्तमें औषधिनिर्माण तथा सेवन करना शुभ है
भूमि क्रय-विक्रय मु.	सत् तिथियां	सोमबुध गु.शु.	अश्वि.,मृग.,पुन., आश्लेषा,मघा,पूफा.,विशा.,अनु.,मूल,पूषा.पूभा.रे. श्रेष्ठ है। कर्ता की राशि से ४।८।१२वें तथा घात चन्द्रमा वर्जित है।
पशु लेन-देन मुहूर्त्त	४-९ व १४ त्याज्य	भौमवार त्याज्य	अ.पुन.पुष्य. ह.,वि.ज्ये.,ध.श.रे. नक्षत्रमें गौ का लेन-देन शुभ है। अन्य पशु हेतु पुन. पूफा. ह, अनु.,पूषा. ज्ये., पूभा., मू.,ध. और रे.। नौमी **चौदस चौथ चौपाया। हानि करे मंगलघरआया॥**

मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र लग्न मासादि विवरण
कुम्भकार मु. सीमेन्टउद्यो.	रिक्ता त्याज्य	भौमवार त्याज्य	रोहि.,मृग.,पुन.,पुष्य,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,ज्ये.,श्र.,रे.,शुभ है। ईंट, चूना, सुरखी,पत्थर तथा सीमेन्ट उत्पादन में ३ उत्तग, उफा.,उषा.उभा. भी मान्य है।
स्कूटर, ट्रक बसअन्यवाहन क्रय मुहूर्त	सत् तिथियां	भौमवार त्याज्य	अश्वि.,मृग.,पुन.,पुष्य.,ह.,स्वा.,अभि.,श्रव.,धनि.,शत.,रे.,श्रेष्ठ.,कर्ता की राशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा नेष्ट जानें।
रामायणादि कथा प्रारम्भ मुहूर्त	रिक्ता त्याज्य	सभी वार	गुर्वाश्रित नक्षत्र से १६ संख्यांक तक अर्थलाभ, कार्यसिद्धि, २४ तक नेष्ट, आगे २७ तक मोक्षप्रद जानें। देवप्रीत्यर्थ शुक्ल पक्षमें, और प्रेतदोषनिवृत्ति हेतु कृष्णपक्ष में शुभ है। ४।८वां चन्द्रमा नेष्ट होता है।
देवता प्रतिष्ठा मुहूर्त	शुभ तिथियां	सभी वार	अश्वि.रोहि.मृग.आर्द्रा.पुन.पुष्य,मघा,उफा.ह.,चि.,स्वा.,अनु.,ज्ये.,मूल, उषा.,श्रव.,धनि.,शत.,उभा.,रे.,गुरु- शुक्र के उदय में स्थिर लग्न, कृष्ण पक्ष में दशमी तक, जलाशय वागादिकी प्रतिष्ठा भी शुभ है। चतुर्दशीमें शिव, चतुर्थीमें गणेश, भाद्रपद में कृष्ण, आश्वि. नवरात्र में देवी, चैत्र पूर्णिमा भौमवारमें बजरंगबली की स्थापना शुभ है। सात्त्विकदेव उत्तरायणे तथा तामसो इच्छित काले।
कृषिकर्म मु. बीजबोवन मुहूर्त्त	सत तिथियां	भौमवार वर्ज्य	अश्वि. रोहि. मृग. पुन. पुष्य, मघा उफा. ह. चि. स्वा. अनु. मूल, उषा., श्रव., धनि., शत. उभा. और रेवती में खेत जोतना शुभ है। सूर्यभात् गणना ३ नेष्ट, ३ श्रेष्ठ, ३ ने० ५ श्रे.३ ने. ५ श्रे. ३ ने. २ श्रे. जानें। पुन. वि. श्रव. और शत. त्यागकर शेष उपरोक्त नक्षत्रों में बीज बोना श्रेष्ठ जानें। राहुभाद्गणनाक्रम ८ नेष्ट, ३ श्रे.१ने.३श्रे.१ने.३श्रे.१ने.३श्रे.४ने. समझें।
कम्प्यूटरनिर्माण व संचालन	सत तिथियां	भौम वर्जित	अश्वि.मृग.पुन.पुष्य,ह.,चि,स्वा.,अनु.,धनि.,शत.,रे.,नक्षत्र, शुभ योग कर्त्ता की राशिसे ग्रह गणना श्रेष्ठ होने पर सफलता सुनिश्चित मिलती है।
प्रक्षेपास्त्र मुहूर्त्त	१।४।५ ८।९।० १३।१५	रवि.मं. शु.श.	भर.आर्द्रा श्ले. मघा ज्ये. पूफा. मूल पूषा. पूभा. नक्षत्र चर, द्विस्वभाव, लग्न तथा चर, लाभ, अमृत और शुभ के चौघड़िया मुहूर्तमें मारक अस्त्र-शस्त्र निर्माण व प्रयोग सफल होता है।
पुल निर्माण मुहूर्त्त	सत तिथियां	भौम श. वर्जित	अश्वि. रोहि. मृग.,पुन.,पुष्य. उफा, ह., चि., अनु., उषा., रे., नक्षत्र स्थिरलग्न तथा सर्वार्थ, अमृत सिद्धि या रवियोगमें निर्माण सफल है।
बही खाता	शुभ	शुभ	मृग. पुन. पुष्य उफा. ह. चि. अनु. उषा. श्र. उभा. रे. लग्न १।३।४।६।७।०।१० खाता पूजन शुभ है।

नक्षत्रोंकी संज्ञा व करने योग्य कर्म

★**ध्रुव-स्थिर नक्षत्र-** रोहि., उफा., उषा., उभा. तथा रविवार ध्रुव और स्थिर संज्ञक है। इनमें स्थिर कार्य बीज बोना, बगीचा लगाना, गीत वाद्योत्सव, विवाह, वस्त्राभूषण धारण तथा निर्माण करना, शान्ति कर्म, गृहारम्भ, नृत्यकला सीखना, मैत्री सन्धिविचार, शपथ ग्रहण करना और खेलकूद काआरम्भ तथा प्रतिष्ठिकर्म शुभ होता है।

★**चर-चल नक्षत्र-** पुन.,स्वाती,श्रवण,धनि.,शत. तथा सोमवार। इनमें स्कूटर, कार, बस, ट्रक आदि वाहनों का लेनदेन एवम् उपयोग करना, लम्बी यात्रा, क्रय-विक्रय, दुकान खोलना, चित्रकारी, शिक्षाज्ञान, रतिक्रीड़ा शुभ है। जलोत्पन्न कर्म भी शुभ है।

★**उग्र-क्रूर नक्षत्र-** भरणी, मघा, पूफा., पूषा., पूभा.तथा मंगलवार। इनमें दुष्ट (घात) कर्म, तस्करी, लाटरी, सट्टा आदि धन्धे विषाग्नि तथा शस्त्र कर्म (बनाना चलाना) और पशु ज्ञानार्जन, पालन पोषण तथा चुगलपन श्रेष्ठ होता है।

★**मिश्र+साधारण नक्षत्र-** कृत्तिका, विशा., तथा बुधवार। इनमें अग्नि सम्बन्धी कर्म, कई वस्तु विशेष के संयोग से बनने वाले कार्य, वृषोत्सर्ग (सांड छोड़ना) घात कर्म, अग्निदाह, शठता, विष सम्बन्धी, एवं शस्त्र सम्बन्धी कर्म शुभ होते है। कई आचार्य मांगलिक कर्म, व्यापार एवम् उद्योग सम्बन्धी कर्म भी शुभ मानते है।

★**क्षिप्र-लघु नक्षत्र-** अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभि. तथा गुरूवार। इनमें दुकान, रतिकर्म, ज्ञानार्जन, शिल्प व चित्रकला कर्म, वाहन लेन-देन, दूर-समीप की यात्रा, क्रय-विक्रय शुभ होता है।

★**मृदु-मैत्र नक्षत्र-** मृग., चित्रा, अनु., रेवती तथा शुक्रवार। इनमें गीत विवाहादि मंगलोत्सव तथा क्रीड़ा, मैत्री कार्य, वस्त्राभूषण निर्माण तथा धारण करना, बीज बोना, बाग बगीचा लगाना, शान्ति कर्म, गृहारम्भ, नृत्य सीखना, गोपनीयता की शपथ लेना, खेल खेलना शुभ होता है। जलोत्पन्न कर्म भी शुभ कहे है।

★**तीक्ष्ण-दारूण नक्षत्र-** आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा, मूल तथा शनिवार इनमें अभिचार, घात लगाना, पाप कर्म, चुगलपन, पशुशिक्षा, बन्धन, तस्करी, लाटरी, सट्टा आदि धन्धे, विषाग्नि कर्म तथा अस्त्र-शस्त्र निर्माण और प्रयोग शुभ कहे है।

चौघड़िया मुहूर्तों के प्रारम्भकाल जानने की सारिणी

मास	ता.	दिन: पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पाँचवाँ	छठा	सातवाँ	आठवाँ	रात्रि: पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पाचवाँ	छठा	सातवाँ	आठवाँ
		दिन के चौघड़िया मुहूर्त, प्रारम्भकाल घं. मि.								**रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त, प्रारम्भकाल घं. मि.**							
जनवरी	१	७।१९	८।३५	९।५२	११।८	१२।२५	१३।४१	१४।५८	१६।१४	१७।३१	१९।१४	२०।५८	२२।४१	०।२५	२।८	३।५२	५।३५
	१०	७।१९	८।३६	९।५३	११।११	१२।२८	१३।४५	१५।३	१६।२०	१७।३८	१९।२०	२१।३	२२।४५	०।२८	२।१०	३।५३	५।३५
	२०	७।१८	८।३६	९।५५	११।१३	१२।३२	१३।५०	१५।९	१६।२७	१७।४६	१९।२७	२१।९	२२।५०	०।३२	२।१३	३।५५	५।३६
	३०	७।१४	८।३४	९।५४	११।१४	१२।३४	१३।५५	१५।१५	१६।३५	१७।५५	१९।३५	२१।१५	२२।५५	०।३५	२।१४	३।५४	५।३[illegible]
फरवरी	९	७।८	८।३०	९।५२	११।१४	१२।३५	१३।५७	१५।१९	१६।४१	१८।३	१९।४१	२१।१९	२२।५७	०।३६	२।१४	३।५२	५।३०
	१८	७।१	८।२४	९।४८	११।११	१२।३५	१३।५८	१५।२२	१६।४५	१८।९	१९।४५	२१।२२	२२।५८	०।३४	२।१०	३।४७	५।२३
	२७	६।५२	८।१७	९।४३	११।८	१२।३४	१३।५९	१५।२५	१६।५०	१८।१६	१९।५०	२१।२४	२२।५९	०।३३	२।७	३।४२	५।१६
मार्च	८	६।४३	८।१०	९।३७	११।४	१२।३२	१३।५९	१५।२६	१६।५३	१८।२१	१९।५३	२१।२६	२२।५८	०।३१	२।३	३।३६	५।८
	१८	६।३२	८।१	९।३०	११।०	१२।२९	१३।५८	१५।२८	१६।५७	१८।२७	१९।५७	२१।२७	२२।५८	०।२८	१।५८	३।२९	४।५९
	२८	६।२०	७।५१	९।२३	१०।५४	१२।२६	१३।५७	१५।२९	१७।०	१८।३३	२०।१	२१।२९	२२।५७	०।२६	१।५४	३।२२	४।५०
अप्रैल	७	६।८	७।४२	९।१५	१०।४९	१२।२२	१३।५६	१५।२९	१७।३	१८।३७	२०।३	२१।२९	२२।५५	०।२२	१।४८	३।१४	४।४०
	१७	५।५७	७।३३	९।९	१०।४५	१२।२०	१३।५६	१५।३२	१७।८	१८।४३	२०।७	२१।३१	२२।५५	०।१९	१।४३	३।८	४।३२
	२७	५।४८	७।२६	९।४	१०।४२	१२।१९	१३।५७	१५।३५	१७।१३	१८।५०	२०।१२	२१।३४	२२।५६	०।१८	१।४१	३।३	४।२५
मई	७	५।४०	७।१९	८।५९	१०।३८	१२।१८	१३।५७	१५।३७	१७।१६	१८।५६	२०।१६	२१।३७	२२।५७	०।१७	१।३८	२।५८	४।१८
	१७	५।३३	७।१४	८।५५	१०।३६	१२।१७	१३।५९	१५।४०	१७।२१	१९।२	२०।२१	२१।४०	२२।५९	०।१८	१।३६	२।५५	४।१४
	२७	५।२९	७।११	८।५३	१०।३५	१२।१७	१४।०	१५।४२	१७।२४	१९।६	२०।२४	२१।४२	२३।०	०।१८	१।३५	२।५३	४।११
जून	६	५।२८	७।११	८।५४	१०।३७	१२।२०	१४।३	१५।४६	१७।२९	१९।१२	२०।२९	२१।४६	२३।३	०।२०	१।३७	२।५४	४।११
	१६	५।२७	७।११	८।५४	१०।३८	१२।२२	१४।५	१५।४९	१७।३३	१९।१६	२०।३२	२१।४८	२३।५	०।२१	१।३७	२।५४	४।११
	२६	५।२९	७।१२	८।५६	१०।३९	१२।२३	१४।६	१५।५०	१७।३३	१९।१७	२०।३४	२१।५१	२३।७	०।२४	१।४१	२।५७	४।१४
जुलाई	६	५।३३	७।१६	८।५९	१०।४२	१२।२५	१४।८	१५।५१	१७।३४	१९।१७	२०।३४	२१।५१	२३।८	०।२५	१।४२	३।०	४।१७
	१६	५।३८	७।२०	९।२	१०।४४	१२।२७	१४।९	१५।५१	१७।३३	१९।१६	२०।३४	२१।५२	२३।१०	०।२८	१।४५	३।३	४।२१
	२६	५।४३	७।२४	९।५	१०।४६	१२।२७	१४।९	१५।५०	१७।३१	१९।१२	२०।३१	२१।५०	२३।९	०।२८	१।४६	३।५	४।२४
अगस्त	५	५।४९	७।२८	९।८	१०।४७	१२।२७	१४।६	१५।४६	१७।२५	१९।५	२०।२५	२१।४६	२३।६	०।२७	१।४७	३।८	४।२८
	१५	५।५४	७।३२	९।१०	१०।४८	१२।२६	१४।४	१५।४२	१७।१९	१८।५७	२०।१९	२१।४१	२३।३	०।२५	१।४८	३।१०	४।३२
	२५	५।५९	७।३५	९।११	१०।४७	१२।२३	१३।५८	१५।३४	१७।१०	१८।४६	२०।१०	२१।३४	२२।५८	०।२२	१।४७	३।११	४।३५
सितम्बर	४	६।४	७।३८	९।१२	१०।४६	१२।२०	१३।५४	१५।२८	१७।२	१८।३६	२०।२	२१।२८	२२।५४	०।२०	१।४७	३।१३	४।३९
	१४	६।९	७।४१	९।१३	१०।४५	१२।१७	१३।४८	१५।२०	१६।५२	१८।२४	१९।५२	२१।२०	२२।४८	०।१७	१।४५	३।१३	४।४१
	२४	६।१४	७।४४	९।१४	१०।४४	१२।१३	१३।४३	१५।१३	१६।४३	१८।१२	१९।४२	२१।१२	२२।४२	०।१३	१।४३	३।१३	४।४३
अक्टूबर	४	६।२०	७।४७	९।१५	१०।४२	१२।१०	१३।३७	१५।५	१६।३२	१८।०	१९।३२	२१।५	२२।३७	०।१०	१।४२	३।१५	४।४७
	१४	६।२५	७।५०	९।१६	१०।४१	१२।७	१३।३२	१४।५८	१६।२३	१७।४९	१९।२४	२०।५९	२२।३३	०।८	१।४३	३।१७	४।५२
	२४	६।३२	७।५५	९।१८	१०।४२	१२।५	१३।२८	१४।५२	१६।१५	१७।३९	१९।१६	२०।५३	२२।३०	०।६	१।४३	३।२०	४।५७
नवम्बर	३	६।३८	८।०	९।२२	१०।४३	१२।५	१३।२७	१४।४८	१६।१०	१७।३१	१९।९	२०।४८	२२।२६	०।५	१।४३	३।२२	५।०
	१३	६।४६	८।६	९।२६	१०।४६	१२।६	१३।२५	१४।४५	१६।५	१७।२५	१९।५	२०।४५	२२।२५	०।६	१।४६	३।२६	५।६
	२३	६।५५	८।१३	९।३१	१०।४९	१२।८	१३।२६	१४।४४	१६।२	१७।२१	१९।३	२०।४५	२२।२७	०।९	१।५०	३।३२	५।१४
दिसम्बर	३	७।२	८।१९	९।३६	१०।५३	१२।११	१३।२८	१४।४५	१६।२	१७।२०	१९।३	२०।४६	२२।२९	०।११	१।५४	३।३७	५।२०
	१३	७।८	८।२५	९।४२	१०।५८	१२।१५	१३।३२	१४।४८	१६।५	१७।२२	१९।४	२०।४८	२२।३१	०।१५	१।५८	३।४२	५।२५
	२३	७।१५	८।३१	९।४७	११।३	१२।२०	१३।३६	१४।५२	१६।८	१७।२५	१९।९	२०।५३	२२।३७	०।२१	२।४	३।४८	५।३२

दिन के चौघड़िया मुहूर्त

वार	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग
चन्द्र.	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत
मंग.	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग
बुध.	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ
गुरू.	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ
शुक्र.	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर
शनि.	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल

रात के चौघड़िया मुहूर्त

वार	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ
चन्द्र.	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर
मंग.	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल
बुध.	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग
गुरू.	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत
शुक्र.	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग
शनि.	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ

८ दिनमें ८ रात्रिमें यानी अहोरात्रमें कुल १६ चौघडिया मु. वर्त्तमान रहते है। ऊपरके चक्रोंमें रवि आदि वारोंके सामने चौघड़िया मुहूर्त्तोंके नाम दिये गये हैं।

बांई ओर दस-दस दिन के अन्तराल से तारीखोंके सामने दिन-रात के चौघडिया मु. शुरु होने का समय घं.मि. में दिया गया है। अभीष्ट सन् मास तारीखमें क्या वार है यह जानने की जरुरत है।

इच्छित सन् के अंग्रेजी मास की उल्लिखित तारीखमें जो वार होगा, उसके सामने नामवाले चौघड़िया मुहूर्त्त लिखे समयानुसार शुरु हो जायेंगे।

उदाहरण- सन् २००० में दीपावली २६ अक्टूबर गुरुवार की है। मान २४ ता. का छपा है तो २६ ता. का अनुपात से ज्ञात करना होगा। अतः गुरुवारों मे दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त क्रमशः ६।३३ शुभ ७।५६ रोग, ९।१९ उद्वेग, १०।४२ चर, १२।५ लाभ, १३।२८ अमृत, १४।५१ काल और १६।१३ से शुभ के चौघडिया आरम्भ हो जायेंगे ऐसा समझना चाहिए।

अथ पुरुष जन्मकुण्डलीके १२ भावोंमें ग्रहोंका फल

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जन	सुखी	मन्त्री	दुःशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुचिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायु	धर्महा	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्री जन्मकुण्डलीके १२ भावोंमें ग्रहोंका फल

ग्रहाः	तनुः १	धन २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्यु ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभ ११	व्ययः १२
सूर्य	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापटा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यय
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रिय	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यय
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढया	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ जन्म या नाम राशिसे सभी स्थानोंमें गोचर ग्रहोंका फल

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानाश	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गभ्रम	पीड़ाः	सुकृतना	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्री लाभ	रोगः	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
भौमः	शत्रुः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्री कष्ट	शत्रुभीः	शत्रुपीडा	शोकः	धनलाभ	धननाश
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रु भी	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धन लाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धननाश
गुरुः	भय	धनलाभ	क्लेश	हानि	सुखं	शोकः	राजमान	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभीः	शोकः	धन लाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धननाश	एश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्रकष्ट	धन लाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	क्लहः	मृत्युः	दुःखं	वैर	सुख	शोकः
केतुः	रोगः	वैरं	सुखं	भयं	सुखं	धन लाभ	क्लहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्ति	शत्रु भीः

अथ वर्षप्रवेश कुण्डलीके १२ भावोंमें पड़े ग्रहोंका फल

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	राजभय	धन लाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्र.
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसर्न	दुर्भति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सोख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्र लाभ	क्लेह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखलाभ	रोग
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्रा.	अष्टम्	सुखम्	रोग	धर्म लाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखलाभ	धन लाभ	शत्रुभीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानलाभ	क्षेमलाभ	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्याहा	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी.	कष्टम्	धर्म हानि	विजय	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेशं	पीड़ा	भाग्यानाश	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुन्थाः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखप्राप्ति	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

कुण्डलीमें जहां १ लिखा है,उसे तनस्थान प्रथमभाव कहतेहैं, उसमें लग्नचाहे जो भी हो। **लग्नात्-तनुर्धनं भ्राता सुखं पुत्र रिपु-स्त्रियः। मृत्युश्च धर्म कर्मायां व्ययश्चेति यथाक्रमम्॥** नीचे बारह भावोंके प्रसिद्ध नाम लिखे है। प्रत्येकभाव से कई बातोंका विचार किया जाता है अतः हम उनके पर्यायवाची नामों का उल्लेख करते हैं।

१. तनु- प्रथमभाव, लग्न, आत्मा, वपु, कल्प, कंटक केन्द्र चतुष्टय
२. धन- पैतृकसम्पत्ति, कुटुम्ब, पणफर
३. भ्रात- सहज, पराक्रम, पुरुषार्थ, दुश्चिक्य
४. सुख- मातृ, अम्बु, वेश्म, सद्म, गृह, वाहन, केन्द्र, चतुष्पटय, चतुरस्त्र, कंटक, हिम्बुक
५. सुत- घी, ज्ञान, विचारशक्ति, वाणी, त्रिकोण, पणफर
६. शत्रु- रोग, दुःख, छत, त्रिक, उपचय, आपोकिलम, झगडे-झमेले
७. जामित्र- कामवासना, गुप्तेन्द्रिय, दाम्पत्यजीवन, द्यून, अस्तमन, केन्द्र, चतुष्पटय, कंटक
८. मृत्यु- दुःख, दुर्घटना, आयु, रन्ध्र, वसु, त्रिक, पणफर, चतुरस्त्र
९. धर्म- भाग्य, भौतिक विकास, पुण्यकर्म, त्रिकोण, आपोक्लिम
१०. कर्क- ऋद्धि, पिता, आज्ञा, आस्पद, व्योम, केन्द्र, चतुष्टय, कंटक, उपचय, मेषूरण, भौतिक विवाद
११. लाभ- कर्मकाफल, यशअपयश, ऋद्धि, उपचय, पणफर
१२. व्यय- दुःख, रिष्फ, अन्तिम, कानूनीविवाद, देशान्तर, त्रिक, आपोक्लिम

चन्द्रमा का नक्षत्र चार चरणों में प्रवेश भा.स्टैं.टा. घं.मि.- बच्चों के नाम रखने की सुविधा सम्वत् 2077

ता. वार (अहोरात्र) में विहित नक्षत्र के चार चरण अर्धरात्रोत्तर घं.२४ मि.०० में जोड़कर लिखे हैं। सूर्योदय पश्चात् अग्रिम दिन ता. के घं. मि. लिखे हैं।

मा	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
सन् २०२० ई.					
२४	रिवती	२८ २८			
२५	रिवती		११ ०२	१७ ४६	२४ ३०
२६	अश्वि	७ १५	१३ ५८	२० ४२	२७ २५
२७	भरणी	१० ०८	१६ ४८	२३ २८	३० ०९
२८	कृत्ति.	१२ ५१	१९ २७	२६ ०४	
२९	कृति.				०८ ४०
२९	रोहि.	१५ २६	२१ ४६	२८ २७	
३०	रोहि.				१० ४७
३०	मृग.	१७ २७	२३ ३८	३० ००	
३१	मृग.				१२ २१
३१	आर्द्रा	१८ ४३	२४ ३९		
१अ	आर्द्रा			०६ ५५	१३ २१
१	पुन.	१९ २८	२५ २८		
२	पुन.			०७ २८	१३ २८
२	पुष्य	१९ २७	२५ २६		
३	पुष्य			०७ ०४	१२ ५२
३	आश्ले	१८ ४०	२४ २६	२९ ५३	
४	आश्ले				११ ३०
४	मघा	१७ ०७	२२ ३५	२८ ०२	
५	मघा				०९ २९
५	पूफा.	१४ ५६	२० २५	२५ ३५	
६	पूफा.				०६ ५५
६	उफा.	१२ २५	१७ ३०	२२ ४४	२७ ५९
७	हस्त	०९ २४	१४ २७	१९ ४०	२४ ५३
७	चित्रा	३० ०६			
८	चित्रा		११ २०	१६ ३४	२१ ४८
८	स्वा.	२७ ०२			

अप्रै.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
९	स्वा.		०८ २०	१३ ३८	१८ ५६
९	विशा.	२४ १४	२९ ३९		
१०	विशा.			११ ०४	१६ २९
१०	अनु.	२१ ५४	२७ २८		
११	अनु.			०९ ०२	१४ ३६
११	ज्ये.	२० १०	२५ ५६		
१२	ज्ये.			०७ ४१	१३ २६
१२	मूल	१९ १२	२५ ०९		
१३	मूल			०७ ०६	१३ ०३
१३	पूषा.	१९ ०१	२५ १०		
१४	पूषा.			०७ २०	१३ ३०
१४	उषा.	१९ ४०	२६ ००		
१५	उषा.			०८ २१	१४ ४२
१५	श्रवण	२१ ०३	२७ ३३		
१६	श्रवण			१० ०४	१६ ३५
१६	धनि.	२३ ०५	२९ ४२		
१७	धनि.			१२ २०	१८ ५८
१७	शत.	२५ ३५			
१८	शत.		०८ २७	१४ ५९	२१ ४१
१८	पूभा.	२८ २४			
१९	पूभा.		११ ०८	१७ ५३	२४ ३७
२०	उभा.	०७ २२	१४ ०७	२० ५२	२७ ३७
२१	रिवती	१० २२	१७ ०६	२३ ५०	
२२	रिवती				०६ ३३
२२	अश्वि	१३ १७	१९ ५८	२६ ४०	
२३	अश्वि				०९ २२
२३	भरणी	१६ ०४	२२ ४३	२९ २१	
२४	भरणी				११ ५९
२४	कृत्ति.	१८ ३८	२५ १३		
२५	कृत्ति.			०७ ५७	१४ २२
२५	रोहि.	२० ५७	२७ २६		
२६	रोहि.			०९ ५६	१६ २६
२६	मृग.	२२ ५५	२९ १८		

अप्रै	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२७	मृग.			११ ४१	१८ ०५
२७	आर्द्रा	२४ २८			
२८	आर्द्रा		०६ ४४	१३ ००	१९ १६
२८	पुन.	२५ ३२			
२९	पुन.		०७ ३९	१६ ४६	१९ ५४
२९	पुष्य	२६ ०१			
३०	पुष्य		०७ ५८	१३ ५६	१९ ५४
३०	आश्ले	२५ ५२			
१म	आश्ले		०७ ४०	१३ २८	१९ १६
१	मघा	२५ ०४			
२	मघा		०६ ४४	१२ २४	१८ ०४
२	पूफा.	२३ ३९	२९ १०		
३	पूफा.			१० ४१	१६ १२
३	उफा.	२१ ४२	२७ ०६		
४	उफा.			०८ ३०	१३ ५४
४	हस्त	१९ १८	२४ ३८	२९ ५८	
५	हस्त				११ १८
५	चित्रा	१६ ३८	२१ ५६	२७ १४	
६	चित्रा				०८ ३२
६	स्वाती	१३ ५०	१९ ०९	२४ २८	२९ ४७
७	विशा.	११ ०६	१६ २६	२१ ५०	२७ १७
८	अनु.	०८ ३७	१४ ०५	१९ ३४	२५ ०३
९	ज्ये.	०६ ३२	१२ ०१	१७ ४७	२३ २४
९	मूल	२९ ०१			
१०	मूल		१० ४९	१६ ३७	२२ २५
१०	पूषा.	२८ १२			
११	पूषा.		१० ११	१६ १०	२२ १०
११	उषा.	२८ ०९			
१२	उषा.		१० २०	१६ ३१	२२ ४२
१२	श्रवण	२८ ५३			
१३	श्रवण		११ १५	१७ ३७	२३ ५९
१४	धनि.	०६ २२	१२ ५३	१९ २५	२५ ५७
१५	शत.	०८ २९	१५ ०७	२१ ४६	२८ २५

मई	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१६	पूभा.	११ ०४	१७ ४५	२४ २५	
१७	पूभा.				०७ १४
१७	उभा.	१३ ५७	२० ४२	२७ २७	
१८	उभा.				१० १२
१८	रिवती	१६ ५७	२३ ४०		
१९	रिवती			०६ २४	१३ ०८
१९	अश्वि	१९ ५२	२६ ३३		
२०	अश्वि			०९ १४	१५ ५५
२०	भरणी	२२ ३६	२९ १३		
२१	भरणी			११ ५०	१८ २७
२१	कृत्ति.	२५ ०३			
२२	कृत्ति.		०७ ३४	१४ ०५	२० ३६
२२	रोहि.	२७ ०८			
२३	रोहि.		०९ ३३	१५ ५९	२२ २५
२३	मृग.	२८ ५१			
२४	मृग.		११ ११	१७ ३०	२३ ४९
२५	आर्द्रा	०६ ०९	१२ २२	१८ ३५	२४ ४८
२६	पुन.	०७ ०१	१३ ०८	१९ १४	२५ २०
२७	पुष्य	०७ २७	१३ २७	१९ २७	२५ २७
२८	आश्ले	०७ २६	१३ १९	१९ १२	२५ ०५
२९	मघा	०६ ५७	१२ ४३	१८ २९	२४ १५
३०	पूफा.	०६ ०२	११ ४२	१७ २२	२३ ०२
३०	उफा.	२८ ४२			
३१	उफा.		१० १७	१५ ५१	२१ २५
३१	हस्त	२७ ००			
१जू	हस्त		०८ ३०	१४ ०१	१९ ३१
१	चित्रा	२५ ०२			
२	चित्रा		०६ ३०	११ ५७	१७ २५
२	स्वाती	२२ ५३	२८ २०		
३	स्वाती			०९ ४७	१५ १४
३	विशा.	२० ४२	२६ ११		
४	विशा.			०७ ३९	१३ ०८
४	अनु.	१८ ३६	२४ ०८		

जून	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
५	अनु.			०५ ३९	११ १०
५	ज्ये.	१६ ४२	२२ १९	२७ ५६	
६	ज्ये.				०९ ३३
६	मूल	१५ ११	२० ५६	२६ ४१	
७	मूल				०८ २६
७	पूषा.	१४ १०	२० ०४	२५ ५७	
८	पूषा.				०७ ५०
८	उषा.	१३ ४४	१९ ४८	२५ ५१	
९	उषा.				०७ ५५
९	श्रवण	१३ ५९	२० १३	२६ २७	
१०	श्रवण				०८ ४१
१०	धनि.	१४ ५६	२१ २०	२७ ४५	
११	धनि.				१० ०९
११	शत.	१६ ३४	२३ ०७		
१२	शत.			०५ ४०	१२ १३
१२	पूभा.	१८ ४७	२५ २७		
१३	पूभा.			०८ ०७	१४ ४७
१३	उभा.	२१ २७	२८ १९		
१४	उभा.			१० ५२	१७ ३७
१४	रिवती	२४ २१			
१५	रिवती		०७ ०४	१३ ४८	२० ३२
१५	अश्वि	२७ १६			
१६	अश्वि		०९ ५८	१६ ३९	२३ २१
१७	भरणी	०६ ०३	१२ ४०	१९ १६	२५ ५३
१८	कृत्ति.	०८ ३०	१५ ००	२१ ३०	२८ ००
१९	रोहि.	१० ३०	१६ ५३	२३ १६	२९ ३९
२०	मृग.	१२ ०१	१८ १५	२४ ३०	
२१	मृग.				०६ ४५
२१	आर्द्रा	१३ ००	१९ ०७	२५ १५	
२२	आर्द्रा				०७ २२
२२	पुन.	१३ ३०	१९ ३१	२५ ३१	
२३	पुन.				७ ३१
२३	पुष्य	१३ ३२	१९ २६	२५ २०	

जून	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२४	पुष्य				०७।२४
२४	आश्ले	१३।०१	१८।५८	२४।४७	
२५	आश्ले				०६।३६
२५	मघा	१२।२६	१८।१०	२३।५५	२९।४०
२६	पूफा.	११।२५	१७।०६	२२।४७	२८।२८
२७	उफा.	१०।१०	१५।४९	२१।२८	२७।०७
२८	हस्त	०८।४५	१४।२२	१९।५९	२५।३६
२९	चित्रा	०७।१३	१२।५०	१८।२५	२४।०२
३०	स्वाती	०५।३८	११।१४	१६।५०	२२।२६
३०	विशा.	२८।०३			
१जु	विशा.		०९।४१	१५।२८	२१।०५
१	अनु.	२६।३३			
२	अनु.		०८।१३	१३।५३	१९।३३
२	ज्ये.	२५।१३			
३	ज्ये.		०६।५७	१२।४०	१८।२३
३	मूल	२४।०७	२९।५६		
४	मूल			११।४४	१७।३२
४	पूषा.	२३।२१	२९।१६		
५	पूषा.			११।११	१७।०६
५	उषा.	२३।०१	२९।०३		
६	उषा.			११।०६	१७।०८
६	श्रवण	२३।११	२९।२२		
७	श्रवण			११।३३	१७।४४
७	धनि.	२३।५५			
८	धनि.		०६।१५	१२।३५	१८।५३
८	शत.	२५।१४			
९	शत.		०७।४३	१४।११	२०।३९
९	पूभा.	२७।०८			
१०	पूभा.		०९।४४	१६।२०	२२।५६
१०	उभा.	२९।३२			
११	उभा.		१२।१४	१८।५५	२५।३६
१२	रेवती	०८।१७	१५।०१	२१।४५	२८।२९
१३	अश्वि	११।१३	१७।५६	२४।३९	
१४	अश्वि				०७।२२

जुला	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१४	भरणी	१४।०६	२०।४५	२७।२४	
१५	भरणी				१०।०३
१५	कृत्ति.	१६।४२	२३।१५		
१६	कृत्ति.			०५।४७	१२।१९
१६	रोहि.	१८।५२	२५।१६		
१७	रोहि.			०७।३९	१४।०२
१७	मृग.	२०।२७	२६।३३		
१८	मृग.			०८।४५	१४।०९
१८	आर्द्रा	२१।२२	२७।२६		
१९	आर्द्रा			०९।३१	१५।३६
१९	पुन.	२१।३९	२७।३४		
२०	पुन.			०९।२९	१५।२५
२०	पुष्य	२१।२०	२७।०७		
२१	पुष्य			०८।५५	१४।४२
२१	आश्ले	२०।२९	२६।१०		
२२	आश्ले			०७।५२	१३।३३
२२	मघा	१९।१५	२४।५२		
२३	मघा			०६।२९	१२।०६
२३	पूफा.	१७।४३	२३।१८	२८।४३	
२४	पूफा.				१०।२७
२४	उफा.	१६।०२	२१।३६	२७।०९	
२५	उफा.				०८।४३
२५	हस्त	१४।१७	१९।५१	२५।२६	
२६	हस्त				०७।०१
२६	चित्रा	१२।३६	१८।१२	२३।४९	२९।२६
२७	स्वाती	११।०३	१६।४३	२२।२२	२८।०१
२८	विशा.	०९।४०	१५।२३	२१।०६	२६।४९
२९	अनु.	०८।३२	१४।१९	२०।०६	२५।५३
३०	ज्ये.	०७।४०	१३।३१	१९।२२	२५।१३
३१	मूल	०७।०४	१३।००	१८।५६	२४।५२
१अ	पूषा.	०६।४७	१२।४८	१८।४९	२४।५०
२	उषा.	०६।५१	१२।५८	१९।०५	२५।१२
३	श्रवण	०७।१८	१३।३१	१९।४४	२५।४७
४	धनि.	०८।१०	१४।३०	२०।५०	२७।१०

अग	अग.	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
५	शत.	०९।२९	१५।५६	२२।२३	२८।५०
६	पूभा.	११।१७	१७।५०	२४।२४	
७	पूभा.				०६।५८
७	उभा.	१३।३२	२०।११	२६।५१	
८	उभा.				०९।३१
८	रेवती	१६।११	२२।५५	२९।३९	
९	रेवती				१२।२२
९	अश्वि	१९।०५	२५।५०		
१०	अश्वि			०८।३५	१५।२०
१०	भरणी	२२।०५	२८।४७		
११	भरणी			११।३०	१८।१३
११	कृत्ति.	२४।५६			
१२	कृत्ति.		०७।३३	१४।१०	२०।४८
१२	रोहि.	२७।२५			
१३	रोहि.		०९।५४	१६।२३	२२।५२
१३	मृग.	२९।२१			
१४	मृग.		११।४०	१७।५८	२४।१६
१५	आर्द्रा	०६।३५	१२।४१	१८।४८	२४।५५
१६	पुन.	०७।०२	१२।५८	१८।५३	२४।४८
१७	पुष्य	०६।४३	१२।२८	१८।१२	२३।५७
१७	आश्ले	२९।४२			
१८	आश्ले		११।१८	१६।५५	२२।३१
१८	मघा	२८।०७			
१९	मघा		०९।३७	१५।०७	२०।३७
१९	पूफा.	२६।०६			
२०	पूफा.		०७।३२	१२।५८	१८।२४
२०	उफा.	२३।५०	२९।१४		
२१	उफा.			१०।३९	१६।०४
२१	हस्त	२१।२८	२६।५४		
२२	हस्त			०८।१८	१३।४२
२२	चित्रा	१९।१०	२४।३८		
२३	चित्रा			०६।०८	११।३६
२३	स्वाती	१७।०५	२२।३९	२८।१२	
२४	स्वाती				०९।४५

अग	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२४	विशा.	१५।१९	२०।५९	१६।३८	
२५	विशा.				०८।१८
२५	अनु.	१३।५८	१९।४४	२५।३१	
२६	अनु.				०७।१७
२६	ज्ये.	१३।०३	१८।५६	२४।४९	
२७	ज्ये.				०६।४२
२७	मूल	१२।३६	१८।३६	२४।३६	
२८	मूल				०६।३६
२८	पूषा.	१२।३६	१८।४३	२४।४९	
२९	पूषा.				०६।५५
२९	उषा.	१३।०२	१९।१४	२५।२६	
३०	उषा.				०७।३८
३०	श्रवण	१३।५१	२०।०९	२६।२७	
३१	श्रवण				०८।४५
३१	धनि.	१५।०३	२१।२७	२७।५०	
१सि	धनि.				१०।१३
१	शत.	१६।३७	२३।०६	२९।३५	
२	शत.				१२।०४
२	पूभा.	१८।३३	२५।०७		
३	पूभा.			०७।४२	१४।१६
३	उभा.	२०।५०	२७।२९		
४	उभा.			१०।०९	१६।४८
४	रेवती	२३।२७			
५	रेवती		०६।१०	१२।५४	१९।३७
५	अश्वि	२६।२०			
६	अश्वि		०९।०५	१५।५१	२२।३७
६	भरणी	२९।२३			
७	भरणी		१२।०९	१८।५४	२५।३९
८	कृत्ति.	०८।२५	१५।०७	२१।५०	२८।३२
९	रोहि.	११।१४	१७।५०	२४।२६	
१०	रोहि.				०७।०२
१०	मृग.	१३।३८	२०।०४	२६।३१	
११	मृग.				०८।५७
११	आर्द्रा	१५।२४	२१।३९	२७।५४	

सित	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१२	आर्द्रा				१०।०९
१२	पुन.	१६।२४	२२।२६	२८।२८	
१३	पुन.				१०।३१
१३	पुष्य	१६।३३	२२।२३	२८।१२	
१४	पुष्य				१०।०१
१४	आश्ले	१५।५१	२१।२९	२७।०८	
१५	आश्ले				८।४६
१५	मघा	१४।२४	१९।५३	२५।२२	३०।५१
१६	पूफा.	१२।२०	१७।४१	२३।०३	२८।२५
१७	उफा.	०९।४७	१५।०५	२०।२३	२५।४१
१८	हस्त	०६।५९	१२।१७	१७।३३	२२।५०
१८	चित्रा	२८।०६			
१९	चित्रा		०९।२४	१४।४३	२०।०१
१९	स्वाती	२५।१९			
२०	स्वाती		०६।४२	१२।०५	१७।२८
२०	विशा.	२२।५१	२८।२०		
२१	विशा.			०९।५०	१५।१९
२१	अनु.	२०।४८	२६।२५		
२२	अनु.			०८।०२	१३।३९
२२	ज्ये.	१९।१७	२५।०४		
२३	ज्ये.			०६।५१	१२।३८
२३	मूल	१८।२४	२४।२०		
२४	मूल			०६।१६	१२।१३
२४	पूषा.	१८।०९	२४।१४		
२५	पूषा.			०६।१९	१२।२५
२५	उषा.	१८।३०	२४।४४		
२६	उषा.			०६।५८	१३।१२
२६	श्रवण	१९।१५	२५।४६		
२७	श्रवण			०८।०७	१४।२८
२७	धनि.	२०।४९	२७।१६		
२८	धनि.			०९।४३	१६।१०
२८	शत.	२२।३७	२९।०९		
२९	शत.			११।४१	१८।१३
२९	पूभा.	२४।४७			

सित	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
३०	पूभा.		०७।२३	१४।००	२०।३७
३०	उभा.	२७।२४			
१अ	उभा.		०९।५५	१६।३५	२३।१५
१	रेवती	२९।५६			
२	रेवती		१२।४०	१९।२३	२६।०६
३	अश्वि	०८।५०	१५।३५	२२।२०	२९।०६
४	भरणी	११।५१	१८।३७	२५।२३	
४	भरणी				०८।०९
५	कृत्ति.	१४।५५	२१।३९	२८।२४	
६	कृत्ति.				११।०८
६	रोहि.	१७।५३	२४।३४		
७	रोहि.			०७।१४	१३।५५
७	मृग.	२०।३५	२७।०९		
८	मृग.			०९।४२	१६।२५
८	आर्द्रा	२२।४९	२९।१३		
९	आर्द्रा			११।३८	१८।०२
९	पुन.	२४।२६			
१०	पुन.		०६।३६	१२।४६	१८।५६
१०	पुष्य	२५।०७			
११	पुष्य		०७।०९	१३।१२	१९।१५
११	आश्ले	२५।१८			
१२	आश्ले		०७।०६	१२।५३	१८।४१
१२	मघा	२४।२९	३०।०५		
१३	मघा			११।४२	१७।१८
१३	पूफा.	२२।५४	२८।२०		
१४	पूफा.			०९।४६	१५।१३
१४	उफा.	२०।४०	२५।५९		
१५	उफा.			०७।१९	१२।३८
१५	हस्त	१७।५७	२३।१२	२८।२७	
१६	हस्त				०९।४२
१६	चित्रा	१४।५७	२०।११	२५।२४	
१७	चित्रा				०६।३७
१७	स्वाती	११।५१	१७।०५	२२।२०	२७।३५
१८	विशा.	०८।५०	१४।१०	१९।२९	२४।४८

अक्टू	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१८	अनु.	३०।०७			
१९	अनु.		११।३३	१६।५९	२२।२५
१९	ज्ये.	२७।५१			
२०	ज्ये.		०९।२६	१५।०१	२०।३६
२०	मूल	२६।११			
२१	मूल		०७।५६	१३।४१	१९।२६
२१	पूषा.	२५।१२			
२२	पूषा.		०७।०९	१३।०५	१९।०१
२२	उषा.	२४।५८			
२३	उषा.		०७।०५	१३।१२	१९।१९
२३	श्रवण	२५।२७			
२४	श्रवण		०७।४५	१४।०२	२०।१९
२४	धनि	२६।३७			
२५	धनि.		०९।०४	१५।३०	२१।५६
२५	शत.	२८।२२			
२६	शत.		१०।५६	१७।२९	२४।०२
२७	पूभा.	०६।३६	१३।१५	१९।५३	२६।३२
२८	उभा.	०९।१०	१५।५२	२२।३४	२९।१७
२९	रेवती	११।५९	१८।४३	२५।२७	
३०	रेवती				०८।१२
३०	अश्वि	१४।५६	२१।४२	२८।२७	
३१	अश्वि				११।१२
३१	भरणी	१७।५७	२४।४१		
१न	भरणी			०७।२६	१४।११
१	कृत्ति.	२०।५६	२७।३१		
२	कृत्ति.			१०।२३	१७।०६
२	रोहि.	२३।४९	३०।२९		
३	रोहि.			१३।०९	१९।४९
३	मृग.	२६।२९			
४	मृग.		०९।०४	१५।३९	२२।२५
४	आर्द्रा	२८।५०			
५	आर्द्रा		११।१९	१७।४७	२४।२५
६	पुन.	०६।४४	१३।०४	१९।२४	२५।४४
७	पुष्य	०८।०४	१४।१४	२०।२४	२६।३४

नव	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
८	आश्ले	०८।४४	१४।४३	२०।४२	२६।४१
९	मघा	०८।४१	१४।३०	२०।२८	२६।०६
१०	पूफा.	०७।५५	१३।३३	१९।११	२४।४९
१०	उफा.	३०।२७			
११	उफा.		११।५६	१७।२६	२२।५५
११	हस्त	२८।२४			
१२	हस्त		०९।४७	१५।०९	२०।३१
१२	चित्रा	२५।५४			
१३	चित्रा		०७।११	१२।२९	१७।४७
१३	स्वाती	२३।०५	२८।२०		
१४	स्वाती			०९।३६	१४।५२
१४	विशा.	२०।०८	२५।२४	३०।४१	
१५	विशा				११।५८
१५	अनु.	१७।१५	२२।३५	२७।५५	
१६	अनु.				०९।१५
१६	ज्ये.	१४।३५	२०।०१	२५।२७	
१७	ज्ये.				०६।४३
१७	मूल	१२।२०	१७।५५	२३।३०	२९।०५
१८	पूषा.	१०।३९	१६।२४	२२।०८	२७।५२
१९	उषा.	०९।३७	१५।३३	२१।२९	२७।२५
२०	श्रवण	०९।२१	१५।२८	२१।३६	२७।४४
२१	धनि.	०९।५२	१६।११	२२।३०	२८।४९
२२	शत.	११।०८	१७।३७	२४।०६	३०।३५
२३	पूभा.	१३।०४	१९।४०	२६।१७	
२४	पूभा.				०८।४४
२४	उभा.	१५।३१	२२।१३	२८।५५	
२५	उभा.				११।३७
२५	रेवती	१८।१९	२५।०४		
२६	रेवती			०७।४९	१४।३४
२६	अश्वि	२१।१९	२८।०५		
२७	अश्वि			१०।५०	१७।३६
२७	भरणी	२४।२२			
२८	भरणी		०७।०६	१३।५०	२०।३४
२८	कृत्ति.	२७।१८			

नव	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२९	कृत्ति.		०९।५९	१६।४०	२३।२१
२९	रोहि.	३०।०२			
३०	रोहि.		१२।३१	१९।२६	२५।५३
१दि	मृग.	०८।३०	१५।०१	२१।३३	२८।०५
२	आर्द्रा	१०।३७	१७।०३	२३।२९	२९।५४
३	पुन.	१२।२०	१८।४०	२४।५९	
४	पुन.				०७।१८
४	पुष्य	१३।३८	१९।५०	२६।०३	
५	पुष्य				०८।१५
५	आश्ले	१४।२७	२०।३२	२६।३६	
६	आश्ले				०८।४०
६	मघा	१४।४५	२०।४२	२६।३८	
७	मघा				०८।३४
७	पूफा.	१४।३१	२०।२०	२६।०९	
८	पूफा.				०७।५८
८	उफा.	१३।४७	१९।२८	२५।१०	३०।५१
९	हस्त	१२।३२	१८।०६	२३।४०	२९।२४
१०	चित्रा	१०।५०	१६।१९	२१।४८	२७।१८
११	स्वाती	०८।४७	१४।१३	१९।३८	२५।०३
११	विशा.	३०।२९			
१२	विशा.		११।५२	१७।१६	२२।४१
१२	अनु.	२८।०४			
१३	अनु.		०९।२७	१४।५१	२०।१५
१३	ज्ये.	२५।३९			
१४	ज्ये.		०७।०५	१२।३१	१७।५७
१४	मूल	२३।२५	२८।५७		
१५	मूल			१०।२८	१५।५९
१५	पूषा.	२१।३०	२७।०८		
१६	पूषा.			०८।४६	१४।२५
१६	उषा.	२०।०३	२५।५०		
१७	उषा.			०७।३८	१३।२५
१७	श्रवण	१९।१२	२५।१०		
१८	श्रवण			०७।०८	१३।०५
१८	धनि.	१९।०३	२५।१२		

दिस	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१९	धनि.			०७।२१	१३।३०
१९	शत.	१९।३१	२६।००		
२०	शत.			०८।२१	१४।४२
२०	पूभा.	२१।००	२७।३०		
२१	पूभा.			१०।००	१६।३२
२१	उभा.	२३।०२	२९।४१		
२२	उभा.			१२।२१	१८।५७
२२	रेवती	२५।३६			
२३	रेवती		०८।२०	१५।०४	२१।४८
२३	अश्वि	२८।३२			
२४	अश्वि		११।२७	१८।०३	२४।४९
२५	भरणी	०७।३५	१४।२०	२१।०४	२७।४९
२६	कृत्ति.	१०।३४	१७।२५	२३।५६	३०।३७
२७	रोहि.	१३।२८	१९।५३	२६।२८	
२८	रोहि.				०९।०३
२८	मृग.	१५।३८	२२।०६	२८।३५	
२९	मृग.				११।०३
२९	आर्द्रा	१७।३१	२३।५१	३०।२२	
३०	आर्द्रा				१२।३३
३०	पुन.	१८।५४	२५।०८		
३१	पुन.			०७।२१	१३।३५
३१	पुष्य	१९।४८	२५।५५		
सन् २०२१ ई.					
१	पुष्य			०८।०१	१४।०७
१	आश्ले	२०।२४	२६।२५		
२	आश्ले			०८।२५	१४।२५
२	मघा	२०।२६	२६।२१		
३	मघा			०८।०६	१४।०१
३	पूफा.	१९।५६	२५।४६		
४	पूफा.			०७।३६	१३।२६
४	उफा.	१९।२६	२५।०२	३०।४८	
५	उफा.				१२।३४
५	हस्त	१८।२०	२४।०२	२९।४४	
६	हस्त				११।२६

जन	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
६	चित्रा	१७।०८	२२।४८	२८।२६	
७	चित्रा				१०।०६
७	स्वाती	१५।४५	२१।२२	२६।५८	
८	स्वाती				०८।३४
८	विशा.	१४।११	१९।४६	२५।२१	३०।५६
९	अनु.	१२।३१	१८।०६	२३।४०	२९।१४
१०	ज्ये.	१०।४९	१६।२४	२१।५८	२७।३३
११	मूल	०९।०८	१४।४५	२०।२३	२६।००
१२	पूषा.	०७।३७	१३।१८	१८।५८	२४।३८
१२	उषा.	३०।२०			
१३	उषा.		१२।०६	१७।५३	२३।४०
१३	श्रवण	२९।२७			
१४	श्रवण		११।२१	१७।१५	२३।०९
१४	धनि.	२९।०३			
१५	धनि.		११।०६	१७।०९	२३।१२
१५	शत.	२९।१६			
१६	शत.		११।२९	१७।४२	२३।५५
१६	पूभा.	३०।०८			
१७	पूभा.		१२।३२	१८।५५	२५।१९
१८	उभा.	०७।४२	१४।१४	२०।४७	२७।२०
१९	रेवती	०९।५३	१६।३४	२३।१४	२९।५४
२०	अश्वि	१२।३५	१९।२०	२६।०५	
२१	अश्वि				०८।५०
२१	भरणी	१५।३५	२२।२१	२९।०७	
२२	भरणी				११।५३
२२	कृत्ति.	१८।३९	२५।२२		
२३	कृत्ति.			०८।०५	१४।४८
२३	रोहि.	२१।३२	२८।०९		
२४	रोहि.			१०।४५	१७।२२
२४	मृग.	२३।५९	३०।२७		
२५	मृग.			१२।५६	१९।२५
२५	आर्द्रा	२५।५४			
२६	आर्द्रा		०८।१४	१४।३३	२०।५२
२६	पुन.	२७।११			

जन.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२७	पुन.		०९।२०	१५।२९	२१।३८
२७	पुष्य	२७।४८			
२८	पुष्य		०९।४८	१५।४८	२१।४८
२८	आश्ले	२७।४९			
२९	आश्ले		०९।४१	१५।३४	२१।२७
२९	मघा	२७।२०			
३०	मघा		०९।०६	१४।५३	२०।४०
३०	पूफा.	२६।२७			
३१	पूफा.		०८।१०	१३।५२	१९।३४
३१	उफा.	२५।१७	३०।५७		
१फ	उफा.			१२।३७	१८।१७
१	हस्त	२३।५६	२९।३५		
२	हस्त			११।१४	१६।५३
२	चित्रा	२२।३१	२८।१०		
३	चित्रा			०९।४८	१५।२८
३	स्वाती	२१।०६	२६।४६		
४	स्वाती			०८।२५	१४।०४
४	विशा.	१९।४४	२५।२२	३१।०१	
५	विशा.				१२।४६
५	अनु.	१८।२७	२४।१०	२९।५३	
६	अनु.				११।३६
६	ज्ये.	१७।१७	२३।०१	२८।४५	
७	ज्ये.				१०।३०
७	मूल	१६।१४	२२।००	२७।४७	
८	मूल				०९।३४
८	पूषा.	१५।२०	२१।१०	२६।५९	
९	पूषा.				०८।४८
९	उषा.	१४।३८	२०।३२	२६।२५	
१०	उषा.				०८।१८
१०	श्रवण	१४।११	२०।०९	२६।०७	
११	श्रवण				०८।०५
११	धनि.	१४।०४	२०।०९	२६।१३	
१२	धनि.				०८।१८
१२	शत.	१४।२२	२०।३४	२६।४६	
१३	शत.				०८।५८

फर	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१३	पूभा.	१५।१०	२१।३१	२७।५१	
१४	पूभा.				१०।१२
१४	उभा.	१६।३२	२३।०१	२९।३०	
१५	उभा.				११।५९
१५	रेवती	१८।२८	२५।०५		
१६	रेवती			०७।४१	१४।१८
१६	अश्वि	२०।५५	२७।३८		
१७	अश्वि			१०।२१	१७।०४
१७	भरणी	२३।४८	३०।३४		
१८	भरणी			१३।२०	२०।०६
१८	कृत्ति.	२६।५३			
१९	कृत्ति.		०९।३९	१६।२५	२३।१०
१९	रोहि.	२९।५६			
२०	रोहि.		१२।३७	१९।१९	२६।००
२१	मृग.	०८।५२	१५।२६	२१।५९	२८।२३
२२	आर्द्रा	१०।५७	१७।२०	२३।४३	
२३	आर्द्रा				०६।०६
२३	पुन.	१२।३०	१८।४२	२४।५३	
२४	पुन.				०७।०५
२४	पुष्य	१३।१६	१९।१६	२५।१६	
२५	पुष्य				०७।१६
२५	आश्ले	१३।१६	१९।०६	२४।५६	३०।४५
२६	मघा	१२।३४	१८।१५	२३।५६	२९।३७
२७	पूफा.	११।१७	१६।५२	२२।२६	२८।००
२८	उफा.	०९।३५	१५।०५	२०।३५	२६।०५
१मा	हस्त	०७।३६	१३।०५	१८।३४	२४।०३
१	चित्रा	२९।३१			
२	चित्रा		११।००	१६।२९	२१।५८
२	स्वाती	२७।२८			
३	स्वाती		०९।००	१४।३१	२०।०३
३	विशा.	२५।३५			
४	विशा.		०७।१०	१२।४५	१८।२०
४	अनु.	२३।५६	२९।३६		
५	अनु.			११।१७	१६।५७
५	ज्ये.	२२।३७	२८।२२		

मार्च	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
६	ज्ये.			१०।०७	१५।५२
६	मूल	२१।३७	२७।१७		
७	मूल			०९।२८	१५।०८
७	पूषा.	२०।५८	२६।५३		
८	पूषा.			०८।४८	१४।४३
८	उषा.	२०।३९	२६।४०		
९	उषा.			०८।४०	१४।४०
९	श्रवण	२०।४०	२६।४६		
१०	श्रवण			०८।५१	१४।५६
१०	धनि.	२१।०२	२७।१३		
११	धनि.			०९।२३	१५।३३
११	शत.	२१।४४	२८।००		
१२	शत.			१०।१७	१६।३३
१२	पूभा.	२२।५०	२९।१३		
१३	पूभा.			११।३६	१७।५९
१३	उभा.	२४।२१			
१४	उभा.		०६।५०	१३।१९	१९।४८
१४	रेवती	२६।१८			
१५	रेवती		०८।५४	१५।३०	२२।२६
१५	अश्वि	२८।४२			
१६	अश्वि		११।२४	१८।०६	२४।४८
१७	भरणी	०७।३०	१४।१६	२१।०२	२७।४८
१८	कृत्ति.	१०।३३	१७।२०	२४।०७	
१९	कृत्ति.				०६।५४
१९	रोहि.	१३।४३	२०।२८	२७।१३	
२०	रोहि.				०९।५९
२०	मृग.	१६।४४	२३।१४	३०।०४	
२१	मृग.				१२।४३
२१	आर्द्रा	१९।२३	२५।५४		
२२	आर्द्रा			०८।२५	१४।५६
२२	पुन.	२१।२७	२७।४६		
२३	पुन.			१०।०५	१६।२५
२३	पुष्य	२२।४४	२८।५२		
२४	पुष्य			१०।५९	१७।०५
२४	आश्ले	२३।११	२९।०५		

मार्च	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२५	आश्ले			१०।५९	१६।५३
२५	मघा	२२।४८	२८।३१		
२६	मघा			१०।१३	१५।५५
२६	पूफा.	२१।३८	२७।१२		
२७	पूफा.			०८।४५	१४।१८
२७	उफा.	१९।५१	२५।१७		
२८	उफा.			६।४३	१२।०९
२८	हस्त	१७।३५	२२।५७	२८।१८	
२९	हस्त				०९।३९
२९	चित्रा	१५।०१	२०।२१	२५।४१	
३०	चित्रा				०७।०१
३०	स्वा.	१२।२१	१७।४१	२३।०२	२८।२३
३१	विशा.	०९।४४	१५।०८	२०।३२	२५।५७
१अ	अनु.	०७।२१	१२।५०	१८।२०	२३।४९
१	ज्ये.	२९।१८			
२	ज्ये.		१०।५४	१६।३०	२२।०६
२	मूल	२७।४३			
३	मूल		०९।२६	१५।०९	२०।५२
३	पूषा.	२६।३७			
४	पूषा.		०८।२९	१४।२१	२०।१३
४	उषा.	२६।०५			
५	उषा.		०८।०५	१४।०४	२०।०४
५	श्रवण	२६।०४			
६	श्रवण		०८।१२	१४।१९	२०।२६
६	धनि.	२६।३४			
७	धनि.		०८।४९	१५।०३	२१।१७
७	शत.	२७।३२			
८	शत.		०९।५३	१६।१४	२२।३५
८	पूभा.	२८।५६			
९	पूभा.		११।२४	१७।५१	२४।१८
१०	उभा.	०६।४५	१३।१७	१९।५०	२६।२३
११	रेवती	०८।५६	१५।३४	२२।१२	२८।५०
१२	अश्वि	११।२८	१८।११	२४।५३	
१३	अश्वि				०७।३५
१३	भरणी	१४।१८			

पंजाब आदि द्विगर्त देश विशेष सम्भागीय त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सन् 2020

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय(अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय(अंग्रेजी तारीखें)
मेष	जुलाई- ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३, अगस्त- २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, १३,	मेष	(धनु में नौवाँ गुरु श्रेष्ठ रहेगा) जुलाई- ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३, २२ ,२३ ,२४, २५, २६, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, १३, २०, २१, २४,
वृष	जुलाई- २, ७, ८, ११, १२, १३, २४, २५, २६, २९, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, अक्टूबर- १९, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, १२, १३, २०, २१, २४,	वृष	स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरु। गुरु उच्चराशि में अपनी राशि में, मित्र की राशि में और अपने नवांश में, वर्गोत्तम में रहे, तब तो अशुभ स्थानगत भी शुभ होता है, अतः द्विजाचार्य स्वयं सूझबूझ से विवाह बना सकते हैं। नवम्बर- २०, २१, २४,
मिथुन	जुलाई- २, ४, ५, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २३, २४, २५, सितम्बर- १, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९,१३,२४,	मिथुन	जुलाई- २, ४, ५, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २३, २४, २५, सितम्बर- १, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १३,
कर्क	जुलाई- २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१, नवम्बर- २०, २४,	कर्क	(धनु में स्वगृही गुरु को श्रेष्ठ जानें) जुलाई- २, ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, २०, २४,
सिंह	जुलाई- ४, ५, ७, ८, १३, अगस्त- २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- २१, २५, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, १३,	सिंह	(धनु का गुरु श्रेष्ठ रहेगा) जुलाई- ४ ५, ७, ८, १३, २२, २३, २४, २५, २६, ३१, अगस्त- ३, ९, १३, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- २१, २५, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, १३, २०, २१,
कन्या	जुलाई- २, ७, ८, ११, १२, २२, २३, २४, २५, २६, २९, अगस्त- ३, ७, ८, १३, अक्टूबर- १९, २५, २८, नवम्बर- ३, ९, १२, १३, २०, २१, २४,	कन्या	बड़ी उम्र की लड़कियों का विवाह त्रिगुणार्चन गुरु पूजा से आचार्य स्वयं करा सकते हैं- अष्टमेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्। रजस्वलायाः कन्याया गुरुशुद्धिं न चिन्तयेत्॥ रजोदर्शन के बाद गुरु शुद्धि की चिन्ता न करें। नवम्बर- २०, २१, २४,
तुला	जुलाई- २, ४, ५, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, २०, २१, २२, २३, २४, २५ सितम्बर- १, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ९, १२, १३, २४,	तुला	जुलाई- २, ४, ५, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, सितम्बर- १, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ९, १२, १३,
वृश्चि.	जुलाई- २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१, नवम्बर- २०, २४,	वृश्चि.	जुलाई- २, ४, ५, ७, ११, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, १३, २०, २४,
धनु	जुलाई- ४, ५, ७, ८, १३, अगस्त- २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- २१, २५, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, १३,	धनु	(धनु में स्वगृही गुरु श्रेष्ठ जानें) जुलाई- ४, ५, ७, ८, १३, २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ९, १३, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर-२१, २५, ३०, ३१, नवम्बर- १, ९, १२, १३, २०, २१,
मकर	जुलाई- २, ४, ५, ७, ८, ११, १२, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३ अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, नवम्बर- ३, १२, १३, २०, २१, २४,	मकर	शास्त्रवाक्य- 'स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरु' के अनुसार गुरु उच्च राशि, अपनी राशि, मित्र की राशि, अपने नवांश एवं वर्गोत्तम में रहे तब तो अशुभ स्थान का भी शुभ होता है। सो द्विजाचार्य त्रिगुणपुजा कराकर विवाह करा सकते हैं। नवम्बर- २०, २१, २४,
कुम्भ	जुलाई- २, ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २३, २४, २५, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ९, १३, २०, २१, २४,	कुम्भ	जुलाई- २, ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २३, २४, २५, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ९, १३,
मीन	जुलाई- २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- २५, नवम्बर- २०, २१, २४,	मीन	(धनु में स्वगृही गुरु को श्रेष्ठ जानें) जुलाई- २, ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २६, २९, ३१, अगस्त- ३, ७, ८, ९, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१, सितम्बर- १, अक्टूबर- १९, २१, २५, २८, ३०, ३१, नवम्बर- ३, ९, १२, २०, २१, २४,

संदिग्ध व्रत-पर्व और धर्मशास्त्रीय व्यवस्था

कामदाएकादशीव्रत- इस वर्ष स्मार्त, वैष्णव, बल्लभमत के अनुसार ४ अप्रैल २०२० शनिवार में मान्य रहेगी। **ध्यान रहे-** चैत्र शुदी दशमी ४६ घटी ५२ पल होने के कारण निम्बार्क मत से एकादशी का वेध करेगी, सो उक्त सम्प्रदायानुसार व्रतोपयोगी नहीं, सम्भवतः निम्बार्क मत को मानने वाले व्रत न करें। धर्मशास्त्रीय निर्णयानुसार कामदा ११ व्रत निम्बार्क ता.५ अप्रैल रविवार में लिखा है।

हनुमज्जयंती- परम्परानुसार उदयव्यापिनी चैत्री पूर्णिमा में मनाई जाती है। जैसाकि '**हनुमदुपासना कल्पद्रुम**' नामक ग्रन्थ में लिखा है- **चैत्रे मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यां कुजेऽहनि। मौञ्जी मेखला युक्तः कोपीन परिधारकः॥** चैत्र शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार के दिन मूंज की मेखला से युक्त, कोपीन संयुक्त और यज्ञोपवीत से विभूषित हनुमानजी उत्पन्न हुए थे। इनके जन्म का विवरण **'उत्सवसिन्धु' में कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी भौमवार में जन्म होना लिखा है। व्रत परिचय ग्रन्थ में चैत्री पूनो को तो श्रीहनुमत हर्षोल्लास दिवस लिखा गया है। जो भी हो मानते सभी इसी तिथि को हनुमज्जयंती हैं।** इस वर्ष ८ अप्रैल २०२० बुधवार में श्री हनुमज्जन्मोत्सव मनाया जायेगा। **मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥**

श्रीपरशुराम जयंती- भगवान परशुराम जी का जन्म वैशाख शुक्ल तृतीया को रात्रि के प्रथम प्रहर में हुआ था जैसा कि निर्णयसिन्धु पृ.१८८ पर लिखा है- **वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयां पुनर्वसौ। निशायां प्रथमे यामे रामाख्यः समये हरिः॥ स्वोच्चगैः षड्ग्रहैःर्युक्ते मिथुने राहु संयुते। रेणुकायास्तु यो गर्भादवतीर्णो हरिः स्वयम्॥** कहीं प्रदोष व्यापिनी तृतीया में जन्म लिखा है, लेकिन सर्वमान्य नहीं। इस वर्ष श्रीपरशुरामजयंती २५ अप्रैल २०२० में मान्य रहेगी।

श्री जानकी नवमी- वैष्णवों के मतानुसार वैशाख शुदी नवमी को भगवती जानकी का प्रादुर्भाव हुआ था- **पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलाग्रतः। भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षण सीताविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्॥** राजा जनक जी द्वारा भूमि में हल चलाते समय का यह वृत्तान्त है, उस समय मध्याह्नकाल था। दशानन का विनाश करने के लिए धरणिसुता सीताजी अवतरित हुई थीं- **दशानन विनाशाय माता धरणी सम्भवा। मैथिली शीलसम्पन्ना पातु नः पतिदेवता॥** इस वर्ष जानकी नवमी वैष्णवोत्सव २ मई २०२० शनिवार के दिन मनाया जायेगा, क्योंकि इसी दिन मध्याह्नकाल में नवमी तिथि वर्तमान है।

मोहिनी एकादशी- इस वर्ष वैशाख शुदी में द्वादशी क्षयः होने के कारण **त्रिस्पर्शा योग वाली मोहिनी एकादशी** अत्यन्त महत्पुण्यप्रद कही जायेगी, जिसमें व्रत करने वाले वैष्णवादि सभी को त्रयोदशी में पारण करने से अत्यन्त पुण्य लाभ मिलेगा- **कलात्येकादशी यत्र परतो द्वादशी न चेत्। तत्र क्रतुशतं पुण्यं त्रयोदश्यां तु पारणम्॥** सभी स्मार्त तो पूर्वदिन (उदयादशमी रविवार को एकादशी का व्रत) करके अग्रिम एकादशी वाले दिन सोमवार ४ मई में द्वादशी लगने पर प्रातः ६।१२ बजे के बाद पारण कर सकते हैं।

प्रदोष- अर्थात् सूर्यास्त के पीछे लगभग ६ घटी तक के समय को प्रदोषकाल कहते हैं। इसी समय में जिस दिन त्रयोदशी की व्याप्ति होती है, तभी '**प्रदोषव्रत**' किया जाता है। यदि उभयदिन त्रयोदशी की व्याप्ति हो तब तो व्रत अग्रिम दिन करते हैं। इस वर्ष ज्येष्ठ वदी तेरस २० मई २०२० बुधवार के दिन ठीक वैसी ही स्थिति बन रही है, इसलिए प्रदोषव्रत २० मई में लिखा है।

पवित्राएकादशीव्रत- ३० जुलाई गुरुवार में स्मार्त, वैष्णव, बल्लभ मतानुसार लिखा है। निम्बार्क मत वाले ३१ जुलाई शुक्रवार में व्रत कर सकते हैं।

रक्षाबन्धन- वाले दिन ३ अगस्त २०२० सोमवार को दिन में ९।२८ बजे तक भद्रा रहेगी, जिसमें राखी बांधना निषेध लिखा है- **भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी॥** अतः पूर्णिमा में घं.९ मि.२८ बजे के बाद ही राखी बांधनी चाहिए। येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। **तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे माचल माचल॥**

इन्दिरा एकादशीव्रत- १३ सितम्बर रविवार में स्मार्त एवं वैष्णव मत को मानने वाले महानुभाव द्विजाचार्य सम्पन्न करेंगे और दशमी ५५ घटी १५ पल होने के कारण निम्बार्क-बल्लभ मतानुयायी चक्रांकित महाभागवत १४ सितम्बर २०२० सोमवार में व्रत सम्पन्न करके पुण्य के भागीदार बनेंगे।

उपांगललिता व्रत- अपराह्णकाल व्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी में किया जाता है, सो इस वर्ष उपाङ्गललिता व्रत २० अक्टूबर २०२० मंगलवार में सम्पन्न किया जायेगा। इस व्रत में गुजरात प्रान्तवासी आत्मविभोर होकर गरबाडांस किया करते हैं।

कोजागरीव्रत- में आश्विन की पूर्णिमा प्रदोष या निशीथ (अर्द्धरात्रि) व्यापिनी ली जाती है। इस वर्ष ३० अक्टूबर २०२० शुक्रवार में पूर्णिमा तिथि निशीथकाल व्यापिनी है, सो कोजागरी व्रत में उपयोगी रहेगी। निर्णयसिन्धु पृष्ठ ३७८ पर लिखा है- **आश्विने पौर्णमास्यां तु चरेज्जागरणं निशि। कौमुदी सा समाख्याता कार्या लोकैर्विभूतये॥** जो जाग्रत व्यक्ति ऐरावत पर सवार लक्ष्मी सहित इन्द्र का पूजन करता है, वह ऐश्वर्य को प्राप्त होता है, यह स्वयं लक्ष्मीजी ने कहा है- **निशीथे वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै वित्तं प्रयच्छामि अक्षैः कीडां करोति यः॥**

शरद्पूर्णिमा- आश्विन पौर्णमासी परा ग्रहण करें, यह बात दीपिका में लिखी है- '**सावित्रीव्रतमन्तरेण भवतोऽमापौर्णमास्यौ परे**' इस वर्ष शरद्पूर्णिमा सत्यव्रतोपयोगी ३१ अक्टूबर शनिवार में सर्वमतेन मान्य रहेगी, क्योंकि पूनो सूर्यास्त के बाद प्रदोष में २ घं. ४५ मि. तक है, अतः इसीदिन परमात्मा को खीरभोग अर्पण किया जायेगा। **शरद्पूर्णिमा** वाले दिन १६ कला से परिपूर्ण चन्द्रमा की शुभ्र ज्योति भूमण्डल पर पड़ती है व चन्द्रमा की सर्वाधिक चमकीली चांदनी परिलक्षित होती है। आगरा में चमकी का मेला भी लगता है।

दीपावली महालक्ष्मीपूजन- १४ नवम्बर २०२० शनिवार के दिन प्रदोष एवं निशीथकाल व्यापिनी कार्तिकी अमावस्या

स्वाती नक्षत्र सौभाग्य योग में सम्पन्न किया जायेगा। **अन्नकूट १५ नवम्बर** रविवार में और **भाईदूज यमद्वितीया, विश्वकर्मापूजन** १६ नवम्बर सोमवार में मान्य रहेगी। ज्योतिर्गणित के अनुसार नवीन चन्द्रमा के दर्शन भी सोमवार में हो जायेंगे। यम और अपनी बहिन का जो पूजन(सम्मान) करता है वह यमलोक नहीं देखता- **ऊर्जे शुक्ल द्वितीयायामपराह्णेऽर्चयेद्यमम्। स्नानं कृत्वा भानुजायां यमलोकं न पश्यति॥**

प्रबोधिनी एकादशी- २५ नवम्बर २०२० बुधवार की है, इसी दिन तुलसी विवाह सम्पन्न किया जायेगा। केवल निम्बार्क मतावलम्बी ता.२६ गुरुवार वाले दिन व्रत सम्पन्न करेंगे। एकादशीव्रती स्मार्तजनुरागी महानुभाव प्रबोधिनी एकादशी व्रत की पारणा १२ बजकर १९ मिनट के बाद हरिवासर योग को छोड़कर ही तुलसीपत्र एवं श्री गंगाजल से कर सकेंगे, अन्यथा सभी को दो दिन व्रत करने से अधिकाधिक पुण्यलाभ होगा। इसमें एकादशीव्रत के पारण लोप का दोष नहीं होता, क्योंकि दोनों तिथियों और व्रतों के देवता श्री विष्णुजी हैं। वैष्णवों के लिये तो यह अवश्य कर्त्तव्य है। इस व्रतमें रेवती का अन्तिम एक तिहाई भाग त्यागने का शास्त्रीय आदेश है।

चम्पाषष्ठी- मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी चम्पाषष्ठी के नाम से महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है। इस वर्ष यह २० दिसम्बर २०२० रविवार में मान्य रहेगी। यह पर्व रविवार, शतभिषा नक्षत्र में होने से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। **मार्गेभाद्रपदे शुक्ला षष्ठी वैधृति संयुता। रविवारेण संयुक्ता सा चम्पेतीह कीर्तिता॥** पूजन करने वाले की कीर्ति को बढ़ाने वाली है, यह मल्लारी महात्म्य में कहा गया है। इसी तिथि को स्कन्दषष्ठी, गुहाषष्ठी, मूलरूपिणीषष्ठी भी कहते हैं। इस दिन बंगाल में भी विशेष पूजा की जाती है।

भीष्माष्टमी- में पितामह भीष्म जी के निमित्त एकोद्दिष्ट श्राद्ध किया जाता है, इसलिये इसे भीष्माष्टमी की संज्ञा दी गई है। इसमें मध्याह्नकाल व्यापिनी तिथि ली जाती है, जैसाकि पुरुषार्थ चिन्तामणि ग्रंथ में लिखा है- **अत्र श्राद्धादेः एकोद्दिष्टत्वात् मध्याह्नव्यापिनी भीष्माष्टमी ग्राह्या।** के अनुसार २० फरवरी २०२१ शनिवार में भीष्मजी के निमित्त श्राद्ध किया जायेगा।

महाशिवरात्रिव्रत- के संदर्भ में ईशान संहिता में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि जिस दिन फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी निशीथकाल व्यापिनी हो उसी दिन यह व्रत करना चाहिए, क्योंकि अर्धरात्रि में ही पृथ्वी से ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव हुआ था- **शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः।** इसलिये इसे महाशिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। यह व्रत सभी को अभिष्ट है। स्त्री-पुरुष, बाल, युवा, वृद्ध चाहे जिस वर्ग विशेष का व्यक्ति हो वे सभी इस व्रत को कर सकते हैं। यह सभी को मुक्ति और भुक्ति प्रदान करने वाला है- **शिवरात्रिव्रतं नाम सर्वपापप्रणाशनम्। आचाण्डालमनुष्याणां भुक्ति मुक्ति प्रदायकम्॥** व्रत की पारणा के संदर्भ में (स्मृत्यन्तर) में स्पष्ट लिखा है कि शिवरात्रि व्रत एवं व्रत की पारणा भी चतुर्दशी में ही होनी चाहिए। **तिथिनामेव सर्वासामुपवास व्रतादिषु। तिथ्यन्ते पारणं कुर्याद् विना शिवचतुर्दशीम्॥** यह तभी सम्भव हो सकता है, जब चतुर्दशी प्रदोष या निशीथकाल व्यापिनी होगी। अर्धरात्रि की पूजा के लिए स्कन्द पुराण में लिखा है कि फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को रात्रिवेला में भूत-प्रेत, पिशाच, डांकिनी, शांकिनी, चुड़ैल, पिशाचिनी आदि शक्तियाँ और स्वयं शिवजी भ्रमण करते हैं, अतः उस समय में इनका पूजन करने वालों के सब पाप सन्ताप दूर हो जाते हैं- **निशिभ्रमन्ति भूतानि शक्तयः शूलभृद्यतः। अतस्तस्यां चतुर्दश्यां सत्यां तत्पूजनं भवेत्॥** जनश्रुतियों के अनुसार भगवान् शिवशंकर का विवाह शिवरात्रि की पावन वेला में हुआ था। जहाँ-तहाँ दिल्ली जैसे महानगरों में शिवबरात बड़ी ही धूमधाम के साथ अब भी निकलती है।

तुम जानो सो मैं जानूँ

कुछ पंचांगकार अपने पंचांगों में एक दूसरे की देखा-देखी पर्वोत्सवों की तारीखें लिख देते हैं। स्वयं निष्कर्ष नहीं निकाल पाते तब तो स्मार्त्त-वैष्णव भेद से पर्व को दो दिन लिखकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं। कुछ देशकाल परिस्थिति को जिम्मेदार ठहरा देते हैं, तो कुछ धर्मशास्त्रों में वर्णित प्रातःकाल, संगवकाल, मध्याह्नकाल, अपराह्नकाल, सायंकाल, प्रदोषवेला, निशीथकाल, ब्रह्ममुहूर्त्त, उषाःकाल, अरुणोदय, प्रातःसन्ध्या और सायं सन्ध्यादि को भी कारण में गिनाते हैं। तिथियों में लगने वाले वेध भी इसमें बहुत बड़ी गड़बड़ी को प्रदर्शित करते हैं। कुछ द्विजाचार्य ज्योतिर्विद पंचांगकार तिथि के वास्तविक स्वरूप को न समझते हुए पुराने गणित से पंचांग तैय्यार करके पर्वोत्सवों का निर्णय कर डालते हैं, यह भी मतभेद का बहुत बड़ा कारण है। स्थानभेद से सूर्योदयास्त भी अलग-अलग समय पर होना इस संदर्भ में बहुत बड़ा कारण है।

संवत् २०७५ में तीन बड़े पर्व विजयादशमी, वसंतपंचमी, महाशिवरात्रि पंचांगकर्त्ताओं में मतभेद के कारण विवादास्पद रहे। संदिग्ध व्रत-पर्व और धर्मशास्त्रीय व्यवस्था शीर्षक उल्लेख में हमने विगत वर्ष अपने पंचांगों में विजयादशमी १९ अक्टूबर २०१८ शुक्रवार में एक ही दिन पूरे भारतवर्ष में मनाने के लिए आग्रह किया था। हमारे विचार समस्त विद्वान, जनसाधारण, धर्मप्राण जनता ने स्वीकार किये। विजयादशमी (दशहरा) को मिलजुलकर १९ अक्टूबर में ही मनाया था।

कुछेक पंचांगों में लिखा था कि दिल्ली से पश्चिम भारतवासी दशहरा १८ अक्टूबर को मनायें और दिल्ली से पूर्वी संभागों में रहने वाले दशहरा १९ अक्टूबर २०१८ को करें। इस बात को किसी ने स्वीकार नहीं किया था, बल्कि पंचांगकारों को उपहास का दंश झेलना पड़ा था। मैंने उस समय भी विनम्र निवेदन किया था कि पंचांगों में दुविधा जनक परिस्थिति का उल्लेख न करें। पुनः भारतवासी विद्वान पंचांगकारों से निवेदन है कि सब मिलजुल कर कार्य किया करें। वंसतपंचमी को भी एक दो पंचागों में ९ फरवरी २०१९ शनिवार को लिख दिया था। उनके मत को किसी ने नहीं माना था। श्रीराजधानी पंचांग एवं श्री ब्रजभूमि पंचांग में वसंतपंचमी श्री सरस्वती जयंती १० फरवरी रविवार २०१९ में लिखी थी। हेमाद्री के मतानुसार उसी को सबने स्वीकार किया था। त्रिवेणी के संगम पर शाही स्नान सम्पन्न हुआ था, जिसमें अपार जनसमूह उमड़ पड़ा था, यह तो सर्वविदित है। सिद्धिप्रद कुम्भ स्नान में एक से बढ़कर एक विद्वान, ज्योतिर्विद, द्विजाचार्य, साधु सन्यासी, योगाचार्य, तपस्वी सम्पूर्ण समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित थे। किसी ने भी ९ फरवरी में वसन्त पंचमी नहीं मानी थी। **महाशिवरात्रि-** भी कुछेक पंचांगों में स्मार्त-वैष्णव भेद से दो दिन ४ व ५ मार्च २०१९ को लिख दी गई थी। इसे भी किसी ने स्वीकार नहीं किया था। हमने अपने दोनों पंचांगों में महाशिवरात्रिपर्व को ४ मार्च सोमवार में मनाने के लिए लिखा था, जिसे समस्त भारतवर्ष के विद्वानों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था। हमें अपार खुशी है कि श्री राजधानी पंचांग के शास्त्रीय निर्णय को सभी स्वीकार कर लेते हैं। उत्तरोत्तर सम्मान वृद्धि कर कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। पंचांगकर्त्ता को आशीर्वाद देते हैं। प्रोत्साहित भी करते हैं। मैं उन सभी हार्दिक आभारी हूँ।

विदुषामनुचरः

पं. प्रेमपाल कौशिक ज्यो. १२-३-२०१९

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र संवत् 2077 सन् 2020-21

अचिन्त्या व्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥
नमामि यामिनीनाथलेखालङ्कृतकुन्तलम्। भवानीं भवसन्तापनिर्वापणसुधानदीम्॥

* राजा बुध मन्त्री चन्द्र के राज्यकाल में इस वर्ष सर्वत्र शान्ति के प्रयास किये जायेंगे। अन्तरिक्ष अनुसंधान के संदर्भ में भारत कीर्तिमान स्थापित करेगा। इसमें वैज्ञानिक महिलावर्ग की भूमिका अहम रहेगी। 'चन्दामामा दूर के भरी छबरिया फूल के' सम्भवतः निकट भविष्य में कभी यह मुहावरा उलटा सिद्धि हो जाए तो आश्चर्य नहीं।

* युद्धप्रिय मंगल धान्येश होने से धनोन्मत्त देशों में आतंकवाद को बढ़ावा देगा। युद्धोत्पाती अस्त्र-शस्त्र, गोला बारूद का ढ़ेर ऊँचा होता जायेगा। अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी पर उपद्रव सम्भव है। आतंकवादी षड्यन्त्र रचेंगे। कोई सिरफिरा कहीं भी राष्ट्रविरोधी कार्यवाही कर सकता है। आतंकित विषवेल सुरसा मुख के समान फैलती जायेगी, जिसके फैलाव में कुछ देश भरपूर प्रयत्न करेंगे।

* सूर्य को मेघेश, फलेश एवं दुर्गेश होने का गौरव प्राप्त हुआ है। इस वर्ष समयोचित वर्षा का अभाव रहेगा। कहीं अतिवृष्टि, बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन, दिग्दाह, ज्वालामुखी विस्फोट तो कहीं आंधी, तूफान, बवंडर जानलेवा सिद्धि होगा। कहीं मकान ध्वस्त होंगे, पहाड़ दरकेंगे, तो कहीं जमीन धसकने से भारी क्षति सम्भव है।

* गुरु शनि व सूर्य के साथ ग्रहसंयोग असम्भावी कुघटनाचक्र, रेल-वायुयान अन्यान्य वाहनक्षति, राजनीति में विघटन, दलगत नीति में उठापटक, एक-दो दलों की मान्यता रद्द, चुनाव नीति में बदलाव तथा नवीन भारत के स्वप्न को साकार करेगा। धार्मिकता का बोलबाला होगा। मकर का शनि अधर्मियों को सबक सिखायेगा। नये आधुनिक वाहनों का संचार करायेगा।

* 'षड्वै ग्रहाः ध्वन्ति समस्त भूपान्' फरवरी २०२१ में यह योग राष्ट्रनायकों में विक्षेप का कारण बनेगा। अगर युद्ध की चिंगारी छिटक गई तो फिर खैर नहीं। यही योग १९६२ में बना था। कर्क-मकर दोनों राशियाँ पापग्रहों से विद्ध थीं, जैसा कि इस वर्ष हो रहा है। ब्रह्माण्ड नायक परमात्मा, उनकी योगमाया से अनुनय विनय है कि राष्ट्रनायकों को सद्बुद्धि प्रदान करें।

वर्ष प्रवेश लग्नम्

श्री सम्वत् २०७७ का शुभारम्भ २४ मार्च २०२० मंगलवार दिन में १४ बजकर ५७ मिनट पर उदित कर्क लग्न से हो रहा है। वर्ष प्रवेश लग्न तो राजनीति की है ही, लग्नेश चन्द्रमा भाग्यभवन में सूर्य के साथ अस्त है और पापग्रह शनि से दृष्ट है। शुभग्रह गुरु का प्रभाव तो है, लेकिन न के बराबर। आकाशीय कौंसिल के चुनाव में चन्द्रमा मन्त्री और बुध को राजा का पद मिला है। देखा जाए तो दोनों ही ग्रह निर्बल हैं। भारत की प्रभाव राशि कर्क-मकर में शनि मंगल का विध्वंशक योग तथा वर्षारम्भ में बनने वाला कालसर्पयोग अत्यन्त नेष्ट फलदायक है। इस वर्ष राजा बुध, मन्त्री चन्द्र का फल अच्छा है। उससे कहीं अधिक खराब फल मकर में २९ मार्च से शुरु होने वाले तीन ग्रह संयोग (मंगल+गुरु+शनि) का है **'तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा'** यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है। भारत में कुछ काम अच्छे होंगे तो कुछ बिगड़ भी सकते हैं। राजनीति के झन्झावात में नेताओं में जमकर मारपीट हो सकती है, सत्तासीन पार्टी को हटाने का भरपूर प्रयास करेंगे, लेकिन सभी निष्फल होंगे। अकाल जैसे खराब हालात से गुजरना पड़ सकता है।

मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोर दारुणम्। विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥
गुरु शनि एक राशि में चलते वक्राचार। कष्ट प्रजा अति पावती, मचती हा! हा !!कार॥

इस वर्ष मई आदि मासों में चौतरफा जमकर हो-हल्ला मचेगा। प्राकृतिक उपद्रव होंगे। राजनैतिक दल एक-दूसरे के प्रति घिनौनी हरकतें करेंगे। दुष्प्रचार में लगे रहेंगे। सत्तासीन पार्टी की मजबूती का कारण बनेंगे।

देव गुरु के सामने, जब चलते शुक्राचार। धर्मविरोधी मर मिटें, करते पापाचार॥

सम्वत् २०७७ सन् २०२०-२१ में मकर का शनि किसी तामसवृत्ति वाले देश-प्रदेश, समाज, जनसमुदाय एवं विशेष वर्ग को नष्ट प्रायः कर सकता है, जैसाकि पूर्वाचार्यों ने लिखा है-

मकरे च यदासौरि दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्। कामार्ताश्च विनश्यन्ति ह्यन्यदेशे शुभं भवेत्॥

राजनीति में उठा-पटक, उतार-चढ़ाव के चलते दो वर्ग विशेषों में दंगा फसाद होंगे। वर्ष का अधिकांश समय क्लेश, संशय, प्रमाद, भयविषाद आतंकित उत्पात परिपूर्ण बीतेगा। वर्ष के प्रथम दिन बनने वाले कालसर्प योग का फल कुछ ऐसा ही लिखा है।

राहु केतु मध्ये ग्रहाः सप्तो विघ्नदा कालसर्प संज्ञकाः।
सुतत्रासादि सकलदोषाः रोगेन् प्रवासे मरणं ध्रुवम्॥

वर्ष लग्न कर्क में पूर्व में सुख, पश्चिमोत्तर में दुःख तथा पश्चिमी देश-प्रदेशों में अकाल जैसी असामान्य विषम परिस्थितियाँ दुःखदाई बनती हैं। कहीं युद्धोत्पात हुआ करता है।

सौरजगत लग्नम्

१३ अप्रैल २०२० सोमवार की रात्रि में घं.२०मि.३० बजे भगवान् सूर्यदेव अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में प्रवेश करेंगे। तत्कालीन तुला लग्न की कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। इस वर्ष वर्षप्रवेश लग्न और सौर जगत् लग्न दोनों कुण्डलियों में बैठे ग्रह लगभग एक जैसे ही हैं। लग्नों में अन्तर केवल अंक मात्र का है, कर्क और तुला का फल '**वर्षप्रबोध**' में लिखा है-

तुला लग्ने मध्यदेशे छत्रभंगश्च विग्रहः।
धान्यस्य विक्रयः प्राच्यांछत्रभंगमुपद्रवः॥
दुर्भिक्षं बहलो वायुः स्वल्पमेघप्रवर्षणम्।
पश्चिमायां महायुद्धं दृंष्ट्राभय महर्घता॥

जिस वर्ष सौर जगत लग्न तुला हो, उस वर्ष मध्यदेश में बहुत भारी राजविग्रह होता है। सत्ता की छीना झपटी में प्रादेशिक सरकार संकटग्रस्त(राज्यच्युत) हो जाती है। यही हाल पूर्वोत्तर में होता है। अकाल जैसे नाजुक हालातों में जनता दुःख पाती है। ग्रीष्मऋतु में वायु तीव्रवेग से बहती है। आंधी-तूफान, बवंडर से क्षति होती है। पश्चिम के किन्हीं देश तथा प्रदेशों में भयंकर संग्राम छिड़ जाता है। असंख्यजीव काल कलवित हो जाते हैं। भूख-प्यास से त्रसित जनता भागती फिरती है। कोई किसी को मांगने पर भी सहयोग नहीं देता। चौतरफा हा! हा!! कार मचता है-

गुरु शनी एक राशि में, चलते वक्राचार।
कष्ट प्रजा अति पावती, मचती हा! हा!! कार॥

इस्लामिक वर्ष १४४१ की शुरुआत १ सितम्बर २०१९ सायंकाल १८।४० **बजे कुम्भ** लग्न से हो रही है। लग्न का स्वामी शनि केतु के साथ विकल है। भाग्येश शुक्र चार ग्रह संयोग में परेशान है। इस वर्ष शनि की दृष्टि उत्तर में रहेगी। इस्लामिक धर्म का रक्षक शुक्र और शनि दोनों ही कालसर्प योग से पीड़ित हैं। इससे स्पष्ट है कि

मुस्लिम राष्ट्र

पश्चिम तथा उत्तर के सभी देशों में अशान्ति व्याप्त रहेगी। खाड़ी के देशों में अन्तरिक्ष युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा। शनि एवं शुक्र दोनों ग्रह खनिज पदार्थ, तेल, पानी, मशीनरी, हथियार, गोलाबारूद, जलयान, वायुयान, उद्योगधन्धों पर अधिकार रखते हैं। इन सबकी छीना झपटी करवायेंगे। अगर कहीं युद्ध छिड़ जाता है तब तो पानी तेल के लिए संघर्ष होगा। इसमें अमेरिका ब्रिटेन तथा रूस, चीन अहम भूमिका निभायेंगे। एकाध छोटे देश की सम्प्रभुता विनष्ट प्रायः हो सकती है।

वार्षिक ग्रहचाल का प्रभाव वर्षा, बाढ़, रोगोत्पात

अप्रैल २०२० की ग्रहचाल मार्कीट रुख में नरमी का संकेत है। मकर में नीच का गुरु जून तक राजविग्रह, आन्तरिक कलह का कारण बनेगा। कहीं भी झगड़े-झमेले हो सकते हैं- **मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोर दारुणम्। विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥** शान्ति के प्रयत्न गौण बनकर रह जायेंगे। सरकारी तौर पर सख्त कदम उठाये जा सकते हैं। आतंकवादी कुकृत्य जानलेवा हो सकते हैं। बाजार भाव बढ़ेंगे, कही प्रचण्ड गर्मी जल के अभाव में त्राहि-त्राहि मचेगी।

मई २०२० में गर्मी अत्यन्त पड़ेगी, महंगाई बढ़ेगी। भारत की प्रभाव राशि में गुरु शनि वक्री होकर तहलका मचवायेंगे। **गुरु शनी एक राशि में चलते वक्राचार। कष्ट प्रजा अति पावती, मचती हा! हा!! कार॥** मास में पांच शुक्रवार होने से शान्ति वार्ता होगी। सरकार राहत कार्यों को बढ़ावा देगी। मई में बुधोदय अच्छी वर्षा कर सकता है। मासान्ते शुक्रास्त आंधी-तूफान बवंडर का कारण बन सकता है। पश्चिम के किन्हीं देशों में भारी क्षति सम्भव है। सभी धातु, मशीनरी, पशुधन, वस्त्र, श्रृंगार सामग्री तेज होगी।

जून २०२० में राहु के साथ बनने वाला चतुर्ग्रही योग अशान्ति, जीवहानि, भूकम्प, भूस्खलन, युद्ध, आतंकित कुकृत्य विनाश का कारण बनेगा- **एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वां, रुधिरेण जलेन वा॥** मासान्त में कहीं मानसून कहर बरपायेगा, कहीं वर्षा गतिरोध प्रचण्ड गर्मी, आंधी-तूफान, चक्रवात, ज्वालामुखी विस्फोट, तो कहीं युद्ध, कहीं असाध्य रोग त्रस्त करेगा। राजनेता अपनी-अपनी चिन्ता में लगे रहेंगे।

जुलाई २०२० में वक्री गुरु केतु के साथ धनु में चलेगा- **धनु राशि गतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्। धनक्षयस्तदा लोके चौराद्राजापि रोषिताः॥** राष्ट्रीय (धन) सम्पदा का क्षरण करायेगा। विश्व में आतंकी असामाजिकतत्त्व, दुराचारी, निरंकुश घूमते, झीना-झपटी करते फिरेंगे। सरकार धार्मिक महोत्सव व खेलों को प्रोत्साहित करेगी। जुलाई के उत्तरार्ध में कहीं अतिवृष्टि, बाढ़ तो कहीं जल प्रवाह, बांध टूटना भारी क्षति कर सकता है।

अगस्त २०२० में गुरु शुक्र आमने-सामने चलकर दो विरोधी वर्गों में जमकर मारपीट करायेंगे। **देवगुरु के सामने जब चलते शुक्राचार। धर्मविरोधी मर मिटें करते पापाचार॥** धार्मिक विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है। मास के उत्तरार्ध में प्रादेशिक सरकार बदल सकती है। भावों में भारी घट-बढ़ सम्भव है। मौसम की प्रतिकूलता यान-खांन कुघटना, भूकम्प, भूस्खलन, दिग्दाह से क्षति कर सकती है। चोर,लफंगे, असमाजिकतत्त्व आतंक मचायेंगे। कश्मीर का मामला गरमायेगा। देश-विरोधी आवाजें बुलन्द हो सकती है।

सितम्बर २०२० की ग्रहचाल से पता चलता है कि भावों में रद्दोबदल के बाद स्थिर लाइन बनेगी। शनि शुक्र का प्रतियोग सीमा विवाद तो करायेगा, परन्तु शान्ति परिचर्चा सफल रहेगी। कश्मीर के संदर्भ में दूसरे मध्यस्थता की पेशकश करेंगे। कामयाबी मिलना सम्भव नहीं। जिस वर्ष दो आश्विन होते हैं, उस वर्ष जलाधिक्य, बाढ़ का तांडव तबाही मचाता है। वाहन टकराते हैं। मेघाडम्बर भूकम्प, झन्झावात दुर्दिन होने से जनता कष्ट पाती है। **मकरे च यदा सौरि दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।** असामान्य विषम परिस्थिति से गुजरना पड़ सकता है।

अक्टूबर २०२० में पांच शुक्रवार शुभ हैं- **शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** प्रजा में वृद्धि, सौहार्दपूर्ण भावना का उदय, भावों में अभिवृद्धि होगी।

शान्ति परिचर्चा सफल होगी। ता.२३ कन्या का शुक्र मौसम की प्रतिकूलता खेती में क्षति बाजार रुख गरम रहेगा। इस मास साम्प्रदायिक झगड़े-झमेले होते रहेंगे। पश्चिम के किन्हीं देशों में युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा। कश्मीर समस्या का निराकरण नहीं हो पायेगा। ग्रहों के त्रिकोणात्मक योग अन्तरिक्ष में असम्भावी घटनाचक्र आतंकी विद्रोह को जन्म दे सकते हैं।

नवम्बर २०२० महालक्ष्मीपूजन चतुर्दशी शनिवार में सर्वत्र भयातंक को बढाने वाला है- **कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि भौमयुता वापि सर्वलोक भयावहा॥** त्यौहारों के समय सुरक्षा के प्रबन्ध सुदृढ़ कर लेने चाहिए। रूस, चीन, जापान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान की विचारधारा में परिवर्तन होगा। उग्र विचारक देश आतंकवाद को बढ़ावा देने की साजिश रच कर अन्यान्य देशों में अशान्ति फैलाने का प्रयास करेंगे। मीन का मंगल बाजार भावों में तेजी करेगा। मध्य मास से मौसम खराब चलेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात के कारण धीरे-धीरे शीत का प्रकोप बढ़ता जायेगा।

दिसम्बर २०२० भारत की प्रभावराशि मकर में पुनः बनने वाला गुरु शनि का संयुक्त योग पृथ्वी पर चारों तरफ हो हल्ला मचवायेगा- **वक्रस्थिते देवगुरौ दुर्भिक्षं घोर दारुणम्। पूर्वस्यां दक्षिणे चैव राजविग्रहम् च॥** इस योग के चलते कहीं भी स्थिति चिन्ताजनक बन सकती है। असत प्रवृत्ति के राष्ट्रनायक कहीं भी युद्ध जैसे हालात पैदा कर सकते हैं। बाजार का रुख नरम रहेगा। कुछ वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे तो कुछ के घट भी सकते हैं।

जनवरी २०२१ में पांच गुरुवार कहीं भारी विद्रोह को बढ़ावा दे सकते हैं। **आगे पीछे बहुत ग्रह, रवि के शनी अगार। राजनीति सह द्विन्द से, होवे बहुत विगार॥** राजनीति के पटेबाज समाज विरोधी वक्तव्य देंगे। दो वर्ग विशेष में झगडे-झमेले करायेंगे। असामाजिक तत्त्व कुकृत्यों में लगे रहेंगे। पश्चिम के किन्हीं देशों में युद्धोत्पाती षड्यन्त्र रचा जायेगा। पड़ौसी देश कुचक्र रचना कर सकता है। कहीं प्राकृतिक प्रकोप जानलेवा होगा। भारी हिमपात, कोहरा, दुर्दिन होने से यातायात बाधित होगा। उत्तरी सम्भागों में **ठिठुरन बढ़ेगी। किंवा धूप के दर्शन दुर्लभ हो सकते हैं।**

फरवरी २०२१ के पूर्वार्ध मौनी मावस स्नान मेला के अवसर पर **'षट्वैग्रहा ध्वन्ति भूपान्'** षट्ग्रही योग समस्त राष्ट्रनायकों में क्षोभ पैदा करेगा, कहीं भी युद्ध के लिये तत्पर हो सकते हैं। यह योग सन् १९६२ तथा १९७१ में बना था, ग्रहों के त्रिकोणात्मक योग बन रहे थे। चीन और पाकिस्तान से युद्ध के समय भी कुछ ऐसे ही विचित्र योग बन रहे थे- **ग्रहा सभी त्रेकादस संयोग बने अब आय। युद्ध कहीं पर होयगा, कालबली भरमाय॥** अतः देश के सुरक्षा प्रहरियों को सचेत रहना चाहिये। मौसम की गड़बड़ी, भावों में तेजी का चक्र, यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है।

मार्च २०२१ वृष राशि में राहु+मंगल का अंगारक योग अन्तरिक्ष उपद्रव, मेघगर्जन, आंधी-तूफान, बवंडर, फसलों में क्षति कर सकता है- **राहु रंगारकश्चैक राशि ऋक्ष गतो तथा। महाभयं च सस्यानां न व वृष्टिः प्रजायते॥** मार्च एवं अप्रैल के पहले सप्ताह चालू बाजारभाव पड़े रह सकते हैं। प्रभावी राजनेता संसार से विदा हो सकता है। किसी प्रादेशिक सरकार को समय सानुकूल नहीं। कश्मीर का मुद्दा गरमायेगा। आतंकवादी नया गुल खिला सकते हैं। पर्वतीय प्रदेशों में मासान्ते हिमपात की सम्भावना तो किंवा अग्निदाह विस्फोट की चिंगारी त्रस्त कर सकती है।

राजनीतिक पार्टियाँऔर देश के हालात

भारतीय जनता पार्टी(सत्तासीन प्रमुख दल)- संवत् २०७७ (सन् २०२०-२१) में पूर्ववत् सभी राज्यों में प्रभावी रहेगी। माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रमोदी जी की जन्म तिथि १७-९-१९५० रविवार दिन में ११ बजे मेहसाणा गुजरात में जन्म हुआ, वृश्चिक लग्न में।

आम चुनाव २०१९ में भा.ज.पा. पूर्ण बहुमत जीतकर सत्ता में आई है, जिसे ३०३ सीटें मिली हैं। वर्त्तमान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रमोदी जी ने दूसरी बार ३० मई २०१९ गुरुवार सायंकाल ७ बजे वृश्चिक लग्न में प्रधान मन्त्री पद पर शपथ ग्रहण करके देश की बागडोर संभाली है। इसी वृश्चिक लग्न में प्रधानमन्त्री जी का जन्म हुआ है। दो वर्ष इनकी जन्मकुण्डली छाप चुके हैं, अब अधिक कुछ न लिखने की आवश्यकता समझी जा रही है। यह पहले लिख चुके हैं कि मोदी जी की नीति **'सर्वजन हितार्थ स्वान्तः सुखाय'** सिद्धि हुई। विदेश कूटनीति में सफलता प्राप्त की। मीन का राहु मोदी जी की जन्मकुण्डली के पंचमभाव तार्किक स्थान पर है सो यह बौद्धिक सम्पदा परित्वेन तर्क-वितर्क को बढ़ाता रहता है, तुरन्त परिस्थिति के अनुसार समयोचित निर्णय लेने की क्षमता पैदा करता रहता है।

शपथग्रहण कुण्डली

प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी (द्वितीय) पांच वार्षिक राज्यकाल लग्न वृश्चिक स्थिर संज्ञक हैं, जिसमें ज्ञान का नेतृत्व करने वाला गुरु धनेश होकर मित्रक्षेत्री बैठा है। लग्नेश मंगल उच्च के राहु संग मिलकर आठवें भाव में पूर्व बली है, क्योंकि पुरुषार्थ रक्षक सुख देने वाले ग्रह शनि के प्रभाव में है। मनाधिपति चन्द्रमा मित्रक्षेत्री तार्किक स्थान (पंचम) में बलवान है। ग्रह चाल देखने से पता चलता है कि इन्हें कोई भी ताकत पदच्युत करने में सक्षम नहीं हो पायेगी। विंशोत्तरी मतेन ४ दिसम्बर २०२१ तक चन्द्रमा की महादशा चलेगी। आगे सात वर्ष की समयावधि मंगल की महादशा भी इनके अनुकूल रहेगी। इससे संकेत मिलता है कि तृतीय बार भी चुनावकाल इनके अनुकूल रहेगा, आगे हरिइच्छा। प्रधानमन्त्री के द्वारा कोई इतिहास रचना में संयोए जाने वाला कार्य भी सम्भव है। **तलाक-तलाक-तलाक** पर तो फैसला हो ही चुका है, इस लेख लिखने के बाद अब और क्या होता है यह देखने का विषय है।

बहुजन समाजवादी पार्टी- की राशि वृष बनती है और प्रभावकारी राशि कुम्भ मानी गई है। पार्टी प्रमुख सुप्रीमो सुश्री मायावती जी की राशि सिंह है। वृष का स्वामी शुक्र, कुम्भ का स्वामी शनि और सिंह का स्वामी सूर्य है। ये तीनों ग्रह आपस में विरोधी हैं। परस्पर अच्छे सम्बन्ध नहीं रखते। संवत्२०७६ में आकाशीय कौंसिल के चुनाव में राजा बुध तो मन्त्री सूर्य को बनाया गया था। शनि सूर्य एक दूसरे के कट्टर विरोधी हैं। सन् २०१९ के आम चुनाव में गठजोड़ को बल तो मिलेगा, परन्तु पूर्ण सफलता संदिग्ध रहेगी। यह बात आम चुनाव से पूर्व ही **श्रीराजधानी पंचांग** में छाप दी गई थी। ठीक हुआ भी वैसा ही है। पार्टीबेस पर समाजवादी पार्टी प्रमुख (अध्यक्ष) श्री अखिलेश यादव जी के साथ मिलकर चलना सुश्री मायावती जी को फायदेमंद तो अखिलेश जी को महंगा पड़ा। बुआ-भतीजे की जोड़ी तो बनी लेकिन चल नहीं पाई, क्योंकि पार्टीबेस पर नीतियों में परस्पर टकराव मैं-मेरे की भावना से ओतप्रोत रहने के कारण मुंह की खाई। वर्त्तमान समय में सर्वहारा वर्ग को जो भी राजनीतिक दल एक साथ लेकर चलने की कोशिश करेगा, वह निश्चित सफल होगा।

समाजवादी पार्टी- के जन्मदाता श्री मुलायमसिंह यादव जी की राशि सिंह है। वर्तमान में सर्वेसर्वा पार्टी अध्यक्ष श्री अखिलेश यादवजी की राशि मेष है। इन राशियों में परस्पर विरोधाभास है, क्योंकि सिंह का स्वामी सूर्य, मेष का अधिपति मंगल, कुम्भ का नेतृत्वकर्त्ता शनि है। आम चुनाव सन् २०१९ में बहुजन समाजवादी पार्टी अध्यक्ष सुश्री मायावती से गठबन्धन करने पर फायदा न होकर उल्टे नुकसान उठाना पड़ा था। संवत् २०७७ सन्२०२० में राजा बुध मन्त्री चन्द्र अच्छा फल नहीं-दे पायेंगे। श्री अखिलेश यादव जी को स्वयं की समझ का इस्तेमाल करते हुए पार्टीबेस पर काम करना चाहिए। सर्वहारा वर्ग विकास के संदर्भ में सोचना चाहिए। एक वर्गविशेष की तुष्टीकरण की नीति आगे चलकर घातक बन सकती है। इस वर्ष कुछ सहयोगी पार्टी छोड़कर भी जा सकते हैं। पार्टी भीतरघात महत्वाकांक्षी अपस्वार्थी अवसरवादी नेताओं से बचे रहना चाहिए। अन्ततोगत्वा विकास को बल मिलेगा। वैशाखी परित्वेन बल की आशा त्यागकर चलने में बड़ा फायदा होगा। पांच वर्ष आगे तक की ग्रहचाल आपके लिए शुभता का संकेत करती है।

राष्ट्रीय जनता दल- की प्रभाव राशि तुला है। स्वामी शुक्र है, जिसे आगामी संवत्सर २०७७ के चुनाव में सफलता नहीं मिली है, सो यह सन् २०२० में पार्टी के लिए शुभ संकेत नहीं कहा जा सकता। इस दल के नेतृत्व करने वाले पूर्व रेलमन्त्री श्री लालूप्रसाद यादवजी की राशि मेष है। स्वामी मंगल पापग्रह संयोग में शनि से दृष्ट विकल चलेगा। सो यह परेशानी का कारण तो बनेगा ही, पार्टी भीतरघात से मानहानि भी करा सकता है। वर्ष २०२० तथा २०२१ की ग्रहचाल घर-परिवार, राजनीति एवं सामाजिक झगड़े-झमेले, रोगोपद्रव आदि व्याधि में उलझाती रहेगी। रा.ज.दल को किसी दूसरे दल के साथ समझौता करके चलने में लाभ होगा ऐसा कुछ भी नहीं है। इन्हें दलगत राजनीति जातिवाद की संगोष्ठी चाल एवं वर्ग विशेष तुष्टीकरण की विचारधारा का परित्याग करके चलने में फायदा रहेगा। रा.ज.दल के नायक **सबका विकास सबका साथ** मानकर चलेंगे, भीतरघाती घुसपैठियों से बचे रहेंगे तब तो पुनः वर्चस्व कायम करने में कामयाब हो जायेंगे।

जनता दल यू- की राशि मकर है। दल के प्रमुख नेता वर्त्तमान में बिहार के मुख्यमन्त्री श्री नितीशकुमार जी की राशि वृश्चिक है। सन् २०२० तथा २०२१ की ग्रहचाल इनके अनुकूल रहे, इसमें सन्देह है, क्योंकि वृश्चिक राशि का स्वामी मंगल लम्बे समय तक पापग्रह शनि के संयोग में चलेगा, तब शुभ फल प्रदान करने में अक्षम कहा जायेगा। जनता दल यू की राशि मकर है, जिसमें राशीश शनि स्वगृही भ्रमण करता शनि के हृदय के बीच की ढैय्या चिन्ता व्यथा पार्टीबेस पर बिखराव कार्यकर्त्ताओं में अकारण का कारण बनेगी। बिहार में राजनीतिक बदलाव तो आयेगा ही। श्री नितीशकुमार ही को सचेत रहते हुए सर्वहारा वर्ग को साथ लेकर चलना लाभप्रद रहेगा, अन्यथा २०२० की ग्रहचाल बहुत बड़े बदलाव का कारण बनेगी। आमराय से हटकर चलना इस दल को गच्चा देने वाला साबित होगा।

तृणमूल कांग्रेस- की राशि तुला है। पार्टी की कर्णधार प.बंगाल की वर्तमान मुख्यमन्त्री सुश्री ममता बनर्जी की राशि सिंह है। सन् २०२० में मकर राशि में गतिशील ग्रह इनके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। राजनीति के चक्रव्यूह में इन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ सकता है। इन्हीं की पार्टी के पदाधिकारी घुसपैठिये मुंह पर ममताजी की प्रसंशा करेंगे, अन्दरूनी भीतरघात नीति का अनुसरण करेंगे। तृणमूल कांग्रेस अध्यक्ष को अपने तीक्ष्ण (सशक्त स्वभाव) में परिवर्तन करना पड़ेगा। सर्वहारा वर्ग को साथ लेकर चलने वाली नीति अपनानी होगी, अन्यथा बहुत बड़े परिवर्तन की मार झेलनी पड़ेगी। कांग्रेस की एकांकी विचारधारा किसी एक वर्गविशेष तुष्टीकरण की जो नीति रही है, उसे आपको यानि ममतादी को त्यागना ही पड़ेगा। अग्रिम समय में होने वाले चुनाव में गठजोड़ करके चलने का मोह छोड़ना ही इनके लिए बेहतर रहेगा।

अन्नाद्रमुक- पार्टी की राशि मेष है। श्री पलानी स्वामी मु.मं. तमिलनाडू की राशि कन्या है। सन् २०२० की ग्रहचाल इस पार्टी के लिए अच्छी रहेगी। इन्हें पार्टी के अन्दरूनी लड़ाई खींचतान से बचे रहना चाहिए। यह वर्ष उलझनपूर्ण उठा-पटक के चलते परेशानी में बीतेगा। सरकारी तौर पर बड़े बदलाव के लिए तैय्यार रहना चाहिए। केन्द्र सरकार से समझौता करके चलना पार्टी के अधिनायकों को फायदा पहुँचायेगा।

आम आदमी पार्टी- के सर्वेसर्वा (वर्त्तमान में दिल्ली के मुख्यमंत्री) श्री अरविन्द केजरीवाल जी और पार्टी नाम दोनों की राशि मेष है। उपमुख्यमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया की राशि सिंह है। दोनों राशियाँ अग्नितत्त्व तेजमय तामसवृत्ति उग्र स्वभाव की हैं। सन् २०२० की ग्रहचाल देखने से पता चलता है कि मकर का शनि त्रस्त करेगा। राशीश सूर्य भौम भी शुभता प्रदान नहीं कर पायेंगे। स्वास्थ्यमन्त्री श्री सतेन्द्रजैन जी की राशि कुम्भ है, जिनकी राशि का स्वामी शनि मकर में चलते हुए इन्हें और ख्याति दिलवा सकता है। पार्टीस्तर पर पदाधिकारियों को नकारात्मक सोच एवं एक वर्ग विशेष के प्रति अन्धाप्रेम (तुष्टीकरण की नीति) छोड़कर चलने में लाभ होगा। राजनीति के समीकरण तेजी से बदल रहे हैं और भविष्य में बदलने की पूरी सम्भावना है। भारतीय राजनीति में वह सफल हो पायेगा जो साफ सुथरे विचारवाला होगा। सर्वहारा वर्गविशेष को साथ लेकर चलने में विश्वास कायम कर पायेगा, उसी की विजय पताका फहरायेगी।

कांग्रेस आई- की राशि मिथुन है। सबसे पुरानी पार्टी की वर्त्तमान समय में सर्वेसर्वा एकमात्र सुश्री सोनियागांधी जी की राशि कुम्भ है। श्रीमति प्रियंकागांधी वाड्रा की राशि कन्या है। मिथुन एवं कन्या का स्वामी बुध संवत् २०७७ सन् २०२०-२१ के लिए आकाशीय कौंसिल के चुनाव में बुध राजा बनाया गया है। सो इसे श्रीमति प्रियंका जी के लिए शुभ शकुन कहा जा सकता है। इन्हें पार्टीस्तर पर अधिक महत्त्व दिया जायेगा। प्रियंका का मान-सम्मान भी अधिक होगा। श्रीमति सोनियागांधी जी के लिए सन् २०२० की ग्रहचाल अन्तर्द्विन्द से भरपूर रहेगी। श्री राहुलगांधी जी ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे ही दिया है। विगत वर्ष श्रीराजधानी पंचांग में श्री राहुलजी की जन्म कुण्डली के साथ पृ.१२९-१३० पर जो कुछ लिखा था लगभग वह सब सत्य घटित हुआ, पाठकों से कोई चीज छिपी नहीं है। इस लेख लिखने की अन्तिम ता.३१ जुलाई २०१९ तक आई आंग्रेस के अध्यक्ष पद पर किसी की नियुक्ति नहीं हो पाई है। पुत्र मोह अन्धानुकरण की तलवार लटकी हुई है। ग्रहचाल आगे क्या कराती है यह देखने का विषय है। परन्तु ग्रहयोग पूर्व अध्यक्ष की पुनः प्रतिष्ठा की ओर संकेत कर रहे हैं। आगे दो साल तक का समय ग्रहों के अनुसार श्री सोनियाजी के लिए विशेष उलझनपूर्ण रहेगा। स्वास्थ्य पर भी असर पड़ सकता है। पार्टीबेस पर कांग्रेस आई पदाधिकारियों को समय की नजाकत भांपते हुए वैचारिक परिवर्तन करने के लिए गम्भीरता पूर्वक सोचने के लिए विवश होना पड़ेगा। ध्यान रहे-

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुःखभाग भवेत्॥

संपादक-

पं. प्रेमपाल कौशिक ज्यो. दि.३१-७-२०१९

श्री ज्योतिष विद्या से

ज्योतिष प्रकृति की समय सारणी का अध्ययन फल है। प्रकृति आकाशीय ग्रह, नक्षत्र, तारा पिण्डों की तथा प्रकृति पारिवारिक और सामाजिक परिवेश की ओर प्रकृति जातक के संचित कर्मों के कार्य कार्य प्रणाली की। यह सब मिलकर फलादेश ज्योतिष होती है।

जब हम पृथ्वी पर खड़े होकर आकाश की ओर देखते हैं तो चन्द्रमास की पूर्णिमा को दो तेज बिन्दु दृष्टि में आते हैं। पूर्वीक्षितिज पर चन्द्रमा जो दक्षिणायन का श्रीगणेश है तथा पश्चिमी क्षितिज पर सूर्य उत्तरायण का श्रीगणेश है। चन्द्रमा कर्क, चर, जलतत्त्व राशि का प्रतिनिधित्व करता है और सूर्य सिंह, स्थिर, अग्नितत्त्व राशि का। अब कर्क से पीछे मिथुन, वृष, मेष, मीन, कुम्भ एक क्रम, दूसरे क्रम में सूर्य की सिंह से आगे कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, इस तरह हर ग्रह की राशि एक क्रम से ग्रह के सामने हैं। षट्वर्ग देखें-

सूर्य	चन्द्रमा	ग्रह
सिंह	कर्क	
कन्या	मिथुन	बुध
तुला	वृष	शुक्र
वृश्चिक	मेष	मंगल
धनु	मीन	गुरु
मकर	कुम्भ	शनि

मैं आपको स्पष्ट करना चाहता हूँ कि ज्योतिष त्रिकोण पर आधारित है। हमारे शरीर में भी चार त्रिकोण और चार वर्ग हैं। एक त्रिकोण केन्द्र में शामिल है, इसलिए मुख्यत: तीन त्रिकोण और चार केन्द्र शरीर और जातक की जन्मांग कुण्डली में समाहित हैं। इन्हें शुभ भाव माना जाता है।

१. लग्न, पंचम, नवम एक त्रिकोण समूह
२. वृष, कन्या, और मकर दूसरा त्रिकोण
३. मिथुन, तुला और कुम्भ तीसरा त्रिकोण
४. कर्क, वृश्चिक और मीन चौथा त्रिकोण समूह है। आगे लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम, ये केन्द्र भाव हैं। इसी प्रकार केन्द्र भी चार हैं। विवाह संस्कार में ७वें भाव केन्द्र गणित के डी. एन. ए. में नहीं है।

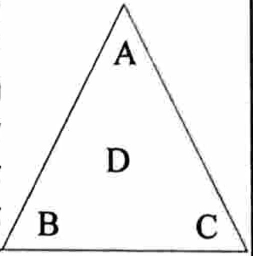

परमपूज्य महर्षि पाराशरजी ने अपने शाश्वत् ग्रन्थ 'वृहत पाराशर होराशास्त्र' में दूसरे भाव को मारक की संज्ञा दी है। इसका अर्थ यह है कि १. लग्न से दूसरा भाव मारक, २. एक त्रिकोण से दूसरा त्रिकोण भाव मारक, ३. एक केन्द्र से दूसरा केन्द्र भाव मारक सिद्धि होता है। चूंकि जो जातक आत्महत्या करता है, तो यहाँ लग्न स्वयं मारक हुई, अर्थात् उस प्रभावी काल पर द्वादश भाव या दशम केन्द्र भाव या नवम त्रिकोण भाव जागृत अवस्था में था। इसी कारण दशान्तर दशावश व चन्द्रमा की गोचर में अनुपस्थिति द्वारा जातक ने इस मोड़ पर आकर अपनी जीवनी की जीवन प्रक्रिया को विराम दे दिया।

आगे थोड़ा सा संक्षिप्त प्रकाश में बिल्कुल नूतन प्रकरण पर रखने का प्रयास करता हूँ। **प्रकरण**

त्रिकोण की हर भुजा पर नौ नक्षत्र और चार राशियाँ आती हैं। इस प्रकार पूरे चक्र में २७ नक्षत्र और १२ राशियाँ (संक्रांति) अंकित हैं। त्रिकोण के तीनों कोणों का योग १८० अंश यानि भचक्र का अर्ध भाग हुआ। **त्रिकोण** ज्योतिष में मंगल ग्रह का चिह्न है, जो स्वास्थ्य मंत्रालय के परिवार नियोजन विभाग में लाल त्रिकोण के नाम से पहचाना जाता है। इसी मंगल ग्रह के तीनों नक्षत्र तीनों भुजाओं के मध्य में आते हैं और दो-दो राशियों में समान बंट जाते हैं। जिसमें उसका आधा भाग हर वर्ग की राशि के पृथ्वी तत्त्व में आता है और मंगल स्वयं अग्नि तत्त्व का द्योतक है। मंगल ग्रह वृष-मिथुन, कन्या-तुला और मकर-कुम्भ राशियों को अपने नक्षत्रों का बराबर-बराबर भाग का प्रसाद देता है।

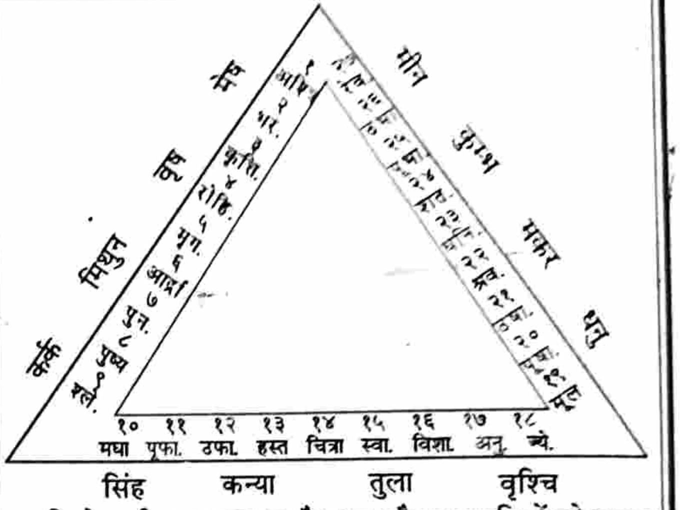

त्रिकोण की एक भुजा पर नौ नक्षत्र और चार राशियों को परस्पर गुणा करने पर ९ गुणा ४ बराबर ३६ अर्थात् योगिनी दशा के ३६ वर्ष उजागर होते हैं।

एक राशि चर, स्थिर, द्विस्वभाव और पुन: चर पर समाप्त होती है, अर्थात् मेष, वृष, मिथुन और कर्क और यही क्रम शेष भुजाओं पर स्थिर व द्विस्वभाव द्वारा अपनी आवृत्ति करता है। प्रत्येक जीव के जीवन में दो मोड़ आते हैं- श्वांस आना और श्वांस जाना, इसलिए ३६ गुणा २ बराबर ७२ योगिनी दशा वर्ष पूर्ण।

• एक राशि ३० अंश की और प्रत्येक भुजा पर चार राशियाँ हैं तो परस्पर गुणा करने पर ३० गुणा ४ बराबर १२० विशोत्तरी दशा वर्ष उपलब्ध होते हैं।

पहले ३६ वर्ष बताया था, अत: तीनों भुजाओं का योग करने पर ३६+३६+३६ = १०८ अष्टोत्तरी दशा वर्ष क्रम उपलब्ध हुआ।

त्रिकोण का केन्द्र बिन्दु लेकर डी से डीए या डीबी या डीसी की त्रिज्या से वृत बनायें तो यह सम्पूर्ण त्रिभुज वृत्त के अन्दर समा जाता है। वृत के चार समकोण होते हैं। जिनका प्रति ९०×४ =३६० अंशमान आता है। मेरे विचार से यही ज्योतिष का मूल है। बेशक विधाता भाग्य लिखता है, परन्तु संत सौभाग्य बनाता है।

डा. के. पी. शर्मा मुद्गल फोन नं. ८८२६३६१०००

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव

'शशिनि खलु कलंकः कंटक पद्मनालम्'

अर्थात् चन्द्रमा में कलंक है, कमल की नाल में भी कांटे हैं, समुद्र का विस्तार अथाह है, लेकिन जल खारा है। दोष तो रत्नों में भी पाये जाते हैं, यह तो विधाता का नियम है। प्रिय पाठको! ज्योतिष शास्त्र का अर्थकाण्ड बड़ा है, दूरदर्शी विद्वान भी नहीं पार पा सकता, तो मुझ जैसे अल्पज्ञ की बात कहाँ? फिर भी मेरे संकलित लेख से व्यापारी लाभ प्राप्त करते हैं, तो यह जगत् जननी माँ जगदम्बा व गुरु की कृपा है, इससे मैं अपने परिश्रम को सफल मानता हूँ।

चैत्र- इस मास में २५ मार्च २०२० बुधवार को नवीन चन्द्रदर्शन मीन राशि के अन्तर्गत हो रहा है, जो कि ३० मुहूर्ती व रेवती नक्षत्र मीन राशि के अन्तर्गत हो रहा है। उदिय समय इसकी दक्षिण नोक ऊँची होगी, जिससे प्रत्येक वस्तु में तेजी आयेगी। बुधवार को बाजार का जो भाव प्रातः हो वही शनिवार के पहले-पहले एक बार पीछे आ जायेगा। रूई में पहले मन्दी उसके बाद तेजी का रुख रहेगा। गेंहू, जौं, चना, बाजरा, अन्य अनाज के भावों में मन्दी का रुख रहेगा। पहले छः मास व्यापारिक भाव मन्दी की चाल में रहेंगे, उसके बाद तेजी में आयेंगे, तिलहन में तेजी, गुड़, शक्कर, खांड, घी, सोंठ, नारियल व अनाजों में तेजी रहेगी। सोना, चांदी में छः मास तेजी के बाद मन्दी का रुख रहेगा। यदि चन्द्रमा पर कुण्डल सफेद हो तो वर्षा का योग बनता है। लाल रंग का हो तो वर्षा का अभाव रहे, एक कुण्डल निकट और एक कुण्डल दूर ऐसे दो कुण्डल हों तो वर्षा अधिक होगी। राजनैतिक क्षेत्र में माहौल गर्म रहेगा। सोना, चांदी, रूई, सूत, सूती वस्त्र, सन, वारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, खांड के भावों में घटा-बढ़ी से मन्दी रहेगी। देश में अराजकता को बल मिलेगा। अग्निकाण्ड, असामयिक प्राकृतिक प्रकोप से जनता को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

वैशाख- २४ अप्रैल २०२० शुक्रवार को वैशाख मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है, जो कि ३० मुहूर्ती व वृष राशि में एवं भरणी नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। चन्द्रदर्शन की दक्षिण नोंक ऊंची रहेगी, यह सभी वस्तु में तेजी लायेगी। चन्द्रमण्डल में भरणी नक्षत्र पर रात को कुण्डल (मण्डल) हो तो अन्न का संग्रह करें, आगे चलकर लाभ मिलेगा। शुक्रवार होने से सरसों, तिल, तेल, तिलहन, गेंहू, चावल, उड़द, चना, ऊनीवस्त्र, ऊन में मन्दी, रूई, सोना, चांदी, आयरन, जस्ता, तांबा, पीतल, कांसा में घटा-बढ़ी होकर बाद में तेजी का रुख रहेगा। नक्षत्र के अनुसार मजीठ, नमक, कुमकुम, चन्दन में तेजी, गुड़, चीनी, शक्कर, जूट, हैसियन, शेयर, पाट, कपास के भाव गिरकर पुनः सुधार लेंगे। अलसी, सरसों, मूंगफली, एरण्ड, सोयाबीन, बिनौला, सींगदाना में तेजी। दक्षिण श्रीलंका, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक में परेशानी बढ़ेगी, जनता कष्ट पायेगी। भीष्ण गर्मी का प्रकोप जनमानस को पीड़ा व परेशानी पैदा करेगा।

ज्येष्ठ- २४ मई २०२० रविवार को ज्येष्ठ मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्त्ती मिथुन राशि व रोहिणी नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। गेंहू, जौं, चना, रूई, कपास, सूत, सूतीवस्त्रों में तेजी, भांग, अफीम आदि नशीले पदार्थों में तेजी रहेगी। बाजार ऐवरेज में मन्दी की चाल में चलेगा। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी, व घटा-बढ़ी से मन्दी को बल मिलेगा, अन्न में आंशिक मन्दी रहेगी। लोहा, तांबा, पीतल, कांसा सूरजमुखी में तेजी का मान करेंगे। अलसी, अरण्डी, सरसों, तिलहन, दलहन के भाव उतार-चढ़ाव के साथ तेजी की लाइन में बने रहेंगे। भीषण गर्मी का प्रकोप जनता में परेशानी देगा। देश की राजनीतिक क्षेत्र में बड़ा बदलाव व उठापटक देखने को मिलेगी। अरुणाचल, असम, कश्मीर में व्यर्थ के झगड़े-फसाद जनमानस को परेशानी में डाल देंगे। उड़द, मूंग, मोठ, अरहर, मसूर में मास के मध्य में तेजी रहेगी। विशेष चांस रिपोर्ट मंगायें।

आषाढ़- ता.२२ जून २०२० सोमवार को आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है, जो ४५ मुहूर्त्ती व मिथुन राशि एवं आर्द्रा नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। उदित समय चन्द्रमा का श्रृंग समान सींग वाला होगा, जिससे बाजार में तेजी का माहौल रहेगा। गुड़, खांड, वस्त्र, रंग, रूई, सोना, चांदी, सूत के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी, गेंहू जौं, चना, चावल, अरहर, मूंग, मसूर, मोठ, उडद के भाव उठकर गिर जायेंगे। तांबा, गेरू, सोना, घी, तेल, तिलहन, चन्दन के भावों में उतार-चढ़ाव के बाद तेजी, ज्वार, बाजरा, मक्का, मोठ, मटर के भावों में सुधार, अग्नि व सूर्य के तेज में वृद्धि, राजनैतिक माहौल में गर्मी रहेगी। आन्दोलन प्रदर्शन बन्द व हिंसा से जनजीवन प्रभावित रहेगा, आरोप प्रत्यारोपों से भी पड़ौसी देश के साथ सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न होगी। असामयिक दुर्घटना में किसी प्रमुख हस्ती का विछोह सम्भव है।

श्रावण- २२ जुलाई २०२० बुधवार को श्रावण मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्त्ती सिंह राशि एवं श्लेषा नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। सोना, चांदी, रूई, सूत, सूतीवस्त्र, सन, वारदाना, जूट, गुड़, चीनी, शक्कर में मन्दी देगा। गेंहू, जौं, चना, बाजरा आदि अनाज घी में तेजी देगा। हल्दी, मिर्च अजवाइन, जीरा, कालीमिर्च, नमक, लालरंग, मैथी, नमक अन्य किराना वस्तुओं, अन्न, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, जस्ता, लोहा में मन्दी खांड सम रहेगी। चन्द्रमा के दोनों कोने सींग बराबर रहने से प्रत्येक वस्तुओं में उतार-चढ़ाव बना रहे। वायु में तेजी, प्रत्येक जिन्स में रूई, सूत, रेशमी वस्त्र, सूत, धान, सरसों, तिल में तेजी रहेगी, सोना, चांदी, गुड़ के भावों में गिरावट चौतरफा पशुओं को कष्ट मास के मध्य में अनाज, शेयरों में घटा-बढ़ी रहेगी। वर्षा में तेजी, प्राकृतिक दुर्घटना, प्रकोप से आम मानस को परेशानी रहेगी।

प्रथम आश्विन- १८ सितम्बर २०२० शुक्रवार को प्रथम आश्विन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह ३० मुहूर्त्ती व कन्या राशि के अन्तर्गत उफा. नक्षत्र में हो रहा है जो प्रजा में वृद्धि कारक है। जौं, सरसों, तिल, तेल, गेंहू, चावल, उड़द, चना, ऊनीवस्त्र व ऊन में मन्दी रहेगी। रूई, सोना, चांदी में घटा-बढी होकर बाद में तेजी को बल देगी। अफीम, गुड़, खाण्ड, कपास में तेजी रहेगी। चन्द्रदर्शन उदित समय श्रृंग बराबर सींगवाला होगा, जिससे प्रत्येक वस्तु तेजी का मान करती है। अफीम व नशीली वस्तुओं में तेजी वर्षा की कमी रहेगी। सरसों, मूंगफली, खोपरा, सोयाबीन, तिल, तिलहन, दलहन, शेयर्स, आयरन में घटा-बढ़ी से तेजी को बल मिलेगा। देश में भाईचारे की वृद्धि होगी। पड़ौसी देश से वादविवाद की बढ़ोत्तरी से व्यापार में भी तेजी की चाल निकल सकती है। मित्र देशों के सहयोग से भारत महत्वाकांक्षी लाभकारी परियोजना में लाभ प्राप्त करेगा।

द्वितीय आश्विन- १८ अक्टूबर २०२० रविवार को द्वितीय आश्विन मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह ४५ मुहूर्ती, वृश्चिक राशि व स्वाती नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। जिससे मार्कीट में अच्छी तेजी का संकेत है। प्रायः अनाज व वायदा व्यापार में उतार-चढ़ाव तो होगा, परन्तु भाव तेजी का ही मान करेंगे। लवण पदार्थ

क्षार वस्तु, तिल, तेल, सरसों, रूई, चांदी, सोना में तेजी चना, गेंहू, जौं में मन्दी रहेगी। श्रृंग उत्तर की ओर होगी, नौंक ऊँची होने से प्रत्येक व्यापार में मन्दी का रुख बना रहे। चन्द्र मण्डल पड़ने से वर्षा होगी, जिससे पशु, जनमानस को परेशानी कष्ट होगा। सोंठ, पीपल, इलायची, दाल, चीनी, सींगदाना, अरण्डी के भावों में मन्दी के बाद तेजी बनेगी। वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप से भय, प्रजा में सुख का संचार रहे। किसी दैवीय आपदा या किसी विशिष्ट जन का क्षय होगा।

कार्तिक- १६ नवम्बर २०२० सोमवार को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह १५ मुहूर्ती वृश्चिक राशि तथा अनुराध नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है, जिससे अलसी, सरसों, मूंगफली, घी, तिल, तेल, तिलहन, वेजीटेबल सोयाबीन, सूरजमुखी में तेजी रहेगी। श्रृंग ऊँची रहेगी, जिससे सोना, चांदी, स्टील, पीतल, तांबा, कांसा के भावों में तेजी बनी रहेगी। रूई, सूत, शेयर, पाट, वारदाना, जूट, हैसियन, प्याज, आलू, लहसुन के भाव टूटकर तेजी का मान करेंगे। शेयर के भावों में मन्दी रहेगी। यह भाव इस मास स्थाई नहीं होंगे, उतार-चढ़ाव के कारण बाजार अलग रुख धारण कर परेशानी पैदा कर देगा। पाठक बन्धु बाजार चाल समय देखकर सतर्कता से कार्य कर लाभ लें। शनिवारी अमावस्या से तेल, तिलहन, लोहा में अच्छी तेजी का रुख बनेगा। विशेष जानकारी हेतु तेजी मन्दी की मासिक रिपोर्ट मंगाकर लाभ प्राप्त करें। फोन पर भी आप बाजार रुख की जानकारी प्राप्त कर लाभ कमा सकते हैं।

मार्गशीर्ष- १६ दिसम्बर २०२० बुधवार को इस मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती, मकर राशि तथा पूषा नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। इसके दोनों श्रृंग बराबर होने से सोना-चांदी के भावों में तेजी बनेगी। रूई, शेयर, पाट, हैसियन, पटसन में सर्पमुखी चाल से तेजी को बल प्राप्त होगा। बुधवार में दर्शन होने से सोना, चांदी, रूई, सूत, वस्त्र, सन्, वारदाना, जूट आदि गुड़, शक्कर, खांड में मन्दी, गेंहू, जौं, चना, घी में तेजी। पूर्वाषाढ़ा में चन्द्रदर्शन होने से नमक, चावल, चांदी, कपास में मन्दी रहेगी। मक्का, मोठ, बाजरा, ज्वार, ग्वार के भावों में मन्दी, धनिया, सोंठ, मिर्च, सोंफ, अजवाइन, हीरा, मोती के भावों में तेजी का मान रहेगा। इस मास वर्षा का अभाव रहेगा। बिहार, बंगाल, गुजरात, उप्र., आन्ध्र व चीन पाकिस्तान में झगड़ा फसाद की वृद्धि, आतंकवाद को बढ़ावा मिलेगा।

पौष- १४ जनवरी २०२१ गुरुवार को इस मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती, मकर राशि एवं श्रवण नक्षत्र में हो रहा है। इसके दोनों श्रृंग बराबर होने से सभी वस्तुओं में घटा-बढ़ी होकर बाद में भाव सम हो जायेंगे। चन्द्रदर्शन गुरुवार में होने से रूई, सूत, सूतीवस्त्र, रेशमी, ऊनीवस्त्र, घी, सरसों, तेल में तेजी रहे। सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, कांसा, खांड, गुड, चीनी, शक्कर के भावों में मन्दी का रुख रहेगा। प्रजा में सहयोग व कल्याणकारी कार्य में बढ़ोत्तरी होगी, आयरन, मेडीसन, रसायन, पेट्रो आदि सभी प्रमुख शेयरों में अधिक बिकवाली से भावों में मन्दी को बल मिलेगा। ओस, कोहरा व पहाड़ी क्षेत्रों में शीतप्रकोप ओला, पाला, बर्फबारी से फसल को हानि यातायात में बाधा उत्पन्न होगी। शीतलहर के कारण जनजीवन प्रभावित रहेगा।

माघ- १३ फरवरी २०२१ शनिवार को माघ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती कुम्भ राशि एवं शतभिषा नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। अतः सभी चुनिंदा वस्तुओं व्यापारिक जिन्सों में घटा-बढ़ी होगी। वायुवेग के साथ वर्षा की अधिकता रहेगी। चन्द्रदर्शन के समय दोनों श्रृंग बराबर होने से भावों में उतार-चढ़ाव की अधिकता के बाद स्थिरता में आ जायेंगे। रूई, सूत, सूतीवस्त्र, चांदी, सोना, सरसों, मूंगफली, आलू में अच्छी तेजी का रुख रहेगा। गेंहू, जौं, चना, ग्वार, बाजरा, मक्का, चना, ग्वार के भावों में तेजी रहेगी। तांबा, आयरन, पीतल, जिंक, क्रूडआयल, मैडीसन, रसायनिक पदार्थ के भावों में उतार-चढ़ाव मान तेजी का रहेगा। इनसे जुड़े शेयर भी गिरकर तेजी में आयेंगे। प्राकृतिक वर्षा, ओला, वायु आदि से फसल को नुकसान, प्रजा में सुख बढ़ेगा।

फाल्गुन- १४ मार्च २०२१ रविवार को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह ४५ मुहूर्ती मेष राशि व उभा. नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। उदित समय इसकी दक्षिण नोंक ऊँची होगी जो प्रत्येक वस्तु के भावों को तेजी प्रदान करेगी। रूई, सूतवस्त्र, चांदी, सोना, सरसों, मूंगफली के भाव में तेजी प्रदान करेगी। किसी किसी वस्तु के भावों में अच्छी तेजी आयेगी। रविवार को चन्द्रदर्शन के प्रभाव से ऐवरेज में मन्दी को बल। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। अनाज में आंशिक मन्दी रहेगी। रूई, लालमिर्च, सुपारी, गोला, धनिया, मोठ, सोंठ, मजीठ, हल्दी में मन्दी रहेगी। सरसों, गुड़, चीनी, चावल, शक्कर, दालवाना, मूंग, मसूर, मटर, मोठ, अरहर में तेजी, केसर, कस्तूरी, गोरोचन, छुहारा, मुनक्का, बादाम, काजू, किसमिस के भावों में तेजी चलेगी। मौसम में अचानक परिवर्तन से जनता को भय व कष्ट का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपने शहर, गाँव, प्रांत आदि में चन्द्रमा का उदयकाल स्वयं देखें और लाभ लें। उदित समय यदि चन्द्रमा के दोनों श्रृंग उच्च हो तो नाविकों को पीड़ा, समुद्री प्राकृतिक प्रकोप का योग, यदि श्रृंग आधा उठा हो तो किसानों को कष्ट, फसलों में प्राकृतिक प्रकोप से नुकसान, भ्रष्टाचारी, चोरी, आतंकी, लूटमार, बलात्कार जैसी घटनाओं में वृद्धि यदि चन्द्र का दक्षिण श्रृंग उच्च हो तो पंजाब, हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मूकश्मीर में प्राकृतिक प्रकोप, सैन्यप्रदर्शन, आन्दोलन, पुलिस व्यवस्था पर सवाल उदित समय यदि दोनों श्रृंग समान हों तो सुभिक्ष वर्षाकारी योग व इसके दोनों श्रृंग दण्ड के समान ऊँचे हों तो वर्षा का अभाव किसानों को कष्ट। यदि चन्द्रमा के दोनों श्रृंग नीचे की ओर हो तो पशुओं को कष्ट, प्राकृतिक प्रकोप से फसल में भारी हानि, पशुचारे का नाश। यदि चन्द्रमा के चारों ओर गोलाकार रेखा हो तो शासन दल में परेशानी, राष्ट्रपति शासन का योग, यदि उत्तरी श्रृंग उच्च हो तो प्रजा को सुख शान्तिप्रदायक, यदि चन्द्रमा श्रृंग रहित हो तो किसी बड़े व्यक्ति की मृत्यु हो। यदि चन्द्रमा छोटा हो तो दुर्भिक्ष मध्यम फलप्रदायक हो, यदि चन्द्रमा का आकार विशाल हो तो फसल उत्तम प्रजा में सुख-सौहार्द, उत्तमपैदावार, नवीन योजनाओं का शुभारम्भ हो। यदि चन्द्रमा के चारों ओर सफेद रंग की गोलाकार आकृति हो तो वर्षाकारक और यदि एक कुण्डल पास में और दूसरा कुण्डल दूर हो तो दूर-दूर तक वर्षा हो।

नोट- चन्द्रदर्शन व श्रृंगों का फल १ महीने के अंदर घटित होता है।

व्यापार भविष्य चन्द्रोदयगत है। बाजार रुख राजनीतिक चाल पर भी निर्भर रहता है, अतः सावधानी भी अति आवश्यक है। विशेष तेजी-मन्दी के लिए प्रत्येक मास की तेजी मन्दी चांस मंगाकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जिसका सेवा शुल्क मासिक चांस ४००/-, छः माह २४००/-, एक वर्ष ४५००/-, एवं डाकखर्च ५०/- प्रत्येक मास ६००/-वार्षिक अलग से देना होगा। प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी की जानकारी मो. ९७२०६८६३२२ पर भी ले सकते हैं समय शाम ७ से १० बजे रात्रि तक स्पेशल मासिक रिपोर्ट एक वस्तु ५००/-, एक वर्ष ६०००/-व ६००/- पोस्ट व्यय प्रथक लगेगा। मंगाकर व्यापार में उचित लाभ प्राप्त करें, यही हमारी कामना है।

-पं. सुनील कुमार अनिल कुमार व्यास श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया, मथुरा, उ.प्र. पिन २८१२०४
फोन नं. 09720686322, 09719822007

वर्ष 2020-21 में शेयर बाजार की दशा-दिशा एवं धारणा

बीते कुछ दिनों से बाजार से आ रही सभी खबरें यही बता रही हैं कि बाजार में लिवाल से कहीं ज्यादा बिकवाल है और बाजार के पस्त हौंसले का यही कारण है कि निवेशकों को तत्काल कोई बड़ी उम्मीद नहीं दिख रही है। इस रुझान के आलोक में जाएं तो सबसे ज्यादा गिरावट ऑटोमोबाइल, विद्युत, टेलीकाम, इस्पात और पेट्रोलियम आधारित शेयरों में परिलक्षित हो रही है। यही चिन्ता का सबसे बड़ी वजह भी है तथा भविष्य में रह-रहकर यह सिलसिला बाजार की दशा-दिशा, धारण अस्थिर करता रहेगा। हालांकि इस बाजार का ताल्लुक अफवाहों से होता है, वैसे स्थिति में एक तरफा ऐसी ही धारणा बनी रहे यह भी सच नहीं है। उपरोक्त सेक्टर भी अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा आधार होते हैं, अगर इन्हीं को लेकर निवेशक उत्साहित नहीं हैं तो यह बाजार से संबंधित नकारात्मक खबर सेहतमंद नहीं है। हालांकि इस बाजार से संबंधित एक दूसरा सच यह भी है कि सिर्फ भारत ही नहीं विश्व के विकासशील शेयर बाजार भी अस्थिरता के मायाजाल में घुम फिर रहे हैं, जो शुभ का संकेत नहीं है। हालांकि एशियाई शेयरबाजारों के गोता लगाने की यह गति कुछ ज्यादा ही तेज है। गत दिनों अमेरिका और चीन के बीच जारी व्यापार समझौते की वार्ता भी शुभ का संकेत नहीं है। हालांकि ऐसा पहले भी कई बार हो चुका है कि विश्व के तमाम झंझावातों के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था उनकी चपेट में आने से किसी तरह बचती रही। विकास दर ने हमारी अर्थव्यवस्था के हौंसले पस्त नहीं होने दिये, लेकिन इस बार जो संकट है, उसमें विकासदर के आंकड़े की प्रामाणिकता संदेह के घेरे में आ गई है। यह तमाम बातें बाजार भविष्य को लेकर चिन्ता पैदा करने वाली है। विगत कुछ दिनों में बाजार की दशा-दिशा धारणा की हालात जो दिख रही है, वह इसी चिन्ता का एक सूक्ष्म संकेत है। परन्तु गत दिनों भारत में नई सरकार बनने के बाद क्या भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार की ओर सफल प्रयास कर सकती है। यदि ऐसा होता है तो विश्व के सफलतम राष्ट्रों की श्रेणी में भारत शुमार हो सकता है, ऐसा सम्भव है। निकट भविष्य में भारत विश्व के सबसे विश्वसनीय राष्ट्रों में शुमार हो सकता है, क्योंकि दूरदर्शी परिपक्व भारतीय प्रधानमन्त्री के नेतृत्व में तमाम कठिन परिस्थितियों को झेलते हुए सफल प्रयास की ओर अग्रसर बढ़ सकते हैं। भारत कारोबार, सरकार, एनजियो, और मीडिया के मामले में फिलहाल विश्व के सबसे विश्वसनीय राष्ट्रों में शामिल है, लेकिन देश के कारोबारी ब्राण्डों की विश्वसनीयता इसमें सबसे कम है। एक रिपोर्ट में यह दावा किया गया है एडलमैन की ट्रस्ट बैरोमीटर २०१९-२० रिपोर्ट यहाँ विश्व आर्थिक मंच के सालाना सम्मेलन के शुरु होने से पहले जारी की गई। इसमें वैश्विक विश्वास सूचकांक ३ अंक के हल्के सुधार के साथ ५२ अंक पर पहुँच गया है। चीन जागरूक जनता और समान आबादी के भरोसे सूचकांक में क्रमश ७९ और ८८ अंकों के साथ शीर्ष पर रहा। भारत इन दोनों श्रेणी में दूसरे और तीसरे स्थान पर रहा। ब्राण्ड की विश्वसनीयता के मामले में स्विटजरलैण्ड जर्मनी एवं कनाड़ा का स्थान आता है। इसके बाद जापान का स्थान आता है। वहीं भारत मैक्सिको और ब्राजील में स्थित कंपनियाँ भरोसे के मामले में निचले स्थान पर हैं। इसके बाद चीन और दक्षिण कोरिया का स्थान आता है। यदि समय रहते भारत कच्चे तेल, व्यापार समझौता मामलों में चीन अमेरिका के साथ नीतिगत फैसलों में सफल हो जाता है तो निकट भविष्य में भारत जल्द ही ब्रिटेन को पीछे छोड़ देगा। विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की विकासदर पिछले २८ सालों के निचले स्तर पर पहुंची है। हालांकि अनुमान लगाया जा रहा है कि गत दिनों अमेरिका के साथ व्यापार के मोर्चे पर जारी तनाव के चलते यह गिरावट आई है। यदि भारत में सब कुछ सामान्य रहा तो भारतीय शेयर बाजार की सेहत निकट भविष्य में सुधार का पलड़ा भारी पड़ सकता है। यदि ऐसा होता है तो भविष्य में शेयरबाजार का सूचकांक अस्थिरता के बावजूद भी ४२५०० से ४७५०० के स्तर पर किसी भी समय पहुँचने के लिए आतुर रहेगा, परन्तु हाल फिलहाल विश्व की तमाम अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ अमेरिका की गलत नीतियों के चलते शेयर बाजार में यह अस्थिरता का खेल रुक-रुककर जारी रहे तो आने वाले समय में यह नकारात्मक स्थितियाँ बाजार की दशा दिशा धारणा अस्थिर बना सकती हैं। ऐसी स्थिति में भारतीय शेयर बाजार के सूचकांक ३१५०० से ३५५०० के बीच घूमता फिरता रह सकता है। इस स्थिति में विवेकशील धैर्यवान सूझबूझ के धनी निवेशकगण राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय हालातों का परिपूर्ण अवलोकन करते हुए स्वयं विवेक से भी तेजी मन्दी का विचार करें।

अप्रैल- यह मास बुधवार आर्द्रानक्षत्र, शोभनयोग मिथुन राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य मीन में मंगल, गुरु शनि मकर में भ्रमणशील रहेंगे। ता.७ को बुध सूर्य के साथ युति करेगा। ता.१३ को सूर्य मेष में और बुध उदित अवस्था में चलते हुए पूर्व में अस्त होगा। ता.२४ को बुध सूर्य के साथ युति करेगा, फलतः मासारम्भ में ता.१ को घट-बढ़, ता.२ से ३ तक नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। यदि ऐसा हो तो ता.६ से १० तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, बैंक तथा ऑटोमोबाइल कंपनियों के शेयरों में कुछ समर्थन सम्भावित है। फिर भी सावधानी अपेक्षित है। ता.१३ से १५ तक घट-बढ़, ता.१६ से १७ तक अचानक बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। ता.२० से २४ तक अफवाहों पर आधारित धारणा अस्थिर हो सकती है। मेरी समझ से १६ से २४ तक मन्दी की लम्बी लाइन भी बन सकती है, अतः दशा-दिशा धारणा देखते हुए काम करें। ता.२७ से ३० तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयर्स में घट-बढ़ परन्तु ऑटोमोबाइल, सीमेन्ट, इस्पात, विद्युत, पावर सेक्टरों में कुछ समर्थन मिल सकता है।

मई- यह मास शुक्रवार आश्लेषा नक्षत्र, सिंह राशि में प्रारम्भ हो रहा है। ता.४ को मंगल कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। ता.९ को बुध वृष राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ युति करेगा। ता.११ को शनि वक्री होगा। ता.१३ को शुक्र भी वक्री होगा, मास के प्रारम्भ में बुध अस्त अवस्था में चलते हुए ता.१४ को पश्चिम में उदय होगा। इसी ता. को गुरु वक्री होगा, फलतः ग्रहीय गणना के अनुसार मास के प्रारम्भ में घट-बढ़ जारी रहेगी। ता.४ से ८ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो इस्पात, सीमेन्ट, पॉवर, विद्युत, गैस, पेट्रोरसायन, टेक्सटाइल कंपनियों के शेयरों में कुछ समर्थन सम्भावित है। ता.११ से १५ तक राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय हालातों के कारण सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में व्यापक अस्थिरता संभावित है। यदि ऐसा होता है तो ता.१८ से २१ तक अफरा-तफरी की स्थिति बाजार में तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है। ता.२२ को नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। यदि ऐसा होता है तो ता.२५ से २९ तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन संभावित है।

जून- यह मास सोमवार हस्तनक्षत्र, कन्या राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य शुक्र वृष में, बुध राहु मिथुन में, गुरु शनि मकर में, मंगल कुम्भ में भ्रमणशील रहेंगे। ता.१४ को सूर्य बुध राहु के साथ प्रतियुति करेगा। ता.१८ को बुध वक्री होगा और मंगल मीन राशि में प्रवेश करेगा। ता.२१ बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता.२५ को शुक्र मार्गी होगा। ता.२९ को गुरु धनु राशि में प्रवेश कर केतु के साथ युति करेगा। मासारम्भ में बुध उदित अवस्था में चलेगा, जिससे ता.१ से ५ तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में घट-बढ़ पूर्ण अस्थिर सुधार संभावित है। ता.८ से १२ तक गलत अफवाह या अन्तर्राष्ट्रीय हालातों के कारण बाजार में अचानक बिकवाली से अफरा-तफरी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिससे सूचकांक में गिरावट परिलक्षित हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो ता.१५ से १७ तक बिकवाली का दबाव और भी गंभीर स्थिति में पहुँच सकता है, अत: बाजार की दशा दिशा देखते हुए काम करना सफल व्यापार की कुंजी हो सकती है। ता.१८ से १९ तक विद्युत, पावर, पेट्रोरसायन, वित्तीयसंस्थाओं के साथ-साथ ऑटोमोबाइल कंपनियों के शेयरों में कुछ स्थिरता संभावित है। ता.२२ को घट-बढ़, ता.२३ से २६ स्थितियाँ सामान्य रहीं तो इस्पात, सीमेन्ट, पॉवर, विद्युत, रीयल स्टेट, टेक्सटाइल एवं धातुओं के शेयरों में सामान्य समर्थन संभावित प्रतीत हो रहा है। यदि ऐसा होता है तो ता.२९ से ३० तक मिडकैप, स्मॉलकैप या नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। हालांकि बाजार की दशा दिशा अफवाहों पर आधारित होती है। यह आंकलन भी ग्रहीय गणना पर आधारित है, कभी-कभी कुछ कारणों से फलाफल में अंतर भी हो सकता है, अत: निवेशक स्वयं विवेक से भी काम करें।

जुलाई- यह मास बुधवार, विशाखानक्षत्र, सिद्धयोग, वृश्चिक राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में बुध अस्त अवस्था में चलते हुए ता.१२ को पूर्व में उदय होकर मार्गी होगा। ता.१६ को सूर्य कर्क में प्रवेश करेगा, फलत: मासारम्भ में ता.१ से ३ तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में व्यापक घट-बढ़ जारी रहेगी, जिससे धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। यदि ऐसा हो तो ता.६ से १० तक बाजार में गलत अफवाह या सरकार के दिशा निर्देश अथवा अन्तर्राष्ट्रीय हालातों के कारण अचानक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बिकवाली से शेयर बाजार के सूचकांक में व्यापक गिरावट परिलक्षित हो सकती है। ता.१३ से १५ तक व्यापक अस्थिरता संभावित है। ता.१६ से १७ तक इस्पात, सीमेन्ट, पॉवर, विद्युत, धातुओं के साथ-साथ अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में सामान्य समर्थन संभावित है, फिर भी बाजार की दशा देखते हुए काम करें। ता.२० से २४ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो सॉफ्टवेयर, मीडिया, सूचनाप्रौद्योगिकी, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं, इस्पात, सीमेन्ट, रियलस्टेट, पॉवर तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन संभावित है। ता.२७ से २८ तक घट-बढ़, ता.२९ से ३१ तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में घट-बढ़ जारी रह सकती है।

अगस्त- यह मास शनिवार, मूलनक्षत्र, वैधृतियोग, धनुराशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में शुक्र मिथुन राशि में प्रवेश कर राहु के साथ युति करेगा और बुध सूर्य के साथ युति करेगा। मासारंभे बुध उदित अवस्था में चलते हुए ता.७ को पूर्व में अस्त होगा। ता.१६ को सूर्य सिंह राशि में और मंगल मेष में, ता.१७ को बुध सूर्य की युति ता.३१ शुक्र कर्क राशि में जायेगा। मासारम्भ में ता.३ से ७ तक ब्लूचिप विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से बिकवाली बनने से बाजार में अफरा-तफरी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो ता.१० से ११ तक अस्थिरता की संभावना ता.१२ से १४ तक इस्पात, सीमेन्ट, रियलस्टेट, पॉवर, विद्युत, धातु, ऑटो मोबाइल में बारी-बारी से सामान्य समर्थन मिल सकता है। यदि ऐसा होता है तो ता.१७ से २१ तक उपरोक्त सेक्टरों में बारी-बारी से समर्थन मिल सकता है, फिर भी धारणा देखकर काम करें। ता.२४ को कुछ स्थिरता ता.२५ से २८ तक व्यापक घट-बढ़ जारी रह सकती है, अत: सावधानी अपेक्षित है। ता.३१ को पंचक प्रारम्भ तथा कर्क में शुक्र से अचानक बाजार में गलत अफवाह से तेज गिरावट हो सकती है।

सितम्बर- यह मास मंगलवार धनिष्ठानक्षत्र, कुम्भ राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में सूर्य बुध सिंह में, गुरु केतु धनु में, शनि मकर में, मंगल मेष में तथा शुक्र कर्क में भ्रमणशील रहेंगे। ता.२ को बुध कन्या में प्रवेश कर पश्चिम में उदय होगा। ता.१० को मंगल वक्री होगा। ता.१३ गुरु मार्गी होगा। ता.१६ सूर्य बुध की युति होगी, फलत: मासारम्भ में बुध अस्त अवस्था में चलने से ता.४ तक गलत अफवाह या अन्य कारणों से सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बारी-बारी से बिकवाली बन सकती है, अत: सावधानी अपेक्षित है। ता.७ को घट-बढ ता.८ से ११ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो उपरोक्त सेक्टरों में सामान्य समर्थन मिल सकता है। ता.१४ से १८ तक ब्लूचिप के विभिन्न सेक्टरों में बारी-बारी से विदेशी निवेशकों के साथ संस्थागत निवेशकों के समर्थन से बाजार में सुधार संभावित है। ता.२१ से २५ तक इस्पात, सीमेन्ट, पॉवर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में व्यापक घट-बढ़ जारी रह सकती है, जिससे धारणा पकड़ में नहीं आयेगी। ता.२८ से ३० तक गलत अफवाह या अंतर्राष्ट्रीय हालातों के कारण अचानक उपरोक्त सेक्टरों में बारी-बारी से बिकवाली बनने से बाजार आंधी के आम की तरह गिर जाए तो आश्चर्य नहीं। इस संवेदनशील बाजार में कब क्या हो जाए यह बात भविष्य के गर्भ में ही छुपी रहती हैं, इस बाजार में जोखिम होते हैं, अत: निवेशक स्वयं विवेक से भी काम करें।

अक्टूबर- यह मास गुरुवार उ.भा.नक्षत्र, वृद्धियोग मीन राशि में प्रारम्भ हो रहा है। ता.४ मंगल मीन राशि में, बुध मासारंभ में उदित अवस्था में चलते हुए ता.१३ को पश्चिम में अस्त होकर ता.१४ को वक्री होगा। ता.१७ सूर्य तुला में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। ता.२३ शुक्र कन्या में प्रवेश करेगा, ता.३० बुध पूर्व में उदय होगा, फलत: ता.१ से २ तक साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में व्यापक घट-बढ़ जारी रहेगी, अत: सावधानी अपेक्षित है। ता.५ से ९ तक उपरोक्त सेक्टरों में अस्थिर सुधार संभावित है, फिर भी धारणा देखकर ही काम करें। ता.१२ को घट-बढ़, ता.१३ से १६ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो इस्पात, सीमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, ऑटोमोबाइल, टेक्सटाइल, शुगर, रीयलस्टेट के शेयरों में सामान्य समर्थन संभावित प्रतीत हो रहा है। ता.१९ से २३ तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में अस्थिरता, जबकि अन्य सेक्टरों में कुछ समर्थन संभावित है, फिर भी सावधानी से काम करें। ता.२६ को घट-बढ़, ता.२७ से ३० तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में अफवाहों पर आधारित बिकवाली तेज हो सकती है, अत: सावधानी बरतें।

नवम्बर- यह मास रविवार, विशाखानक्षत्र, शोभनयोग, वृश्चिक राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में बुध उदित अवस्था में ता.४ को मार्गी हो जायेगा, ता.१४ को मंगल मार्गी होगा, ता.१६ सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश कर केतु के साथ युति करेगा और शुक्र तुला में प्रवेश कर बुध के साथ युति करेगा। ता.२० गुरु उषा.नक्षत्र मकर राशि में प्रवेश कर शनि के साथ युति करेगा। ता.२८ बुध सूर्य केतु के साथ प्रतियुति करेगा। ता.३० बुध पूर्व में अस्त होगा। मासारम्भ में

सब कुछ सामान्य रहा तो ता.२ से ६ तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बारी-बारी से कुछ समर्थन प्रतीत हो रहा है। यदि ऐसा होता है तो ता.९ से १३ तक उपरोक्त सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से कुछ समर्थन मिल सकता है, जिससे सूचकांक में सुधार संभावित है। ता.१६ से २० तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ मिडकैप-स्मालकैप के शेयरों में व्यापक घट-बढ़ जारी रहेगी, अतः सावधानी से काम करें। ता.२३ से २७ तक गलत अफवाह या सरकार के दिशा निर्देश अथवा अन्तर्राष्ट्रीय हालातों के कारण ब्लुचिप के विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से अचानक बिकवाली बनने से बाजार आंधी के आम की तरह गिर भी सकता है। ता.३० ऑटोमोबाइल, सीमेन्ट, विद्युत, पावर एवं धातुओं के शेयरों में सामान्य समर्थन मिल सकता है।

दिसम्बर- यह मास मंगलवार, रोहिणीनक्षत्र, सिद्धयोग, मिथुन राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य बुध केतु वृश्चिक में गुरु शनि मकर में भ्रमणशील रहेंगे। ता.१० को शुक्र सूर्य बुध केतु के साथ प्रतियुति करेगा। ता.१५ को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेगा। ता.१७ को बुध सूर्य के साथ युति करेगा। ता.२३ को मंगल अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में प्रवेश करेगा। मासारम्भ में बुध अस्त अवस्था में विचरण करता रहेगा, जिससे इस माह सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में किसी न किसी कारण से दबाब बना रहेगा। ता.१ से ४ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो ऑटोमोबाइल, सीमेन्ट, रीयलस्टेट, पावर, विद्युत एवं धातुओं के शेयरों में अस्थिर सुधार सम्भावित है, यदि ऐसा होता है तो ता.७ से ११ तक उपरोक्त सेक्टरों में बारी-बारी से समर्थन न मिलने से सूचकांक में व्यापक सुधार सम्भावित है। ता.१४ से १८ तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, सूचनाप्रौद्योगिकी, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में बारी-बारी से बिकवाली का सिलसिला लम्बी लाइन में चल सकता है। ता.२१ से २५ तक अफवाहों पर आधारित बाजार में उपरोक्त सेक्टरों में अफरा-तफरी की स्थिति तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है, अतः सावधानी अपेक्षित है। ता.२८ से ३१ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो विद्युत, पॉवर, गैस, पेट्रोरसायन, आटोमोबाइल एवं धातुओं के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित है।

जनवरी २०२१- यह मास शुक्रवार पुष्यनक्षत्र कर्क राशि में प्रारम्भ हो रहा है। ता.३ को शुक्र मूल नक्षत्र धनु राशि में प्रवेशकर सूर्य बुध के साथ प्रतियुति करेगा। ता.४ बुध गुरु शनि के साथ प्रतियुति करेगा। मासारम्भ में बुध अस्त अवस्था में ता.९ को पश्चिम में उदय होगा। ता.१४ सूर्य मकर में प्रवेश कर चतुर्ग्रही योग बनायेगा। ता.१७ गुरु पश्चिम में अस्त होगा। ता.२५ बुध कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। ता.२७ को शुक्र सूर्य गुरु शनि के साथ प्रतियुति करेगा। ता.२९ को बुध उदित अवस्था में ही वक्री हो जाएगा, फलतः मासारंभ में ता.१ घट-बढ़, ता.४ से ८ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो इस्पात, सीमेन्ट, पॉवर, विद्युत तथा धातुओं के शेयरों में कुछ समर्थन सम्भावित है। फिर भी बाजार की दशा दिशा धारणा देखते हुए काम करें। ता.११ से १५ तक ब्लुचिप के विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में अफवाहों पर आधारित अथवा सरकार के दिशा निर्देश के कारण बाजार में व्यापक घट-बढ़ जारी रह सकती है, जिससे रुखों में परिवर्तन जल्दी-जल्दी होगा। जिससे अधिकतर सौदे अहितकर हो सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो ता.१८ से २२ तक अफवाहों पर आधारित अफरा-तफरी की स्थिति बनी रह सकती है। ता.२५ से २९ तक स्थितियाँ सामान्य रहीं तो सॉफ्टवेयर, मीडिया, सूचनाप्रोद्योगिकी, फार्मा तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में सामान्य समर्थन मिल सकता है।

फरवरी- यह मास सोमवार उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, कन्या राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में बुध उदित अवस्था में वक्री होकर ता.३ को पश्चिम में अस्त व ता.१४ को पूर्व में उदय होकर ता.२० में मार्गी होगा। ता.४ बुध धनिष्ठा नक्षत्र मकर राशि में पंचग्रही योग बनायेगा। ता.११ शुक्र तथा शनि पूर्व में उदय होंगे। ता.२० शुक्र धनिष्ठा नक्षत्र कुम्भ राशि में प्रवेश कर सूर्य के साथ युति करेगा, फलतः मासारम्भ में ता.१ से ४ तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के साथ-साथ मिडकैप-स्मालकैप श्रेणी के शेयरों में कुछ समर्थन सम्भावित है। ता.५ को साफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में कुछ बिकवाली बन सकती है। यदि ऐसा होता है तो ता.८ से १२ तक उपरोक्त सेक्टरों में दबाब की स्थिति लम्बी लाइन में भी बन सकती है, अतः सावधानी से काम करें। यदि ऐसा हो तो ता.१५ से १८ तक अफरा-तफरी की स्थिति बाजार में तबाही का मंजर उत्पन्न कर सकती है, जिससे अधिकतर सौदे अहितकर हो सकते हैं। ता.१९ में कुछ सुधार, ता.२२ से २६ तक ब्लुचिप के विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में बारी-बारी से कुछ समर्थन मिल सकता है। ऐसे तो इस माह की तेजी मन्दी की गणित में मन्दी का पलड़ा भारी महसूस हो रहा है, फिर भी धारणा देखकर ही काम करें।

मार्च- यह मास सोमवार उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, कन्या राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में बुध उदित अवस्था में मार्गी चाल से चल रहा है, जो ता.२६ को पूर्व में अस्त होगा। मासारम्भ में सूर्य शुक्र कुम्भ में, मंगल राहु वृष में, बुध गुरु शनि मकर राशि में भ्रमणशील रहेंगे। ता.१२ को बुध कुम्भ राशि में प्रवेशकर सूर्य शुक्र के साथ युति करेगा। ता.१४ को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेंगे। ता.१६ शुक्र सूर्य के साथ युति करेगा। फलतः मासारम्भ में बाजार में अफवाहों पर आधारित घट-बढ़ जारी रहेगी, अतः सावधानी से काम करें। ता.१ से ५ तक नई व पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में अस्थिर सुधार संभावित प्रतीत हो रहा है। ता.८ से १२ तक गलत अफवाह या अन्य कारणों से बाजार में बिकवाली से अफरातफरी की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अतः दशा दिशा देखकर ही काम करें। यदि ऐसा हो तो ता.१५ से १७ तक अस्थिरता का पलड़ा भारी पड़ सकता है। ता.१८ से १९ तक सॉफ्टवेयर, मीडिया, फार्मा एवं वित्तीय संस्थाओं के शेयरों में कुछ समर्थन मिल सकता है। यदि ऐसा हो तो ता.२२ को घट-बढ़, ता.२३ से २६ तक ब्लुचिप के विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में अचानक लिवाली से सूचकांक में आश्चर्यजनक तरीकों से ग्राफ ऊपर जा सकता है। ता.२९ से ३१ तक ऑटोमोबाइल, सीमेन्ट, इस्पात, पॉवर, विद्युत, गैस, पेट्रोरसायन, टेक्सटाइल, भारीइंजीनियरिंग, शुगर तथा धातुओं पर आधारित उद्योगों के शेयरों में बारी-बारी से समर्थन मिल सकता है। यह स्मरण रखें कि यह आंकलन ग्रहीय गणना पर आधारित है, इसमें कभी-कभी जोखिम भी हो सकता है, क्योंकि इस बाजार का ताल्लुक अन्तर्राष्ट्रीय हालातों के साथ-साथ प्राकृतिक वातावरण, सरकार के दिशा-निर्देश या अफवाहों से होता है। अतः अपना निवेश स्वयं विवेक से ही करें। यह दशा दिशा धारणा की कुछ संकेत मात्र है।

यदि आप चाहें तो विस्तार से दैनिक तेजी मन्दी की रिपोर्ट हमारे यहाँ से प्राप्तकर सकते हैं, जिसका सेवाशुल्क वार्षिक होते हैं। साधारण सेवा शुल्क १२ माह २०५००, मध्यम २५५०० स्पेशल ३०५०० सर्वउत्कृष्ट ३५५००, शेयर बाज़ार उत्कृष्ट रिपोर्ट एवं व्यापार कमोडिटी ट्रेडिंग संयुक्त रिपोर्ट विशेष रियायत दर ५५५०० रू निर्धारित है। अचूक चांसों की जानकारी लिखित रिपोर्ट के साथ-साथ मो. नम्बर ९८०१८७३७१९ पर मेम्बरों को जानकारी दी जाती है। जन्मपत्रिका विचार फलादेश दक्षिणा ५५०० से २१५०० निर्धारित है। किसी भी तेजी मन्दी की जानकारी के लिए सेम्पल या ट्रायल की अपेक्षा न करें। साथ ही स्मरण रखें कि २-६ मास की रिपोर्ट भेजने की व्यवस्था भी नहीं है।

प्रख्यात ज्योतिषाचार्य पं. टुनटुन शास्त्री
ग्राम-करौन्दी, पो. सराँव नटवार, रोहतास, बिहार 802218
फोन नं. 09431486216, 09801873719
Email:Tuntunshastri@gmail.com

भाग्य में वृद्धि हेतु ज्योतिष द्वारा छोटे उपाय, जिनसे लाभ मिले भरपूर

भाग्य कितना प्रभावी है, जानने हेतु

शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को सवा किलो मिट्टी में २५० ग्राम गेंहू मिलाकर एक मिट्टी के चौड़े बर्तन में भर दें, जैसे ज्वारे बोये जाते हैं। इस बर्तन को वहाँ रखें जहाँ धूप न आती हो, इसमें दिन में एक समय जल दें, नवमी तिथि को देखें कि यदि ज्वारे हरे निकलते हैं तो भाग्य आधा फल दे रहा है। यदि सुनहरे निकलें तो भाग्य का पूर्ण फल प्राप्त हो रहा है यदि ज्वारे कम निकलें या खराब हो जाएं तो भाग्य का साथ नहीं मिल रहा है।

दूध गर्म करते समय अक्सर बाहर निकलता हो या तेल बिखर जाता हो या अचानक हानि हो जाए या कोई वस्तु आते ही खंडित या खराब हो जाए तो भाग्य साथ नहीं दे रहा है।

पूजा के समय कुते के भौंकने या जानवर की आवाज सुनाई देने पर भी भाग्य खराब है यह समझना चाहिए।

पूजा के समय बच्चे के रोने या किसी सदस्य को नींद आती हो तो भी भाग्य का साथ नहीं मिलता है।

पूजा के समय अशुभ समाचार मिलने पर भी भाग्य का साथ नहीं है।

घर में अधिक मकड़ी के जाले लगने पर या मंदिर गन्दा होने पर भी भाग्य का साथ नहीं मिलता।

घर की सीवर लाइन में रिसाव व ठीक करवाने पर भी ठीक न हो तो भाग्य का साथ नहीं है। घर का सबसे छोटा सदस्य उठते ही खाने को मांगे तो भी भाग्य का साथ नहीं है।

पूजा स्थल में अगरबत्ती पूरी न जले या ज्योत में घी रहते हुए भी ठण्डा हो जाए तो भाग्य रुष्ट जानें। नया वस्त्र पहनते ही फट् जाए या चादर इत्यादि लाते ही फट् जाए तो भाग्य का साथ नहीं जानें। घर में शुभ कार्य में यदि घर का छोटा सदस्य बच्चा रोता हो तो भाग्य में अवरोध जानें।

खुशी में किसी रिश्तेदार द्वारा क्लेश करने पर भी भाग्य रूठ जाता है, अगर अक्सर ऐसा होता हो।

सपने में खंडहर, पुराना मंदिर, नाग नागिन अथवा वृद्ध या वृद्धा दिखाई दे तो भाग्य का फल प्राप्त नहीं होता।

भाग्य बदलने हेतु उपाय-

१. किसी भी वृद्ध, सफाईकर्मी, हिजड़े का अपमान न करें, न ही अपशब्द बोलें, इनका सम्बन्ध हमारे भाग्य से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से होता है।

२. घर से निकलते समय गुड़ खाकर व ठण्डा जल पीकर जाएं या जल भरे मटके लोटे का दर्शन करके जाएं।

३. सर्वदा भाग्य साथ देता रहे इसके लिए हर गुरु पुष्ययोग में बरगद(वट्) के पत्ते लायें, तीन साफ पत्ते लेकर एक पर हल्दी गंगाजल से 卐, दूसरे पत्ते पर केसर गंगाजल से ॐ, तीसरे पत्ते पर रोली गंगाजल से बनाकर घर के मन्दिर में रखें। धूप, दीप से पूजन करें। सभी जीवन की कठिनाईयों व आर्थिक समृद्धि की कामना करें, फिर जिस पर श्रीं लिखा है उसे चांदी के सिक्के के साथ धन रखने के स्थान पर रख दें। बाकी दोनों पत्ते मन्दिर में ही रखें। अगर और पत्ते हों तो वन्दनवार बनाकर मुख्यद्वार पर लगा दें। इसके प्रभाव से आश्चर्यजनक चमत्कार होगा। निवास स्थान के मुख्यद्वार के अन्दर माँ लक्ष्मी जी की तस्वीर जिसमें माँ के पीछे हाथी स्वर्ण वर्षा कर रहे हो स्थापित करें।

४. सात शुक्रवार पत्नी के हाथ से सात सुहागिनों को सुहाग सामग्री(सिन्दूर नेलपालिश सहित) उपहार में दिलायें इसमें इत्र व अगरबत्ती भी होनी चाहिए। आर्थिक मानसिक परेशानी अवश्य दूर होगी।

५. इक्कीस शुक्रवार निरन्तर सन्ध्याकाल पर माँ दुर्गा को ५ चन्दन अगरबत्ती अर्पित कर व सफेद मिष्ठान्न चढ़ाकर दुर्गा सप्त श्लोकी के दूसरे श्लोक का एक माला का जप स्फटिक की माला से करें।

६. सात शुक्रवार प्रात: स्नान करें, सफेद कढ़ाई वाले वस्त्र पहनकर साबूदाने की खीर बनायें। खीर में मिश्री व केसर के साथ २१ हरी इलायची डालें। खीर को प्रथम लक्ष्मीनारायण मन्दिर में अर्पित करें, फिर थोड़ी गाय को खिलायें शेष बची खीर कन्याओं में या गरीबों में बांटें।

८. सोमवार या बुधवार के दिन १०८ आटे की गोलियाँ बनायें और उनमें रामनाम लिखकर छोटी पर्ची डालें, इसके पश्चात् उन गोलियों पर कड़वे तेल का हल्का सा हाथ लगाकर मछलियों को खिलाने पर सोया भाग्य जग जाता है।

९. रविवार के दिन लाल बैल अथवा लाल गाय को गेंहू गुड के साथ मिलकार खिलायें।

१०. किसी भी पेड़ पर नियमित जल अर्पित करें व शनिवार मीठा जल पीपल पर चढ़ायें।

११. सात रविवार नारियल पर स्वयं की लम्बाई जितना कलावा बांधकर चलते पानी में प्रवाहित करें।

१२. चालीस दिन तक लगातार सुबह उठते ही प्रथम धरती को स्पर्श करें फिर दोनों हाथ ऊपर उठाकर आकाश से मनोकामना पूर्ति के लिए प्रार्थना करें, बैड के पास अपनी चप्पल न उतारें।

१३. रसोई में ४० दिन तक एक समय भोजन करें। प्रात: उठते ही घर की छोटी कन्या या बूढ़ी माँ, गुरु या अपने इष्ट को नमन करें।

उपरोक्त प्रयोग से न केवल भाग्य बदलनने में मदद मिलेगी अपितु जीवन खुशियों से भर उठेगा।

सन्तान बन्धन दोष दूर करने हेतु उपाय

११ बुधवार व ११ शनिवार लगातार उपाय करें। पहले ११ बुधवार करें, उसके पश्चात् ११ शनिवार करें। उपाय का समय बुधवार व शनिवार सायंकाल का ही हो। विशेष केवल प्रथम बुधवार व प्रथम शनिवार को ६ मीटर काला व ६ मीटर नीला वस्त्र लेना है फिर हर बुधवार व शनिवार सवा-सवा मीटर कपड़ा लेना है। उपाय शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार व शनिवार प्रारम्भ करें।

प्रयोग विधि- काले वस्त्र पर नीला वस्त्र रखें, उसमें ८०० ग्राम साबुत मूंग, ८०० ग्राम लाल मसूर, ५०० ग्राम चना, पान, ८०० ग्राम कच्चा कोयला, ६ कील बड़ी टोपी वाली जिनके ऊपर सफेद चूना लगाना है। सारी सामग्री की पोटली बनाकर पहले पति पत्नी के ऊपर ७ बार उतारे, फिर पत्नी पति के ऊपर से ७ बार उतार कर चलते पानी में प्रवाहित करें।

सन्तान की आयु वृद्धि हेतु उपाय

वंशदोष हो या सन्तान न बचती हो तो बच्चे के जन्म होने वाले दिन पीपल के वृक्ष के नीचे सवा किलो गुड़ व सवा किलो शककर गढ्ढा खोदकर दबा कर बच्चे की दीर्घायु की कामना करें। फिर बच्चा होने पर ७ दिन तक मिठाई न बांटें।

होली में किए जाने वाले उपाय

आर्थिक समृद्धि हेतु

होली दहन की शाम को मुख्यद्वार पर दो मुखी आटे का दीपक बनायें। गुलाल छिडककर ऊपर दीपक रखकर जलायें और अपनी समृद्धि की प्रार्थना करें। दीपक ठंडा होने पर अगले दिन होलिका जलने के स्थान पर रखें और पीछे मुडकर नहीं देखें।

कार्य बाधा निवृत्ति हेतु

११ कौडियाँ घर के बाहर रखकर उस पर होली की राख डाल दें। प्रार्थना करें फिर कौडियों को निकाल कर अलग कपड़े में बांधे और राख को अलग सफेद कपड़े में बांधकर पहले कौडियों को उसके उपरान्त राख को बहते जल में प्रवाहित करें।

होली की रात्रि में गोबर का दीपक बनायें, दहलीज के मध्य में दीपक पर काले तिल, गुड़, सरसों का तेल से जलायें। घर के बाहर ८०० ग्राम साबुत उड़द गिरायें। दरवाजा बन्द कर दें। सुबह दीपक होलिका जलने के स्थान पर रख दें। झाड़ू से दाल इकट्ठी कर पीपल पर छोड़ आयें या जल में प्रवाहित करें।

बीमारी दूर करने के लिए

चार गोमती चक्र अपने दाएं हाथ की मुट्ठी में पकड़कर अपनी अपनी बीमारी के बारे में बोलें, होलिका की ग्यारह परिक्रमा करें, १ जोड़ा लोंग, २ पान के पत्ते, थोड़ी सी मिश्री होलिका में अर्पित करें। गोमती चक्र पीड़ित व्यक्ति के बैड के पाये में चांदी का फ्रेम कराकर बांध दें। अगले दिन स्नान के पानी में होलिका की कुछ राख में चमेली का तेल मिलाकर नहाना है।

धन प्राप्ति हेतु

ग्यारह गोमती चक्र हाथ में लेकर धन वापिसी की कामना लेकर होलिका की ग्यारह परिक्रमा करें, प्रत्येक परिक्रमा में धन वापिसी की प्रार्थना करें, फिर किसी वीरान जगह में सफेद कागज पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जिससे धन वापिस प्राप्त करना चाहते हो। उसी कागज में ग्यारह गोमतीचक्र रखकर एक हाथ गहरे गड्ढे में दबा दें।

आ. मेघा शर्मा ज्योतिष भूषण एवं पं. एच. सी. शर्मा
N-562, सैक्टर 23, संजय नगर, गाजियाबाद उप्र.
मो. नं. 9810562705, 7289090688

श्री शिवाज्ञा द्विघटिका मुहूर्त्ता: यात्रादि मंगल कार्य सुशोभन चक्रमिदम्

श्री राजधानी पंचांगम्

माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण और भाद्रपद

रवि	दिन	माहेन्द्र २, अमृत ८, वक्र १०, शून्य ८, अमृत २
	रात्रि	शू.२, मा.२, शू.२, अ.४, शू.२, व.६, शू.६,मा.२,अ.४
चन्द्र	दिन	माहेन्द्र ४, वक्र ८, अमृत ६, वक्र ६, अमृत ४, शून्य २
	रात्रि	व.४, मा.४, अ.२, व.८, अ.४, शू.४, व.२, शू.२
मंगल	दिन	अमृत६, शून्य२, वक्र२, अमृत६, शून्य८, अमृत४,शू.२
	रात्रि	व.४, मा.४, अ.२, व.६, अ.४, शू.२, व.२,मा.२,अ.४
बुध	दिन	वक्र ४, अ.४, व.६, अ.४, शू.२, व.४, मा.२, अ.४
	रात्रि	शून्य२, अमृत६, माहेन्द्र४, वक्र ४, शून्य ४, अमृत १०
गुरु	दिन	अमृत ६, शून्य २, वक्र ४, अमृत ६, वक्र ८, अमृत ४
	रात्रि	व.४, मा.४, अ.२, व.८, अ.४, शू.४, अ.४
शुक्र	दिन	शून्य २, अमृत १६, वक्र ८, अमृत २, शून्य २
	रात्रि	व.४, शू.२, अ.६, व.६, मा.६, शू.२, अ.४
शनि	दिन	शू.४, व.२, शू.२, अ.८, शू.२, व.२, शू.४, अ.४,शू.२
	रात्रि	वक्र६, अमृत६, वक्र४, शून्य४, अमृत४, शून्य२, अमृत४

ज्येष्ठ और आषाढ़

रवि	दिन	अमृत ६, वक्र ८, अमृत ८, शून्य २, माहेन्द्र २, शून्य ४
	रात्रि	शून्य २, अमृत ८, वक्र ६, अमृत ६, वक्र ४, माहेन्द्र ४
चन्द्र	दिन	अमृत ४, वक्र ४, अमृत ६, वक्र १६
	रात्रि	वक्र ६, अमृत ८, वक्र ८, माहेन्द्र २, वक्र ६
मंगल	दिन	शून्य४, वक्र६, अमृत४, शून्य४, वक्र६, शून्य२, अमृत४
	रात्रि	शून्य २, अमृत ८, वक्र ६, अमृत ६, वक्र ६, माहेन्द्र २
बुध	दिन	शून्य२, मा.४, अ.४, वक्र६, शू.२, वक्र४, अमृत६, शू.२
	रात्रि	वक्र ४, अमृत ४, वक्र ८, अमृत ६, शून्य ८
गुरु	दिन	अमृत४, वक्र६, अमृत४, शून्य४, वक्र६, शून्य२, अमृत४
	रात्रि	वक्र ८, अमृत६, वक्र ६, अमृत ६, वक्र ४
शुक्र	दिन	अमृत२, वक्र२, अमृत६, वक्र६, अमृत८, शून्य२, वक्र४
	रात्रि	वक्र४, अमृत४, शून्य४, अमृत२, वक्र४, अमृत४, शून्य८
शनि	दिन	माहेन्द्र २, शून्य ६, अमृत ८, वक्र १०, शून्य ४
	रात्रि	शू.२, व.४, मा.२, अ.४, शू.१०, अ.२,व.२, शू.२, अ.२

आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष और पौष

रवि	दिन	शून्य४, अमृत६, वक्र६, अमृत६, वक्र४, अमृत२, शून्य२
	रात्रि	शून्य ४, अमृत ४, वक्र ६, अमृत ६, शून्य ४, वक्र ६
चन्द्र	दिन	अमृत ८, माहेन्द्र ४, शून्य ६, अमृत ६, माहेन्द्र ६
	रात्रि	वक्र ६, अमृत ८, वक्र ६, अमृत ४, शून्य २, वक्र ४
मंगल	दिन	अमृत४, वक्र६, अमृत२, शून्य४, माहेन्द्र६, शून्य६, वक्र२
	रात्रि	वक्र ६, अमृत ८, वक्र ६, अमृत ४, शून्य २, वक्र ४
बुध	दिन	शून्य २, माहेन्द्र ४, अमृत ८, वक्र ६, शून्य ८, वक्र २
	रात्रि	अमृत १०, शून्य २, वक्र ८, अमृत ६, शून्य २, वक्र २
गुरु	दिन	अ.२, शू.४, व.६, अ.४, शू.२, व.४, अ.६, मा.२
	रात्रि	शून्य४, वक्र४, माहेन्द्र२, अमृत६, वक्र६, शून्य२, वक्र६
शुक्र	दिन	वक्र८, अमृत४, शून्य२, अमृत२, वक्र४, अमृत६, माहेन्द्र४
	रात्रि	वक्र४, शून्य२, अमृत६, शून्य६, माहेन्द्र२, शून्य२, वक्र८
शनि	दिन	शू.४, अ.४, शू.४, अ.८, शू.२, व.४, शू.२, मा.२
	रात्रि	शून्य२, वक्र४, अमृत६, वक्र४, अमृत६, वक्र४, अमृत४

न तिथिर्न च नक्षत्रं योगं करणम तथा। शिवस्याज्ञां समादाय देवकार्यं विचिन्तयेत्॥ माहेन्द्रममृतं वक्र शून्यं क्षण चतुष्टयम्। क्रियते मिहिरेणेदं यात्रोद्वाहादि मंगले॥ माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम्। वक्रे गतिविलम्ब:स्याच्छून्ये च मरणंभयम्॥ के अनुसार देश के विभिन्न भागों में ज्योतिर्विद पण्डितजन मुहूर्त्त सुनिश्चित किया करते हैं। शिव आज्ञा दुघड़िया मुहूर्त्त के संदर्भ में रात्रि तथा दिन का मान ३०-३० घटी का लिखा गया है। सूक्ष्मता की जिज्ञासा हो तो दिनमान अथवा रात्रिमान की घटा-बढ़ी ततुल्य अनुपात से कम बढ़ती स्वयं कर सकते हैं। माहेन्द्र मुहूर्त्त का (घडीकाल) शुभफलदायक होता है। ऐसे ही अमृत श्रेष्ठ, वक्र कष्टसाध्य, शून्य अशुभ माना गया है। यात्रा अथवा अन्यान्य मांगलिक कार्य सुसम्पादन हेतु समय निर्धारण कर लाभ के भागीदार बन सकते हैं। **'मुहूर्त्तो घटिकाद्वियम'** प्रत्येक मुहूर्त्त २ घटी बराबर ४८ मिनट का होता है। श्रीमिहिराचार्य-जी ने १२-१२ घंटे का समय अहोरात्र के दो भागों में मान रखा है। दुघड़िया मुहूर्त्त का पूर्वी उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, बिहार, राजस्थान तथा गुजरात में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। मिथिलांचल के राजा जनकजी की यात्रा का वर्णन श्री रामचरितमानस में इस प्रकार किया है- **दुघरी साधि चले तत्काला। किए विश्रामु न मग महिपाला॥**

राशिफल गोचर ग्रहानुसार सं. 2077 (अप्रैल 2020 से मार्च 2021 ई. तक)

मेष चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ,

अप्रैल- मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। सहयोग से अधूरा काम बनेगा। परिवार में जिम्मेदारी बढ़ेगी। स्थान परिवर्तन सुखद रहेगा। **मई-** में नया कुछ काम बनेगा। बढ़ते जनसम्पर्क का फायदा मिलेगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। मंगलोत्सव में जाने का निमन्त्रण मिलेगा। ग्रहशांति फायदेमंद रहेगी। **जून-** ग्रहचाल का प्रभाव मध्यम रहेगा। अपने कर्त्तव्य का सही ढंग से पालन करें। वाणी पर नियन्त्रण बनाये रखें। प्यार-प्रीति का चक्कर चलेगा। **जुलाई-** बढ़ती जिम्मेदारियों को संभालने में आप सक्षम होंगे। मर्यादा रहित व्यवहार से बचे रहें। मेहनत के चलते लाभ होगा। आगम प्राप्ति का नया मार्ग खुल सकता है। **अगस्त-** सूझ-बूझ परित्वेन लाभ का नया रास्ता खुलेगा। देश-विदेश से शुभाशुभ समाचार मिलेगा। गृहस्थी में हास्यरस आमोद-प्रमोद बढ़ेगा। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। **सितम्बर-** अधूरा काम पूरा हो जायेगा। नये मित्रों से फायदा होगा। राज-समाज में जनसम्पर्क बढ़ेगा। लम्बी यात्रा, घर गृहस्थी का विचार बनेगा। **अक्टूबर-** में इच्छित वस्तु खरीदी जायेगी। साझे काम की रूपरेखा बनेगी। अनावश्यक दौड़-धूप से बचे रहें। उच्चाधिकारी की हाँ में हाँ मिलाते रहें। **नवम्बर-** रचनात्मक काम, साहित्य-संगीत में मन रमेगा। मंगलोत्सव मिलन हर्षोल्लास। जमा-खर्च का सन्तुलन बना रहेगा। भूमि, वाहनादि का लेन-देन होगा। **दिसम्बर-** मास कुछ विशेषताएं लिये आ रहा है। मेहनत के चलते भाग्य का सितारा बुलन्द होगा। शनि का उपाय करें। कोई तुम्हें नाहक परेशान करने का प्रयास करेगा। **जनवरी-** आवश्यक वस्तु की खरीद-फरोख्त होगी। पदोन्नति की खबर मन खुश करेगी। गृहस्थी में कटुता-वादिता के बाद सरसता बनेगी। बच्चे प्रसन्न रहेंगे। **फरवरी-** स्वयं की सूझ-बूझ से काम लें, समस्याओं का समाधान मिलेगा। राजनैतिक लाभ का सुयोग है। शौक-मौज की वस्तु खरीदी जायेगी। शुभाशुभ समाचार मिलेगा। **मार्च-** अकर्मण्यता अदृश्य फलों में बाधक जानें। कानूनी विवाद नया मोड़ ले सकता है। योजना पूर्ति में किसी का सहयोग अपेक्षित रहेगा।

वृष इ, उ, ए, ओ, वा, वि, वु, वे, वो,

अप्रैल- नये काम का सुयोग है। सामाजिक सम्मान बढ़ेगा। घर गृहस्थी में चहल-पहल बढ़ेगी। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। मर्यादा रहित व्यवहार से बचें। **मई-** प्रतिस्पर्धाओं में चित्ताकर्षण होगा। प्रतियोगिता में नम्बर मिलेगा। लम्बी यात्रा का विचार बनेगा। धार्मिक काम का लाभ होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। **जून-** मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। मेहनत के चलते सितारा बुलन्द होगा। रुका हुआ धन आयेगा। अधूरा काम पूरा हो जायेगा। महिलायें इच्छित वस्तु प्राप्त करेंगी। **जुलाई-** असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। इच्छित सामान की खरीद-फरोख्त अच्छी रहेगी। पड़ौसी से आनन्दानुभूति का अनुभव होगा। **अगस्त-** गोचर की अनुकूलता से मन प्रसन्न रहेगा। धार्मिक काम की इच्छा बलवन्ती होगी। मंगलोत्सव की सूचना मिलेगी। मर्यादा रहित व्यवहार से बचे रहें। **सितम्बर-** घर गृहस्थी का विचार पूरा हो जायेगा। देश-देशान्तर से सामाचार आयेगा। साथी उलझन पैदा कर सकता है। अधिकारी की घनिष्ठा से बचे रहें। **अक्टूबर-** साझे कारोबार की रूपरेखा बनेगी। बढ़ते उत्तरदायित्व को संभालने में आप सक्षम होंगे। बच्चों की साहित्य, संगीत, पढ़ाई-लिखाई में रुचि बढ़ेगी। **नवम्बर-** मनोरथ सिद्धि होगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। कानूनी विवाद को मध्यस्थता से सुलझाने की कोशिश करें। नये काम में सावधानी बरतें। **दिसम्बर-** मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। साहित्य-संगीत में मन रमा रहेगा। इच्छित सामान खरीदा जायेगा। देश-विदेश से समाचार आयेगा। **जनवरी-** श्रीवृद्धि सौख्य-समृद्धि के लिये अच्छा रहेगा। महत्वपूर्ण योजना अधूरी रह सकती है। स्थान परिवर्तन सुखद नहीं। आश्वासन अधूरे, भाग्य की विडम्बना जानें। **फरवरी-** रोजमर्रा के कामों में वृद्धि होगी। यात्रा लाभप्रद रहेगी। सुख-सुविधा की वस्तु मिलेगी। श्रीवृद्धि से पड़ौसी को ईर्ष्या होगी। कानूनी विवाद से बचें। **मार्च-** प्रतिस्पर्धाओं में मन उलझा रहेगा। अचानक लाभ प्राप्त होगा। मंदिर में दर्शन लाभ होगा। उन्नतिप्रद समाचार से मन खुश होगा। पढ़ाई में मन लगेगा।

मिथुन क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा,

अप्रैल- रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें, आश्चर्यजनक लाभ होगा। दूर-समीप की यात्रा का विचार बनेगा। देवपूजन का लाभ मिलेगा। **मई-** कार्यारम्भ कीजिए, सफलता मिलेगी। बनते-बिगड़ते परिवेशं में नये आयाम मिलेंगे। वाहनादि का सुख मिलेगा। परस्पर अन्तर्विरोध से बचे रहें। **जून-** व्यर्थ के झगड़े-झमेले से बचे रहें। विकास को बल मिलेगा। आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। राज-समाज में मान सम्मान बढ़ेगा। **जुलाई-** समय का सही उपयोग करने वाले लाभ के भागीदार बनेंगे। राजनीति के क्षेत्र में सितारा बुलन्द होगा। जमीन-जायदाद, वाहनादि का सुख मिलेगा। **अगस्त-** साझे काम में पूंजी का निवेश कम करें। स्थान परिवर्तन से बचे रहें। अधिकारी की हाँ में हाँ मिलाते रहें। आशातीत लाभ का संयोग बनेगा। **सितम्बर-** गोचर का प्रभाव मध्यम रहेगा। साझे में पूंजी का निवेश न करें। बढ़ते जन सम्पर्क का फायदा उठायें। घर गृहस्थी में सरसता बनाये रखें। **अक्टूबर-** जमा-खर्च का सन्तुलन बना रहेगा। इच्छित भूमि वाहनादि का लेन-देन हित में रहेगा। गृहस्थी में नई खुशी सम्भव है। **नवम्बर-** रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। नई जिम्मेदारियों को संभालें। आलस्य प्रमाद से बचे रहें। प्रतियोगिता परिणाम उत्तम निकलेगा। देवताओं को खीर अर्पण से लाभ। **दिसम्बर-** इष्ट मित्र समागम होगा। अचानक लाभालाभ होने का संयोग बना है। बढ़ती उच्चाकांक्षाओं से क्षोभ होगा। मेहनत के चलते सितारा बुलन्द होगा। आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। **जनवरी-** नित्यानन्द का अनुभव होगा। नये काम का नेतृत्व करना पड़ेगा। परस्पर नोंक-झोंक के योग बन रहे हैं। वाणी पर नियन्त्रण बनाये रखें। दाम्पत्य सुख मिलेगा। **फरवरी-** मास कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। मेहनत के चलते सितारा बुलन्द होगा। नये सम्बन्धों का फायदा मिलेगा। शुभ समाचार आयेगा। कानूनी विवाद सुलझ जायेगा। **मार्च-** की ग्रहचाल भाग्य विकास में सहायक है। मित्र सहयोग से योजना पूरी होगी। परिवार में चहल-पहल बढ़ेगी। शत्रु षडयन्त्र से बचे रहें।

कर्क — ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो,

अप्रैल- बढ़ती जिम्मेदारियों को संभालना होगा। असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। सुखोपभोग की वस्तु खरीदी जायेगी। यात्रा छोटी, मगर लाभप्रद रहेगी। **मई-** भाग्यानुकूल विकास को बल मिलेगा। नये सम्पर्क में सावधानी बरतें। पुराने रोग-ऋणादि से छुटकारा होगा। इष्ट मित्र समागम। खरीद-फरोख्त की इच्छा बलवन्ती होगी। **जून-** नित्यानन्द का अनुभव होगा। मेहनत के चलते सितारा बुलन्द होगा। समय को ध्यान में रखते हुए काम करें। दोस्तों के साथ यात्रा का अवसर मिलेगा। **जुलाई-** असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। योजना पूर्ति में मदद मिलेगी। प्रतियोगिता में विजय होगी। स्थानान्तरण सुखद नहीं। मंदिर में दान ग्रहदशा सुधारेगा। **अगस्त-** कुछ समय उलझनपूर्ण रहेगा। सोचा हुआ काम बनेगा। अन्तर्मन के क्षोभ से बचें। वाहनादि का सुख मिलेगा। साहित्य संगीत में रुचि बढ़ेगी। यात्रा लाभप्रद रहेगी। **सितम्बर-** राज समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। पुराने रोग ऋणादि से छुटकारा मिल जायेगा। श्रीवृद्धि से पड़ौसी नाखुश रहेगा। **अक्टूबर-** पुराने परिचित से मिलन, धन लाभ सम्भव है। उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। पदोन्नति का समाचार मन खुश करेगा। लम्बी यात्रा का विचार बनेगा। **नवम्बर-** समय का सही उपयोग करें। वाणी पर नियन्त्रण बनाये रखें। कारोबार में आश्चर्यजनक लाभ होगा। भौतिक सुख का सामान खरीदा जायेगा। **दिसम्बर-** बढ़ते उत्तरदायित्व को संभालें। असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। विकास को नई दिशा मिलेगी। दाम्पत्य सुख मिलेगा। खरीद-फरोख्त की इच्छाशक्ति बढ़ेगी। **जनवरी-** कुछ विशेषतायें लिये आ रहा है। रुका हुआ धन मिलेगा। अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ होगा। मेहनत के चलते सितारा बुलन्द होगा। उपयोगी वस्तु खरीदी जायेगी। **फरवरी-** यह महीना हंसी खुशी से बीतेगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ होगा। समयोचित काम करने पर सितारा चमकेगा। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। **मार्च-** राजनीतिक जोड़-तोड़ में सफल होंगे। प्रियजन वियोग से क्षोभ सम्भव है। कानूनी विवाद और व्यवसायिक उलझन सुलझ जायेगी। सुखद समाचार मिलेगा।

सिंह — मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे,

अप्रैल- मित्र मिलन, मांगलिक अवसर पर सुख का अनुभव होगा। असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। शत्रु षड्यन्त्र में व्यस्त रहेगा। कानूनी विवाद में विजय होगी। **मई-** समय आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। भाग्य के भरोसे न रहें। अपने बल-पौरुष द्वारा परिस्थितियों पर काबू पाने का प्रयास करें। नये सम्पर्क का लाभ होगा। **जून-** मास आपके लिए अति उत्तम है। रुका हुआ धन मिलेगा। योजना किसी के सहयोग से पूर्ण होगी। शत्रुओं को आप मात देने में सक्षम होंगे। **जुलाई-** ग्रहानुसार व्यवसायिक क्षेत्र में पर्याप्त वृद्धि होगी। नये विचारों का उदय होगा। व्यर्थ भ्रमण से बचे रहें। साहित्य, संगीत एवं ललित कलाओं में रुचि बनेगी। **अगस्त-** मास का पूर्वार्ध उत्तम नहीं है। मेहनत के चलते सफलता मिलेगी। चौराग्नि भय व्याप्त रहेगा। उत्तरार्ध में आर्थिक लाभ का सुयोग है। समयोचित आहार व्यवहार का ध्यान रखें। **सितम्बर-** ग्रहस्थिति मनोत्साह में वृद्धिकारक है। अचानक लाभालाभ, हर्ष विषाद। कानूनी-मानसिक परेशानी सम्भव है। प्रतियोगिता परिणाम उत्तम निकलेगा। **अक्टूबर-** पड़ौसियों से सम्बन्धों में सुधार होगा। आशा पर निराशा के योग हावी हो सकते हैं। भजन से मानसिक शान्ति मिलेगी। अचानक लाभ की खुशी होगी। **नवम्बर-** गृहस्थ सुख का अनुभव होगा। राज समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। भाग्योन्नति के साथ धन-यश का लाभ भी होगा। पूर्व निर्धारित योजना के परिणाम मिलेंगे। **दिसम्बर-** घूमने की इच्छा बलवन्ती होगी। राजकीय उलझनों से बचें। मंगलोत्सव मिलन, हर्षोल्लास होगा। विरोधियों के कुचक्र से बचें। स्वास्थ्य नरम चलेगा। **जनवरी-** जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा। चालू कार्यों में रुकावटें आयेंगी। दूर समीप की यात्रा सम्भव है। व्यर्थ भ्रमण विवाद से बचे रहें। प्रतिकूल समाचार से क्षोभ होगा। **फरवरी-** व्यवसायिक क्षेत्र में रद्दोबदल के योग बन रहे हैं। हर्षोल्लास में समय व्यतीत होगा। बिगड़े काम बनने की पूर्ण आशा है। मिले-जुले फल मिलेंगे। **मार्च-** मामूली विवाद को अनावश्यक तूल न दें। व्यवसाय में सोच विचार से काम लें। शिक्षा तथा व्यवसाय के क्षेत्र में व्यय होगा। अनजान व्यक्ति से दोस्ती आपके हित में नहीं रहेगी।

कन्या — टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो,

अप्रैल- बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। नित्यानन्द का अनुभव होगा। गृहस्थी में सरसता बढ़ेगी। यात्रा छोटी, किन्तु मनोरंजक रहेगी। **मई-** मेहनत के चलते सितारा बुलन्द होगा। इच्छित वस्तु का सुख मिलेगा। दिनचर्या अव्यवस्थित न होने दें। कानूनी विवाद नया मोड़ ले सकता है। **जून-** में बढ़ते उत्तरदायित्व को संभालें। संभव हो तो लम्बी यात्रा टाल दें। साझे काम में लाभ होगा। व्यर्थ विवाद से बचे रहें। सेहत पर मौसम का असर पड़ेगा। **जुलाई-** नौकरी की कठिनाई हल होगी। घर गृहस्थी का विचार पूरा हो जायेगा। परदेश से सुखद समाचार आयेगा। राजकीय आश्वासन अधूरे, भाग्य की विडम्बना जानें। **अगस्त-** सौख्य-समृद्धि, श्रीवृद्धि से साथियों को परेशानी होगी। सम्भव हो तो लम्बी यात्रा को टाल कर दें। स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें। **सितम्बर-** यह मास ग्रहचाल के प्रभाव से लाभदायक रहेगा। बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। दीर्घकालीन विवाद सुलझ जायेगा। लम्बी यात्रा सम्भव है। **अक्टूबर-** मास विशेषतायें लिए आ रहा है। अचानक लाभ होगा। बढ़ते उत्तरदायित्व को संभालें। देवदर्शन पुण्यार्जन का लाभ मिलेगा। लम्बी योजना में धन खर्च होगा। **नवम्बर-** लाभ-खर्च समान रहेगा। उन्नतिप्रद समाचार मिलेगा। दीर्घकालीन विवाद सुलझेगा। गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। साझे क़ारोबार में सावधानी बरतें। **दिसम्बर-** कर्मोद्योग में शैथिल्यता नुकसानदायक है। नये अवसर को भुनायें। वाणी पर नियन्त्रण बनाये रखें। आशातीत लाभ का संयोग बनेगा। सुखद समाचार मिलेगा। **जनवरी-** चालू कामों में सजग रहें। आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। राजनीतिक सम्पर्क से फायदा मिलेगा। पड़ौसी, उच्चाधिकारी गतिरोध पैदा करेगा। मर्यादारहित व्यवहार छोडें। **फरवरी-** अधूरा पड़ा काम पूरा हो जायेगा। धन प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। दोस्त के साथ यात्रा का समय मिलेगा। मंगलोत्सव मिलन हर्षोल्लास। **मार्च-** मित्रों से आर्थिक मदद मिलेगी। अनपेक्षित आवागमन से क्षोभ होगा। इच्छित भूमि वाहनादि का लेन-देन होगा। घर परिवार में मंगलोत्सव, हास्यरस बढ़ेगा।

तुला — रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते,

अप्रैल- व्यर्थ की भागदौड़ से बचें। मित्र मदद करेंगे। कानूनी विवाद का सामना करना पड़ेगा। असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। गृहस्थी में सरसता बढ़ेगी। **मई-** कारोबार में सहयोग मिलेगा। भूमि वाहन की खरीद-फरोख्त होगी। परिवार में खुशियाँ व्यापेंगी। नये मेहमान की खुशी होगी। स्वास्थ्य की परेशानी हो सकती है। **जून-** मास उन्नतिप्रद रहेगा। नये सम्पर्क से लाभ मिलेगा। पारिवारिक समस्या सुलझेगी। व्यर्थ कानूनी उलझन से बचें। शत्रु षड्यन्त्र से बचें। **जुलाई-** जमा-पूंजी में बढ़ोत्तरी होगी। शत्रु षड्यन्त्र में संलग्न रहेगा। घर-परिवार में कोई नई खुशी मिलेगी। बच्चों का मन खेलकूद में लगा रहेगा। **अगस्त-** मेहनत के चलते सेहत का ख्याल रखें। अपेक्षित लाभ संदिग्ध रहेगा। तबादला लाभदायक रहेगा। विरोधी षड्यन्त्र रच सकता है। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। **सितम्बर-** मास फायदेमन्द रहेगा। नई योजना हाथ में आयेगी। सरकार द्वारा लाभ के योग हैं। धार्मिक कार्यों का सुअवसर मिलेगा। यात्रा छोटी व लाभप्रद रहेगी। **अक्टूबर-** अचानक लाभालाभ के योग बन रहे हैं। सूझबूझ से काम लें। बैंक बैलेन्स बढ़ेगा। उपयोगी वस्तु खरीदी जायेगी। समाजमें मान-सम्मान भी बढ़ेगा। **नवम्बर-** तरक्की के अवसर मिलेंगे। व्यापारी नया काम शुरु कर सकते हैं। आर्थिक मदद मिलेगी। बच्चों को खेलकूद एवं महिलाओं को भ्रमण का अवसर मिलेगा। **दिसम्बर-** साहित्य-संगीत के प्रति रुचि जागृत होगी। नई जिम्मेदारियाँ उठाने में आप सक्षम होंगे। मदद की आशा न करें। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। **जनवरी-** आश्वासन अधूरे, भाग्य की विडम्बना जानें। स्थानान्तरण लाभप्रद हो सकता है। कानूनी पचड़ों में उलझ सकते हैं। परिवार में खुशियाँ मिलेंगी। सुख के साधन प्राप्त होंगे। **फरवरी-** व्यवसाय में रुकावट आ सकती है। मित्र सहयोग मिलेगा। नौकरीपेशा वर्ग खुश रहेगा। व्यक्तिगत समस्याएं सुलझेंगी। सपरिवार कहीं घूमने-फिरने का अवसर मिलेगा। **मार्च-** कोई नया काम बनेगा। पदोन्नति का अवसर मिलेगा। दूर-समीप की यात्रा होगी। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। पक्षियों को चुग्गा डालें।

वृश्चिक — तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू,

अप्रैल- मास ग्रहचाल के अनुसार से अच्छा रहेगा। भाग्य विकास का संयोग बनेगा। कानूनी विवाद सुलझेगा। देश-विदेश से सुखद समाचार आयेगा। **मई-** मास नयापन लिए आ रहा है। अधूरे काम को पूरा करने में सहयोग मिलेगा। घर-गृहस्थी में हास्यरस बढ़ेगा। मित्र सहयोग से नया रास्ता खुलेगा। **जून-** जमीन-जायदाद, वाहन, पशु-पक्षी का लेन-देन फायदे में रहेगा। रुका हुआ धन मिलेगा, मगर देर से। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। **जुलाई-** आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। नौकरी पेशा लोगों को विशेष लाभ होगा। कानूनी विवाद नया मोड़ लेगा। उच्च अधिकारी से सावधान रहें। **अगस्त-** बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। बच्चे नित्यानन्द का अनुभव करेंगे। प्रतियोगिता में जीत होगी। गृहस्थी का सुख मिलेगा। अन्तर्विरोध से बचे रहें। **सितम्बर-** में नया कुछ करने को मिलेगा। साझे कारोबार का विचार बनेगा। तबादले की प्रक्रिया हो सकती है। मेहमान से खर्च की वृद्धि होगी। यात्रा छोटी मगर लाभप्रद रहेगी। **अक्टूबर-** रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। दाम्पत्य सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे। आलस्य प्रमाद अवन्नति का कारक है। **नवम्बर-** घर-गृहस्थी, दफ्तर आदि में उत्तरदायित्व बढ़ेगा। राज समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। उच्चाकांक्षाओं पर नियन्त्रण रखें। पड़ौसी के कुचक्र से सावधान रहें। **दिसम्बर-** में नित्यानन्द का अनुभव होगा। साझे कारोबार में नफा मिलेगा। बढ़ती उच्चाकांक्षाओं पर काबू पाना मुश्किल होगा। अनजान से दोस्ती का हाथ न मिलायें। साहित्य-संगीत में रुझान होगा। **जनवरी-** कार्यारम्भ कीजिए, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। खरीद-फरोख्त के धन्धे में मुनाफा होगा। कानूनी विवाद ले-देकर सुलझ जायेगा। **फरवरी-** अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ होगा। आमदनी का नया रास्ता खुलेगा। आमोद-प्रमोद में समय बीतेगा। घर-गृहस्थी का विचार पूरा होगा। **मार्च-** श्रम संघर्ष अधिक, लाभ कम मिलेगा। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद से बचे रहें। उन्नतिप्रद समाचारसे खुशी होगी। राज समाज में रुतबा बढ़ेगा।

धनु — ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे,

अप्रैल- तरक्की से मन प्रसन्न होगा। परस्पर मनोमालिन्य सम्भव है। पुरानी निराशा समाप्त होकर नया प्रगतिपथ मिलेगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। **मई-** शारीरिक व व्यापारिक परेशानियाँ बढ़ सकती हैं। कठिन परीक्षा का समय है। देश-विदेश से समाचार मिलेगा। स्थान परिवर्तन, विरोधियों पर विजय मिलेगी। **जून-** विदेश यात्रा का सुयोग है। कार्यपूर्ति में सहयोग मिलेगा। व्यवसाय में कोई नया समझौता हो सकता है। अध्ययन में समय बीतेगा। अत्याधिक श्रम संघर्ष दौड़-धूप रहेगी। **जुलाई-** नये व्यक्ति से लाभ उठाने में आप सफल होंगे। स्थायी सम्पत्तियाँ बनेंगी। व्यापार में किसी प्रकार का जोखिम न उठायें। गाय को हरा चारा खिलायें। **अगस्त-** अधिक कार्य व्यस्तता रहेगी। अच्छे लाभ के आसार हैं। वायु-उदर विकार से मानसिक अशान्ति रहेगी। अभद्र व्यवहार न करें। बच्चों की शिक्षा में प्रगति होगी। **सितम्बर-** सामाजिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। लम्बी यात्रा से क्षोभ, पारितोषिक से खुशी मिलेगी। घर गृहस्थी का विचार पूरा होगा। कामों में कोताही न बरतें। **अक्टूबर-** गोचर ग्रहानुसार धनार्जन के साधन बढ़ेंगे। वाणी एवं क्रिया कलापों पर नियन्त्रण बनाये रखें। स्वास्थ्य कुछ प्रतिकूल चलेगा। छोटी मोटी दिक्कतों से घबरायें नहीं। **नवम्बर-** यह मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। नया व्यवसायिक सामंजस्य स्थापित होगा। उतार-चढ़ाव के दौर से गुजरना पड़ेगा। मनोत्साह में वृद्धि होगी। **दिसम्बर-** मास सुखदायक है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। कार्य व्यवसाय में परिजनों के सहयोग से लाभ होगा। परिवारीजनों से व्यर्थ विवाद से बचे रहें। **जनवरी-** धार्मिक कृत्यों से सन्तुष्टि मिलेगी। धोखेबाजों से सावधान रहें। राज समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। किसी से अनायास मिथ्या विवाद झगड़ा भी सम्भव है। **फरवरी-** हर्षोल्लास के साथ क्षणिक विषाद भी होगा। देवदर्शन-यात्रा का विचार बनेगा। नई योजना में सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता में नम्बर मिलेगा। **मार्च-** जोड़-तोड़ के काम में सफल होंगे। मानसिक शान्ति मिलेगी। समस्याओं के उचित समाधान होंगे। कर्मोद्योग में तत्परता से भाग्य का सितारा चमकेगा।

मकर भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल- यह मास ग्रहानुसार मध्यम रहेगा। कारोबार में समझौता होगा। प्रतियोगिता परिणाम उत्तम, स्पर्धा से बचें। कानूनी विवाद समझौते के तहत सुलझेगा। **मई-** भौतिक विकास को बल मिलेगा। नया समझौता आपके फायदे में रहेगा। राजनीतिक सम्पर्कों से लाभ मिलेगा। मित्रों संग मटरगस्ती होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। **जून-** कार्यारम्भ कीजिए, सफलता का सुयोग है। अनपेक्षित आगन्तुकों से गृहखर्च में वृद्धि होगी। सहपरिवारियों का सहयोग मिलेगा। भौतिक सुख मिलेगा। **जुलाई-** पारिवारिक बोझ बढ़ेगा। घर गृहस्थी की समस्या सुलझेगी। नये आयाम की प्राप्ति होगी। सामाजिक एवं राजनीतिक सम्पर्कों से लाभ होगा। **अगस्त-** नई खुशी का अवसर आयेगा। व्यापार में नई योजना बनेगी। सामाजिक एवं अध्यात्मिक उन्नति होगी। दाम्पत्य सुख मिलेगा। बच्चों का परिणाम श्रेष्ठ रहेगा। **सितम्बर-** राजनीतिक सम्पर्क से लाभ होगा। विरोधियों को शिकस्त मिलेगी। सामाजिक धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। जमापूंजी में बढ़ोत्तरी होगी। बच्चों का मन खेलकूद में लगेगा। **अक्टूबर-** कार्यारम्भ कीजिए, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। नये सम्बन्धों में सावधानी बरतें। उपयोगी वस्तु खरीदी जायेगी। गृहस्थी का सुख मिलेगा। **नवम्बर-** विचाराधीन योजनापूर्ति में मित्रों का सहयोग मिलेगा। दूर-समीप की यात्रा पर जाना पड़ सकता है। जमीन-जायदाद, वाहनादि की खरीद-फरोख्त होगी। **दिसम्बर-** पड़ौसियों द्वारा अमर्यादित व्यवहार से क्षोभ होगा। सहयोगियों के साथ मौजमस्ती का मौका मिलेगा। मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्यार-प्रीति का चक्कर चलेगा। **जनवरी-** ग्रहानुसार असामान्य परिस्थिति से गुजरना पड़ सकता है। इष्ट मित्रों से सहयोग की आशा व्यर्थ रहेगी। पारिवारिक सुख मिलेगा। यात्रा लम्बी व आनन्ददायक रहेगी। **फरवरी-** इस मास में अपेक्षित सफलता मिलेगी। बैंक बैलेन्स में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य में सफलता मिले। दाम्पत्य एवं पारिवारिक सुखोपभोग का अवसर मिलेगा। **मार्च-** कहीं घूमने फिरने का अवसर मिलेगा। मन आध्यात्मिक सुख पायेगा। उच्चाधिकारियों से मधुर सम्बन्ध बनेंगे। नया प्रोजेक्ट प्रारम्भ होगा।

कुम्भ गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द,

अप्रैल- घर गृहस्थी की खुशी होगी। निराशा आशा में बदल जायेगी। शुभाशुभ खबर आयेगी। इच्छित वस्तु का लाभ मिलेगा। तीव्र लाभ की जिज्ञासा प्रबल होगी। **मई-** कारोबार की नई रूपरेखा सामने आयेगी। साहित्य-संगीत में रुचि बढ़ेगी। मेहनत के चलते सेहत का ख्याल रखें। यात्रा लाभप्रद रहेगी। घर गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। **जून-** अचानक धनागमन का संयोग बनेगा। अधिकांश समय हंसी-खुशी से बीतेगा। साझे काम का विचार बनेगा। मंगलोत्सव का समाचार मिलेगा। **जुलाई-** बढ़ते जनसम्पर्क से लाभ उठाने में आप सफल होंगे। देश विदेश से शुभ समाचार मिलेगा। अपने कर्त्तव्य का पालन करें। पदोन्नति हर्षोल्लास का कारण बनेगी। **अगस्त-** आशा निराशा का योग समान है। मित्रों से मदद की अपेक्षा व्यर्थ रहेगी। बड़े अधिकारी की घनिष्ठता से बचे रहें। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। वाणी पर नियन्त्रण बनाये रखें। **सितम्बर-** मास नई खुशी लिए आ रहा है। सोची समझी योजना कारगर रहेगी। नये मेहमान के आने से खुशी होगी। यात्रा छोटी, मगर लाभप्रद रहेगी। **अक्टूबर-** दुविधाजनक परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। लाभ होगा मगर देर से। देश-देशान्तर से समाचार मिलेगा। मित्रों के साथ यात्रा पर जाना होगा। **नवम्बर-** मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। अचानक लाभ होगा। बढ़ते उत्तरदायित्व को संभालें। मौसम की प्रतिकूलता से बचे रहें। धार्मिक यात्रा, देवदर्शन का लाभ होगा। **दिसम्बर-** अनावश्यक व्यय, व्यर्थ के झमेलों से बचे रहें। बढ़ती जिम्मेदारी को संभालें। अतीत के संदर्भ में अनुसंधान से लाभ होगा। रोग-ऋणादि से राहत मिलेगी। **जनवरी-** कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहें। पदोन्नति हर्ष का कारण बनेगी। धन प्राप्ति की रूपरेखा बनेगी। गृहस्थी में कटुता-वादिता तदन्तर सरसता बढ़ेगी। **फरवरी-** दौड़धूप के चलते सेहत का ध्यान रखें। सोचीसमझी योजना करगर रहेगी। कानूनी विवाद से राहत मिलेगी। चल-अचल सम्पत्ति में इजाफा होगा। **मार्च-** मास कुछ विशेषताएं लिए आयेगा। उपयोगी वस्तु खरीदी जायेगी। नये काम बनेंगे, यशोपलब्धि का संयोग बनेगा। मेहनत से सितारा बुलन्द होगा।

मीन दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची,

अप्रैल- कार्यारम्भ कीजिए, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। भूमि वाहनादि से लाभ मिलेगा। मेहमान से मन प्रसन्न रहेगा। कानूनी विवाद मध्यस्थता से सुलझेगा। **मई-** आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। शुभाशुभ समाचार मिलेगा। साहित्य, संगीत, पठन-पाठन से प्रेम होगा। दिनचर्या बनाए रखें। दाम्पत्य सुख मिलेगा। **जून-** उधार में गया धन मिलेगा। दीर्घकालीन विवाद सुलझ जायेगा। घर गृहस्थी के अन्तर्विरोध से बचे रहें। वाणी पर नियन्त्रण से लाभ होगा। **जुलाई-** साझे कारोबार से लाभ होगा। बच्चों का समय खेलकूद में बीतेगा। महिलाओं को मनपसन्द वस्तु मिलेगी। उच्चाधिकारी की घनिष्ठता श्रेष्ठ नहीं होगी। **अगस्त-** की ग्रहचाल परिवर्तनकारी है। कारोबार में तरक्की होगी। मित्र सहयोग से काम बन जायेगा। खरीद-फरोख्त में मुनाफा होगा। मर्यादा रहित व्यवहार से बचे रहें। **सितम्बर-** किसी के सहयोग से कारोबार में पर्याप्त उन्नति होगी। इष्ट-मित्रों के साथ यात्रा पर जाना होगा। परिवार में आगंतुकों से खुशी होगी। आत्म शक्ति का विकास होगा। **अक्टूबर-** कर्मोद्योग में शैथिल्यता अन्तर्विरोध को जन्म दे सकती है। आश्वासन अधूरे भाग्य की विडम्बना जानें। सौख्य-समृद्धि, श्रीवृद्धि का संयोग बनेगा। यात्रा का संयोग बनेगा। **नवम्बर-** बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। मेहनत के चलते सितारा बुलन्द होगा। साझे काम का विचार बनेगा। उच्चाधिकारी नाखुश रहेगा। **दिसम्बर-** मास नई खुशियाँ लायेगा। भूमि वाहनादि लेन-देन से लाभ होगा। राज समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कानूनी विवाद सुलझेगा। गृहस्थी में सरसता बनाये रखें। **जनवरी-** मेहनत के चलते भाग्य का सितारा बुलन्द होगा। आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। शुभाशुभ समाचार मिलेगा। भौतिक सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे। **फरवरी-** बनते-बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। साहित्य संगीत में रुचि बढ़ेगी। रोग ऋण विवाद से राहत मिलेगी। घर गृहस्थी में चहल पहल बढ़ेगी। **मार्च-** अच्छा खासा लाभ होगा। मंगलोत्सव का निमन्त्रण मिलेगा। इष्ट-मित्र, घर-गृहस्थी में सामंजस्य बैठाये रखें। प्रतिकूल समाचार मन दुःखायेगा।

(पृष्ठ ३८ का शेष)

हैं। व्यापार में लगाई या बैंकादि में जमा धनराशि उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होती रहती है। मृत्यु आदि होने पर शान्ति करायें।

३१ मार्च	६।१६	से	१८।४३	तक
२३ मई	२८।५१	"	२९।३०	"
२४ "	५।३०	"	२५।००	"
२ जून	१२।०४	"	२२।५३	"
२६ जुला.	१२।३६	"	२९।४३	"
४ अग.	२१।५४	"	२९।४९	"
१९ सित.	६।१२	"	९।१०	"
२७ "	२०।४९	"	३०।१६	"
२१ नव.	९।५२	"	२१।४८	"
१ दिस.	१६।५१	"	३१।०१	"
२४ जन.	२३।५९	"	३१।१७	"
२० मार्च	१६।४४	"	३०।२८	"
२१ "	६।२८	"	७।१०	"
३० "	६।१८	"	१२।२१	"

त्रिपुष्कर योग

१८ अप्रै.	२८।२४	से	२९।५५	तक
१९ "	५।५५	"	२४।४२	"
२५ "	५।४९	"	११।५१	"
२३ जून	५।२८	"	११।२९	"
२७ "	१०।१०	"	२६।५६	"
१६ अग.	७।०२	"	१३।५०	"
२५ "	५।५९	"	१२।२१	"
२९ "	१३।०२	"	३०।०१	"
३० "	६।०१	"	८।२१	"
८ सित.	२४।०२	"	३०।०७	"
१८ अक्टू.	८।५०	"	१७।२७	"
२७ "	१०।४६	"	३०।३५	"
१ नव.	२२।४९	"	३०।३८	"

७ नव.	७।२३	से	८।०४	तक
२० दिस.	२१।००	"	३१।१४	"
२६ "	१०।३४	"	२८।१८	"
५ जन.	७।१९	"	१८।२०	"
१३ फर.	१५।१०	"	२४।५६	"
२३ "	१८।०५	"	३०।५५	"
२८ "	११।१८	"	३०।५१	"
९ मार्च	१५।०२	"	२०।४०	"

ज्वालामुखी योग

३ अप्रै.	१८।४०	से	२४।५८	तक
६ जून	१५।११	"	२२।३२	"
११ अग.	२४।५६	"	२९।५२	"
१२ "	५।५२	"	११।१६	"
१२ "	२७।२५	"	२९।५३	"
१३ "	५।५३	"	१२।५८	"
६ सित.	२९।२३	"	३०।०६	"
७ "	६।०६	"	२१।३८	"
११ अक्टू.	२५।१८	"	३०।२४	"
१२ "	६।२४	"	१६।३८	"
१४ दिस.	२३।२५	"	३१।०९	"
१५ "	७।०९	"	१९।०६	"
१९ फर.	१०।५८	"	२९।५६	"
२० "	१३।३१	"	३०।५८	"
२१ "	६।५८	"	८।४२	"
१७ मार्च	२३।२८	"	३०।३२	"
१८ "	६।३२	"	१०।३३	"

परिवा मूल पंचमी भरनी।
अष्टमी कृत्तिका नवे रोहिणी॥
दसे अश्लेखा तू तो वांच।
ज्वालामुखी नखत यह पांच॥
जन्मे तो जीवे नहिं,
बसे तो ऊजड़ होय।
नारी पहिने भूषणो,
पुरुष विहूनो होय॥
संग्राम चढ़े जीते नहीं,
कृषि निष्फल जांय।
कूंआ पोखर जो खने,
तुरतै वारि पराय॥

कालसर्पयोग का विवरण

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
१२ अप्रै.	१७।३०	"	२८ अप्रै.	९।३०	"
९ मई	२४।००	"	२४ मई	१५।३०	"
६ जून	१०।३०	"	२१ जून	५।३०	"
१३ दिस.	५।३०	"	२८ दिस.	५।३०	"
१० जन.	५।३०	"	२५ जन.	१०।३०	"
६ फर.	८।४०	"	२१ फर.	१७।३०	"
६ मार्च	४।००	"	२० मार्च	५।३०	"
१ अप्रै.	५।३०	"	१३ अप्रै.	७।४०	"

राहुकेतु मध्ये ग्रहाःसप्तो विघ्नदा कालसर्प संज्ञकाः। सुतत्रासादि सकलदोषःरोगेन् प्रवासे मरणं ध्रुवम्॥

कालसर्प योग की शान्ति हेतु यज्ञानुष्ठान कराते समय द्विजाचार्योंको ध्यान रखना चाहिए कि यज्ञका आरम्भ या समाप्ति पंचमी, अष्टमी, दशमी, चतुर्दशी, अमावस्या तिथि वार चाहे जो भी हो, भरणी आर्द्रा, पुन., पुष्य, श्ले., उ.षा., अभिजित् और श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ, अन्यान्य मध्यम जानें। कर्त्ता की राशि से ग्रहगणना विचार परमावश्यक है। वर्षमध्ये कालसर्प योग जिस समय बने उस समय अनुष्ठान सर्वश्रेष्ठ रहता है।

साथ के अग्निवास कोष्ठक में शुक्ल और कृष्ण पक्ष की १५-१५ तिथियाँ लिखी हैं। आड़ी पंक्ति में वार अंकित हैं। तिथि व वार के सामने अग्निवास लिखा हुआ है, सो अग्निवास यज्ञादि (हवन) में पृथ्वी पर शुभ होता है। आकाश में प्राण नाशक, पाताल में धनैश्वर्य की हानि करता है। अग्निवास का विचार किन-किन कार्यों में करें-

लक्षकोटि हवने मखे ऽखिले चातिरुद्र करणे महाविद्यौ। देवखात भवने सुराल यादग्नि चक्रमव लोक येत्सुधीः॥ इनमें इसका विचार न करें-**विवाह यात्रा व्रतगोचरेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगाद्येः। दुर्गा विधाने च सुतप्रसूतौ नेवाग्निचक्रं परिचिन्त नीयम्॥**

✿ अग्निवास ज्ञानाय कोष्ठक ✿

	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुक्ल पक्ष	१	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	२	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	३	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	४	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	५	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	६	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	७	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	८	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	९	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	११	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१२	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१३	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१४	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१५	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
कृष्ण पक्ष	१	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	२	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	४	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	५	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	६	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	७	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

दिनांक 16-07-2019 को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्री राजधानी पंचांग कार्यालय दिल्ली पर आयोजित गुरुपूजन कार्यक्रम का एक छायाचित्र

Rajdhani Institute of Vedic Astrology

E-219, Main Road, Jagjit Nagar, Delhi-110053

संस्थान द्वारा दिनांक 28-04-2019 में आयोजित दीक्षांत समारोह का चित्र

मात्र चार महीनों में ज्योतिष सीखें

सफल ज्योतिषी बनने के लिए

Rajdhani Institute of Vedic Astrology

द्वारा संचालित ज्योतिष की व्यवहारिक शिक्षा के लिए आधुनिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लें

जनवरी 2020, मई 2020 से प्रारम्भ होने वाले बैच में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन जारी हैं।

ज्योतिष कला

1. यह ज्योतिष का प्राथमिक (Basic) पाठ्यक्रम है।
2. प्रवेश के लिए न्यूनतम आयु सीमा 18 वर्ष है।
3. कक्षाएं प्रत्येक शनिवार तथा रविवार को आयोजित की जायेंगी।
4. प्रत्येक कोर्स की समाप्ति पर परीक्षा का आयोजन किया जायेगा।
5. प्रारम्भिक पाठ्यक्रम की फीस मात्र रु.10000/- है।

ज्योतिष प्रवीण

1. यह ज्योतिष का उच्च (Advance) पाठ्यक्रम है। इसमें प्रवेश ज्योतिष कला के सफल परीक्षार्थियों अथवा ज्योतिष का (Basic) ज्ञान रखने वालों का होगा।
2. कक्षाएं प्रत्येक शनिवार तथा रविवार को आयोजित की जायेंगी।
3. कोर्स की समाप्ति पर परीक्षा का आयोजन किया जायेगा।
4. इस पाठ्यक्रम की फीस मात्र रु.11000/- है।

उपरोक्त पाठ्यक्रमों को श्री राजधानी पंचांग कार्यालय के प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा ज्योतिष के नवीन विषयों को सम्मिलित करके तैय्यार किया गया है। जिनमें ज्योतिष, कुण्डली निर्माण, कुण्डली विवेचना, मुहूर्त्त, मौसम विज्ञान, फलित-होराशास्त्र आदि विषयों के साथ भारतीय पंचांग को समझना, उसके विषय में विस्तार से जानकारी का एकदम नया और महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम शामिल किया है।

यह पाठ्यक्रम पत्राचार तथा नियमित कक्षा दोनों तरह से उपलब्ध हैं।

प्रवेश पहले आओ पहले पाओ के आधार पर होगा, सीटें सीमित हैं।

पं. कौशल किशोर कौशिक पंचांगकर्त्ता

mail: rajdhanipanchang@gmail.com

श्री राजधानी पंचांग कार्यालय

कार्यालय : E - 219, मेन रोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-110053

09899305151

09868909063

पं. प्रेमपाल कौशिक ज्यो.

द्वारा संपादित बहुरंगी

श्री ब्रजराज कालदर्शक पंचांग

श्री ब्रजराज कालदर्शक पंचांग में मुख्य अंग्रेजी तारीखों के साथ तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण ★ सूर्योदयास्त ★ ग्रह संचार एवं उदय-अस्त ★ गंडमूल, पंचक, भद्रा विचार ★ विवाह, वाहन वास्तु एवं व्यापार मुहूर्त ★ सर्वार्थसिद्धियोग, रवियोग, द्विपुष्कर-त्रिपुष्करयोग, पुष्यामृतयोग ★ दीपावली पूजनमुहूर्त ★ सूर्य-चन्द्र ग्रहण ★ राशिफल ★ ग्रहों के उपाय ★ देवताओं के रंगीन चित्र ★ मौसम ★ तेजीमन्दीविचार ★ राजनीतिक भविष्यफल ★ व्रत-त्यौहार की जानकारी ★ गृहणियों के लिए अनेक उपयोगी विषय प्रस्तुत है।

हमारे अन्य प्रकाशन

- कम्प्यूटर जन्मपत्रिका हेतु फाईल कवर
  (डुपलैक्स बोर्ड white back पर रंगीन छपा हुआ)
- कम्प्यूटर जन्मपत्रिका में प्रयोग हेतु A-4 साईज में
  गणेश फोटो तथा लाल बॉर्डर छपा हुआ पेपर - पीला/सफेद
- सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका 40 पृष्ठ (लेमि.)
- षट्वर्गीय जन्मपत्रिका 28 पृष्ठ (लेमि.)
- जन्मांग पत्रिका 12 पृष्ठ (लेमिनेशन)
- लघु जन्म पत्रिका 8 पृष्ठ (लेमिनेशन)
- जन्मअक्षर पत्रिका 16 पृष्ठ (लेमिनेशन)
- जन्मअक्षर पत्रिका 8 पृष्ठ (लेमिनेशन)
- अथ श्री जन्माक्षर 16 पृष्ठ (लेमिनेशन)
- शुभ विवाह लग्न फार्म
- शुभ विवाह लग्न पत्रिका (कवरसहित)
- पीली चिट्ठी
- पीली चिट्ठी (कवर सहित)
- जन्मपत्रिका टेवा फार्म
- जन्मपत्रिका टेवा (कवर सहित)
- All-in-One Red
- All-in-One yellow
- सत्यनारायण व्रत कथा
- सोमवार व्रत कथा
- गुरुवार व्रत कथा
- शुक्रवार व्रत कथा
- आरती संग्रह
- हनुमान चालीसा (गुटका)
- दुर्गा चालीसा (गुटका)
- शिव चालीसा (गुटका)
- सुन्दर काण्ड
- एकादशी माहात्म्य
- भगवद् गीता
- हनुमान चालीसा
- दुर्गाचालीसा
- शिव चालीसा
- वैभव लक्ष्मीव्रतकथा

श्री राजधानी प्रकाशन- E-219, मेन रोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-110053
फोन- 09868909063, 09899305151

पृष्ठ सं. 1136
सुन्दर जिल्द
डिब्बे में पैक

अर्द्धशताब्दि श्रीराजधानीपञ्चाङ्गम्

मूल्य ₹1000/-

श्री राजधानी पंचांग के संपादक पं. प्रेमपाल कौशिक ज्यो. द्वारा रचित एक आवश्यक संग्रहणीय पंचांग

संवत् 2041 से 2090 तक

जन्मपत्रिका निर्माण के लिए उपयोगी, चिरस्थाई कागज पर मुद्रित

यह पंचांग सभी शहरों के प्रमुख पुस्तक विक्रेताओं के पास उपलब्ध है, आज ही अपने विक्रेता से खरीदें। आप पंचांग का मूल्य (डाक व्यय सहित) ₹1000/- D.D./Cheque in favour of Shri Rajdhani Prakashan अथवा मनिआर्डर द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजकर घर बैठे भी मंगा सकते हैं। पंचांग रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जायेगा, V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

प्रमुख विशेषताएं

★ तिथि व नक्षत्र घटी-पलों के साथ घं. मि. तथा योग व करण घटी-पलों में।
★ दैनिक निरयन ग्रह स्पष्ट राशि, अंश, कला, विकला पर्यन्त
★ चन्द्र राशिप्रवेश, ग्रहों का राशिप्रवेश, वक्री-मार्गी, उदय-अस्त घंटा-मिनटों में
★ प्रत्येक अष्टमी, अमावस्या एवं पूर्णिमा की कुण्डलियाँ दी गई है।
★ पूर्ण शुद्ध विवाह मुहूर्त्त प्रत्येक वर्षों के
★ वार्षिक व्रत-पर्व, भद्रा, पंचक व प्रमुख ज्योतिषीय घटनाओं का विवरण
★ संवत् के राजा, मन्त्री आदि दशाधिकारी निर्णय एवं लाभ-खर्च कोष्ठक
★ सूर्य एवं चन्द्र ग्रहणों का विवरण भा.स्टैं.टा. घंटा-मिनट में
★ प्रतिदिन की लग्नारम्भ सारिणी, प्रसिद्ध शहरों की लग्न परिवर्तन तालिका सहित
★ भारत के प्रमुख शहरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर, दिल्ली से देशान्तर
★ विश्व के प्रमुख शहरों का अक्षांश, रेखांश, G.M.T.व भा.स्टैं.टा.से स्टैण्डर्डअन्तर
★ लाघवांक कोष्ठक, अवकहडाचक्र, वरवधूगुणमेलापक, आवश्यकमुहूर्त्त विवरण